A GEM FOR SANSKRIT
SCHOLARS & LIBRARIES.

RATNASAMUCCAYA

or

A Comprehensive and Classified Catalogue of Sanskrit Works

PUBLISHED IN INDIA & ABROAD

(THIRD EDITION MADE UP-TO-DATE)



MEHAR CHAND LACHHMAN DAS,
Sanskrit & Hindi Booksellers
PROPRIETORS—*The Sanskrit Book-Depot,*
Jain Street, Said Mitha Bazar, LAHORE.
August 1939.

CAUTION:—

Since there is a danger of mistaking other business concerns for our own, we wish to warn visitors to our establishment that they should be guided only by the several signboards bearing the name of our firm on the front of our building.

The free services of the firm are at the disposal of persons desiring to have (a) reports of new books (b) rare and out of print books and (c) books from any class of literature,—Sanskrit, Prakrit, or Hindi.

PRICES.

While this Catalogue was in press, the prices of most of the books have been subjected to fluctuation. So the books ordered will be charged at the prevailing market rates.

भारत के सर्व-प्राचीन संस्कृत पुस्तक विक्रेता

स्थापित सन् १८७० ई०

रत्नसमुच्चय

नामक

संस्कृत पुस्तकों का बृहत् सूचीपत्र

(आज तक का कुल मुद्रित संस्कृत-साहित्य इसमें सन्निविष्ट हो गया है)

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्,
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्,
विद्या राजसु पूजिता न हि धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

इस सूचीपत्र में सकल भारत तथा अन्य जर्मनी, विलायत, अमरीका आदि विदेशों की सर्व प्रकार की और सर्व विषयों की संस्कृत प्राकृत की पुस्तकें दर्ज की गई हैं जो हमारे यहाँ हर समय विक्रयार्थ प्रस्तुत रहती हैं ।
ग्राहक महोदय नीचे लिखे पता पर आर्डर भेजकर अनुगृहीत करें ।

मेहरचन्द लछमणदास

संस्कृत हिन्दी पुस्तक विक्रेता,

जैनस्ट्रीट सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर

[सन् १९३६

तृतीयावृत्ति]

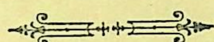
मूल्य

हमें खेद से यह लिखना पड़ता है कि इस सूचीपत्र के छपते छपते कई एक पुस्तकों के दाम न्यूनाधिक (कम ज्यादा) हो गये हैं । इसलिए हम इस सूचीपत्र में लिखित मूल्यों के ज़िम्मेवार नहीं होंगे । जिनके दाम कम हो गये हैं, उनके कम और जिनके अधिक हो गये हैं, उनके अधिक लिये जाने के अधिकारी होंगे । इस विषय में हमें पुस्तक प्रकाशकों के अधीन चलना पड़ेगा ।

शीघ्रता

के कारण बहुत सी पुस्तकें इस सूचीपत्र में दर्ज होने से छूट गई हैं किन्तु हमारे पुस्तकालय में वह प्रस्तुत अवश्य रहती हैं। इसलिए उनके लिए भी हमें स्मरण करने की कृपा करें ।

नम्र निवेदन



धोखे से बचिए—ग्राहक महोदयों की अत्यन्त कृपादृष्टि से हमारी ६९ वर्ष की दुकान को जो प्रसिद्धि प्राप्त हुई है उससे दग्ध होकर कई एक दुकानदार कई एक वर्षों से ग्राहकों को धोखा देने के लिए यत्न कर रहे हैं। यहाँ तक कि वह अपनी दुकान पर न तो कोई बोर्ड लगाते हैं और यदि लगाते हैं तो उस पर अपना नाम नहीं लिखते और जो ग्राहक हमारी दुकान का पता पूछते हैं, उनको कह देते हैं कि यही 'मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास' की दुकान है। इसलिये हम अपने कृपालु ग्राहकों की सेवा में सूचित करते हैं कि हमारी दुकान पर 'मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास' इस नाम का सायन बोर्ड लगा है, उसी को देखकर ही विश्वास किया करें। धोखेबाजों से बचने का यत्न करें।

पार्सलों की वापसी—(१) कई एक ग्राहक आर्डर की पुस्तकें जब उनके पास पार्सल वी० पी० होकर जाता है तो कई एक कारणों से उसे वापिस कर देते हैं। उनको हम यह सूचित करते हैं कि डाकखाने में १० दिन तक पार्सल पड़ा रहने का नियम है। इसलिए जिस दिन उनके पास पार्सल की सूचना मिले उस दिन से लेकर १० दिन के अन्दर वह पार्सल डाकखाने से छुड़ा सकते हैं।

(२) कई एक ग्राहक मूल्यादि के भ्रम के कारण तथा अन्य किसी अनभिज्ञता या हिसाब की ग़लती के कारण कई बार ऐसे ही क्रोधावेश में आकर पार्सल लौटा देते हैं। उनको ऐसा कदापि नहीं करना चाहिये वरन् पार्सल को डाकखाना में पोस्टमास्टर साहिब के साथ पड़ा रहने का प्रबन्ध करके हमारे साथ पत्र व्यवहार करके भ्रम निवारण कर लेना चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पुरुष से कई बार ग़लतियाँ हो जाती हैं लेकिन इसका यह अभिप्राय नहीं कि आप क्रोधावेश में आकर झट पार्सल ही लौटा दें।

(३) पुस्तकों के मूल्य कभी कभी कम भी हो जाते हैं और कभी कभी बढ़ भी जाते हैं लेकिन हम उस समय के ही मूल्यों के ज़िम्मेवार होंगे जिस समय पुस्तकों का पार्सल गया हो।

(४) कई एक दुकानदार सैकण्ड हैण्ड (मलित तथा पठित) पुस्तकें विद्यार्थियों या अन्य स्थानों से खरीद कर सस्ते दामों में बेच देते हैं। इस पर ग्राहक महोदय हमें उपालम्भ देते हैं कि अमुक पुस्तक सस्ती है किन्तु उन भद्र पुरुषों को यह विदित नहीं कि वह सैकण्ड हैण्ड होने के कारण सस्ती बिक रही हैं। सो ऐसे सस्तेपन के हम जिम्मेवार नहीं हैं क्योंकि हमारे यहाँ नवीन पुस्तकों का ही संग्रह रहता है। सैकण्ड हैण्ड पुस्तकें कई बार ऐसी दशा की हस्तगत हो जाती हैं जो नवीन के समान होती हैं या बहुत थोड़ी दूषित होती हैं किन्तु वह मूल्य थोड़ा होने का कारणभूत हो जाती हैं।

उधार—हमारे यहाँ उधार पुस्तक भेजने का नियम नहीं है। पुस्तक वी० पी० द्वारा या पेशगी दाम प्राप्त होने पर भेजी जाती हैं।

एक रुपये से कम मूल्य की पुस्तक वी० पी० द्वारा नहीं भेजी जातीं। उनके लिये दाम और डाक व्यय ग्राहकों को मनिआर्डर या डाकखाने के टिकट द्वारा भेजने चाहिएँ।

पत्रव्यवहार (१) पत्र बैरंग मत भेजें। बैरंग पत्र नहीं लिये जायँगे।

(२) पत्र हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी या उर्दू में लिखना चाहिए और स्पष्ट लेख होना आवश्यक है।

(३) अपना पता, नाम, ग्राम, डाकखाना, पोष्ट, ज़िला, मुहल्ला या कूचा और स्टेशन सब स्पष्ट लिखे रहने चाहिएँ।

(४) पत्रोत्तर के लिए जवाबी (Reply) कार्ड भेजिएगा।

पुस्तकों की वापसी या बदला बदली—विक्रय की हुई पुस्तकें वापिस नहीं ली जातीं। यदि किसी पुस्तक में पृष्ठ कम या जीर्ण हों तो सूचना मिलने पर यह पृष्ठ भेजे जा सकेंगे। हाँ, यदि आर्डर प्रेषक के लेख विरुद्ध कोई पुस्तक चली गई हो तो लौटा ली जा सकेगी। ग्राहकों के लेखानुसार पुस्तक भेजने की अवस्था में हम पुस्तकों की बदला बदली नहीं कर सकेंगे।

कमीशन—हमारे यहाँ कमीशन के नियम बँधे हुए हैं। नियमानुसार ही हम पुस्तकों पर कमीशन दिया करेंगे। बड़े बड़े आर्डरों पर कमीशन अधिक भी दिया जा सकेगा, जो पत्रव्यवहार से निश्चय हो सकता है।

आर्डर भेजने में सुभीता—इस सूचीपत्र में हमने जो हर एक पुस्तक का नम्बर नियत (मुकर्रर) कर दिया है, इसमें हमारे दयालु ग्राहकों को यह सौकर्य होगा कि अपने पत्र में केवल अपने अपेक्षित पुस्तक का पृष्ठांक तथा नम्बर मात्र लिख देने से भी हम वह पुस्तक भेज सकते हैं।

पेशगी—१०) से अधिक की पुस्तकें मँगानी हों तो कुछ न कुछ पेशगी अवश्य भेजना चाहिए। सवारी गाड़ी या मालगाड़ी के पारसल बिना पेशगी कदापि नहीं भेजे जाते।

विषयानुक्रमणिका

MEHARCHAND LACHHMANDAS
SANSKRIT AND PRAKRIT SERIES.

It is with intense pleasure that we announce to the public the successful commencement of a novel series entitled *Meharchand Lachhmandas Sanskrit and Prakrit Series.* In issuing this Series, our cardinal object is to bring into limelight that vast and profound learning of ancient Indian saints and savants, which is lying embodied in the well-nigh decaying and obscure Sanskrit and Prakrit manuscripts; and to rescue it thereby from total destruction. The work has, naturally, entailed careful and delicate researches into the ancient Sanskrit and allied literatures, and patient collection and collation of materials; and has called in all the vast and varied resources of learning on the part of the learned editors. As such the volumes in this Series are unique and of rare value; and are examples of genuine learning and scholarship in Oriental literatures. In fact, the volumes are their own best recommendation.

Scholars, both Indian and Foreign, like Dr. Caland, already famous for his vigorous and erudite writings, are amongst the editors of this Series. They have left no stone unturned in giving to the public the immense wealth of their laborious and sustained research works conducted in various branches of Sanskrit and Prakrit Literatures.

So far we have successfully brought out the following nine maiden publications. We have spared no effort in making the books as attractive as possible from the point of view of their artistic printing, strong and beautiful binding, and high quality paper. All through the printing of these volumes each process has been carefully supervised and attended to.

We have other volumes under project which will be duly notified on publication.

In view of the uniqueness, the high literary standard and rare learning embodied in these volumes, we can say with the fullest confidence that the Series is no less than a landmark in the annals of Oriental literatures.

We hope our efforts will meet with commensurate public approval and response.

1 Kapiṣṭhala-Kaṭha-Saṃhitā, (कपिष्ठलकठसंहिता), a text of the Black Yajur Veda, critically edited for the first time by Dr. Raghu Vira. Rs. 30/-or Sh. 45/-

2 Vāraha-Śrauta Sūtra, (वाराहश्रौतसूत्र) being the main ritualistic Sūtra of the Maitrāyaṇī Śākhā, critically edited for the first time with Mantra Index by the late Dr. W. Caland and Dr. Raghu Vira. Rs. 12/- or Sh. 18/-

3 Ṛktantra, (ऋक्तन्त्र) a prātiśākhya of the Sāma-Veda, critically edited with an introduction, exhaustive notes, appendices, a commentary and Sāmavedasarvānukramaṇī by Dr. Sūryakānta, M. A., M. O. L., D. Litt., Shastri. The notes contain a detailed comparison with the other Prātiśākhyas and Pāṇini. Burnell's edition has been much improved upon with the help of new MSS. Rs. 20/- or Sh. 30/

4 Atharva Veda of the Paippaladas Books 1-13 पैप्पलाद-संहिता critically edited into Devanāgarī for the first time by Prof. Raghu Vira, M. A., Ph. D., D. Litt. et Phil. Rs. 30/- or Sh. 45/-

5 Jain Sidhānta Kaumudī (जैनसिद्धान्तकौमुदी) or A Grammar of the Ardha Māgadhi Prākrit by Śatāvadhāni Rattan Chand Ji, Jain muni. Rs. 15/- or Sh. 22. 6 d.

6 Atharva Prátiśákhya, (अथर्वप्रातिशाख्य), an entirely new and unique acquisition to the Vedic Literature, critically edited for the first time by Dr. Sūryakānta, M. A., M. O. L., D. Litt., (Panjab), D. Phil. (Oṇon) Shastri. Rs 50/- or Sh. 75/-

7 Bhāsa—A Study. By A. D. Pusalkar, M. A., LL. B. Acritical and exhaustive exposition of the baffling and still unsolved problem of Bhāsa's authorship of Trivandrum plays. Rs. 10/- or Sh. 15

8 Woolner Commemoration Volume. It is a magnificent collection of more than fifty invaluable articles on various aspects of Oriental languages and literatures contributed by the friends, pupils and colleagues from all over the world of the late Dr. Woolner, in whose commemoration the Volume has been prepared. If any thing, it is a thesaurus of freshest research works in the field of Oriental languages and literatures; and is extremely thought-provoking. (In Press)

9 Elements of Hindu Culture and Sanskrit Civilization by Dr. P. K. Āchārya, M. A., Ph. D., D. Litt., Head of the Sanskrit Deptt., Allahabad University. Rs. 1/8/- or Sh. 2. 6. d.

Some new books published in India and abroad during the period, this catalogue remained in the Press.

नवीन और उपयोगी पुस्तकें

वैदिक

१ आश्वलायनगृह्यमन्त्रव्याख्या—हरदत्तमिश्रकृता । प्रथममधुनैव मुद्रिता । मद्रास २ ४ ०

२ कृष्णयजुर्वेद प्रकरण कौमुदी—Edited by Kinjavadekar. ६ १२ ०

३ वेदगीताञ्जलि—अर्थात् वेद के कुछ चुने हुए मन्त्रों के शब्दार्थ और उन पर हिन्दी में भावात्मक सुन्दर गीत । सं० १९९६ २ ० ०

४ शतपथब्राह्मणम् (माध्यन्दिनशाखीयम)—मूलम् । प्रथमो भागः (काण्डानि १-६) । पं० चन्द्रधरशर्मणा सम्पादितं सटिप्पणम् । स्थूलाक्षराणि । काशी ३ ८ ०

5 श्रीसूक्तभाष्यम्—By Sri Ranganatha Muni (Nanjiyar), with Introduction by Sri Saumy Narayana Acharya, together with Lakshmi Sahasranama and other Lakshmi Stotras with their translation in English by A.Srinivasa Raghvan, M. A. 1 8 0

6 Veda and Vedanta—By Ernest P. Horrwitz. In this book the author deals in brief yet with great clarity about Aryan Origins and Rigvedic and Post-Vedic Culture of the Indo-Aryans. The book sheds new light, often quite unexpected, on burning questions. 2 8 0

वेदाङ्ग

७ वाररुचनिरुक्तसमुच्चय—आचार्यवररुचिप्रणीतो वेदार्थविषयकोऽपूर्वोऽयं ग्रन्थः प्रथममधुनैव मुद्रितः ।

A very important Vedic treatise by the famous grammarian Acharya Vararuchi, edited for the first time by Dr. C. Kunhan Raja. Madras 2 0 0

उपनिषद्

8 Bṛhad-Āraṇyaka Upaniṣad—Traduite et annotee par Emile Senart. Text in Roman and French translations. With index of subjects and proper names. 5 8 0

९ **श्वेताश्वतरोपनिषद्**—शांकर भाष्य संस्कृत तथा भाषा टीका सहित ।
गोरखपुर ० १४ ०

धर्मशास्त्र

१० **द्वैतनिर्णयसिद्धान्तसंग्रहः**—भानुभट्टमीमांसककृतः । सन् १९३७
काशी १ ० ०

11 Shuddhi Chandrāloka—(Dharmaśāstra)—By Sri Chandra Kanta Tarkālankāra. Numerous smritis and Nibandhas have been quoted in it, many of which have not yet been printed. Calcutta 2 12 0

१२ **सरस्वतीविलास**—प्रतापरुद्रदेवकृत । मैसूर २ ८ ०

13 Ethics of India—By E. Washburn Hopkins.
U. S. A. 7 8 0

14 South Indian Festivities—By P. V. Jagadisha Ayyar. Illustrated. Revised and enlarged. Madras 7 8 0

15 Vedic Basis of Hindu Law—By P. V. Kane.
0 8 0

कर्मकाण्ड

१६ **उपनयनपद्धति**—मध्यन्दिनशाखीय । काशी ० ६ ०

१७ **चूडाकरणपद्धतिः**—विस्तृत टिप्पणीपरिशिष्टसहिता । पं० विद्याधर वेदाचार्यकृता । सन् १९३९ । काशी ० २ ०

१८ **विवाहपद्धति**—विस्तृत टिप्पणी परिशिष्टसहित । पं० विद्याधरशर्मा वेदाचार्य, १९३८ । काशी ० ६ ०

१९ **शिलान्यासपद्धति**—विस्तृत टिप्पणीपरिशिष्टसहिता । पं० श्रीविद्याधर-वेदाचार्यकृता । १९३९ । काशी ० ३ ०

वेदान्त

२० **अद्वैतसिद्धिः**—'गुरुचन्द्रिका' टीकया सहिता । द्वितीयो भागः । मद्रास ३ १४ ०

२१ **आत्मानात्मविवेकः**—आत्मबोधश्च । एतौ शंकराचार्यकृतौ सटीकौ च ।
कलकत्ता ० ६ ०

२२ **ईश्वरप्रत्यभिज्ञा-विवृति-विमर्शिनी**—अभिनवगुप्तकृता । प्रथमो भागः ।
कश्मीर ३ ० ०

23 Secret of Recognition (Pratyabhijñahridayam)—A reviving doctrine of Salvation of Medieval India. German translation and Notes. By Rev. Emil Baer, Ph. D.

Authorized translation into English by Kurt F. Leidecker, M. A., Ph. D. With a note on the comparative study of the Pratyabhijna system and the Saiva Siddhanta by S. S. Suryanarayana Sastri, M. A. 1938. Madras 3 0 0

२४ ब्रह्मसिद्धिः—आचार्यमण्डनमिश्रकृता। शङ्खपाणिकृतव्याख्या सहिता। Edited for the first time, with a scholarly Introduction, Appendices, and Indexes by M. M. Prof. S. Kuppuswami Sastri, M. A., I. E. S. Madras 10 8 0

25 Bhaktakusumanjali—Being a handful of devotional flowers at the sacred feet of H. H. the Sringeri Jagadguru Sri Chandrashekhara Bharati, on the auspicious occasion of the Nakshatra Mahotsava. Edited by P. P. S. Sastry. 5 0 0

२६ भगवन्नामकौमुदी – लक्ष्मीधरकृत। हिन्दी टीका सहित। ० १० ०

२७ भास्करी—भास्करकण्ठकृतव्याख्यायुता ऽभिनवगुप्तविरचिता ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी। भागः १। सन् १९३८। काशी ६ ० ०

28 Medieval Mysticism of India—By Kshiti Mohan Sen with a Foreword by Dr. Rabindra Nath Tagore. Authorized translation from the Bengali by Manomohan Ghosh. It gives an account of nearly all the Hindu and Mohammadan devotees of Medieval India, such as Rāmānanda, Kabir, Nanak, Ravidas, Namadeva, &c. &c. Foreign 4 8 0

29 The Mystics, Ascetics and Saints of India—By J. Campbell Oman. London 18 0 0

30 Practice of Vedant—Vol. I. By Swami Sivananda. 2 0 0

31 How to get Vairagya—By Swami Sivananda. 1 8 0

गीता

३२ आदिभगवद्गीता—भाषाटीका और अङ्गरेजीटीकासहित [The Gita as found in Bali Island on palm-leaves and in Farruckabad on a bronze-plate, with Hindi and English translations and footnotes. 0 2 6

33 The Gita—The Gospel of the Lord Shree Krishna. Translated from the original Sanskrit by Shree Purohit Swami with a preface by Sir Sayaji Rao Gaekwar, the Late Maharaja of Baroda. Foreign 21 0 0

३४ श्रीमद्भगवद्गीता—शाङ्करभाष्याद्येकादशटीकासमलंकृता । [प्रथमो गुच्छः] १ शाङ्करभाष्यम्, २ आनन्दगिरिकृता शाङ्करभाष्यव्याख्या, ३ रामानुजभाष्यम्, ४ वेङ्कटनाथरचिता रामानुजभाष्यतात्पर्यचन्द्रिका, ५ आनन्दतीर्थीयं (माध्व)-भाष्यम्, ६ तदनुयायिनी जयतीर्थरचिता प्रमेयदीपिका, ७ हनुमत्कृतं पैशाचभाष्यम्, ८ वेङ्कटनाथकृतं ब्रह्मानन्दगिर्याख्यानं व्याख्यानम, ९ वल्लभीया तत्त्वदीपिका, १० तदनुसारिण्यमृततरङ्गिणी, ११ नैलकण्ठीयो भारतभावदीपः—इति ।] तथा प्रत्यध्यायमादौ 'रत्ना-' टीकोपेता 'गी ता र्थ-सं ग्र हः', अन्ते चाद्य यावत्क्वापि गीतयाऽनायोजितमष्टादशाध्यायपरिमितं प द्म पु रा णी यं नानाख्यानोपशोभितं गी ता मा हा त्म्य मध्यायशोऽत्र यथोचितं निवेशितमिति सत्यं 'प्र ह र्ष ण' मेवेदं विदुषाम् । अत्र संगृहीता ब्रह्मानन्दगिर्याख्या व्याख्या च भगवत्पादीयं भाष्यमनुसरन्ती, टीकान्तरोदितानप्यर्थान् समालोचयन्ती पौराणिक-हरिहरादि कीर्तन-प्रवचनकारानप्युपकर्त्रीयं गुणगरिम्णा सर्वव्याख्योपरि वरीवर्तीति दर्शनसमकालमेव ज्ञास्यन्ति तज्ज्ञाः ।

विक्रयार्हतां समापन्नम्—प्रथमषट्कम् ८) मध्यमषट्कम् मुद्रियष्यते ६) तृतीयषट्कम् मुद्रियष्यते ६) समग्रस्य ग्रन्थस्य मूल्यम् १८ ० ०

३५ यथार्थगीता—श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीकृष्णार्जुन संवाद) अर्थात् क्षात्रधर्म विशेष व्याख्यान भाषा टीका सहित । इस में तृतीयाध्याय के ३५वें श्लोक तक और १८ अध्याय के कुछ श्लोक ही प्रकरणानुकूल क्षात्रधर्मोचत उपदेश और वही यथार्थ गीता है यह माना गया है । मुम्बई ० ६ ०

36 Evolution of Gita—By Kumudranjan Ray, M. A. The book gives vast and up-to-date information re: the Bhagavadgita. It is replete with references from the Vedas, Upanishads, six Darshanas &c. &c. All the theories of the previous scholars have been given and discussed. Calcutta 4 0 0

37 Verse Index to the Bhagavadgita—Pada Index. Compiled by W. Kirfel. 1938. Foreign 6 0 0

योग

38 Aphorisms of Yoga—By Bhagawan shree Patanjalee. Done into English from the original Sanskrit with a commentary, where necessary, by Shree Purohit Swami and Introduction by W. B. Yeats. Foreign 6 8 0

39 Brahmacharya—2 parts. By Swami Sivananda 0 8 0

40 Kundalini Yoga—Illustrated. By Swami Sivananda. 3 0 0

41 Practical Lessons in Yoga—By Swami Sivananda Saraswati. 4 0 0

42 Practice of Yoga—By Swami Sivananda. Vol. I—3rd edition. Rs. 1/8/-. Vol. II— 2 0 0

43 Science of Pranayama—By Swami Sivananda. 1 0 0

44 Yoga Asanas—Illustrated. By Swami Sivananda. 1 0 0

न्याय

४५ तर्कताण्डवम् व्यासतीर्थविरचितम् । राघवेन्द्रतीर्थकृतव्याख्यासहितम् । तृतीयो भागः । मद्रास २ ६ ०

४६ सामान्यनिरुक्तिप्रकरणम्—श्रीगदाधरभट्टाचार्यविरचितम् । गंगाव्याख्यायुतम् । काशी ३ ० ०

47 The Nyāya Theory of Knowledge—A critical study of some Problems of Logic and Metaphysics. By Dr. Satish Chandra Chatterji, M. A., Ph. D. 1939. 5 0 0

सांख्य

48 Early Sankhya—An essay on its historical development according to the texts, by E. H. Johnston Foreign 4 0 0

मीमांसा

४९ नयविवेकः (तर्कपादान्तः)—भवनाथमिश्रविरचितः । रविदेवविरचितविवेकतत्त्वसहितः । प्राभाकरदर्शनानुयायिषु प्रधानग्रन्थेष्वन्यतमोऽयं ग्रन्थः । प्रथममधुनैव मुद्रितः । १९३७ । मद्रास ३ ० ०

मिश्रित दार्शनिक ग्रन्थ

50 Chārvāka-Shashti (Indian Materialism) चार्वाकषष्टिः—By Dakṣiṇa Shastri M. A. It is an elaborate collection of the principles and Sutras &c. of the Charvaka System, from various ancient Sanskrit books. A first attempt of the kind. Calcutta 1 12 0

५१ मन्दारमञ्जरी—पं० विश्वेश्वरसूरिकृता। गद्यकाव्यम्। पुस्तकमिदं प्राधान्येन दार्शनिकान् विषयानतिसारल्येन विशदीकरोति। बनारस ३ ० ०

52 Great Cremation Ground (Mahaśmaśāna)—A critical dissertation on Indian Philosophy. Part I—The Upanishads. Part II—The Philosophy of the Jainas, by Elizabeth Sharp, F. R. G. S., K. H. M., etc. Foreign 2 6 0

53 Indian Realism—By Professor J. N. Sinha, Ph. D. This book is a reconstruction of the Yogacara Vijnanavada (Subjective Idealism) and an exhaustive criticism of it by the different schools of Indian realism and the Vedanta, i. e. by Kumarila, Jayanta Bhatta, Vacaspatimisra, Sridhara and Sankara. Foreign 9 4 0

54 Philosophical Studies—By G. E. Moore, D. Litt. London 13 0 0

55 The Philosophies and Religions of India; the Inner Teachings of,—By Yogi Rāmacharaka. London 4 6 0

56 Philosophy To day—Essay on recent developments in the field of philosophy. Collected and edited by Edward Leroy Schaub. London 15 0 0

57 Primer of Philosophy—By Dr. Paul Carus. London 4 4 0

58 Samadarśana—A Study in Indian Psychology. By J. H. Cousins. Madras 1 0 0

व्याकरण

५९ गणदर्पणः—पाणिनीयधातुसहितसकलधातुरूपात्मकः। श्रीयुक्तरामतारणशिरोमणिना प्रणीतः। कलकत्ता १ ८ ०

६० नन्दिकेश्वरकाशिका—उपमन्युकृतवेदान्तपरकव्याख्यासहिता। A Vedantic exposition of the first 14 प्रत्याहार Sutras of Panini's Ashṭadhyayī. Calcutta 0 4 0

६१ न्यासकल्पलता (पाणिनीयसूत्रन्यासशास्त्रार्थ)—शुक्लश्रीराजनारायणशास्त्रिकृता। ० ८ ०

६२ प्रक्रियासर्वस्वम्—श्रीनारायणभट्टकृतम्। सव्याख्यम्। द्वितीयो भागः। मद्रास ० १२ ०

63 Le Prākṛtānuśāsana de Purusottama—par Liugia Nithi-Dolgi. 1938. 12 0 0

64 भाषाशास्त्रसंग्रह—By T. G. Varadacharya. A Primer in Sanskrit on comparative Philology. 1 0 0

६५ वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्या भ्वाद्यादिचुरादिगणान्ता प्रक्रिया प्रयोगसूची—पं० नागेन्द्रनारायणमिश्रद्वारा संस्कृता। काशी ० ५ ०

६६ संज्ञाप्रकरणादिस्त्रीप्रत्ययान्त-प्रक्रियाप्रयोगसूची—पं० श्रीनगेन्द्र-नारायणमिश्रशास्त्रिणा सम्पादिता। ० ३ ०

६७ सरस्वतीकण्ठाभरणम्—भोजदेवकृतम्। मूलमात्रम्। With a Foreword by C. Kunhan Raja. Edited by T. R. Chintamani, Ph. D., with a Preface, Alphabetical Index of Sutras and Bhoja-Panini concordance. 1937. Madras 6 0 0

६८ सरस्वतीकण्ठाभरणम्—भोजदेवकृतम्। सटीकम्। तृतीयो भागः १ ८ ०

६९ हैमप्रकाशमहाव्याकरण (पूर्वार्ध)—श्रीविनायकविजयगणिकृत। [The book is an essence of several grammars, chief of them being Hemachandra's Siddha Hema Shabdānuśāsana. This is the simplest and most instructive Sanskrit Grammar. Bound 9 0 0

70 Apabhramsa Studien—Von Ludwig Alsdorf. Foreign 3 12 0

71 A Grammar of the Hindi Language--in which are treated the High Hindi, Braja and the Eastern Hindi of the Rāmāyana of Tulsi Dās, also the colloquial dialects of Rajputana, Kumaon, Avadh, Riwa, Bhojapur, Magadha, Maithila, etc. with copious Philological notes. By Rev. S. H. Kellog, D. D., LL. D. 3rd edition, with notes on pronunciation by T. Grahame Bailey, M. A. Foreign 20 0 0

72 Influence of Portuguese Vocables in Asiatic Languages—From the Portuguese Original of Monsignor Sebastião Rodolfo Dalgado. Translated into English with notes, additions and comments by Anthony Xavier Soares, M. A., LL. B. Baroda. 12 0 0

73 Kritisch-Bibliographische Streifen auf dem Gebiete der—Indischen Philologie. Von Albrecht Weber. Leipzig 5 0 0

74 Langue Braj (Dialecte de Mathura)—In French, by Dhirendra Varma. Avant-propos de M. Jules Bloch. Paris 10 0 0

75 Linguistic Studies from the Himalayas—Being studies in the Grammar of 15 Himalayan Dialects. By Rev. T. Grahame Bailey, D. Litt., B. D., M. A., M. R. A. S. Foreign 8 12 0

76 Mirza Khan's Grammar of the Braja Bhakha—Edited by M. Ziauddin. This is the oldest grammar of Modern Indo-Aryan Vernacular that has so far come to light. With a foreword by Dr. Suniti Kumar Chatterji. Calcutta 4 0 0

77 Monographies Sanskrites par Louis Renou. Vol. I—la decadence et la disparition du subjonctit. Vol. II—le suffixe tu et la constitution des infinitifs. 9 0 0

78 Pronunciation of Kashmiri—Kashmiri sounds: how to make them and how to transcribe them. By T. Grahame Bailey, D. Litt., M. A. 9 8 0

79 Science of Thought—Three Introductory Lectures by F. Max Muller. Foreign 4 8 0

80 Structure of the Aṣtādhyāyī—By I. S. Pawate. Very useful book for the study of Astadhyayi. (Bold accusation of Panini). 2 0 0

81 Tolkāppiyam—The Earliest extant Tamil Grammar with an elaborate and critical commentary in English. By P. S. Subrahmanya Sastri, M. A., Ph. D. Vol. I (1930) and Vol. II., Part I (1937). Madras 3 8 0

82 Wilson Philological Lectures—On Sanskrit and the derived languages. By Sir R. G. Bhandarkar, K. C. I. E., LL. D., Ph. D. Bombay 2 12 0

कोष

८३ विद्यार्थिबन्धु-कोशः (हिन्दी से संस्कृत)—श्री पं० वसुदेवद्विवेदी "विनीत" कृत। इस से संस्कृत के प्रायः समस्त उपयोगी व्यावहारिक शब्दों का ज्ञान हो जाता है।
काशी ० ८ ०

84 Twentieth Century English-Hindi Dictionary—containing Commercial, Economical, Political, Medical, Anatomical, Mathematical, Botanical and Zoological terms with their Hindi equivalents and explanation. By Sukhsampattirai Bhandari, M. R. A. S., 1939. 17 0 0

काव्य

८५ अन्योक्तिसाहस्री—पण्डित श्री बदरीनाथशर्मनिर्मिता। काशी ० ८ ०

86 Chandravaṁśa – A Sanskrit Mahākavya in 24 cantos by Sri Chandrakanta Tarkalankara. This one book gives the whole history of the Kshatriya kings of Lunar Race in the best poetry. Calcutta 2 8 0

८७ श्रीत्यागराजचरितम् (काव्यम्)– सुन्दरेशशर्मणा विरचितम्।
मद्रास १ ० ०

88 Bhṛṅgadūtam (भृङ्गदूतम्)—शतावधान कवि श्रीकृष्णदेव विरचितम्। Edited by Prof. S P. Chaturvedi, M. A. Printed for the first time. 0 12 0

८६ मेघदूतम्—स्थिरदेवकृतटीकासहितम्। २ ८ ०

९० वरांगचरित (जटाचार्य)—A Jaina Sanskrit (Puranic) Kāvya of the 7th century A. D. Edited with a critical Introduction, notes &c. by Prof. A. N. Upadhye, M. A. 1938.
3 6 0

नाटक

91 Uttararamacharita—Roman text and French translation on opposite pages, with an Introduction of 64 pages and with Indices of Metres and proper names. By Nadine Stchoupak. Paris 6 8 0

92 Urubhaṅgam of Bhasa (ऊरुभंगम्)—Edited with introduction, prose-order, Hindi rendering of verses, Glossary, English translation, Notes, Appendices etc. by Prof. K. N. Bhatnagar, M. A., M. O. L. Lahore 2 0 0

९३ मनोनुरञ्जननाटकम्—आपदेवसुतानन्तदेवविरचितम् । सन् १९३८ ।
काशी १ ० ०

94 Mṛchchhakatikam—with English Notes and Translation by Nerurkar. 4 0 0

95 Little Clay Cart (Mṛchchhakatika)—Attributed to Śudraka, now newly translated from the Sanskrit, with Introduction and Notes. By Revilo Pendleton Oliver.
Foreign 11 0 0

96 ललिता—A short play with English translation.
Madras 0 12 0

97 Three Plays in Sanskrit (१. प्रतिक्रिया । २. वनज्योत्स्ना । ३. धर्मस्य सूक्ष्मा गतिः ।) Madras 1 4 0

आख्यायिका

९८ मन्दारमञ्जरी—पं० विश्वेश्वरसूरिकृता । गद्यकाव्यम् । पुस्तकमिदं प्राधान्येन दार्शनिकान् विषयानतिसारल्येन विशदीकरोति । बनारस ३ ० ०

९९ श्रीराजस्थानसतीनवरत्नहारः—दसूरकरोपाह्व श्री पं० श्रीपादशास्त्रिकृतः ।
१ ८ ०

चम्पू

१०० यशस्तिलक—श्रीसोमदेवसूरिविरचित । श्री श्रुतसागरसूरिकृत व्याख्या सहित । पूर्वखण्ड ३॥।), उत्तरखण्ड (दुष्प्राप्य)— मुम्बई ५ ० ०

साहित्य

१०१ काव्यानुशासन—अलङ्कारचूडामणिविवेकाभ्यां सहितः आचार्यहेमचन्द्रकृतः । सटिप्पणः । With an Introduction containing a critical account of Mss. and a history of Gujrat as a background to the life and times of Acharya Hemachandra, and a review of his works. Edited by Rasiklal C. Parikh. 2 vols.
Bombay 6 0 0

१०२ साहित्यवैभवम् (काव्यम्)—श्रीमथुरानाथशास्त्रिसाहित्याचार्यकृतम् । Illustrating the various Angas and Upangas of Sanskrit Sahitya in Hindi Chhandas and describing alongside the scientific inventions and the state of modern society &c.
6 0 0

103 Concepts of Riti and Guna in Sanskrit Poetics, in their historical development. By P. C. Lahiri, M. A., Ph. D., Kāvyatirtha. 4 0 0

पुराण-उपपुराण

१०४ भागवतभाषा—प्रसिद्ध नाम सुखसागर अतिस्थूलाक्षर । बड़ी जिल्द मक्खन लाल जी द्वारा अनुवादित लखनऊ ७ ० ०

रामायण

१०५ अध्यात्मरामायण—भाषाटीका । रफ कागज । मुम्बई ६ ० ०

१०६ अध्यात्म रामायण—केवल भाषा सुन्दर जिल्द बंधी हुई । ग्लेज कागज । मुम्बई ३ ८ ०

107 The Adhyātma Rāmāyana—Translated into English by R. B. Lala Baijnath, B. A. Allahabad 2 0 0

१०८ सत्योपाख्यान रामायण (व्यासदेवकृत)—मूल मात्र खुले पत्रे । राम चन्द्र जी का बाल चरित्र । मुम्बई १ ८ ०

109 Beowulf and the Ramayana—A study in the Epic Poetry. By I. S. Peter, M. A, Ph D. The book deals with the political and social conditions, the women, the philosophy, etc. in the ages of the Anglo-Saxon Epic "Beowulf" and the "Ramayana" The author's new ideas regarding the construction of Ramayana, its hero and other characters, its mythological and historical portion etc., etc., are worth considering. Foreign 9 0 0

माहात्म्य

११० तुलसीमाहात्म्यदीपिका—भाषा में । काशी ० ५ ०

मन्त्रशास्त्र

१११ चिद्गगनचन्द्रिका—स्वामित्रिविक्रमतीर्थेन सम्पादिता । १ २ ०

११२ तन्त्राभिधानम्—मन्त्राभिधान-बीजनिघण्टु-मातृकानिघण्टुवर्ण वर्णनिघण्टु-बीजाभिधान-मन्त्रार्थाभिधान मुद्रानिघण्टु-वर्णबीजकोषप्रभृतिरूपात्मकम् । द्वितीयं संस्करणम् । संशोधितं परिवर्द्धितञ्च । २ ४ ०

११३ तन्त्रालोकः—अभिनवगुप्ताचार्यकृतः । श्रीराजानक जयरथव्याख्यातः । भागः ६—२॥),। भागः १२— कश्मीर २ ८ ०

११४ दक्षिणामूर्त्तिसंहिता (तन्त्र)—१९३७ काशी १ १० ०

नीति

११५ चाणक्यसूत्रम्—श्रीकौटिल्यकृतम् । पं० विजयशङ्कर मिश्र एम० ए० कृत व्याख्या तथा भूमिका सहित । पं० अनन्तराम शास्त्रि 'वेताल' कृत भाषाटीका सहित । (अध्याय १) १९३६ । काशी ० २ ६

116 Panchatantra—Translated from the Sanskrit by Arthur W. Ryder. U. S. A. 8 0 0

"सुभाषित"—देखो पृष्ठ २५७ नं० ३९९७ से ४००६ तक।

भर्तृहरिकृत ग्रन्थों के लिये "काव्यग्रन्थाः" भी देखिये।

सङ्गीत

११७ अभिनवसंगीताञ्जलि—ओंकारनाथ गौरीशंकर ठाकुर कृत। मुम्बई १ ८ ०

118 Sangit Bhavana—A descriptive booklet with illustrations. Calcutta 0 6 0

आयुर्वेद

११९ आत्मसर्वस्व—पं० भागीरथस्वामी आयुर्वेदाचार्यकृत। ३ भाग। २ जिल्दों में। कलकत्ता ६ ० ०

१२० पञ्चसायक—ज्योतीश्वराचार्यकृतनर्मकेलिकौतुकसंवादः। कविमुकुटेनडरिडना विरचितः काशी १ ० ०

१२१ रतिमञ्जरी—मूल। काशी ० १ ०

ज्योतिष

122 उत्तरकालामृतम्—कालिदासकृतम्। A rare work on Astrology with English translation and copious notes containing the essence of the principles laid down by ancient Rishis, by Pt. V. Subrahmanya Sastri, B. A. Madras 3 8 0

१२३ ज्योतिषरत्नाकर—भाषा। २ खंड। लेखक—श्री देवकीनन्दनसिंह। यह फलित ग्रन्थ बड़े ही परिश्रम से लिखा गया है। ज्योतिषियों को बड़ा लाभकारी है। पटना ६ ८ ०

HISTORY OF LITERATURE

124 Bhasa—A Study:—By A. D. Pusalkar, M. A., LL. B. A critical exposition of the baffling and still unsolved problem of Bhasa's authorship of Trivandrum Plays. (In press).

बौद्ध

१२५ प्रमाणवार्त्तिकम्—आचार्य धर्मकीर्त्तिकृतम्। Edited by Rahula Sāṅkṛtyāyana. 1938. Patna 10 0 0

मेहरचन्द लक्ष्मणदास

द्वारा

निज प्रकाशित संस्कृत-हिन्दी पुस्तकें

वेद-सम्बन्धी ग्रन्थ

१ कपिष्ठलकठसंहिता कृष्णयजुर्वेदीय—डाक्टर रघुवीर सम्पादिता । ३० ० ०

२ वाराहश्रौतसूत्रम—(मैत्रायणी-शाखीय)—Critically edited for the first time, with Mantra Index by the late Dr. W. Caland and Dr. Raghuvira 12 0 0

३ ऋक्तन्त्र—A prātiśākhya of the Sāma-Veda, critically edited with an introduction, exhaustive notes, appendices, a commentary and Sāmavedasarvānukramaṇī, by Dr. Sūryakānta, M. A., M. O. L., D. Litt., Sastri. The notes contain a detailed comparison with the other Prātiśākhyas and Pāṇini. Burnell's edition has been much improved upon with the help of new Mss. 20 0 0

४ अथर्वप्रातिशाख्य—An entirely new and unique acquisition to the Vedic Literature critically edited for the first time, by Dr. Suryakanta, M. A., M. O. L., D. Litt., Shastri. 50 0 0

5 Vedic Mysticism—Being rhythmic renderings of Vedic verses by Raghu Vira, M. A. Ph. D., D. Litt. Et Phil. Poets, philosophers and mystics from all parts of the world have been charmed by the music and freshness of the renderings. The originals and the translation are given on opposite pages. 5 0 0

6 On the interpretation of some Doubtful Words in the Atharva-Veda—By Dr. Tarapada Chowdhury, M. A., B. L., Ph. D. 3 8 0

कर्मकाण्ड

७ विवाहपद्धति—मूलमात्र अतिस्थूलाक्षर ० १० ०

८ विवाहपद्धति—नित्यानुरागिणी संस्कृत व्याख्या सहित १ ४ ०

९ **विवाहपद्धति चतुर्थीकर्म पुष्पाञ्जलि सहित**—महोपाध्याय पं० भैयाराम कृत भाषा टीका समलङ्कृत। इसमें भाषाटीका अत्यन्त ही सरल की गई है तथा शंका समाधान आदि उपयोगी विषयों का शास्त्रीय वचनों द्वारा समावेश किया गया है। इसके अतिरिक्त विवाह में सप्तपदी शाखोचार आदि विषयों को शेर और कव्वाली तर्ज में चुटकीली भाषा में कविताबद्ध करके सुयोग्य लेखक ने पुस्तक के अन्त में सन्निविष्ट किया है जो, अन्य विवाहपद्धतियों में कहीं नहीं मिलेगा। इस से यह पुस्तक और भी उपादेय हो गई है। छपाई, सफाई, पाठशुद्धता अत्युत्तम। स्थूलाक्षर निर्णयसागरी टाइप सजिल्द १ ० ०

१० **चतुर्दशरत्नविवाहपद्धति**—सरल तथा प्राञ्जल हिन्दी भाषानुवाद सहित पं० विजयानन्द खण्डूड़ी शास्त्री विरचित। कर्मकाण्ड के प्रेमियों के लिये अमूल्य उपहार। इसमें गृह्यसूत्रों तथा समस्त कर्मकाण्डीय प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर, शास्त्रीय विवेचनापूर्वक तथा सरल और रोचक हिन्दी में विवाहादि विनियुक्त मन्त्र भाष्य सहित, कन्यापक्षे विवाह पूर्वाङ्ग, वरपक्षे विवाह पूर्वाङ्ग, वाग्दान, मधुपर्क (धूल्यर्घ), कन्यादान, छोलिकाभरण, होमान्त विवाह कर्मशेष, वधूवरोपदेशार्थ गार्हस्थ्य गृहप्रबन्ध पतिधर्म पतिव्रताधर्म आदि पर हिन्दी में शास्त्रीयसारगर्भित मधुर मनोहर ओजस्वी भाषण (पद्धतियों में बिलकुल नवीन आयोजना), ऐरिणीपूजन, वसिष्ठारुन्धत्यादिपूजन, चतुर्थी कर्म, विवाहानन्तर पतिगृह जाते समय यानारोहण, ग्राम, वृक्ष, चतुष्पथ, नदी आदि के आने में मन्त्र प्रयोग, यान के टूटने उलटने आदि दुर्निमित्त हो जाने में प्रायश्चित्ति प्रयोग, वधूप्रवेश, वाप्यादि जलाशयपूजा, अर्कविवाह, प्रतिमाविवाह, कुम्भविवाह, अश्वत्थविवाह आदि विधि सहित तथा सविस्तर गोदानविधि के अतिरिक्त मुहूर्तचिन्तामणि आदि शास्त्रकारों की विवाहोपयोगी शास्त्रीय व्यवस्था, विवाह के आरम्भ होने पर वा पूर्ण होने पर श्राद्ध भोजन, प्रेतानुयान आदि वर्ज्य कार्यों का सप्रमाण निर्देश, विवाह मुहूर्तादि विचार, ज्योतिष शास्त्रानुसार वरकन्या जन्मपत्री मेलन, पारस्करगृह्य सूत्रीय मधुपर्कादि विवाहोपयोगी विचार, सविस्तर गणपत्यादि पञ्चाङ्ग पूजन, स्तम्भ-पूजनादि कार्यकलाप आदि अत्यन्त उपयोगी विषय सन्निविष्ट हैं। पुस्तक अद्वितीय तथा बड़े महत्त्व की है। इसने नवरत्न विवाहपद्धति आदि सभी को मात कर दिया है। उन में उपरिवर्णित सम्पूर्ण विशेषताएं आपको कभी नहीं मिलेंगी। इसमें सभी त्रुटियां पूर्ण कर दी गई हैं। विवाह सम्बन्धी छोटे से लेकर बड़े सभी विषयों का समावेश किया गया है। इस एक पुस्तक के पास रहते आपको विवाह सम्बन्धी अन्य पुस्तक लेने की आवश्यकता ही न रहेगी। मामूली पढ़े हुए पुरोहित और बड़े धुरन्धर संस्कृत विद्वानों सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी है। वेदमन्त्र सस्वर। छपाई, सफाई, मन्त्रपाठशुद्धता अत्युत्तम। निर्णय-सागरी उत्तम स्थूल टाइप। बढ़िया कागज। मूल्य केवल १ ८ ०

११	शुद्धश्राद्ध—मूलमात्र।	०	२	०
१२	त्रिकालसन्ध्याविधि—(यजुर्वेदी) भाषा टीका, देवर्षिपितृतर्पणविधि—और बलिवैश्वदेवविधि सहित। रोचक भाषा, प्रामाणिक विधि, शुद्ध छपाई, मोटे उत्तम अक्षर तथा बहुत बढ़िया कागज आदि विशेषताओं के कारण सभी इसी सन्ध्या को पसन्द करते हैं।	०	२	०
१३	सन्ध्या—(यजुर्वेदी) अति स्थूलाक्षर मूल	०	३	०
१४	लग्नपत्रिका अर्थात् साहे चिट्ठी—तीन तिरंगे चित्रों सहित	०	४	०
१५	गृहप्रतिष्ठा—नवीन संस्करण	०	२	०
१६	सहस्रशीर्ष—	०	१	०
१७	मयारेवत्यश्विनी शान्ति—	०	१	०
१८	एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धति भाषा टीका	०	३	०
१९	पार्वणश्राद्धपद्धति श्राद्धकृत्यसंग्रह समेत—भाषा टीका	०	४	०
२०	श्राद्धप्रश्नोत्तरावली—भाषा टीका	०	६	०
२१	संस्कारभानु भाषा टीका	०	५	०
२२	विवाहाङ्गचतुर्थीकर्मपद्धति भाषा टीका	०	४	०
२३	आश्लेषाशांति	०	२	०
२४	गौरीनवग्रह तथा स्वस्त्ययन कलशप्रतिष्ठापूजाविधि	०	१	०
२५	शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी—रुद्राभिषेक प्रयोग सहित। मन्त्रपाठ और स्वर अति शुद्ध। अतिस्थूल निर्णयसागरी टाइप। बढ़िया कागज। छपाई सफ़ाई परम मनोहर मूल्य	०	४	०
२६	शिलास्थापनविधि	०	२	०
२७	नवग्रहजपविधि	०	२	०
२८	तुलादानपद्धति	०	१	०
२९	वापीकूपतड़ागारामपद्धति—नवीन संस्करण	०	३	०
३०	एकादशीव्रतोद्यापनविधि	०	३	०
३१	नान्दीमुखश्राद्धपद्धति	०	२	०
३२	कात्यायनीशान्ति—नवीन संस्करण	०	३	०
३३	स्वस्तिवाचन	०	१	०
३४	गोदानविधि	०	२	०
३५	धर्मशांति—नवीन संस्करण	०	३	०
३६	जन्मदिनकृत्य—नवीन संस्करण	०	३	०
३७	शय्यादानपद्धति	०	२	०
३८	वैशाखोद्यापनविधि	०	२	०
३९	त्रिखलशांति	०	२	०

४० मूलर्क्षजननशांति	०	२	०
४१ कार्त्तिकस्त्रीप्रसूताशांति-नवीन संस्करण	०	२	०
४२ ज्येष्ठाशांति	०	२	०
४३ बृहत्पंचकशांति-नवीन संस्करण	०	८	०
४४ दुर्गाहवनपद्धति बलिदानविधि सहित	०	४	०

व्रतकथा, स्तोत्र

४५ सत्यनारायणव्रत कथा—भाषा टीका बहुत बढ़िया	०	६	०
४६ अनन्त कथा—भाषा टीका नवीन संस्करण-दो रंग में छपी हुई	०	६	०
४७ चन्दनषष्ठीव्रतकथा मूल	०	१	०
४८ हरितालिकाकथा उद्यापनसहित मूल	०	२	०
४९ अपराजितास्तोत्र विधि मन्त्र समेत	०	२	०
५० हनुमानचालीसा	०	१	०
५१ सोमावतीकथा मूल	०	२	०
५२ गणेशचतुर्थीव्रतकथा भाषाटीका	०	२	०
५३ इन्द्राक्षी स्तोत्र	०	१	०
५४ कमलनेत्र बढ़िया	०	१	०
५५ विष्णुसहस्रनाम-२४ अवतारों के चित्रों सहित बढ़िया जिल्द	०	७	०
५६ देवी कवच—भाषा टीका	०	२	०
५७ हनुमद्दुर्ग सहित पंचमुखी हनुमत्कवच सरस्वती स्तोत्र समेत			-)

व्याकरण, निरुक्त

५८ जैनसिद्धान्तकौमुदी—अर्द्धमागधीव्याकरणम् । स्वोपज्ञार्थप्रकाशिकाव्याख्योपेता । जैनमुनि शतावधानी रत्नचन्द्र कृतम् ।)—There are already about 16 Prākrita Grammars by the ancient writers; some of which are published, others are still in manuscript form. All of them, excepting Hemachandra's सिद्धहैमसत्काष्टमाध्याय & Chaṇḍaś प्राकृतलक्षण, generally deal with the महाराष्ट्री प्राकृत. There is no complete grammar, so far published, of the Ardha Māgadhī Prākrita–the pravachana Bhāṣā or the language of the Jaina Sūtras. Even Hemachandra has dealt very little with it, and Chaṇḍaś treatise has left many Grammatical subjects untouched. Thus there was a great need of a complete grammar of the language. The work has now been

accomplished, for the first time, by शतावधानी जैनमुनि श्री १००८ रत्नचन्द्र जी महाराज—one of the most learned scholar of the Jaina Āgamas. In the Introduction, which is also in Sanskrit, he has given the differences of the Ardha Māgadhī from the Mahārāṣṭrī, which is very useful for the students of Prākrita. Printed in the best type on very good paper & bound with gold letters. 1938. 15 0 0

५९ **नूतन हिन्दी व्याकरण**—लेखक पं० चेतराम शर्मा साहित्यरत्न, प्रोफेसर कन्यामहाविद्यालय जालन्धर। पुस्तक के लेखक परिपक्वयुक्ति पूर्णअनुभवी विद्वान् अध्यापक और उद्भट समालोचक हैं, उन्होंने वर्षों के अनुभव से, आज तक के प्रकाशित हुए लगभग ६०।७० व्याकरण सम्बन्धी पुस्तकों के गम्भीर अध्ययन के पश्चात् यह हिन्दी व्याकरण लिखा है। आज तक प्रकाशित हुए सभी हिन्दी व्याकरणों से यह पुस्तक अत्यन्त प्रामाणिक, भ्रमरहित, सरल और विवेचनापूर्ण है। हिन्दी के अखिलभारतीय ख्याति के विद्वानों प्रोफेसरों और हिन्दी भाषा विशारदों ने इस पुस्तक की भूरि २ प्रशंसा की है। निर्णयसागरी टाइप। मजबूत सुन्दर ग्लेज कागज। अत्यन्त आकर्षक और शुद्ध छपाई। पृष्ठ संख्या पौने तीन सौ के लगभग। ० १२ ०

६० **मध्यकौमुदी**—व्याकरणाचार्य पं० श्रीधरानन्द जी शास्त्री कृत सरल संस्कृत टिप्पणी सहित। मध्यकौमुदी का यह सर्वोत्तम संस्करण है। इसमें बहुत सी उपयोगी बातें जोड़ दी गई हैं। विषयानुक्रमणिका, प्रत्याहारों की तालिका, अचों के १८ भेदों का चक्र, वर्णों के स्थान और प्रयत्न के बोधक कोष्ठक अधिक लाभदायक होने से प्रारंभ में रख दिए गए हैं। अन्त में लिङ्गानुशासन और गणपाठ और पाणिनीय-शिक्षा आवश्यक समझ कर इसमें जोड़ दिए गए हैं। विद्यार्थियों का लाभ सोच कर अन्त में परीक्षा के प्रश्न पत्र और उत्तर लिखने की शैली को भी सम्मिलित कर दिया गया है। बढ़िया छपाई कागज। द्वितीय संस्करण। सजिल्द १।) विद्यार्थियों से एक रुपया। १ ० ०

६१ **शब्दरूपावलि**—पण्डित विजयानन्द खण्डूड़ी शास्त्री संपादित। इस में पहले निर्णयसागरी अत्युत्तम स्थूलाकार टाइप में 'रामो हरिः करी भूभृत्' के अनुसार अकारान्तादि शब्दों के रूप देकर साथ ही छात्रों के विशेष बोध के लिए तद्वत् रूपों वाले और भी शब्द उससे कुछ बारीक टाइप में दिए गए हैं, जिससे शब्दों के रूपज्ञान के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी हो गई है। कागज छपाई सफाई पाठशुद्धता अति उत्तम। मूल्य ० २ ६

६२ **प्राकृतव्याकरण**-अंग्रेजी अनुवाद सहित। प्राकृत एक प्राचीन भाषा है। यह भाषा संस्कृत नाटकों में बहुत करके आती है। जैनियों के सकल शास्त्र इसी भाषा में हैं। संस्कृत के

विद्यार्थी विना प्राकृत सीखे परीक्षोत्तीर्ण नहीं हो सकते। इसलिए हमने यह व्याकरण प्राकृत सीखने वालों के लिए बहुत ही सरल बनवाकर छपवाया हुआ है। साथ में अंग्रेजी पढ़े लिखों के लिये अंग्रेजी अनुवाद भी करा दिया है, जिससे इस पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। प्रत्येक लायब्रेरी में यह पुस्तक रखने योग्य है। कागज सफेद विलायती। छपाई बहुत बढ़िया। बड़ा आकार। मूल्य १ ८

६३ **लघुव्याकरण**—संस्कृत पढ़ने वालों के लिये व्याकरण विषय की यह पहली पुस्तक है। यह पंजाब के अतीत विद्वान् नवीनचन्द्रराय जी प्रणीत है। इस के विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। इतना ही कहना काफी है कि इसकी १७०१० प्रति छपकर बिक चुकी हैं और अब १८ वीं बार विलायती मोटे कागज पर छपाया गया है। १ ०

६४ **लघुसिद्धान्तकौमुदी**—उद्धव जी पुत्र रणछोड़ जी शास्त्री विरचित सारबोधनी नामक विस्तृत वा सरल संस्कृत व्याख्या समेत। विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। १॥

६५ **लघुसिद्धान्तकौमुदी सटीक**—महामहोपाध्याय पं० गिरिधरशर्म्मा चतुर्वेदी प्रिन्सिपल महाराजा संस्कृत कालेज जयपुर तथा पं० परमेश्वरानन्द शास्त्री प्रिन्सिपल सनातनधर्म संस्कृत कालेज लाहौर कृत व्याख्या सहित। इस पुस्तक पर आज तक जितनी भी टीका-टिप्पणियाँ हुई हैं, उन सब में से यह टीका अतीव सरल विस्तृत तथा सुगम है। दूसरी लघुकौमुदियों से इसमें यह विशेषताएं हैं :—

(१) मूल पाठ को शुद्ध कर रक्खा गया है। अन्यत्र मूलपाठ बहुत अशुद्धिपूर्ण है जिससे अनेक स्थलों पर भ्रम पैदा कर देता है।

(२) टीका को विद्यार्थियों के लिए विशेष उपयोगी बनाया गया है। सरलता पर विशेष ध्यान दिया गया है। कई ज्ञातव्य विषयों पर प्रकाश डाला गया है। जो अंश मूल पाठ से स्पष्ट नहीं होते, उन्हें टीका में स्पष्ट किया गया है।

(३) प्रारम्भ में स्थान प्रयत्न बोधक चक्र और प्रत्याहारों की तालिका सुगमता के लिए दे दिये गए हैं। अन्त में पाणिनीयशिक्षा तथा अकाराद्यनुक्रम से सूत्रसूची दी गई है। छपाई, सफाई, पाठशुद्धता अत्यन्त आकर्षक है। मूल्य केवल ० ८

६६ **लघुसिद्धान्तकौमुदी मूलमात्र**—विषयानुक्रमणिका, प्रत्याहारपरिगणन, स्थान प्रयत्नबोधक चक्र, पाणिनीय शिक्षा, अकारादि अनुक्रम से सूत्रसूची आदि सहित तथा परिश्रमपूर्वक संशोधित किया हुआ सर्वोत्तम संस्करण। आज तक जितने भी लघुकौमुदी के संस्करण निकले हैं, उन सब को इसने मात कर दिया है। कागज बढ़िया। निर्णय सागरी टाइप। छपाई, सफाई, पाठशुद्धता अत्युत्तम। विद्यार्थियों के लाभार्थ मूल्य लागतमात्र केवल। ० ४

६७ **संस्कृत व्याकरणम्**—लेखक डाक्टर परमानन्द बहल पी.-एच् डी., प्रोफेसर सिक्खनेशनल कालज लाहौर तथा प० परमेश्वरानन्द जी शास्त्री प्रिन्सिपल सनातनधर्म संस्कृत कालेज लाहौर। यह व्याकरण मैट्रिक के विद्यार्थियों के लिए विशेष परिश्रम से बनाया गया है। प्रत्येक स्थल पर अनुवाद शिक्षा भी साथ २ दी गई है। पुस्तक परमोपयोगी है। १ ४

६८ **सचित्र हिन्दी व्याकरण**—सब यूनिवर्सिटियों की मिडिल, मैट्रिक, हिन्दीरत्न, हिन्दी-भूषण परीक्षाओं के लिए अत्यन्त उपयोगी। मूल्य ० ४ ०

धर्मशास्त्र-वेदान्त-दर्शन-गीता आदि

६९ **सारुक्तावली**—कवि हरदयाल कृत ० ३ ०

७० **ब्रह्मचर्यदिग्दर्शन**—हिन्दी ० ५ ०

७१ **माथुरीपञ्चलक्षणी**—कवितार्किक पं० नृसिंहदेव शास्त्री दर्शनाचार्य कृत अन्वितार्थ-प्रकाशिका संस्कृत टीकोपेता। ० ८ ०

७२ **अनादितत्त्व**—संस्कृत सजिल्द ० १२ ०

७३ **श्रीमद्भगवद्गीता सचित्र गुटका**—ज्ञानदीपिका नामक हिन्दी भाषा टीका सहित। अनुवादक—महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा जी चतुर्वेदी शास्त्री व्याकरणाचार्य। यह गीता हमने गुटका साइज में अभी छपवाई है। पुस्तक के प्रारम्भ में भगवान् कृष्ण का तिरंगा बहुत ही सुन्दर चित्र बढ़िया आर्ट पेपर पर छपवा कर लगाया गया है। यह टीका **लोकमान्य भगवान् तिलक** के भाष्य के अनुसार हुई है। टीका की प्रशंसा में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। अनुवादक का नाममात्र ही काफी है। टीका की भाषा इतनी सरल है, जो थोड़ा पढ़ा लिखा भी अच्छी तरह समझ सके। जिल्द बहुत ही सुन्दर विलायती कपड़े की बंधवाई गई है। ऊपर सुनहरी अक्षरों में पुस्तक का नाम विलायती जिल्दों की माफिक छपा है। यह गुटका हाथ में लेते ही छोड़ने को मन नहीं चाहता। कागज विलायती ग्लेज ६० पौंड का लगा है। छपाई मुम्बई में कराई गई है। हमारा दावा है कि भारत भर में जितने भी गुटके गीता के आज तक छपे हैं, उन सब में यह बढ़ चढ़कर है। इसकी सुन्दरता और सरलता का कोई भी मुकाबला नहीं कर सकता। टाइप भी स्थूल है। इतनी विशेषताएं होने पर भी प्रचार दृष्टि से दाम कुल बारह आने ।॥) मात्र रक्खा गया है। ० १२ ०

७४ **भगवद्गीता मूलमात्र सचित्र गुटका**—हम ने दानी महाशयों के लिए और नित्य पाठ करने वालों के लिये उपयोगी गीता मूलमात्र गुटका साइज में भी छपवाई है। टाइप स्थूल है। छापा मुम्बई का है। जब कभी आप परदेश में भी जावें, इस मूल गुटका को जेब में डाल कर ले जाइए। पाठ के काम आवेगी विलायती कपड़े की जिल्द बंधवाई गई है। गुटका बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है। एक एक-रंगा चित्र भी। लगाया है, जिस में भगवान् श्रीकृष्ण सारथि बनकर वीर अर्जुन का रथ चला रहे हैं। दाम केवल =) दो आना है। जो सज्जन दान के अर्थ इस पुस्तक की १०० प्रति एक दम लेते हैं, उनको -)॥ से प्रति पुस्तक दी जाती है। ० २ ०

७५ **मोक्षगीता**—सवा लक्ष श्रीराम नाम का अपूर्व संग्रह। बहुत ही सुन्दर मोटे बम्बई टाइप में छपी है। कागज विलायती स्थूल। विलायती कपड़े की सर्वोत्तम जिल्द बंधवाई गई है विशेष करके स्त्रियां चातुर्मास के दिनों में पाठ करती हैं। मूल्य १ ४ ०

७६ **श्रीमद्भगवद्गीता भाषा**—स्वामी श्रीकृष्णदास किशोरदास कृत। अति स्थूलाक्षर ४८ पौंड के मोटे कागज पर छापी गई है। कपड़े की सुनहरी जिल्दसहित मूल्य १ ० ०

७७ **श्री मोक्षपंथ प्रकाश**—साधु गुलाबसिंह निर्मलाकृत। सरल भाषानुवाद सहित। यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा के अनभिज्ञ अधिकारी पुरुषों के कल्याणार्थ निर्मल सम्प्रदाय के अनुयायी श्रीराम जी के परम भक्त साधु **'गुलाबसिंह'** जी ने 'मोक्ष-पन्थ' नामक भाषा ग्रन्थ बड़ी योग्यता के साथ निर्माण किया। उदासीन सम्प्रदाय के प्रमुख स्वामी **'अरविन्दानन्द जी'** ने इसके मूलार्थ को स्पष्ट करने वाली **'मार्तण्ड'** नामक भाषा टीका का निर्माण किया। इस ग्रन्थ के अर्थ का बोधन कराने के लिए यह टीका बहुत उपकारिणी है। इसके संशोधनादि का भार वेदान्तशास्त्र के मर्मज्ञ कवितार्किक दर्शनाचार्य श्री **'नृसिंहदेव शास्त्री'** जी के सुपुर्द किया। उन्हों ने इस ग्रन्थ के विषम स्थलों पर अत्यन्त उपयोगिनी **'सौभाग्यवती'** नामक टिप्पणी का निर्माण कर युक्त रीति से इसका संशोधन किया है। शास्त्री जी की टिप्पणी सोने पर सुगन्ध के समान है। इसमें शास्त्रीय सिद्धान्तों का युक्तियुक्त समर्थन किया गया है, जो ग्रन्थ के पाठ करने से स्वयं विदित हो सकता है। इस के साथ उक्त शास्त्री जी की बनाई हुई **'वेदान्ततत्त्वसमीक्षा'** नामक भूमिका भी छाप कर लगा दी गई है। जिस में भेदवादियों के प्रबल आक्षेप का समाधान किया गया है और साथ ही टीका टिप्पणी सहित मूल ग्रन्थ की विषयानुक्रमणी भी छाप दी गई है कि जिससे पाठकों को तत्काल ही दृष्टस्थल की प्रतीति हो सके। हम आशा करते हैं कि सन्त महात्मा जन इस के प्रचार से जन्म का लाभ उठावेंगे और वेदान्तशास्त्र के सिद्धान्तों की रक्षा करते रहेंगे। छपाई मुम्बई टायप में कराई गई है। कपड़े की पक्की जिल्द सुनहरी ठप्पेदार बंधवाई गई है। कागज़ विलायती अति स्थूल। पृष्ठसंख्या ५०० मूल्य केवल ५ ० ०

७८ **पंचीकरण**—ब्रह्मनिष्ठ श्रीरामगुरु कृत। हिन्दी भाषा टीका सहित। यह भी वेदान्त विषय का बड़ा प्रसिद्ध ग्रन्थ है। छापा मुम्बई का है। कागज अतीव ग्लेज लगा है। सुन्दर कपड़े की जिल्द भी बंधी है। ३५० पृष्ठ की पुस्तक है। छापा बड़ा स्थूल है। अक्षर बड़े सुन्दर हैं। मूल्य २) रुपया है। २ ० ०

७९ **हिन्दूधर्ममर्म**—हिन्दूजाति के नर-नारियों के वेदादि प्राचीन शास्त्रीय, दार्शनिक, शैवादि सम्प्रदाय माध्यमिक, नव्य तथा नास्तिकादि सम्प्रदाय कालीन, जातीय धर्म आचार और नीति ज्ञानार्थ विरचित। हिन्दुओं का वास्तविक धर्म क्या है और हिन्दुओं का उद्धार किस प्रकार हो सकता है। यह सब मर्म प्रत्येक हिन्दू के पढ़ने योग्य है। अति पुष्ट कागज़, सुन्दर जिल्द मूल्य २ ० ०

८० **ब्रह्मचर्यदिग्दर्शन** लेखक-पं० ज्ञानचन्द्र जी मुनि। इस पुस्तक में सर्व मतों के मान्य अनेक ग्रन्थों वा शास्त्रों के प्रमाणों से ब्रह्मचर्य का माहात्म्य वर्णन किया गया है तथा प्रसंगवशात् परस्त्रीसंग, वेश्यागमन का भी खूब निषेध किया गया है। इस पुस्तक में भयोत्पादक उदाहरणों से आज कल के लड़कों वा युवाओं की कुचेष्टाओं (वीर्यपातादि) का

भली भांति विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है तथा जो मनुष्य को शारीरिक मानसिक हानि पहुंचाती है उसका ख़ाका खींचा गया है ताकि बालक युवा इस पुस्तक के पढ़ने से व्यभिचार से विमुख होकर आचारवान् बन जावें। इस विचार से इस का मूल्य ।-) पांच आना ही रखा है। जिल्द भी बंधी है। ० ५ ०

८१ **वैशेषिकदर्शन**—प्रशस्तपाद संस्कृत भाष्य तथा राजपंडित श्रीकृष्णशास्त्रि निर्मित टिप्पण सहित। इस ग्रन्थ में कणादमुनि रचित सूत्रों के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल संस्कृत में स्पष्ट किया गया है अर्थात् कणाद मुनि सम्मत पदार्थों का भले प्रकार संकलन किया है। अतएव प्रशस्तपाद कर्त्ता इसको 'पदार्थधर्मसंग्रह' नाम से लिखते हैं। उक्त शास्त्री जी ने टिप्पणी के अन्दर उन उन विषयों के मूल भूत सूत्रों के चिह्न दे दिये हैं, जिससे पाठकों को मूल सिद्धान्त का पता स्पष्टरूप से लग सकता है। यह ग्रन्थ मुक्तावली आदि नव्य न्याय ग्रन्थों का भी आधार है। छपाई मुम्बई की। यह पुस्तक कई एक महाविद्यालयों और गुरुकुलों में पाठ्यपुस्तक नियत हुई है। सजिल्द मूल्य ० १२ ०

८२ **वैशेषिकदर्शन**—पं० प्रभुदयाल जी कृत हिन्दी भाषानुवाद तथा भाषा भाष्य सहित। छापा मुम्बई। कागज छपाई बहुत उत्तम। मूल्य २ ० ०

८३ **न्यायसिद्धान्तमुक्तावली**—प्रभा नामा संस्कृत व्याख्या सहित। व्याख्याकार-कवितार्किक पं० नृसिंहदेव शास्त्री दर्शनाचार्य। आज तक जितनी भी टीकाएं मुक्तावली पर छपी हैं, उन सब में यह अति सरल, विस्तृत है तथा विद्यार्थियों के लिये परमोपयोगी है। मूलार्थ को लगाने वाली ऐसी सरल टीका आज तक कोई अन्य नहीं बनी। दर्शनाचार्य जी ने बड़ी योग्यता के साथ व्याप्तिवाद, उपाधिवाद, शाब्दबोधादि विषयों पर विशेष सरलता का ध्यान दिया है। इसकी दो भूमिका हैं। एक सर्वसाधारण छात्रों के उपयुक्त बोधार्थ तथा दूसरी "न्यायतत्त्वसमीक्षा" नामक भूमिका में अलौकिक रीति से न्याय के महत्त्व को दर्शाया गया है। पृष्ठ संख्या ५७०। छपाई सुन्दर। मूल्य सजिल्द ४ ८ ०

सम्मतियां (Opinions)

महामहोपाध्याय टी. गणपतिशास्त्री

राजकीय पंडित, सम्पादक—ट्रिवेन्ड्रम् संस्कृतग्रन्थावली

आर्याः! भवद्भिः पूर्वतरमासि प्रहितं लेखं तदनुगामिनीं च न्यायसिद्धान्त-मुक्तावलीप्रभां पण्डितवरनृसिंहदेवशास्त्रिप्रणीतां यथाकालं प्रत्यैच्छम्। किन्तु अवर्ज्य-बहुव्यापारविनियुक्तशेषेषु क्षणेषु तस्या अनुवाचनमनुष्ठीयमानमियच्चिरेणैव परिसमापितं मया। पराक्रमन्तां कामं दिनकरीयादयो मुक्तावलीव्याख्याः, प्रभैव त्वेषा मूलार्थयाथात्म्यम-क्लेशाद् बालान् मन्दमध्यमानपि ग्राहयितुं मूलग्रन्थस्वादमनुभावयितुं च प्रभवतीति मे मतिः। न केवलं पदवाक्यघटनैव, अर्थप्रतिपादनभङ्ग्योऽप्येतस्यामत्यन्तं सुकुमारा लक्ष्यन्ते।

अस्त्यत्र कश्चिद् मन्ये दैवघटितश्चमत्कारयोगः—मुक्तावलीव्याख्या अनेका अस्मद्देशे वर्त्तन्ते प्राचीनाः। तासु प्रभा नाम रायनरसिंहपण्डितप्रणीता काचिदस्ति विपुला। प्रकृतापि टीका नाम्ना प्रभैव, तत्कर्त्ता च नाम्ना नरसिंहदेव इति, नच नवीना प्रभा पुरातनीं

प्रभामुपजीवन्ती दृश्यते, गुणतस्तयोरन्योऽन्यविलक्षणत्वाद् इत्यनयोर्द्वयोर्व्याख्ययोस्तत्कर्त्रोः
दिष्ट्या नामधेयसादृश्यं घटितमिति ।

सर्वथा भवत्प्रकाशितप्रमेयं पाठशालासु अनन्यलभ्यमुपकारं बालानां वितनिष्
तीति मे विस्रम्भः । इयमत्रत्यराजकीयसंस्कृतविद्यामन्दिरीयपाठ्यग्रन्थपंक्ताववश्यं निवेश
यिष्यते । अपि नाम प्रभाया अनुमानखण्डादिकमप्यचिरात् प्राकाश्यं नीयते ।

महामहोपाध्याय पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी न्यायशास्त्री व्याकरणाचा

प्रिन्सिपल, माहराजा संस्कृत कालेज, जयपुर

कवितार्किक – श्रीनृसिंहदेवशास्त्रिमहोदयेन निबद्धा न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्
प्रभाख्या व्याख्या मया सम्यगालोचिता । अस्या लेखपद्धतिः सरला विस्तृता च
मुक्तावलीबोधोपयोगिनश्च ज्ञातव्याः सर्वेऽपि विषयाः प्रायेणास्यामन्तर्भूताः । छात्राण
मुपयोगाय नान्या काचिदीदृशी व्याख्याद्यावधि मुक्तावल्याः प्रकाशं गतेति मे बुद्धि
......तेषां ग्रन्थानां प्राचीनानि व्याख्यानानि यथा मुक्तावल्या दिनकरी तानि मूलापेक्षय
बहुतरं काठिन्यमावहन्ति न मूलबोधे छात्राणां साहाय्यमावहन्ति ।.........तामि
संभावितां महतीं विपदमपनेतुं योऽयमेतद्व्याख्यानिबन्धे कवितार्किकमहोदयेन श्रमोऽ
कृतः स सर्वथा धन्यवादार्हः संस्कृतप्रणयिनाम् । इत्यादि ।

श्रीसहजरामशास्त्रितनुजो धर्मदेवशर्म्मा बी० ए०

सम्यग्विलोक्यान्तेवासिभिर्मित्रैश्च सार्धं नवीनेयं मुक्तावल्याष्टीका प्रभा सा
गहनशास्त्रविषयसमुज्ज्वलनेन विरोधकुतर्कतमोपहारिणालोकेन यथा प्रकाशते न त
काप्यन्या पूर्वाचार्यविरचिता निर्मितिरिति कृत्वाशासेऽन्तेवासिनां चिरमुपयोगिनी भविष्यति

किञ्च मुम्बापुरीविश्वविद्यालयस्य एम० ए० (M. A.) परीक्षार्थिनां शा
धिजिगांसूनामन्तेवासिनामवश्यं पाठ्येयं मुक्तावल्यधुना सरसा सञ्जाताऽतीवसरला
हेतोरनुगृहीतैस्तैस्तैश्छात्रवृन्दैः सानन्दमभ्यर्हणीयोऽयं भवतां प्रयत्नः ।

---

८४ **बोधसार**—राजयोग का सांगोपांग वर्णन करने वाला, उपनिषदों में जहाँ त
बिखरे हुए मार्मिक प्रसंगों को अत्यन्त सरल रीति से, अत्यन्त सरल भाषा
एकत्रित करने वाला, नरहरि स्वामी का अपूर्व ग्रन्थ । २ ४

८५ **शतश्लोकी**—वेदान्त के गम्भीरतम विषयों के अनुभव को सरल भाषा में हृद
ग्राही रीति से दिखाने वाला श्री आद्य शंकराचार्य का अपूर्व ग्रन्थ । ० ६

८६ **न्यायसिद्धान्तमुक्तावली**—(कारिकावली सहिता) कवितार्किक दर्शना
पं० नृसिंहदेव शास्त्री कृत संस्कृत टिप्पणी अर्थात् "सौभाग्यवती" नामक अत्य
सरला "विवृति" सहित मनोहर सुन्दर मुम्बई टाईप में छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत है
"विवृति" ऐसी सरल तथा उपयुक्त बनी है कि प्राचीन विद्वानों की टीकाओं को
इसने पीछे कर दिया है । विद्यार्थियों के लिये परम उपयोगी है । छात्रों के सुभीते
लिये इसमें प्रश्नावली भी लगा दी गई है । जैसे भी प्रश्न सम्भवतः इस पुस्तक

आवश्यक प्रतीत होते हैं, वे सब दिक्प्रदर्शनी रीति के अनुसार प्रत्येक पृष्ठ में संगृहीत कर दिये हैं। पृष्ठसंख्या लगभग २००। मूल्य सजिल्द १ ८ ०

नीति, अर्थशास्त्र

८७ **लोकोक्तिरत्नप्रभा**—संस्कृत के १७०० सुभाषितों का संग्रह। पं० गौरीशङ्कर शास्त्रिकृत। ० ८ ०

८८ **पञ्चतन्त्रसटीक**—पाञ्चाल केसरी धुरन्धरविद्वान्, सिद्धटीकाकार कवितार्किक पं० नृसिंहदेव शास्त्री दर्शनाचार्यकृत सुबोधिनी टीका सहित। आज तक पञ्चतन्त्र पर जितनी भी टीकाएँ निकली हैं, इस ने उन सब को मात कर दिया है। जीवानन्द तथा जीवाराम आदि पण्डितों की टीकाएँ इस के सामने फीकी पड़ गई हैं। ऐसी सरल संस्कृत में इतनी विस्तृत तथा विद्यार्थियों के लिए परमोपयोगी टीका आप ने आज तक नहीं देखी होगी। इस टीका को सामने रख कर थोड़ी बुद्धि वाले विद्यार्थी भी मूलार्थ के मर्म को आसानी से भली भांति समझ सकते हैं। विद्यार्थियों के परम लाभ के लिये तथा अनुसन्धान करने वाले विद्वानों के सुभीते के लिए इस के साथ श्लोकानुक्रमणिका (तमाम श्लोकों की सूची) और विषयानुक्रमणिका भी लगा दी गई है। पृष्ठ संख्या ६५० से ऊपर। विद्यार्थियों के हित के लिए बढ़िया जिल्द सहित इतने बड़े ग्रन्थ का मूल्य लागतमात्र केवल २ ८ ०

८९ **वृन्दसतसई**—महाकवि वृन्द। परिशोधित नवीन संस्करण। वृन्द सतसई विशुद्ध नीति का ग्रन्थ है। इसके एक २ दोहे में नीति के तत्त्व को कूट २ कर भर दिया है। भाषा बड़ी सरल और प्रत्येक दोहे में दृष्टान्त बड़े मनोरञ्जक हैं। हमने इसका नवीन संस्करण सरल हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित कराया है। इस में अकारादि क्रम से दोहा सूची और कठिन शब्दार्थ सूची को भी साथ ही लगा दिया है, जिस से यह ग्रन्थ छात्रों के लिए अत्यन्त उपयुक्त बन गया है। साधारण पुरुषों के लिए भी नीति तत्त्व को जानने के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य केवल ० १२ ०

९० **संस्कृतगद्यमञ्जूषा**—श्री पं० परमेश्वरानन्दशर्मशास्त्रिणा सङ्गृहीता। म० म० श्री पं० गिरिधरशर्मकृतया भूमिकया सहिता। संस्कृताध्येतॄणामतीवोपकारिणी टिप्पणीयुता। An anthology of thought-provoking and interesting pieces of prose culled from vast Sanskrit Literature. 1 8 0

९१ **कौटलीय अर्थशास्त्र**—इसके विशुद्ध, सरल, मार्मिक, हिन्दी अनुवाद को पढ़कर आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व के भारतीय राजनीति अर्थनीति-युद्धनीति शास्त्र का वर्त्तमान पाश्चात्त्य पोलिटिक्स (Politics) एकॉनामिक्स (Economics) आदि के साथ **मुकाबला कीजिये**। यह मूल ग्रन्थ सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधान अमात्य विष्णुगुप्त चाणक्य या कौटल्य का बनाया हुआ है। इससे आप को मालूम होगा कि उस समय की शासनप्रणाली कितनी महत्त्वपूर्ण और

उदार थी ? उस समय की खुफिया पुलिस का इन्तज़ाम कितना अद्भुत था ? युद्ध में किन उपायों का अवलम्बन किया जाता था ? व्यापारियों के क्या नियम थे ? जहाजों के द्वारा व्यापार करने वालों के क्या नियम थे ? खेती आदि का प्रबन्ध किस प्रकार होता था ? आपस में राजाओं के किस तरह के सम्बन्ध होते थे ? मनुष्य-गणना आदि का प्रबन्ध किस प्रकार होता था ? राजा प्रजा का परस्पर कैसा बर्त्ताव था ? टैक्स आदि किस तरह वसूल किये जाते थे ? राज्य के सुप्रबन्ध के लिये पृथक् २ अध्यक्षों के किस प्रकार विभाग थे ? कचहरियों का प्रबन्ध किस प्रकार होता था ? जनता के पारस्परिक सम्बन्धों में क्या विशेषता थी ? इत्यादि छोटी से छोटी बात से लगा कर बड़ी से बड़ी बात तक का आप इस ग्रन्थ में बहुत ही महत्त्वपूर्ण वर्णन पायेंगे। इन बातों के अतिरिक्त इस ग्रन्थ में आवश्यकतानुसार प्रयोग करने के लिए इस प्रकार के विषाक्त धुओं और गैसों आदि का वर्णन किया गया है, जिनके द्वारा शत्रुओं का तत्क्षण नाश किया जा सकता है अपने आप पुरुष अदृश्य हो सकता है अर्थात् इसके प्रयोगों के अनुसार पुरुष स्वयं किसी को नहीं दीखता और वह सब को देख सकता है। इन में से बहुत से प्रयोगों को आज़माकर भी देखा गया है। इस शास्त्र में और भी अनेक अद्भुत २ प्रयोग हैं, जिनका पढ़ने पर ही पता लग सकता है।

इस पुस्तक को पढ़ने से आप को यह भी अच्छी तरह मालूम हो जायगा कि तत्कालीन शासन-प्रणाली आदि की अनेक महत्त्वपूर्ण बातें वर्तमान शासन-प्रणाली में तथा युद्ध नीति आदि में अभी तक भी नहीं पाई जातीं।

विष्णुगुप्त कौटल्य के बनाये हुए इस कठिन ग्रन्थ का अभी तक सरल शुद्ध सम्पूर्ण हिन्दी अनुवाद कोई भी नहीं हुआ था। साधारण जन तो क्या ? बड़े २ धुरन्धर विद्वान् भी इस ग्रन्थ के समझने में चक्कर खा जाते हैं। इसलिए ऐसे अनुवाद की आवश्यकता थी, जिससे कि साधारण जनता को भी लाभ पहुंच सके। इसी विचार से पर्याप्त प्राचीन व्याख्या सामग्री के आधार पर यह अनुवाद कराया गया है।

हमने मूल पुस्तक को भी अनुवाद के साथ ही रक्खा है। जिससे थोड़ा संस्कृत जानने वालों को भी शब्दार्थ के जानने में बड़ी सरलता होगी। जो संस्कृत नहीं जानते, वे भी केवल हिन्दी को पढ़ कर इसके सम्पूर्ण भावों को अच्छी तरह जान सकते हैं। ये सब बातें होने पर भी इस ग्रन्थ का मूल्य बहुत थोड़ा रक्खा गया है। एक हज़ार पृष्ठ के इस सजिल्द सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ का मूल्य केवल। १० ०

सम्मतियां (Opinions.)

Prof. Kailash Nath Bhatnager, M. A.

I have seen 'Kautilya–Artha-Śāstra' by Pt. Udaya Vir Shastri published by Mehar Chandra Laksmana Das, Said Mitha Bazar, Lahore. The edition contains Hindi translation along with the text. No such

other edition is available. The author has, with the help of the materials brought out up to the year 1925, removed several doubtful interpretations.

I hope the book would be warmly appreciated by the public. There should be no library without this book.

श्रीशङ्कर समाचार, ३ सितम्बर, सन् १९२५ मुरादाबाद

ग्रन्थ भी ऐसा वैसा नहीं **कौटलीय अर्थशास्त्र** जैसा वज्रग्रन्थ, दुरूह ग्रन्थ। उस को समझना कितना कठिन है? इसको हम जैसे लोग ही जानते हैं—श्रीउदयवीर शास्त्री जी ने अनथक प्रयत्नों द्वारा उसका उत्तम, सरल, प्रामाणिक अनुवाद प्रकाशित किया है। गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक श्रीप्राणनाथ विद्यालङ्कार ने इस विषय में यत्न किया था किन्तु हम निःसंकोच कह सकते हैं कि वे अपने प्रयत्न में सोलह आने असफल रहे। हम कुँ० उदयवीर शास्त्री को सहस्रशः साधुवाद देंगे कि वे अपने प्रयत्न में सफल हुए। उन्होंने अपना जीवन सफल किया। इन्होंने इस अर्थशास्त्र की संस्कृत-टिप्पणी भी पृथक् प्रकाशित की है। आप का विचार है कि भविष्य में इसी प्रकार अन्वेषण कार्य कर सकेंगे। मूल्य १०) परिश्रम, बृहदाकार ग्रन्थ, ग्रन्थ का महत्त्व इत्यादि दृष्टि से बहुत ही न्यून है। मूल संस्कृत ग्रन्थ (दो भाग) ही ओरियण्टल लायब्रेरी मैसोर से ७) रुपये में मिलता है। यह मूल सहित अनुवादात्मक ग्रन्थ भी ऐसे ढंग से लिखा गया है कि इतने सस्ते ही मूल्य में मिलता है—इससे अनुवादक की प्रशंसा करनी पड़ती है। महाविद्यालय के स्नातक श्री उदयवीर शास्त्री की इस कृति से उनका व उनके साथ महाविद्यालय मातृसंस्था का नाम उज्ज्वल हो गया, इसलिए आज हम अत्यन्त प्रसन्न हैं। महाविद्यालय के स्नातक क्या कर सकते हैं? और क्या किया? इस का मुँहतोड़ उत्तर श्री० उदयवीर शास्त्री ने दिया है। यह ग्रन्थ प्रत्येक घर में संग्रह रखने योग्य है—इस ग्रन्थ के पढ़ने से आप को आर्यों की उज्ज्वल कीर्ति का पता चल जायगा—**कौटलीय अर्थशास्त्र** जैसा अर्थशास्त्र संसार भर में देखने को नहीं मिलेगा। इस में ये २ विषय हैं—अमात्यों की नियुक्ति, पुरोहित, गुप्तचर आदि के कार्य तथा इन की नियुक्ति, दूतों का बाहर भेजना, राजपुत्रों से राजा की रक्षा, इन का पारस्परिक व्यवहार, राज्य-सम्बन्धी प्रत्येक विभागों के अध्यक्ष, उनके कार्य, मनुष्य गणना (मर्दुमशुमारी), कृषि, वाणिज्य, दफतरों की पुरानी फाइल आदि की सुरक्षा, धर्माधिकारी के कार्य, राज्यकण्टकों का नष्ट करना, संधि, विग्रह आदि छःओं गुणों का विवेचन, सेना बनाकर शत्रु पर चढ़ाई करना, सेनाओं के व्यूह, शस्त्र, अग्नि तथा विष आदि का शत्रु के ऊपर गूढ़ प्रयोग, अपने विजित देश में शान्ति आदि का स्थापित करना तथा शत्रु का हर तरह से मुकाबला करना, इत्यादि विषयों का इस ग्रन्थ में निरूपण किया गया है। वैसे तो इस ग्रन्थ में इन उपरिनिर्दिष्ट विषयों के अतिरिक्त सैंकड़ों महत्त्व पूर्ण विषय भरे पड़े हैं, परन्तु हम ने पाठकों के सम्मुख विषय का दिग्दर्शन कराने के लिये ही केवल ऊपर के विषयों का निर्देश किया है। अभिप्राय यह है कि राज्य

की प्राप्ति, उसकी संरक्षा और वृद्धि के लिये संसार में जितने भी उपाय हो सकते हैं, उन सब का ही इस ग्रन्थ में पूर्ण रीति से समावेश है। इस विषय में पाश्चात्त्य देश भी इस ग्रन्थ का लोहा मानते हैं। प्रत्येक देशभक्त व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह ऐसे बहुमूल्य ग्रन्थ को अवश्य अपने घर में संग्रह करे और उसे पढ़कर अपने देश और जाति को लाभ पहुँचावे। (नरदेवशास्त्री)

श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार

साप्ताहिक मुम्बई ता० १६ अक्टूबर सन् १९२५

चाणक्यकृत इस कठिन संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद कर अर्थशास्त्र के तत्त्वों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। इस के और भी कुछ अनुवाद पूर्व में प्रकाशित हो चुके हैं, पर ग्रन्थकार उनमें भ्रम और विश्रृंखलता बताते हैं। कोई भी मनुष्य अर्थशास्त्र के पढ़े बिना नीतिनिपुण नहीं हो सकता। पर यह विषय ऐसा गम्भीर और कठिन है कि इस में डूबने को किसी का जी नहीं चाहता। इस विषय को सरल, रोचक तथा पाठकों के समझाने योग्य बनाने की अनुवादक ने बड़ी चेष्टा की है। हमने जहां तक देखा, उनका परिश्रम बहुत सफल हुआ है। नीतिशास्त्र में पारङ्गत होने के लिये विद्वानों को इस ग्रन्थ का अवलोकन अवश्य करना चाहिये। हमारी समझ में यह अनुवाद सर्व श्रेष्ठ हुआ है। इसके पढ़ने से अर्थशास्त्र का बहुत कुछ ज्ञान हो सकता है।

माधुरी लखनऊ

कौटलीय अर्थशास्त्र संस्कृत में एक उच्च कोटि का ग्रन्थ है। इस उत्तम ग्रन्थ को सन् १९०९ में सब से प्रथम श्रीयुत श्यामशास्त्री ने प्रकाशित कराया था। अब वही ग्रन्थ सुबोध और सरल हिन्दी अनुवाद सहित लाहौर के श्रीयुत मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास जी द्वारा प्रकाशित हुआ है। इसके अनुवादक संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित हैं। मुझे कौटलीय अर्थशास्त्र का अध्ययन करने की बहुत दिनों से इच्छा थी। हिन्दी में उसके उत्तम अनुवाद के अभाव से वह इच्छा गत वर्ष तक पूरी न हो सकी। डाक्टर प्राणनाथ जी विद्यालङ्कार का अनुवाद इतना सरल न था कि आसानी से समझ में आ सके, इसलिये मैं उसका अधिक भाग न पढ़ सका। पीछे मुझे अपने मित्रों से यह भी मालूम हुआ कि कई स्थलों में प्राणनाथ जी का अनुवाद शुद्ध भी नहीं है। केवल श्रीयुत उदयवीर जी का अनुवाद ही मुझे ऐसा मिला, जो कि बहुत सरल भाषा में लिखा गया है और आसानी से समझ में भी आ जाता है। लखनऊ विश्वविद्यालय के संस्कृताध्यापक हमारे माननीय मित्र श्रीयुत आद्यादत्त जी ठाकुर से मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि यह अनुवाद बहुत शुद्ध हुआ है। मैं प्रोफेसर उदयवीर शास्त्री को इस उत्तम अनुवाद के लिये हार्दिक बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि आप इस अर्थशास्त्र पर एक विस्तृत स्वतंत्र ग्रन्थ, जिस में ग्रन्थकर्त्ता के सरल ग्रन्थ की विशेषताओं, तथा आलोचना और प्रत्यालोचना का समावेश होगा, शीघ्र ही लिखकर हिन्दी संसार को भेंट करेंगे। कौटलीय अर्थशास्त्र में महत्त्वपूर्ण वर्णन है। इतिहास, राजनीति और अर्थशास्त्र के

विद्यार्थियों को यह ग्रन्थरत्न अवश्य ही पढ़ना चाहिये। प्रत्येक लायब्रेरी में इस ग्रन्थ की एक प्रति अवश्य रहनी चाहिये। आशा है हिन्दीसंसार इस ग्रन्थ का उचित आदर करेगा।

महामहोपाध्याय पं० गणेशदत्त शास्त्री

मैंने न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योगतीर्थ, वेदान्तविशारद, विद्याभास्कर, वेदरत्न, प्रोफैसर श्रीमान् पंडित उदयवीर शास्त्री द्वारा शुद्ध हिन्दी भाषा में अनुवादित कौटलीय अर्थशास्त्र (Politics, Economics) आद्यन्त पढ़ा। मूल ग्रन्थ का कर्ता वही कौटिल्य वा महर्षि चाणक्य है, जिसने मागध नन्द को अपनी विचित्र नीति से मरवा कर चन्द्रगुप्त को सिंहासन पर बिठाया और स्वयं चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधान अमात्य पद ग्रहण किया। इस की अद्भुत कुटिल और विचित्र नीति पर पूर्व-पाश्चात्य दोनों ही विस्मित और मुग्ध हो रहे हैं। विद्वानों का स्पष्ट अनुभव है कि ऐसे दुरूह और वज्र ग्रन्थ का सर्वोत्तम, परिष्कृत, सरल और प्रामाणिक अनुवाद प्रकाश करना अत्यन्त कठिन है। किसी भी ग्रन्थ के अक्षरार्थ का परित्याग न करके सर्व साधारण के समझने लायक सरल अनुवाद करना ही अनुवादक का विशेष गुण है, जो श्री उदयवीर जी की लेखनी द्वारा निःसृत अनुवाद में सुस्पष्ट है। यद्यपि कौटलीय अर्थशास्त्र के दो एक अनुवाद पहले भी मुद्रित हो चुके हैं परन्तु श्री उदयवीर जी कृत अनुवाद सर्वोत्तम जान पड़ता है। ऐसे विशदाकार ग्रन्थ का मूल्य १०) कुछ अधिक नहीं, प्रत्युत ग्रन्थ के महत्त्व की ओर दृष्टि देने से बहुत ही न्यून है। इस अनुवाद के लिये श्री उदयवीर जी निःसन्देह कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं। यह ग्रन्थ भारतवर्ष भर के प्रत्येक पुस्तकालय (Library) और प्रत्येक घर में संग्रह करने योग्य है। विशेषतः विद्वानों का परम गुप्त धन है। इस ग्रन्थ के अध्ययन करने से आर्यकुल की दीप्तिमती कीर्ति का पूर्णरूप से पता मिल सकता है। कौटलीय अर्थशास्त्र एक अनन्य साधारण अर्थशास्त्र है—"अर्थमूलं जगत्सर्वम्"। इस में सचिव, पुरोहित, गुप्तचरादि की नियुक्ति, राज्यसंबंधी सर्व कार्य निरीक्षण, संधिविग्रहादि गुण विवेचन, विविधव्यूहविवेचन और शत्रु पर विषादि प्रयोग ही का वर्णन नहीं, वरन् जहां तहां आनुषङ्गिक रूप से धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप पुरुषार्थ-चतुष्टय का भी तात्त्विक सारांश पाया जाता है। पाश्चात्य विद्वानों ने भी कौटलीय-अर्थ-शास्त्र की बहुत प्रशंसा की है। हिन्दी भाषा में मूल सहित ऐसा सरल अनुवाद मुद्रित करके मेहरचन्द लक्ष्मणदास, अध्यक्ष संस्कृत पुस्तकालय लाहौर ने संसार का बहुत उपकार किया है—इस के लिये मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं। छापा स्पष्ट, काग़ज़ पुष्ट और सुन्दर जिल्द होने से पुस्तक सर्वथा उपादेय है। शम्।

Dr. Raghu Vir, M. A., Ph. D., D. litt. et. Phil.

Professor. Sanatan Dharm College Lahore.

I have carefully looked through the Hindi Translation of Kautilya's Arthaśāstra by Pt. Udayavir Shastri Undoubtedly it is the only best Hindi version that has appeared so far. The translator has also given an improved Sanskrit text. On a previous occasion he had

collaborated with Professors Jolly and Schmidt and had brought out the fragmentary Sanskrit commentary on-the Arthaśāstra. He has also made good use of Ganapati Śāstrī's famous work. The book is a valuable addition to modern Hindi literature.

नाटक, काव्य, अलङ्कार आदि

92 Bhāsa-A study—By **A. D.** Pusalkar M. A., LL. B., A Critical exposition of the baffling and still unsolved problem of Bhāsa's authorship of Trivandrum plays. (In Press)

९३ **स्वप्नवासवदत्तम्**—महाकवि भास का सर्वोच्च नाटक। पं० विजयानन्द खण्डूड़ी शास्त्री कृत 'विजयवैजयन्ती' नामक सरल संस्कृत व्याख्या और जीती जागती भाषा में सरल सुललित रोचक हिन्दी अनुवाद सहित। इसके प्रारम्भ में प्राक्कथन और भूमिका नाम से संस्कृत के दो सर्वमान्य पारङ्गत विद्वानों के लेख और अनुवादक द्वारा लिखित हिन्दी में नाटकीय संक्षिप्त कथा और अङ्कानुसार कथासंक्षेप तथा अन्त में हिन्दी अर्थ सहित नाटकादि लक्षण भी सन्निविष्ट हैं। परीक्षार्थियों और सुगमता से नाटक रसास्वादन प्रेमी पाठकों के लिये परमोपयोगी। छपाई सफाई कागज पाठशुद्धता अत्युत्तम। निर्णयसागरी उत्तम टाइप। सुलभसंस्करण। १ १२ ०

९४ **नागानन्द नाटक**—महाकवि श्रीहर्ष प्रणीत छात्रोपयोगी अभिनव विस्तृत सरल संस्कृत व्याख्या और समुज्ज्वल हिन्दी अनुवाद सहित। इसके व्याख्याकार हैं—सकल शास्त्रनिष्णात साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् साहित्योपाध्याय पण्डित परमेश्वरानन्द शास्त्री विद्याभास्कर, प्रिन्सिपल सनातन धर्म संस्कृत कालेज, लाहौर। आज तक नागानन्द पर जितनी भी टीकाएँ हुई हैं, उन सब से यह टीका परमोत्तम बनाई गई है। विद्यार्थियों के लिए परमोपयोगी है। छपाई सफाई परम सुन्दर। बढ़िया संस्करण सजिल्द १ ० ०

९५ **प्रतिमा नाटक**—महाकवि भास प्रणीत। सरल संस्कृत व्याख्या और परिमार्जित हिन्दी अनुवाद सहित सजिल्द १ ० ०

९६ **आश्चर्यचूडामणि**—शक्तिभद्रविरचितम् नाटकरत्नम् सव्याख्यम्। बढ़िया संस्करण। प्राचीन विस्तृत सरल संस्कृत व्याख्या सहित संशोधित सर्वोत्तम संस्करण दिव्य अक्षरों में अति सुन्दरता से छप कर बिक्री के लिये तैयार हुआ है। विद्यार्थियों के लाभार्थ कीमत बहुत सस्ती रक्खी गई है। पृष्ठ २५० से ऊपर। मूल्य बढ़िया संस्करण २ ० ०
सुलभ संस्करण १ ८ ०

९७ **धनञ्जयविजय**—भारतेन्दुकृत। हिन्दी अनुवाद सहित ० ५ ०

९८ **कुन्दमाला**—दिङ्नाग विरचिता। पं० नृसिंहदेव शास्त्री दर्शनाचार्य कृत सरल संस्कृत व्याख्या सहित। सजिल्द १।।।) अजिल्द १ ४ ०

९९ **लोकोक्तिरत्नप्रभा**—इस में संस्कृत की १७०० लोकोक्तियों का अपूर्व संग्रह है। प्रस्ताव लिखने के लिए अत्यन्त उपयोगी है हर एक विद्यार्थी के पास होनी चाहिए। मुहावरेदार

संस्कृत से प्रस्ताव अनुवाद रोचक और आकर्षक हो जाते हैं। इन लोकोक्तियों को याद कर लेने से संस्कृत अवश्य मुहावरेदार (वाग्धारायुत) हो जावेगी। यह सब लोकोक्तियां चुनी हुई हैं। विशारद और शास्त्री दोनों श्रेणियों के विद्यार्थियों के लिए यह उपयोगी है।
० ८ ०

१०० **त्रिगर्त्तोद्धारशतक काव्य**—हिन्दी अनुवाद सहित ० ५ ०

१०१ **वीरेन्द्रशतक**--हिन्दी अनुवाद सहित। ० ३ ०

१०२ **वाग्भटालङ्कार**—अन्वय, विस्तृत व्याख्या और समुज्ज्वल हिन्दी अनुवाद सहित तथा कवितार्किक पं० नृसिंहदेव शास्त्री विरचित प्रश्नोत्तरावली समलंकृत। इसके व्याख्याकार और अनुवादक हैं—विद्याभास्कर वेदरत्न प्रो० उदयवीर शास्त्री, न्याय वैशेषिक सांख्य योग-तीर्थ, वेदान्त विशारद। विद्यार्थियों की सुगमता के लिये पहले मोटे टाइप में मूल श्लोक, फिर उस से कुछ बारीक टाइप में अन्वय, तब विस्तृत संस्कृत व्याख्या, तदनन्तर प्रोफेसर महोदय की उद्भट लेखनी से निकला हुआ जीती जागती भाषा में विशुद्ध, सरल और मार्मिक हिन्दी अनुवाद। छपाई परम सुन्दर निर्णय सागरी टाइप में। पुष्ट चिकना कागज। द्वितीय संस्करण। मूल्य सजिल्द केवल १ ० ०

१०३ **काव्यदीपिका**—पं० हरिदत्तशास्त्रिन्यायव्याकरणादिसप्ततीर्थकृतसंस्कृतभाषाटीका-द्वयोपेता। १ ० ०

१०४ **काव्यादर्श**—श्री दण्ड्याचार्य विरचित। 'कुसुमप्रतिमा' संस्कृत व्याख्या तथा सौभाग्यवती टिप्पण सहित। व्याख्याकार—कवितार्किक सकलशास्त्रनिष्णात पं० नृसिंहदेव शास्त्री दर्शनाचार्य। यह बात संस्कृतसाहित्यवेत्ताओं में प्रसिद्ध है कि प्राचीन कवियों में से 'दण्डी' भी एक अग्रगण्य प्रसिद्ध महाकवि हुए हैं। इनके इस ग्रन्थ में अत्यन्त सरल रीति से रीति, गुण, अलङ्कारों का जैसा उपयुक्त वर्णन किया है, अन्य ग्रन्थों में ऐसा उपलब्ध नहीं होता। यह पुस्तक पंजाब यूनिवर्सिटी की विशारद परीक्षा में कोर्स नियत हुई है। इस पर पं० नृसिंहदेव शास्त्री ने कुसुमप्रतिमा नामक अतीव सरल और विस्तृत संस्कृत व्याख्या निर्माण की है, जो अभी हमने छपवाई है। टीका के विषय में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है कि आज तक जितनी भी टीकायें काव्यादर्श पर हुई है, उन में यह सब से सरल और उपयोगी है। इस में मूल श्लोक पृथक् २ मुद्रित किये गये हैं और उन पर प्रत्येक कारक सम्बंधी विषयों का शीर्षक दे दिया गया है। उत्तरलेख सम्बन्धी छात्रों की कठिनता दूर करने के लिये प्रत्येक स्थल पर प्रश्न लिख दिये गये हैं और उनके उत्तर का संकेत भी बता दिया गया है। आदि में भूमिका पुनः टीका सहित ग्रन्थ की विषयसूची और टीका में प्रसङ्गतः आये हुए ग्रन्थकारों की नामावली, अन्त में अकारादि क्रम से मूलकारिकाओं की अनुक्रमणी भी लगा दी गई है और इस में मुरजबन्धादि के चित्र भी मूलानुसार दिये गये हैं। पृष्ठ संख्या ४४०। कागज विलायती स्थूल छपाई अतीव सुन्दर। नूतन परिवर्द्धित

संशोधित द्वितीय संस्करण। राजसंस्करण सजिल्द ४), साधारण संस्करण सजिल्द। ३ ० ०

१०५ **कल्याणसौगन्धिकम्**—नामक कवि नीलकंठ विरचित व्यायोग। यह एक प्राचीन अतीव अद्भुत नाटक ग्रन्थ है। इसमें तीन नाटक उपलब्ध हैं। एक का रचयिता तो वलियतम्बुरान है, दूसरा विश्वनाथ कृत है जिसका यथार्थ नाम सौगन्धिकाहरण है, तीसरा नीलकंठ कवि कृत व्यायोग है। इन तीनों की कथावस्तु महाभारत के वनपर्व से ली गई है। बड़ा रोचक नाटक है। छपाई कागज बहुत ही उत्तम। मूल्य ० ८ ०

१०६ **विक्रमोर्वशीयम्**—(संस्कृत नाटक) श्रीयुत चक्रदत्त जी शास्त्री रचित विस्तृत संस्कृत तथा हिन्दी भाषा टीका द्वय सहित। छपाई कागज परमोत्कृष्ट। मूल्य केवल २ ० ०

१०७ **सत्यहरिश्चन्द्र नाटक**—हिन्दी अनुवाद सहित। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत। टीकाकार-विद्याभास्कर वेदरत्न प्रोफैसर उदयवीर शास्त्री, जिन्हों ने कौटलीय अर्थशास्त्र जैसे दुरूह ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद किया। सुबोध पद्य व्याख्या, उपोद्घात तथा छन्द अलङ्कार सहित मुम्बई टायप में छपा है। मूल्य ० ५ ०

१०८ **स्वप्न नाटक**—[महाकवि भासकृत स्वप्नवासवदत्त नामक संस्कृत नाटक का गद्य पद्यमय सर्वोत्कृष्ट हिन्दी अनुवाद] अनुवादक—कविवर पं० बलदेव शास्त्री न्यायतीर्थ। नाटक लेखन कला में भास का स्थान सर्वोपरि माना गया है। उनके तेरह नाटकों में स्वप्ननाटक भास की अद्वितीय अमर रचना है। प्रस्तुत पुस्तक उसी का समुज्ज्वल हिन्दीअनुवाद है। छपाई, सफाई, गेट-अप अत्यन्त मुग्ध कर देने वाला। ० १२ ०

१०९ **प्रतिमा नाटक**—[महाकवि भासकृत प्रतिमानाटक का गद्यपद्यमय सर्वोत्कृष्ट हिन्दी अनुवाद] अनुवादक—कविवर पं० बलदेव शास्त्री न्यायतीर्थ। इस अनुवाद की हिन्दी साहित्य के चतुर पारखियों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इसकी उपयोगिता को देख पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने यह पुस्तक हिन्दी भूषण परीक्षा की पाठ्य पुस्तक नियत कर दी है। छपाई सफाई गेट-अप अत्यन्त मुग्ध कर देने वाला। मूल्य ० १२ ०

११० **पंजाबी और हिन्दी का भाषाविज्ञान**—अर्थात् पंजाबी तथा हिन्दी भाषाओं के इतिहास, विकास, ध्वनिपरिवर्तन, अर्थपरिवर्तन, तथा वैयाकरणिक रूपों वा चिन्हों का विवेचन। इसे अवश्य पढ़िये क्योंकि भाषा विज्ञान की शिक्षा के बिना किसी भी भाषा का अध्ययन और ज्ञान सम्पूर्ण नहीं हो सकता इस पुस्तक पर पंजाब टैक्स्टबुक कमेटी ने लेखक को ७००) इनाम दिया है। मूल्य सुनहरी ठप्पेदार जिल्द सहित ३ ४ ०

१११ **आदर्शकथामञ्जरी**—ले० प्रो० हंसराज एम्. ए.। इस में उत्तमोत्तम मन्जुल मधुर कहानियाँ हैं। भावों की विशदता, भाषा का सौष्ठव सोने में सुगन्ध का काम देता है। उपन्याससम्राट—श्रीयुत प्रेमचन्द जी के कुशल करकमलों द्वारा इसे संशोधन का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। पुस्तक आख्यायिका जगत् में अद्वितीय, एवं अत्युपयोगी है। १ ० ०

११२ **निर्झर**—प्राचीन महाकवियों की चुनी हुई हिन्दी कविताओं का एक अपूर्व संग्रह। संग्रहकर्त्ता—पं० बालासहाय शास्त्री। १ २ ०

११३ **प्रतिज्ञायौगन्धरायणभाषा**—पं० बलदेवशास्त्रीन्यायतीर्थद्वारा अनुवादित भासकृत नाटक। लाहौर ० १२ ०

११४ **हिन्दीगद्यमञ्जूषा**—हिन्दी के उच्चकोटि के विद्वानों के उत्तमोत्तम गद्यलेखों का उत्कृष्ट संग्रह। संग्रहकर्त्ता—पं० चेतरामशर्म्मा साहित्यरत्न। लाहौर १ ८ ०

११५ **हिन्दी पद्य पीयूष**—हिन्दी के आधुनिक महाकवियों की चुनी हुई उत्तमोत्तम कविताओं का अपूर्व संग्रह। संग्रह कर्त्ता—श्री पं० चारुदेव शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल. लाहौर १ ८ ०

११६ **अलङ्कारकौमुदी**—ले० साहित्योपाध्याय पं० परमेश्वरानन्द शास्त्री विद्याभास्कर, प्रिन्सिपल सनातनधर्म संस्कृत कालेज, लाहौर। हिन्दी में अलङ्कारविषय की ऐसी उपयोगी पुस्तक कोई नहीं निकली। पञ्जाब यूनीवर्सिटी की प्रभाकर परीक्षा तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा आदि के लिए परमोपयोगी है। यह पुस्तक भारत भर के साहित्यमहारथी धुरन्धर विद्वानों की सर्वश्रेष्ठ सम्मतियाँ प्राप्त कर चुकी है। उन्होंने भूरि भूरि इसकी प्रशंसा की है। छपाई सफाई काग़ज़ आदि अत्युत्तम। २ ० ०

सम्मतियां (Opinions.)

न्यायशास्त्री, व्याकरणाचार्य म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी

प्रिन्सिपल, महाराजा संस्कृत कालेज जयपुर,

तथा

पं० अखिलानन्द शर्मा कविरत्न

—अलंकारकौमुदी मैंने देखी। हिन्दी भाषा द्वारा अलंकार ग्रन्थों का आशय समझने के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। इस में रस, अलंकारादि के लक्षण गद्य रूप में विस्पष्ट दिये गए हैं और प्राचीन हिन्दी अलंकार ग्रन्थों के लक्षण भी टिप्पणी रूप से संनिवेशित कर दिए गए हैं। उदाहरण प्राचीन ग्रन्थों से भी लिए गए हैं और नवीन ग्रन्थों से भी उत्तम उदाहरणों का संग्रह हुआ है। लक्षण समन्वय अति स्पष्ट हुआ है। विद्यार्थियों को इस से बहुत लाभ होना सम्भव है।......इस पुस्तक का प्रचार पूर्णरूप से होगा और छात्र इस से बहुत लाभ उठावेंगे।

पं० शालग्राम शास्त्री, साहित्याचार्य

मृत्युञ्जय भवन, लखनऊ

—अलंकारकौमुदी हमने देखी। आज तक हिन्दी भाषा में जितनी भी इस विषय की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उन सब में यह सर्वोत्तम है। चित्रमीमांसा आदि उच्च कोटि के अलंकार सन्दर्भों में जिन आलङ्कारिक अर्थों का प्रतिपादन किया गया है, उनका ज्ञान केवल हिन्दी ज्ञाताओं के लिए इस के विना नितान्त असंभव है।

पं० पुरुषोत्तमदास चतुर्वेदी साहित्याचार्य

प्रणेता—हिन्दीरसगंगाधर

—इस में भारतीय साहित्य शास्त्र के अनेक अतिज्ञातव्य विषयों का बड़ी सरल भाषा में बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है। ...सौभाग्य से यह पुस्तक संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् द्वारा लिखी गई है ।...प्रौढ़ प्रतिपादन शैली, विशद विषय-विवेचन, उचित उदाहरण—इन सब बातों ने पुस्तक को परम कमनीय बना दिया है। अलंकारों का पारस्परिक भेद समझा देने से छात्रों का बड़ा उपकार हुआ है।

कवितार्किक पं० नृसिंहदेव शास्त्री दर्शनाचार्य

भूतपूर्व प्रोफेसर, ओरियन्टल कालेज, लाहौर

—श्रीयुत पण्डित प्रवर, ऋषिकुल के प्रमुख स्नातक, विद्याभास्कर, साहित्योपाध्याय विविध विरुदों से अलंकृत तथा सनातनधर्म संस्कृत कालेज के प्रिन्सिपल श्री परमेश्वरानन्द जी शास्त्री की हिन्दी भाषा में बनाई हुई अलङ्कारकौमुदी को मैंने यथावसर आद्योपान्त अच्छी तरह पढ़ा। यह सचमुच कौमुदी (चन्द्रमा की ज्योत्स्ना) ही है पर निष्कलङ्क है और एकमात्र अन्धकार के पटल को समूल विध्वस्त करने वाली ही नहीं, किन्तु साथ ही अलङ्कारों के वास्तविक स्वरूप के न समझ पाने के सन्ताप से संतप्त हृदय वाले जिज्ञासुओं की उन उन वृत्तियों को शान्त-शीतल करती हुई परम आह्लाद को भी उत्पन्न करती है, इस में जरा भर भी सन्देह नहीं। क्योंकि इस पुस्तक में शास्त्री महोदय ने अलङ्कार स्वरूप को अच्छी तरह समझ सकने के योग्य बहुत सरल से सरल शैली का अवलम्बन किया है और यथोचित रीति से आलङ्कारिक मर्म की उपेक्षा भी नहीं की। जहां तहां सुन्दर सुन्दर उदाहरणों का अच्छा समावेश किया है, किन्तु क्षुद्र कवियों की पर्यालोचन पद्धति का पहले ही सर्वथा परित्याग कर दिया है। आश्रित ग्रन्थों के स्थलों को अङ्कित किया है, किन्तु अपने सिद्धान्त को भी विमुख नहीं किया। कितना कहें, सब प्रकार ही यह कौमुदी यदि हिन्दीभाषापद्धति की परीक्षाओं में नियत की जावे तो अनायास ही अलङ्कारों के स्वरूप के विशिष्ट पाण्डित्य होने से छात्र बहुत उपकृत होवें—यह निष्पक्ष दृष्टि से हमारी दृढ़ धारणा है और हमारी सम्पूर्ण विद्याओं के भण्डार भगवान् शङ्कर से प्रार्थना है कि यह ग्रन्थ और इस ग्रन्थ का कर्ता चिरजीवी हों। शुभम्।

महामहोपाध्याय पं० गणेशदत्त शास्त्री

प्रोफेसर, सनातन धर्म कालेज, लाहौर

—अलंकारकौमुदी को मैंने आद्योपान्त गंभीर दृष्टि से देखा। इस में जैसे बहुत ही सरल रीति से अलंकारों का विवेचन किया गया है, वह अत्यन्त हृदयङ्गम है।......सागर को गागर में पूर्ण करने का यावच्छक्य उद्योग किया गया है। विशेषतः...सुकवियों के... सरल भाषा के जो शिक्षाप्रद उदाहरण दिये हैं, वे तो मानों सुवर्ण और सुगन्धि को समवेत

कर दिखाया है। विद्यार्थियों को पूर्ण लाभ होगा।...भाषा की किसी उच्च श्रेणी में पाठ्य पुस्तक होने के लिए उपयोगी है। अलंकारों का रहस्य जानने वालों के लिए उपादेय है।

डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल एम. ए., एल-एल. बी., डी. लिट्

हिन्दू यूनिवर्सिटी, बनारस

—आपने अलंकारकौमुदी लिखकर अलंकारशास्त्र के जिज्ञासुओं को बहुत उपकृत किया है। ग्रन्थ बड़े परिश्रम से लिखा गया है और आप के अगाध पाण्डित्य का परिचायक है। स्वयं उदाहरण गढ़ने का प्रयास न कर प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों की रचनाओं में से उदाहरण देकर आपने पुस्तक का महत्त्व बढ़ा दिया है। आप का यह ग्रन्थ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में आने योग्य है।

गढ़वाली समाचार पत्र

३० सितम्बर १९३४

—रस अलंकार अभिधा लक्षणा व्यञ्जना आदि काव्य के अङ्गों का जितना अच्छा विशद विवेचन संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है, उतना शायद ही किसी अन्य भाषा के साहित्य में उपलब्ध हो। संस्कृत भाषा के विद्वान् चाहें तो संस्कृत साहित्य में छिपे हुए रत्नों से मातृ भाषा हिन्दी के साहित्य को अलंकृत कर सकते हैं। परन्तु खेद है कि संस्कृत के विद्वानों की लिखने की ओर बहुत कम प्रवृत्ति है। यह जानकर हमें अत्यन्त हर्ष हुआ कि प्रस्तुत पुस्तक के लेखक संस्कृत साहित्य के माने हुए एक विशिष्ट विद्वान् हैं। अलंकार कौमुदी का विद्वत्समाज में तथा अलंकार विषय के जिज्ञासुओं में यथोचित्त आदर होगा। प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी साहित्य की प्रचलित परीक्षाओं में पाठ्यक्रम में नियत करने योग्य है।

११७ **विदग्धमुखमण्डनम्**—विद्याभास्कर पं० परमेश्वरानन्द जी शास्त्री कृत सरल संस्कृत व्याख्या सहित। यह विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। टिप्पणी में स्थान स्थान पर हिन्दी उदाहरण भी दिये गए हैं। जिस से इस पुस्तक का महत्त्व और भी बढ़ गया है। मूल्य १ ० ०

११८ **श्रीकृष्णचन्द्रिका**—सम्पादक-यशस्वी कवि एवं हिन्दी के उद्भट विद्वान् तथा नाटककार श्रीउदयशंकर भट्ट। यह वही कृष्णचन्द्रिका है, जिसके लिये हिन्दीसंसार तरसती हुई आँखों से एक युग से देख रहा था। काव्यत्व, कला, रस, अलंकार, छन्द एवं गठन की दृष्टि से व्रजभाषा का यह अपूर्व काव्य है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध समालोचकों ने एकमत होकर इसकी उत्तमता, वर्णनवैशद्य, रचनाचातुरी की सराहना की है। विद्वान् सम्पादक ने इस में एक बड़ी लम्बी विशद भूमिका, शब्दार्थ, टिप्पणी द्वारा इस पुस्तक को सांगोपांग एवं सर्वांगसुन्दर बना दिया है। इसका प्राक्कथन लिखा है हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् भूतपूर्व प्राइवेट सेक्रेटरी महाराज छतरपुर बाबू गुलाबराय एम० ए० ने। एक बार प्रारम्भ करके समाप्त किये बिना आपका मन न मानेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। सजिल्द नयनाभिराम छपाई। मूल्य २ ८ ०

कुछ सम्मतियां (Opinions)

उद्भट समालोचक पं० किशोरीदास जी वाजपेयी

—हमारा मत है कि भाषामाधुर्य, कथाप्रवाह आदि की दृष्टि से रामचंद्रिका की अपेक्षा 'कृष्णाचंद्रिका' का दर्जा ऊँचा है।……कृष्णाचंद्रिका की भाषा टकसाली व्रजभाषा है।…इस रत्न को प्रकट करने में भाई भट्ट जी ने मन्दराचल का काम किया है। हमारे साथ समस्त हिन्दीसंसार आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करेगा। (माधुरी श्रावण, १९९२)

श्री पंडित श्यामसुन्दर भट्ट

—मेरा विश्वास है 'कृष्णाचंद्रिका' व्रजभाषा साहित्य का अपूर्व ग्रन्थ है।

श्रद्धेय बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन

—इस अलभ्य काव्य के छप जाने पर मैं हिन्दीसंसार को बधाई देता हूँ।

हिन्दी के सर्वस्व राय बहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी. ए.

—ग्रन्थ बहुत उत्कृष्ट और पठन योग्य है। आपने इसे सम्पादित करके अच्छा किया है। आपकी भूमिका भी बड़ी श्रेष्ठ है।

अध्यापक रामरत्न, भूतपूर्व मंत्री, हिन्दीसाहित्य सम्मेलन, प्रयाग

—बड़ी हृदयग्राही और परिमार्जित व्रजभाषा में यह काव्य लिखा गया है। स्थान स्थान पर कवि की मौलिक कल्पना से कथा भाग बहुत रोचक बना है। इसके सम्पादन कौशल पर मैं भी भट्ट जी को बधाई देता हूं।

आचार्य श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी

—'कृष्णाचंद्रिका' नामक पुस्तक का यत्र तत्र अवलोकन करके मुझे परमानन्द हुआ बड़ा सुन्दर ग्रन्थ है। इस प्राचीन काव्य का प्रकाशन करके श्री भट्ट जी ने बड़ा काम किया है। बधाई। दौलतपुर १६–५–३५

रायबहादुर श्री पं० चम्पाराम मिश्र बी. ए., दीवान छतरपुर स्टेट सी. आई.

—गुमानी कविकृत कृष्णाचंद्रिका का सम्पादन करके पं० उदयशंकर भट्ट ने जनता का बड़ा उपकार किया है। पुस्तक उच्चकोटि की तथा संग्रहणीय है।

राय बहादुर बाबू श्यामसुन्दर दास बी. ए. काशी

—कृष्णाचंद्रिका के लिये आपको धन्यवाद देता हूं। आपका उद्योग सराहनीय है।

गुलाबराय एम. ए. भूतपूर्व प्राईवेट सेक्रेटरी, छतरपुर सी. आई.

—गुमानी मिश्र की कृष्णाचंद्रिका कृष्णसाहित्य की परम्परा में एक विशेष स्थान रखती है। इस पुस्तक में केशव की रामचन्द्रिका की भांति बदलते हुए छन्द हैं, जो कि पाठक के मन में एक सुखद वैभिन्य उत्पन्न करते हैं। इस के द्वारा पाठक छन्दःशास्त्र का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।……यह तो काव्यधारा में एक प्रकार की उथल-पुथल पैदा कर देती है तथा कवि की कविताकल्लोलिनी मानसिक काव्य उल्लास को बरबस विभोर कर देती है। ऐसी पुस्तक को प्रकाश में लाकर श्री भट्ट जी ने व्रजभाषाभाषियों पर बड़ा उपकार किया है।

हनुमानप्रसाद पोद्दार, सम्पादक—'कल्याण', गीता प्रेस, गोरखपुर

—कृष्णचन्द्रिका मेरे यहां से न छप सकी, इसका मुझे दुःख है। इसकी अच्छाई के विषय में क्या राय देनी है? इसके लिए आपका आभारी हूँ।

सरस्वती मासिक पत्रिका, इण्डियन प्रेस, प्रयाग

—यह व्रजभाषा का एक प्राचीन काव्य ग्रन्थ है, जिसमें श्रीमद्भागवत के आधार पर कृष्णचरित्र की आरम्भिक कथा दी गई है। ......काव्य और भाषा सौष्ठव की दृष्टि से यह एक उत्तम श्रेणी की पुस्तक है।

११९ **चौबीस अवतार**—कविसम्राट् श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी महाराज रचित। इस में मत्स्य, कूर्म, नर नारायण, महामोहिनी, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, ब्रह्मा, रुद्र, जालन्धर, विष्णु, शेषशायी, अर्हन्तदेव, मनु, धन्वन्तरि, सूर्य, चन्द्र और श्रीरामावतार आदि अवतारों का सुललित कविता में रोचक वर्णन है। सम्पादक—प्रो० ओङ्कारनाथ भारद्वाज, गवर्नमेन्ट इण्टरमीडिएट कालेज, कैम्बलपुर। छपाई, सफाई, अत्यन्त सुन्दर। बढ़िया जिल्द मूल्य २ ० ०

१२० **अनुवादप्रभा**—अनुवाद के लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक। आज तक जितनी भी अनुवाद की पुस्तकें निकली हैं, इसने उन सबको मात कर दिया है। इससे साधारण छात्र भी थोड़े ही समय में आसानी से संस्कृत में सुन्दर अनुवाद बनाना सीख सकता है। यह नवीन चतुर्थावृत्ति लेखक ने पुनः परिश्रम करके बहुत ही परिवर्द्धित और परिसंस्कृत की है, कई उपयोगी बातें और भी बढ़ा दी गई हैं, जिस कारण पृष्ठों की संख्या भी बहुत बढ़ गई है। तदपि विद्यार्थियों के हित के लिये मूल्य केवल बारह आने है। ० १२ ०

सम्मतियां (Opinions)

महामहोपाध्याय पंडित शिवदत्त शर्म्मा

भूतपूर्व प्रधान पण्डित, ओरियण्टल कालेज, लाहौर

पञ्जाबप्रान्तीयभङ्गनगराभिजन-पण्डितशिवदयालुतलीतनय-पण्डितगौरीशङ्कर-शास्त्रिनिर्मिता अनुवादप्रभा आदितः समाप्तिपर्यन्तमवलोकिता। तत्र विषयपरिपाटी दृक्क्रमेण सन्दर्भीकृता यथा बालानामनायासेनैव संस्कृतभाषणनैपुण्याभिमुखत्वं जायेत। एतादृशां पाठशालासु नियोगेऽतिशायितो लाभो बालानां भवेदेवेति सम्मनुते शिवदत्तशर्मा। **महामहोपदेशक पञ्जावभूषण विद्यासागर पण्डित बुलाकीराम शास्त्री** मेयो कालेज, अजमेर।

अनुवादप्रभां रम्यां बालानामुपकारिणीम्। संस्कृतांगलच्छात्राणां विशेषादुपयोगिनीम् ॥१॥
प्राच्यप्रतीच्यभाषानुवादशिक्षाप्रदायिनीम्। सव्याकरणविज्ञानवाक्यविन्यासबोधिनीम् ॥२॥
दृष्ट्वा हृष्टोऽस्मि सुप्रीतः समीहेऽस्याः प्रचारणम्। प्रवेशिकापरीक्षार्थं मध्यमार्थमथापि वा ॥३॥
यद्यप्येतादृशाः सन्ति बहवोऽन्येऽपि संग्रहाः। तथापि सारसंक्षेपसारल्यादियमुत्तमा ॥४॥
पञ्चाम्बुभूषणादिविद्यासागरशास्त्र्युपाधिधारी। बुलाकीरामशर्म्माऽनुवादप्रभां समनुमनुते ॥५॥

गोस्वामी पंडित रामरङ्ग शास्त्री,

भूतपूर्व हेड पण्डित, सेण्ट्रल मौडल स्कूल, लाहौर

इस विषय की ऐसी उत्तम पुस्तक रचकर शास्त्री जी ने विद्यार्थियों पर बड़ा ही उपकार किया है। इसके अभ्यास द्वारा छात्रगण हिन्दी वाक्यों का यथाक्रम संस्कृत में अनुवाद बड़ी ही सुगमता से कर सकते हैं तथा अनुवादविषयक व्याकरण के नियमादिक का परिज्ञान भी इसके द्वारा उत्तमता से हो सकता है। पण्डित जी ने गुणाढ्य सम्पन्न पुस्तक को बना कर 'एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा' इस न्याय को चरितार्थ कर दिया है।

सरस्वती, प्रयाग

संस्कृत पढ़ने वाले छोटे छोटे लड़कों को अनुवाद करना सिखाने के लिए यह लिखी गई है। व्याकरण के स्थूल नियम आदि इस में नये ढंग से बताये गए हैं। अभ्यास के लिए अनुवाद पाठ भी दिये गए हैं और आवश्यक बातें हिन्दी में अच्छी तरह समझा दी गई हैं। पुस्तक अपने उद्देश्य की सिद्धि की साधक है।

ब्राह्मणसर्वस्व, इटावा

पुस्तक अच्छी है।

दैनिक भारतमित्र, कलकत्ता

समझाने का ढंग अच्छा है। विद्यार्थियों के बहुत काम की चीज है।

चिकित्सक (आयुर्वैदिक मासिकपत्र), कानपुर

इसमें हिन्दी और अंग्रेजी के सहारे सरल विधि से संस्कृतानुवाद सिखाने की उत्तम रीति है।

Copy of Circular Letter No. 1351 Punjab Text-Book Committee Lahore.

No. 1351

FROM

THE SECRETARY, PUNJAB TEXT-BOOK COMMITTEE, LAHORE.

To

PANDIT GAURI SHANKAR SHASTRI, K. G. C., HINDU HIGH SCHOOL, JHANG.

Lahore the 18th: September 1917.

SIR,

With reference to your publication entitled "Anuvad Prabha," recently under the consideration of the Punjab

Text-Book commitee, I have the honour to state that it has been included in the list of books authorised for use in Government, Board and Aided Schools in the Punjab as an alternative text-book.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient Servant,
(Sd.) E. TYDEMAN,
SECRETARY,
Punjab Text-Book Committee.

सङ्गीत–छन्दःशास्त्र

१२१ **रागविबोध**–श्रीसोमनाथ विरचित सटीक सजिल्द ५ ८ ०

१२२ **वृत्तरत्नाकर**–विदित हो कि कवितार्किक पं० नृसिंहदेव जी शास्त्री दर्शनाचार्य कृत अति सरल तथा विस्तृत संस्कृत और हिन्दी दोनों टीकाओं सहित वृत्तरत्नाकर छप कर तैयार हो गया है। इसमें उदाहरणान्तरों से लक्ष्यलक्षणभाव को भले प्रकार स्पष्ट कर दिया गया है। छपाई सफाई और कागज ऐसा उत्तम है कि देखने से ही अनुभव हो सकता है। यह संस्करण बड़े यत्न से शुद्ध निकाला गया है और साथ में विद्यार्थियों की सुगमता के लिये पञ्जाब यूनिवर्सिटी की **१० वर्ष की परीक्षा प्रश्नोत्तरमाला** भी लगा दी गई है। तीसरा संशोधित संस्करण। मूल्य केवल ० १२ ०

१२३ **छन्दोबोधः**—संस्कृत और भाषा छन्दों की पुस्तक हृषीकेश भट्टाचार्य प्रणीत। ।)

इतिहास

१२४ **हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास**—प्रो० सूर्यकान्त शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल० कृत। यह सस्ता, सरल, शीघ्रबोधगम्य और विद्यार्थियों के लिये विशेष उपयोगी नवीन ढंग पर रचा गया है। सजिल्द ३ १२ ०

Opinions of Eminent Scholars.

Rai Bahadur Hira Lall, B. A. Retired Deputy Commissioner, Jubbulpore.

Most welcome contribution to the literature suited for text-book for students in colleges, places your work on a high level and discovers in you not only originality, but the makings of a sound scholar.

Prof. Dhirendra Varma, M. A., D. Litt., Head of the Hindi Department, Allahabad University.

I am sure his Critical History of Hindi literature will have a lasting and unique place amongst the books on the subject.

Dr. Mangal Dev Shastri, M. A., D. Phil. (Oxon), Benares.

I think the book is the first of its kind in Hindi.

Dr. Bhagwan Das M. A., D. Lit., Benares.

You have made a useful addition to Hindi literature, which is much above the average.

Babu Ram Saksena, M A.. Allahabad University.

The plan is systematic and the treatment is judicious and balanced. Modern principles of literary criticism have been carefully applied and the opinions expressed are well authenticated. 1 trust the book satisfies a real need.

Pandit Mahavir Prasad Dvivedi, Daulatpur.

This history is unique in many respects. I admire the author's literary acumen. His work deserves recognition.

Krishna Nand Pant, M. A., M. O. L., Sahityacharya etc. Head of the Hindi Deptt., Meerut College.

The learned author has untilised his vast learning in elucidating the knotty points and explaining the doctrines of different schools of philosophy as well as the principles of Sufism. The book has removed a long-felt want of a critical history.

Ganga Nath Jha, M. A., Vice Chancellor, Allahabad University.

The book appears to have been carefully compiled.

Dr. Veni Prasad M. A., F. Sc. History Deptt. Allahabad University.

Your criticism is learned and judicious.

Rai Bahadur Lajja Shanker Jha, M. A., Retired I. E. S. Principal. Teachers Training College, Banares.

The book being the best of its kind in Hindi should find a place among the text books prescribed for the students of the language in the different Universities of Northern India.

पण्डित रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मन्दिर, प्रयाग

हिन्दी में अपने विषय की पहली गवेषणापूर्ण पुस्तक है। आपकी विचारशैली, प्रौढ़ और प्रामाणिक जान पड़ती है। हिन्दी साहित्य के इतिहास प्रेमियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

Maithili Sharan Gupta, the premier Hindi poet, Jhansi.

The Hindi world should feel proud of it.

Prof. Prabhudutt Shastri, M. A., Ph. D., I. E. S., Calcutta.

It is an extremely well-written book, thoughtful, critical and elegant.

Gaya Prasad Dikshit, M. A. (Hons:), Fellow, Lucknow University & Teacher, Mahila Vidyalaya.

The Scholarly manner in which eminent poets like Surdas, Tusidas and Vidyapati etc: are presented in the light of just criticism reveals keen insight into and a thorough grasp of the subject on the part of the author. The book is, therefore, a decided improvement over its predecessors. The book will be found extremely useful by the students of Hindi language & literature.

Amar Nath Jha, M. A., Allahabad University.

I desire to congratulate you on your Industry, critical powers and gift of clear exposition. I am keeping the book with me for I am sure it will be of great value.

Prof. Hardutt Sharma M. A., Ph. D., S. D. College, Cawnpore.

The language and the style have a flow and the classification of the subject-matter has been very good.

Prof. Shridhar Pant, M. A. (Sans.), M. A. (Hindi), Shastri. (Phi.), Shastri (Lit.), L. T., K. T. Bareilly.

The language of the work is flowing and often poetical and the criticisms are generally sound and bear the impress of assiduity and scholarship.

N. C. Mehta, I. C. S., Lucknow.

I am very glad that such excellent books are being produced in Hindi.

राय बहादुर श्यामसुन्दरदास, काशी

आपका उद्योग सराहनीय और उसके लिए मैं आपको हृदय से बधाई देता हूं।

श्रीयुत डा. रामप्रसाद त्रिपाठी, एम. ए., D. Sc.

इतिहास विभाग, विश्वविद्यालय; प्रयाग

उन धार्मिक आन्दोलनों का, जिनका साहित्य पर विशेष प्रभाव पड़ा, आपने सुन्दर और सहानुभूतिपूर्ण वर्णन और विवेचन किया है। अनेकानेक बातें जो अभी तक अंग्रेजी भाषा के आवरण में छिपी हुई थीं, उनको आपने हिन्दी भाषा भूषित करके हिन्दी प्रेमियों का स्तुत्य उपकार किया है। इतने आकार के किसी हिन्दी साहित्य के इतिहास में इतनी ज्ञातव्य बातें और ऐसा विशद वर्णन मुझको अभी तक देखने को नहीं मिला। एतदर्थ आपको बधाई देता हूं। आपके इतिहास से विद्यार्थियों को ही नहीं, सभी को लाभ होगा।

श्रीयुत ज्वालाप्रसाद जी सिंहल, साहित्य मंत्री, एम. ए., एल. एल. बी.

श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति

लेखक की शैली विद्वत्तापूर्ण और उसकी खोज सराहनीय है। लेखक ने साहित्य के इतिहास जैसे विषय को भावपूर्ण विवेचन से हृदयग्राही बना दिया है।

प्रोफेसर पं० श्रीधरानन्द शास्त्री व्याकरणाचार्य

शीतला मन्दिर संस्कृत विद्यालय, लाहौर

लेखन शैली प्रभावित करने वाली, भाषा प्राञ्जल और भावपूर्ण है। सभी प्रकरण अत्यन्त महत्त्व के हैं। हिन्दी साहित्य में इतनी उत्तम विवेचना कहीं भी नहीं निकली। रहस्यवाद के रहस्य को खोलने में लेखक ने कमाल किया है। पुस्तक विद्वानों के लिए अपूर्व आनन्द देने वाली है। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

१२५ **शिवराजविजय**—पं० अम्बिकादत्त व्यास कृत। संस्कृत टीका सहित। टीकाकार कवितार्किक पं० नृसिंहदेव शास्त्री दर्शनाचार्य। सजिल्द सम्पूर्ण ५ ० ०

१२६ **शिवराजविजय हिन्दी**—इस पुस्तक में अत्यन्त ही सरल चित्ताकर्षक और मन को उत्तेजन करने वाली हिन्दी भाषा में हिन्दू जाति के परम रक्षक महाराज शिवाजी का जीवन चरित वर्णन किया गया है। यह पुस्तक हर एक हिन्दूमात्र को अवश्य पढ़नी चाहिये। १ १२ ०

१२७ **संस्कृत कविचर्चा**—[संस्कृत के प्रसिद्ध कवियों के जीवन तथा समय का निरूपण और उनकी कविता की समीक्षा] लेखक—पं० श्री बलदेव उपाध्याय एम. ए. साहित्याचार्य, प्रोफेसर हिन्दू विश्वविद्यालय। काशी २ ० ०

कामशास्त्र

१२८ **अनङ्गरंगमूल**—कामविषयक अत्युत्तम ग्रंथ सजिल्द। १ ० ०

चिकित्सा

१२६ **सुश्रुतसंहिता**—भाषाटीकासहित । टीकाकार—प्रसिद्ध डा. भास्कर गोविन्द घाणेकर बी. एस्. सी. (बॉम्बे), एम्. बी. बी. एस्. (बॅम्बे). आयुर्वेदाचार्य, प्रोफेसर आयुर्वेद कालेज, हिन्दू यूनिवर्सिटी, बनारस। हिन्दी अनुवाद के साथ २ प्रत्येक विषय पर टीकाकार ने अपने मार्मिक विद्वत्तापूर्ण हृदयंगम वक्तव्य (विशेष नोट) दिये हैं। उनमें कठिन तथा गूढ़ शब्दों की अर्थसिद्ध, विविध मत भेद तथा उनका निर्णय चरक सुश्रुतादि बीसियों ग्रन्थों द्वारा किया गया है। मूल में जहां अति संक्षेप है परन्तु आयुर्वेद के अन्य ग्रन्थों में जिसका विस्तार से वर्णन मिलता है, वहां उन ग्रन्थों के उद्धरण दिये हैं। स्थान २ पर सुखाववोध के लिए तुलनात्मक कोष्ठक दिये हैं। महर्षि सुश्रुतप्रतिपादित सिद्धान्तों के साथ २ उन उन विषयों पर ऐलोपैथी (डाक्टरी), होमियोपैथी तथा उन्नतिशील आधुनिक वैज्ञानिकों के सिद्धान्त भी विस्तृत विवेचनापूर्वक स्पष्ट किए गए हैं। आयुर्वैदिक पारिभाषिक शब्दों के लिए डाक्टरी पारिभाषिक शब्द दिये गए हैं। आयुर्वैदिक कल्पनाएँ डाक्टरी परिभाषा में प्रदर्शित की हैं। आयुर्वैदिक मतों और गूढ़ आशयों का परीक्षण डाक्टरी और नव्यविज्ञान के अनुसार करके जहाँ दोनों का समन्वय हो सकता है वहाँ समन्वय करने की चेष्टा की गई है। इस टीका को लिखने में अनेक संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, बंगाली ग्रन्थों से अमूल्य सहायता ली गई है, इससे इस बृहद् ग्रन्थ की उपयोगिता और महत्त्व और भी बढ़ गया है, जिससे यह ग्रन्थ आयुर्वेदप्रेमी डाक्टरों और डाक्टरी मतों के जिज्ञासु वैद्यों सब ही के लिए अत्यन्त लाभकारी हो गया है। आज तक व्याख्या वा भाषाटीकासहित सुश्रुतसंहिता के जितने संस्करण निकले हैं, उनमें उपरिवर्णित विशेषताएँ आप ढूँड कर भी न पाइएगा। सुश्रुत को ठीक २ समझने के लिए जिन २ बातों की आवश्यकताएँ एवं आकांक्षाएँ हुआ करती थीं, वे सब इसमें पूर्ण कर दी गई हैं। प्रारम्भ में भारतविख्यात श्रीयुत यादवजी त्रिकमजी आचार्य की मार्मिक भूमिका, टीककार का हृदयङ्गम निवेदन, विस्तृत विषयानुक्रमणिका, सुश्रुत में प्रयुक्त हुए सम्पूर्ण विशेष संस्कृत हिन्दी शब्दों की अनुक्रमणिका, अंग्रेजी इन्डेक्स (Index of English words in the Book) आदि उपयोगी विषय सहित। अत्यन्त सुन्दर। निर्णयसागरी बढ़िया टाइप। उत्तम कागज। पुष्ट रमणीय जिल्द। प्रथम भाग—सूत्रनिदानस्थानात्मक, पृष्ठ संख्या लगभग ५००। मूल्य लागतमात्र केवल ५), राजसंस्करण १० ० ०

१३० **सुश्रुतसंहिता शरीरस्थान**—भाषाटीका सहित आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेव विद्यालङ्कार विरचित सञ्जीवनी नामक हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्या की सरलता और मूलार्थाभिव्यञ्जकता की अनेकों विद्वानों ने भूरि भूरि प्रशंसा की है। छपाई सफाई अत्युत्तम, सजिल्द। १ ८ ०

१३१ **स्वास्थ्यचिन्तामणि**—कविराज सदानन्द कृत हिन्दी अनुवाद सहित। इस पुस्तक में चरकसंहिता के आधार पर स्वास्थ्य ठीक रखने के विषय पर प्रकाश डाला गया है। ० ४ ०

१३२ **माधवनिदान मूलमात्र**—जेबी गुटका। प्रत्येक श्लोक के ऊपर उसका विषय शीर्षक दिया गया है। पुस्तक के अन्तर्गत अधिकारों की अनुक्रमणिका तथा विषयानुक्रमणिका भी साथ दे दी गई है। पृष्ठ ४५०। सजिल्द ० १२ ०

१३३ **माधवनिदान**—मूलग्रन्थ की हिन्दी भाषाटीका, मधुकोषनामक संस्कृत व्याख्या तथा मधुकोष की विस्तृत हिन्दी भाषाटीका सहित। टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य प्रो० दीनानाथ जी शास्त्री वैद्यवाचस्पति। संशोधक—आयुर्वेदाचार्य प्रो० पूर्णानन्द जी पन्त। माधवनिदान और उस पर मधुकोष नामक संस्कृत व्याख्या का आयुर्वेद संसार में कितना उच्च स्थान है। किन्तु अब तक संस्कृतानभिज्ञ तथा अल्पसंस्कृतज्ञ छात्र उसके अविकल ज्ञान से वञ्चित ही रहते आए हैं। मधुकोष व्याख्या के प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद की वैद्यसमाज में चिरकाल से आवश्यकता अनुभव हो रही थी। इसी अभाव की पूर्ति के लिए इस उत्कृष्ट ग्रन्थ का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद तैयार किया गया है। ग्रन्थ अपनी उपयोगिता में सब से बढ़ चढ़कर तथा आज तक के निकले हुए माधवनिदान के सब संस्करणों को पछाड़ने वाला निकला है। मूल माधवनिदान, उसका हिन्दी अनुवाद, तदनन्तर मूल के विषय में वक्तव्य, तत्पश्चात् मधुकोषनामक संस्कृतव्याख्या और उसके अनन्तर मधुकोष का प्रामाणिक परिमार्जित हिन्दी अनुवाद तथा स्थान २ पर विविधविषयावगाही मार्मिक एवं विद्वत्तापूर्ण वक्तव्य; सब अपनी उपयोगिता में एक एक से बढ़कर हैं। पृष्ठ संख्या लगभग ११०० ग्यारह सौ। ग्रन्थ यद्यपि बृहदाकार है तथापि सर्व साधारण के लाभार्थ मूल्य अजिल्द ५) तथा सजिल्द— ५ ८ ०

१३४ **आयुर्वेदीय नावनीतकम्**—प्राचीन आयुर्वेदिक समय के बहुत ऐसे ग्रन्थ लुप्त हैं, जिनका हमें नाम भी ज्ञात नहीं। उन्हीं में से एक १७०० वर्ष का प्राचीन हस्तलिखित 'नावनीतकम्' नामक ग्रन्थ एक अंग्रेज़ विद्वान् को पूर्वीय तुर्किस्तान में चीन देश के निकट मिला है। जिसे भारतीय गवर्नमेण्ट ने प्राचीन भाषाओं तथा लिपियों के निपुण विद्वान् डा० हार्नले से ठीक कराकर छपवाया और दाम प्रति पुस्तक १५०) के लगभग रक्खा गया। इसी पुस्तक को हमने आयुर्वैदिक जनता के लिये छपवाया है। बहुत ओषधियों और योगों को कल्पों में विभक्त करके उनके पृथक् २ प्रयोग दिखलाए गए हैं। विशेष करके वाजीकरण, रसायन, अंजन, मुखलेप, अगदतंत्र, बस्तिकर्म; मन्त्रसिद्ध और रमल इत्यादि विषयों पर विवरण है। संस्कृत सरल और प्रत्येक श्लोक छन्द बड़ा मनोरञ्जक है। सुनहरी जिल्द ३ ० ०

इसी पुस्तक के राजसंस्करण का मूल्य ८ ० ०

१३५ **चक्रदत्त सटीक**—शिवदास कृत प्राचीन संस्कृत व्याख्या समेत। गुटका

सायज़। छपाई काग़ज़ बहुत बढ़िया। सुनहरी ठप्पेदार जिल्द, मूल्य ३ ८ ०

१३६ **चक्रदत्त भाषा टीका सहित**—रसतरङ्गिणी के प्रणेता कविराज सदानन्द शास्त्री प्राणाचार्य कृत सारचन्द्रिका नामक विस्तृत हिन्दी भाषा अनुवाद सहित। इस में कोई सन्देह नहीं कि इस समय चक्रदत्त की अनेक व्याख्याएं मिलती हैं। किन्तु मूलार्थ को लगाने वाली ऐसी सरल टीका आज तक कोई नहीं बनी। क्योंकि टीकाकार ने इस में सरल तथा सरस अनुवाद करने के अतिरिक्त अनेक सन्दिग्ध तथा विषम स्थलों पर प्राचीन आचार्यों के विभिन्न मतों का उल्लेख कर दिया है। इसके अतिरिक्त कुल योगों की वर्त्तमान कालोचित मात्राओं का भी उल्लेख किया गया है, जो आपको किसी भी अन्य टीका में नहीं मिल सकेगा। इस व्याख्या के साथ "रत्नप्रभा" नामक टिप्पणी द्वारा जटिल विषयों का विवेचन करते हुए विद्यार्थियों की सब शंकाओं का सुगम भाषा में समाधान किया गया है। मूल पाठ को विशेष यत्न से खोज करके शुद्ध किया गया है। छपाई काग़ज़ बहुत बढ़िया है। नवीन संस्करण। पृष्ठ संख्या ५४५। इस समय जो दूसरा चक्रदत्त भा० टी० मिलता है, वह वेंकटेश्वर प्रेस मुद्रित है। उसकी पृष्ठसंख्या केवल ३६२ है। उस में उपरोक्त विशेषताएं बिलकुल नहीं हैं। जिसका मूल्य ३॥) उन्होंने रक्खा हुआ है। किन्तु हमारे चक्रदत्त के पृष्ठ अधिक होने पर भी हमने बढ़िया जिल्द सहित का मूल्य रक्खा है केवल ४ ८ ०

इसी पुस्तक का लायब्रेरी संस्करण ६), राजसंस्करण का मूल्य १२ ० ०

१३७ **कैयदेवनिघण्टु अर्थात् पथ्यापथ्यविबोधक भाषा टीका सहित**—कैयदेव विरचित यह प्राचीन ग्रन्थ अभी तक लुप्त ही था, जो अब पहली बार छपा है। सम्पादक हैं :—आयुर्वेदाचार्य सुरेन्द्रमोहन बी०, ए०, वैद्यविद्यानिधि, प्रिंसिपल, दयानन्दायुर्वैदिक कालेज, लाहौर। (१) भिन्न २ भारतीय भाषाओं के नाम (२) वानस्पतिक संज्ञाएं (Botanical names) जो वर्त्तमान वैज्ञानिक संसार में प्रचलित हैं (३) द्रव्यों का आकृति-परिचय अर्थात् अमुक द्रव्य वृक्ष है वा लता वा गुल्म इत्यादि उसके भिन्न २ भाग-पत्र, शाखा मूलादि की आकृति का वर्णन (४) द्रव्यों का उत्पत्तिस्थान (५) पर्यायों का शब्दार्थ तथा भावार्थ (६) मात्रा (७) व्यवहार विधि अर्थात् अमुक द्रव्य का चूर्ण, क्वाथ, लेहादि कैसे और कितना व्यवहार किया जाय ? (८) विशिष्ट गुण (९) शास्त्रों में अमुक द्रव्य का उल्लेख किस २ योग में मिलता है ? (१०) छोटे छोटे अनुभूत योग (११) ४० पृष्ठ की दीर्घ भूमिका में रस, वीर्य, विपाकादि, निघण्टु परिभाषा पर विस्तृत लेख इत्यादि भाव इस ग्रन्थ को अन्य सब वर्त्तमान निघण्टुओं से उत्कृष्ट बनाते हैं। पृष्ठ लगभग ५००। सजिल्द।

५ ० ०

१३८ **शार्ङ्गधरसंहिता**—सर्वोत्तम हिन्दी भाषानुवाद सहित। व्याख्याकार—श्रीमद्दयानन्द आयुर्वेद महाविद्यालय के रसायनाध्यापक आयुर्वेदाचार्य कविराज श्रीहरदयाल जी

वैद्यवाचस्पति। इसमें भाषा बहुत ही सरल है। ऐसी सत्य, भ्रमरहित, आयुर्वेद के रहस्यपूर्ण प्रक्रिया और प्रयोगों को सरलता और विस्तारपूर्वक समझाने वाली कोई भी भाषाटीका आज तक नहीं निकली। मात्रा आदि का अच्छी तरह विवेचनापूर्ण वर्णन किया गया है। विद्यार्थियों, वैद्यों तथा आयुर्वेद विद्यानुरागी सर्व साधारण जनसमुदाय के लिए परमोपयोगी है। सजिल्द ४ ० ०

सम्मतियां (Opinions).

श्रीयुत आयुर्वेदाचार्य पं० जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी बी० ए०

प्रोफेसर, आयुर्वैदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस

—मूलश्लोकों का शुद्ध तथा सरल हिन्दी अनुवाद करने के साथ ही प्रायः प्रत्येक विषय पर अपना स्वतन्त्र वक्तव्य दिया है, जो बड़े महत्त्व का है। मूल ग्रन्थ में जिन विषयों की न्यूनता है, उनकी पूर्ति करने का अनुवादक ने पूर्ण प्रयत्न किया है।

इस पुस्तक के द्वारा साधारण हिन्दी जानने वाले भी पूर्ण लाभ उठा सकते हैं। हिन्दी विद्यापीठ की परीक्षाओं में इसे अवश्य स्थान देना चाहिए। तथा पुस्तकालयों व वैद्यों को इसका संग्रह करना चाहिए।

श्रीयुत पं० उपेन्द्रनाथ शुक्ल, आयुर्वेदाचार्य

श्रीकालेश्वरायुर्वेद विद्यालय, कानपुर

—टीका सुन्दर है टीकाकार ने उचित स्थलों पर अपने वक्तव्यों द्वारा शास्त्रीय विवेचना एवं अपना अनुभव भी प्रकट किया है; यकृत, प्लीहादि अवयवों का पाश्चात्य ढंग से भी वर्णन किया है हिन्दी भाषा में ऐसी टीका के लिए टीकाकार एवं प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

श्रीयुत पं० रामचन्द्र मिश्र

प्रधानाध्यापक, श्रीमहाराणा फतह भूपाल ब्रह्मविद्यालय, उदयपुर (मेवाड़)

—टीका अत्यन्त उपयुक्त है और अधिकतर विषयों पर उनके प्रकाशित किए हुए वक्तव्य निराशा में आशा पैदा करने वाले हैं। आज तक ऐसी पुस्तक की निहायत जरूरत थी इससे छात्र तथा अध्यापक दोनों का तो महान् उपकार है ही, साथ २ हिन्दी संसार इसका बड़ा ऋणी होगा। आशा है, इसे सभी संस्थाएँ अपनाएँगी।

श्रीयुत भारतविख्यात आयुर्वेदाचार्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य, बम्बई

—शार्ङ्गधर का हिन्दी अनुवाद देखा। अनुवाद बड़ा ही उत्तम हुआ है। टिप्पण वैद्यों के और विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त हुआ है।

श्रीयुत पं० रामशरण द्विवेदी न्यायशास्त्री आयुर्वेदविशारद

प्रधानाध्यापक, श्री गङ्गाप्रसाद रामनारायण तिवारी, संस्कृत पाठशाला, नयागञ्ज, कानपुर

भाषाटीकासहित शार्ङ्गधरसंहिता मिली। इसका हम स्वागत करते हैं। पुस्तक अच्छी है। छपाई सफाई सुंदर, कागज़ तथा टीका की लेखनशैली अत्युत्तम है। वैसे तो उक्त पुस्तक का अधिक प्रचार होने से इस पर हिन्दी में कई टीकाएँ यत्र तत्र

प्रकाशित हुई हैं, किन्तु ऐसा सर्वांशसुन्दर संस्करण यही आपने प्रकाशित किया है, जिसकी चिरकाल से आयुर्वैदिक छात्रों को आकांक्षा थी।

इसमें विशेषता यह है कि—टीकाकार ने इसका विषय अत्यन्त सरल समयानुकूल यावदपेक्षित शब्दों में इतना स्फुट समझाया है कि विद्यार्थी को एक बार पढ़ लेने से अनायास हृदयङ्गम हो जायगा। सर्वत्र साकांक्ष स्थलों में चरक सुश्रुतादि अनेक ग्रन्थों के उपयुक्तांश उद्धृत करके विशद रूप से पुस्तक का उपस्करण या पूर्ति की है। कोष्ठादि के द्वारा नवीन ढंग से अनेक नवीन बातें भी इसमें समझाई गई हैं, तथा वक्तव्यार्थ में (जहाँ पर विशेष वैद्यों को भी सन्देह हो सकता है, ऐसे) कठिन स्थलों का (औषधि निर्माण विधि तथा मात्रादि विषयों में) सविमर्श स्पष्टीकरण किया है इसलिए उक्त पुस्तक छात्र, अध्यापक तथा इतर सर्व साधारण के लिए परमोपयोगी है। विशेषकर निखिल भारतायुर्वेद विद्यापीठ की भिषक् परीक्षा के छात्रों के लिए तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा देने वालों के लिए तो यही पुस्तक संग्राह्य है। मूल्य भी पुस्तक की उपयोगिता तथा आकार देखते हुए ४) अल्प ही है।

आयुर्वेदाभ्युदयिक इस कार्य के लिए टीकाकार तथा प्रकाशक महोदयों को धन्यवाद देते हैं हमारी धारणा है कि इससे हिन्दी जानने वाले वैद्यों का भी विशेष उपकार होगा किम्बहुना—

छात्राणामवबोधिनी सुविदुषामेषा मनोहारिणी
वैद्यानां विचिकित्सितेषु विषयेष्वप्याशु निश्चायिनी।
श्रीमच्छार्ङ्गधराख्यसूरिरचितैतत्संहिता या नवा
टीकेयं सुभिषग्वरैर्हरदयाल्वाख्यैः कृता शोभना ॥१॥
तद्रहस्यप्रकाशाख्यहिन्दीटीकनयाऽनया ।
भव्ययोपस्कृता नूनं सा शार्ङ्गधरसंहिता ॥२॥
श्रीमन्मेहरचन्द्रश्रीलक्ष्मणदासजैनवरैः
लवपुरतो मसृणदलैः प्रकाशिता सुष्ठु मुद्राप्य ॥३॥
प्रविविक्षुच्छात्राणामायुर्वेदे च ऋजुभिषजाम्
संग्राह्या ह्यविशङ्कं मर्मज्ञानाय शास्त्रस्य ॥४॥ इति च

आयुर्वेदाचार्य श्री लालचन्द्र वैद्यशास्त्री

प्रधानाध्यापक, आयुर्वेदविद्याप्रबोधिनी पाठशाला, सिद्धेश्वरी काशी

शार्ङ्गधरसंहिता यथैवावलोकिता तथैवोल्लासितं मे मनः, रोमाञ्चिता त्वक्, प्रसन्ना दृष्टिः। प्रायः सर्वत्रैव गुम्फितवक्तव्यमौक्तिकगुणैः स्वभावसुन्दर्य्यपीयं संहिता सहारा रमणीव विशेषण मनोहारिणी संवृत्तेति प्रमोदास्पदम्। श्रीमतामायुर्वेदाचार्यश्रीहरदयालु-वैद्यवाचस्पतिमहोदयानमियं कृतिः सर्वथैवोपयोगिनी, नानासंशयोच्छेदिनी, विविधरहस्यो-द्घाटिनी, सदन्तःकरणोल्लासिनी च रहस्यार्थप्रकाशिका परमाह्लादनाभिनन्दनीया सर्वैरपि प्राच्यायुर्वेदस्याध्येतृभिरध्यापकैश्चेति साग्रहं विज्ञापयाम इति।

१३९ **विरेचन कल्पलता भाषा टीका**—इसमें जुलाब लेने की गुणकारक औषधियों का संग्रह है। ० २ ६

१४० **वमन कल्पतरु भाषा टीका**—इसमें कै अर्थात् उलटी करने की औषधियां और क्रियाएं वाग्भटानुसार लिखी हैं। ० २ ६

कोष

१४१ **पद्मचन्द्रकोष**—व्युत्पत्ति विषय सहित ३०००० तीस हजार शब्दों का बृहत् संस्कृत-हिन्दी कोष। इस कोष में प्रथम मोटे टाइप में संस्कृत शब्द, पीछे उससे कुछ बारीक टाइप में उनके लिङ्ग, व्याकरणानुसार संस्कृत में व्युत्पत्ति और एक एक शब्द के हिन्दी भाषा में अनेक अर्थ स्पष्ट कर दिए गए हैं, जिससे थोड़ा पढ़ा लिखा भी लाभ उठा सकता है। यह कोष यूरोप तथा भारत के बड़े बड़े धुरन्धर विद्वानों प्रिंसिपलों और प्रोफ़ेसरों की सर्वश्रेष्ठ सम्मतियाँ प्राप्त कर चुका है। संस्कृत तथा हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। कोष बड़े आकार का है। तृतीयावृत्ति छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत हुई है। सजिल्द मूल्य ६ ० ०

१४२ **रामकोश**—पण्डित रामलाल जी शास्त्रिकृत हिन्दी संस्कृत कोष। It is very useful in translating the Hindi into Sanskrit. At the end Nominal and Verbal inflexions are also given. Well got up. 2 0 0

ज्योतिष

१४३ **संशोधित होड़ा चक्र** ० २ ०

१४४ **बृहन्मुहूर्तसिन्धु**-यह ज्योतिष विषय की शोभा बढ़ाने वाला एक परम सुन्दर संस्कृत का ग्रन्थ है। इसमें ११५० प्रकार के मुहूर्तों का भली भांति विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। प्रत्येक ज्योतिषी के पास इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य रहनी चाहिये। मूल्य केवल १ ८ ०

१४५ **विवाहवृन्दावन**—केशवदैवज्ञ विरचित संस्कृत टीका सहित। इस पुस्तक में नक्षत्र शुद्धि, कालमीमांसा, मेलक, नवांशक चिन्ता, लग्नबलाध्याय, चन्द्रबल, राहुसतषड् वर्गाध्याय, गोधूलिक मासगोचरविचार, ग्रहयोग, ग्रह का भाव, कुंडलीमिश्र, वरवधू प्रश्न लग्नशुद्धि इत्यादि अपूर्व संग्रह है। यह ज्योतिष का एक प्रसिद्ध मुख्य ग्रन्थ है कागज विलायती ग्लेज है। मूल्य १ ८ ०

१४६ **सरल गणित पद्धति**—हिन्दी। रचयिता—पं० विजयानन्द खंडूड़ी शास्त्री। ० १२ ०

अन्य फुटकर ग्रन्थ

१४७ **सचित्रबालबोध**—बहुत उत्तम। पृष्ठ संख्या ३२। मूल्य ० १ ०

148 Woolner Commemoration Volume, containing more than 50 erudite contributions on subjects of deep

Vast, and varied interests regarding Oriental languages and literatures, contributed by the late Dr. Woolner's Freinds, Colleagues and pupils from all over the world, in his memory. The Volume is a unique production presenting within its compass the immense wealth of research work, gleaned by eminent scholars and authorities. (In press—Shortly to be published)

149 Elements of Hindu Culture and Sanskrit Civilization. By Prasanna Kumar Acharya, M. A., Ph. D., D. Litt., Head of the Sanskrit Deptt, Allahabad University. 1 8 0

१५० **भग्नतंत्री** [मौलिक हिन्दी काव्य]—लेखक-श्रीबलदेवशास्त्री। ० १२ ०

१५१ **पंचरात्र** [महाकवि भासकृत]—श्रीबलदेवशास्त्री कृत गद्यपद्यमय सुललित हिन्दी अनुवाद। ० १० ०

१५२ **शकुन्तलानाटक** [महाकवि कालिदास]—श्रीबलदेवशास्त्रिकृत गद्यपद्यमय सुललित हिन्दी अनुवाद। १ ४ ०

१५३ **मकरन्द** [संपादक-श्री बलदेव शास्त्री]—चुनी हुई शिक्षाप्रद हिन्दी कविताओं का संग्रह। १ ४ ०

१५४ **गल्पपारिजात**—संग्रहकर्त्ता तथा सम्पादक-डाक्टर सूर्यकान्त, एम० ए०, डी० लिट्०, डी० फिल्०। रोचक कहानियों का अपूर्व संग्रह। २ ४ ०

१५५ **हिन्दी साहित्य की रूपरेखा**—लेखक-डाक्टर सूर्यकान्त, एम० ए०, डी० लिट्, डी० फिल्०। हिन्दी साहित्य के इतिहास सम्बन्धी अपूर्व पुस्तक। २ १० ०

१५६ **विजयीप्रताप**—हिन्दी। लेखक-श्रीयुत बलदेवशास्त्री। महाराणा के सम्बन्ध में एक नवीन और रोचक नाटक। १ ८ ०

१५७ **नवनिधि**—हिन्दू मुसलिम नौ प्रतिनिधि हिन्दी कवियों की चुनी हुई कविताओं का संग्रह। सम्पादक-पं० भगवद्दत्त बी० ए०। १ ४ ०

१५८ **संसार के स्त्री रत्न**—लेखक साधुराम एम० ए०। संसार की कतिपय प्रसिद्ध महिलाओं के जीवन वृत्तान्त। १ ८ ०

१५९ **सीता-राम**—तप, त्याग और आदर्श का रूपक नूतन प्रणाली पर लिखा हुआ छाया नाटक। हिन्दी। लेखक—आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री। ० १० ०

१६० **प्रतिज्ञा यौगन्धरायण**—भासकृत। श्रीयुत बलदेवशास्त्री कृत भाषानुवाद। ० १२ ०

१६१ **हिन्दी गद्यमञ्जूषा**—उच्चकोटि के विद्वानों के उत्तमोत्तम गद्य लेखों का उत्कृष्ट संग्रह। संग्रहकर्त्ता—पं० चेतराम शर्मा साहित्यरत्न। १ ८ ०

१६२ **हिन्दी पद्यपीयूष**—हिन्दी के आधुनिक महाकवियों की चुनी हुई उत्तमोत्तम कविताओं का अपूर्व संग्रह । संग्रहकर्ता—श्रीयुत पं० चारुदेव शास्त्री एम० ए० । १ ८ ०

१६३ **हिन्दी अलङ्कार-रत्नाकर**—(हिन्दी) सरल विवेचन-सहित । लेखक—साहित्याचार्य विद्यासागर श्री·बृहद्बल 'संयमी' शास्त्री, काव्य·व्याकरण वेद·वेदान्त तीर्थ, बी० ए०, बी० ओ० एल्० ।

इसमें प्रायः सभी अलंकारों का विशद वर्णन है जो किसी बड़े ग्रन्थ में हो सकते हैं । १ ० ०

जैन ग्रन्थ

१६४ **वर्द्धमान चरित्र**—जैनियों के अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी का सरल हिन्दी भाषा में जीवन चरित्र । सजिल्द ० ४ ०

१६५ **श्रीमद् उपासक दशाङ्ग सूत्र**—भगवान् महावीर स्वामी के दश मुख्य श्रावकों (गृहस्थों) का विस्तृत जीवन वर्णन । जैनियों का यह बड़ा प्रामाणिक शास्त्र है। हिन्दी भाषा टीका सहित ० ८ ०

१६६ **श्रीमद् आवश्यक सूत्र**—जैनियों की नित्य क्रिया का यह प्रधान शास्त्र है। हिन्दी अनुवाद सहित ० १२ ०

१६७ **सम्यक्त्व सूर्योदय जैन अर्थात् मिथ्यात्वतिमिरनाशक**—नास्तिकवाद का खण्डन और अन्य मतोंका प्रश्नोत्तर रूप में तुलनात्मक विचार किया गया है १ ४ ०

१६८ **जैनतत्त्वकलिकाविकास**—जैन सिद्धान्त, एवं जैन मुनियों के खानपान, रहन, सहन, त्याग, कठिन तपश्चर्या, जैनयोग इत्यादि समस्त जैनमत का तात्त्विक ज्ञान प्राप्त करना हो तो इसे पढ़िए। लेखक जैनमुनि उपाध्याय श्री आत्माराम जी पंजाबी । सजिल्द २ ० ०



वेद-वेदाङ्ग

ऋग्वेदग्रन्थ

१ **अस्य वामस्य सूक्तम्**—(ऋग्वेदीय) आत्मानन्दभाष्य सहित ।
लाहौर ० ८ ०

२ **आश्वलायनगृह्यसूत्रम्**—मूलमात्रम् । मुम्बई ० ४ ०

३ **आश्वलायनगृह्यसूत्रम्**—गर्गनारायणकृतवृत्तिसहितम् । कलकत्ता २ ० ०

४ **आश्वलायनगृह्यसूत्रम्**—गार्ग्यनारायणीवृत्तिगृह्यपरिशिष्टसमलंकृतम्, कुमारिल-भट्टविरचितगृह्यकारिकासहितं च । सजिल्द । मुम्बई २ ० ०

५ **आश्वलायनगृह्यसूत्रम्**—नारायणकृतवृत्ति-गृह्यपरिशिष्ट-भट्टकुमारिलकारिका-सहितम् । पूना २ १२ ०

६ **आश्वलायनगृह्यसूत्रम्**—हरदत्ताचार्यकृतया अनाविलाख्यया व्याख्यया सहितम् ।
मद्रास २ ६ ०

७ **आश्वलायननित्यब्रह्मकर्म**—मूलम् । शिलाक्षर । खुले पत्रे ।
मुम्बई ० १२ ०

८ **आश्वलायन (ऋग्वेदादि) नित्यब्रह्मकर्म** । मूलमात्रम् । सस्वरम् । मोटा अक्षर । खुले पत्रे । मुम्बई १ ८ ०

९ **आश्वलायनश्रौतसूत्रम्**—गार्ग्यनारायणीयवृत्तिसहितम् ।
कलकत्ता २५ ० ०

१० **आश्वलायनश्रौतसूत्रम्**—नारायणकृतवृत्तिसमेतम् । अस्य पूर्वषट्कमुत्तरषट्कं चेति मिलित्वा द्वादशाध्यायाः । अत्र भगवता ऽऽश्वलायनेन दर्शपूर्णमासादियागानां तद्विकृतीनां सर्वासामिष्टीनां चानुष्ठानप्रकारस्तदुपयुक्तं चान्यद्विहारादिकं सर्वं यथावत्प्रदर्शितमस्ति ।
पूना ४ ११ ०

११ **आश्वलायनसूत्रप्रयोगदीपिका**—श्रीमच्चनाचार्यभट्टविरचिता । सम्पूर्णा । २ खण्डौ । बनारस ३ ० ०

१२ **उदकशान्तिः**—शौनकीया (ऋग्वेदीया) । प्रयोगसहिता । मुम्बई ० ४ ०

१३ **उपलेखसूत्रम्**—(परिशिष्टम्) । टीकोपेतम् । कलकत्ता २ ८ ०

14 Upalekha Sūtra (उपलेखसूत्रम्)—Edited with text, German translation, introduction and notes by G. Pertsch. 6 0 0

१५ ऋक्प्रातिशाख्यम्—शौनकीयम्। उव्वटभाष्यानुसारिण्या व्याख्यया समेतम्। कलकत्ता २ ८ ०

१६ ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्—महर्षिशौनकप्रणीतम्। उव्वटभाष्यसहितम ४ खण्डेषु। सम्पूर्णम्। बनारस ४ ० ०

17 Ṛgveda Prātiśākhya with the commentary of Uvvata and an Introduction in English by Dr. Mangal Dev Shastri, M. A., D. Litt.

Vol. I. Introduction. Foreign 5 0 0

Vol. II. Text and commentary, Allahabad 6 8 0

Vol. III: English translation of the text, additional notes, three appendices and five indices by Mangal Deva Shāstrī, M. A., D. Phil. (Oxon.), U. P. E. S. [It supplies the first English translation of the Ṛgveda Prātiśākhya. In this translation the author has been able to improve substantially the renderings of Max Müller and Regnier. The extensive critical notes, not only clear up many obscurities of the text as well as commentary, but also supply much useful information based on the comparative study of the different Prātiśākhyas and other allied literature. Lahore 15 0 0

18 Ṛgveda-Prātiśākhya—Sanskrit text with German translation by F. Max Müller. 1869. Foreign 25 0 0

19 Ṛks—or Primeval gleams of life and light. By T. Parama Shiva Iyer. Bound. Madras 4 0 0

२० ऋक्संग्रहः—सायणाचार्यकृतभाष्यसंवलितः। आंगलभाषाटिप्पणैः समुपेतः। मुम्बई २ ० ०

Ṛksaṅgraha with Sāyaṇa Bhāṣya and English notes, by V. G. Vijāpurkar, M. A. 2 0 0

२१ ऋक्संहिता—स्कन्दस्वामिविरचितभाष्येण वेंकटमाधवार्यकृतदीपिकया च समलंकृता। के० साम्बशिवशास्त्रिणा सम्पादितम्। खण्डद्वयम् ३ ० ०

२२ ऋग्भाष्यम्—श्री मध्वाचार्यविरचितम्। श्री जयतीर्थाचार्यकृतसम्बन्धदीपिकाख्यया

टीकया छलारीयटिप्पणेन च समलंकृतम् । मद्रास ६ ० ०

२३ ऋग्यजुस्सामाथर्वविधान—जपादि अनुष्ठानार्थ । मूलमात्र मुम्बई ० २ ०

२४ ऋग्यजुस्सामार्थववेदाः—मूल । स्वरसहित । चार भाग । अजमेर ६ ० ०

२५ ऋग्यजुःसामाथर्ववेदानुक्रमणिकाः— अजमेर २ ४ ०

२६ ऋग्विधानम्—शौनकप्रणीतम् । मूलमात्रम् । मद्रास ० १२ ०

27 Ṛgvidhānam (ऋग्विधानम्)—Text edited with notes and a detailed introduction of 38 pages in German by Rudolf Meyer. Berolini 4 8 0

२८ ऋग्वेद—मूल । सितारा ३ ० ०

२९ ऋग्वेद—स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत संस्कृत तथा हिन्दी भाष्य सहित । सातवें मण्डल के पांचवें अध्याय के तीसरे वर्ग से आगे का भाग केवल मूलमात्र ही जोड़ दिया गया है । १० भाग । अजमेर ३३ ० ०

30 Rig-veda—Ou Livre des Hymnes traduit du Sanscrit. (French translation of Ṛgveda). par A Langlois. Foreign 40 0 0

31 Ṛgveda—Edited with text, criticism and exegetical notes by Hermann Oldenberg. Complete in 2 vols. German edition. Berlin 75 0 0

32 Hymns from the Ṛgveda—Selection of first series. Edited with Sāyaṇa's commentary, notes and an English translation by Dr. P. Peterson. Revised by Prof. S. R. Bhandarkar, enlarged by Prof. A. B. Dhruva and edited by Prof. Karmarkar, M. A. 1937. Bombay 3 0 0

33 Hymns of the Ṛgveda—translated with a popular commentary into English by Ralph T. H. Griffith. Complete in 2 vols. Bound. Benares 14 0 0

34 Hymns from the Ṛgveda—Selected and metrically translated by A. A. Macdonell, M. A., Ph. D., Hon. D. Litt. Cloth Foreign 2 0 0

35 Hymnen des Ṛgveda—Von Hermann Oldenberg. Foreign 21 6 0

36 Rigveda—English translation complete in 6 vols. by the late Prof. H. H. Wilson. London 32 0 0

३७ ऋग्वेद पर व्याख्यान—पं० भगवद्दत्तकृत। हिन्दी में ।लाहौर १ ४ ०

३८ ऋग्वेदप्रयोगभास्करे द्वितीयः प्रकाशः— ३ १० ०

३९ ऋग्वेदभाष्यम् (ऋ० १०. ५. ४.–१०. ३४. ३.)—उद्गीथाचार्यकृतम्। लाहौर ३ ० ०

Ṛgvedabhāṣyam (X. 5. 4-X. 34 3)—by Udgītha-charya. Edited by Pt. Viśvabandhu Śāstrī, M. A., M. O. L. Lahore 3 0 0

४० ऋग्वेदभाष्यम्—स्कन्दस्वामिविरचितम् । प्रथमाष्टकम् । डा० चि० कुन्हनराजेन सम्पादितम् । मद्रास ६ १२ ०

Ṛgvedabhāṣya of Skandasvāmin—Edited by Dr. C. Kunhan Rāja. I Aṣṭakam. Madras 6 12 0

४१ ऋग्वेदभाष्योपक्रमणिका—सायणाचार्यविरचिता। आंगलभाषायां सारांशेन संस्कृतटिप्पणीभिश्च समलंकृता । कलकत्ता ० १२ ०

Sāyaṇācharya's Introduction to the Ṛgveda—Edited by Pashupatinath Shāstrī, M. A., B. L., Ph. D., with an English digest and Sanskrit notes. Calcutta 0 12 0

४२ ऋग्वेदमन्त्रसंहिता—मूल। मुम्बई ० १४ ०

४३ ऋग्वेदमन्त्रसंहिता—मूल। स्वर सहित। खुले पत्रे। मुम्बई १ ८ ०

४४ ऋग्वेदमन्त्रार्थमञ्जरी—राघवेन्द्रतीर्थविरचिता, ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्थानां ४० सूक्तानां सरला व्याख्या। कुम्भघोणम्। १ १२ ०

४५ ऋग्वेद में रुद्रदेवता—श्रीपाद दामोदर सातवलेकरकृत। औंध ० १० ०

४६ ऋग्वेदसंहिता—परिभाषा-सर्वानुक्रम-स्वाहाकार-प्रयोग-ऋग्विधान-मन्त्रकोषादिसहिता। मुम्बई ३ ८ ०

४७ ऋग्वेदसंहिता—मूल। स्वरसहित। बुक साइज़। अजमेर ३ ४ ०

४८ ऋग्वेदसंहिता—जयदेव विद्यालङ्कार मीमांसातीर्थकृतभाषाभाष्यसहित। ७ भाग । २८ ० ०

४९ ऋग्वेदसंहिता—पं० रामगोविन्द त्रिवेदी वेदान्तशास्त्री और पं० गौरीनाथ झा व्याकरणतीर्थ कृत सरल हिन्दी टीका सहित। संपूर्ण। कृष्णगढ़ १८ ० ०

५० ऋग्वेदसंहिता—वैदिकजीवन भाष्य, पदपाठ, शब्दार्थ, सरल संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद और प्रत्येक मन्त्र पर बुद्धि को प्रकाश करने वाली अपूर्व टिप्पणियों सहित। ११२ अंक। लाहौर २६ १० ०

51 Ṛgveda Saṃhitā—Text, introduction, English translation, and notes by Padmanābha Iyengar. First three parts. 3 6 0

52 Ṛgveda Saṃhitā—Or the sacred hymns of the Brahmans, translated and explained into English by F. MaxMüller. Vol. I.—Hymns to the Maruts or the Storm-gods. Foreign 10 0 0

53 Ṛgveda-Saṃhitā—Or the sacred hymns of the Brāhmans, translated into German by Prof. A. Ludwig with full index. Complete in six volumes. Foreign. 270 0 0

५४ **ऋग्वेदसंहिता**—सायणाचार्य-विरचित-माधवीय-वेदार्थप्रकाशभाष्योपेता । शार्मरायदेशोत्पन्नेन इंगलैंडदेशनिवासिना मोक्षमूलरमहोदयेन संशोधिता । ४ खण्डेषु संपूर्णा । लन्दन २६५ ० ०

Ṛgveda Saṃhitā—The Sacred hymns of the Brāhmaṇas together with the Sanskrit commentary of Sāyaṇāchārya. Edited by F. Max Müller with English notes. Complete in 4 big vols. London. 265 0 0

५५ **ऋग्वेदसंहिता**—सायणाचार्यकृत-भाष्यसहिता । पञ्चमाष्टकपर्यन्ता ।

कलकत्ता ४० ० ०

५६ **ऋग्वेदसंहिता**—श्रीमत्सायणाचार्यविरचितभाष्यसमेता । प्रथमं मण्डलम् । भागौ । पूना २४ ० ०

Ṛgveda Saṃhitā—with Sāyaṇa's commentary. Vols. I & II. (A critical edition based on Mss. procured from different Libraries in India ; is to be completed in 5 Vols.) Poona 24 0 0

५७ **ऋग्वेदसंहिता**—सायणाचार्यकृतभाष्ययुता श्रीस्कन्दस्वामिवेङ्कटमाधवकृतभाष्यीयमन्त्रार्थैन संवलिता । विषमस्थलटिप्पणीयुता । म० म० सीतारामशास्त्रिणा सम्पादिता । ६ खण्डाः । अवशिष्टोंऽशः मुद्रयते । कलकत्ता ६ ० ०

५८ **ऋग्वेदसंहितापाठः**—पदपाठसहितः। मूलमात्र, अतिस्थूलाक्षर । २ भाग ।

यूरोप ८१ ० ०

Hymns of the Ṛgveda—In the Saṃhitā and Pada texts, edited with the two texts on parallel pages by F. Max Müller, M. A. complete in 2 vols.

Foreign 81 0 0

५६ **ऋग्वेदसंहितायाः मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची**— अजमेर १ ० ०

६० **ऋग्वेदसारसंग्रहः**—श्री शिवनाथ आहिताग्नि प्रणीत । with notes in English and occasional English translation.

देहरादून 3 0 0

६१ **ऋग्वेदसूक्तानि**—सायणाचार्यकृतभाष्येण समलङ्कृतानि ।

कलकत्ता २ १३ ०

६२ **ऋग्वेदस्य दाहविधिः**— ० ८ ०

६३ **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**—स्वामि-दयानन्द विरचिता । संस्कृत तथा हिन्दी ।

अजमेर १ २ ०

६४ **ऋग्वेदानुक्रमणी**—श्रीमाधवभट्टविरचिता । डा० सी० कुन्हनराजसम्पादिता ।

मद्रास ४ ० ०

Ṛgvedānukramaṇī—of Mādhava Bhatta. Edited by Dr. C. Kunhan Rāja. Madras. 4 0 0

६५ **ऋग्वेदीयदेवे**—ऋग्वेदोक्तदेवेसंज्ञकमन्त्राः । खुले पत्रे ।

मुम्बई ० १ ०

६६ **ऋग्वेदीय नित्यविधि**— मुम्बई ० ५ ०

६७ **ऋग्वेदीय ब्रह्मकर्मसमुच्चय**—मूल । खुले पत्रे । मुम्बई २ ८ ०

६८ **ऐतरेयब्राह्मणम्**—मूलमात्रम् । खुले पत्रे । मुम्बई १ ० ०

६९ **ऐतरेयब्राह्मणम्**—सायणाचार्यकृतभाष्यसहितम् । २ भागों में सम्पूर्ण ।

पूना १० १० ०

७० **ऐतरेयब्राह्मणम्**—सायणाचार्यकृत 'वेदार्थप्रकाश' भाष्यसहितम् । सामश्रमि-श्रीसत्यव्रतशर्मणा सम्पादितम् । कलकत्ता १७ ४ ०

71 Aitareya Brāhmaṇam—Text and extracts from the commentary of Sāyaṇacharya. Edited with an Index of words by Theodore Aufrecht. Germany. 10 0 0

72 Aitareya Brāhmaṇa.—English translation by Martin Haug. 2 parts. Allahabad 7 0 0

73 Aitareya Brāhmaṇa and Kauṣītaki-Brāhmaṇa (Rigveda Brāhmaṇas)—Translated into English by A. B. Keith. Foreign. 29 12 0

७४ **ऐतरेयब्राह्मणस्य पदानुक्रमणिका**— मुम्बई ४ ० ०

Alphabetical Word-index of the Aitareya Brāhmaṇa—Compiled by Pt. Vishwanātha Balkrishna Joshi. Bombay 4 0 0

75 Grammatische in Aitareja Brāhmaṇa—By Böhtlingk. Foreign 2 4 0

७६ ऐतरेयारण्यकम्—मूलमात्रम्। मुम्बई ० ४ ०

७७ ऐतरेयारण्यकम्—सायणाचार्यकृतभाष्यसहितम्। पूना ३ ० ०

७८ ऐतरेयारण्यकम्—सायणाचार्यकृतभाष्यसहितम्। एल० एल० डी० इत्युपाधिधारिणा श्री राजेन्द्रलालमित्रेण सम्पादितम्। दुष्प्राप्य। कलकत्ता ५ ० ०

७९ ऐतरेयारण्यकम्—सायणाचार्यकृतभाष्यसहितम्। पूना ३ ० ०

८० ऐतरेयारण्यकम्—संस्कृतमूल, टिप्पणी तथा अङ्गरेजी अनुवाद सहित। यूरोप २३ १० ०

Aitareyāraṇyakam—Edited with an introduction, English translation, notes, indices and an appendix containing the portion, hitherto unpublished, of the Shānkhāyanāraṇyaka. By A. B. Keith. Foreign 23 10 0

८१ ऐतरेयालोचनम्—आचार्यश्रीसत्यव्रतशर्म्मसामश्रमिणा प्रणीतम्। कलकत्ता २ ४ ०

८२ त्रिसुपर्ण— मुम्बई ० १ ०

८३ पदगाढ—महर्षिशाकल्यप्रणीत। दुष्प्राप्य। आचार्यश्रीसत्यव्रतशर्म्मसामश्रमिणा सम्पादितम्। कलकत्ता २ ८ ०

८४ पवमानपञ्चसूक्त—स्वरसहित। मूलमात्र मुम्बई ० ४ ०

८५ पार्षदसूत्रम् (ऋक्प्रातिशाख्यम्)—दुष्प्राप्य। कलकत्ता ५ ० ०

८६ पार्षदसूत्रम्—वृत्तिसहितम्। दुष्प्राप्य। कलकत्ता १० ० ०

८७ बृहद्देवता—शौनकाचार्य विरचित। मूल। दुष्प्राप्य। कलकत्ता १५ ० ०

88 Bṛhad-Devatā (बृहद्देवता)—Attributed to Śaunaka. A summary of the deities and myths of the Ṛgveda. Critically edited in the original Sanskrit with an introduction and seven appendices, and translated into English with critical and illustrative notes. By A. A. Macdonell. Complete in 2 vols. Foreign 29 12 0

८९ मध्वमन्त्ररत्नाकरः—अस्मिन् ग्रन्थे त्रयः तरङ्गाः। प्रथमे तरङ्गे ऽष्टौ महामन्त्राः। द्वितीये ७२ मन्त्राः। तृतीये पुरश्चरणमन्त्राः। अत्र विद्यमानानां सर्वेषां मन्त्राणां सूक्तानां च व्याख्यानमपि मुद्रितमस्ति। मद्रास २ ८ ०

९० यमयमीसूक्त—ऋग्वेद के दशम मण्डल के दशम सूक्त का हिन्दी अनुवाद। इटावा ० २ ०

९१ रुद्रसूक्त (रुद्रपाठ)—स्वरसहित। मूलमात्र। खुले पत्रे। मुम्बई ० ३ ०

९२ **विवृतिः**—ऋग्भाष्योपोद्घातविवरणात्मिका । दर्शनाचार्य पं० नृसिंहदेवशास्त्रिणा विरचिता । लाहौर ० ६ ०

९३ **शाङ्खायनगृह्यसंग्रहः**—पण्डितवर-वासुदेवविरचितः । तथा **कौषीतकि-गृह्यसूत्राणि ।** काशी १ ८ ०

९४ **शाङ्खायनब्राह्मणम्**—मूलमात्रम् । श्रौतयज्ञसम्बन्धिविषयविवेचनसमेतम् । पूना १ ४ ०

९५ **शाङ्खायनश्रौतसूत्रम्**—वसुदत्तसुतआनर्तीयकृतसंस्कृतभाष्यसहितम् । सम्पूर्णम् । दुष्प्राप्यम् । कलकत्ता ३० ० ०

९६ **शाङ्खायनारण्यकम्**—मूलमात्रम् । पूना ० ६ ०

97 Śāṅkhāyana Āraṇyaka—with an appendix on the Mahāvrata, translated into English by A. B. Keith, M. A. Foreign 5 12 0

९८ **सर्वानुक्रमणी**—कात्यायनविरचिता । षड्गुरुशिष्यकृतवेदार्थदीपिकावृत्तिसहिता । यूरोप १८ ० ०

Kātyāyana's Sarvānukramaṇī of the Ṛgveda with extracts from Ṣaḍguruśiṣya's commentary entitled VedārathaPradīpikā, edited with critical notes and appendices by A. A. Macdonell, M. A., Ph. D. Text and commentary both in Devanāgari characters. Foreign 18 0 0

९९ **सौरसूक्तम्**—सस्वरम् । मूलमात्रम् । खुले पत्रे । मुम्बई ० १ ०

100 Age of Ṛgveda—By N. B. Utgikar. Poona 0 9 0

101 Apokryphen of the Ṛgveda (Khilāni Recension)—Text edited with notes in German and an index of words by Dr. J. Scheftelowitz. Breslau 9 0 0

102 Dānastuti's des Ṛgveda—Von Dr. Manilal Patel. Foreign 9 0 0

103 Essays on the Ṛgveda—by D. K. Tamhankar, B. A. (Hons.) 1 4 0

104 God Varuṇa in the Ṛgveda—by H. D. Griswold, Ph. D. Ithaca. N. Y. 3 8 0

105 Peterson's Selections from the Ṛgveda—Third Edition completely revised and enlarged by Dr. V. G. Paranjpe, M. A., LL. B., D. Litt. Bombay 4 8 0

106 Lectures on the Ṛgveda—By V. S. Ghate. Revised and enlarged (second edition) by Dr. Sukthankar. 3 0 0

107 Lieder des Ṛgveda—Or the lessons in the Ṛgveda translated into German by Dr. Alfred Hillebrandt. Foreign 10 0 0

108 Mysterium and Mimus in the Ṛgveda—or the Mystery and Drama in the Ṛgveda, by L. V. Schroeder written in German. Foreign 9 0 0

109 Religion of the Ṛgveda—By Dr. Griswold. 8 0 0

110 Rigveda—The oldest literature of the Indians, by A. Kaegi. Authorized translation into English with additions to the notes by R. Arrow-smith, Ph. D. Foreign 8 0 0

111 Ṛgveda as Land—Náma Bok—By Ananda K. Coomaraswamy. London 3 6 0

112 Ṛgveda Brāhmaṇas (Aitareya and Kauṣītaki)—Translated into English by A. B. Keith. Foreign 29 12 0

113 Ṛgveda in Auswahl Von Karl F. Geldner. Stuttgart. 17 8 0

114 Ṛgveda oder Die Heiligen Lieder der Brahmanan herausgegeben—Von Max Müller. Leipzig. 54 0 0

115 Ṛgveda Repetitions—The repeated verses distichs and stanzas of the Ṛgveda in systematic presentation and with critical discussion and notes in English by Maurice Bloomfield. Vol I: The repeated passages of the Ṛgveda systematically presented in the order of the Ṛgveda with critical comments and notes. Vol. II: Explanatory and Analytic comments and classifications from metrical, lexical, grammatical and other points of view. Lists and Indices. Library edition. Foreign 39 6 0

116 Ṛgveda uber setzt und Erlautert—Von Karl F. Geldner. Foreign 25 0 0

117 Ṛgveda Ubersetzt und mit Kritischen und Erlauternden anmerkungen versehen von Hermann Grassmann. 2 Vols. Foreign 54 0 0

118 Ṛgvedic Culture—By Abinash Chandra Das, M. A., Ph. D. Calcutta 9 0 0

119 Ṛgvedic India—by Abinash Chandra Das, M. A., Ph. D. This work is an attempt to find out the age of the culture as depicted in the Ṛgveda, examined in the light of the results of modern geological, archaeological and ethnological investigations. Bound. Calcutta 9 0 0

120 Sagenstoffe des Ṛgveda—Und die indische Itihāsa tradition, von Emil Sieg. Foreign 3 6 0

121 Sin and Salvation in the Early Ṛgveda—By Rev. Fr. T. N. Siqueira, S. J. Foreign 2 13 0

122 Stilgeschichte und Chronologie des Ṛgveda—Von Walther Wüst. Foreign 7 0 0

123 Ueber die Gottin Aditi—Or about the goddess Aditi in the Ṛgveda, written in German by Alfred Hillebrandt. Foreign 3 6 0

124 Vedas made Easy—A literal English translation of the Rigveda by Master Durga Prasad. 9 parts. 11 12 0

125 Vedic Hymns—translated from the Ṛgveda by E. J. Thomas. London 3 1 0

126 Vedic Hymns—Vol II. Hymns to the Maruts, Rudra, Vāyu and Vāta, translated by H. Oldenberg. Foreign 12 0 0

127 Women in the Ṛgveda—By B. S. Upādhyāya, M. A., LL. B. 1 0 0

128 Words in the Ṛgveda—Part I, being an attempt to fix the sense of every word that occurs in the Ṛgveda. By V. R. Rājawāde, M. A. Poona 12 0 0

129 Worterbuch des Ṛgveda (Ṛgveda Dictionary)—By D. W. Neisser. 2 parts Foreign 28 0 0

130 Worterbuch Zum Ṛgveda—Edited by H.

Grassmann. A complete Dictionary and Concordance to the Ṛgveda. Foreign 43 0 0

कृष्णयजुर्वेद-ग्रन्थ

१३१ आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्—श्रीहरदत्तप्रणीतया ऽनाकुलाख्यया व्याख्यया श्रीसुदर्शनाचार्यप्रणीतया तात्पर्यदर्शनाख्यया व्याख्यया च समलङ्कृतम्। पृथक्सूत्रपाठेन, पाठभेदेन, मीमांसापदार्थविवरणेन च संयोजितम्। काशी ४ ० ०

१३२ आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्—सुदर्शनाचार्यविरचिततात्पर्यदर्शनसहितम्। दुष्प्राप्यम्। मैसूर १२ ० ०

१३३ आपस्तम्बीयगृह्यसूत्रम्—भीमसेनशर्मकृतभाषावृत्तिसहितम्। इटावा ० ४ ०

134 Marriage Ritual of the Āpastamba Sūtra - By S. Venkatarama Sastri, B. A. Bangalore. 0 3 0

१३५ आपस्तम्बधर्मसूत्रम्—भाषाटीका सहित। यह हिन्दी अनुवाद 'उज्ज्वला' आदि संस्कृत टीकाओं के अनुकूल किया गया है। मुरादाबाद १ ८ ०

१३६ आपस्तम्बधर्मसूत्रम्—श्रीमद्धरदत्तमिश्रविरचितया उज्ज्वलाख्यया वृत्त्या संवलितम्। काशी ४ ० ०

Āpastamba Dharma Sūtras—Edited with notes, introduction, word-index, &c. by Chinnaswami Shastri and Pt. A. Ramanatha Shastri. Benares 4 0 0

137 Āpastamba Dharma Sūtras—(आपस्तम्बधर्मसूत्रम्) Edited in the original Sanskrit with critical notes, variant readings from Hiraṇyakeshi Dharma Sūtras, an alphabetical index of Sūtras, and word-index, together with extracts from Haradatta's commentary—the उज्ज्वला, by Dr. G. Bühler, 3rd edition, revised by Prof. M. G. Shastri, M.A. Poona 3 0 0

१३८ आपस्तम्बीयधर्मसूत्रम्—उज्ज्वलनाम्न्या व्याख्यया समेतम्। कुम्भघोणा २ ८ ०

१३९ आपस्तम्बीयधर्मसूत्रम्—मूलमात्रम्। मद्रास ० १२ ०

१४० आपस्तम्बधर्मसूत्रमञ्जरी—आपस्तम्बीयधर्मसूत्राणां सारांशः।

Apastamba Dharma Sūtra Manjarī—A digest of Āpastamba Dharma Sūtras by R. N. Sūryanārāyaṇa. Mysore 1 4 0

141 Śrauta Sūtras of Āpastamba—Translated into German by Dr. W. Caland, complete in 3 vols.
Foreign 62 7 0

१४२ आपस्तम्बपरिभाषासूत्रम्—कपर्दिस्वामिविरचितेन भाष्येण हरदत्ताचार्य-विरचितया व्याख्यया च समेतम् । दुष्प्राप्य । मैसूर ८ ० ०

१४३ आपस्तम्बशाखोक्तदेवे-संज्ञकमन्त्राः—स्थूलाक्षर । मुम्बई ० १ ०

१४४ आपस्तम्बशुल्बसूत्रम्—सटीकम् । बनारस ० ४ ०

१४५ आपस्तम्बशुल्बसूत्रम्—कपर्दिस्वामि-करविन्द-सुन्दरराजकृत-टीकाभिः समलंकृतम् । मैसूर २ १२ ०

Āpastamba Śulba Sūtras—Edited by Dr. Śrīnivasāchārī and Vidwan S. Narasimhachari. Mysore. 2 12 0

१४६ आपस्तम्बीय उदकशान्तिः—प्रयोग सहित । मुम्बई ० २ ०

१४७ कपिष्ठलकठसंहिता—डा० रघुवीर एम० ए० महोदयेन मीमांसापूर्वकं सम्पादिता । लाहौर ३० ० ०

Kapiṣṭhala Kaṭha Saṃhitā—A text of the Black Yajurveda critically edited for the first time by Dr. Raghuvira, M. A. Lahore. Bound 30 0 0

१४८ काठकगृह्यसूत्रम्—सटीकम । लाहौर ७ ० ०

Kāṭhaka Gṛhya Sūtras—With extracts from three commentaries, appendix and indices. Edited by Dr. W. Caland. Lahore 7 0 0

१४९ कृष्णयजुर्वेदीयकाठकम्—संस्कृतमूलम् । जनविक्रमिणा श्रोत्रा लीवोराय-देशोद्भवेन प्राचीनराष्ट्रे वीणाख्यायां राजधान्यां निवासिना संशोधितम् । ४ भागेषु सम्पूर्णम् । जर्मनी ४० ० ०

Kāṭhaka Saṃhitā—or Kaṭha Śākhā of the Black Yajurveda, edited with notes and Introduction by Leopold von Schroeder and full Index of words by R. Simon. Text in Sanskrit. 4 vols. 40 0 0

150 Index Verborum zu Leopold von Schroeder's Kāṭhakam Ausgabe Von Richard Simon.
Germany 14 0 0

१५१ तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम्—माहिषेयकृतपदक्रमसदनभाष्यसंहितम् ।
मद्रास २ ४ ०

Taittirīya Prātiśākhya—with the commentary of

Padakramasadana by Māhiṣeya, critically edited with appendices, for the first time, from original Mss. by V. Rama Sharma Vidyābhūshan. Madras 2 4 0

१५२ तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम्—सोमयार्यकृतत्रिभाष्यरत्नव्याख्यया गार्ग्यगोपाल-यज्वकृतवैदिकाभरणव्याख्यया च समलङ्कृतम् । दुष्प्राप्यम् । मैसूर १२ ० ०

१५३ तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम्—सोमयार्यविरचितत्रिभाष्यरत्नाख्यव्याख्यया सहितम् । दुष्प्राप्यम् । कलकत्ता ७ ० ०

१५४ तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम्—त्रिभाष्यरत्नटीका तथा अंग्रेज़ी अनुवाद सहित । U. S. A. ३० ० ०

Taittirīya-Prātiśākhya—With its commentary the Tribhāṣyaratna, text, English translation and notes by W. D. Whitney. Text in original Sanskrit. U. S. A. 30 0 0

१५५ तैत्तिरीयब्राह्मणम्—सायणाचार्यकृतवेदार्थप्रकाशाख्यभाष्यसहितम् । सस्वरं सम्पूर्णम् । स्थूलाक्षर । दुष्प्राप्य । कलकत्ता ३५ ० ०

१५६ तैत्तिरीयब्राह्मणम्—सायणाचार्यविरचितभाष्यसहितम् । खण्डत्रयम् । पूना १४ ८ ०

१५७ तैत्तिरीयब्राह्मणम्—भट्टभास्करमिश्रविरचितभाष्यसहितम् । खण्डचतुष्टये सम्पूर्णम् । दुष्प्राप्यम् । मैसूर ४० ० ०

१५८ तैत्तिरीयसंहिता—मूल । खुले पत्रे । मुम्बई ४ ० ०

१५९ तैत्तिरीयसंहितापदपाठः—सस्वरः । खण्डद्वयम् । कुम्भघोणम् १० ० ०

१६० तैत्तिरीयसंहितापदानुक्रमणिका—महामहोपाध्यायपरशुरामशास्त्रिणा विरचिता । प्रथमः खण्डः । पूना २ ० ०

Taittirīya Saṃhitā-Word-Index—by M. M. Parashu Rama Shāstrī. Part I. Poona 2 0 0

१६१ तैत्तिरीयसंहिता—भट्टभास्करविरचितभाष्यसहिता । १० भाग । दुष्प्राप्य । मैसूर ६० ० ०

१६२ तैत्तिरीयसंहिता—सायणाचार्यविरचितभाष्यसमेता । ६ भागेषु सम्पूर्णा । पूना ४८ १० ०

163 Taittirīya Saṃhitā—The Veda of the Black Yajus School translated into English from the original Sanskrit prose and verse with a running commentary by A. B. Keith. Complete in 2 Volumes. Nicely bound. Library edition. Foreign 39 6 0

१६४ तैत्तिरीयारण्यकम्—खण्डद्वयम् । सायणाचार्यविरचितभाष्यसहितम् । पूना ६ १

१६५ तैत्तिरीयारण्यकम्—सायणाचार्यविरचितसंस्कृतभाष्यसहितम् । कलकत्ता २० ०

१६६ त्रिकाण्डमण्डनम् (आपस्तम्बसूत्रध्वनितार्थकारिका)—भास्करमिश्रसोमयाजिकृतम् । व्याख्यया समलंकृतम् । कलकत्ता २ ४

१६७ पितृमेधसूत्राणि—बौधायनहिरण्यकेशिगौतमानाम् । लीप्जिग १० ०

Pitrimedha Sūtras of Baudhāyana, Hiraṇyakeśi and Gautama—Text with critical English notes and index by Dr. W. Caland Leipzig 10 0

१६८ बौधायनगृह्यसूत्रम्—आर० शामशास्त्रिणा सम्पादितम् । अनुक्रमणिका समेतम् । मैसूर २ ४

१६९ बौधायनधर्मसूत्रम्—टिप्पण तथा शब्दसूचीसहित । यूरोप १४ ०

Baudhāyana Dharma Sūtra—Edited with critical notes, appendix and an index of words by E. Hultzsch Ph. D. Text in Devanāgarī characters. Europe 14 0

१७० बौधायनधर्मसूत्रम्—श्रीगोविन्दस्वामिप्रणीतविवरणसमेतम् । काशी ४ ०

Baudhāyana Dharma Sūtras—with the "Vivaraṇa" commentary by Śrī Govinda Swami. Edited with notes introduction and word-index by Pt. A. Chinnaswami Shāstrī. Benares 4 0

१७१ बौधायनश्रौतसूत्रम्—सम्पूर्णम् । दुष्प्राप्यम् । ३५ ०

Baudhāyana Śrauta Sūtras, edited by Dr. Caland Complete. Rare. 35 0

१७२ भारद्वाजगृह्यसूत्रम्—मूलमात्रम् । विलायत ८ ८

Bhāradvāja Gṛhya Sūtras—or the Domestic Ritual according to the School of Bharadvāja. Edited in the Devanāgarī characters with an introduction and list of words by Mr. J. W. Salomons. Foreign 8 8

173 Bhāradvāja Śrauta Sūtram (भारद्वाजश्रौतसूत्रम)—Edited by Dr. Raghuvira, M. A., Ph. D., Lahore. (In the press).

१७४ मन्त्रपाठः—मूल, सटिप्पण तथा शब्दानुक्रमणिका सहित । स्थूलाक्षर । यूरोप १० ८

Mantrapāṭha—or the Prayer Book of the Apastambins. Edited with introduction, Sanskrit text, variants, lectionis and appendices by M. Winternitz, Ph. D.
Oxford 10 8 0

१७५ मानवगृह्यसूत्रम्—पं० भीमसेन जी कृत भाषानुवादसहित। इटावा ० ८ ०

१७६ मानवगृह्यसूत्रम्—A work in Vedic ritual (domestic) of the Yajurveda with the Bhāṣya of अष्टावक्र edited with an introduction in Sanskrit by Pt. Ramakrishna Harshaji Shāstri with a preface by Prof. B. C. Lele, M. A.
Baroda 5 0 0

१७७ मानवश्रौतसूत्रम्—प्राक्सोमः, अग्निष्टोमः, प्रायश्चित्तानि, प्रवर्ग्यकल्पः, इष्टिकल्पः। edited by Dr. F. Knauer. and चयनम edited by J. M. Van Gilder. Foreign 57 0 0

१७८ मैत्रायणीसंहिता—सम्पूर्णा। जर्मनी २८ ० ०

Maitrāyaṇī Saṃhitā of the Black Yajurveda, critically edited by Dr. L. Schroeder. Complete.
Germany 28 0 0

१७९ यज्ञपरिभाषासूत्रसंग्रहः—भाषाटीकासहितः। इटावा ० ८ ०

१८० रुद्रभाष्यम्—श्रीमदभिनवशङ्कराचार्यप्रणीतम। मुम्बई १ ० ०

१८१ रुद्रभाष्यम्—श्रीमदभिनवशङ्कराचार्यविरचितम। मद्रास ० १२ ०

१८२ रुद्राध्यायः—सायणाचार्यभट्टभास्करप्रणीतभाष्याभ्यां संवलितः। पूना १ ६ ०

१८३ लौगाक्षिगृह्यसूत्रम्—देवपालकृतभाष्यसहितम्। मधुसूदनकौलशास्त्रिणा सम्पादितम्। द्वौ भागौ। सजिल्द। कश्मीर ६ ८ ०

१८४ वाराहगृह्यसूत्रम्—मूलमात्रम्। आर० शामशास्त्रिणा सम्पादितम्। बड़ौदा ० १० ०

Vārāha Gṛhya Sūtras—Edited by Dr. Shama Shāstrī. Baroda 0 10 0

१८५ वाराहगृह्यसूत्रम्—ठाकुर उदयनारायणसिंह कृत भाषानुवाद सहित। मुजफ्फरपुर २ ८ ०

१८६ वाराहगृह्यसूत्रम्—Vārāha Gṛhya Sūtras—Critically edited, with short extracts from the Paddhatis of Gangādhara and Vasiṣṭha by Dr. Raghuvīra, M. A., D Litt.
Lahore 3 12 0

१८७ **वाराहश्रौतसूत्रम्** Vārāha Śrauta Sūtras—Being th main ritualistic sūtras of the Maitrāyaṇī Śākhā. Critical-ly edited for the first time with Mantra index by Drs W. Caland and Raghuvīra. Lahore 12 0

१८८ **वैखानसस्मार्त्तसूत्रम् (अर्थात् वैखानसगृह्यसूत्रम्)**—Criti-cally edited by Dr. W. Caland. Calcutta 1 8

189 Vaikhānasa Gṛhya Sūtras—Translated int English by Dr. W. Caland. Calcutta 3 12

१९० **वैखानसधर्मप्रश्नः**— मद्रास १ ०

१९१ **वैखानसधर्मप्रश्न तथा प्रवरखण्ड**—Edited by K. Ranga-chari Madras 5 0

192 Vaikhānasa Dharma Sūtra—Introduction, transla-tion and notes with tables of Pravaras by K. Rangachari M. A., B. L. Madras 5 0

१९३ **सत्याषाढश्रौतसूत्रम्**—महादेवकृतवैजयन्ती-गोपीनाथभट्टकृतज्योत्स्नाख्य-व्याख्याभ्यां समलंकृतम् । १० भागेषु सम्पूर्णम् । पूना २८ ५

१ भाग	४	०	०	६ भाग		१	५
२ भाग	१	१०	०	७ भाग		१	८
३ भाग	३	८	०	८ भाग (गृह्यसूत्र)	४	०	
४ भाग	२	२	०	९ भाग (शुल्बसूत्र)	३	४	
५ भाग	३	०	०	१० भाग (धर्मसूत्र)	४	०	

१९४ **हिरण्यकेशीयगृह्यसूत्रम्**—मूलमात्रम् । मुम्बई ० ४

१९५ **हिरण्यकेशीयगृह्यसूत्रम्**—टिप्पणैः शब्दानुक्रमणिकया च समलङ्कृतम् यूरोप १० ०

Gṛhya Sūtras of Hiraṇyakeśin—with extracts from the commentary of Matridatta. Edited with an index of words by Dr. J. Kirste. Vienna 10 0

१९६ **हिरण्यकेशीय देवे**—स्वरसहित । मुम्बई ० १

१९७ **हिरण्यकेशीयनित्यविधिः**—मूल । खुले पत्रे । मुम्बई ० ५

१९८ **हिरण्यकेशीयमन्त्रसंहिता**—खुले पत्रे । मुम्बई ० १०

१९९ **हिरण्यकेशीययाज्ञिकोपयोगी मन्त्रसंग्रहः**—मूल । खुले पत्रे । मुम्बई १ ८

शुक्लयजुर्वेद-ग्रन्थ

200 L' Aśvamedha—Description du Sacrifice Solenne

du cheval dans le culte Vedique, d' apres les textes du Yajurveda blanc (वाजसनेयि-संहिता, शतपथब्राह्मण, कात्यायनश्रौतसूत्र). Par P. E. Dumont. Paris 16 0 0

२०१ कातीयेष्टिदीपकः (दर्शपौर्णमासपद्धतिः)—पंडितनित्यानन्दपन्तपर्वतीयकृतः। काशी १ ० ०

२०२ कात्यायनश्रौतसूत्रम्—कर्कभाष्यसहितम्। कात्यायनकृतशुल्बसूत्रं कर्कभाष्येण महीधरभाष्येण च संवलितम्। १३ खण्डेषु सम्पूर्णम्। बनारस १३ ० ०

२०३ कात्यायनश्रौतसूत्रम्—श्रीमन्महर्षिकात्यायनप्रणीतम्। वेदाचार्यपंडितविद्याधरशर्मणा विरचितया सरलाख्यया वृत्त्या समेतम्। काशी ६ ० ०

२०४ कात्यायनश्रौतसूत्रम्—देवयाज्ञिकपद्धतिसहितम्। पंडितविद्याधरेण सम्पादितम्। ६ खण्डाः। काशी ९ ० ०

२०५ कात्यायनसूत्रम् (का० श्रौतसूत्रम्)—मूलम्। पूर्वखण्डः। काशी ० १२ ०

२०६ कात्यायनशुल्बसूत्र—कर्कभाष्य-महीधरवृत्तिसहित। काशी ० ६ ०

207 Science of the Śulba—A study in Early Hindu Geometry. By Bibhuti Bhushan Datt. Calcutta 3 0 0

२०८ शुल्बसूत्रम्—कात्यायनश्रौतसूत्रस्य परिशिष्टांशः। वेदाचार्यपंडितविद्याधरगौडविरचितसरलवृत्तिसहितम्। काशी ० ४ ०

२०९ चरणव्यूहः—मूलमात्र। मुम्बई ० ० ६

२१० चरणव्यूहः—द्विजवरपंडितशक्तिधरसंकलितभाषाभाष्यसहित। लखनऊ ० ४ ०

२११ चरणव्यूहपरिशिष्टसूत्रम्—श्रीमहिदासपंडितप्रणीतभाष्यसहितम्। बनारस ० ८ ०

२१२ दण्डक—मूल। खुले पत्रे। मुम्बई ० ४ ०

२१३ पारस्करगृह्यसूत्रम्—मूलमात्रम्। खुले पत्रे। मुम्बई १ ० ०

२१४ पारस्करगृह्यसूत्रम्—कात्यायनसूत्रीयश्राद्ध-शौच-स्नान-भोजन-कल्पसूत्रसहितम्। मूलमात्रम्। काशी ० ८ ०

२१५ पारस्करगृह्यसूत्रम्—मूलम्। श्रीवेदाचार्यविजयचन्द्रशर्मकृतं सस्वरं पूर्णमन्त्रप्रदर्शकाद्युपयुक्तटिप्पण्यादिसहितम्। मुम्बई ० ८ ०

२१६ पारस्करगृह्यसूत्रम्—श्रीमद्हरिहरभाष्येण संयुतम्। मुम्बई २ ० ०

२१७ पारस्करगृह्यसूत्रम्—काण्डद्वये हरिहरगदाधर०, तृतीयकाण्डे हरिहरजयरामप्रणीतभाष्येण समलंकृतम्। हरिहरभाष्यसहितस्नानत्रिकण्डिकासूत्रगदाधरभाष्यसहितश्राद्धनवकण्डिकासूत्रैः यमलजननशान्ति-पृष्ठोदिवि-शौच-भोजन-कामदेवकृतभाष्यसहितोत्सर्गपरिशिष्टसूत्रैः परिष्कृतं टिप्पण्यादिभिः सहितं च। काशी ३ ० ०

२१८ **पारस्करगृह्यसूत्रम्**—कर्क-जयराम-हरिहर-गदाधर-विश्वनाथकृतभाष्यपञ्चक-भूषितम्। कामदेवकृतभाष्यसहितम्। मुम्बई ६ ८

२१९ **पारस्करगृह्यसूत्रम्**—श्रीकर्कोपाध्याय-जयरामाचार्य-हरिहराचार्य-गदाधरदीक्षित-विश्वनाथ-प्रणीतभाष्यपञ्चकभूषितम्। कामदेवभाष्यसहितवाप्यादिप्रतिष्ठा-कण्डिका-शौचसूत्र-हरिहरभाष्योपेतस्नानसूत्र-कर्कगदाधरकृतभाष्य-कृष्णमिश्रकृतश्राद्धकाशिकाख्यव्याख्योपेत-श्राद्धसूत्र-भोजनसूत्ररूपपरिशिष्टविशिष्टं च। मुम्बई ७ ०

२२० **पारस्करगृह्यसूत्रम्**—शुकदेववर्मकृतभाषाभाष्यसहितम्। काशी ३ ०

२२१ **पारस्करगृह्यसूत्रम्**—संस्कृत मूल जर्मन अनुवाद सहित। २ भागों में सम्पूर्ण। दुष्प्राप्य। यूरोप २१ ६

Pāraskara Gṛhya Sūtras—Text edited with notes and German translation by A. F. Stenzler. Complete in 2 parts. Rare. Foreign 21 6

२२२ **पारस्करगृह्यसूत्रम्**—पंडित राजाराम कृत भाषानुवाद सहित। लाहौर १ १०

२२३ **पारस्करगृह्यसूत्रम्**—श्रीवेणीरामशर्मकृतविवृतियुतम्। काशी १ ४

२२४ **पितृसंहिता**—स्थूलाक्षर। मुम्बई ० २

२२५ **पुरुषसूक्तम् (सहस्रशीर्षः)**—मूल। स्थूलाक्षर। लाहौर ० ०

२२६ **पुरुषसूक्तम्**— मुम्बई ० १

२२७ **पुरुषसूक्तं, लक्ष्मीसूक्तं, श्रीसूक्तम्**—मूल, स्थूलाक्षर। मुम्बई ० १

२२८ **पुरुषसूक्त श्रीसूक्त**— बनारस ० १

२२९ **पुरुषसूक्तं, विष्णुसूक्तं, श्रीसूक्तं, भूसूक्तं, नीलासूक्तम्**—मूल नित्यपाठोपयोगी। मुम्बई ० १

२३० **पुरुषसूक्तं, श्रीसूक्तं, लक्ष्मीसूक्तं, उत्तरनारायणं च**— मुम्बई ० २

२३१ **पुरुषसूक्तं, श्रीसूक्तं, दुर्गासूक्तम्**—सस्वरम्। मुम्बई ० २

२३२ **पुरुषसूक्तम्**—सायणाचार्यप्रणीतभाष्योपेतम्। पूना ० ४

२३३ **पुरुषसूक्तम्**—सायणमहीधरमंगलनिम्बार्ककृतभाष्यैः समलंकृतम्। काशी १ ४

२३४ **पुरुषसूक्तभाष्यम्**— काशी १ १

२३५ **पुरुषसूक्त**—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकासहित। मुम्बई ० ५

२३६ **ब्रह्मनित्यकर्म (शुक्लयजुर्वेदीय)**—मूल। स्थूलाक्षर। खुले पत्रे दुष्प्राप्य। मुम्बई १ ८

२३७ **ब्रह्मनित्यकर्म (शुक्लयजुर्वेद)**— मुम्बई १ ८ ०

२३८ **शुक्लयजुर्वेदीयमध्यन्दिनीयरुद्रन्मन्त्रसंहिता**—स्वरसहित। बनारस, मुम्बई ० १० ०

२३९ **शुक्लयजुर्वेदीयमध्यन्दिनीयमन्त्रसंहिता**—स्थूलाक्षर। खुले पत्रे। मुम्बई ० ८ ०

२४० **मन्त्रार्थदीपिका**—शत्रुघ्नसंकलिता। सटीक बनारस २ ० ०

२४१ **यजुर्वेदकाण्वसंहिता**—मूलमात्र। सम्पूर्ण। स्थूलाक्षर। खुले पत्रे। मद्रास ३ ० ०

२४२ **शुक्लयजुःकाण्वसंहिताभाष्यम्**—सायणाचार्यविरचितम्। १ अध्यायादारभ्य २० अध्यायपर्यन्तम्। काशी ६ ० ०

२४३ **यजुर्वेद**—मूलमात्र। विना जिल्द। १ ८ ०
कागज और कपड़े की जिल्द। २ ० ०

२४४ **यजुर्वेद**—मूलमात्र। गुटका। नित्यपाठोपयोगी। अजमेर ० १२ ०

२४५ **यजुर्वेद**—स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत भाष्य सहित। सम्पूर्ण अजमेर १८ ० ०

२४६ **यजुर्वेदभाषाभाष्य**—स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत संस्कृत भाष्य का हिन्दी अनुवाद। अजमेर २ ८ ०

२४७ **यजुर्वेदभाषाभाष्य**—दो भागों में सम्पूर्ण। भाष्यकार-पं० जयदेवविद्यालंकार मीमांसातीर्थ। अजमेर ८ ० ०

२४८ **शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहिता**—मूल। खुले पत्रे। मुम्बई २ ० ०

२४९ **शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहिता**—अस्याः संहिताया अन्ते याज्ञवल्क्यशिक्षा, प्रतिज्ञासूत्रम्, सर्वानुक्रमः, अनुवाकसूत्रम्, मन्त्रकोशश्च विद्यन्ते। मुम्बई ३ ० ०

२५० **शुक्लयजुर्वेद(वाजसनेयी)संहिता**— मुम्बई ३ ८ ०

२५१ **शुक्लयजुर्वेद(वाजसनेयी)संहिता**—पदपाठ तथा स्वरसहित। २ ० ०

२५२ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता**—मूलमात्र। स्वरसहित। बुकसाईज अजमेर ० १२ ०

२५३ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता**—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाभाष्यसहित। २ भागों में सम्पूर्ण। विलायती जिल्द सहित। मुम्बई १५ ० ०

२५४ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता**—प्रतिज्ञासूत्र-याज्ञवल्क्यशिक्षा-सर्वानुक्रमणिकानुवाकसूत्रादिसमुपेता। स्थूलाक्षर। खुले पत्रे। मुम्बई ४ ० ०

२५५ **यजुर्वेदसंहिता**—श्रीमदुदयप्रकाशदेवकर्तृक-भाष्यसंवलिता तेनैव परिष्कृता च। दुष्प्राप्या। मथुरा १५ ० ०

२५६ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता**—उव्वटमहीधरभाष्ययुता, यजुःशाखीयविविधपरिशिष्टयुता च। मुम्बई ५ ४ ०

२५७ शुक्लयजुर्वेदसंहिता—उव्वटमहीधरकृतभाष्यसहिता । ४ भागेषु सम्पूर्णा। स्थूलाक्षर । काशी ८ ० ०

२५८ शुक्लयजुर्वेद—महीधरभाष्य सहित । कलकत्ता १० ० ०

259 White Yajurveda—Translated into English with notes etc. by T. H. Griffith. Benares 4 0 0

२६० यजुर्वेदसंहितापदपाठः—मूल । स्थूलाक्षर । खुले पत्रे । दुष्प्राप्य । बनारस ३ ४ ०

२६१ शुक्लयजुर्वेदपादसूची— १ ० ०

२६२ यजुर्वेदसंहिताया मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची—अजमेर ० ६ ०

२६३ यजुर्वेदपदानाम्—अकारादिवर्णक्रमानुक्रमणिका । श्रीमत्स्वामिविश्वेश्वरानन्दनित्यानन्दाभ्यां संगृह्य संस्कृता । दुष्प्राप्या । मुम्बई १ ८ ०

A complete index to all the words in the Yajurveda—By Swāmī Viśveśvarānanda and Swāmi Nityānanda. Rare. Bombay 1 8 0

२६४ यजुर्वेद का स्वाध्याय—यजुर्वेद अध्याय ३६ । सच्ची शान्ति का सच्चा उपाय । औंध ० १० ०

२६५ यजुर्वेदभाष्यसमीक्षा— इटावा ० १ ६

२६६ शुक्लयजुस्सर्वानुक्रमसूत्रम्—महर्षिकात्यायनप्रणीतम् । श्रीयाज्ञिकानन्तदेवविरचितभाष्यसहितम् । ४ खण्डेषु सम्पूर्णम् । बनारस ४ ० ०

२६७ यजुर्वेदसर्वानुक्रमसूत्रम्— सितारा १ ० ०

२६८ शुक्लयजुःप्रातिशाख्यम्—उव्वटकृतभाष्यसहितम् । कलकत्ता २ ० ०

२६९ शुक्लयजुःप्रातिशाख्यम्—श्रीकात्यायनमहर्षिप्रणीतम् । उव्वटभाष्यसहितम् । ६ खण्डेषु सम्पूर्णम् । काशी ६ ० ०

२७० वाजसनेयिकात्यायनप्रातिशाख्यम्—भाष्यद्वयोपेतम् । श्री पं० वेंकटरामशर्मणा सम्पादितम् । मद्रास ४ ८ ०

Kātyāyana Prātiśākhya—Edited by V. Venkaṭarāma Sharmā. Madras 4 8 0

271 Critical studies on Kātyāyana's Śukla Yajurveda Prātiśākhya by V. Venkatarama Sarma. Madras 4 8 0

२७२ याजुषज्यौतिषम्—सोमाकरसुधाकरभाष्यसहितम् । आर्चज्यौतिषञ्च सुधाकरभाष्येण तल्लघुविवरणेन च सहितम् । काशी १ ४ ०

२७३ याज्ञवल्क्यशिक्षा—भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ६ ०

२७४ रुद्रः (नमकचमकात्मकाध्यायः)—मूल ० २ ०

२७५ श्रीरुद्रः—मूलमात्र । खुले पत्रे । मुम्बई ० २ ०

२७६ रुद्री—मूल । काशी ० ४ ०

२७७ रुद्री शुक्लयजुर्वेदी—मूल । षडंगन्यास सहित ० ४ ०

२७८ रुद्राभिषेकानुष्ठानपद्धति—सोमयाजिविरचित । मूलमात्र । मद्रास ० ७ ०

२७९ रुद्राष्टाध्यायी (शुक्लयजुर्वेदीय)—स्थूलाक्षर । मुम्बई ० ५ ०

२८० रुद्राष्टाध्यायी (शुक्लयजुर्वेदीय)—रुद्राभिषेकप्रयोगसहिता । स्थूलाक्षर । खुले पत्रे । लाहौर ० ४ ०

२८१ रुद्राष्टाध्यायी—पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्र कृत भाषाटीका सहित । मुम्बई १ ४ ०

२८२ शतपथब्राह्मणम्—मूलमात्र । (छपता है) अजमेर

२८३ शतपथब्राह्मणम् (सस्वरम्)—मूलमात्रम् । प्रथमो भागः (काण्डानि-१–४) । काशी २ ८ ०

२८४ शतपथब्राह्मणम् (माध्यन्दिनम्)—हविर्यज्ञं नाम प्रथमं काण्डम् । सायणाचार्यकृतवेदार्थप्रकाशाख्यभाष्यसहितम् । विषमस्थलबोधकटिप्पणीभिः परिष्कृतम् । मुम्बई ५ ० ०

२८५ शतपथब्राह्मणम्—श्रीमत्सायणाचार्य-हरिस्वामिद्विवेदगंगकृतभाष्येभ्यः सारमुद्धृत्य श्रीअल्बेर्तेन वेबरेण संशोधितम् । जर्मनी १०७ ० ०

Śatapatha Brāhmaṇa (Mādhyandina)—With extracts from the commentaries of Sāyaṇa, Harisvamī and Dvivedagaṅga, critically edited by Weber.

Foreign 107 0 0

286 Śatapatha Brāhmaṇam—According to the text of the Mādhyandina School, translated into English by Julius Eggelling. Complete in 5 big Volumes.

Foreign 56 4 0

२८७ शतपथब्राह्मणम्—काण्वशाखीयं मूलमात्रम् । डा॰ कैलण्डमहोदयेन संशोधितम् । प्रथमो भागः । १० ० ०

Śatapatha Brāhmaṇa (Kāṇvaśākhīya)—Critically edited, with exhaustive introduction, by Dr. W. Caland. Part I. Lahore 10 0 0

२८८ शतपथबोधामृत—भाषा में । औन्ध ० ४ ०

२८९ श्रीसूक्तम्—मूल । मुम्बई ० १ ०

२९० श्रीसूक्तम्—मूल । स्थूलाक्षर । मुम्बई ० २ ०

२६१ **श्रीसूक्तम्**—राजवैद्यजीवारामकालिदासशास्त्रिविरचितया श्रीप्रसादिनीसंज्ञया टीकया गुर्जरभाषान्तरेण रहस्यात्मकप्रयोगैः पुरश्चरणादिभिश्च संयुतम्। गोण्डल ० ८ ०

२६२ **श्रीसूक्तम्**—विद्यारण्यपृथ्वीधरश्रीकण्ठाचार्यकृतभाष्यत्रयेण समलंकृतम्।
काशी ० ६ ०

२६३ **श्रीसूक्तभाष्यम्**—प्रतिवादिभयङ्करेण अनन्ताचार्येण संशोधितम्।
काञ्ची ० २ ६

२६४ **श्रीसूक्त** - हिन्दीभाषाभाष्यसहित। मुम्बई ० २ ०

२६५ **संस्कारगणपतिः**—पारस्करगृह्यसूत्रविस्तृतविवरणरूप.। विद्वद्वररामकृष्णकृतः ७ खंडाः। काशी १० ८ ०

सामवेद-ग्रन्थ

२६६ **आरण्यसंहिता**—सायणाचार्यकृतभाष्यसहिता।
कलकत्ता ० १० ०

297 Ārṣeyakalpa of Sāmaveda—Text edited in Roman with notes &c. by Dr. W. Caland. Foreign 7 0 0

२६८ **उपनिदानसूत्रम् (अथवा सामगानां छन्दः)**—डा० मंगलदेवशास्त्रिणा संशोधितम्। प्रयाग 1 0 0

"A work of considerable importance of the Vedic metre in general and especially for the metres of the Sāma-veda"

२६६ **ऋक्तन्त्रम्** Ṛktantram—A Prātiśākhya of the Sāmaveda, critically edited with notes, appendices and commentary by Dr. Sūrya Kānta, M. A., Ph. D. The notes contain a detailed comparison with the other Prātiśākhyas and Pāṇini. Burnell's edition has been much improved upon with the help of new Mss.
Lahore 20 0 0

३०० **क्षुद्रसूत्रम्**—यह सामवेद का कल्पसूत्र नया छपा है। मूलमात्र।
लाहौर ० ८ ०

३०१ **खादिरगृह्यसूत्रम्**—रुद्रस्कन्दकृतव्याख्यासमेतम्। मद्रास १ ० ०

३०२ **खादिरगृह्यसूत्रम्**—रुद्रस्कन्दवृत्तिसहितम्। ठा० उदयनारायणसिंहकृतभाषानुवादेन समलङ्कृतम्। मुजफ्फरपुर २ ८ ०

३०३ **गोभिलगृह्यसूत्रम्** Gobhila Gṛhya Sūtras—with भट्टनारायण's भाष्य critically edited from original Mss. with notes

and indices, giving a comparative study of all the Gṛhya Sūtras, Dharma Sūtraṣ, Dharma Saṃhitās, Smṛtinibandhas and extracts from the comm. of M. M. Chandrakānta Tarkālaṅkāra, &c., by Chintamaṇi Bhattāchārya. 1936. Calcutta.

Vol. I. Text and commentary 12 0 0

Vol. II. Miscellaneous indices with an introduction by Vanamāli Vedānta tīrtha. 2 0 0

३०४ गोभिलगृह्यसूत्रम्—श्रीचन्द्रकान्ततर्कालङ्कार-कृतभाष्यसमेतम् । Vol. I. कलकत्ता ३ १२ ०

३०५ गोभिलगृह्यसूत्रम्—पंडितसत्यव्रतसामश्रमिकृतव्याख्यया, ठा० उदयनारायणसिंहकृतभाषानुवादेन समलङ्कृतम् । मुजफ्फरपुर २ ८ ०

३०६ गोभिलगृह्यसूत्रम्—म० म० श्रीमुकुन्दशर्मकृतमृदुला-व्याख्यासहितम् । काशी ३ ० ०

३०७ गोभिलीय-गृह्यकर्मप्रकाशिका—सुब्रह्मण्यविदुषा विरचिता । शुकदेववर्म्मकृतभाषानुवादसहिता । काशी ३ ० ०

३०८ श्रीगौतमधर्मशास्त्रम्—The Institutes of Gautama, edited with an index of words by A. F. Stenzler. Foreign

३०९ गौतमधर्मसूत्रम्—मस्करीयभाष्यसहितम् । मैसूर ३ ८ ०

Gautama Dharma Sūtras with Maskarīya commentary. Gautama's is the oldest extant Dharma Sūtra. It is specially studied by the followers of the Sāmaveda. The work contains 28 Chapters and is entirely in prose. The commentary of Maskarī, son of Vāmana is probably late than that of Haradatta. Mysore 3 8 0

३१० गौतमप्रणीतधर्मसूत्राणि—हरदत्तकृतमिताक्षरावृत्तिसहितानि । पूना २ ८ ०

३११ छान्दोग्यमन्त्रभाष्यम्—भट्टगुणविष्णुकृतम् । कलकत्ता २ १२ ०

३१२ जैमिनीयगृह्यसूत्रम्—डा० कैलैंडकृत अंग्रेजी अनुवाद सहित । लाहौर ६ ० ०

Jaimini Gṛhya Sūtras of the Sāmaveda—Text edited with extracts from the commentary of Śrīnivāsa, notes, introduction and translation in English by Dr. W. Caland. Lahore 6 0

३१३ जैमिनीयगृह्यसूत्रम्—सटीकम्। यूरोप १५ १२

Jaiminīya Gṛhya Sūtras of the Sāmaveda. Edited with extracts from the Sanskrit commentary called Subodhini (सुबोधिनी), notes and introduction in German by Dr. W. Caland. Foreign 15 12

314 Jaiminīya Brāhmaṇa of the Sāma Veda, Book I. (सामवेदीयं जैमिनीयब्राह्मणम्-प्रथमं काण्डम्)—Critically edited by Prof. Dr. Raghuvīra for the first time, and printed in best Devanāgarī type, very good paper. Bound with gold letters. [In constructing the text the editor has used many new manuscripts from South India, and the whole material already pnblished i. e. the Roman editions of different parts of the Brāhmaṇa by Prof. Oertel and Dr. Caland. The transcripts of Burnell were also used. The editor is the pupil of Dr. Caland, the Vedic scholar of great renown. He has already edited many Vedic works such as Paippalāda-Saṃhitā of the Atharva-Veda, Kāpiṣṭhala Kaṭha-Saṃhitā, Vārāha Gṛhya Sūtra, Bhāradvāja Śrauta Sūtra ; etc. etc..

Editing of the different parts of the J. Brāhmaṇa was begun in 1890 by Prof. Oertel and later on by Dr. Caland. It was never completed owing to want of sufficient manuscript-material, which has fortunately been secured and used by the editor in bringing out this volume Other volumes of the work are expected to be out in the near future.] 1938. Lahore 14 0 0

315 Jaiminīya Brāhmaṇa in auswahl—Roman text with German translation and indices by Dr. W. Caland. Foreign 12 8 0

316 Jaiminīya or Talavakāra Upaniṣad Brāhmaṇa—Text edited in Roman characters with English translation, notes and index of words by H. Oertel Ph. D. Foreign 8 0 0

३१७ जैमिनीय-(तलवकार-)उपनिषद्ब्राह्मणम्—सटिप्पण, सजिल्द। लाहौर २ ८ ०

३१८ **जैमिनिश्रौतसूत्रम्**—अग्निष्टोमः । टिप्पणसहित । यूरोप १५ ० ०

Jaiminīya Śrauta Sūtras—Being a treatise on the Vedic ritual—Agniṣṭoma, edited with notes and an index by D. Gaastra. Foreign 15 0 0

३१९ **जैमिनीयसंहिता** (सामवेदीया)—आचार्यरघुवीरेण परिष्कृता । १० ० ०

Sāma Veda of the Jaiminīyas—Edited into Devanāgarī, for the first time, by Dr. Raghuvīra, M. A., Ph. D., D. Litt. et Phil. Lahore 10 0 0

३२० **ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्**—सायणभाष्यसहितम् । वेदविशारदेन मीमांसा-केसरिणा श्रीचिन्नस्वामिशास्त्रिणा सम्पादितम् । २ भागौ । काशी १२ ० ०

Tāṇḍya-Mahābrāhmaṇa—of the Sāmaveda, with the commentary of Sāyaṇāchārya, edited with introduction and notes by Pt. A. Chinnasvāmī Shāstrī. Complete in 2 parts. Benares 12 0 0

321 Panchaviṁśa or Tāṇḍya Mahābrāhmaṇam—English translation by Dr. W. Caland. Calcutta 10 0 0

३२२ **दैवतब्राह्मणं तथा षड्विंशब्राह्मणम्**—सायणाचार्यकृतभाष्यसहितम् । कलकत्ता २ ० ०

323 Drāhyāyaṇa Śrauta Sūtras (**द्राह्यायणश्रौतसूत्राणि**)—with the commentary of Dhanvin. Edited by Dr. Raghuvīra, M. A., D. Litt. (In the Press)

३२४ **नारदीयशिक्षा**—मूल । कलकत्ता २ २ ०

३२५ **पुष्पसूत्रम्**—सामप्रातिशाख्यं पुष्पर्षिप्रणीतम् । श्रीमदजातशत्रुकृतभाष्यसहितं सम्पूर्णम् । ३ खण्ड । काशी ४ ८ ०

326 Puṣpasūtra of the Sāmaveda—Edited with introduction, German translation and an index of words by Dr. Richard Simon. Foreign 12 8 0

३२७ **लाट्यायनश्रौतसूत्रम्**—अग्निस्वामिकृतवृत्तिसहितम् । दुष्प्राप्यम । कलकत्ता ६० ० ०

Lāṭyāyana Śrauta Sūtras with the commentary of Agni Swami. Rare. Calcutta 60 0 0

३२८ **लाट्यायनश्रौतसूत्रम्**—अग्निष्टोमाध्यायपर्यन्तम् । सरलाख्यया व्याख्यया सहितम् । पंडितमुकुंदझासम्पादितम् । काशी २ ० ०

Lāṭyāyana Śrauta Sūtras—ending with the Agniṣṭoma chapter with Saralā commentary and notes by Pt. Mukunda Jha Bakshi. Benares 2 0 0

329 Saṃhitopaniṣad Brāhmaṇam (Being the 7th Brāhmaṇam) of the Sāmaveda—The Sanskrit text with a commentary and index of words &c. by A. C. Burnell, Ph. D. Mangalore 7 0 0

३३० सामगायनरुद्री—स्वरसहित। मुम्बई ० १० ०

331 Sāmavidhāna-brāhmaṇam—Being the third Brāhmaṇa of the Sāmaveda. Edited, together with the commentary of Sāyaṇa, an English translation, introduction and index of words. By A. C. Burnell. Foreign 7 0 0

३३२ सामवेदसंहिता—मूल। ३ खण्ड। काशी १ ८ ०

३३३ सामवेदसंहिता—मूल। स्वरसहित। अजमेर ० १० ०

३३४ सामवेदसंहिता—सायणाचार्यकृतभाष्यसमन्विता। कलकत्ता १५ ० ०

३३५ सामवेदसंहिता—सायणाचार्यकृत भाष्य तथा पं० रामस्वरूप कृत भाषानुवाद सहित। मुरादाबाद ५ ० ०

३३६ सामवेदसंहिता—पदपाठ-सायणभाष्य-भाष्यसार-आंगलभाषानुवाद-टिप्पणयादिभिः समलंकृता। भवविभूतिभट्टाचार्येण सम्पादिता। प्रथमो भागः— छन्दआर्चिकम् खण्डद्वयात्मकम्। कलकत्ता १२ ८ ०

द्वितीयो भागो मुद्रयते

Sāmaveda Saṃhitā—with पदपाठ, Sāyaṇa Bhashya, Bhāshyasāra, English translation and notes. Edited by भवविभूतिभट्टाचार्य। Calcutta 1936.

Vol. I. (with text) 2 parts. 12 8 0

Vol. II. (In the Press)

३३७ सामवेदसंहिता (आग्नेयं पर्व)—श्रीसत्यचरणरायदेवशर्मसांख्यवेदान्तवेदतीर्थकृताधियाज्ञिकाध्यात्मिकभाष्याद्युपेता विविधटिप्पणीभिः समलंकृता च। कलकत्ता १ १२ ०

३३८ सामवेदसंहिता (आग्नेयं पर्व)—सायणभाष्यवंगानुवादसमन्विता। कलकत्ता ० १० ०

३३९ सामवेदः (संहितापाठः)—छन्दआर्चिकम्। सस्वरम्। अतीव शुद्धम्। कलकत्ता ० ८ ०

Sāmaveda (Chanda-Ārcika)—Text. [The text and

accent-marks have been compared with an excellent Telugu edition.] Calcutta 0 8 0

३४० **सामवेदभाषाभाष्य**—जयदेवविद्यालंकारमीमांसातीर्थकृतः।
अजमेर ४ ० ०

341 Hymns of the Sāmaveda—Translated into English by T. H. Griffith. Benares 4 0 0

३४२ **सामवेदसंहिताया मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची**—अजमेर ० ४ ०

३४३ **सामवेदार्चिकम्**—टिप्पण तथा जर्मन अनुवाद और शब्दानुक्रमणिका सहित। जर्मनी २५ ० ०

जर्मनानुवाद और शब्दानुक्रमणिका के विना १५ ० ०

Hymns of the Sāmaveda—Text edited with notes, index, glossary and German translation by Theodore Benfey. Foreign 25 0 0

Without glossary and German translation 15 0 0

३४४ **सामवेदरुद्री**— काशी ० ८ ०

३४५ **सामवेदीयरुद्री**—मूल। काशी ० ८ ०

३४६ **सामवेदीयरुद्रजपविधिः**— काशी ० ८ ०

अथर्ववेद-ग्रन्थ

३४७ **अथर्वणवेदरुद्रजाप**—मूलमात्र। मुम्बई ० ८ ०
मुरादाबाद, अहमदाबाद ० ६ ०

३४८ **अथर्वणमन्त्रसंहिता**—मूलमात्र। अहमदाबाद १ ० ०

३४९ **अथर्ववेदमन्त्रसंहिता**—मूल। खुले पत्रे। मुम्बई १ ८ ०

३५० **अथर्ववेदसंहिता**—मूलमात्र। स्वरसहित। अजमेर १ ८ ०

३५१ **अथर्ववेदसंहिता**—सायणभाष्यसमेता। एस० पी० पण्डितेन सम्पादिता। ४ भाग। मुम्बई ४० ० ०

Atharva Veda Saṃhitā—With the commentary of Sāyaṇāchārya. Edited by S. P. Pandit. 4 Vols. Bombay 40 0 0

३५२ **अथर्ववेदसंहिता**—पं० क्षेमकरणदासत्रिवेदिकृत भाषाटीका, मन्त्रसूची तथा पदसूची सहित। सम्पूर्ण। प्रयाग ४७ ८ ०

३५३ **अथर्ववेदसंहिता**—सायणभाष्य और भाषाटीका सहित।
मुरादाबाद २५ ० ०

३५४ **अथर्ववेदसंहिता**—पं० राजारामकृत भाषाभाष्यसहित। २ भागों में सम्पूर्ण।
लाहौर १६ ० ०

३५५ अथर्ववेदसंहिता—मूल। अत्युत्तम। जर्मनी २५ ०

Atharva Veda—Text originally edited by R. Roth and W. D. Whitney. Revised by Lindenau. Foreign 25 0

356 Atharvaveda—translated into English with critical and exegetical commentary by the late Prof. W. D. Whitney. The work indudes critical notes on the text with various readings from European and Hindu manuscripts, readings of the Kashmirian Version, notices of corresponding passages in the other Vedas, with report of variants; data of the scholiasts as to authorship and divinity and metre of each verse; extracts from the auxiliary literature concerning ritual and exegesis; literal translation; elaborate, critical and historical introduction. Complete in 2 parts. U. S. A. 59 1

357 Hymns of the Atharva Veda—Together with extracts from the ritual books and the commentaries. Translated into English by Maurice Bloomfield. Foreign 15 12

358 Hymns of the Atharva Veda—Translated into English by Ralph T. H. Griffith. Complete in 2 vols. Benares 12 0

३५९ अथर्ववेद का सुबोधभाष्य—१८ कांड तक। १५ भाग। भाष्यकार-श्रीपाद दामोदर सातवलेकर। सजिल्द। औंध २८ ८

३६० अथर्ववेदभाषाभाष्य—पं॰ जयदेव विद्यालंकार कृत। ४ भागों में सम्पूर्ण अजमेर १६ ०

361 Atharva Veda—Translated into German by Friedrich Rückert. Foreign 13 8

३६२ अथर्ववेदसंहिताया मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची— अजमेर ० १०

३६३ अथर्ववेद का निघंटु—कौत्सव्यमुनि विरचित। मूल। लाहौर ० १४

३६४ अथर्ववेदप्रातिशाख्यम्—विद्याभास्कर-वेदान्तरत्न-सूर्यकान्तशास्त्रि-व्याकरणतीर्थेन संपादितं, स्वोपज्ञया टीकया च समलंकृतम्। सुनहरी जिल्द ५० ०

Atharva-Prātiśākhya—Critically edited for the first time, by Prof. Surya Kanta M. A., M. O. L., D. Litt., D. Phil. (Oxon.), Reader in Sanskrit, University of the Panjab, with an exhaustive introduction, English translation, Notes, Appendix and indices. Gilt binding. 50 0

365 Atharva Prātiśākhyam (अथर्वप्रातिशाख्यम् । मूलमात्रम् । पंडितविश्वबन्धुशास्त्रिणा सम्पादितम्)—Or the Phonetico-Grammatical Aphorisms of the Atharva Veda, Part I-text, edited by Vishvabandhu Vidyārthi Shāstrī, M. A., M. O. L. Lahore 2 4 0

366 Atharvaprāyaścittāni—Text mit anmerkungen von Prof. Julius von Negelein. Leipzig 18 0 0

३६७ **अथर्ववेदस्य कौशिकसूत्रम्**—रामेण पुष्पचेत्रेण श्रोत्रा बल्तिमोराख्ये महानगरे अमरीकादेशे संशोधितं सटिप्पणम् । ४५ ० ०

Kauśika Sūtras—of the Atharva Veda with extracts from the commentaries of Dārila and Keśva. Edited with notes &c. by Maurice Bloomfield. U. S. A. 45 0 0

३६८ **अथर्ववेदीयदन्त्योष्ठविधि**—अर्थात् अथर्ववेद का चतुर्थ लक्षण ग्रन्थ । पंडित रामगोपालकृत भाषानुवाद सहित । लाहौर ० ८ ०

३६९ **अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका**—अर्थात् अथर्ववेद का तृतीय लक्षण ग्रन्थ । पंडित भगवद्दत्तकृत भाषानुवाद सहित । लाहौर २ ० ०

३७० **अथर्ववेदीया पैप्पलाद-संहिता**—काण्डा: १—१३ । डा० रघुवीरेण परिष्कृता । लाहौर ३० ० ०

३७१ **अथर्ववेदसंहिता**—पैप्पलाद शाखा । फोटो से उतरी हुई शारदा प्रतिलिपि । २५० ० ०

Kashmirian Atharva Veda—(School of the Paippalādas) reproduced by chromophotography from the manuscript in the University Library at Tübingen. Edited by Maurice Bloomfield and Richard Garbe. 540 fascimile plates. 3 leaves of letter-press. Rare. Complete in 3 big volumes. Foreign 250 0 0

३७२ **अथर्ववेदीया बृहत्सर्वानुक्रमणिका**—भूमिका तथा सूचियों सहित । पंडित रामगोपाल शास्त्री द्वारा सम्पादित । लाहौर ४ ० ०

Bṛhat-Sarvānukramaṇikā—Edited from original Mss. with introduction and an index by Pt. Ram Gopal Śastrī. Lahore 4 0 0

३७३ **अथर्ववेदीयमाण्डूकीशिक्षा**—भूमिका, परिशिष्ट तथा सूचीसहि… पं० भगवद्दत्त बी० ए० द्वारा सम्पादित लाहौर १…

३७४ **गणपत्यथर्वशीर्ष**—मूल । मुम्बई…

३७५ गणेशाथर्वशीर्षम्—सभाष्यम् । पूना ० ६ ०

३७६ गोपथब्राह्मणम्—Edited by Rajendra Lal Mitra. Calcutta 10 0 0

३७७ गोपथब्राह्मणम्—मूल । कलकत्ता १ ० ०

३७८ गोपथब्राह्मणम्—मूल । यूरोप १८ ० ०

Gopatha Brāhmaṇam of the Atharva Veda—Edited with text, introduction, notes, &c., &c., by Dr. D Gaastra. Rare. Foreign 18 0 0

३७९ गोपथब्राह्मणम्—पंडित क्षेमकरणदासकृत सरल संस्कृत तथा भाषा टीका सहित । प्रयाग ७ ४ ०

३८० ब्रह्मचर्य्य—'अथर्ववेदीय ब्रह्मचर्य-सूक्त' का विवरण है । औंध १ ० ०

381 Vaitāna Sūtras of the Atharva Veda—translated into German by Dr. W. Caland. Foreign 9 0

382 Human Parasites in the Atharva Veda—By Dr. Girindra Nath Mukerjee, B. A., M. D., F. A. S. B. 3 0 0

383 Hundert Lieder Des Atharva Veda—Ubersetzt und mit Textkritischen und Sachlichen Erlauterungen versehen von Lic Dr. Julius Grill, Foreign 6 0

384 Index Verborum to the published text of the Atharva Veda, compiled by W. D. Whitney. Very useful for Research scholars. U. S. A. 25 0 0

385 On the Interpretation of some doubtful words in the Atharva Veda—By Dr. Tarapada chowdhury, M. A., B. L., Ph. D. Patna 3 8 0

386 Pariśiṣṭas of the Atharva veda—3 vols. Edited by G. M. Bolling, Ph. D. and J. V. Negelein. Foreign 72 0 0

387 Some Atharvanic Portions in the Gṛhya Sūtras—By B. C. Lele. 6 0 0

वेदाङ्ग

388 Kauhali-Sikṣā (कौहलीशिक्षा)—Critically edited for the first time with notes. By Sādhu Ram M. A., Lahore 1 0 0

389 Nighantu and the Nirukta—The oldest Indian

treatise on Etymology, Philology and Semantics. Critically edited from the original manuscripts. English translation only with exegetical and critical notes; &c. &c. By Lakshman Sarup, M. A., D. Phil. 6 0 0

३६० **निघण्टु निगमनिरुक्तकोशः**—निर्वचनानुक्रमणिकादिविविधपरिशिष्टानि । लाहौर ४ ८ ०

Indices and appendices to the Nirukta—By Dr. Lakshman Sarup. Lahore 4 8 0

३६१ **निघण्टुसमन्वितनिरुक्तम्**—मूलमात्रम । संहिताब्राह्मणप्रातिशाख्याष्टाध्यायीमहाभाष्यादिग्रन्थान्तरैः साकं निरुक्तसम्बन्धप्रदर्शिना परिशिष्टेन सहितम् । डा० लक्ष्मणस्वरूप एम० ए० इत्यनेन सम्पादितम् ३ ६ ०

३६२ **निरुक्तम्**—दुर्गाचार्यकृतव्याख्या तथा पं० शिवदत्तकृतटिप्पणसहित साजिल्द । मुम्बई ८ ० ०

३६३ **निरुक्त**—पं० राजारामकृत भाषाटीकासहित । लाहौर ४ ८ ०

३६४ **निरुक्त**—पं० सीतारामशास्त्रिकृत भाषाटीकासहित । भिवानी ६ १३ ०

३६५ **निरुक्त**—निघण्टुपाठसमेत (शास्त्रिपरीक्षोपयोगी) पञ्चाध्यायात्मक । दुर्गाचार्यकृत ऋज्वर्थव्याख्या-संक्षेप । कनखल २ ० ०

३६६ **निरुक्त**—निघण्टुभाष्य । मूल । अजमेर ० १२ ०

३६७ **निरुक्त**—(परीक्षोपयोगी) । ५ अध्याय पर्यन्त पं० रामप्रपन्नशास्त्रिकृत टीका सहित । लाहौर २ ४ ०

३६८ **निरुक्त**—सप्ताध्यायपर्यन्त दुर्गाचार्यकृतटीका सहित । ed. by Prof. H. M. Bhadkamkar, M. A. Bombay 9 8 0

३६९ **निरुक्तं सभाष्यम्**—पं० मुकुंदझा-राजपंडितपटियालाकृतनिरुक्तविवृत्युपेतम् मुंबई ६ ० ०

400 Nirukta—Its place in old Indian Literature and its etymologies. By Hannes Sköld (bound). Foreign 15 8 0

४०१ **निरुक्तनिघण्टु**—सभाष्य सटीक देवराजयज्वा तथा दुर्गाचार्यकृत टीका सहित कलकत्ता १२ ० ०

४०२ **निरुक्तभाष्य**—पं० चन्द्रमणिकृत । २ भाग । ८ ८ ०

४०३ **निरुक्तभाष्यटीका**—स्कन्दस्वामिमहेश्वरविरचिता । सम्पूर्ण ३ भागों में । लाहौर १२ ३ ०

४०४ **निरुक्तरहस्य**—पं० परमानन्दशास्त्रिकृत । नाहन ० ८ ०

४०५ **निरुक्तलघुविवृतिः**—(पञ्चपादिका) मुम्बई ० १४ ०

४०६ **निरुक्तसभाष्यवृत्ति**—२ अङ्कौ । अवशिष्टोंऽशो मुद्र्यते ।

कलकत्ता २ ४

४०७ **निरुक्तालोचनम्**—सत्यव्रतसामश्रमिरचितम् (परिवर्द्धितसंस्करणम्) ।
सजिल्द कलकत्ता ४ ६

४०८ **पाणिनीयशिक्षा**—प्रदीपव्याख्यायुता । स्वरवैदिकप्रक्रियास्थफक्किकाविवरण

काशी ० २

४०९ **पाणिनीयशिक्षा**—पञ्जिकाभाष्यसहिता । बनारस ० २

410 Pāṇinīya Śikṣā—By Manomohan Ghosh, M. A. Kavyatirtha. [This is a critical edition and contains new materials and results of later researches than what could be given by Weber in his Indische Studien (IV)]

Calcutta 3 0

411 Bhāradvājaśikṣā, with gloss, edited by V. R. R. Dikshitar, M. A. Poona 1 8

४१२ **माण्डूकीशिक्षा (अथर्ववेदीय)**—भूमिका, परिशिष्ट तथा सूचीसहित पं० भगवद्दत्त बी० ए० द्वारा सम्पादित । लाहौर १ ०

४१३ **याज्ञवल्क्यशिक्षा**—श्री पं० अमरनाथशास्त्रिदीक्षितकृत 'शिक्षावल्ली' विवृति सहिता । वेदाध्येतॄणामतीवोपयुक्तेयं विवृतिर्महायासेन सम्पादिता । बनारस १ ४

४१४ **याज्ञवल्क्यशिक्षा**—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीका सहित ।

मुम्बई ० ६

४१५ **शिक्षादिवेदषडङ्गानि**—(शिक्षा-ज्योतिष-छन्दः-निघण्टु-निरुक्त-आश्वलायन श्रौतसूत्र-आश्वलायनगृह्यसूत्र-अष्टाध्यायी) । मुम्बई १ ४

४१६ **शिक्षादिवेदाङ्गचतुष्टय**—(शिक्षा, ज्योतिष, छन्दः, निघण्टु) । खुले पृष्ठ । मुम्बई ० ४

४१७ **शिक्षासंग्रहः**—क्वचिद्व्याख्यानुयुतः । ५खंडेषु सम्पूर्णः । बनारस ५ ०

418 Critical Studies in the Phonetic Observation of Sanskrit Grammarians by Dr. Siddheshwar Varma

12 6

मिश्रित वैदिक-ग्रन्थ

४१९ **अग्निष्टोमपद्धतिः**—वामनाचार्यविरचिता कर्कानुसारिणी **आध्वर्यवपद्धतिः** नानाभाई-इत्युपनामकरामकृष्णत्रिपाठिकृता **औद्गात्रपद्धतिः** । रघुनाथद्विवेदिनिर्मिता शाङ्खायनसूत्रानुसारिणी **हौत्रपद्धतिः** । काशी ४ ८

४२० **अग्निहोत्रचन्द्रिका**—वामनशास्त्रिकृता । पूना २ १४

४२१ अत्रिख्यातिः—श्री महामहोपाध्यायपंडितमधुसूदनझाविरचिता। जयपुर ० १२ ०

४२२ अहोरात्रवादः—श्री पंडितमधुसूदन जी कृत। जयपुर ० ८ ०

४२३ आत्मशक्ति का विकास— औंध ० ५ ०

४२४ आधानपद्धतिः— पूना १ १४ ०

४२५ आर्योदय—अर्थात् आर्यसमाज के स्वरूप का प्रतिपादन, उसकी वर्त्तमान स्थिति का पर्यालोचन तथा भावी विकास का निरूपण। लेखक श्री विश्वबन्धु शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०। लाहौर १ ० ०

४२६ आश्वमेधिकमन्त्रमीमांसा— इटावा ० २ ०

४२७ इन्द्रशक्ति का विकास— ० ८ ०

४२८ इष्टिसंग्रहः—भाषाटीकासहितः। पंडितभीमसेनकृतः। इटावा ० ८ ०

४२९ ओंकारमहिमाप्रकाश—ज्योतिर्वित् श्रीनिवासमहादेवपाठकविरचित। रतलाम १ ४ ०

४३० गायत्रीमन्त्रविवरणम्— रायबरेली ० ३ ०

४३१ गायत्रीमन्त्रार्थ भास्कर भाषाटीका— मुम्बई १ ० ०

४३२ गायत्रीव्याख्या— कलकत्ता ० १२ ०

433 Gṛhya Sūtras—Or the rules of Vedic domestic ceremonies translated into English by Hermann Oldenberg. Part I Containing Śāṅkhāyana Gṛhya Sūtras, Āśvalāyana Gṛhya Sūtras, Pāraskara Gṛhya Sūtras, Khādira Gṛhya Sūtras. Foreign 11 4 0

Part II. Containing Gobhila, Hiraṇyakeśin and Āpstamba Sūtras translated into English by H. Oldenberg, and Āpastamba Yajña Paribhāṣā Sūtras translated into English by F. Max Müller. Foreign 11 4 0

४३४ गृह्याग्निकर्मप्रयोगमाला— गोरखपुर ० ५ ०

४३५ चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः—सायणाचार्यविरचितानां स्ववेदभाष्यभूमिकानां संग्रहः। श्रीबलदेवोपाध्यायेन सम्पादितः। २ ८ ०

Vedabhāṣyabhūmikā-Saṅgraha—A collection of all available Sāyaṇa's introductions, notes &c. by Pt. Baladeva Upādhyāya. 2 8 0

४३६ चरणव्यूह—मूलमात्र मुम्बई ० ० ६

४३७ चरणव्यूहः—महीदासकृतभाष्यसमेतः। काशी ० ८ ०

४३८ **चरणव्यूहः**—पंडित शक्तिधरकृतभाषाटीकासहित। लखनऊ ० ४

४३९ **तर्क से वेद का अर्थ**— औंध ० ८

४४० **तेतीस देवताओं का विचार**— औंध ० ३

४४१ **त्रिकाण्डमण्डनम्**—सटीकम्। ३ खण्ड कलकत्ता २ ४

४४२ **त्रिसुपर्ण**—मूल। मुम्बई ० १

४४३ **दर्शपूर्णमासप्रकाशः**—सरस्वतीभूषणकिंजवडेकरोपाह्ववामनशास्त्रिभिः कृतः धूर्त्तस्वामिभाष्यरामाण्डारवृत्तिरुद्रदत्तप्रणीतसूत्रदीपिकासमेतः। श्रौतयज्ञविषयकोऽयं ग्रन्थः। अ तत्तत्सूत्रभाष्यवृत्त्याद्यनुसारेण दर्शपूर्णमासप्रयोगास्तदुपयोगिहौत्राध्वर्यवब्रह्मत्वादयः पञ्च प्रयोगा स्तद्गतानि विधिवाक्यानि तत्तच्छास्त्रार्थनिर्णायकमीमांसाधिकरणप्रदर्शनपूर्वकं विवेचितानि सन्ति तथा यज्ञायुधानां प्रकृतयो यज्ञियसम्भाराश्चातुर्मास्यविहारश्चेत्येवमादयो विषया यथावन्निवेशित सन्ति। पूना ६ १२

४४४ **दर्शपौर्णमासपद्धतिः**—सर्वश्रौतकर्मप्रकृतिः। श्रीपण्डितभीमसेनशर्मण संगृहीता। इटावा ० १२

४४५ **देवतानिवित्**—श्रीमन्मधुसूदनविद्यावाचस्पतिना मैथिलेन प्रणीता शतसूत्री त्रिकाण्डे ब्रह्मविज्ञानशास्त्रे वैज्ञानिकवेदरहस्यप्रकाशके तृतीयकाण्डसम्बन्धिग्रन्थानामयमन्यतमो ग्रन्थ जयपुर ० १०

४४६ **देवताविचार**— ० ३

४४७ **देवयज्ञप्रदीपिका**—अर्थात् दिव्य जीवन का आदर्श और साधन। देवय का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्याख्यान। ले० श्रीपण्डित विश्वबन्धुशास्त्री, एम० ए०, एम ओ० एल०। सुनहरी जिल्द। लाहौर १ ४

४४८ **नरमेधयज्ञमीमांसा**—भाषा। इटावा ० ०

४४९ **पञ्च सूक्तानि**— काशी ० १

४५० **पश्वालम्भमीमांसा**— पूना ० १०

४५१ **पुत्रकामेष्टिपद्धति**—पण्डितभीमसेनजीकृत। इटावा ० २

४५२ **श्रीबृहद्गायत्रीयमहामन्त्रीय-सरयूपारीणशुक्लभाष्यम्**—श्रीवेणी-माधवशास्त्रिकृतम्। काशी ० ६

४५३ **मानवी आयुष्य**— औंध ० ४

४५४ **मृत्यु को दूर करने का उपाय**— औंध ० ८

४५५ **यज्ञमधुसूदन**—(स्मार्त्तकुण्डसमीक्षाध्याय)। जयपुर ० ८

४५६ **यज्ञमधुसूदन**—(यज्ञोपकरण, यज्ञविटपकर्मानुक्रमणिकाध्यायः)। जयपुर १ ०

४५७ **रुद्रदेवता का परिचय**—लेखक-श्रीपाद दामोदर सातवलेकर। औंध ० ८

४५८ **वेदकालनिर्णय**—लोकमान्य बालगङ्गाधर तिलक के 'ओरियन' (मृगशीर्ष) का सारानुवाद। अनुवादक—पण्डित केदारनाथ साहित्यभूषण। जयपुर १ ०

४५९ **वेद का स्वयंशिक्षक**—दो भाग। ले० श्रीपाददामोदरसातवलेकर। जो पाठक आध घंटा प्रतिदिन इसके अध्ययन के लिये देंगे उनका प्रवेश वेद के मन्दिर में सुगमता से हो सकता है।

औंध ३ ० ०

४६० **वेदधर्मव्याख्यानम् (पञ्चमो भागः)**—संस्कृतसाहित्यसम्मेलनस्य प्रथमाधिवेशने पठिता निबन्धावली। विद्यावाचस्पति-श्रीमधुसूदनशर्मणा प्रपञ्चिता।

आगरा ० ५ ०

४६१ **वेदप्रकाशः**—श्रीसत्यज्ञानानन्दतीर्थ-विरचितः। श्रीपत्ताभिरामेण सम्पादितः।

१ ८ ०

Veda Prakasha—by Satyajñānānanda Tīrtha, edited with introduction &c. by Pattābhirama 1 8 0

४६२ **वेदप्रकाश**—३ भाग। पण्डित राजाराम जी द्वारा संकलित। भाषाटीकासहित।

लाहौर २ ३ ०

४६३ **वेदप्रामाण्यचन्द्रिका**—महामहोपाध्याय-श्रीराजारामशास्त्रिणा प्रणीता।

मुम्बई ० १२ ०

४६४ **वेद में कृषिविद्या**— औंध ० ३ ०

४६५ **वेद में चरखा**—ले० श्रीपाददामोदर सातवलेकर। औंध ० ८ ०

४६६ **वेद में रोगजन्तुशास्त्र**— औंध ० ३ ०

४६७ **वेद में लोहे के कारखाने**— औंध ० ५ ०

४६८ **वेद संदेश**—(संवाद के रूप में) ३ भाग। ले० श्रीविश्वबन्धुशास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०। सजिल्द। लाहौर ३ १२ ०

४६९ **वेदसार**— लाहौर ० ४ ०

४७० **वेदार्षकोष**—पण्डित चमूपतिकृत। १ भाग। लाहौर ५ ० ०

४७१ **वेदों का अनादित्व**—ले० पण्डित गोवर्धन बी०ए०। कांगड़ी ० ५ ०

४७२ **वेदोक्तप्रजननशास्त्र**— औंध ० ३ ०

४७३ **वैदिक अग्निविद्या**— औंध १ ८ ०

४७४ **वैदिक अध्यात्मविद्या**— औंध ० ८ ०

४७५ **वैदिक उपदेशमाला**— औंध ० ८ ०

४७६ **वैदिक कर्त्तव्यशास्त्र**—पं० धर्मदेव सिद्धान्तालङ्कार, विद्यावाचस्पति कृत।

१ ४ ०

४७७ **वैदिककोषः**—पण्डितमधुसूदनझाकृतः। जयपुर ० ८ ०

४७८ **वैदिककोषः**—प्रथमो भागः। श्रीहंसराजेन कृतः। पण्डितभगवद्दत्तकृतया ब्राह्मणग्रन्थेतिहासप्रकाशिन्या भूमिकया सहितः। अत्र वैदिकशब्दानां निर्वचनानि, अर्थाः, अन्यानि प्रालोच्यानि वाक्यानि च सर्वमुद्रितब्राह्मणग्रन्थेभ्य उद्धृत्य अकारादिक्रमेण समुपन्यस्तानि।

लाहौर १२ ० ०

Vedic Koṣa—By Haṃsarāja. Vol. I-comprising a concordance of all the etymologies, meanings of Vedic words, attributes of different devatās, scientific and moral passages and other useful material contained in the 15 printed Brāhmaṇas of the Vedas. Lahore. 12 0 0

४७६ वैदिकचिकित्साशास्त्र— औंध ० ६ ०

४८० वैदिकजलविद्या— औंध ० २ ०

४८१ वैदिकजीवन—प्रथम भाग। ले० रायसाहिब शिवनाथ आहिताग्नि। इसमें यह सिद्ध किया गया है कि वेद ही मनुष्य की सारी धार्मिक आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। यह वैदिक जीवन भाष्य की उत्थानिका रूप है। लाहौर ० ४ ०

४८२ वैदिकधर्म की विशेषता— औंध ० ८ ०

४८३ वैदिकपदानुक्रमकोशः—Vaidikapadānukrama-kośa—A Vedic word-concordance. Being a universal register of the entire Vedic vocabulary with an introduction and a supplement containing a number of invaluable appendices and a reverse index. (The most stupendous and scientific work of reference of its kind ever attempted). By Pt. Vishvabandhu Shāstrī, M. A., M. O. L. (The Brāhmaṇas and Āraṇyakas). 2 parts. 1936.

Lahore 60 0 0

४८४ वैदिकपाठमाला— औंध ० ३ ०

४८५ वैदिकपाठावली—श्रीरसिकलालपारिखेन सम्पादिता। Very useful for Vedic scholars. Ahmedabad 3 8 0

४८६ वैदिकप्राणविद्या—ले० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर औंध ० ८ ०

४८७ वैदिक भक्तिप्रदर्शन—ले० श्रीयुत भीमसेन विद्यालंकार। सजिल्द।

कांगड़ी ० ६ ६

४८८ वैदिकमन्त्रकल्पलता—लौगाक्षिमुनिसंगृहीता। मूल, स्थूलाक्षर, सस्वर, सजिल्द। काश्मीर ५ ० ०

४८९ वैदिकयज्ञसंस्था—ले०पण्डित पुरुषोत्तमलाल। १ भाग १ ० ०

४९० वैदिकराज्यपद्धति— औंध ० ५ ०

४९१ वैदिकवाङ्मय का इतिहास—ले० पं० भगवद्दत्त बी० ए०

भाग प्रथम (१) वेदों की शाखाएं लाहौर ३ ० ०

भाग „ (२) सायण से पूर्व के भाष्यकार ५ ० ०

भाग द्वितीय-ब्राह्मणग्रन्थ और आरण्यक ५ ० ०

History of Vedic Literature (in Hindi)—By Pandit Bhagavad Datta.

Vol. I Part I—Recensions of the Vedas 3 0 0

Vol. I Part II—Pre-Sāyaṇa commentators 5 0 0

Vol. II—Brāhmaṇas and Āraṇyakas. 5 0 0

४६२ वैदिकविज्ञान—ले० महामहोपाध्याय पण्डित गिरिधरशर्मा।
लाहौर ० २ ०

४६३ वैदिक विवाह का आदर्श—ले० पण्डित नन्दकिशोर विद्यालंकार
कांगड़ी ० १० ०

४६४ वैदिकशब्दार्थपारिजात—पण्डित विश्वबन्धुशास्त्रिसंकलित। प्रथम भाग।
लाहौर ५ ० ०

Vaidika Śabdārtha Pārijāta—Or a complete Etymological Dictionary of the Vedic Language, in Sanskrit, Hindi and English. The first regular and substantial attempt to accord a complete lexicographical treatment to the entire vocabulary of all available Saṃhitās. Edited by Pt. Vishvabandhu Shāstrī, M. A., Fasc. I
Lahore 5 0 0

४६५ वैदिकसभ्यता— औंध ० १२ ०

४६६ वैदिकसभ्यता के एक अंश का निरीक्षण—ले० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर। औंध ० २ ०

४६७ वैदिकसभ्यता में धन का स्थान— कांगड़ी ० १ ०

४६८ वैदिकसम्पत्तिः—पण्डित रघुनन्दन शर्मा जी कृत। (छप रही है)

४६९ वैदिकसर्पविद्या—ले० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर। औंध ० ८ ०

५०० वैदिकसाहित्यचरित्रम्—पि० पि० सुब्रह्मण्यशास्त्रिणा के० एल० व्यासरायशास्त्रिणा च विरचितम्। पालघाट २ ४ ०

५०१ वैदिक स्वराज्य की महिमा— औंध ० ८ ०

५०२ शिवसङ्कल्प का विजय— औंध ० ८ ०

५०३ श्रुतिमतोद्योतः—लघुगुरुश्च। त्र्यम्बकशास्त्रिविरचितः। मद्रास ० ६ ०

५०४ श्रुतिरत्नप्रकाश— मायावरम् ० १२ ०

५०५ श्रुतिरत्नावली (सचित्र)—वेद, उपनिषद् आदि लगभग ४५ ग्रन्थों के विषयानुसार चुने हुए श्लोकों का अर्थसहित संग्रह। श्री गोपालब्रह्मचारी द्वारा लिखित।
गोरखपुर ० ८ ०

५०६ श्रौतपदार्थनिर्वचनम्—श्रीविश्वनाथशास्त्रिणा संकलितम्। बौधायनश्रौतसूत्रानुसारि-यज्ञपदार्थपरको ग्रन्थः। काशी ६ ० ०

Srautapadārthanirvachana—Or a Dictionary of sacrificial terms by Viśvanātha Sāstrī. Benares

५०७ संशयतदुच्छेदवादः—श्रीपण्डितमधुसूदनकृतः। जयपुर ० १२ ०

५०८ सदसद्वादः—श्रीपण्डितमधुसूदनकृतः। जयपुर ० ८ ०

५०९ साग्निचित्सार्वपृष्ठाप्तोर्यामयागः—A sketch of the sacrifice in English and Sanskrit. Poona 3 12 0

५१० स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका—श्रीनिवासयज्वकृता। मद्रास ६ ० ०

Svarasiddhānta Candrikā—by Śrīnivāsa Yajvan. Madras 6 0 0

511 Age of Veda—By Winternitz, translated into English from his 'History of Indian Literature' in German by Prof. Utgikar. 0 8 0

512 Arctic Home in the Vedas—By Lokmanya Tilak. 5 0 0

513 Aus Brahmanas und Upaniṣaden—Gedanken Altindischer Philosophen. Ubertragen und Eingeleitet von Alfred Hillebrandt. Foreign 8 0 0

514 Collection of the Fragments of lost Brāhmaṇas—By Batakrishna Ghosh. Calcutta 6 0 0

515 A contribution to the History of Verb-Inflection in Sanskrit. By Prof. John Avery.

516 Drapsa: The Vedic cycle of Eclipses—A key to unlock the treasures of the Veda, by Dr. R. Shama Sāstry, B. A., Ph. D. Mysore 2 0 0

517 Elements of Vedic Religion—As expounded by D. B. V. K. Ramanujachari, Kumbakonam 1 0 0

518 Festschrift—Ernst Windisch zum seibzigsten Geburtstag Am 4 September 1914. Dargebracht von Freunden und Schülern. Foreign 35 0 0

519 Festschrift zum 50 jährigen Bestehen des Rabbinerseminars zu Berlin Herausgegeben von den Dozent. 9 0 0

520 Gavām Ayana—The Vedic Era, an exposition of a forgotten Sacrificial calendar of the Vedic poets, includ-

ing an account of the origin of the Yugas, chiefly on the basis of the Vedas and contemporary History of Foreign nations by Dr. R. Shamasastry, B. A. 1 4 0

521 Gods and Saints of the Great Brāhmaṇa—By E. Washburn Hopkins. U. S. A. 2 8 0

522 Hindu Mythology—Vedic and Puranic. By W. J. Wilkens. Calcutta 10 0 0

523 Historical Vedic Grammar—By Edward Vernon Arnold. U. S. A.

524 History of the Panchāla (in the Vedic Period)—By S. P. L. Narasimha Swami. Vizagapatam.

525 Idee Der Schöpfung in der Vedischen Literatur—By Carl Anders Scharban. Foreign 13 8 0

526 The Immanence of God—By Pt. Madan Mohan Mālavīya. Gorakhpore 0 2 0

527 L' Indo-Aryan de veda aux Temps moderns—By Bloch. Paris 20 0 0

528 Linguistic Speculations of the Hindus—By Dr. Chakravarti. Calcutta 6 0 0

529 Zur Litteratur und Geschichte des Veda—By Rudolf Roth. Foreign 2 4 0

530 Les Maitres de la Philologie Vedique—Par Louis Renou. Paris 5 0 0

531 Mysticism of Time in Rig-Veda—(with a chapter on 'What is Soma ?' By Dr. Mohan Singh, M. A., Ph. D., D. Litt., Punjab University. Lahore 5 0 0

[One of the profoundest contributions to Vedic Mysticism. This is an integral intepretation of the Astronomical, yogic or biological and psychological-cum-philosophical meanings and significance of texts from the Rik-Saṃhitā, Aitareyāraṇyaka, Aitareya upanishad and Kaushitaki Aranyaka and upanishad. Supporting quotations from the Matsya and Brahmavaivartta Puranas and the Mahābhārata are also given in copious footnotes.

[It is of special interest to stndents of Astro-Physics, Hermitic philosophy, Theosophy and Universal Primitive Traditional History. For the first time, the Veda as Eternal all-comprehensive archetypal revelation has been fully justified.]

532 A New Approach to Vedas—An essay in translation and exegesis, by Dr. Anand K. Coomaraswami London 5 0 0

533 On the Dual-Forms E and Au—By A. Ludwig. Prag 1 0 0

534 Origin and Development of Religion in Vedic Literature—By P. S. Deshmukh, M. A., Ph. D. Foreign 15 0 0

535 Orion—or researches into the Antiquity of the Vedas—By Lokmanya Tilak. Poona 2 0 0

536 Pāṇini and the Veda (Studies in the Early History of Linguistic Science in India)— Allahabad 5 8 0

537 Passages supplementing those contained in Macdonell's Vedic Reader—By Pashupati Nath Shastri. Foreign

538 Picture Album of the Practical Apparatus for the scientific Study of Pūrva-Mīmāṃsā. Poona 2 8 0

539 Religion and Philosophy of the Veda and Upaniṣads—By Keith. 2 Vols. U. S. A. 39 6 0

540 Religion des Veda—By Hermann Oldenberg, Foreign 10 8 0

541 Sacred Laws of the Aryas—As taught in the schools of Āpastamba, Gautama, Vasiṣṭha, Baudhāyana. Translated into English by George Bühler. Part I 9 6 0

542 Science of the Sulba (a study in early Hindu Geometry)—By Bibhuti Bhushan Datta. D. Sc. Calcutta 3 0 0

543 Selections from the Brāhmaṇas—By Dr. T. K. Laddu, B. A., Ph. D Allahabad 0 12 0

544 Social Reform on Shastric Lines—with an exposition of the principles of Vedic exegesis by Dr. A. Mahadeva Sastri 0 12 0

545 Soma Plant – By Braj Lal Mukerji. Calcutta 1 8 0

546 Syntax of Cases in the Narrative and Descriptive Prose of the Brāhmaṇas—By H. Oertel. Heidelberg 46 8 0

547 True Interpretation of Vedic Sacrifice—Based on Ṛg and Yajurveda rituals. By Narasimhacharya 1 12 0

548 Vaikhānasa Dharma Sūtras—Introduction, translation and Notes with tables of Pravaras by K. Rangachari, M. A., B. L. 5 0 0

549 Varuṇa and Mitra—A study of the Vedic words. By Alfred Hillebrandt. Germany 3 6 0

550 Veda Forschung—Or the Researches about the Vedas. By Hermann Oldenberg. Germany 3 6 0

551 Veda Interpretation—By Alfred Hillebrandt. Foreign 2 4 0

552 Vedic Antiquities—By Jouvean Dubreuil in English. Bound. 1 0 0

553 Vedic Calendar—By R. Shama Sastry, B. A., M. R. A. S. &c. Mysore

554 Vedic Chant, studied in its textual and melodic form. By J. M. von Der Hoogt. Foreign 20 0 0

555 Vedic Chronology and Vedāṅga Jyotisha—By B. G. Tilak. Poona 3 0 0

556 Vedic Concordance—Being an index to the Vedic mantras together with an account of their variations in different Vedic books. By M. Bloomfield. U. S. A. 98 7 0

557 Vedic Declension of the type Vrikis—A contribution to the study of the Feminine Noun-Declension in Indo-European. By Ruth Norton Albright. Foreign 2 9 0

558 Vedic Gods—As figures of Biology. By Dr. V. G. Rele. Bombay 6 8 0

559 Vedic Grammar for Students—By A. A. Macdonell, including a chapter on Syntax and three appendices, list of Verbs, metre and accent. Foreign 6 0 0

560 Vedic Idea of Sin:—By H. Lefeever, Ph. D., 1935. 1 10 0

561 Vedic India—By Pavgy. 4 4 0

562 Vedic Law of marriage—By A. Mahādeva Sāstri. Madras. 3 0 0

563 Vedic Metre in its Historical Development—By E. W. Arnolds. Cambridge 18 0 0

564 Vedic Mysticism—By Dr. Raghuvīra. The book contains Vedic passages of unique charm and beauty linked together in an English version at once superb and refreshing. Nothing of the kind has ever yet been attempted. Lahore 5 0 0

565 Vedische Mythologie—Or the Vedic Mythology being a discussion in German on Gods Soma, Uṣas, Agni, Rudra, &c. by Alfred Hillebrandt. Complete in 3 vols. Rare. 24 0 0

566 Vedische Mythologie—Of Hillebrandt: An extract in German edited with an Index by Kleine Augabe. Bound with silver letter. Foreign 12 0 0

567 Vedic Mythology—By A. A. Macdonell. Edited with Sanskrit and general indices. Foreign 22 0 0

568 Vedic Philosophy—Or an exposition of the sacred and mysterious monosyllable ओम् together with the Māṇḍūkya Upanishad (text) with English translation, commentary, and an introduction by Hara Narayana. Bound. 2 8 0

569 Vedic Reader for Students—By A. A. Macdonell, containing 30 hymns of the Ṛgveda in the original Saṃhitā and Pada texts, with transliteration, English translation, explanatory notes, introduction and vocabulary. Foreign 5 0 0

570 Vedic Religion and Philosophy—By Swami Prabhavananda. 1937. Madras 1 6 0

[A lucid exposition of the wisdom enshrined in the Vedas, the Upanishads and the Bhagavad Gita, together with a chapter on the general features of Indian Philosophy. Though satisfying the strictest standards of scholarship, the book has, primarily in view the growing body of intelligent interest in Indian thought and civilization.]

571 Vedic Studies, Vol. I—By Dr. A. Venkatasubhiah. Contains almost all the articles published by the author in the Indian Antiquary and many unpublished ones also. Indispensable to all students of Veda. Mysore 8 8 0

572 Vedic Variants—By Drs. M. Bloomfield, F. Edgerton and M. B. Emaneau. Vol. I-The verb. Vol. II. Phonetics. Vol. III—Noun and Pronoun Inflection. America 62 0 0

उपनिषद्-ग्रन्थ

५७३ अद्वैतभावोपनिषद्, कल्युपनिषद्, तारोपनिषद्, कौलोपनिषद्, भावनोपनिषद्—Edited by Sitarama Shastri, with introduction by Arthur Avalon. London 3 12 0

५७४ अप्रकाशिता उपनिषदः— मद्रास ५ ० ०

Unpublished Minor Upanishads—Edited by the pandits of the Adyar Library under the direction of Prof. C. Kunhan Rāja, M. A., D. Phil. (Oxon.) Madras 5 0 0

५७५ अमृतबिन्दु और कैवल्योपनिषद्—With commentaries translated into English by A. Mahadeva Shastri, B. A. Text in original Sanskrit. Bound. Madras 1 2 0

५७६ अल्लोपनिषच्चाक्षुषोपनिषच्च—मूलमात्र । ० १ ०

५७७ अष्टात्रिंशदुपनिषदः—गुटका । मूलमात्र । रेशमी जिल्द । १ ८ ०

५७८ अष्टाविंशत्युपनिषदः (२८ उपनिषद्)—गुटका । मूलमात्र । रेशमी जिल्द । मुम्बई १ ० ०

५७९ अष्टोत्तरशतोपनिषदः (१०८ उपनिषदः)—मूलमात्र । रेशमी जिल्द । ३ ० ०

५८० **अष्टोत्तरशतोपनिषदः (१०८ उपनिषदः)**—मूल । खुला पृष्ठ । स्थूलाक्षर । मुम्बई ६ ०

५८१ **अष्टोपनिषदः**—पं० बद्रीदत्तकृत भाषाटीकासहित । मुरादाबाद २ ०

५८२ **अष्टोपनिषद् भाषा फक्का**—श्री हरिप्रकाश जी विरचित । जिसमें ईश, केनादि उपनिषदों का स्पष्ट रीति से शंकरभाष्यानुसार अर्थ किया गया है । मुम्बई १ ८

५८३ **आथर्वणोपनिषदः**—(शिर, गर्भ, नादविन्दु, ब्रह्मविन्दु, अमृतबिन्दु, ध्यानबिन्दु, तेजोबिन्दु, योगशिखा, योगतत्त्व, संन्यास, आरुणेय, ब्रह्मविद्या, क्षुरिक, चूलिका, अथर्वशिखा, ब्रह्म, प्राणाग्निहोत्र, नीलरुद्र, कठश्रुति, पिण्ड, आत्मा, रामपूर्वतापिनी, रामोत्तरतापिनी, हनुमदुक्तरामोपनिषद्, सर्वोपनिषत्सार, हंसोपनिषत्, परमहंसोपनिषत्, जाबालोपनिषद्, कैवल्योपनिषद्) नारायणकृतवृत्तिसहिताः । कलकत्ता ३ ०

५८४ **आरुणोपनिषद्** - तैत्तिरीय । सस्वर । मुम्बई ० ६

५८५ **ईशादिदशोपनिषत्संग्रहः**—मूल । मुम्बई १ ०

५८६ **ईशादिदशोपनिषदः**—मूल । अजमेर ० १२

५८७ **दशोपनिषद्** (ईशाद्युप०)—मूल । पूना २ ०

५८८ **ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, माण्डूक्योपनिषदः**—श्री शंकराचार्यकृत भाष्यसहिता आनन्दगिरिकृतया टीकयाऽलंकृताश्च । कलकत्ता ५ ०

५८९ **ईशादिदशोपनिषद्**—शंकरभाष्यसहित । काशी ७ ०

५९० **उपनिषद्भाष्य** (ईशाद्युप०)—शांकरभाष्यभाषानुवादसहित । गोरखपुर

भाग १ (ईशावास्य, केन, कठ, मुंडक और प्रश्न) २ ५

भाग २ (मांडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय) २ ६

भाग ३ (छान्दोग्य) ३ १२

५९१ **उपनिषद् का उपदेश** (ईशाद्युप०)—३ खण्डों में । दश उपनिषदों के शांकर भाष्य के आधार पर टीका की गई है । इटावा । खण्ड १— १ १४
खण्ड २—१ ० ०॥ खण्ड ३— १ १२

592 Isa, Kena and Mundaka Upanishads—And Sankara's commentary translated into English by Sitārāma Sastrī B. A. Madras 2 8

५९३ **ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, माण्डूक्यानन्दवल्लीभृगूपनिषदः**—तासु रामानुजमतानुयायिनारायणकृतप्रकाशिकासमेतेशोपनिषत् । रङ्गरामानुजविरचितप्रकाशिकासमेताः केनादिमुण्डकान्ताः । रामानुजमतानुयायिकूरनारायणविरचितप्रकाशिकोपेते आनन्दवल्लीभृगूपनिषदौ । पूना २ ८

५९४ **उपनिषदः** (ईशाद्युप०)—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक and माण्डूक्य Text with English translation of Madhva's commentary by Rai Bahadur Srīśachandra Vidyāratna. Allahabad 7 8

५६५ **उपनिषत्प्रसादः** (ईशाद्युप०)—श्रीस्वामिभास्करानन्दकृतेशादिदशोपनिषद्भाष्यम्। २ खण्डौ। काशी २ ८ ०

५६६ **ईशादिदशोपनिषद्भाष्यम्**—गोपालानन्दस्वामिकृतम्। सजिल्द ४ ० ०

५६७ **दश-उपनिषदः** (ईशाद्युप०)—श्रीउपनिषद्ब्रह्मयोगिविरचितभाष्यसहिताः। २ भागौ। साधारण संस्करण। मद्रास ६ ८ ०

५६८ **दशोपनिषद्** (ईशाद्युप०)—पं० बदरीदत्तजी जोशीकृत भाषाटीकासहित। ५ ० ०

५६६ **दशोपनिषद्भाषा** (ईशाद्युप०)—स्वामी अच्युतानन्दकृत। सजिल्द। मुम्बई २ ८ ०

६०० **ईशाद्यष्टोपनिषदः**—मूल। अन्वय। पदार्थ और पं० रामस्वरूपशर्म्मा कृत भाषाभावार्थ सहित। सजिल्द १ ६ ०

६०१ **उपनिषत्सार** (ईशाद्युप०)—इसमें १२ उपनिषदों का सार है। पं० यमुनाशंकरसंकलित। लखनऊ ० २ ०

६०२ **ईशावास्योपनिषद्**—आनन्दज्ञानकृतटीकासंवलितशाङ्करभाष्योपेता, उव्वटाचार्यकृतमीशावास्यभाष्यम्-आनन्दभट्टोपाध्यायकृतमीशावास्यभाष्यम्, अनन्ताचार्यकृतमीशावास्यभाष्यं च, ब्रह्मानन्दसरस्वतीकृतमीशावास्यरहस्यम्, शङ्करानन्दकृतेशावास्यदीपिका, रामचन्द्रपण्डितकृतेशावास्यविवृतिश्च। पूना ० १४ ०

६०३ **ईशावास्योपनिषद्**—मंत्रार्थ, शांकरभाष्य और भाष्यार्थसहित। गोरखपुर ० ३ ०

६०४ **ईशावास्योपनिषद्**—अन्वय, मन्त्रार्थ, शांकरभाष्य, भाष्यानुवाद और उपनिषत्सुबोधिनीटीकासहित। काशी ० ८ ०

६०५ **ईशावास्योपनिषत्**—कूरनारायणकृता प्रकाशिका महामहोपाध्यायश्रीधरपाठकशास्त्रिकृतबालबोधिनीसहिता। पूना १ ० ०

६०६ **ईशावास्योपनिषद्**—कूरनारायणादिभाष्योपेता। मद्रास ० १२ ०

६०७ **ईशावास्योपनिषद्**—मध्वाचार्यकृतभाष्य, जयतीर्थीय तथा रघुनाथतीर्थीय टीकासहित। मद्रास १ ६ ०

६०८ **ईशावास्योपनिषद्भाष्यम्**—निगमान्तमहादेशिकविरचितम्। तद्व्याख्यानम् आचार्यभाष्यतात्पर्यं च तिवीरराघवाचार्य्येण विरचितम्। मद्रास १ १२ ०

६०९ **ईशावास्योपनिषद्**—साधुनिश्चलदासकृतसंस्कृतटीकासहिता। खण्डूड़ीत्युपाह्वश्रीविजयानन्दशास्त्रिणा श्रीहंसराजमहोदयेन च सम्पादिता। लाहौर ० ५ ०

६१० **ईशोपनिषत्**—सत्यानन्दकृतभाष्यसमेता। Isha Upanishat with a new commentary by the Kaulachraya Sadananda (Satyananda), translated with introduction by Jnanendralal Majumdar. London 4 0 0

६११ **ईशकेनकठोपनिषदः**—दिगम्बरानुचरविरचितार्थप्रकाशाख्यव्याख्यासमेताः। पूना १ ० ०

६१२ **वाजसनेयोपनिषद्**—पं० भीमसेनकृतसंस्कृत तथा भाषाटीकासहित। इटावा ० ३ ०

६१३ **ईशोपनिषद्**—भाषानुवादसहित। वैदिक प्रमाणों से ईशोपनिषद् के कई सिद्धान्तों का विचार किया है। औंध १ ० ०

६१४ **ईशावास्योपनिषद्**—पं० ज्वालाप्रसादकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई ० ४ ०

६१५ **ईशावास्योपनिषद्**—मूल, पदच्छेद, अन्वय, पदार्थ तथा रावबहादुर जालिमसिंह जी कृत भावार्थसहित। लखनऊ ० ३ ०

६१६ **ईशावास्योपनिषद्**—पं० यमुनाशंकरकृत भाषाटीकासहित। लखनऊ ० ३ ०

६१७ **ईश-उपनिषद्**—पं० राजाराम प्रणीत सरल हिन्दीभाष्यसहित। लाहौर ० ३ ०

618 Iśāvāsyopaniṣad—With the commentary of Śrī Śaṅkarāchārya, translated into English by M. Hiriyanna, M. A. 0 4 0

६१९ **ईशावास्योपनिषद्**—Translated into English by K. Chattopadhyaya. Benares 0 4 0

620 Isha Upanishad—With text and translation and detailed analysis and commentary by Sri Aurobindo. 1 8 0

621 Isha Upanishad—With Sanskrit text, paraphrase, word-for-word literal translation, English rendering and comments. By Swami Sharvanand. Madras 0 7 0

622 **ईशावास्यम्**—With English translation by Suraj Mall. Benares 0 8 0

६२३ **उपनिषत्पञ्चरत्न**—(ब्रह्मोपनिषद्, कैवल्योपनिषद्, ब्रह्मबिन्दूपनिषद् और नादबिन्दूपनिषद्) भाषानुवाद सहित। मुरादाबाद ० ४ ०

६२४ **उपनिषदां समुच्चयः**—शंकरानन्द-नारायणविरचित-'दीपिका'संवलितः। अस्मिन् ग्रन्थे द्वात्रिंशत उपनिषदां पुरातनानि पुस्तकानि महता प्रयासेन संपाद्य विद्वद्द्वारा परिष्कृत्य च संग्रहः कृतोऽस्ति। पूना ६ १२ ०

६२५ **उपनिषद् (५१)**—मुख्य दशोपनिषद् को छोड़कर ५१ उपनिषद् का संग्रह है। सरल हिन्दी अनुवाद छपवाया गया है। ५५० पृष्ठ। आगरा २ ८ ०

६२६ **उपनिषदों की भूमिका**—पं० राजारामजीकृत। लाहौर ० ५ ०

६२७ **उपनिषदों की शिक्षा**—पं० राजारामजीकृत। भाषा में। लाहौर २ ० ०

६२८ उपनिषदों के चौदह रत्न— गोरखपुर ० ६ ०

६२९ एकत्रिंशोपनिषदः—(३१ उपनिषद्) मूल । रेशमी जिल्द । मुम्बई १ ४ ०

६३० एकादशाथर्वणोपनिषदः—Eleven Ātharvaṇa Upaniṣads with Dīpikas. Edited with notets, by Colonel G. A. Jacob, Bombay 1 8 0

६३१ एकादशोपनिषद्—पं० राजाराम कृत भाषाभाष्यसहित । ७ ५ ०

६३२ एकादशोपनिषदः—ईशाद्यष्टसु श्रीमदुदासीनवर्यामरदासाख्यविदुषा विरचितयोपनिषन्मणिप्रभया, छान्दोग्यबृहदारण्यकयोर्नित्यानन्दाश्रमविरचितया मिताक्षरया कैवल्ये च शङ्करानन्दविरचितया दीपिकया समलंकृताः । लाहौर ६ ० ०

६३३ ऐतरेयोपनिषद्—मूल । म० म० श्री पं० मधुसूदन जी द्वारा सम्पादित । ० ४ ०

६३४ ऐतरेयोपनिषद् (अरणे)—आश्वलायनीय । मुम्बई ० ४ ०

६३५ ऐतरेयोपनिषत्—आनन्दगिरिकृतटीकासंवलितशांकरभाष्योपेता । तथा विद्यारण्यविरचितदीपिकाटीकया च सहिता । पूना १ ४ ०

६३६ ऐतरेयोपनिषद्—शांकरभाष्य, भाषानुवादसहित । गोरखपुर ० ६ ०

637 Aitareya and Taittirīya Upanishads—And Śrī Śankara's commentary, translated into English by S. Sitarama Sastri., B. A., Madras 2 8 0

६३८ ऐतरेयोपनिषद्भाष्यम्—ताम्रपर्णीयटिप्पणीसहितम् । कुम्भघोण ७ ० ०

६३९ ऐतरेयोपनिषद्—रायबहादुर पं० जालिमसिंहजी कृत भावार्थ, मूल, पदच्छेद, अन्वय और पदार्थसहित । लखनऊ ० ४ ६

६४० ऐतरेयोपनिषद्—पं० यमुनाशंकरकृत भाषाटीकासहित । लखनऊ ० ४ ०

६४१ ऐतरेय-उपनिषद्—पं० राजारामकृत भाषाभाष्यसहित । लाहौर ० ३ ०

642 Aitareya Upanishad—With Madhva's commentary translated into English. Madras 5 0 0

643 Aitareyopaniṣad—With English translation by Pt. Mohan Lal Sandal, M. A. Allahabad 4 8 0

644 Aitareya-Upanishad—With Sanskrit text, paraphrase with word-for-word literal translation, English rendering and comments by Swami Sharvanand. Madras 0 7 0

६४५ काठकोपनिषत्—आनन्दगिरिगोपालयतीन्द्रविरचितटीकाद्वयसहितशांकरभाष्योपेता । पूना १ ४ ०

६४६ **काठकोपनिषत्**—शांकरभाष्येण श्रीरङ्गरामानुजकृतप्रकाशिकया च समेता। पं० श्रीधरशास्त्रिपाठकनिर्मितया बालबोधिन्या समलङ्कृता। पूना २ ० ०

६४७ **कठोपनिषद्**—शांकरभाष्य भाषानुवादसहित। गोरखपुर ० ६ ०

६४८ **कठोपनिषद्**—अन्वय, शांकरभाष्य, भाषानुवाद तथा उपनिषत्सुबोधिनी व्याख्या सहित। काशी २ ० ०

649 Katḥa and Praśna Upanishads—And Sri Sankara's commentary translated into English by S. Sitarama Sastri B. A. Madras 2 8 0

650 Kāthakopaniṣad—With the commentary of Śri Śaṅkarāchārya, translated into English by M. Hiriyanna, M. A. Srirangam 0 12 0

६५१ **काठकोपनिषद्भाष्यम्**—वेदेशीयसहितम्। मद्रास १ ८ ०

६५२ **कठोपनिषद्भाष्य**—पं० भीमसेनकृत संस्कृत तथा भाषाटीकासहित। इटावा ० १२ ०

६५३ **कठवल्लीउपनिषद्**—रायबहादुर जालिमसिंहकृत भाषानुवाद। मूल, अन्वय, पदच्छेद, पदार्थ सहित। लखनऊ ० ८ ०

६५४ **कठवल्लीउपनिषद्**—पं० यमुनाशंकरकृतभाषाटीकासहित। ० ६ ०

६५५ **कठ-उपनिषद्**—पं० राजाराम प्रणीत सरलहिन्दीभाष्यसहित। लाहौर ० ५ ०

656 Katḥa Upanishad—With Sanskrit text, paraphrase, word-for-word literal translation, English rendering and comments. By Swami शर्वानन्द Madras 1 0 0

657 Katḥa Upanishad—Sanskrit text, English translation and word-for-word meaning by Hari Raghunath Bhagavat. Poona 0 6 0

658 Kaṭhopaniṣad—Sanskrit text with English translation by Arbindo Ghose. Poona 0 4 0

659 Yoga of Yama—What death said. A version of the Kaṭhopaniṣad with commentary, being a system of yoga or means of attainment. By W. Gorn Old. Foreign 1 4 0

660 Kaṭhopaishad and the Gita—By D. S. Sarma M. A. Triplicane 1 2 0

६६१ **कलिसंतारणोपनिषद्**—भाषाटीकासहित। मुंबई ० १ ०

६६२ कालिकोपनिषत्—भाषाटीकासहित। हरिद्वार ० ३ ०

६६३ केनोपनिषत्—आनन्दगिरिटीकायुतशांकरपदभाष्यवाक्यभाष्योपेता। शंकरानन्दकृता केनोपनिषद्दीपिका नारायणविरचिता केनोपनिषद्दीपिका च। पूना १ ० ०

६६४ केनोपनिषद्—शाङ्करभाष्येण श्रीरङ्गरामानुजकृतप्रकाशिकया च समेता। पं० श्रीधरशास्त्रिपाठकनिर्मितया बालबोधिन्या समलंकृता। पूना १ ८ ०

६६५ तलवकारोपनिषद्—सभाष्य। कलकत्ता ० ४ ०

६६६ केनोपनिषद्—शांकरभाष्य भाषानुवादसहित। गोरखपुर ० ८ ०

६६७ केनोपनिषद्—अन्वय, मन्त्रार्थ, शांकरभाष्य, शांकरभाष्य का हिन्दी अनुवाद तथा उपनिषत्सुबोधिनीटीकासहित। ० ८ ०

668 Kenopanishad—With the commentary of Śrī Sankarāchārya, translated into English by M. Hiriyanna, M. A., Śrīrangam. 0 6 0

६६९ केनोपनिषद्—मध्वाचार्य व्यासतीर्थीय संस्कृतटीकासमेत। खुले पत्रे। मुम्बई ० १२ ०

६७० केनोपनिषद्—रायबहादुर बाबू जालिमसिंहजीकृत भाषाटीका, मूल, अन्वय, पदच्छेद, पदार्थसहित। लखनऊ ० ३ ६

६७१ केनोपनिषद्—पं० यमुनाशंकरकृतभाषाटीकासहित। लखनऊ ० ३ ६

६७२ केनोपनिषद्—श्रीपाददामोदर सातवलेकरकृत भाषानुवादसहित। औंध १ ४ ०

६७३ केनोपनिषत्—पं० राजारामकृत हिन्दीभाष्यसहित। लाहौर ० ३ ०

६७४ तलवकारोपनिषद्—पं० भीमसेनकृतसंस्कृतटीका तथा भाषानुवादसहित। इटावा ० ३ ०

675 Kenopanishad—English translation by K. Chattopādhyāya. Benares 0 4 0

676 Kena Upanishad—With Sanskrit text, paraphrase, word-for-word literal translation, English rendering and comments, by Swami Sharvananda. Madras 0 7 0

६७७ कैवल्योपनिषद्—मूलमात्र। मुम्बई ० ० ६

६७८ कौषीतकिब्राह्मणोपनिषद्—मूल। म० म० श्री पं० मधुसूदनझा द्वारा सम्पादित। जयपुर ० ६ ०

679 Kauṣītaki-Upaniṣad—Translated by R. B. Śrīśa chandra Vidyārṇava and Pt. Mohan Lal Sandal, M. A., LL. B. Allahabad 3 0 0

६८० गणेशाथर्वशीर्षम् (उपनिषत्)—सभाष्यम्। पूना ० ६ ०

६८१ गोपालतापिन्युपनिषत्—सटीका कलकत्ता ० १० ०
६८२ गोपालतापनी उपनिषद्—भाषाटीका सहित । मुरादाबाद ० १० ०
६८३ चतुर्विंशत्युपनिषत्सारसंग्रह—भाषा । पं० गदाधरमिश्रविरचित । सजिल्द मुम्बई ३ ० ०
६८४ छान्दोग्योपनिषत्—श्री शांकरभाष्यसहिता आनन्दगिरिकृतटीकयालङ्कृता च । कलकत्ता ५ ० ०
६८५ छान्दोग्योपनिषद्—आनन्दगिरिकृतटीकासंवलितशांकरभाष्योपेता । पूना ५ ० ०
६८६ छान्दोग्योपनिषद्—शांकरभाष्यभाषानुवादसहित । गोरखपुर ३ १२ ०

687 Chhandogya Upanishad—And Śrī Śankara's commentary, translated by Ganga Nath Jha, M. A., F. T. S. 2 Vols. Madras 6 0 0

६८८ छान्दोग्योपनिषद्—पं० पीताम्बरकृत शंकरभाष्यानुसारवेदान्तदीपिका नामक भाषाटीका सहित सजिल्द । दुष्प्राप्य । मुम्बई १५ ० ०
६८९ छान्दोग्योपनिषद्—नित्यानन्दकृतमिताक्षराव्याख्यासमेता । पूना २ ० ०
६९० छान्दोग्योपनिषद् भाष्य—पं० शिवशङ्कर काव्यतीर्थ कृत संस्कृत तथा भाषानुवाद सहित । अजमेर ४ ४ ०
६९१ छान्दोग्योपनिषद्—पं० बदरीदत्त जोशी कृतभाषानुवाद सहित । मुरादाबाद १ ८ ०
६९२ छान्दोग्योपनिषद्—अन्वय, पदार्थ और पं० रामस्वरूप शर्म्मांकृत भाषाटीका सहित । सजिल्द मुरादाबाद १ १० ०
६९३ छान्दोग्योपनिषद्—रायबहादुर बाबू जालिमसिंह कृत भाषाटीका, मूल, अन्वय, पदच्छेद और पदार्थ सहित । लखनऊ ३ ४ ०
६९४ छान्दोग्योपनिषद्—पं० यमुनाशंकरकृत भाषाटीका सहित । लखनऊ १ ८ ०
६९५ छान्दोग्योपनिषद्—पं०राजारामकृत भाषाटीकासहित। लाहौर २ ४ ०

696 Chandogya-Upaniṣad—Traduite et annotee. By E. Senart. Paris 4 0 0

६९७ तैत्तिरीय-ऐतरेय-श्वेताश्वतरोपनिषद्—शंकराचार्यकृतभाष्य आनन्दगिरिकृत टीका सहित । कलकत्ता ५ ० ०
६९८ तैत्तिरीयोपनिषद्—आनन्दगिरिटीकासंवलितशांकरभाष्योपेता । शङ्करानन्दकृत दीपिका च । स्वरपाठसहिता। पूना १ १२ ०

६९९ **तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य**—शांकरभाष्य, आनन्दगिरिटीका सहित।
मुम्बई १ ० ०

७०० **तैत्तिरीयोपनिषद्**—अच्युतकृष्णानन्दतीर्थकृत 'वनमाला' व्याख्यासहितशांकर-भाष्यसमन्विता। श्रीरङ्गम् ४ ० ०

७०१ **तैत्तिरीयोपनिषद्**—शांकरभाष्य भाषानुवादसहित। गोरखपुर ० १३ ०

702 Taittirīya Upaniṣad—With the commentaries of Śankarāchārya, Sureśvarāchārya and Sāyaṇa, translated into English by A. Mahadeva Sastri, B. A. Madras 5 0 0

७०३ **तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्**—श्रीनिवासतीर्थीयसहितम्। मुम्बई २ ८ ०

७०४ **तैत्तिरीयोपनिषद्**—कूरनारायणमुनिविरचितभाष्यसहित। मद्रास ३ ३ ०

७०५ **तैत्तिरीयोपनिषत्**—ब्रह्ममेधसहिता। सस्वर। मद्रास ० १२ ०

७०६ **तैत्तिरीयोपनिषद्**—मठपतिश्रीजयगोपालभट्टकृतभाष्यसमेता।
मुम्बई १ ४ ०

७०७ **तैत्तिरीयोपनिषद्**—रायबहादुर बाबू जालिमसिंह कृत भाषा टीका, मूल, पदच्छेद, अन्वय, पदार्थ तथा भावार्थ सहित। लखनऊ ० ११ ०

७०८ **तैत्तिरीयोपनिषद्**—पं० यमुनाशंकरकृत भाषाटीका सहित।
लखनऊ ० ८ ०

७०९ **तैत्तिरीय-उपनिषद्**—पं० राजाराम प्रणीत सरल हिन्दी भाष्यसमेत।
लाहौर ० ८ ०

710 Taittirīyopaniṣad—With English translation by Pandit Mohan Lal Sandal, M. A. Allahabad 1 8 0

711 Taittirīya Upanishad—With text, English translation, notes &c. By Swami Sharvananda.
Madras 1 0 0

७१२ **तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यवार्त्तिकम्**—सुरेश्वराचार्यकृतमानन्दगिरिकृतटीका-समेतम्। पूना २ २ ०

७१३ **नारायणोपनिषद्**—स्वामी विश्वेश्वरानन्द तीर्थकृत भाषाटीका सहित।
मुम्बई १ ८ ०

७१४ **निरालम्बोपनिषद्**— प्रभासपाटण ० २ ०

७१५ **नृसिंहतापनी (उपनिषद्)**—शांकरभाष्यसहिता। कलकत्ता २ ० ०

७१६ **नृसिंहपूर्वोत्तरतापनीयोपनिषद्**—श्रीमच्छंकराचार्यविरचितपूर्वतापनीयभाष्यविद्यारण्यप्रणीतोत्तरतापनीयदीपिकाभ्यां समेता। पूना १ १२ ०

७१७ **नृसिंहपूर्वतापिन्युपनिषद्**—शांकरभाष्य, विवेकचूडामणि। मूलमात्र, उपदेशसाहस्री मूल तथा श्वेताश्वतरोपनिषद् शांकरभाष्यसमेत। पूना १ ८ ०

७१८ **नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषद्**—दीपिकासहित। मुम्बई ० ५

७१६ **पञ्चत्रिंशदुपनिषदः**—मूलमात्र। गुटका। मुम्बई १ ८

७२० **पिण्डब्रह्माण्डोपनिषद्**—केशवकृतसंस्कृतभाष्य तथा भाषाटीकासहित। मुरादाबाद १ १२

७२१ **प्रश्नोपनिषद्**—आनन्दगिरिकृतटीकासहित शांकरभाष्योपेता. शंकरानन्दवि- चिता प्रश्नोपनिषद्दीपिका च। पूना १ ०

७२२ **प्रश्नोपनिषद्**—शांकरभाष्य. भाषानुवादसहित। गोरखपुर ० ७

७२३ **षट्प्रश्नोपनिषद्**—मध्वाचार्यकृतभाष्य तथा जयतीर्थकृतटीका तथा मकालि- टिप्पणीसहिता। खुले पत्रे। मद्रास ० १२

७२४ **प्रश्नोपनिषद् भाष्य**—पं० भीमसेनकृत संस्कृत तथा भाषाटीकासहित। इटावा ० ८

७२५ **प्रश्नोपनिषद्**—रायबहादुर बाबू जालिमसिंहकृत भाषाटीका, मूलपाठ, अन्व- पदच्छेद, पदार्थ तथा भावार्थसहित। लखनऊ ० ८

७२६ **प्रश्नोपनिषद्**—पं०यमुनाशंकरकृत भाषाटीकासहित। लखनऊ ० ६

७२७ **प्रश्न-उपनिषद्**—पं० राजारामप्रणीत सरल हिन्दी भाषाटीकासहित। लाहौर ० ५

728 Praśna-Upanishad—With Sanskrit text, paraph- ase, word-for-word literal translation, English renderin- and comments. By Swami Sarvananda. Madras 0 12

७२६ **बृहदारण्यकोपनिषद्**—शंकराचार्यकृतभाष्येण आनन्दगिरिकृतटीकया सहिता। कलकत्ता ७ ०

७३० **बृहदारण्यकोपनिषत्**—आनन्दगिरिकृतटीकासंवलितशांकरभाष्योपेता। पूना ८ ०

७३१ **बृहदारण्यकोपनिषद्**—मूल, अन्वय, पदार्थ और शांकरभाष्य के अनुक- भाषानुवादसहित। मुरादाबाद २ ४

७३२ **बृहदारण्यकोपनिषद्**—पं० पीताम्बरकृत शांकरभाष्यानुसार वेदान्तदीपि- नामक भाषाटीकासहित। सजिल्द। दुष्प्राप्य। मुम्बई २० ०

733 Bṛhadāraṇyakopaniṣad—With the commentary o- Śrī Śaṅkarāchārya, translated into English by M- Hiriyanna, M. A. Part I. Madras 0 12

734 Bṛhadāraṇyaka Upanishad—With the commen- tary of Shankarāchārya translated by Swāmī Madhava- nand, bound. Almora 6 0

७३५ **बृहदारण्यकोपनिषद्**—रङ्गरामानुजविरचितप्रकाशिकोपेता। पूना ३ ४

७३६ बृहदारण्यकोपनिषद्—मध्वाचार्यकृतभाष्य तथा रघूत्तमस्वामी कृत टिप्पणी सहित। खुले पत्रे। मद्रास ७ ० ०

737 Bṛhadāraṇyakopaniṣad—With the commentary of Madhvāchārya called also Ānandatīrtha. Text with English translation by R. B. Śrīsha chandra Vasu. Allahabad 12 0 0

७३८ बृहदारण्यकोपनिषन्मिताक्षरा—श्री नित्यानन्दमुनिविरचिता। पूना २ १२ ०

७३९ बृहदारण्यकोपनिषद्—पं० शिवशंकरकृत संस्कृतभाष्य तथा भाषानुवाद सहित। अजमेर ४ ४ ०

७४० बृहदारण्यकोपनिषद्—रायबहादुर बाबू जालिमसिंहकृत भाषाटीका, मूल, पदच्छेद, अन्वय, पदार्थ तथा हिन्दी भावार्थ सहित। लखनऊ ३ ० ०

७४१ बृहदारण्यकोपनिषद्—पं०बद्रीदत्तजोशीकृतभाषानुवादसहित। १ ८ ०

७४२ बृहदारण्यक-उपनिषद्—पं० राजारामप्रणीत हिन्दी भाष्यसमेत। लाहौर २ ४ ०

७४३ बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यवार्त्तिकम्—सुरेश्वराचार्यकृतम्। आनन्दगिरिकृतटीकासमेतम्। ३ खण्डाः। पूना २२ ८ ०

७४४ बृहदारण्यकवार्त्तिकसारः—विद्यारण्यस्वामिविरचितः। सटीकः। उत्तमश्लोकयतिविरचितं वेदान्तसूत्रलघुवार्त्तिकं श्लोकबद्धम्। मूलम्। अस्मिन् ग्रन्थे च बृहदारण्यकवार्त्तिकनिर्दिष्टानामर्थानां सारतः समुद्धरणं कृतम्। येन तज्जिज्ञासूनामनायासेनैव तदर्थावबोधो भवेत्। खण्डाः १०। १५ ० ०

७४५ ब्रह्मोपनिषत्सारसंग्रह—दीपिका टीका तथा भाषानुवादसहिता। प्रयाग १ ० ०

746 Brahmopaniṣat-sāra-saṅgraha—Text with English translation and commentary by Vidyatilaka. Allahabad 1 8 0

७४७ भवसन्तारणोपनिषद्—स्वामी श्रीरामप्रपन्नजीकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई ० १२ ०

७४८ मण्डलब्राह्मणोपनिषद्—राजयोगभाष्यसहिता। मैसूर ३ ४ ०

७४९ महानारायणोपनिषत्—दीपिकाटीकासहित। पूना ० ११ ०

750 Mahānārāyaṇa Upanishad—Edited with text, translation and notes by Robert Zimmermann. 5 0 0

751 Die Quellen der Mahānārāyaṇa-Upaniṣad—Und

das Verhältnis der Verschiedenen Rezension Zueinander von Dr. Robert Zimmermann. Leipzig 6 (

७५२ मांडूक्योपनिषद्—आनन्दगिरिकृतटीकासंवलितशांकरभाष्योपेता । शंकरानन्दविरचिता मांडूक्योपनिषद्दीपिका च । गौडपादकारिका आनन्दगिरिकृतटीकासहिता । पूना २ ५ (

७५३ माण्डूक्योपनिषद्—गौड़पादीयकारिकासहित शाङ्करभाष्य तथा इन सब की भाषा टीका । गोरखपुर १ ० (

754 Māndūkyopanishad—With Gauḍapāda's Kārikās and the Bhāṣya of Shankara, translated into English by M. N. Dvivedi. Bombay 2 0 (

755 Māṇḍūkyopaniṣad (माण्डूक्योपनिषद्)—With Gauḍapāda Kārikās and Śaṅkarabhāṣya. Text and translation by Swāmī Nikhilānanda. 1937. Madras 2 12 0

७५६ मिताक्षरा—श्री गौडपादाचार्यकृतमांडूक्यकारिकाव्याख्या । श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वयम्प्रकाशानन्दसरस्वतीस्वामिकृता । शंकरानन्दकृता मांडूक्योपनिषद्दीपिका च । काशी १ ४ ०

७५७ मांडूक्योपनिषद्—पं० यमुनाशंकरकृतभाषाटीकासहित । लखनऊ १ ० ०

७५८ मांडूक्योपनिषद्—रायबहादुर बाबू जालिमसिंहकृत भाषाटीका, मूलपाठ, अन्वय, पदच्छेद, पदार्थसहित, लखनऊ ० ३ ०

७५९ माण्डूक्योपनिषद् का स्वरूप अर्थात् माण्डूक्योपनिषद्भाष्य— ० ११ ०

760 Māndūkya-Upanishad—Texto in Devanagarico traslitterazione' versione e note a cura di E.-G. Carpani. 1936. in 12, 32pp. 2 0 0

७६१ मुक्तिकोपनिषद्—मूलमात्र । कलकत्ता ० २ ०

७६२ मुक्तिकोपनिषद्—भाषाटीकासहित । मुम्बई ० ५ ०

७६३ मुण्डकोपनिषद्—आनन्दगिरिकृतटीकासंवलितशांकरभाष्योपेता, नारायणविरचिता दीपिका च । पूना ० १० ०

७६४ मुण्डकोपनिषद्—शांकरभाष्य, तथा म० म० श्रीधरकृतबालबोधिनी टीका सहित । पूना १ ० ०

७६५ मुण्डकोपनिषत्—शांकरभाष्य तथा उसके भाषानुवादसहित । गोरखपुर ० ७ ०

७६६ मुण्डकोपनिषत्—रायबहादुर बाबू जालिमसिंहकृत भाषाटीका, मूल, अन्वय, पदच्छेद, पदार्थ, भावार्थसहिता । लखनऊ ० ८ ०

७६७ मुण्डकोपनिषद्—पं० यमुनाशंकरकृत भाषाटीकासहिता। लखनऊ ० ६ ०

७६८ मुण्डक-उपनिषद् और माण्डूक्य-उपनिषद्—पं० राजारामप्रणीत सरलहिन्दी भाष्यसमेत। लाहौर ० ६ ०

769 Mundaka and Mandukya Upanishad—With Sanskrit text, paraphrase word-for-word literal translation, English rendering and comments. By Swami Śarvānanda. Madras 0 14 0

770 Maitreyī—By Pt. Sita Nath Tattvabhushana. Madras 0 4 0

७७१ मैत्र्युपनिषद्—With an English translation by R. B. Śrīśa chandra Vidyaratna and Pandit Mohan Lall Sandal, M. A., LL. B. Allahabad 3 0 0

७७२ मैत्र्युपनिषद् (मैत्रायणी उपनिषद्)—पं० रामतीर्थकृतव्याख्यासहिता। ३ भागों में। Edited with an English translation by E. B. Cowell, M. A. Calcutta 3 8 0

७७३ योग-उपनिषदः—उपनिषद्ब्रह्मयोगिविरचितव्याख्यायुताः। मद्रास ५ ० ०

७७४ रामतापिनीयोपनिषद्—रामप्रकाशिकाव्याख्यायुता पूर्वतापिनी, श्रीमदानन्दवनकृतानन्दनिधिव्याख्यासहितोत्तरतापिनी। प्रयाग ३ १२ ०

७७५ रामतापिन्युपनिषद्—दीपिका टीकासहित। काशी ० ५ ०

७७६ रामपूर्वोत्तरतापनीयोपनिषद्, शेषोपनिषद् श्रीरामोपनिषच्च—श्रीरामपूर्वोत्तरतापनीयोपरि हिन्दीटीका, शेषोपनिषद्—मूलं, श्रीरामोपनिषदुपरि सुबोधिनी टीका। मुम्बई १ ० ०

७७७ वेदानुवचन—बाबा नगीनासिंहवेदीविरचित उपनिषदों की व्याख्या। नवीन सर्वसाधारण (Popular) संस्करण। लखनऊ २ ८ ०

७७८ वैष्णव-उपनिषदः—श्रीउपनिषद्ब्रह्मयोगिविरचितव्याख्यायुताः। मद्रास ४ ० ०

७७९ शाक्तोपनिषदः—श्रीउपनिषद्ब्रह्मयोगिविरचितव्याख्यायुताः। अ० महादेवशास्त्रिणा सम्पादिताः। मद्रास २ ८ ०

७८० शैव-उपनिषदः—श्रीउपनिषद्ब्रह्मयोगिविरचितव्याख्यायुताः। अ० महादेव शास्त्रिणा सम्पादिताः। मद्रास ३ ० ०

७८१ श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रहः—अष्टोत्तरशत (१०८) उपनिषदों का सारसंग्रह। हिन्दी ३ ० ०

७८२ श्वेताश्वतरोपनिषद्—शांकरभाष्य-शंकरानन्दकृतदीपिका-नारायणकृतदीपिका-विज्ञानभगवत्कृतविवरणसहिता। पूना २ ४ ०

७८३ **श्वेताश्वतरोपनिषद्**—पं० रामस्वरूपकृत भाषाटीकासहित। मुरादाबाद ० १२ ०

७८४ **श्वेताश्वतरोपनिषद्**—अन्वय, भाषापदार्थ, भावार्थसहित। मुम्बई १ ० ०

७८५ **श्वेताश्वतरोपनिषद्भाष्य**—पं० भीमसेनजीकृत भाषानुवादसहित, मूलपाठ अन्वय, विस्तृतभाष्य तथा भावार्थ। इटावा ० १२ ०

७८६ **श्वेताश्वतर-उपनिषद्**—पं० राजारामप्रणीत सरल हिन्दीभाष्यसमेत। लाहौर ० ५ ०

787 Śvetāśvatara Upanishad—Text with word-for-word and running English translation and notes by Swami Thyagisananda. Madras 0 14 0

७८८ **श्वेताश्वतर-उपनिषद्** Svetāśvatara Upaniṣad—Text with English translation and notes by Siddheśvara Varma Śāstrī, M. A. Allahabad 3 0 0

७८९ **संन्यासोपनिषदः**—17. उपनिषद्ब्रह्मयोगिकृतभाष्यसहिताः। Edited by T. R. Chintamani M. A., &c. Madras 4 0 0

७९० **सामान्यवेदान्त-उपनिषदः**—श्रीउपनिषदब्रह्मयोगिविरचितव्याख्यायुताः। मद्रास ५ ८ ०

७९१ **सूर्योपनिषद् (नेत्रोपनिषद्)**— लाहौर ० ० ६

792 Aus Brahmanas and Upaniṣaden—Gedanken Altindischer Philosophen Ubertragen und Eingeleitet Von Alfred Hillebrandt. Foreign 8 0 0

793 Constructive Surve of Upaniṣadic Philosophy—By Prof. R. D. Ranade, M. A. Ordinary edition. Poona 10 0 0

794 Four Unpublished Upaniṣadic Texts—[बाष्कल, छागलेय, आर्षेय & शौनक]. Tentatively edited & translated into English for the first time. The पर्यङ्कविद्या। कौषीतक्युपनिषद् chapter I—By Dr. S. K. Belvalkar. Poona 1 0 0

795 Gospel of life in English, Vol I.—An introduction to the study of the Bhagavadgita and the Upanishads by F. T. Brooks. Bound. Madras 1 8 0

796 Introduction to the study of Upanishads—By Vidyaranya. Translated by A. Mahadeva Sastri, B. A. Madras 0 6 0

797 Die Lehre der Upanishaden and die aufange des Buddhismus—Or the teachings of the Upanishads and their comparison with Buddhism by Hermann Oldenberg. Nicely bound, Rare. Europe 12 0 0

798 Minor Upaniṣads, Text Vol. I.—संन्यासोपनिषदः, Edited with preface & critical notes in English by F. Otto Schrader. Madras 10 0 0

799 Minor Upanishads Vol. I—Amritabindu and Kaivalya with commentaries. Translated into English by A. Mahadeva Shastri B. A. Madras 1 2 0

800 Minor Upanishads—with original text, introduction, English rendering and comments. Almora 1 0 0

801 Die mystik in den Upanishaden—Von Prof. Dr. Friedrich Heiler. Foreign 3 8 0

802 Nine Upanishads—Īśopanishad, Kenopanishad, Kaṭhopanishad, Prashnopanishad, Muṇḍakopanishad, Māṇḍūkyopanishad, Taittirīyopanishad, Aitareyopanishad and Śvetāśvataropanishad. English translation only with a preamble and arguments by G.R.S. Mead, B.A., M.R. A.S., and Jagadīsha Chandra Chattopādhyāya. Madras 2 8 0

803 Philosophical Teachings in the Upaniṣads—By Pt. Mohan Lal Sandal, M. A., LL. B. Allahabad 3 0 0

804 Philosophy of the Upaniṣads—By S. Radhakrishnan with a foreword by Rabindranatha Tagore. Foreign 6 0 0

805 Philosophy of the Upanishads—By Sures Chandra Chakravarti, M. A., B. L. [Those interested in the Upaniṣads and the Vedanta will find a great deal of new material in the book]. Calcutta 4 0 0

806 Recurrent and Parallel Passages in the Principal Upanishads and the Bhagavadgita—With references to other Sanskrit texts by George C. O. Haas. Foreign 3 8 0

807 Sechzig Upanishad's des Veda aus dem Sanskrit

ubersetzt und mit einleitungen und anmerkungen versehen Von Dr. Paul Deussen. 1921. Leipzig 25 0 0

808 Secret Lore of India and the one Perfect Life for all—Being a few Main passages from the Upanishads put into English verse with an introduction and a conclusion, by W. M. Teape, M. A., 2 Vols. Cambridge 7 6 0

809 Some Sayings from the Upaniṣads—By L. D. Barnett. Foreign 1 6 0

810 Spirit of the Upanishads. Foreign 3 0 0

811 Studies in the first six Upanishads—Viz Īsha, Kena, Katha, Praśna, Muṇḍaka and Māṇḍūkya together with English translation of the Īśa Kena, according to Shankara by Śrīśa Chandra Vasu. Text in original Sanskrit. Allahabad 4 0 0

812 Ten Principal Upanishads—Put into English by Shree Purohit Swami and W. B. Yeats. Foreign 6 8 0

813 Thirteen Principal Upanishads—translated into English with an outline of Philosophy of the Upanishads by E. Hume 11 4 0

814 Thirty Minor Upanishads—Translated into English by K. Narayana Swami Aiyar. Madras 3 8 0

815 Twelve Principal Upaniṣads—(In three Volumes). Text in Devanāgari, and translation with notes in English from the commentaries of Śankarāchārya & gloss of Anandagiri. Vol. I.—Īśa, Kena, Kaṭha, Praśna, Muṇḍaka, Māṇḍūkya, Taittirīya, Aitareya and Śvetāśvatara translated by Dr. E. Roer & Prof. M. N. Dvivedi. Vol. II—Bṛhadāraṇyaka Upaniṣad, by Dr. E. Roer. Vol. III—Chhāndogya & Kauṣitaki Brāhmaṇa Upaniṣads by Raja Rajendra Lal Mitra & Prof. E. B. Cowell, M. A. Ordinary edition. Madras 15 0 0

816 Upanishad—with Sanskrit Text, paraphrase, word-for-word English translation & comments by Śarvānanda. Madras.

Īsha Upanishad	0	7	0
Kena ,,	0	7	0
Kaṭha ,,	0	14	0
Praśna ,,	0	12	0
Muṇḍaka & Māṇḍūkya	0	14	0
Taittirīya ,,	1	0	0
Aitareya ,,	0	7	0

817 Upanishads—(Chhāndogya, Talavakāra, Aitareyāraṇyaka, Kauṣītaki Brāhmaṇa, Vājasaneyī Saṃhitā, Kaṭha, Muṇḍaka, Taittirīyaka, Bṛhadāraṇyaka, Śvetāśvatara, Praśna & Maitrāyaṇī—translated into English by F. Max Muller. Complete. Bound. Europe 12 0 0

818 Upanishads (Isa, Kena, Katha)—English translation only, cloth-bound. 1 12 0

819 The Upanishads and Śrī Sankara's commentary-translated by S. Sitarama, B.A., B.L., M. R. A. S. Madras.

Vol. I—Īsha, Kena and Muṇḍaka	2	8	0
Vol. II—Kaṭha and Praśna	2	8	0
Vol. III—Chhāndogya Upaniṣad	2	8	0
Vol. IV— ,, continued	3	8	0
Vol. V—Aitareya & Taittirīya	2	8	0

820 Wisdom of the Upanishads—By Annie Besant. Madras 1 2 0

छन्दो-ग्रन्थ:

८२१ **छन्दःकौमुदी**—हिन्दीभाषाटीकासहिता। प्रथमापरीक्षापाठ्यनिर्द्धारितच्छन्दः-संग्रहपुस्तकम्। बनारस ० ६ ०

८२२ **छन्दःप्रभाकर**—भाषापिङ्गल सटीक। छन्दःशास्त्र के विशेष ज्ञान के लिये बाबू जगन्नाथ प्रसाद भानु ने निर्माण किया है। भाषाकाव्य बनाने वालों को अत्युपयोगी है। विलासपुर २ ० ०

८२३ **छन्दःप्रभाकर की कुञ्जी**— लाहौर ० ८ ०

८२४ **छन्दःशास्त्रम्**—श्रीपिंगलाचार्यविरचितम्। श्रीहलायुधभट्टविरचितया मृतसंजीविन्याख्यया वृत्त्या समेतम्। समीक्षाचक्रवर्त्तिराजपण्डितश्रीमधुसूदनविद्यावाचस्पतिरचितच्छन्दोनिरुक्तिसनाथं च। मुम्बई १ १२ ०

८२५ **पिङ्गलच्छन्दःशास्त्रम्**—भट्टहलायुधकृतवृत्त्या विस्तृतटीकया च सहितम्। कलकत्ता ३ ० ०

८२६ **पिंगलच्छन्दःसूत्रम्**—श्रीमत्पिंगलाचार्यविरचितच्छन्दःशास्त्रम्। महामहोपाध्यायश्रीहलायुधभट्टकृतमृतसञ्जीविनीवृत्त्या नानाविधटिप्पण्या वंगानुवादेन हिन्दीभाषानुवादेन च समलंकृतम्। कलकत्ता १ ८ ०

८२७ **पिङ्गलच्छन्दःसूत्रम्**—दुष्प्राप्य। कलकत्ता ८ ० ०

८२८ **छन्दःसंग्रहः (वृत्तबोधः)**— बनारस ० ४ ०

८२९ **छन्दःसार**—प्रथमापरीक्षापाठ्यच्छन्दःसंग्रहपुस्तकम्। संस्कृतव्याख्या तथा भाषाटीका सहित। बनारस ० २ ०

८३० **छन्दःसारसंग्रहः**—विविधच्छन्दोग्रन्थेभ्यः सारमाकलय्य नव्यरीत्यनुसारतो विन्यस्तविभागः। श्री चन्द्रमोहनघोषेण संकलितः। कलकत्ता २ ० ०

८३१ **छन्दःसारावली**— विलासपुर ० १० ०

८३२ **छन्दपयोनिधि**—इस छन्दोग्रन्थ की परिपाटी देखने योग्य है। मुम्बई १ ० ०

८३३ **छन्दमाला**—भाषा। मुम्बई ० १० ०

८३४ **छन्दश्चिह्न**—इसमें छन्द पृथक् पृथक् मात्रा के मेल से रचना करना यह भली भांति दिखलाया गया है। हिन्दी। मुम्बई ० १ ०

८३५ **छन्दोंकुर**—भाषाटीका समेत। बूंदीनिवासी पं० गंगासहाय विरचित। मुम्बई ० ३ ०

८३६ **छन्दोदय**—भाषा में (नूतन)। मुम्बई ० ४ ०

८३७ **छन्दोबोध**— लाहौर ० ४ ०

८३८ **छन्दोमञ्जरी**— काशी ० १० ०

८३९ **छन्दोमञ्जरी**—सटीक, बङ्गानुवादसहित। कलकत्ता १ ० ०

८४० **छन्दोमञ्जरी वृत्तरत्नाकरश्च**—पं० जीवानन्दकृतविस्तृताभिनवटीकासहितः। कलकत्ता १ ० ०

८४१ **छन्दोमन्दाकिनी**—पं० गुरुप्रसादशास्त्रिकृता। काशी ० १ ०

८४२ **छन्दोरत्नमाला**—पिंगल-भाषा। काव्य बनाने में अत्यन्त उपयोगी है। मुम्बई ० ४ ०

८४३ **छन्दोर्णवपिङ्गल**—भिखारीदासकृत। भाषा काव्यरचना करने में बड़ा अच्छा है। मुम्बई १ ० ०

८४४ **छन्दोर्णवपिंगल**—भिखारीदासकृत। लखनऊ ० ३ ०

८४५ **छन्दोर्णवपिङ्गल**— लखनऊ ० १० ०

८४६ **छन्दोलङ्कारप्रश्नोत्तरी**— लाहौर ० १२ ०

८४७ **छन्दोविन्मण्डन**—प्रणेता स्वामी श्री चन्दनदासजी। अजमेर १ ४ ०

८४८ **प्रस्तारादिरत्नाकर**—भाषाटीका अर्थात्—श्लोक, छन्द, वृत्त आदि के प्रस्तारादि का वर्णन भली भान्ति लिखा गया है। मुम्बई ० २ ०

८४९ **प्राकृतपैङ्गल**—विश्वनाथपञ्चाननकृतपिंगलटीका, वंशीधरकृतपिंगलप्रकाशकृष्णीयविवरणार्थटीका, यादवेन्द्रकृतपिंगलतत्त्वप्रकाशिकासंज्ञादिविवृतिभिः समलंकृतम्। कलकत्ता ६ ४ ०

८५० **वाग्वल्लभः**—दुःखभञ्जनविदुषा विरचितः। म० म० देवीप्रसादेन कृतया वरवर्णिन्या टीकयोपस्कृतः। काशी २ ८ ०

८५१ **वाणीभूषणम्**—दामोदरमिश्रविरचितम्। मुम्बई ० ८ ०

८५२ **वृत्तमणिकोषः**—श्रीनिवासकृतः। ० २ ०

८५३ **वृत्तरत्नाकरः**—श्री केदारभट्टेन विरचितः श्रीरामचन्द्रकविभारतिना विरचितया वृत्तरत्नाकरपञ्चिकाख्यया सविस्तरव्याख्यया समलंकृतः। मुम्बई १ ० ०

८५४ **वृत्तरत्नाकरः**—श्री कविराज पं० झारसरामशास्त्रिणा रचितया छन्दःसुबोधिन्याख्यया टीकया सविस्तरव्याख्यया भाषाटीकया च समलंकृतः। मुम्बई ० १४ ०

८५५ **वृत्तरत्नाकरः**—नारायणभट्टीयव्याख्यासहितः। सम्पादकनिर्मितविषमस्थलटिप्पणोपेतः। श्रुतबोधच्छन्दोमञ्जरीसुवृत्ततिलकैश्च समेतः। काशी १ ८ ०

८५६ **वृत्तरत्नाकरः**—केदारभट्टप्रणीतः। श्री नृसिंहदेवशास्त्रिणा दर्शनाचार्येण विरचितयाऽतिसरलया स्वोपज्ञ"सौभाग्यवती"विवृत्या भाषाटीकया च सनाथया रत्नप्रभाख्यया व्याख्यया समुद्भासितः। लाहौर १ ४ ०

८५७ **वृत्तरत्नावली**— मुम्बई ० ३ ०

८५८ **वृत्तवार्त्तिकम्**— मद्रास १ ८ ०

८५९ **श्रुतबोधः**—कालिदासकृतः सटीकः। कलकत्ता ० २ ०

८६० **श्रुतबोधः**—आशुबोधव्याख्यासहितः। सीतारामझा-कृतलघुच्छन्दोगणितसहितश्च। काशी ० ६ ०

८६१ **श्रुतबोधः**—व्रजरत्नभट्टाचार्यकृत हिन्दी भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ४ ०

८६२ **श्रुतबोधः**—महाकविकालिदासविरचितः। पं० श्री कनकलालशर्मणा (मैथिलेन) विरचितान्वय-व्याख्या-समास-व्याकरण-उदाहरण-भाषार्थप्रश्नादिसहितया परीक्षोपयोगिन्या विमलाख्यया टीकया भाषाटीकया च समलंकृतः। बनारस ० ३ ०

८६३ **श्रुतबोधः**—भाषाटीकासहितः। बनारस ० ४ ०

८६४ **श्रुतबोधवृत्तरत्नाकर**—संस्कृतटीका सहित श्री कालिदास और श्री भट्टकेदार विरचित मूल संस्कृत। इन दोनों ग्रन्थों के अभ्यास से अनेक प्रकार के छन्द और वृत्त काव्य सरल रीति से बना सकते हैं। मुम्बई ० ८ ०

८६५ **श्रुतबोधश्छन्दोग्रन्थः**—आनन्दवर्धिनीतात्पर्यप्रकाशाख्यसंस्कृतभाषाटीकासहितः। काशी ० ४ ०

८६६ **सरसपिङ्गल**—पं० रामचन्द्रशुक्ल 'सरस' कृत। प्रयाग ० ६ ०

८६७ **सुवृत्ततिलकम्**—महाकविश्रीक्षेमेन्द्रविरचितम् । काशी ० २ ०

धर्मशास्त्र-ग्रन्थाः

८६८ **अङ्गिरःसंहिता**—भाषाटीका । हरिद्वार ० ५ ०

८६९ **अङ्गिरःस्मृतिः**—श्लोक और भाषाटीकासहित । मुरादाबाद ० १ ०

८७० **अपत्यविक्रयनिषेध**—भाषा । पं० दुर्गादत्तशास्त्रीकृत । प्रयाग ० १ ६

८७१ **अष्टादशस्मृति**—मूलमात्र छोटा गुटका जिल्द बन्धा हुआ । मुम्बई २ ० ०

मूल, स्थूलाक्षर, खुले पत्रे २ ० ०

८७२ **अष्टादशस्मृति**—भाषाटीका समेत । ग्लेज कागज । सजिल्द । मुम्बई ४ ० ०

८७३ **असवर्ण विवाह निषेध या पटेलबिल खण्डन** । भाषा । पं० ब्रह्मदेव-मिश्रविरचित । इटावा ० ० ६

८७४ **आचारचन्द्रिका**— काशी ० ८ ०

८७५ **आचारप्रबन्ध**— काशी १ ० ०

८७६ **आचारभूषण**— पूना ४ ६ ०

८७७ **आचारमयूखः**—नीलकण्ठभट्टकृतः । प्रातःस्मरणादिशयनान्तस्याह्निकक्रिया-कलापस्य निरूपणपरो ग्रन्थः । मुम्बई ० ८ ०

८७८ **आचारमयूखः**—(भट्टनीलकंठकृतभगवन्तभास्करे) श्रीजगन्नाथरघुनाथघारपुरे-द्वारा संशोधितः । मुम्बई २ ४ ०

८७९ **आचारमार्त्तण्डः**— आनन्दवन १ ० ०

८८० **आचाररत्न**— मुम्बई १ ० ०

८८१ **आचारसूचिका**—भाषाटीकासहित । मुम्बई ० १ ०

८८२ **आचारादर्श**—मूल । मुम्बई ० १२ ०

८८३ **आचारार्क**— मुम्बई ० १२ ०

८८४ **आचारेन्दुः**— पूना ४ ० ०

८८५ **आपस्तम्बीयधर्मसूत्रम्**—उज्ज्वलनाम्न्या संस्कृतव्याख्यासमेतम् । कुम्भघोण २ ८ ०

८८६ **आपस्तम्बीयधर्मसूत्रम्**—सटीकम् । उज्ज्वलनाम्न्या व्याख्यया समलंकृतम् । स्थूलाक्षर पुष्ट कागज । पूना ३ ० ०

८८७ **आपस्तम्बधर्मसूत्रम्**—श्रीमद्धरदत्तमिश्रविरचितया उज्ज्वलाख्यया वृत्त्या संवलितम । काशी ४ ० ०

Apastamba Dharma Sutras—Edited with notes, introduction, word-index &c. by A. Chinnaswamy Shastri &. Pt. A. Ramanath Shastri. Benares 4 0 0

८८८ आपस्तम्बधर्मसूत्रम्—भाषाटीकासहित। यह हिन्दी अनुवाद "उज्ज्वला" आदि संस्कृत टीकाओं के अनुकूल किया गया है। मुरादाबाद १ ८ ०

८८९ आपस्तम्बधर्मसूत्रम्—मूलमात्रम्। मद्रास ० १२ ०

८९० आपस्तम्बधर्मसूत्रमञ्जरी—आपस्तम्बधर्मसूत्राणां सारांशः। मैसूर १ ४ ०

Āpastamba Dharma Sūtra Manjarī—A Digest of Āpastamba Dharma Sūtras by R. N. Sūrya Nārāyaṇa, Mysore 1 4 0

८९१ आर्यविद्यासुधाकरः—यज्ञेश्वरेण विरचितः तथा पण्डितशिवदत्तेन संशोधितः सटिप्पणः। लाहौर। (यन्त्रस्थ)

८९२ आशौचकाण्ड मूल— काशी ० ३ ०

८९३ आशौचनिर्णय—अग्निपुराणोक्त। मुम्बई ० १ ०

८९४ आशौचनिर्णय—हिन्दी भाषाटीकासहित। मुम्बई ० ४ ०

८९५ आशौचपञ्जिका (शुद्धसिद्धान्तपञ्जिकान्तर्गत)—जयपुरराजसभाप्रधानपण्डितेन विद्यावाचस्पतिना श्रीमधुसूदनशर्ममैथिलेन नानाविधधर्मशास्त्रनिबन्धतत्त्वानुसन्धानपुरस्सरं समुपनिबद्धा। आगरा १ ० ०

८९६ आशौचाष्टकम्—वररुचिकृतं सटीकम्। मद्रास ० ४ ०

८९७ उत्सर्गमयूखः—नीलकण्ठभट्टकृतः। मुम्बई ० ४ ०

८९८ उत्सर्गमयूखः—(भट्टनीलकण्ठकृतभगवन्तभास्करे) श्रीजगन्नाथरघुनाथघारपुरे-द्वारा संशोधितः। मुम्बई १ २ ०

८९९ एकादशीतिथिव्रतनिर्णय—सप्रमाण। जयसिंहकल्पद्रुम से उद्धृत। मुम्बई ० ४ ०

९०० कलिरहस्यम्—भाषाटीकासहित। हरिद्वार ० २ ०

९०१ कात्यायनमतसंग्रह—By Narayana chandra Banerjee. कलकत्ता २ ४ ०

९०२ कात्यायनस्मृतिसारोद्धार—Or Kātyāyana Smriti on Vyavahāra (Law and Procedure). Text (reconstructed), translation, notes and introduction. By P. V. Kane, M. A., LL. M. Bombay 4 0 0

९०३ कायस्थकुलभास्कर— लखनऊ ० ८ ०

९०४ कालतत्त्वविवेचनम्—रघुनाथभट्टकृत। २ भाग। काशी ७ ८ ०

९०५ कालमाधव—विद्वद्वर श्रीमाधवाचार्यविरचित। बनारस १ ८ ०

९०६ कालमाधव—टिप्पणीसहित। वेदभाष्यकार श्रीमाधवाचार्यकृत। मुम्बई २ ८ ०

९०७ **कालमाधव**—संस्कृतटीकासहित । कलकत्ता ५ ० ०
९०८ **कालविवेक**—पं० मधुसूदनकृत संस्कृतटीकासहित । सम्पूर्ण ।
कलकत्ता ५ ४ ०
९०९ **श्रीकाश्यपधर्मशास्त्रम्**—श्री एम० के० सरकारेण सम्पादितम् । ५ ० ०
९१० **कुर्म्मी-जाति-निर्णय**—भाषा । लेखक बा० करुणाशंकर पंवार । ० ८ ०
९११ **कुलोचित धर्मशिक्षा**—भाषाटीकासहित । लखनऊ १ ४ ०
९१२ **कृष्णजन्माष्टमीनिर्णय**— मुम्बई ० ४ ०
९१३ **क्षौरनिर्णय**—तीर्थादि में क्षौर अर्थात् वपनका निर्णय मूल । मुम्बई ० १ ०
भाषाटीकासहित । ० १
९१४ **गङ्गासिंहकल्पद्रुम**—निर्णयसिन्धु, जयसिंहकल्पद्रुमादि से बढ़िया ग्रन्थ। (छप रहा है) लगभग मूल्य ८ ० ०
९१५ **गंगास्थितिनिर्णय**—श्रीमदुदासीनकेशवानन्दस्वामिविरचित: । ० २ ०
९१६ **गदाधरपद्धतिः**—कालसारः । गदाधरप्रणीतः । सम्पूर्णः । कल० ५ ४ ०
९१७ **गदाधरपद्धतिः—आचारसारः** । श्रीगदाधरराजगुरुप्रणीतः । सम्पूर्णः ।
कलकत्ता ७ ० ०
९१८ **गृहस्थरत्नाकरः**—मूलमात्र । A treatise on Smriti by Chandeśvara Thakkura. Calcutta 5 4
९१९ **गृहस्थलक्षणम्**—भाषाटीकासहित । हरिद्वार ० १ ०
९२० **गोत्रप्रवरनिबन्धकदम्ब**— मुम्बई ३ ० ०
९२१ **गोत्रावली**— काशी ० १ ०
९२२ **गौतमधर्मसूत्रम्**—मस्करीयभाष्यसहितम् । मद्रास ३ ८ ०
९२३ **गौतमप्रणीतधर्मसूत्राणि**—हरदत्तकृतमिताक्षराटीकासमेतानि ।
पूना २ ८ ०
९२४ **चतुर्वर्गचिन्तामणिः—दानखंड** । २ भाग । बनारस ७ ० ०
९२५ **चतुर्वर्गचिन्तामणिः**—हेमाद्रिविरचित: **परिशेषखण्डः** ।
कलकत्ता २१ १२ ०
९२६ **चतुर्वर्गचिन्तामणिः—व्रतखण्डः** (अपूर्ण)। कलकत्ता १६ ८ ०
९२७ **चतुर्वर्गचिन्तामणिः—प्रायश्चित्तखण्डः** । कलकत्ता ६ ० ०
९२८ **चतुर्वर्गचिन्तामणिः**—हेमाद्रिरचितः । सम्पूर्ण । सुन्दर जिल्दों सहित। दुष्प्राप्य । कलकत्ता २५० ० ०
९२९ **चतुर्विंशतिमतसंग्रहः**—श्रीभट्टोजिदीक्षितसंकलितः । २ खण्डौ ।
बनारस ३ ० ०
९३० **चातुर्वर्ण्यशिक्षा**—पं० दुर्गाप्रसादविरचितः । लखनऊ ३ ० ०
९३१ **छूत और अछूत**—२ भाग । औंध १ १२ ०

९३२ अब्धिनौमीमांसा—(अर्थात् विलायतयात्रा) इस ग्रन्थ में समुद्रयात्रा का निर्णय अर्थात् वर्तमान दशा में समुद्रयात्रा शास्त्रसंम्मत है या नहीं इसका निर्णय श्रुति स्मृति धर्मशास्त्र ग्रन्थों से भले प्रकार किया गया है । सजिल्द । मुम्बई १ ४ ०

९३३ जयसिंहकल्पद्रुम—मूलमात्र । जयपुरमहाराज "श्रीजयसिंह जी" की आज्ञानुसार सम्राट् पौराडरीकयाजी "श्रीरत्नाकरदीक्षित जी" ने निर्माण किया है । निर्णयसिन्धु आदि धर्मशास्त्र ग्रन्थों में तो निर्णय होने पर भी सन्देह ही रहता है । और इसमें तो हेमाद्रि, मदनरत्न, माधवीय, विष्णुधर्मोत्तर, दीपिका, गृह्यपरिशिष्ट, ब्रह्मसिद्धान्त, निर्णयामृत, वसिष्ठ-सिद्धान्त, स्मृतिसंग्रह, मत्स्यपुराण आदि ग्रन्थों के प्रमाणों से और वृद्धवसिष्ठ, वसिष्ठ, विश्वामित्र, पराशर, गौतम, मरीचि, शातातप, गार्ग्य, देवल, शाट्यायनि, कार्ष्णाजिनि, शंख, लिखित, आदि महर्षियों के वाक्यों से निर्णय स्पष्टतया किया गया है । सजिल्द । मुम्बई ८ ० ०

९३४ जातिनिर्णय—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई ० १० ०

९३५ जातिभास्कर—विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्रकृत भाषाटीकासहित । श्रुति, स्मृति और पुराणों से गोत्रप्रवरादि संग्रह कर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि जातियों का सर्वाङ्ग सुन्दर वर्णन है । सजिल्द । मुम्बई ५ ० ०

९३६ ताजिरातहिन्द—हिन्दुस्तान का दराडसंग्रह। सजिल्द। मुम्बई २ ८ ०

९३७ तिथिनिर्णयः—मूल । मुम्बई ० २ ०

९३८ त्रिंशच्छ्लोकी—सटीक (नागेशभट्टकृत सूतक और मृतक का निर्णय) मुम्बई ० १२ ०

९३९ त्रिंशच्छ्लोकी—भट्टरघुनाथनिर्मितविवृतिसहिता । पूना २ १५ ०

९४० त्रिंशीग्रन्थ—भाषाटीका समेत । इसमें सूतक पातक इत्यादि का निर्णय श्री पं० बोपदेव जी ने दर्शाया है । मुम्बई ० ४ ०

९४१ त्रैवर्णिकसंन्यास का सार—स्वा० कैलाशपर्वतविरचित मुम्बई ० १० ०

९४२ दराडविवेकः—श्री वर्धमानकृतः । बड़ोदा ८ ८ ०

९४३ दत्तकनिर्णयामृतम्—अयं च धर्मशास्त्रीयप्रबन्धः काव्यतीर्थमीमांसकश्रीधर-शर्मणा प्रणीतः । मुम्बई १ २ ०

९४४ दत्तकमीमांसा—पदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणधर्माधिकारिनन्दपरािडतविरचिता । बनारस ० १२ ०

९४५ दानखराडम्—चतुर्वर्गचिन्तामणेः २ भागौ । बनारस ७ ० ०

९४६ दानचन्द्रिका— मुम्बई ० १० ०

९४७ दानदीपिका—हिन्दी भाषाटीका सहित । काशी ० ८ ०

९४८ दानमयूखः—नीलकंठभट्टकृतः । मुम्बई २) काशी १ ८ ०

९४९ दानसंग्रहः—मूल । मुम्बई २ ० ०

950 Dayatattva of Raghu-Nandan. Translated into English by Golap Chandra Sarkar Sastri

९५१ दायभाग (जीमूतवाहन)—श्रीकृष्णतर्कालङ्कार कृत संस्कृत व्याख्या सहित। कलकत्ता २ ० ०

९५२ धर्मतत्त्वनिर्णय—महामहोपाध्याय अभ्यंकरोपाह्व वासुदेवकृत। पूना ० ६ ०

तथा धर्मतत्त्वनिर्णय परिशिष्ट ० १३ ०

९५३ द्रव्यशुद्धिः—श्रीपुरुषोत्तमजी महाराजकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई १ ८ ०

९५४ धर्मकर्मदीपिका—भाषाटीका। काशी ० ८ ०

९५५ धर्मकर्मरहस्य— प्रयाग ० १२ ०

९५६ धर्मकोशः—व्यवहारकाण्डम्। पूर्वार्धः-व्यवहारमातृका। (प्रथमभागस्य प्रथमखण्डः)। १६). उत्तरार्धः (प्रथमभागस्य द्वितीयः खण्डः)। सितारा २० ० ०

[सम्प्रत्युपलभ्यमानसर्वश्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासादीन् तद्व्याख्यानानि निबन्धग्रन्थांश्च संङ्गृह्य तेषु प्रतिपादिता दण्डनीति(व्यवहार)–वर्णाश्रमधर्म-पौराणिकागमिकधर्म-प्रायश्चित्त-शान्ति-पारमार्थिकधर्म-श्रौतधर्मा अस्मिन् 'धर्मकोशे' समुपनिबद्धा भविष्यन्ति। विद्वद्भिरवश्यं सङ्ग्राह्योऽयं ग्रन्थः।]

Dharma Kośa—Vol. I. Part I—Vyavahāra-Kāṇḍam—Vyavahāra-Mātṛkā. Rs. 16/-. Part II. Satara 20 0 0

[The Dharmakośa collection will prove of inestimable value to students and scholars interested in the history of Hindu Religion, Hindu Sociology, Hindu Jurisprudence, Ethics and Hindu Theology. On the above-mentioned subjects, the collection gives subjectwise, all what is embodied in the Śruti, Smṛti, Nirukta, Kalpa-sūtras, Mahābhārata, Rāmāyaṇa, Kauṭilya Arthashāstra, Śukranīti, Purāṇas, etc.; etc. The work will be published in 6 vols. 1–Daṇḍanīti (Vyavahāra), 2–Varṇāśramadharma, 3–Pauranic and Āgamic Dharma, 4–Prāyaśchitta and Shānti, 5–Pāramārthika Dharma, 6–Shrauta Dharma. No other work of the kind, so exhaustive, has ever been published before. It will be much helpful to the Research scholars also, who wish to make researches in the aforesaid branches of Hindu Culture.]

९५७ धर्मप्रचारः—भाषाटीकासहितः। मुम्बई ० २ ०

९५८ धर्मप्रदीपः—प्रमाणजातितत्त्व-शुद्धितत्त्व-विवाहप्रकाशात्मकः। म० म० श्री-अनन्तकृष्णशास्त्रि-म० म० श्रीसीतारामशास्त्रि-श्री-श्रीजीवभट्टाचार्य्यैः सम्पादितः। कलकत्ता ५ ० ०

[It deals with the present social problems of the Hindus]

९५९ धर्मप्रदीप—सप्रमाण बारह मासों के तिथ्यादिनिर्णय । मुंबई १ ४ ०

९६० धर्मप्रवृत्तिः—श्रीनारायणभट्टविरचिता । मूलमात्र । खुले पत्रे । बेलगाम २ ० ०

९६१ धर्मराज का लेख—संस्कृत । मुम्बई ० १२ ०

९६२ धर्मशास्त्रसंग्रह—इसमें नीचे लिखे धर्मशास्त्र हैं—(१) लघुअत्रिसंहिता (२) अत्रिसंहिता (३) वृद्धात्रिसंहिता (४) विष्णुस्मृति (५) लघुहारीत (६) वृहद्धारीत (७) याज्ञवल्क्यस्मृति (८) औशनसधर्मशास्त्र (९) औशनसस्मृति (१०) आंगिरसस्मृति (११) यमस्मृति (१२) आपस्तम्बस्मृति (१३) संवर्तस्मृति (१४) कात्यायनस्मृति (१५) वृहस्पतिस्मृति (१६) पराशरसंहिता (१७) वृहत्पराशरसंहिता (१८) लघुव्याससंहिता (१९) व्याससंहिता (२०) शंखसंहिता (२१) लिखितसंहिता (२२) दक्षसंहिता (२३) गौतमसंहिता (२४) शातातपसंहिता (२५) वसिष्ठसंहिता (२६) वृद्धगौतमसंहिता । कलकत्ता ११ ० ०

९६३ धर्मशास्त्रसंग्रह—बाबू साधुचरणप्रसादकृतभाषाटीकासहित । इसमें ५९ स्मृतियों के प्रमाण वचनों का संग्रह है । प्रामाणिक टिप्पणियों सहित विलायती जिल्द । मुम्बई १० ० ०

९६४ धर्मसखा-पुस्तकमाला—इसमें स्नानविधि, भोजनविधि, शयनविधि, व्यवहारविधि, आशौचविधि लिखी हैं । हनुमान् शर्मा द्वारा संगृहीत । यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ को संग्राह्य है । ० ६ ०

९६५ धर्मसिन्धुः—विद्वद्वर्यकाशीनाथोपाध्यायविरचितः मूलमात्रः । श्रीवासुदेवशर्मणा संशोधितः परिष्कृतश्च । मुम्बई २ ८ ०

९६६ धर्मसिन्धुः—श्रीयुत पं० मिहिरचन्द्रजीकृत भाषाटीकासमेत । इसके ३ परिच्छेद हैं और संक्रान्ति, मास, तिथि आदि का सामान्य निर्णय, चैत्रादि बारहों मासों में आने वाली तिथियों के व्रतादि का निर्णय, गर्भाधानादि सोलह संस्कारों का विधान आदि देवप्रतिष्ठादि श्राद्धविचार आशौचनिर्णय आदि कहा गया है । सजिल्द ७ ० ०

९६७ धर्मानुबन्धिश्लोकचतुर्दशी— काशी १ ० ०

९६८ नारदीयमनुसंहिता—भवस्वामिकृतभाष्योपेता । मद्रास २ ० ०

969 Nāradīya Dharma Shāstra (नारदीय धर्मशास्त्र)—Or the Institutes of Nārada translated into English from the unpublished Sanskrit original by Dr. Julius Jolly with a preface, notes chiefly critical, an index of quotations from Nārada in the principal Indian digests, and a general index. Foreign 8 0 0

९७० नित्याचारदर्पण— पुष्कर ० ६ ०

971 Nityachara Paddhati (नित्याचारपद्धति) - By Vidyakara Vajpeyi (विद्याकरवाजपेयिकृत). Edited by Pt. Vinod Vihari Bhattacharya. Calcutta 5 4 0

९७२ नित्याचारप्रदीपः—प्रथम १२ खण्ड। अपूर्ण। कलकत्ता ६ १२ ०

९७३ श्रीनिम्बार्कव्रतनिर्णय—भाषाटीकासहित। मुम्बई १ ४ ०

९७४ निर्णयसिन्धुः—मूल। लखनऊ २ ० ०

९७५ निर्णयसिन्धुः—श्रीकमलाकरभट्टप्रणीतः। श्रीवासुदेवशर्मणा संस्कृत्य टिप्पण्यादिभिः परिष्कृतः। मुम्बई २ १२ ०

९७६ निर्णयसिन्धुः—मूलमात्र। टिप्पणीसहित। अत्युत्तम ग्लेज कागज। मुम्बई २ ८ ०

९७७ निर्णयसिन्धुः—कृष्णभट्टकृतसंस्कृतव्याख्यासहितः। २२ खंडाः। सम्पूर्णः। काशी २२ ० ०

९७८ निर्णयसिन्धुः—महामहोपाध्याय पं० मिहिरचन्दजीकृत भाषाटीकासहित। लखनऊ ६ ० ०

९७९ निर्णयसिन्धुः—विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्रकृत सरल सुबोध भाषाटीकासहित। इसमें तिथि, व्रत, व्रतों का उद्यापन इत्यादि का निर्णय भली भांति लिखा गया है। मुम्बई ८ ० ०

९८० निर्णयामृतम्—मूलमात्र। इसमें बारहों मासों के तिथि, व्रत, श्राद्धादि का निर्णय है। मुम्बई २ ० ०

९८१ निर्णयार्णव—श्रीभल्लालूभट्टोपनामक दीक्षित श्रीबालकृष्ण भट्टप्रणीत। मुम्बई ० ४ ०

९८२ नीतिमयूखः—नीलकंठभट्टकृतः। मुम्बई १ ४ ०

९८३ नीतिमयूखः—(भट्टनीलकंठकृतभगवन्तभास्करे)। जगन्नाथरघुनाथघारपुरे, बी० ए०, एल्-एल्० बी०, मुम्बईविश्वविद्यालयसदस्यः पुण्यपत्तनस्थव्यवहाराश्रमे मुख्याध्यापकः इत्यनेन संशोधितः। मुम्बई २ ४ ०

९८४ नृसिंहप्रसादतीर्थसारः—श्री-दलपतिमहाराजविरचितः। अस्मिन् प्रकरणे सेतुबन्धरामेश्वरादीनि दक्षिणदेशस्थानि तीर्थानि केवलं पुराणवचनोद्धरणेन वर्णितानि। काशी १ ८ ०

९८५ नृसिंहप्रसादप्रायश्चित्तसारः—दलपतिराजकृतः। काशी ३ ४ ०

९८६ नृसिंहप्रसादव्यवहारसारः—दलपतिराजकृतः। काशी ४ ० ०

९८७ पराशरविशिष्टपरमधर्मशास्त्रम्— मुम्बई ० ६ ०

९८८ पराशरविशिष्टपरमधर्मशास्त्रम्—भाषा। काशी ० १४ ०

९८९ पाराशरस्मृतिः—माधवाचार्यकृतटीकासहिता। अपूर्णा। १२ खंड। कलकत्ता १२ ० ०

990 Parāśara's Dharma Saṃhitā—With the Commentary of Sāyaṇa-Mādhavācārya, ed. by Vaman Shastri Islampurkar.

Vol. II, 2 parts. Poona 9 0 0

Vol. III, 2 parts. Poona 9 8 0

९९१ पाराशरस्मृतिः—पण्डितश्रीविनायकधर्माधिकारिकृतविद्वन्मनोहराख्यव्याख्यया सहिता। बनारस ३ ८ ०

९९२ पाराशरस्मृतिः—पं०श्रीगुरुप्रसादशर्मकृतहिन्दीटीकासहिता। बनारस ० ८ ०

९९३ पाराशरस्मृतिः—भाषाटीका समेत। मुम्बई ० ८ ०

९९४ पराशरस्मृति—भाषाटीकासहित। इटावा ० ८ ०

९९५ पराशरस्मृति—भाषानुवादसहित। मुरादाबाद ० १२ ०

९९६ पाराशरस्मृतिः—भाषाटीकासहित। कपड़े की जिल्द। बनारस ० १० ०

९९७ संक्षिप्तपाराशरस्मृति—भाषा। प्रयाग ० ४ ०

998 Parashara Smriti—English translation by Krishna Kamala Bhattacharya. Complete. Calcutta 1 0 0

९९९ लघुपाराशरी—भाषा टीका सहित। लीथो टाईप। लाहौर ० ४ ०

१००० परिणयमीमांसा— ० १२ ०

१००१ पापोत्पत्तिकथनम्—भाषाटीकासहित। हरिद्वार ० १ ०

१००२ पुरुषार्थचिन्तामणिः—श्रीमद्रामकृष्णभट्टसूनुविष्णुभट्टकृतः। मुम्बई २ ८ ०

१००३ पुरुषार्थचिन्तामणिः—विष्णुभट्टकृत। स्थूलाक्षर। मूल। पूना ४ ० ०

१००४ प्रतिष्ठामयूखः—श्रीनीलकंठभट्टकृतः। मुम्बई ० ८ ०

१००५ प्रतिष्ठामयूखः—(भट्टनीलकंठकृतभगवन्तभास्करे) श्रीजगन्नाथरघुनाथघारपुरेद्वारा संशोधित। मुम्बई १ २ ०

१००६ प्रपञ्चसारविवेकः—इस जन्म में मनुष्य के अवश्य कर्त्तव्य कर्म का निर्णय भले प्रकार किया गया है। १ ० ०

१००७ प्रपञ्चहृदय— मद्रास १ ० ०

१००८ प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्णविरचिता। मुम्बई ० ६ ०

१००९ प्राच्यशिक्षारहस्य—पं० हरिदत्तशास्त्रिकृत। लखनऊ ० १२ ०

१०१० प्रायश्चित्तकदम्ब—धर्मशास्त्र। बनारस १ ० ०

१०११ प्रायश्चित्तनिर्णयः—अग्निपुराणोक्तः। ० २ ०

१०१२ प्रायश्चित्तप्रकरणम्—बालवलभीभुजङ्गापरनामभट्टभवदेवेन प्रणीतम्। राजशाही २ ० ०

१०१३ प्रायश्चित्तप्रकाशः—चतुर्थीलालशर्मणा विरचितः। मुम्बई १ ० ०
१०१४ प्रायश्चित्तमयूखः—विशुद्धिमयूखः, शान्तिमयूखः मु० २ ८ ०
१०१५ प्रायश्चित्तमयूखः—(भट्टनीलकंठकृतभगवन्तभास्करे)। श्री जगन्नाथ-रघुनाथघारपुरेद्वारा संशोधित। मुम्बई ३ ६ ०
१०१६ प्रायश्चित्तविवेकः—शूलपाणिकृतः। गोविन्दानन्दकृतसंस्कृतटीकासहितः। कलकत्ता ३ ० ०
१०१७ प्रायश्चित्तव्यवस्थासारसमुच्चय— बनारस १ ४ ०
१०१८ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरः तथा कुण्डार्कः—सटीकः। पूना १ १० ०
१०१९ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरः—इसमें नानाविध प्रायश्चित्तों का निर्णय है। खुला पत्रा। ० १२ ०
१०२० बहुविवाहवादः—तर्कवाचस्पतिकृतः। कलकत्ता ० ४ ०
१०२१ बालम्भट्टी—'लक्ष्मी'-इत्यपरनाम्नी मिताक्षराव्याख्या। स्वपत्नीलक्ष्मीदेवीनाम्नी-स्मृतिप्रतिष्ठापिका बालम्भट्टपायगुण्डेन विरचिता। अपूर्णा। ३ खंडाः। कलकत्ता २ ४ ०

1022 बालम्भट्टी—A commentary on the मिताक्षरा by Balambhatta Pāygunde of Benares. List of contents, Index and an exhaustive preface by Babu Govind Das. Bombay 24 12 0

१०२३ बृहत्पाराशरीस्मृति—श्री पं० सूर्यप्रसादकृत भाषानुवाद सहित। मुम्बई ४ ० ०
१०२४ बृहस्पतिसंहिता—भाषाटीका। हरिद्वार ० ३ ०

1025 Dharma Shastra of Brihaspati (बृहस्पति)—A description of the doctrine of the documents. Edited by A. A. Fuhrer with text, notes and introduction. Germany 5 0 0

१०२६ बौधायनधर्मसूत्रम्—मूलमात्र। टिप्पणी तथा शब्दसूचीसहित। विलायत १४ ० ०

Baudhāyana Dharma Sūtra—Edited with critical notes, appendix and an index of words by E. Hultzsch, Ph. D. Foreign 14 0 0

१०२७ बौधायनधर्मसूत्रम्—श्रीगोविन्दस्वामिप्रणीतविवरणसमेतम्। काशी ४ ० ०
१०२८ बौधायनधर्मसूत्रम्—श्रीगोविन्दस्वामिप्रणीतविवरणसमेतम्। दुष्प्राप्य। मद्रास ८ ० ०
१०२९ ब्राह्मणवर्णव्यवस्था—सटीक। पं० जगन्नाथतिवारीद्वारासंशोधित। प्रयाग ० ४ ०

१०३० ब्राह्मणसर्वस्व—हलायुधकृत। यजुःशाखा वालों के संस्कारों के मन्त्रों का अर्थ दिखाता है। काशी २ ० ०

१०३१ ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड—भाषाटीकासमेत (बृहज्ज्योतिषार्णवान्तर्गतषष्ठमिश्रस्कन्धोक्त) इसमें पञ्चगौड तथा पञ्चद्राविड प्रायः सभी ब्राह्मणों की उत्पत्ति तथा गोत्र, प्रवर, शाखा आदि का विवरण और भाटिया, क्षत्रिय, अग्रवाल, वैश्य और इसके बाद वर्णसंकर जातियों का भी वर्णन भली भांति किया गया है। सजिल्द। मुम्बई ५ ० ०

१०३२ भगवन्तभास्कर—नीलकण्ठभट्टकृत। इसमें वर्ष भर के व्रतों और वैदिक यज्ञों का संस्कृत में सविस्तर वर्णन है। लखनऊ ० १० ०

१०३३ भवाब्धिसेतु—भाषानुवाद समेत। मुम्बई १ ८ ०

१०३४ मदनपारिजात—(मदनपालविरचित) अत्युत्तम टाइप। सम्पूर्ण। दुष्प्राप्य। कलकत्ता ३० ० ०

१०३५ श्रीमधुसूदनसंहिता—मूलमात्र जिसमें भारतोत्कर्ष, सदाचार, वर्णाश्रमधर्म, नरधर्मवर्णन किया गया है। मुम्बई २ ० ०

१०३६ मनुस्मृति—मूल। हरिद्वार ० १२ ०

१०३७ मानवधर्मशास्त्र (मनुस्मृति)—मेधातिथि, सर्वज्ञनारायण, कुल्लूक, राघवनन्दन, रामचन्द्र, भट्टगोविन्दराज, इन सातों की बनाई सात टीकाओं सहित। ३ भाग। दुष्प्राप्य। मुम्बई ३० ० ०

१०३८ मानवधर्मशास्त्र—भृगुप्रोक्तमूलमात्र सुन्दरसजिल्द। विलायत १२ ० ०

१०३९ मनुस्मृति—कुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीटीकासहिता। अन्ते श्लोकानां वर्णानुक्रमणिकया च सहिता। मुम्बई २ ४ ०

१०४० मनुस्मृतिः—श्रीकुल्लूकभट्टप्रणीतया मन्वर्थमुक्तावल्या क्षेपकपरिशिष्टश्लोकैरकारादिकोशेन च सहिता। बनारस २ ४ ०

१०४१ मनुस्मृतिः—कुल्लूकभट्टकृतटीकया सहिता। ग्रन्थान्तरेषु मनुनाम्नोल्लिखितैरिदानीन्तनमनुस्मृतिपुस्तकेष्वनुपलभ्यमानैः श्लोकैश्च सहिता, पद्यानां वर्णानुक्रमकोशेन, विषयानुक्रमेण च सहिता सूक्ष्मेक्षिकया संशोधिता च। मुम्बई २ ४ ०

१०४२ मनुस्मृतिः—मेधातिथिरचितमनुभाष्यसमेता। प्रथमो भागः। कलकत्ता ६ ० ०

1043 Manutīkāsangraha (मनुटीकासंग्रह)—By Dr. J. Jolly, Ph. D., 3 fasc. Calcutta 3 0 0

१०४४ मनुस्मृति—सान्वय। भाषाटीका सहित। इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के यथोचित धर्म तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के कर्म तथा राजाओं के नीतियुक्त प्रजापालन और अधर्मियों के दण्ड आदि का निर्णय, आशौच निर्णय आदि अनेक विषय समाविष्ट हैं। ग्लेज कागज। सजिल्द। मुम्बई ३ ० ०

१०४५ मनुस्मृति—भाषाटीका सहित सजिल्द। काशी १ ४ ०

१०४६ **मनुस्मृतिः**—पं० राजारामकृत भाषाटीकासहित। लाहौर ३ ४ ०

१०४७ **मनुस्मृति**—महामहोपाध्याय पं० मिहिरचन्द्रकृत "मन्वर्थभास्कर" नामक भाषा भाष्य सहित। लखनऊ ५ ० ०

१०४८ **मनुस्मृति**—पं० गिरिजाप्रसाद द्विवेदीकृत भाषानुवादसहित। लखनऊ २ ० ०

१०४९ **मनुस्मृति**—रामेश्वरभट्टकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई १ १२ ०

१०५० **मनुस्मृति**—श्री० कु० रामस्वरूपशर्मा कृत हिन्दी भाषानुवाद सहित तथा टिप्पणियों से अलंकृत। मुरादाबाद १ १२ ०

१०५१ **मानवधर्मसार**—मनुस्मृति के बारह अध्यायों का सार। श्री महात्मा हंसराज जी द्वारा संगृहीत और पं० सन्तराम शर्मा वैद्य द्वारा अनुवादित। लाहौर ० ८ ०

१०५२ **संक्षिप्तमनुस्मृति**— प्रयाग ० ५ ०

१०५३ **सनातनमानवधर्म**—मनुस्मृति का सार। मुम्बई ० २ ०

1054 Manu smriti or the Laws of Manu—Translated into English with extracts from seven commentaries, by George Buhler. 15 12 0

1055 Manu Smriti—with the Manu Bhāṣya of Medhātithi, translated into English by Mahamahopadhyaya Ganganath Jha, M. A., D. Litt., Vice-Chancellor, Allahabad University.

Vol. I, Part I—Comprising Discourse I and 28 verses of Discourse II. Royal 8vo pp. 266 6 0 0

Vol. I, Part II—Comprising verses XXIX to end of Discourse II. Royal 8vo pp. 290. 1921. 6 0 0

Vol. II, Part I—Comprising the whole of Discourse III. Royal 8vo. pp. 304. 1921. 6 0 0

Vol. II, Part II—Comprising Discourse IV. Royal 8vo pp. 208. Rs. 6. Index to Vols. I and II. Royal 8vo pp. 148. 1 8 0

Vol. III, Part I—Comprising Discourse V and VI. Royal 8vo pp. 278. 1922. 6 0 0

Vol. III, Part II—Comprising Discourse VII and the Index to the whole of Vol. III. Royal 8vo pp. 206. 1924. 7 0 0

Vol. IV, Part I—Comprising a portion of Discourse VIII. Royal 8vo pp. 252. 1925. 8 0 0

Vol. IV, Part II—Comprising Discourse VIII and Index to Vol. IV. Royal 8vo pp. 238. 7 8 0

Vol. V—Comprising Discourses IX-XII. Royal 8vo pp. 790. 1926. 12 8 0

Notes, Part I—Textual—By the same author. Royal 8vo pp. 569. 1925. 12 0 0

Part II—Explanatory—By the same author. Royal 8vo pp. 870. 1925. 15 0 0

Part III—Comparative—By the same author. Royal 8vo pp. 937. 15 0 0

Whole set (including Notes). 50 0 0

१०५६ **मन्त्रराजप्रभाकर**—२ भाग। इसमें श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराणादि प्रमाण तथा महात्माओं के वचन, एवं विविध युक्तियों से ऐहलौकिक पारलौकिक सुखविधायक धर्म निरूपण पूर्वक राममंत्र का महत्त्व सिद्ध किया गया है। मुम्बई १ ४ ०

१०५७ **महाभारततात्पर्यप्रकाशः**— बनारस २ ४ ०

१०५८ **मातृकाविलास**—इसमें अकार से लेकर सब अक्षर मात्राओं का अर्थ और उनसे विस्तार पाकर बने हुए अनेक प्रकार के वाणीमय सर्व मन्त्रशास्त्र व्याकरणशास्त्र, संगीत-शास्त्र, धनुर्वेदशास्त्र, युद्धवर्णनादि अनेकानेक शास्त्रों के स्वरूप भली भांति वर्णित हैं। सजिल्द। मुम्बई २ ० ०

१०५९ **मोक्षधर्मसारोद्धारः**— बनारस ० १ ६

१०६० **यतिधर्मसंग्रह**—विश्वेश्वरसरस्वतीकृत। पूना १ १२ ०

१०६१ **यतिलिङ्गसमर्थनम्**— काञ्चीवरम् ० ५ ०

१०६२ **यमसंहिता**—पं० हरिशंकरशास्त्रीकृत भाषाटीकासहित। हरिद्वार ० ५ ०

१०६३ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**—मिताक्षरा नाम की व्याख्या सहित। मु० २ ८ ०

१०६४ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**—श्रीविश्वरूपाचार्यकृत बालक्रीड़ा व्याख्या समेत। २ भाग। मद्रास ५ ४ ०

१०६५ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**—श्रीविज्ञानेश्वरप्रणीतमिताक्षराटीकया समेता। Edited by J. R. Gharpure B. A. पूना ६ ० ०

१०६६ **याज्ञवल्क्यस्मृति**—मिताक्षरा-विश्वरूप-सुबोधिनी-बालंभट्टीव्याख्यासहिता। Edited by S. S. Setlur, B. A., LL. B. Madras 10 0

१०६७ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**—श्रीमन्मित्रमिश्रविरचितया वीरमित्रोदयाख्यटीकया श्रीविज्ञानेश्वरकृतमिताक्षराटीकया च सहिता। ११ खंड। सम्पूर्ण। बनारस ७ ० ०

१०६८ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**—अपरार्ककृतटीकासहित। २भाग। पूना १३ ० ०

१०६९ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**—बालम्भट्टीसमाख्यव्याख्यासमलंकृतमिताक्षरासहिता। व्यवहाराध्यायः (११ खंडों में सम्पूर्ण)। बनारस १६ ८ ०

१०७० याज्ञवल्क्यस्मृतिः—पं० मिहिरचन्द्रकृत मिताक्षरा नाम पद योजना भावार्थ और तात्पर्यार्थ टिप्पणी तथा भाषा टीका सहित। इसमें आचाराध्याय, व्यवहाराध्याय, प्रायश्चित्ताध्याय इन तीन अध्यायों में राजाओं के नीतियुक्त प्रजापालन करने के धर्म और अधर्मियों को दण्ड देने और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के और ब्रह्मचर्यादि चारों आश्रमों के धर्म तथा व्रतादिकों के धर्म इत्यादि अनेक विषय हैं। सजिल्द। मुम्बई ६ ० ०

१०७१ याज्ञवल्क्यस्मृति—पं० भीमसेन शर्मा कृत भाषाटीकासहित। सजिल्द। इटावा १ ६ ०

१०७२ याज्ञवल्क्यस्मृति—पं० गिरिजाप्रसाद जी द्विवेदी कृत भाषाटीकासहित। लखनऊ ० १२ ०

१०७३ याज्ञवल्क्यस्मृतिसार—भाषा। प्रयाग ० ५ ०

1074 Die Yajnavalkya Smriti—Ein bietrag Zur Quellen Kunde des indischen rechets. By Hans Losch. Foreign. 12 0 0

1075 Yajnavalkya Smriti—आचाराध्याय with the commentary मिताक्षरा & notes from the Gloss of Balambhatti translated into English by R. B. Srisha Chandra. Allahabad. 14 0 0

1076 Yājñavalkya Smriti, part II (Dāyabhāga, Inheritance):—Contains Vyavahāra Adhyāya fasciculus I (chapter I, section I to VI, śloka 121) with the commentary of Mitākṣara and notes from the Gloss of Balambhatti ; English translation with text by Pt. Mohan Lall Sandal, M. A., LL. B. 3 0 0

1077 Yājñavalkya Smriti—प्रायश्चित्ताध्यायः, with the commentary मिताक्षरा translated into English by Samara Narsingha. Allahabad. 10 0 0

1078 Yajnavalkya Samhita Ācharādhyāya—Edited by Dinesh Chandra Bhattacharya, M. A. with notes and Translation in English. Calcutta 3 0 0

१०७९ रणवीरकारितधर्मशास्त्रमहानिबन्धः। प्रायश्चित्तभागः—अस्मिन् पुस्तके ५ पंच भागाः २१ एकविंशतिः प्रकरणानि, मूलपाठश्चास्य ४०,००० चत्वारिंशत्सहस्राणि पृष्ठसंख्या १३६६ षट्षष्ट्युत्तरत्रयोदशशतं परिमाणं १३-३० त्रयोदश त्रिंशत्। भाषाटीका संवलितश्चैष ग्रन्थः। दुष्प्राप्यः। काश्मीर ४० ०

१०८० रणवीरव्रतरत्नाकर—३ भाग। सजिल्द। दुष्प्राप्य। काश्मीर ५० ०

१०८१ राजधर्मकौस्तुभः—श्रीमदनन्तदेवविरचितः। With a foreword by B. Bhattacharya and introduction by Bhabatosh Bhattacharya. Edited by the late M. M. Kamala Krishna Smrititirtha. Baroda 10 0 0

१०८२ लघुत्रिस्थलीसेतुः— काशी. ० ४ ०

१०८३ वर्णविवेकचन्द्रिका— मुम्बई ० २ ०

१०८४ वर्षक्रियाकौमुदी—कविकंकणाचार्य श्री गोविन्दानन्दविरचिता।

कलकत्ता ५ ४ ०

१०८५ वसिष्ठधर्मशास्त्र— मुम्बई १ ० ०

Vasiṣṭha Dharmaśāstra—Edited with notes by Dr. A. A. Fuhrer. 1 0 0

१०८६ विधवा कर्त्तव्य—श्री सूर्यभानु जी वकीलकृत। भाषा। ० ८ ०

१०८७ विधवाधर्ममीमांसा—अर्थात् धर्मशास्त्रानुसार वैधव्य अवस्था के आचार विचारों का वर्णन। लेखक पं० भीमसेनशर्मा। इटावा ० ० ६

१०८८ विधवाविवाहमीमांसा—पं० भीमसेन जी कृत। इटावा ० ६ ०

१०८९ विधवाविवाहमीमांसा— प्रयाग ० ०

१०९० विधान पारिजात—स्मृतिनिबन्ध काण्वशाखीय श्री नागदेवभट्टात्मज श्रीमदनन्तभट्ट विरचित। अपूर्ण। कलकत्ता १५ ० ०

१०९१ विवादचन्द्रः (सटीकः)—म० म० मिसूमिश्रकृत। पटना २ ० ०

१०९२ विवादचिन्तामणि—इस ग्रन्थ में व्यवहारादि विषय भली भाँति लिखे गए हैं। मुम्बई १ ८ ०

१०९३ विवादरत्नाकर—ठाकुर श्रीचण्डेश्वर विरचित सम्पूर्ण। कलकत्ता ६ ० ०

१०९४ विवादार्णवसेतुः—इस ग्रन्थ में ऋणादान, निक्षेप, अस्वामिविक्रय, सम्पूर्ण-समुत्थान, वेतनादान, संविद्व्यातिक्रम, क्रयविक्रयानुशय, स्वामिपालविवद, सीमाविवाद, दण्ड-पारुष्य, वाक्पारुष्य, स्तेयसाहस, स्त्रीसंग्रह, स्त्रीपुंधर्मविभाग, द्यूत आह्वयादि विवाद लिखे गए हैं।

मुम्बई २ ८ ०

1095 Institutes of Vishnu—Translated into English by Julius Jolly. A collection of legal aphorisms, closely connected with one of the oldest Vedic Schools, the Kaṭhas, but considerably added to in later times. Of importance for a critical study of Laws of Manu. Foreign 10 0 0

१०९६ वीरमित्रोदयः—महामहोपाध्यायश्रीमित्र मिश्रविरचितः। ५७ खण्डाः।

बनारस ८५ ८ ०

(१) परिभाषाप्रकाशः संस्कारप्रकाशश्च—सम्पूर्णौ। खण्डाः ११ ६ ८ ०

(२) आह्निकप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डाः ६। १ ० ०
(३) पूजाप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डाः ४। ६ ० ०
(४) लक्षणप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डाः ७। १० ८ ०
(५) राजनीतिप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डाः ५। ७ ८ ०
(६) तीर्थप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डाः ६। ९ ० ०
(७) व्यवहारप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डाः ६। ९ ० ०
(८) श्राद्धप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डाः ४। ६ ० ०
(९) समयप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डाः ३। ४ ८ ०
(१०) भक्तिप्रकाशः। सम्पूर्णः। खण्डा २। ३ ० ०
(११) शुद्धिप्रकाशः। ३ खण्डाः। ४ ८ ०
(१२) प्रतिष्ठाप्रकाशः। (यन्त्रस्थ)

१०९७ **वीरमित्रोदयः**—श्रीमित्रमिश्रप्रणीतः (व्यवहाराध्यायः)। कलकत्ता ५ ० ०

१०९८ **वृद्धिदीपिका (धर्मशास्त्रे आशौचकाण्डम्)**—श्रीमत्पर्वतेश्वरशास्त्रिभिर्विरचिता। बनारस ० ३ ०

१०९९ **वैखानसधर्मप्रश्नः**— मद्रास १ ० ०

११०० **वैखानसधर्मप्रश्न तथा प्रवरखण्ड**—Edited by Rangachari. मद्रास ५ ० ०

English translation. 5 0 0

११०१ **वैश्यवर्णधर्ममीमांसा**—इसमें द्विजाति की गायत्री का निर्णय उत्तम प्रकार से किया गया है। मुम्बई ० ४ ०

११०२ **वैश्यसुधारनिबन्धः**— मुम्बई ० ५ ०

११०३ **व्यवहारमयूखः**—नीलकंठभट्टकृतः। Edited by J. R. Gharpure. Poona 4 8 0

English translation and notes 9 0 0

११०४ **व्यवहारमयूखः**—मीमांसकनीलकण्ठभट्टविरचितः। कुनवारशिवनाथसिंहसेंगरेण हिन्दीभाषया श्रीभगवन्तदेवस्य लिखितसंक्षिप्तवृत्तान्तेन सहितः। मुम्बई १ १२ ०

११०५ **व्यवहारमयूख**—नीलंकठविरचितः। With notes by Prof. P. V. Kane, M. A., LL. B. Poona 10 0 0

1106 Vyavahāra-mayūkha of Nīlakaṇṭha—Translated into English with explanatory notes and references to decided cases. By P. V. Kane, M. A., LL. M. and S. G. Patwardhan, B. A., B. Sc., LL. M. Bombay 7 0 0

११०७ **व्यवहारमात्रिक**—ए० मुकर्जी सम्पादित। कलकत्ता

११०८ व्यवहाररत्नम्—श्रीमद्भानुनाथनिर्मितं मूलमात्रम् । खुले पत्रे ।
बनारस ० ८ ०

११०९ व्रत और त्योहार (हिन्दुओं के)— २ ० ०

१११० व्रतोत्सवनिर्णय—भाषा में । काशी ० ३ ०

११११ व्रात्यताप्रायश्चित्तनिर्णयः, तथा व्रात्यता-शुद्धिसंग्रहः । सम्पूर्णः ।
काशी १ ८ ०

1112 Dharmasūtra of Śaṅkha-Likhita (शङ्खलिखित-धर्मसूत्र) [Reconstructed] with brief notes. By P. V. Kane, M. A., LL. M. Poona 1 4 0

१११३ शब्दत्रिवेणिका—श्रीमदाशाधरभट्टविरचिता । मूलमात्र खुले पत्रे ।
मुम्बई ० ८ ०

१११४ शाण्डिल्यविशिष्टधर्मशास्त्रम्—(पञ्चाध्यायात्मकं पाञ्चकालिकपरमैकान्त्या-ह्निकप्रक्रियाप्रतिपादकम्) मुम्बई ० ४ ०

१११५ शाण्डिल्यविशिष्टपरमधर्मशास्त्रम्—भाषा । काशी ० १४ ०

१११६ शाण्डिल्यसंहिता मूल— मुम्बई २ ० ०

१११७ शान्तिमयूख—इसमें सब प्रकार की शान्तियों का निर्णय और क्रिया लिखी है । मुम्बई १ ० ०

१११८ शान्तिमयूखः—जगन्नाथरघुनाथघारपुरे, बी० ए०, एल्-एल्० बी० मुम्बई-विश्वविद्यालयसदस्यः, इत्यनेन संशोधितः । सजिल्द । मुम्बई ३ ६ ०

१११९ शाश्वतधर्मदीपिका—मन्वादिस्मृतिभारतेतिहासेभ्यो महामहोपाध्याय-श्रीगंगाधरशास्त्रिणा संकलिता । बनारस १ ० ०

११२० शास्त्रसारसिद्धान्तमणि—भाषाटीका । सजिल्द । मुम्बई १ ८ ०

११२१ शुद्धिकौमुदी—श्रीगोविन्दानन्द कंकणाचार्यकृत ३ १२ ०

११२२ शुद्धिभास्कर—श्रीपद्मनाभमिश्रभट्टाचार्यविरचितः । काशी ० ८ ०

११२३ शुद्धिमयूखः—जगन्नाथरघुनाथघारपुरे, बी० ए०, एल्-एल्० बी० इत्यनेन संशोधितः । सजिल्द । मुम्बई १ २ ०

११२४ शुद्धिविवेक—इसमें चारों वर्णों का आशौचनिर्णय और अधिकारनिर्णय और देहादिक शुद्धि, भूमि, उदक और रजस्वलादि की शुद्धि का निर्णय है । मुम्बई ० १० ०

११२५ शुद्धिसर्वस्वम्—पं० श्रीराममिश्रशास्त्रिप्रणीतम् । बनारस १ ० ०

११२६ शूद्राचारशिरोमणिः—शेषकृष्णविरचितः । २भागौ । काशी ३ ० ०

११२७ शेषधर्म—हरिवंशान्तर्गत मूलमात्र खुले पत्रे । बेलगाम ० १२ ०

११२८ श्राद्धमयूखः—(भट्टनीलकंठकृतभगवन्तभास्करे) । श्रीजगन्नाथरघुनाथघार-पुरेद्वारा संशोधितः । मुम्बई ३ ६ ०

११२९ श्राद्धमयूखः—नीलकंठभट्टकृतः । मुम्बई १ ४ ०

११३० श्राद्धमयूखः—नीलकंठभट्टविरचितः। खुले पत्रे। १ ० ०

११३१ षडशीतिः—आदित्याचार्यप्रणीता। नन्दपण्डितप्रणीतया शुद्धिचन्द्रिकाख्यया व्याख्यया समलंकृता। सम्पूर्णा। काशी २ ० ०

११३२ संन्यासनिर्णय—सटीक। अष्टविवरणसहित। मुम्बई १ ४ ०

११३३ संस्कारमयूखः—मीमांसकनीलकंठभट्टकृतः। मुम्बई ० १२ ०

११३४ संस्कारमयूखः—(भट्टनीलकण्ठोद्धृतभगवन्तभास्करे) तत्तनय-श्रीशंकरभट्टकृतः। श्रीजगन्नाथरघुनाथघारपुरे द्वारा संशोधितः। पूना ३ ६ ०

११३५ सतीधर्मसंग्रह—श्रीभीमसेनशर्म्मा विरचित। इटावा ० ४ ०

११३६ समयमयूखः—नीलकण्ठभट्टकृतः। विहितकर्मणां कालस्य निर्णायकः। मुम्बई १ ४ ०

११३७ समयमयूखः—(भट्टनीलकण्ठकृतभगवन्तभास्करे)। श्रीजगन्नाथरघुनाथघारपुरेद्वारा संशोधित। मुम्बई ३ ६ ०

११३८ सम्प्रदायप्रदीप—सानुवाद। अनुवादक—कण्ठमणिशास्त्री विशारद। कांकरोली २ ० ०

११३९ सर्वशिरोमणिसिद्धान्तसार—श्रीआनन्दमंगलजी विरचित। भाषा। सजिल्द। मुम्बई २ ० ०

११४० सुबोधिनी (मूलम्)—A Commentary by Viśveśvara Bhatta on the Mitākṣarā of Śrī Vijñāneśvara, Vyavahārādhyāya, with list of contents and Index. Poona 4 0

1141 Subodhini—English translation. Poona 11 4 0

११४२ सूदवंशावली—पं० सन्तरामवर्मविरचित। पञ्जाब ० १० ०

११४३ स्मार्तधर्मेन्दुः—भाषा टीका सहित, षट्त्रिंशत् स्मृतियों के अनुसार इसमें स्मृति धर्म भली भान्ति वर्णित है। मुम्बई ० ८ ०

११४४ स्मार्त्तोल्लासः—पं० शिवप्रसादकृतः। २ भाग। प्रयाग ४ ४ ०

११४५ स्मृतिकौस्तुभः—(श्रीमदनन्तदेवभट्टकृतः)। इसमें संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष और विशिष्ट दिनादिकों का निर्णय बड़ी मार्मिकता से किया गया है और इसमें अनेक व्रतों की पूजा और कथाओं का भी संग्रह है। मुम्बई २ २ ०

११४६ स्मृतिचन्द्रिका—श्रीयाज्ञिकदेवणभट्टोपाध्यायरचिता। ६ भागों में। मद्रास १३ १२ ०

११४७ स्मृतिचन्द्रिका—देवणभट्टकृता। अह्निक-व्यवहार-श्राद्धप्रकरणानि With Indices. Edited by Principal J. R. Gharpure. Poona 13 8 0

११४८ स्मृतिचिन्तामणिः—(वङ्गानुवादसमेतः) कलकत्ता २ ४ ०

११४९ स्मृतितत्त्वम् (स्मृतिशास्त्रम्)—रघुनन्दनभट्टाचार्यकृता (१ तिथितत्त्वं, २ श्राद्ध-

तत्त्वम्, ३ आह्निकतत्त्वं, ४ प्रायश्चित्ततत्त्वं, ५ ज्योतिषतत्त्वं, ६ मलमासतत्त्वं, ७ संस्कारतत्त्वम्, ८ एकादशीतत्त्वम्, ९ उद्वाहतत्त्वं, १० व्रततत्त्वं, ११ दायतत्त्वं, १२ व्यवहारतत्त्वं, १३ शुद्धितत्त्वं, १४ वास्तुयागतत्त्वं, १५ कृत्यतत्त्वं, १६ यजुर्वेदीयश्राद्धतत्त्वं, १७ देवप्रतिष्ठातत्त्वं, १८ जलाशयोत्सर्गतत्त्वं, १९ छन्दोगवृषोत्सर्गतत्त्वं, २० श्रीपुरुषोत्तमतत्त्वं, २१ दिव्यतत्त्वं, २२ मठप्रतिष्ठादितत्त्वं, २३ शूद्रकृत्यविचारणतत्त्वं, २४ यजुर्वेदीयवृषोत्सर्गतत्त्वं, २५ दीक्षातत्त्वं, २६ श्रीदुर्गार्चनपद्धतिः) २ भाग । कलकत्ता १० ० ०

११५० **स्मृतिप्रकाश**—१ खण्ड । अपूर्ण । कलकत्ता ० १२ ०

११५१ **स्मृतिप्रकाश**—जिसमें मनु, पाराशरी, याज्ञवल्क्य, वसिष्ठ, विष्णु, नारद, आपस्तम्ब, बौधायन, गौतमादि स्मृतियों तथा महाभारत, सुश्रुत, निरुक्त आदि के १७२२ श्लोक हिन्दी व उर्दू भाषाओं में टीका सहित दिये गये हैं और ४७६५ श्लोकों का आशय लिखा गया है । राय निहालचन्द्रकृत । सजिल्द । शाहजहानपुर ५ ० ०

११५२ **स्मृतिमुक्ताफलम् (वैद्यनाथदीक्षितीयम्)**—वैद्यनाथदीक्षितकृतम् । प्रथमो भागः—वर्णाश्रमकांडम् ५-) द्वितीयो भागः—आह्निककाण्डम् ५ १ ०

११५३ **स्मृतिरत्नाकरः**—धर्म और अभ्युत्तणादि का सप्रमाण निर्णय है । मुम्बई २ ० ०

११५४ **स्मृतिश्लोकसंग्रहः**—भाषाटीका सहित । संग्रहकर्त्ता उपाध्याय जैनमुनि श्री आत्माराम जी । मालवा ० १० ०

११५५ **स्मृतिसारसमुच्चय**— मुम्बई १ ८ ०

११५६ **स्मृतिसारोद्धारः**—चक्रनारायणीयनिवन्धापरपर्यायः । मध्यपल्ली (मभौल)-नरेशाश्रितविद्वद्वरविश्वम्भरत्रिपाठिसंकलितः । ४ खंडों में सम्पूर्ण । बनारस ६ ० ०

११५७ **स्मृतीनां समुच्चयः**—इसमें २७ स्मृतियां हैं । पूना ५ ० ०

११५८ **स्मृत्यर्थसागर**—माध्वसंप्रदायिधर्मशास्त्र, वैष्णवमात्र को परमोपयोगी है । खुला पत्रा । मुम्बई १ ८ ०

११५९ **स्मृत्यर्थसार**—श्रीधराचार्य विरचित । पूना १ १० ०

११६० **हारलता**—महामहोपाध्यायश्रीमदनिरुद्धभट्टविरचिता । कलकत्ता २ ४ ०

११६१ **हिन्दू त्योहारों का इतिहास**— प्रयाग १ ८ ०

११६२ **हिन्दूपर्वप्रकाश**— प्रयाग ० १० ०

११६३ **हिन्दूविवाह विचार**—निर्णयसिन्धु आदि हिन्दू धर्म के कतिपय ग्रन्थों के भाषान्तरकर्त्ता और सम्पादक मुरादाबादनिवासी व्रजरत्न भट्टाचार्य द्वारा लिखित । मुम्बई ० ४ ०

1164 Alt. Palästinensischer Banernglaube—in religionsvergleichender Belauchtung von Dr. J. Scheftelowitz. Hannover 8 0 0

1165 Ancient Hindu Judicature—by Guru Raja Row. Madras. 2 0 0

1166 Brahmanen and Śudras—by A. Hillebrandt. Foreign 2 0 0

1167 Conduct of Royal Servants—Being a collection of verses from the Vīramitrodaya with their translations in English, Gujrati and Marathi by B. Bhattacharya, M. A., Ph. D. Baroda 0 6 0

1168 Dharma and Life—By K. S. Aiyar. 2 parts. Madras 4 4 0

1169 Ethics of the Hindus, by Susil Kumar Maitra, M. A., Lecturer in Philosophy, Calcutta University, 1925. 4 8 0

1170 Evolution of Hindu Moral Ideals—By Sir Sivaswamy Aiyer. Calcutta 2 8 0

1171 Evolution of Law—By Nares Chandra Sen Gupta. Calcutta 2 8 0

1172 Fictions in the Development of the Hindu Law Texts—An original treatise in Hindu Law and Jurisprudence by C. Sankara Rama Sastri. Madras 4 0 0

1173 Harita Tattva Didhiti—Or a commentary on the religious Vyavasthas of the Hindus. By Harakumara Tagore. Calcutta 9 0 0

1174 Hindu Ethics—Principles of Hindu Religio-social Regeneration. By Babu Govinda Das. With an Introduction by Babu Bhagavan Das. Madras 2 0 0

1175 Hindu Exogamy—By S. V. Karandikar. Bombay 6 0 0

1176 Hindu Feasts, Fasts and Ceremonies—By N. Shastri. Madras 3 12 0

1177 Hindu Holidays and Ceremonials—With dissertations on origin, Folklore and symbols by R. Bahadur B. A. Gupte, F. Z. S. with eighteen illustrations (six in colour) 1919. Bound. Calcutta 6 8 0

1178 Hindn Law—Third edition. By J. R. Gharpure, B. A., LL. B. (Hons.), fellow of the University of Bombay, editor "Collections of Hindu Law Texts." Bombay 10 0 0

1179 Hindu Law in Its Sources—By Dr. Ganga Nath Jha. Patna 2 3 0

1180 Hindu Law of Evidence—By Amareśwara Thakur, M. A., Ph. D. Calcutta 4 0 0

1181 Hindu Manners, Customs and Ceremonies—By the Abbe J. A. Dubois. Translated from the author's Later French Ms. and edited with notes, corrections and biography, by Henry K. Beachamp, C. I. E., Fellow of the University of Madras, Fellow of the Royal Historical Society, member of the Royal Asiatic Society. With a prefatory note by the Right Hon'ble F. Max Muller and a portrait. Foreign 5 10 0

1182 Hindu Philosophy of Law—By Radhabinode Pal, M. A., D. L. 6 0 0

1183 Hindu Religious Year—By M. M. Underhill. Foreign 6 0 0

1184 Hindu View of Life—The Upton Lectures delivered at Oxford, 1926, by Sir S. Radha Krishnan. [Hinduism, as expounded by Professor Radha Krishnan, may be said to illustrate the principles of Manchester College on a scale of which those acquainted only with Western Religion have no knowledge. The lectures are as eloquent as they are profound.] 3 0 0

1185 History of Dharma Shastra—By P. V. Kane, M. A., LL. M. Vol. I, with an index and lists of books and authors on Dharma Shastra. 15 0 0

1186 International Law and Customs in Ancient India—By Pramatha Nath Banerjee, M. A., B. L. Calcutta 4 0 0

1187 Juristic Personality of the Hindu Deities—By S. C. Bagchi LL. D. 1 0 0

११८८ लेखपद्धतिः—A Collection of models of state and private documents, dating from 8th. to 15th. centuries A. D., edited by C. D. Dalal and G. K. Shrigondekar. मुम्बई २ ० ०

1189 Manual of Hindu Ethics—By G. A. Chandavarkar, with an Introduction by Principal Ram Deva.
Poona 1 4 0

1190 Minor Law Books—Translated by Julius Jolly. Part I. Nārada and Brihaspati. Oxford 9 6 0

1191 Origin and Growth of Caste in India—By Nripendra Kumar Dutt, M. A., Ph. D. London 7 8 0

1192 Pleaders in Politics—By B. Surya Narain Rao, B. A., M. R. A. S. Madras 0 10 0

1193 Position of Women in Hindu Law—Thesis approved for the Degree of Doctor of Law in the University of Calcutta, by Dwarka Nath Mitter, M. A., D. L.
Calcutta 12 0 0

1194 Position of Women in Hindu civilization—from prehistoric times to the present day. Benares 6 0 0

1195 Principles of Hindu Ethics—By Magan Lal A. Buch, M. A. Baroda 6 4 0

1196 Sacred Laws of the Aryas—As taught in the schools of Āpastamba, Gautama, Vasiṣṭha and Baudhāyana, translated into English by G. Bühler. Part I.
Foreign 9 6 0

1197 Science of Social Organisation—Interprets the Laws of Manu in the light of Theosophy. By B. Bhagwan Das. 2 Vols. Madras 7 8 0

1198 Seed of Race—An Essay on Indian Education.
Madras 1 0 0

1199 Social Reform on Shastric Lines—By A. Mahadeva Shastri. Madras 0 10 0

1200 Sources of Law and Society in Ancient India—By Naresh Chandra Sen, M. A., D. L., Calcutta [In this book the author traces the sources of Ancient Indian Law with reference to the environments in society and deals with matters regarding legal conceptions historically, initiating a some-what new method, mainly following the

one indicated by Ihering with reference to Roman Law, in the study of problems of Hindu Law.] 1 8 0

1201 South Indian Customs—By P. V. Jagadisha Ayyar, Archaeological Department, Madras. With foreword by R. S. Ramaswamy Shastri, B. A., B. L., Subordinate Judge. [The panorama of India's outer and inner life in all its variety of spiritual charm. The heart-beat of the ancient but eternal India is heard in the author's words which are valuable as a record, an interpretation, a prophecy of India's soul.] 3 0 0

1202 Theory of Adoption (Jogendra Chandra Ghosh Prize, 1909)—By Pt. Durvasulu Sriram Shastri. Calcutta. [It discusses the origin and merits of the theory of adoption in a Hindu Family.] 3 12 0

1203 Vedic Law of Marriage—Or the emancipation of women; written into English by A. Mahadeva Shastri. 1 7 0

1204 Vedic Religion and Caste—Or the Basis of United Humanity in English by A. Mahadeva Shastri 0 8 0

1205 Women in Indian Religions—(Sociology) by Dr. M. Winternitz. Part. I.

Part II. Women in the Brahmans. Foreign 5 0 0

कर्म्मकाण्ड-ग्रन्थाः

१२०६ **अग्निहोत्रचन्द्रिका**—देवत्रातभाष्य तथा गार्ग्यनारायणसंस्कृतवृत्ति समेत। पूना २ १४ ०

१२०७ **अन्त्यकर्मदीपकः, आशौचकालनिर्णयसहितः**—प्रेतकर्मब्रह्मीभूतयतिकर्मनिरूपणात्मकः। म०म०पं०श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीयविरचितः। बनारस १ ८ ०

१२०८ **अन्त्येष्टि**—विश्वनाथकृता। इसमें अन्त्येष्टि प्रयोग सर्वोत्तम रीति से लिखा गया है। इस विषय में यह ग्रन्थ अपूर्व ही है। मुम्बई ३ ० ०

१२०९ **अन्त्येष्टिश्राद्धकर्मपद्धति**—पं० चतुर्थीलालकृत नूतन छपकर तय्यार हुई है। मूल संस्कृत मुम्बई १ ० ०

१२१० **अष्टलिङ्गतोभद्र**—रंगीन। ० १ ६

१२११ **अष्टशान्तिः**—(शान्तिप्रकाशान्तर्गत)। मूल। मुम्बई ० २ ०

१२१२ **आचारनिबन्धः**—सन्ध्यायज्ञोपवीतधारणवसन्तरामसुद्राप्रयोगभोजनप्रयोग-

महामृत्युञ्जयजपविधिनवग्रहस्तोत्ररूपः । साहित्याचार्य पं० प्रेमवल्लभशर्मशास्त्रिद्वारा संगृहीतोऽनुवादितश्च ।
मुरादाबाद ० ५ ०

१२१३ **आचारभूषणम्**—ओकोपाह्वत्र्यम्बकविरचितम् । हैरण्यकेश्याह्निकम् । अत्रोषःकालमारभ्य रात्रौ प्रहरपर्यन्तं क्रमेणानुष्ठीयमानानां वर्णाश्रमोचितकर्मणां तथा विवाहादिसंस्काराणां शान्तिकपौष्टिककर्मणां च तदङ्गतिथ्यादिकालनिर्णयशास्त्रार्थनिर्णयपुरःसरं विवेचनं यथावत् कृतमस्ति ।
पूना ४ ६ ०

१२१४ **आचाररत्नम्**—आह्निक ग्रन्थः । इसमें ब्राह्मणों के उपचारों तथा स्त्रियों के कर्त्तव्यों का खुलासा उत्तम रीति से किया गया है ।
१ ० ०

१२१५ **आचारादर्श**—यजुर्वेदियों की आह्निक विधि । मूल । खुले पत्रे ।
मुम्बई ० १२ ०

१२१६ **आचारार्क**—दिवाकर कृत । इसमें ऋग्वेदियों का आह्निकाचार है । मूल । खुले पत्रे ।
मुम्बई ० १२ ०

१२१७ **आचारेन्दुः**—माटेइत्युपाह्वत्र्यम्बकविरचितः । अत्र त्रैवर्णिकानामाचाराः स्मृत्यादिवचनोपन्यासेन यथायथं व्यवस्थिता दृश्यन्ते ।
पूना ४ ० ०

१२१८ **आधानपद्धतिः**—सरस्वतीभूषणकिंजवड़ेकरोपाह्ववामनकृता ।
पूना १ १४ ०

१२१९ **आश्लेषा शान्तिः**—मूलमात्र । ० २ ०

१२२० **आह्निककर्मप्रयोगः**—ऋग्वेदस्य शाङ्खायनशाखिनाम् । (छगनलालकृतः)।
० ६ ०

१२२१ **आह्निकसूत्रावलिः**—श्रीशुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनवाजसनेयिनाम् । वैद्यनारायणशर्मसंगृहीता ।
मुम्बई २ ८ ०

१२२२ **आह्निककर्मसूत्रावलिः**—(शिवदत्तशर्मकृता) । यजुर्वेदिनाम् । सजिल्द ।
मुम्बई २ ८ ०

१२२३ **आह्निकचन्द्रिका**—सायणमन्त्रभाष्यसहित । ऋक्शाखियों का ग्रन्थ । आचारचन्द्रिका भी इसी का नाम है । इसमें यथावकाश सौर, रुद्राध्याय, रुद्रसूक्त, विष्णुसूक्त, देवीसूक्त, श्रीसूक्त, गणपतिसूक्त सायणाचार्य भाष्यसहित और गणपति अथर्वशीर्ष सभाष्य इतने विषय हैं ।
१ ० ०

१२२४ **उत्सर्जनोपाकरणप्रयोगः**—शुक्लयजुर्वेदकाण्वशाखीयः (मार्तण्डसोमयाजिकृतः) मूल । सस्वर ।
० १० ०

१२२५ **उत्सर्जनोपाकरणविधि**—(ऋग्वेदी श्रावणी) मुम्बई ० ४ ०

१२२६ **उदकशान्ति**—(शौनक) । सप्रयोग, मूलमात्र । मुम्बई ० ४ ०

१२२७ **उपनयनगायत्री मीमांसा परीक्षा**—भाषा में । काशी ० ७ ०

१२२८ **उपनयनपद्धति**—मूलमात्र । बनारस ० ३ ०

१२२९ **उपनयनसंस्कार (यज्ञोपवीत पद्धति)**—शुक्लयजुर्वेदिनाम् । (रामदत्त)
मुम्बई ० २ ६

१२३० उपनयनपद्धति—श्रीरामदत्तविरचिता । पं० विष्णुदत्त वैदिककृत भाषा टीका सहित । मुम्बई ० १० ०

१२३१ उपनयनपद्धति—भाषाटीकासहित । बनारस ० ४ ०

१२३२ उपाकर्मपद्धति—अर्थात् (श्रावणशुक्ल १५ की) शुक्लयजुर्वेदियों की श्रावणी । इसमें नूतनयज्ञोपवीत धारण करने का स्नानविधि समेत प्रयोग लिखा है । मूल ।

मुम्बई ० १० ०

१२३३ उभयैकादशीव्रतोद्यापनविधिः—मूल । लाहौर ० ३ ०

१२३४ ऋक्श्रावणीप्रयोगः— मुम्बई ० ३ ०

१२३५ ऋग्वेदस्य दाहविधिः षट्पिण्डः—विधिविधानसहित ० ८ ०

१२३६ ऋग्वेदोक्तनित्यविधिः—सस्वर । मुम्बई ० ५ ०

१२३७ एकलिङ्गतोभद्रम्— मुम्बई ० १ ६

१२३८ एकोद्दिष्टश्राद्ध (मृतकों के क्षयतिथि श्राद्धप्रयोग)—भाषाटीकासमेत ।

लाहौर ० ३ ०

१२३९ और्ध्वदैहिकपद्धतिः—कुम्भघोण ० १४ ०

१२४० कर्मकाण्डप्रकाशिका—पं० वैष्णवदासेन संगृहीता । मुम्बई ० ६ ०

१२४१ कर्मकाण्डप्रदीपः—शुक्लयजुःशाखीयः । विविधरङ्गरञ्जितमण्डलैरन्यैश्च सहितः । इसमें परिभाषा, संस्कार, आह्निकाचार, मिश्रप्रयोग और अन्त्येष्टि ये पांच प्रकरण है ।

मुम्बई ४ ८ ०

१२४२ कर्मकाण्डरत्नाकरः—पंडितदेवानन्दडिमरीवैदिकेन श्रुति-स्मृति-गृह्यसूत्र-धर्मशास्त्र-तन्त्रग्रन्थेभ्यः संगृह्य विरचितः संशोधितश्च । दिल्ली ५ ५ ०

१२४३ कर्मकाण्डसमुच्चयः—इसमें गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त समस्त संस्कार तथा अन्य श्रौतस्मार्त्त कर्म सप्रयोग वर्णित हैं । खुले पत्रे । मुम्बई ० ६ ०

१२४४ कर्मप्रदीप—२ भाग, अपूर्ण । कलकत्ता २ ४ ०

१२४५ कलशप्रतिष्ठापूजा— काशी ० १ ०

१२४६ कातीयेष्टिदीपकः—(दर्शपौर्णमासपद्धतिः) । पं० नित्यानन्दपन्तपर्वतीय-विरचितः ।

काशी १ ० ०

१२४७ कात्यायनीयतर्पण—मूल । मुम्बई ० २ ०

१२४८ कात्यायनीय शान्ति—अर्थात् कात्यायनसूत्रानुसारी ग्रहशान्ति प्रयोग

० २ ०

१२४९ कात्यायनीशान्ति—भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ५ ०

१२५० कार्त्तिकस्त्रीप्रसूताशान्ति—मूलमात्र । ० २ ०

१२५१ कुण्डमण्डपसिद्धिः—पं० वायुनन्दमिश्रेण विरचितया सरलसोदाहरणहिन्दी-टीकया विभूषिता । काशी ० ६ ०

१२५२ कुण्डरत्नावली—सटीक । कुण्डों के ६४ चित्रों सहित । इसमें देवप्रतिष्ठा

आदि इष्ट और पूर्त कर्मों के कुंडमण्डप, कुण्ड और वेदि बनाने की रीति है। इसमें प्रत्ये
कुण्ड वेदि आदिकों की दो दो आकृति बनाकर पहिली सूत्रविन्यास सहित साध्य आकृति औ
दूसरी सूत्ररेखादि मार्जन से सिद्ध आकृति उदाहरण के साथ जोड़ दी है। मुम्बई १ ४

१२५३ **कुण्डविंशति**—पण्डित हरिकृष्ण व्यङ्कटरामसंगृहीत। इसमें कुण्डवि
सान्वय भाषाटीका सहित है। और कुण्डार्कादि १६ मूल श्लोक हैं। हवनादि प्रयोग में ब
उपयोगी है। मुम्बई १ ४

१२५४ **कुण्डसिद्धिः**—सटीका। मुम्बई ० ६

१२५५ **कुण्डार्कः**—(भट्टशंकरसूरि) रघुवीरदीक्षितविरचितमरीचिमालासंस्कृत टी
समेत। मुम्बई ० ४

१२५६ **कुण्डार्कः** (भट्टशंकरसूरिकृतः) - व्याख्याषट्कसमुल्लसितः परिशिष्टादिसहितश्च
मुम्बई २ ०

१२५७ **कुलदेवतास्थापनविधिः, हनुमद्ध्वजदानविधिश्च**—ज्यौतिषाचा
ज्यौतिषतीर्थ पं० श्रीगंगाधरमिश्रकृतः। काशी ० ०

१२५८ **कुशकण्डिकाभाष्य**—इसमें कुण्ड और स्थण्डिलादि की विधि, ब्रह्मास्था
पन आदि विषय हैं। मूल ० ४

१२५९ **कृत्यरत्नाकर**—मूलमात्र। ६ खंड। सम्पूर्ण। कलकत्ता ६ ०

१२६० **कृत्यसारसमुच्चय**—महामहोपाध्यायश्रीमदमृतनाथ विरचित वार्षिक व्रता
निर्णय। मुम्बई १ ०

१२६१ **कृत्यसारसमुच्चयः**—म० म० पं० श्रीअमृतनाथझाकृतः। पं० श्रीगंगाध
मिश्रशर्मणा यथास्थलोपयुक्तटिप्पणीभिः प्रयोजनीयविविधपरिशिष्टविषयैश्च समलङ्कृतः।
काशी १ १२

१२६२ **कृष्णयजुर्वेदीयसन्ध्यावन्दनम्**—सभाष्यम्। माइलापुर ० ८

१२६३ **गणपतिपूजनसहितचतुर्वेदोक्तपुण्याहवाचनप्रयोग**—इसमें पुण्या
हवाचनोपयोगी चारों वेदों के मन्त्र स्वरसहित हैं। ० ८

१२६४ **गणपतिपूजाहोमपद्धति**—मूल। ० २

१२६५ **गणेशचतुर्थी**—भाषाटीकासहित। लाहौर ० २

१२६६ **गयायात्रापद्धति**—इसमें गया जी में श्राद्धादि करने की विधि है।
० ४

१२६७ **गयाश्राद्धपद्धति**—मूल। खुला पत्रा। काशी ० ३

१२६८ **गयाश्राद्धपद्धति (चतुर्थीलाल)**—शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनवाजसने
यिनाम्। मूल। मुम्बई ० ८

१२६९ **गयाश्राद्धादिपद्धति**—पं० तारानाथ तर्कवाचस्पतिविरचित संस्कृत।
कलकत्ता १ ०

१२७० **गृहप्रतिष्ठाविधिः (संक्षेपतः)**— लाहौर ० २

१२७१ गोत्रप्रवरनिबन्धकदम्ब—पुरुषोत्तमकृत प्रवरमञ्जरी, निर्णयसिन्धुकार कमलाकरभट्टकृत प्रवरदर्पण, पट्टाभिरामशास्त्रिकृत गर्ग-भरद्वाजकुलविवाहविचार, आश्वलायन, आपस्तम्ब, बौधायन, कात्यायन सूत्र और मत्स्यपुराणकथित तथा प्रवरदर्पणाकारप्रदर्शित प्रवर व गोत्रगण, आश्वलायनप्रवरकाण्ड, आपस्तम्बप्रवरखण्ड, अभिनवमाधवविरचित गोत्रप्रवरनिर्णय तथा अकारादि क्रम से गोत्र-ऋषि-सूची इनका एकत्र समावेश, ब्राह्मणादि जातियों में विवाहोपयोगी गोत्रप्रवरनिर्णय और ऋषियों की वंशावली का सर्वोत्तम ग्रन्थ ।

मुम्बई ३ ० ०

१२७२ गोत्रावलि—देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रसहित । मूल १ ० ०

१२७३ गोदानविधि—मूल । लाहौर ० २ ०

१२७४ गोविन्दार्चनचन्द्रिका—(वैष्णवदास पुजारी)—इसमें सम्पूर्ण कर्मकाण्ड और व्रतादि का अपूर्व संग्रह है । अर्चनाग्रन्थों में अत्युत्तम संग्रह ग्रन्थ है । श्रौत और स्मार्त धर्मों को प्रकाश करता हुआ गोविन्दभगवान् की पूजा—अर्चन को १६ उल्लासों में वर्णन करता है । मूलमात्र । मुम्बई ६ ० ०

१२७५ गौडीय श्राद्धप्रकाशमहानिबन्धः—इसमें श्राद्धस्वरूप, श्राद्ध में ब्राह्मण लक्षण, महालयादि निर्णय और श्राद्धप्रयोग, क्षयाहश्राद्ध, संकल्पश्राद्ध, हेमश्राद्ध, एकादशादिश्राद्ध, मासिकश्राद्ध, मघादिश्राद्ध तथा नान्दीश्राद्धादि बहुत से श्राद्ध और विष्णवादि पूजन, पितृतर्पणादि का अपूर्व संग्रह है । चारों वर्णों को उपयोगी है । चतुर्थीलालकृत । मूल ।

मुम्बई ४ ० ०

१२७६ गौरीनवग्रहस्वस्त्ययनकलशप्रतिष्ठापूजनविधि—

लाहौर ० १ ०

१२७७ ग्रहप्रयोगः अर्थात् ग्रहशान्तिः (वायुनन्दनमिश्र) । मूल । खुल पत्रे ।

बनारस ० १२ ०

१२७८ ग्रहशान्ति (शुक्लयजुर्वेदीय)—यह यज्ञोपवीत तथा विवहादि शुभकर्म में बहुत उपयोगी है । मूलमात्र । मुम्बई ० १० ०

१२७९ ग्रहशान्ति—भाषाटीका । मुम्बई ० १० ०

१२८० चतुर्थवर्णसंस्कारपद्धति—हनुमानशर्माकृत भाषाटीकासहित । इसमें हीनोपवीत त्रैवर्णिकों और शूद्रों के गर्भाधानादि सब संस्कार बड़ी उत्तमता से लिखे हैं । और गणपतिमातृकापूजनादि सर्व प्रयोग भी आदि में लगा दिये हैं । मुम्बई ० ६ ०

१२८१ चतुर्दशरत्नविवाहपद्धतिः—खण्डूडीत्युपाह्व-पण्डित विजयानन्दशास्त्रिणा विरचिता तत्कृतेनैव सुललितहिन्दीभाषानुवादेन च समलङ्कृता । शास्त्रीय सारगर्भित मनोहर उपदेशसहित । इसमें गृह्यसूत्रों तथा समस्त कर्मकाण्डीय प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर शास्त्रीय विवेचनापूर्वक सरल हिन्दी में विवाहादि विनियुक्त मन्त्रार्थ सहित विवाहपूर्वाङ्ग, वाग्दान, मधुपर्क (धूल्यर्घ), कन्यादानादि, ऐरिणीपूजन, वसिष्ठारुन्धत्यादिपूजन, चतुर्थीकर्म, विवाहानन्तर पतिगृह जाते यानारोहण, यानभङ्गादि दुर्निमित्त में प्रायश्चित्तिप्रयोग, वधूप्रवेश, वाप्यादिजला-

शयपूजा, अर्कविवाह, प्रतिमाविवाह, कुम्भविवाह, अश्वत्थविवाह, गोदानविधि, मुहूर्तचिन्तामण्यादि शास्त्रीय विवाहव्यवस्था, वरकन्या जन्मपत्रीमेलन, मुहूर्तविचार आदि एवं गणपत्यादि नवग्रहपर्यन्त पञ्चाङ्गपूजन और स्तम्भपूजन आदि विषय विस्तार से दिये गए हैं। विवाहसम्बन्धी छोटे से लेकर बड़े सभी विषयों का प्रामाणिक और सर्वदेशीय रीति से एकत्र समावेश होने से यह पुस्तक अद्वितीय तथा बड़े महत्त्व की है। लाहौर १ ८ ०

१२८२ **चतुर्लिंगतोभद्र**—रंगीन। मुम्बई ० १ ०

१२८३ **छन्दोगानामाह्निकम्**—मूल। शिवरामशर्मकृतम्। ० ३ ०

१२८४ **छन्दोगाह्निकम्**—सामवेदी। दत्तोपाध्यायकृतम्। सटिप्पणम्। मुम्बई ० ८ ०

१२८५ **जन्मदिनकृत्यम्**—मूलमात्र। लाहौर ० ३ ०

१२८६ **जलाशयोत्सर्ग-प्रकाश-महानिबन्ध**—चतुर्थीलालकृत। अर्थात् वापी, कूप, तडागादिकों की शान्ति कलशस्थापन से लेके होम तक भली भांति है। मूलमात्र। मुम्बई २ ० ०

१२८७ **ज्येष्ठाशान्ति**—मूल। ज्येष्ठानक्षत्र में जननादिशान्ति। लाहौर ० २ ०

१२८८ **तीर्थचिन्तामणि**—वाचस्पतिमिश्रविरचित सम्पूर्ण। कलकत्ता ३ १२ ०

१२८९ **तीर्थश्राद्ध**—भाषाटीका सहित। ० १ ६

१२९० **तुलसीपूजापद्धति**— मुम्बई ० १ ०

१२९१ **तुलसीविवाहपद्धति**—इसमें कार्त्तिक शुक्ल ११ एकादशी के दिन तुलसी और भगवान् की लग्नविधि लिखी है। मुम्बई ० ३ ०

१२९२ **तुलसीसन्ध्या**—भाषा टीका सहित। श्री स्वामी विद्याप्रकाश विरचित। ० १ ६

१२९३ **तुलादानपद्धति**—मूल। लाहौर ० १ ०

१२९४ **तुलादानादिपद्धतिः**—तारानाथतर्कवाचस्पतिविरचिता। नवग्रहहोमपद्धतिः प्रायश्चित्तपद्धतिः, विष्णुयागपद्धतिः (अनपत्यानां पुत्रकामनयाऽनुष्ठितो यागविशेषो विष्णुयागः) कलकत्ता ४ ० ०

१२९५ **त्रिकालसन्ध्या**—ऋग्वेदीया। मुम्बई ० १ ०

१२९६ **त्रिकालसन्ध्या**—यजुर्वेदी। मुम्बई ० १ ०

१२९७ **त्रिकालसन्ध्या**—हिरण्यकेशीया (आपस्तम्बीया)। मुम्बई ० १ ०

१२९८ **त्रिकालसन्ध्याविधि**— मुरादाबाद ० ० ०

१२९९ **त्रिकालसन्ध्याविधिः**—(यजुर्वेदीय)। भाषा टीका। **देवर्षिपितृतर्पणविधि** तथा **बलिवैश्वदेवविधि** सहित। खण्डूड़ीत्युपाह्वपण्डितविजयानन्दशास्त्रिविरचितः। लाहौर ० २ ०

1300 Trikuti Vilas Vol. I—(त्रिकुटीविलास—स्वामी हंसस्वरूप जी कृत । भाग १)—a collcetiou of Vedic mantras for purposes of Sandhya. Vol. I. 1 4 0

(भाग २) Vol II—Prāṇāyama Made Easy. 0 8 0

१३०१ **त्रिखल शान्ति**—पं० दुर्गादत्तशास्त्री द्वारा संशोधित । लाहौर ० २ ०

१३०२ **त्रिपिंडीश्राद्धपद्धतिः**—श्रीवायुनन्दनमिश्रप्रणीता । मूलमात्र ० ४ ०

१३०३ **त्रिवेदीय सन्ध्या**—पं० श्रीराधिकाप्रसाद वेदान्तशास्त्रीकृत अन्वय और भाषानुवाद सहित । काशी ० ६ ०

१३०४ **त्रिसुपर्ण**— मुम्बई ० १ ०

१३०५ **त्रिस्थलीसेतुः**—नारायणभट्टविरचितः । पूना ३ १२ ०

१३०६ **त्रिस्थलीसेतुः** (भट्टोजिदीक्षितकृतः), **तीर्थेन्दुशेखरः** (नागेशभट्टकृतः), **काशीमोक्षविचारः** (सुरेश्वराचार्यकृतः) । इलाहाबाद १ ८ ०

[All the above-mentioned 3 treatises on different तीर्थs—places of pilgrimage are bound in one volume. There is a Sanskrit introduction attached to reach of them. The first two treatises are published for the first time.]

१३०७ **दवातपूजा**—इसमें दवात की पूजाविधि वर्णित है । मुम्बई ० १ ०

१३०८ **दशकर्मपद्धति**—रामदत्तसंकलित । इसमें गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह और चतुर्थीकर्मादिविषय हैं । मूलमात्र । काशी, मुम्बई ० ८ ०

१३०९ **दशकर्मपद्धति** (रामदत्तकृत)—कन्हैयालालकृत भाषाटीकासहित । सजिल्द मुम्बई १ ४ ०

१३१० **दानक्रियाकौमुदी**—श्रीगोविन्दानन्दकंकणाचार्यविरचिता । कलकत्ता २ ४ ०

१३११ **दानचन्द्रिका**—इसमें सब प्रकार के दान और संकल्प हैं । मुम्बई ० १० ०

१३१२ **दानसंग्रह**—इसमें सब प्रकार के सप्रमाण दान की विधि वर्णित है । पं० महीधरसंगृहीत मूलमात्र । मुम्बई २ ० ०

१३१३ **दुर्गाहवनपद्धति**—बलिदानविधि सहित । मूलमात्र ० ४ ०

१३१४ **देवऋषिपितृतर्पण**—नित्योपयोगी ० १ ०

१३१५ **देवपूजा**—मूल । बनारस ० ० ६

१३१६ **द्वादशलिङ्गतोभद्रम्**—(रंगीन chart) मुम्बई ० १ ६

१३१७ **धनिष्ठादिपञ्चकशान्ति**—मूलमात्र बड़ी । नवीन संशोधित संस्करण । ० ८ ०

१३१८ **धनिष्ठापञ्चकशान्तिः**— मुम्बई ० २ ६

१३१९ **धर्मशान्तिः**—मूलमात्र ० ३ ०

१३२० **नवग्रहकाण्डी**— ईश्वरीप्रसाद संगृहीत (नित्यपूजनविधानपद्धति)। वैदिक मन्त्रों की संस्कृत टीका तथा भाषा टीका सहित। मुम्बई ० २ ०

१३२१ **नवग्रहचक्र**—सादा। बनारस ० १ ०

१३२२ **नवग्रहजपविधि**—मूलमात्र। ० २ ०

१३२३ **नवग्रहविधानपद्धति**—मूल। मुम्बई ० ६ ०

१३२४ **नवरत्नविवाहपद्धति**—पं० विष्णुदत्तकृत भाषाटीकासहित। इसमें विवाहप्रश्न, वैधव्ययोगशान्ति, सावित्रीव्रतविधान, पिप्पलविवाह, कुम्भविवाह आदि, अच्युत-विवाह विधान, मण्डपचित्र, स्वस्तिवाचन, गणपतिपूजन, ग्रहशान्ति, प्रतिज्ञासंकल्प, कन्या-दानसंकल्प और चतुर्थीकर्म आदि बहुत से विषय हैं। सजिल्द। मुम्बई १ ८ ०

१३२५ **नवरात्रप्रदीप**—मूल। काशी २ ० ०

१३२६ **नवरात्रार्चापद्धति** (समन्त्र)—नवरात्र में घटस्थापनादि नित्यपूजा विधि। मुम्बई ० ४ ०

१३२७ **नान्दीमुखश्राद्धपद्धति**—मूल। ० २ ०

१३२८ **नारायणबलिप्रयोग**—मूल। इसमें जीर्णव्रतोद्धार के लिये श्राद्ध लिखा गया है। मुम्बई ० ८ ०

१३२९ **नित्यकर्मचन्द्रिका**—भाषा। काशी ० ४ ०

१३३० **नित्यकर्मपद्धतिः**— काशी ० १ ६

१३३१ **नित्यकर्मपद्धति**—यह छोटा सा ग्रन्थ बहुत उपयोगी है। मुम्बई ० २ ६

१३३२ **नित्यकर्मप्रकाशिका**—विद्वत्कुलकमलदिवाकरकुलनिधिशर्मविरचित। इस पुस्तक में उषःकाल से लेकर रात्रि में शयन पर्यन्त जिस समय जो जो शौच, स्नान, सन्ध्या-वन्दन, पूजनादि अनुष्ठान शास्त्र में विहित हैं उन सब का वर्णन है। बनारस ० ४ ०

१३३३ **नित्यकर्मप्रयोगमाला** (बृहद्)—मूलमात्र। कलकत्ता १ १२ ०

१३३४ **नित्यकर्मप्रयोगमाला**—पं० चतुर्थीलालकृतसंस्कृत। १ ० ०

१३३५ **नित्यहवनविधिः**— इटावा ० ० ६

१३३६ **नित्याह्निक**—(Daily Rites of a ahman)। मद्रास ० ८ ०

१३३७ **नित्याह्निकप्रदीपः**—माध्यन्दिनशुक्लयजुर्वेदीयानाम्। हिन्दीसरलटीकासमलं-कृतः। कर्त्ता—पं० मोहनलाल केशवराम श्रीमाली। मुम्बई १ ४ ०

१३३८ **नूतनगृहप्रवेशहवनपद्धति**—इसमें कलशस्थापनपद्धति, सर्वतोभद्रमण्डल, अष्टदलचक्र, तथा नवग्रहस्थापन कोष्ठक, एवं ब्रह्मादिमण्डलदेवतास्थापन कोष्ठक भी रखे हैं और सर्वपद्धति प्रकरणों का सूचीपत्र भी लिखा है। मूलमात्र। मुम्बई १ ८ ०

१३३९ **नृसिंहप्रसादश्राद्धसारः**—दलपतिराजकृतः । इलाहाबाद २ ० ०

१३४० **पञ्चकशान्तिः**—मूल । लाहौर ० ८ ०

१३४१ **पञ्चदानपद्धति**—श्रीवायुनन्दनमिश्रकृत । मूलमात्र । बनारस ० २ ०

१३४२ **पञ्चमहायज्ञ**—सटीक । संध्या, तर्पण, नित्य श्राद्ध, बलिवैश्वदेव-कर्म, तथा प्रायश्चित्तयज्ञ । मुम्बई ० ५ ०

१३४३ **पञ्चमहायज्ञ**—भाषाटीका समेत । मुम्बई ० ४ ०

१३४४ **पञ्चमहायज्ञविधि**—मूल मन्त्र तथा (भाषा में) करने की विधि सहित मुरादाबाद ० १ ६

१३४५ **पञ्चाङ्गपद्धति**—मूलमात्र । वायुनन्दनकृत । बनारस ० ३ ०

१३४६ **पञ्चामृताद्यभिषेकसूक्त**—(विषय २७) । मुम्बई ० ४ ०

१३४७ **पञ्चायतन देवताओं का पृथक् पृथक् अष्टोत्तरशतनामावलि** । मुम्बई ० ३ ०

१३४८ **पार्थिवेश्वरपूजापद्धति**— नारायण शास्त्रिकृत भाषाटीका सहित । ० १ ०

१३४९ **पार्वणश्राद्धप्रयोग**—(अपात्रिक) चतुर्थीलाल जी कृत संस्कृत टीका सहित । मुम्बई ० ८ ०

१३५० **पार्वणश्राद्ध**—मूल काशी ० १ ६

१३५१ **पार्वणश्राद्ध**—भाषा टीका, खुला पत्रा । काशी ० ३ ०

१३५२ **पार्वणश्राद्धप्रयोग**—(अपात्रिक) मुम्बई ० २ ०

१३५३ **पार्वणश्राद्धप्रयोग(सपात्रिक)कृत्यसंग्रह**—भाषा टीका सहित । ० ४ ०

१३५४ **पितृदयिता**—अनिरुद्धभट्टकृता । कलकत्ता १ ४ ०

१३५५ **पितृसंहिता**—श्राद्ध आदि में ब्राह्मणभोजन के समय पाठ करने योग्य । मुम्बई ० २ ०

१३५६ **पुण्याहवाचन** (दानखण्डोक्त)—मूल । ० १ ६

१३५७ **पुत्तलविधानपद्धति**— मुम्बई ० ३ ०

१३५८ **पुराणोक्तमहालयचटश्राद्धप्रयोग**—ब्रह्मयज्ञ नित्यतर्पण समन्वित (दुर्गाशंकरसंगृहीत) ० ४ ०

१३५९ **पुराणोक्त सर्वपूजा और तान्त्रिक देवीपूजा**—शतचण्डी, सहस्र-चण्डी आदि प्रयोगों के लिये । मुम्बई ० ४ ०

१३६० **पूजापंकजभास्कर**—पांचों देवताओं के वैदिक मन्त्रों से यथोपचार पूजाप्रकरण हैं । मूलमात्र । मुम्बई १ ० ०

१३६१ **पूजासमुच्चय**—इसमें अनेक प्रकार के १०५ विषय हैं । न्यास, वर्ष में होने वाली भांति भांति की पूजाएं, विविध सहस्रनामावली और अष्टोत्तरशतनामावली हैं । मुम्बई १ ० ०

१३६२ **पूतनाशान्तिः**—षष्ठीपूजन सहित। शिवमङ्गलद्विवेदिकृत भाषाटीका सहित। बनारस ० २ ०

१३६३ **पौराणकर्मदर्पणः** (शिवशंकरशास्त्रिविरचित)—इसमें वेदमंत्र सहित षोडश संस्कर, व्रतोद्यापन, शान्तिप्रयोग, और्ध्वदेहिक प्रयोग, नारायणबलि इत्यादि प्रयोग हैं। खुले पत्रे। मुम्बई ६ ० ०

१३६४ **पौराणिकवास्तुशान्तिप्रयोग** (विश्वनाथकृत)—मूलमात्र। मुम्बई १ ८ ०

१३६५ **पौराणिकसन्ध्या**— ० २ ०

१३६६ **पौरोहित्यकर्मसार** (रमाकान्तसंगृहीत)—सटिप्पण। ३ भाग। काशी १ १२ ०

१३६७ **पौष पूजा**—प्रो० लक्ष्मीधर एम० ए० कृत भाषा टीका सहित। देहली ० ८ ०

१३६८ **प्रतिष्ठामहोदधिः**—श्रीवायुनन्दनामिश्रेण विरचितः। काशी ० १२ ०

१३६९ **प्रतिष्ठासंग्रह**—यह पं० रामलाल जी ने चार किरणों (प्रकरणों) में निर्माण किया है। मूलमात्र। मुम्बई ४ ० ०

१३७० **प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध प्रयोग**—(नागरखण्डान्तर्गत) मुम्बई ० ६ ०

१३७१ **प्रभातस्नानविधि**—स्वामी हंसस्वरूप जी कृत। ० २ ०

१३७२ **प्रयोगपारिजातस्य**—षोडशसंस्कारकाण्डम्। यह विद्वदग्रेसर श्रीमन्नृसिंह-विरचित आश्वलायनों का प्राचीन याज्ञिक ग्रन्थ है। इसमें आश्वलायन गृह्यसूत्र पर नारायण-वृत्ति, कुमारिलकृतकारिका, शौनक कारिका आदिकों से भी आश्रय लिया गया है। १६ संस्कारों का अपूर्व ग्रन्थ है। मुम्बई ४ ० ०

१३७३ **प्रयोगरत्न**—नारायणभट्टकृत। इसमें षोडश संस्कार के प्रयोग तथा निर्णय उत्तमता के साथ लिखे गए हैं। मूलमात्र। मुम्बई १ ० ०

१३७४ **प्रयोगरत्न**—नारायणभट्टी—उत्तरनारायणभट्टी अन्त्येष्टि। ऋग्वेदी समन्त्रक। यह ग्रन्थ प्राचीन ग्रन्थों से शुद्ध किया गया है। और इसमें विशेषता यह है कि स्मार्त्त यज्ञपात्रों के २८ चित्र और बड़े २ याज्ञिक विद्वानों के द्वारा परिशोधित कराकर सप्त पाक-संस्थाओं के पृथक् पृथक् प्रयोग और आरम्भ में याज्ञिकोपकारक बहुत से विषय बड़े प्रयत्न से तय्यार कराकर जोड़ दिये गए हैं। मुम्बई २ ० ०

१३७५ **प्रयोगरत्न समन्त्रक**—मूल। खुले पत्रे। बेलगांव ५ ० ०

१३७६ **प्राणप्रतिष्ठा**— अहमदाबाद ० १ ०

1377 Pranayam Manjari **प्राणायाममञ्जरी**—स्वामी हंसस्वरूप जी कृत। Hints to beginners. 0 1 0

१३७८ **प्राणायाम विधि**—त्रिकुटिविलासस्य द्वितीयो भागः। श्रीमत्स्वामिहंसस्वरूपेण निर्मितः। अलवर ० ८ ०

१३७९ **प्रातःस्मरण**— मुम्बई ० १ ६

१३८० **प्रातःस्मरण**—स्वामी हंसस्वरूपजीकृत। ० २ ०

१३८१ **प्रेतमञ्जरी**—भाषाटीकासहित। इसमें वैतरणीदान, प्रेत की दाहविधि, दशाहादि श्राद्ध, एकादशाह श्राद्ध, वृषोत्सर्ग, शय्यादानादि सपिंडीश्राद्ध, षोडशमासिक श्राद्ध-प्रयोग, त्रयोदशाह, पददानादि भली भांति दर्शाया गया है। मुम्बई ० ८ ०

१३८२ **बप्पनभट्टीप्रयोग**—(यजुर्वेदीय) मूल। बेलगाम २ ० ०

१३८३ **बलिवैश्वदेवविधि**— गोरखपुर ० ० ६

१३८४ **बृहत्कर्मकाण्डसमुच्चय**—मरण समय से लेकर मरणविधान, अन्त्येष्टि-कर्म तथा शान्ति के विषय वर्णित हैं। मुम्बई ० ६ ०

१३८५ **बृहत्सन्ध्याविधिः**—(त्रिकुटीविलासस्य) प्रथमो भागः। श्रीमत्स्वामि-हंसस्वरूपेण निर्मितः। मुज़फ्फ़रपुर १ ४ ०

१३८६ **बृहत्स्नानविधिः**—(प्रभातस्नानविधिः) ० २ ०

१३८७ **बृहद्गोत्रावली**—देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र सहित, गोत्र, वेद, उपवेद, शाखा, सूत्रादि का वर्णन। ० १ ०

१३८८ **बृहद्वेदोक्तरामपद्धति**—रामानुजसाम्प्रदायिक। ० ८ ०

1389 Brahmakarma ou Rites Sacres des Brahmanes-Traduit du Sanskrit et Annoté. Par A. Bourquin. Paris 9 8 0

१३९० **ब्रह्मकर्मप्रदीप**—शुक्लयजुःशाखीय। श्रीधर अण्णा शास्त्रिकृत। २ भाग। नासिक ० ६ ०

१३९१ **ब्रह्मकर्मसमुच्चय**—(ऋग्वेदीय) ३८८ विषय। मुम्बई २ ८ ०

१३९२ **ब्रह्मकर्मसमुच्चय**—(हिरण्यकेशी) ३८८ विषय। मुम्बई ३ ४ ०

१३९३ **ब्रह्मनित्यकर्मप्रयोगमाला**—श्रवणदत्तकृत। १ ८ ०

१३९४ **ब्रह्मनित्यकर्मसमुच्चयः**—(दुर्गाशंकर उमाशंकर मुण्डेटीकरकृत। शुक्ल-यजुर्वेदीयानां संग्राह्यम्। मुम्बई १ ८ ०

१३९५ **भद्रमार्तण्ड**—कर्मकाण्ड में आवाहित देवताओं के बैठाने के लिये भद्र बनाए जाते हैं, क्योंकि उनके बिना यज्ञादि बड़े बड़े अनुष्ठान पूर्ण ही नहीं होते। अत एव उक्त ग्रन्थ में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गौरी, गणेशादि देवताओं के अनुष्ठान के लिये उपयोगी स्वस्तिक, लिङ्गतोभद्र, अष्टदल, गौरीतिलक आदि भद्रों के चित्र और उनके बनाने की विधि वर्णित हैं। मूलमात्र। खुले पत्र। मुम्बई १ ४ ०

१३९६ **भस्मधारणविचार**— मुम्बई ० १ ६

१३९७ **भस्मधारणविधि**—मूलमात्र। मुम्बई ० २ ०

१३९८ मघारेवत्यश्विनीशान्ति— मूल । लाहौर ० १ ०

१३९९ मङ्गलाष्टकशाखोच्चार—विवाह में नीतियुक्त मधुर वचन बोलने की रीति। मुम्बई ० १ ६

१४०० मण्डपकुण्डसिद्धिः — विट्ठलदीक्षितकृत । पं० गौरीशङ्करकृत भाषाटीका सहित तथा कुण्डार्काद्येकोनविंशति मूल श्लोक । मुम्बई १ ४ ०

१४०१ मण्डपबोधिनी— चूरू ० २ ०

१४०२ मण्डल (रंगीन)—अष्टलिङ्गतोभद्र, एकलिङ्गतोभद्र, चतुर्लिङ्गतोभद्र, द्वादशलिङ्गतोभद्र, सर्वतोभद्र । प्रत्येक मुम्बई ० १ ६

वरुणमण्डल । मुम्बई ० २ ०

१४०३ मन्त्रप्रभाकर—स्वामी हंसस्वरूपजीकृत । वैदिकसन्ध्या हिन्दी अनुवाद सहित। १ १२ ०

१४०४ महामृत्युञ्जयजपविधिः— काशी ० १ ६

१४०५ महामृत्युंजयजपविधि—भाषाटीकासहित । मुम्बई ० २ ०

१४०६ महामृत्युञ्जय-विधिप्रकाश—पण्डित रामकरण शर्मा पाण्डेय काशी ० ६ ०

१४०७ महालक्ष्मी पूजापद्धति—मूल, खुले पत्रे मुम्बई ० २ ०

१४०८ महालक्ष्मी पूजापद्धति—भाषाटीकासहित । मुम्बई ० २ ६

१४०९ महालक्ष्मीपूजाप्रयोग—पौराणिकविधिपूर्वक । मूल । मुम्बई ० ३ ०

१४१० महालयचटश्राद्धप्रयोग— मुम्बई ० ८ ०

१४११ मातापितापूजनपद्धति— मुम्बई ० १ ०

१४१२ मूलर्क्षजननशान्तिविधिः—श्री पं० नृसिंहदेवशास्त्रिद्वारा संशोधित। ० २ ०

१४१३ मूलशान्ति—भाषाटीकासहित । काशी ० १ ६

१४१४ मूलशान्तिः— मुम्बई ० २ ६

१४१५ मूलशान्तिचक्र—श्रीवायुनन्दनमिश्रकृत । बनारस ० २ ०

१४१६ यजुःसन्ध्यावन्दनम्—श्रीरङ्गम् ० ० ०

१४१७ यजुर्वेदस्य दाहविधिः—षट्पिण्डः । विधिविधानसहितः । ० ८ ०

१४१८ यजुर्वेदीयश्राद्धप्रयोग— बेलगांव ० ० ०

१४१९ यजुर्वेदीयश्रावणीप्रयोगः—मूलमात्र । मुम्बई ० १० ६

१४२० यजुर्वेदीयसन्ध्या—सरल हिन्दी में विधि सहित यजुर्वेदीय सन्ध्या मूल मन्त्र । गोरखपुर ० ० ६

१४२१ यजुर्वेदीयसन्ध्याप्रयोगः—भाषाटीका समेत । बनारस ० ० ६

१४२२ यज्ञोपकरण—यज्ञविटपकर्मानुक्रमणिकाध्यायः । इनमें यज्ञपदार्थ, यज्ञभेद और कर्मतालिका आदि का पूर्ण निरूपण है । १ ० ०

१४२३ यज्ञोपवीतपद्धति—मूल इसमें यज्ञोपवीत का सम्पूर्ण संस्कार और वेदारम्भादि विषय हैं। मूलमात्र, खुले पत्रे। मुम्बई ० २ ६

१४२४ यज्ञोपवीतपद्धति— चूरू ० ४ ०

१४२५ यज्ञोपवीतपद्धति—रामदत्तकृत। विष्णुदत्तकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई ० १० ०

१४२६ यज्ञोपवीतमीमांसा—लेखक पं० विश्वम्भरदत्तशास्त्री। इटावा १ ० ०

१४२७ रुद्रकल्पद्रुमः—रुद्रसूत्रसहितः। जगन्नाथपरशुरामद्विवेदिकृतः। ३ ८ ०

१४२८ रुद्रविधानपद्धति—वैदिक मिश्र मन्त्रों से पूजाप्रकरण। मूलमात्र। खुले पत्रे। मुम्बई ० ६ ०

१४२९ रामविवाहपद्धतिः—पं० वायुनन्दनमिश्रेण विरचिता। बनारस ० २ ६

१४३० रुद्रस्वाहाकारसमुच्चयः—दुर्गाशंकर उमाशंकर मुरडेटीकर। मूलमात्र। ० ४ ०

१४३१ रुद्राक्षधारणविधि—श्यामसुन्दरसंगृहीत। तत्कृतभाषाटीकासहित। मुम्बई ० २ ०

१४३२ रुद्राभिषेकानुष्ठानपद्धति— आनन्दवन ० ६ ०

१४३३ लघुदर्पणपद्धतिः— काशी ४ ० ०

१४३४ लघुरामपद्धति—भाषाटीकासहिता। काशी ० ६ ०

१४३५ लम्बोदरी हवनपद्धति—मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई ० ५ ०

१४३६ लघुप्रयोगः—मन्त्रसन्ध्योपासननित्यतर्पणयोः। श्री- वैष्णवानाम्। मुम्बई ० २ ०

१४३७ लघुपूजानुष्ठानपद्धति—महादेवकृत, सटिप्पण। रतलाम ० २ ०

१४३८ लक्ष्मीपूजा—(दीपमालिकोत्सवविधान)। मुम्बई ० २ ६

१४३९ वरदगणेशपूजा—अर्थात् भाद्रपदशुक्ल चतुर्थी का गणेशपूजन प्रयोग, मूलमात्र। मुम्बई ० २ ०

१४४० वरवधूसंवाद—प्रो० लक्ष्मीधर एम० ए० कृत भाषाटीकासहित। देहली ० ८ ०

१४४१ वर्षकृत्यदीपकः—पं० नित्यानन्द पर्वतीय कृत। कालनिर्णय व्रतोद्यापन सहित। बनारस ३ ८ ०

१४४२ वापीकूपतडागारामप्रतिष्ठापद्धतिः—पं० दुर्गादत्त कृत ० ३ ०

१४४३ वारुणमण्डल—रंगीन। मुम्बई ० २ ०

१४४४ वासिष्ठीहवनपद्धतिः—भाषाटीका। काशी ० ४ ०

१४४५ वासिष्ठीहवनपद्धति—इसमें कलशादि स्थापन, गणपतिपूजन, पुण्याह-

वाचन, मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध, ग्रहमुखादि सुगम रीति से वर्णित हैं। मूलमात्र। खुले पत्रे।
मुम्बई ० ५ ०

१४४६ वासिष्ठीहवनपद्धति—पूर्वोक्त सर्वालङ्कारों से भूषित। भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ६ ०

१४४७ वासिष्ठीहवनपद्धति—(पं० ईश्वरदत्त) पञ्चयज्ञसमन्विता। इसमें प्रातःकाल के नामस्मरण, शौचक्रिया, स्नानविधि, सन्ध्या, ब्रह्मयज्ञ, पञ्चदेवपूजा, तर्पण, श्रीसूक्त, बलिवैश्व, शिवपार्थिवपूजा, शिवाथर्वशीर्ष, सूर्याथर्वशीर्ष इत्यादि अनेक पौराणिक और वैदिक मन्त्रों से दर्शाए गए हैं। मुम्बई २ ० ०

१४४८ वास्तुप्रतिष्ठासंग्रह—पं० श्रीराम चन्द्रकृत। यह ग्रन्थ वास्तुविषय में अद्वितीय है। मूलमात्र, खुले पत्रे। मुम्बई १ ८ ०

१४४९ वास्तुशान्तिप्रयोग—अर्थात् समस्त नये मकानों की वैदिक मन्त्रों से शान्ति तथा प्रयोग लिखे गए हैं। मुम्बई ० ७ ०

१४५० विज्ञप्तिरत्नावली—अन्वयार्थसहित। विवाह के उपलक्ष में अच्छे अच्छे पद्य। मुम्बई ० १० ०

१४५१ विज्ञप्तिशतकम्—अर्थात् विवाह-विनय-शतक। संस्कृत टीका और भाषा टीका सहित विवाह के चारों दिन की विनति—वरकन्या दोनों पक्षों के विनय।
मुम्बई ० ८ ०

१४५२ विधानपारिजात—१४ खण्डाः। अवशिष्टं मुद्रयते।
कलकत्ता १५ ० ०

१४५३ विधानमाला—श्रीनृसिंहभट्टविरचिता। स्मृतिपुराणेतिहासादिग्रन्थस्थमहर्षिप्रोक्तवचनानि संगृह्योद्धृतोऽयं निबन्धः। विधानं नामाशुभपरिहारोपायकथनम्। तथा च पुराणादिप्रोक्तान्यशुभपरिहारप्रयोजकजपहोमादिकर्माण्यस्य विषयः। तानि च पुष्पवतीविधानमित्यादीनि।.. संगृहीतानि सन्ति। पूना ४ ४ ०

१४५४ विधानसंग्रह—मूलमात्र। मुम्बई ० ८ ०

१४५५ विनयपञ्चाशिका—(वैवाहपद्यावली) अर्थात् विवाह में विनति कहने के दोनों पक्षों के श्लोक सान्वय भाषा टीका सहित। ० ५ ०

१४५६ विनयपद्यपंचाशिका—भाषा टीका सहित। मथुरा ० ५ ०

१४५७ विनायकशान्ति—(शान्तिप्रकाशान्तर्गत) अर्थात् गणेशपूजन और होमविधि। ० २ ०

१४५८ विमानार्चनाकल्प—(मरीचिसंहितान्तर्गत) मूल। ३ ८ ०

१४५९ विवाहचन्द्रिका—षोडश संस्कारसहिता। जगन्नाथपरशुरामद्विवेदिप्रणीता।
सूरत ० १० ०

१४६० विवाहपद्धति—मूल। कन्यादानादि, संकल्प और चतुर्थीकर्मादि विषय। अतिस्थूलाक्षर। मोटा कागज। ० १० ०

१४६१ **विवाहपद्धतिः** (पुराणोक्ता) - श्रीवायुनन्दनमिश्रेण सम्पादिता । बनारस ० २ ०

१४६२ **विवाहपद्धति**— चूरू ० ५ ०

१४६३ **विवाहपद्धति**—स्थूलाक्षर । मुम्बई ० ८ ०

१४६४ **विवाहपद्धति** (चतुर्थीकर्म और विनियोग समेत)—निवाहूरामकृत नित्यानुरागिणी संस्कृत टीकासहित । सजिल्द । मुम्बई १ ४ ०

१४६५ **विवाहपद्धति**—चतुर्थीकर्मसहित । महोपाध्याय पं० भैयारामजीकृत भाषाटीकासहित । शाखोच्चार भाषा पद्य में । सजिल्द । अतिस्थूलाक्षर । १ ० ०

१४६६ **विवाहपद्धति**—भाषाटीका मङ्गलाष्टक, शाखोच्चारसहित । बनारस ० ६ ०

१४६७ **विवाहपद्धति**—भाषाटीका । मुम्बई ० ८ ०

१४६८ **विवाहपद्धति**—(शिवनाथ आहिताग्निकृत) । पारस्करगृह्यसूत्रानुकूल । भाषाटीकासहित । देहरादून ० ८ ०

१४६९ **विवाहपद्धतिः** (माध्यन्दिनवाजसनेयिनां पारस्करसूत्रानुसारिणी)—कर्मठरत्न रत्नगढ़निवासी पं० चतुर्थीलालकृत भाषाटीकासहित । मुम्बई ० १२ ०

१४७० **विवाहसंस्कार**— चूरू ० ८ ०

१४७१ **विवाहसोपाङ्गविधि**—(ठाकुरप्रसादमणिकृत) । लक्ष्मीकान्त मणिकृत बालबोधिनी भाषाटीकासहित । मुम्बई १ १२ ०

१४७२ **विवाहाङ्गचतुर्थीकर्मपद्धति**—पं० भानुदत्तकृत । तत्कृत भाषाटीकासहित । लाहौर ० ४ ०

१४७३ **विष्णुपूजनविधि**—हनुमानशर्मसंगृहीत । तत्कृतभाषाटीकासहित । मुम्बई ० २ ०

१४७४ **विष्णुयागपद्धति**—पं० वायुनन्दनमिश्रजीकृत । काशी ० १२ ०

१४७५ **वृद्धिश्राद्ध**—इसमें वृद्धिश्राद्धादिनिर्णय, नान्दीमुखश्राद्ध, आभ्युदयिकश्राद्धादिप्रयोग हैं । मुम्बई ० ६ ०

१४७६ **वेदोक्त गृहवास्तु पद्धति**— मुम्बई ० ८ ०

१४७७ **श्रीवेदोक्तसंस्कारप्रयोगकर्मावली** (शुक्लयजुर्वेदीयानाम्)—उमाशंकर नर्मदाशंकर सिद्धपुरकरकृत सजिल्द । २ ० ०

१४७८ **वेदोक्तसर्वपूजाप्रयोगः**—दुर्गाशंकरकृत । मूल । ० ३ ०

१४७९ **वैदिकपद्धति**—प्रो० लक्ष्मीधर एम० ए० कृत भाषाटीकासहित । देहली २ ० ०

१४८० **वैदिकसंध्याभाष्यम्**—श्रीहरिप्रसादवैदिकमुनिकृतम । मुम्बई ० ८ ०

१४८१ **श्रीवैदिकसर्वदेवपूजाप्रकाशः**—पुराणोक्तमन्त्रसहितः । प्रयोजकः शुक्लावटंक उमाशंकर नर्मदाशंकर मुडेटीकर । मुम्बई ० ३ ०

१४८२ **वैवाह-पद्यावली**—भाषाटीका समेत । अर्थात् कन्यापक्ष और वरपक्ष के उत्तमोत्तम काव्य से प्रशंसात्मक वाक्यों का व्यवहार दर्शाया गया है । ० १२ ०

१४८३ **वैशाख उद्यापनविधि**—मूल । ० २ ०

१४८४ **वैश्यसंध्यावन्दनम्**— ० १ ०

१४८५ **वैश्वदेवबलिहरण मंडलसहित**— मुम्बई ० १ ०

१४८६ **श्री वैष्णववाजसनेयि द्विजाति संक्षिप्तसन्ध्याविधि**— मुम्बई ० १ ०

१४८७ **वैष्णवाह्निक (याजुष)**— मद्रास ० ८ ०

१४८८ **व्यासपूजाविधि**—शंकराचार्यकृत । मूल । ० २ ०

१४८९ **व्रतकल्पद्रुमः**—(जगन्नाथपरशुरामद्विवेदिसंगृहीतः) उद्यापनविधिसहितः सूरत १ ४ ०

१४९० **व्रतकोशः**—१ भागः । पं० जगन्नाथशास्त्रिसंकलितः । प्रयाग ४ ० ०

१४९१ **व्रतराज**—विश्वनाथशर्माकृत माधवाचार्यकृत भाषा टीका सहित । मुम्बई ६ ० ०

१४९२ **व्रतार्क**—महेशदत्त त्रिपाठी कृत । तत्कृत भाषा टीका सहित । व्रतों की कथा, पूजा, उद्यापनादि विधियों का विधान । लखनऊ २ ८ ०

१४९३ **व्रतोत्सवपद्धति**—मधुसूदनवाजपेयी कृत । भाषा टीका सहित । इटावा ० ५

१४९४ **व्रतोद्यापनकौमुदी**—शंकरपंडितकृत । मूल । मुम्बई १ ०

१४९५ **व्रतोद्यापनप्रकाश**—चतुर्थीलालकृत । १ १२

१४९६ **व्रात्यसंस्कारनिरूपण**—नन्दकुमार भट्टकृता । भाषा टीका सहित मुम्बई ० ३

१४९७ **श्रीशंकरध्यानमाला**—कविवर लक्ष्मीनारायणशर्म विनिर्म्मिता । स्वकृत प्रभाख्यव्याख्योपेता । बनारस ० ६

१४९८ **शतचण्डीयज्ञविधानम्**— चूरू ६ ८

१४९९ **शय्यादानपद्धति**— ० २

१५०० **शांडिल्यसंहिता**—वैष्णवोपयोगी पूजाप्रकरण । २ ०

१५०१ **शान्तिकल्पद्रुमः**—वास्तुशान्तिसहितः । जगन्नाथपरशुरामद्विवेदिकृत । सूरत ० १२

१५०२ **शान्तिकांडप्रदीप** (यजुःशाखीय)—खुले पत्रे । मुम्बई १ ४

१५०३ **शान्तिपद्धति**—इसमें २२ शान्तियों और अनेक दानों की विधि है । मुरादाबाद १ ४

१५०४ **शान्तिप्रकाश**—चतुर्थीलालकृत । इसमें पहिले गणपत्यादि पूजन, पुण्

वाचन, कलशस्थापनादि और विनायकादि ३० शान्तिप्रयोग तथा वास्तुशान्ति प्रयोगादि समन्त्रक हैं, मूलमात्र, खुले पत्रे। मुम्बई ३ ० ०

१५०५ **शान्तिमार्तण्ड**—शुक्लयजुर्वेदीय। प्रथमभाग। आनन्दवन १ ० ०

१५०६ **शान्तिसार**—इसमें सब प्रकार की शान्ति लिखी गई है। मूलमात्र खुलेपत्रे। मुम्बई २ ० ०

१५०७ **शिलास्थापनविधि**— ० २ ०

१५०८ **शिवपूजनपद्धति**—मूल। मुम्बई ० २ ०

१५०९ **शिवमहापूजापद्धतिः**—मूलमात्र खुलेपत्रे मुम्बई ० ४ ०

१५१० **शिवार्चनपद्धति**—वेदोक्त। वैदिक मन्त्रों से शिवजी का न्याय समेत सांगोपांग पूजाविधान प्रयोग। मुम्बई ० ४ ०

१५११ **शुक्लयजुःशाखीय कर्म्मकाण्डप्रदीप**—विविधरङ्गरञ्जितमण्डलादि सहित। इसमें परिभाषा, संस्कार, आह्निकाचार, मिश्रप्रयोग और अन्त्येष्टिप्रकरण हैं। मुम्बई ४ ८ ०

१५१२ **शुक्लयजुर्वेदीयानामाह्निकम्**—इसमें प्रातःकाल से शयनपर्यन्त के स्नान, सन्ध्या, तर्पण, पूजादि प्रयोग हैं। मुम्बई १ ० ०

१५१३ **शुद्धश्राद्ध**—मूलमात्र लाहौर ० २ ०

१५१४ **शूद्रदशगात्रैकादशाहवृषोत्सर्गसपिण्डनश्राद्धपद्धति**—वायुनन्दनमिश्रेण विरचिता। काशी ० ३ ०

१५१५ **शूद्रविवाहविधि**— मुम्बई ० २ ०

१५१६ **शूद्रश्राद्धपद्धति**—चतुर्थीलालकृत पुराणोक्त मन्त्रों से शूद्रों की श्राद्धविधि। मुम्बई ० १० ०

१५१७ **शैवसुधाकर**—सदानन्दकृत। पं० विश्वेश्वरनाथ कृतभाषाटीकासहित, शिवपूजन की विधि और उससे सम्बन्ध रखने वाली बातों का सविस्तर और सप्रमाण वर्णन। २ ० ०

१५१८ **शौनकीयम्**—अत्र द्विजादिभिरनुष्ठेयाः कतिपयानामृचां कल्पाः, भूपतिभिराचरणीयानि कृत्यानि च संक्षिप्यन्ते। मद्रास ० ८ ०

1519 Der Śraddhakalpa im Harivaṃśa—und in fünf anderen Puranen Von J. D. L. de Vries-Foreign.

१५२० **श्राद्धकल्पलता**—नन्दपण्डितकृता। अत्र पितॄणां श्राद्धीयान्नादिप्राप्तिः कथं भवतीति सप्रमाणं निरूपितम्। बनारस ४ ८ ०

१५२१ **श्राद्धकौमुदी**—पं० जगन्नाथद्विवेदिकृत। सूरत १ ० ०

१५२२ **श्राद्धक्रियाकौमुदी**—कविकंकणाचार्य विरचित। कलकत्ता ५ ४ ०

१५२३ **श्राद्धचन्द्रिका**—भारद्वाज दिवाकरभट्टकृत। सम्पूर्णा। बनारस ३ ० ०

१५२४ **श्राद्धतत्त्व**—श्राद्ध करने से क्या लाभ होता है और श्राद्ध क्यों करना चाहिये इत्यादि विषयों को इस में युक्ति और शास्त्र के प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। मुरादाबाद ० ३ ०

१५२५ **श्राद्धप्रकाश**—अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी कृत भाषाटीका सहित। कलकत्ता ० ६ ०

१५२६ **श्राद्धप्रयोग**—यजुर्वेदीय। मूल। ० ३ ०

१५२७ **श्राद्धप्रश्नोत्तरावली**—भाषाटीकासहित। ० ६ ०

१५२८ **श्राद्धमञ्जरी**—केलकरोपाह्वबापूभट्टविरचिता। अत्र सर्वश्राद्धानां, तत्प्रयोगाणां तदङ्गभूततिथ्यादिनां च शास्त्रार्थनिर्णयपूर्वकं विचारोऽस्ति। पूना २ ० ०

१५२९ **श्राद्धमार्तण्ड**—(शुक्लयजुः-कण्वशाखीय)। अर्थात् श्राद्धदेश, श्राद्धकाल, क्षयाहनिर्णय इत्यादि ६० परिभाषा प्रकरण, असली विषय, और सांवत्सरिक श्राद्ध, हिरण्य-सांकल्पिक ब्राह्मणार्चनादि ७५ श्राद्धप्रकरण स्पष्ट रीति से दिये गए हैं। आनन्दवन १ ० ०

१५३० **श्राद्धमीमांसा**—भीमसेनशर्मा कृत। इटावा ० १२ ०

१५३१ **श्राद्धविधान**—वस्तीरामसंगृहीत तत्कृतभाषाटीकासहित। मुम्बई ० ७ ०

१५३२ **श्राद्धविवेकः**—रुद्रधरकृतः। काशी १ ० ०

१५३३ **श्राद्धविवेक**—मूल। रुद्रधरकृत इस में प्रमाणयुक्त सब प्रकार के श्राद्धों की विधि है। मुम्बई १ ० ०

१५३४ **श्राद्धसंग्रहः**—अर्थात नूतनश्राद्धविवेक मूल श्रीयुत वायुनन्दनमिश्रप्रणीत। बनारस १ ८ ०

१५३५ **श्रावणीप्रयोग**—मूल। यजुर्वेदीय। मुम्बई ० १० ०

१५३६ **श्रीदानदीपिका**—पं० श्रीसुदामामिश्रकृत भाषाटीकासहिता। काशी ० ८ ०

१५३७ **श्रौतसर्वस्व**—अथवा श्राद्धकृत्यमीमांसा, पिण्डपितृयज्ञमीमांसा और महालय-श्राद्धमीमांसा भाषाटीकासहित। १ ० ०

१५३८ **श्रौतोल्लासः**—श्रीशिवप्रसादभट्टविरचितः सत्यनारायणपूजाकथासहितः। सूरत ० १२ ०

१५३९ **षट्कर्माह्निकप्रयोग**—विठ्ठलरणछोड़द्विवेदिकृत। अहमदाबाद ० ८ ०

१५४० **षोडशसंस्कारविधि**—पं० भीमसेनकृत भाषाटीकासहित। इटावा २ ८ ०

१५४१ **संकल्पकल्पना**—इसमें वर्षभर के बहुत से व्रतदानादि के संकल्प हैं। मूलमात्र। मुम्बई ० ६ ०

१५४२ **संकल्पसारप्रभा**—लेखक पं० गौरीशंकरशास्त्री। ० ५ ०

१५४३ **संस्कारकौस्तुभ**—अनन्तदेवभट्ट विरचित (पोथी साइज)। यह संस्कार-विषयक सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है। मुम्बई २ ० ०

१५४४ **संस्कारगणपतिः**—पारस्करगृह्यसूत्रस्य विस्तृतविवरणरूपः। पं० रामकृष्णकृतः। ७ खण्डाः। काशी १० ८ ०

१५४५ **संस्कारदीपकः**—पारस्करगृह्यानुसारी। साङ्गोपाङ्ग विवाहगर्भाधानादि-

समावर्तनान्त-संस्कारनिरूपणात्मकः कर्मविनियुक्तसंहितागृह्यसूत्रोक्तमन्त्रव्याख्यासहितः । पं० नित्यानन्दपर्वतीयविरचितः । ३ भाग । ८ ० ०

१५४६ **संस्कारपद्धतिः**—भट्टगोपीनाथदीक्षितविरचितोपोद्घातसहिता । अभ्यंकरोपाभिधभास्करशास्त्रिविरचिता । हिरण्यकेशिशाखीयानां स्मार्तयाज्ञिकविषयकोऽयं ग्रन्थः । अत्र गर्भाधानादिविवाहान्ताः संस्कारास्तत्प्रसंगप्राप्तं पञ्चमहायज्ञादिकं च शास्त्रार्थनिर्णयप्रयोगपाठपूर्वकं संगृहीतमस्ति । पूना २ ८ ०

१५४७ **संस्कारपद्धति**—बालकृष्णशास्त्री कृत हिन्दी टिप्पण सहित । मुरादाबाद १ ८ ०

१५४८ **संस्कारप्रकाश**—चतुर्थीलालकृत । गौड संप्रदाय का कर्मकाण्डी दश संस्कारों का अत्युत्तम ग्रन्थ मूलमात्र । मुम्बई २ ० ०

१५४९ **संस्कारभानुः**—पं० भानुदत्त कृत । तत्कृत भाषाटीकासहित । लाहौर ० ५ ०

१५५० **संस्कृतभास्कर** (शुक्लयजुर्वेदीय)—गर्भाधानादि से लेकर सब प्रकार के संस्कारों की विधि, प्रयोग और मन्त्रसहित सर्व त्रैवर्णिक यज्ञोपवीत । बालकों को अत्युपयोगी है । मुम्बई ३ ८ ०

१५५१ **संस्कारमयूख**— मुम्बई ० १२ ०

१५५२ **संस्कारमार्त्तण्डः**—श्रौतस्मार्तधुरन्धरश्रीमार्त्तण्डसोमयाजिविरचितः, सार्धशताधिकविषयोपेतश्च । मद्रास २ ० ०

१५५३ **संस्काररत्नमाला**—श्री भट्टगोपीनाथ दीक्षित विरचित । २ भाग । पूना १२ ८ ०

१५५४ **संस्काररत्नमाला** (गोपीनाथभट्टीया)—अपूर्ण । २ खण्डौ । काशी ३ ० ०

१५५५ **संस्कारविधि**—पं० भीमसेन कृत तत्कृत भाषाटीका सहित । इटावा २ ८ ०

१५५६ **सकामशिवपूजन विधान**—भाषाटीका समेत । वैदिक तान्त्रिक मन्त्रों से शिवपूजन । मुम्बई ० ५ ०

१५५७ **सनातनसंस्कारविधि**—सरल हिन्दी विवेचन सहित । सजिल्द । मुरादाबाद २ ८ ०

१५५८ **सन्ध्या**—मूल लाहौर ० ३ ०
भाषाटीकासहित ० २ ०

१५५९ **सन्ध्या**— गोरखपुर ० ० ६

१५६० **सन्ध्या**—क्षत्रियों की । मुम्बई ० १ ०

१५६१ **सन्ध्या**—वैश्यों की । मुम्बई ० १ ०

१५६२ **सन्ध्या (वैष्णवी)**— मुम्बई ० १ ०

१५६३ **सन्ध्यादर्पणः**—चतुर्भागात्मकः। कूर्माचलीयपण्डितदेवीदत्तज्योतिर्विदासंगृहीतोऽनुवादितश्च। प्रयाग २ ० ०

१५६४ **संध्याप्रदीप**—गोविन्दवल्लभ पन्त। लखनऊ १ ० ०

१५६५ **सन्ध्याभाष्यसमुच्चयः**—१खण्डदीक्षितविरचितबह्वृचसन्ध्यामंत्रार्थदीपिकाप्रभाख्यव्याख्यासहित, २ बह्वृचसन्ध्यापद्धतिभाष्य, ३ मध्वमतानुयायिमध्वाचार्यविरचितबह्वृचसन्ध्याभाष्य (सन्ध्यामन्त्रवृत्तिः), ४ श्रीकृष्णपंडितविरचिततैत्तिरीयसन्ध्याभाष्यसपरिशिष्ट, ५ भट्टोजीदीक्षितविरचिततैत्तिरीयसन्ध्याभाष्य, ६ सायणाचार्यरचिततैत्तिरीयसन्ध्यामन्त्रव्याख्या।

पूना २ ० ०

१५६६ **सन्ध्या यजुर्वेदी**—मूल। मुम्बई ० १ ६

भाषाटीकासहित ० १ ६

१५६७ **सन्ध्यावन्दन**—तीन टीकाओं समेत। मुम्बई ० ८ ०

१५६८ **सन्ध्यावन्दनम्**—यजुर्वेदीयम्। मद्रास ० १ ०

१५६९ **श्रीसामवेदीयत्रिकालसन्ध्याप्रयोगः**—श्रीदुर्गाशंकरोमाशंकरशर्म्ममुडेटीकरकृतः। अत्र गोभिलप्रणीतं सन्ध्यासूत्रं सामवेदीय पुरुषसूक्तं च संगृहीतमस्ति।

मुम्बई ० २ ०

१५७० **सन्ध्योपासन** (सामवेदीय)—मूलमात्र। मुम्बई ० १ ०

1571 Sandhyavandana or the Daily Prayers of Brahmins—By S. E. Gopalacharlu. Bombay 0 12 0

१५७२ **सन्ध्यावन्दनभाष्यम्**— मद्रास ० ६ ०

१५७३ **सन्ध्यावन्दनभाष्य**—इस संस्कृत भाष्य में समस्त प्राणायामादि विषयों का निर्णयपूर्वक विशद विवेचन और मन्त्रों का स्पष्ट अर्थ सुविस्तृत रूप से किया गया है।

मुम्बई ० ८ ०

१५७४ **सन्ध्यावन्दनभाष्य**—कृष्णयजुर्वेदीय। मद्रास ० ८ ०

१५७५ **सन्ध्यावन्दनविधि**—भाषा में। मद्रास ० ३ ०

१५७६ **सन्ध्यावन्दनविधि**—पं० हरदेवशर्मकृत संस्कृत भाषाटीकासमेत।

मुम्बई ० ८ ०

१५७७ **सन्ध्याविधि**—यजुर्वेदी सुबोध भाषाटीकासहित। मुम्बई ० ४ ०

१५७८ **सन्ध्या सटीक**—स्वामी परमानन्द उदासीवर्य्यविरचित परमानन्दीटीकासहित।

लाहौर ० २ ६

१५७९ **सन्ध्या**—ला० जंगीरामकृत भाषाटीकासहित। लाहौर ० १ ३

१५८० **सन्ध्या का रहस्य**—पं० चमूपति, एम० ए०, कांगड़ी ० ७ ६

१५८१ **सन्ध्योपासन**—भाषा टीका सहित। मुम्बई ० १ ६

१५८२ **त्रिकालसन्ध्योपासनविधिः**—पं० भीमसेनकृत भाषा टीका सहित।

इटावा ० ० ६

१५८३ **सन्ध्योपासना**—ले० श्रीपाददामोदर सातवलेकर । औंध १ ८ ०

१५८४ **सन्ध्या से आयुवृद्धि**— ० ० ६

1585 Philosopby of Brahmanical Sandhya Vandana— Bombay 0 12 0

१५८६ **सपात्रिकपार्वणश्राद्धप्रयोग**—कन्यागतसूर्यस्थ के अपर पक्ष में महालय श्राद्धप्रयोग । मूलमात्र । मुम्बई ० २ ०

१५८७ **सपात्रिकपार्वणश्राद्धप्रयोग**—भाषा टीका समेत । मुम्बई ० ४ ०

१५८८ **सपात्रिकपार्वणश्राद्धप्रयोग**—संस्कृत टीका समेत । मुम्बई ० ८ ०

१५८९ **सपिण्डीनिर्णयेष्टिका**—इसमें सपिण्डों के आशौच और सपिण्डी श्राद्ध में अधिकार आदि विषय सप्रमाण वर्णित हैं । खुले पत्रे । मुम्बई ० ४ ०

१५९० **सर्वतोभद्रचक्र**—रंगीन । मुम्बई ० १ ६

१५९१ **सर्वदेवप्रतिष्ठाप्रकाश**—पं० चतुर्थीलाल कृत । इसके संग्रह से प्रतिष्ठा विषय में दूसरे ग्रन्थ की आवश्यकता नहीं । और प्रतिष्ठोपयोगी अनेक प्रकार के कुण्ड, मण्डल, यन्त्र आदि के चित्र बनाने तथा रंग पूरने की विधि भी है । मुम्बई २ ० ०

१५९२ **सर्वपूजा**—इसमें पुराणोक्त मन्त्रों से देवपूजा प्रयोग है । मुम्बई ० २ ०

१५९३ **सर्वपूजा**—सूक्ष्माक्षर । मुम्बई ० १ ०

१५९४ **सापिण्ड्यकल्पलतिका**—सदाशिवदेव(आपदेव)कृता । नारायणदेवकृत-टीकासहिता । काशी १ ४ ०

१५९५ **सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग**—मृतकों के क्षयतिथिश्राद्धप्रयोग । मुम्बई ० २ ०

१५९६ **सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग**—भाषाटीका सहित । ० ३ ०

१५९७ **सामवेदस्य दाहविधिः**—षट्पिण्डः विधिविधानसहितः । ० ८ ०

१५९८ **सूरिसर्वस्व**—श्री गोविन्द कवि भूषण सामन्तरायविरचित । कलकत्ता २ ४ ०

१५९९ **स्मार्त्ताह्निकम्**—रामस्वामिकृतम् । मद्रास ० ८ ०

१६०० **स्वस्तिवाचन**—(पुण्याहवाचन) प्रायः समस्त शुभ कर्मों में पढ़ा जाता है । मुम्बई ० १ ०

१६०१ **श्रीहरिद्वारादितीर्थकर्मकाण्डादिसंग्रह**— मुम्बई ० ४ ०

१६०२ **हिरण्यकेशीय** (आपस्तम्बीय) **नित्यविधि**— मुम्बई ० ५ ०

१६०३ **हेमाद्रिस्नानप्रयोग**— मुम्बई ० १ ६

1604 Daily Practice of the Hindus—By Srisa Chandra Vasu. It contains the morning, the mid-day & even-

ing duties. Text in Devanagari with English translation. Allahabad 3 0 0

वेदान्त-ग्रन्थाः

१६०५ अग्रदास जी की कुण्डलियां— मुम्बई ० ४ ०

1606 Ajñāna (अज्ञान) or the Theory of Ignorance by G. R. Malkani, R. Das and T. R. V. Murti. Calcutta 6 0 0

१६०७ अणुभाष्यम्—गोस्वामिपुरुषोत्तमविरचितभाष्यप्रकाशाख्यव्याख्यासमेतम्। बनारस २२ ८ ०

१६०८ अणुभाष्य (ब्रह्मसूत्रभाष्य)—श्रीवल्लभाचार्यप्रणीत पं० श्रीधरशर्म-विरचित बालबोधिनीटीका समेत। २ भाग मुम्बई ६ ४ ०

१६०९ अणुव्याख्यान (ब्रह्मसूत्र)—श्रीमदानन्दतीर्थ भगवत्पादाचार्य विरचित। मुम्बई २ १२ ०

१६१० अद्वैतचन्द्रिका—सुदर्शनाचार्यकृता। काशी ० ८ ०

१६११ अद्वैतचिन्ताकौस्तुभः—महादेव सरस्वती विरचितः सम्पूर्णः। कलकत्ता ३ १२ ०

१६१२ अद्वैतचिन्तामणिः—रङ्गोजिभट्टकृत। प्रयाग १ १२ ०

१६१३ अद्वैततरणिः—नटेशार्यविरचितः। गौडगिरिवेंकटरमणाचार्यकृतस्य चन्द्रिका-प्रकाशप्रसरस्य खण्डनात्मकः। मद्रास १ ८ ०

१६१४ अद्वैतदीपिका—गोपालशास्त्रिकृता। २ भाग। बनारस ८ ८ ०

१६१५ अद्वैतदीपिका—कामाक्षीविरचिता। मद्रास ० ८ ०

१६१६ अद्वैतब्रह्मसिद्धिः—काश्मीरिकश्रीसदानन्दयतिकृता। कलकत्ता ३ १२ ०

Advaita Brahma Siddhi (in Devanāgarī)—with critical notes of Vāmana Shastri and Gurucharan Tark-Darshan-tīrtha. Calcutta 3 12 0

१६१७ अद्वैत(ब्रह्म)सुधा—खुले पत्रे। मुम्बई ० १२ ०

१६१८ अद्वैतब्रह्मसुधाकारिका—सटीक खुले पत्रे। मुम्बई ० १२ ०

१६१९ अद्वैतमकरन्दः—लक्ष्मीधरविरचितः। स्वयंप्रकाशयति-विरचितव्याख्या-समेतः। With an English Introduction by R. Krishnaswami Sastri. मद्रास ० ६ ०

१६२० अद्वैतमार्त्तण्ड—अनन्तकृष्णशास्त्रिकृत। कलकत्ता २ ० ०

१६२१ अद्वैतरत्नरक्षणम्—मधुसूदनीयम्। मुम्बई ० १० ०

१६२२ अद्वैतविद्यातिलकम्—समरपुङ्गवदीक्षितकृतः। धर्मय्यदीक्षितकृत 'दर्पण' व्याख्यानेन समन्वितः। प्रथमो भागः। प्रयाग १ ४ ०

१६२३ **अद्वैतविवेचन**—भाषा। मद्रास १ ६ ०

१६२४ **अद्वैतसंग्रह**—भाषाटीका। देहली ० १२ ०

१६२५ **अद्वैतसाम्राज्यम्**—खुले पत्रे। मुम्बई ० ८ ०

१६२६ **अद्वैतसिद्धान्त-गुरुचन्द्रिका**—श्रीपरमहंसपरिव्राजरामब्रह्मामश्रीकृष्णानन्देन्द्रसरस्वतीभगवत्पादशिष्यश्रीमच्चन्द्रिकाचार्याख्ययतीश्वर-विरचिता अमृतरसझरीनामकव्याख्योपेता सजिल्द। मुम्बई ३ ८ ०

१६२७ **अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम्**—गौडब्रह्मानन्दसरस्वतीविरचितम्। 'नृसिंहविज्ञापन' नृसिंहाश्रमविरचितम् (उभे पुस्तके एकत्र बद्धे)। काशी १ १२ ०

१६२८ **अद्वैतसिद्धान्तवैजयन्ती**—त्र्यम्बकशास्त्रिविरचितः। मद्रास ० ८ ०

१६२९ **अद्वैतसिद्धान्तसारसंग्रहः**—श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीनारायणाश्रमविरचितः। मुम्बई ० ६ ०

१६३० **अद्वैतसिद्धिः**—मधुसूदनीया। विठ्ठलेशीयव्याख्योपबृंहित-गौडब्रह्मानन्दीव्याख्यासनाथीकृता बलभद्रप्रणीतसिद्धिव्याख्या-अनन्तकृष्णशास्त्रिसंगृहीतन्यायामृताद्वैतसिद्धितरङ्गिणीलघुचन्द्रिकासङ्ग्रहश्च। मुम्बई १० ० ०

१६३१ **अद्वैतसिद्धिः**—श्रीमधुसूदनसरस्वतीकृता ब्रह्मानन्दसरस्वतीकृत'गुरुचन्द्रिका'-व्याख्यासहिता। मद्रास ४ ४ ०

१६३२ **अद्वैतसिद्धि**—श्रीरामेश्वरदत्तप्रणीत सरलानामक भाषाटीका सहित। २ भागों में। बड़ौदा १० ० ०

१६३३ **अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसारः**—पं०प्रवरश्रीसदानन्दव्यासप्रणीतस्तत्कृतव्याख्यासमलंकृतः। ३ खण्डों में सम्पूर्ण। बनारस ४ ८ ०

१६३४ **अद्वैतानुभवप्रकाश**—(श्रीराघवानन्द जी) भाषाग्रन्थ। मुम्बई ० १० ०

१६३५ **अद्वैतामृत**—भाषाटीका। देहली ० १० ०

१६३६ **अद्वैतामोदः**—अभ्यंकरोपाह्ववासुदेवशास्त्रिप्रणीतः। पूना २ ० ०

१६३७ **अधिकरणसंग्रह**—श्रीनिर्भयरामभट्टविरचित। मुम्बई ० ५ ०

१६३८ **अध्यात्मचण्डी**— कलकत्ता ० १० ०

१६३९ **अध्यात्मप्रकाश**—श्रीशुकदेव जी प्रणीत कवित्त, दोहे, सोरठे, छन्द, चौपाई इत्यादि में। मुम्बई ० ३ ०

१६४० **अध्यात्मप्रदीपिका**—मूलमात्र। मुम्बई ० ६ ०

१६४१ **अध्यात्मविद्योपदेशविधिः**—श्रीमच्छंकराचार्यप्रणीतः। किंज्योतिरिति पद्यस्य परमहंसश्रीमत्स्वयंप्रकाशमुनिकृता स्वात्मदीपव्याख्या च। मुम्बई ० ४ ०

१६४२ **अनादितत्त्वम्**—(षण्णामनादित्वम्) कवितार्किकदर्शनाचार्यश्रीनृसिंहदेवशास्त्रिप्रणीतम्। अत्र दयानन्दमतखण्डनपूर्वकं षण्णां पदार्थानामनादिता प्रगाढाभिर्युक्तिभिरुपपादिता। लाहौर ० १२ ०

१६४३ **अनुभवप्रकाश**—योगेश्वर श्री १०८ वनानाथ जी कृत । मारवाड़ी भाषा। सजिल्द । मुम्बई १ ० ०

१६४४ **अनुभवप्रकाश भाषा**—पक्षपातरहित—कमलीवाले बाबाजी कृत। इसमें चारवेद, षट्शास्त्रों का सार और अठारह पुराणों की कथा आदि का अध्यात्म विद्या पर अर्थ लिखा गया है । सजिल्द । मुम्बई ५ ० ०

१६४५ **अनुभवसार**—स्वामी स्वयंप्रकाश जी विरचित । मुम्बई ० ८ ०

१६४६ **अनुभवानन्दलहरी**—मूलमात्र । मुम्बई ० ३ ०

१६४७ **अनुभूतिप्रकाश**—विद्यारण्यस्वामि कृत । खुले पत्रे । मुम्बई १ ० ०

१६४८ **अनुरागसागर**—कबीरदर्शन ग्रन्थमाला की द्वितीय मणिका । श्रीयुगलदास जी द्वारा संगृहीत । भाषा पद्य मुम्बई १ ८ ०

१६४९ **अनुव्याख्यानम्**— मद्रास २ १२ ०

१६५० **अन्तःकरणप्रबोधः**—वल्लभाचार्यविरचित । मुम्बई ० १० ०

१६५१ **अपरोक्षानुभूतिः**—श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकराचार्यविरचिता । परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीविद्यारण्यमुनिविरचितया व्याख्यया समलंकृता । कलकत्ता ० ६ ०

१६५२ **अपरोक्षानुभूतिः**—विद्यारण्यमुनिविरचितया दीपिकया संवलिता । मुम्बई ० ६ ०

१६५३ **अपरोक्षानुभव**—भाषा टीका सहित । लखनऊ ० १ ०

१६५४ **अपरोक्षानुभूति**—भाषा टीका सहित । गोरखपुर ० २ ६

१६५५ **अपरोक्षानुभूतिः**—श्रीशंकराचार्यकृत और स्वामी विद्यारण्य मुनिकृत दीपिका टीका सहित तथा पं० रामस्वरूप कृत भाषा टीका समेत । मुम्बई ० १२ ०

१६५६ **अपरोक्षानुभूति**—श्लोक और भाषाटीकासहित । मुरादाबाद ० ४ ०

1657 Aparokṣānubhūti—or Direct Cognition of the Unity of Jīva & Brahma. Translated into English by Manilal Nabubhai Dvivedi. Bombay 0 6 0

१६५८ **अपरोक्षानुभवदर्पण**—Herein the whole of the Vedanta is presented pictorially, printed in 5 colours, with a copy of the पञ्चीकरणम् । Madras 1 0 0

१६५९ **श्रीमदप्पय्यदीक्षितेन्द्रविजयः**—By K. V. Subrahmania Sastriar. Madura 1 2 0

१६६० **अभिनवकौस्तुभमालादक्षिणमूर्त्तिस्तवौ**—श्रीकृष्णलीलाशुकमुनि-विरचित । मद्रास ० ३

६१ **अभिलाखसागर**—भाषा में स्वामी अभिलाखदास उदासीकृत । इसमें

वन्दनविचार, ग्रन्थविचार, मार्गविचार, भजनविचार, जडब्रह्मविचार, चैतन्यब्रह्मविचार, निराकारब्रह्मविचार, मिथ्याब्रह्मविचार, अहं ब्रह्मविचार, ब्रह्म विचार, वर्त्तमानब्रह्मविचारादि विषय अच्छी रीति से वर्णित हैं। सजिल्द। मुम्बई २ ० ०

१६६२ **अमृतधारा**—वेदान्त भाषा छन्दों में भगवान्दासनिरञ्जनीकृत। मुम्बई ० १२ ०

१६६३ **अर्जुनजीवन्मुक्तिप्रकाश**—भाषाटीकासहित। जालन्धर ० १० ०

१६६४ **अवतारसिद्धि**—पं० यमुनाशंकरनागरद्वारा रचित। लखनऊ ० २ ०

१६६५ **अवधूतलक्षणम्**—पं० हरिशंकरशास्त्री कृत भाषाटीकासहित। हरिद्वार ० १ ०

१६६६ **अष्टावक्रसंहिता** (अष्टावक्रमुनिकृत)—सविस्तर व्याख्यासहित। कलकत्ता १ ० ०

१६६७ **अष्टावक्रसंहिता**—ब्रह्मचारी नर्मदानन्दजीकृत भाषाटीकासहित। मुरादाबाद ० ८ ०

१६६८ **अष्टावक्रगीता**—भाषाटीकासहित। मुम्बई १ ० ०

१६६९ **अष्टावक्रगीता**—भाषाटीकासहित। टीकाकारसुप्रसिद्ध बाबू जालमसिंहजी। लखनऊ १ ८ ०

1670 Ātmajñāna--Knowledge of the self. By T. L. Vaswani. Madras. 1 8 0

१६७१ **आत्मदर्शन**—गुरुशिष्यसंवाद भाषा। शिवानन्दब्रह्मचारी निर्मित। पूना १ ४ ०

१६७२ **आत्मपुराणम्**—शंकरानन्दप्रणीतम्। सटीकम्। खुले पत्रे। मुम्बई १२ ० ०

१६७३ **आत्मपुराण**—भाषा में दशोपनिषद् का भावार्थ, श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य चिद्घनानन्दस्वामीकृत। खुले पत्रे। मुम्बई १६ ० ०

१६७४ **आत्मप्रकाश**—भाषा। ० ३ ०

१६७५ **आत्मबोधः**—भाषाटीकासहित। मथुरा ० ३ ०

१६७६ **आत्मबोध, तत्त्वबोध, वेदस्तुति**—भाषा। मुम्बई ० ४ ०

१६७७ **आत्मबोधः**—सान्वय भाषार्थविभूषितः। काशी ० ४ ०

१६७८ **आत्मबोध**—भाषाटीकासहितः। मुम्बई ० ५ ०

1679 Atmavidya—or a few thoughts on the Science of the self in seven discourses by G. Ram Chanda. Madras 2 0 0

१६८० **आत्मविद्याविलासः**—सदाशिवेन्द्रकृतः। मद्रास ० २ ०

१६८१ **आत्मसाक्षात्कार की कसौटी**—बाबा नगीनासिंह कृत सर्वसाधारण (popular) संस्करण लखनऊ ० ८ ०

1682 Ātmānātma-viveka and Ātmabodha—of Shri Shankaracharya by M. M. Chatterji Bombay 0 6 0

१६८३ आत्मानुभवशतक—गिरिधर उदासी कृत भाषा। लखनऊ ० ३ ०

१६८४ आनन्दलहरी—चन्द्रिकाख्यया व्याख्यया सहिता। मद्रास १ ८ ०

1685 Wave of Bliss (आनन्दलहरी)—translated with commentary by Arthur Avalon Madras 1 8 0

१६८६ आनन्दामृतवर्षिणी—भाषा सजिल्द। लखनऊ ० १२ ०

१६८७ आनन्दामृतवर्षिणी—आनन्दगिरिस्वामिकृता। मुम्बई १ ० ०

१६८८ इष्टसिद्धिः—अव्ययात्मशिष्यविमुक्तात्मकृता सटीका। बड़ौदा १४ ० ०

Iṣṭa-siddhi—Critically edited with Introduction & Notes by M. Hiriyanna. Baroda 14 0 0

१६८९ ईश्वरदर्शन—श्री स्वामी ब्रह्मानन्द विरचित। मुम्बई १ ४ ०

१६९० ईश्वरदीपिका—स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वतीकृत भाषाटीकासहित। लखनऊ ० ३ ६

१६९१ ईश्वरप्रतिपत्तिप्रकाशः—मधुसूदनसरस्वतीकृतः। मद्रास ० ४ ०

१६९२ ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी—सव्याख्या। २ भागौ। कश्मीर ८ ० ०

१६९३ उदासीनसाधुस्तोत्र—देवतीर्थकृत और ब्रह्मानन्दकृत। ० ३ ०

१६९४ उपदेशरत्नमाला—श्रीरम्यजामातृमहामुनिप्रसादितद्रविडोपदेशरत्नमालानुसारेण श्रीमदाचार्यपौत्राभिरामवरगुरुभिर्विरचिता। मद्रास ० ४ ०

१६९५ उपदेशसाहस्री—श्रीमच्छंकराचार्यकृता रामतीर्थकृतपदयोजनिकाटीकासहिता विषयानुक्रमणिकया, श्लोकानुक्रमणिकया, नैष्कर्म्यसिद्धिधृतश्लोकप्रदर्शनेन, अत्रोदाहृतग्रन्थान्तरस्थवाक्यानुक्रमणिकया, शुद्धिवृद्धिभ्यां च रहिता। मुम्बई १ ८ ०

१६९६ उपदेशसाहस्री—श्रीमच्छंकराचार्यकृता। रामतीर्थकृतटीकासहिता। मुम्बई १ ८ ०

१६९७ उपाधिखण्डनम्—श्रीनिवासतीर्थीयसहितम्। मद्रास १ ६ ०

१६९८ उपासना—भाषा में इसमें साकार सगुण, निर्गुण आदि कई प्रकार की उपासनाओं का वर्णन है। आगरा ० ८ ०

१६९९ उपासनातत्त्व— मुरादाबाद ० ३ ०

१७०० ऊर्ध्वपुण्ड्रधारणविधिः—भाषा में। काशी ० २ ०

१७०१ कर्म, ज्ञान, भक्ति पर व्याख्यान— मुरादाबाद ० ४ ०

१७०२ कर्ममूलवृत्त—(chart) मुम्बई ० १ ०

1703 Karma-Yoga and Bhakti-Yoga—By Swami Vivekanand. 1 8 0

१७०४ कल्याण का मार्ग—'वेदान्तकेसरी' में छपे कल्याणप्रद लेखों का संग्रह आगरा १ ८ ०

१७०५ कार्याधिकरणतत्त्वम्— काञ्ची १ ० ०

१७०६ कार्याधिकरणवादः—२ भागों में। कांची १ १२ ०

१७०७ काव्यसंग्रह—सुन्दरदासकृत। मुम्बई २ ८ ०

1708 Kashmir Shaivism—Being a brief introduction to the History, Literature &c. doctrine of the Advaita Shaiva Philosophy of Kashmir. By J. C. Chatterjee. 2 8 0

१७०९ कुण्डलियां—गिरिधररायकृत। मुम्बई ० ७ ०

१७१० कैवल्यरत्नम्—अष्टादशोपपुराणोपलब्धानामद्वैतवेदान्तवाक्यानां संग्रहः। तत्र भवता श्रीमद्वासुदेवज्ञानमुनिना संकलितम्। बनारस १ ० ०

१७११ कौपीनपञ्चक-मोहमुद्गर हस्तामलक—भाषा टीका सहित। टीकाकार—पं० हरीशंकर शास्त्री। हरिद्वार ० २ ०

१७१२ कौशल्यगीतावली—भाषा में रोचक, सरल और ज्ञान के संस्कारों को प्रदीप्त करने वाले अद्भुत पद्यों का संग्रह। २ भाग आगरा ० १२ ०

१७१३ खण्डनखण्डखाद्यम्—श्रीहर्षप्रणीतम्। आनन्दपूर्णविरचितया खण्डनफक्किकाविभजनाख्यया व्याख्यया "विद्यासागरी"ति प्रसिद्धया समेतम्, चित्सुख-शंकरमिश्र, रघुनाथकृतटीकावलम्बिन्या टिप्पण्या सनाथम्। १४ खण्डेषु सम्पूर्णम्। बनारस १४ ० ०

१७१४ खण्डनखण्डखाद्यम्—श्रीयुतहर्षप्रणीतम्। शंकरमिश्रकृतशंकरीटीका तथा मोहनलालकृत उपवृत्ति सहित। बनारस ७ ८ ०

१७१५ खण्डनखण्डखाद्यम्—श्री-श्रीहर्षप्रणीतम्। श्रीमच्चित्सुखाचार्यप्रणीतया खण्डनभावदीपिकया, श्रीशङ्करमिश्रप्रणीतया शाङ्कर्या, तार्किकशिरोमणिश्रीरघुनाथभट्टाचार्यप्रणीतया खण्डनभूषामणिटीकया, श्रीप्रगल्भमिश्रप्रणीतेन खण्डनदर्पणेन, व्याकरणाचार्यसूर्यनारायणशुक्लप्रणीतया खण्डनरत्नमालिकया च समेतम्। खण्ड १। काशी १ ८ ०

१७१६ खण्डनखण्डखाद्यम्—कवितार्किकचूडामणिश्रीहर्षप्रणीतम्। श्री पं० चण्डीप्रसादसुकुल-विरचितभाषानुवादयुतम्। काशी २ १२ ०

१७१७ खण्डनोद्धारः—अर्थात् श्रीहर्षकृतखण्डनखण्डखाद्यग्रन्थस्य समाधानम्। श्रीवाचस्पतिमिश्रविरचितः। बनारस २ ४ ०

१७१८ ख्यातिवादः— प्रयाग १ ४ ०

१७१९ गुरुवंशकाव्यम्—लक्ष्मणशास्त्रिप्रणीतभावबोधिनीसहितम्। प्रथमो भागः। मद्रास १ ८ ०

[A very rare work treating of the line of Jagadgurus iu the Sringeri Mutt beginning from Srī Sankara Bhagavatpāda]

१७२० चक्रधारणप्रमाणसंग्रहः—भाषा में। काशी ० ५ ०
१७२१ चक्रधारण क्यों करना चाहिये— काशी ० २ ०
१७२२ चतुःश्लोकी—श्रीवल्लभाचार्यचरणप्रणीता। सप्तभिष्टीकाभिः समलंकृता। मुम्बई ० १० ०

1723 Chatus-Sūtrī Bhāṣya of Śrī Madhvachārya. चतुःसूत्रीभाष्यम् (मध्वाचार्यकृतम्)—with the commentaries तत्त्वप्रदीप, सत्तर्कदीपावलि and तत्त्वप्रकाशिका। Critically edited with an English Introduction, Notes & Indices. By B. N. Krishnamūrti Śarma. Madras 2 8 0

१७२४ चतुःसूत्री—वेदान्तदर्शन के आरम्भ के ४ सूत्रों पर शङ्करभाष्य पं० रामस्वरूपकृत भाषा टीका सहित। इसमें सारे वेदान्त का सार है। मुरादाबाद ० ८ ०

१७२५ चन्द्रकान्त—वेदान्त ज्ञान का मुख्य ग्रन्थ। श्री सेठ इच्छाराम सूर्यराम देसाई कृत सरल हिन्दी अनुवाद ३ भागों में सजिल्द। मुम्बई १४ ० ०

१७२६ चन्द्रवतीज्ञानोपमहासिन्धु—इस ग्रन्थ में वेद वेदान्त का सार मुमुक्षुओं के ज्ञानार्थ रागरागिनियों में भली भांति वर्णित है। मुम्बई ० ८ ०

१७२७ चौदह रत्न—श्रीगुप्तानन्द जी महाराजविरचित। रतलाम १ ८ ०

१७२८ जन्ममरणविचारः—वामदेवकृतः। अमरौघशासनम्—सिद्धगोरक्षनाथकृतम्। तन्त्रवटधानिका—अभिनवगुप्तकृता। १ ४ ०

१७२९ जपग्रन्थ—महात्मा पं० साधुसिंह जी कृत। लखनऊ १ ० ०

१७३० श्री जप्यजी साहब—स्वामी श्री परमानन्द जी साहब परमहंस उदासी द्वारा भाषानुवादित। लखनऊ २ ४ ०

१७३१ जलभेदः—वल्लभाचार्यप्रकटितः। चतुर्विवरणसमेतः। मुम्बई १ ४ ०

1732 Jīvātman in the Brahma Sūtras—By Abhaya Kumāra Guha, M. A., Ph. D. [It is a comparative treatise on the Jīvātman as described in the Brahma Sūtras, based on 15 original commentaries and on numerous other works, philosophical, religious, scientific and literary of the East & the West. In deducing his conclusions, the author has fully discussed the Sūtras in the light of the commentaries of the different schools and has treated of the Vedanta from a standpoint hitherto untouched by scholars] Calcutta. 4 4 0

१७३३. जीवन्मुक्तिविवेकः—श्रीमद्विद्यारण्यमुनिविरचितः, पूर्णानन्देन्दुकौमुद्याख्यव्याख्यासमेतः। पूना ३ १२ ०

१७३४ जीवन्मुक्तिविवेकः—श्रीमद्विद्यारण्यस्वामिविरचितः। भाषानुवादसमेतः।
बनारस २ ० ०

१७३५ जीवन्मुक्तिविवेकः—भाषाटीकासहितः। मुरादाबाद १ ० ०

1736 Jivan Mukti-Viveka (The Path to Liberation-in-this Life) of Sri Vidyaranya. Edited with an English translation by Pandit S. Subrahmanya Sastri and T. R. Srinivasa Ayyangar. Madras. 6 0 0

1737 Jivanmuktiviveka or the Path to Liberatian in Life—By Swami Shri Vidyaraṇya Saraswati, rendered into English by Manilal N. Dvivedi, B. A.
Bombay 1 8 0

१७३८ जीवब्रह्मशतसागर—भाषा। इसमें ज्ञान की अनेक अत्यन्त रोचक बातें हैं। मुम्बई ० ३ ०

१७३९ ज्ञानभक्तिप्रकाश—भाषा जिसको स्थान रमखिरिया निवासी श्री स्वामी काशीदास जी ने अत्यन्त परिश्रम से साधु सज्जनों के हितार्थ ज्ञानभक्ति के उत्पन्न करने वाले अनेक प्रकार के भजनों में वर्णन किया है। मुम्बई २ ८ ०

१७४० ज्ञानमाला—भाषा। कलिमलग्रस्त मनुष्यों के निस्तारार्थ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द की अर्जुन के प्रति १२५ गोप्य शिक्षाएं। मुम्बई ० ३ ०

१७४१ ज्ञानवैराग्यप्रकाश—भाषावेदान्त। स्वामी परमानन्दपरमहंसप्रणीत।
मुम्बई १ ० ०

1742 Tattvajñānam—or the quest of Cosmic Consciousness, being public lectures on the metaphysical conceptions of the Ancient Aryans of India. By Swami Śrī Ānandāchārya in English. Edited with a glossary of Sanskrit terms. Foreign 5 8 0

१७४३ तत्त्वत्रयम्—श्रीमल्लोकाचार्यप्रणीतम्। अयोध्या ० ४ ०

१७४४ तत्त्वत्रयम्— काञ्ची ० ५ ०

१७४५ तत्त्वत्रयम्—श्रीमल्लोकाचार्यप्रणीतम्। श्रीमद्वरवरमुनिकृतभाष्योपबृंहितम्।
काशी २ ० ०

१७४६ तत्त्वदर्शन—भाषा। प्रयोजक पूज्य ब्रह्मनिष्ठ स्वामी श्रीआत्मानन्दजी महाराज। सजिल्द। काठियावाड़ २ ० ०

1747 Tattvadarshana--or the Mind-Aspects of Salvation. This might also be entitled "Mental Equipoise", or Dvandva-hatih, or "The art of Perceiving Essential Unity beneath the mask of Seeming Contrast" Madras 0 6 0

१७४८ **तत्त्वदीपनम्**—पञ्चपादिकाविवरणस्य व्याख्यानम् । श्रीपरमहंसाखण्डानन्दमुनिकृतम् । ८ खण्डों में सम्पूर्ण । बनारस ८ ० ०

१७४९ **तत्त्वनिर्णयः**—वात्स्यश्रीवरदाचार्यप्रणीतः । चेन्नपुरी ० ४ ०

१७५० **तत्त्वनिर्णयः**—(शैववैष्णववादः) । काञ्ची ० ५ ०

१७५१ **तत्त्वप्रकाशः**—श्रीभोजदेवप्रणीतः । श्रीकुमारविरचित तात्पर्यदीपिकाटीकासमेत । मद्रास १ १२ ०

१७५२ **तत्त्वप्रकाशिका**—सटीक । मुम्बई १३ ० ०

Tattvaprakāśikā--By Śrī Jayatīrtha Swāmin with Bhāvadīpa, a gloss by Raghavendra Swamin. This is a commentary on madhvāchārya's Bhāṣya on the Brahma Sūtras. Bombay 13 0 0

१७५३ **तत्त्वप्रकाशिका**—श्रीसदाशिवेन्द्रसरस्वतीविरचिता । मद्रास २ १३ ०

१७५४ **तत्त्वप्रकाशिका, तत्त्वसंग्रहः, तत्त्वनिर्णयश्च**—मद्रास १ १ ०

१७५५ **तत्त्वप्रदीपिका**—चित्सुखी । श्रीमच्चित्सुखाचार्यमुनिवरविरचिता परमहंसप्रत्यग्रूपभगवत्प्रणीतया नयनप्रसादिनीव्याख्यासहिता । सजिल्द । मुम्बई ३ ४ ०

१७५६ **तत्त्वप्रदीपिका**—चित्सुखी । पं० नृसिंहदेवकृत भाषाटीकासहित । पूर्वखण्ड । लाहौर १ ८ ०

१७५७ **तत्त्वबोधः**—श्रीमच्छङ्कराचार्य्यकृतः । पं० बैजनाथशर्मणा कृताभ्यामुदाहरणभाषाटीकाभ्यां समलंकृतः । काशी ० २ ६

१७५८ **तत्त्वबोधः**—भाषाटीकासमेतः । मुम्बई ० ३ ०

१७५९ **तत्त्वबोधः**—पं० विश्वनाथकृत भाषा टीका सहित । स्वामीकृष्णानन्द द्वारा संशोधित । काशी ० ३ ०

१७६० **तत्त्वमञ्जरी**—श्रीराघवेन्द्रस्वामिविरचिता । बनारस १ ० ०

१७६१ **तत्त्वमुक्ताकलापः**—बोधायनीयार्थसिद्धान्तानुसारी विशिष्टाद्वैतब्रह्मनिरूपणपरः प्रकरणग्रन्थः । श्रीवेदान्ताचार्यापराभिधेन कवितार्किककेसरिणा सर्वतन्त्रस्वतन्त्राधिषणेन श्रीवेंकटनाथदेशिकेन प्रणीतः । श्रीरामानुजमतावलम्बिनामतीवोपयुक्ततः । बनारस ५ १० ०

१७६२ **तत्त्वविज्ञान**—भाषाटीका । वेदान्त और दर्शन का अपूर्व ग्रन्थ । मुम्बई ० २ ०

१७६३ **तत्त्वशेखरः**—तथा तत्त्वत्रयचुलुकसंग्रहः । बनारस १ ८ ०

१७६४ **तत्त्वसंख्यानटीका**—राघवेन्द्रतीर्थीय—श्रीनिवासतीर्थीय—टिप्पणीद्वययुता। आनन्दतीर्थाचार्यकृतस्य प्रमाणसिद्धतत्त्वपरिगणनात्मकस्य तत्त्वसंख्यानाख्यप्रकरणस्य व्याख्या न्यायानुबद्धा सुबोधा च व्युत्पित्सूनाम् । मद्रास १ ० ०

१७६५ **तत्त्वानुसन्धान**—भाषा में स्वामी चिद्घनानन्दप्रणीत अर्थात् 'अद्वैतचिन्ताकौस्तुभ' । सजिल्द । मुम्बई ३ ८ ०

१७६६ तत्त्वार्थदीपः—श्रीवल्लभदीक्षितप्रकटितः। स्वकृततत्त्वार्थदीपप्रकाशसहितः।
मुम्बई ४ ० ०

१७६७ तत्त्वार्थदीपः—श्रीवल्लभाचार्यविरचितः स्वकृतप्रकाशाख्यव्याख्यासहितः। गोस्वामीश्रीपीताम्बरजीमहाराजकृतावरणभङ्गाख्यतिलकसमलंकृतः। बनारस ७ ८ ०

१७६८ तत्त्वोद्बोधन—भाषा में। काञ्ची ० ५ ०

१७६९ तन्त्रसारः—अभिनवगुप्तकृतः। काश्मीर २ ८ ०

१७७० तप्तमुद्राधारण पर निर्णयसिन्धुकार का फैसला—
काञ्ची ० ४ ०

१७७१ त्रिविध-नामावली—श्रीवल्लभाचार्यप्रकटिता विवृतिसमेता।
मुम्बई १ ६ ०

१७७२ दर्शनोदयः—सकलदर्शनमूलसारसंग्रहरूपः श्रीनिवासाचार्यस्य कृतिः।
मैसूर ५ ० ०

१७७३ दहरविद्याप्रकाशिका—श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकपरमशिवेन्द्रसरस्वतीप्रणीता।
मद्रास ० ८ ०

१७७४ दादूरामोदयः—संस्कृत। दादूपन्थी साधुओं को परम उपयोगी है।
मुम्बई ० १२ ०

१७७५ दिव्यदेशविवेचन—भाषा। काञ्ची ० २ ०

१७७६ दुर्वादविधूननम— काञ्ची ० ६ ०

१७७७ दृग्दृश्यविवेकः—भारततीर्थकृत अंग्रेजी अनुवाद सहित।
मद्रास ० ५ ०

1778 Dṛg-Dṛśya Viveka—An inquiry in the nature of the "Seer" and the "Seen." Text with English translation and notes. By Swami Nikhilanand. Mysore 1 0 0

१७७९ दृश्यत्वानुमाननिरासवादः—मोक्षकारणतावादश्च। काञ्ची ० ५ ०

१७८० दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता—पुष्टिमार्गीय श्री वल्लभ सम्प्रदायी वैष्णवन के नित्य नैमित्तिक पठनार्थ। डाकोर ६ ० ०

१७८१ द्वंद्वयुद्धसमीक्षा—द्वारका के श्रीशंकराचार्य श्री माधवतीर्थ जी लिखित द्वन्द्वयुद्ध नामक ग्रन्थ में 'श्रीवैष्णव' सम्प्रदाय के ऊपर किये हुए आक्षेपों का समाधान श्री काञ्ची प्रतिवादिभयंकर मठाधीश्वर श्रीमद् अनन्ताचार्य स्वामी रचित। मद्रास ० १३ ०

१७८२ द्वादशग्रन्थी—कवि संत संगीतकवि विष्णुदास गहरगंभीरिये कृतभाषापद्य
मुम्बई ० १० ०

१७८३ द्वादशमहावाक्यविवरणम्—मूलमात्रम्। मुम्बई ० ४ ०

१७८४ द्वैतानन्दतरङ्गिणी—पं॰ बूलचन्द्रनिर्मिता। राणाहरिसिंहवर्म्माकृत भाषा टीका सहित। [इसमें अद्वैतमत का भली भांति खण्डन किया गया है]
लाहौर ० ८ ०

१७८५ **नरेश्वरपरीक्षा**—श्रीरामकण्ठकृतप्रकाशाख्यटीकोपेता ।
कश्मीर २ ० ०

१७८६ **नवरत्नम्**—वल्लभाचार्यप्रणीतम् । विट्ठलेश्वरदीक्षितप्रणीतविवृतिसमेतम् ।
मुम्बई १ ४ ०

१७८७ **नारदभक्तिसूत्र**—मूल गोरखपुर ० ० ३

1788 Narada Bhakti Sutra—Gospel of Love by D S. Sarma. Madras 0 4 0

1789 Aphorisms of Narada—translated into Engish by L. Kannoo Mal, M. A. Madras 0 8 0

१७९० **निगमान्ततीर्थदीपिका**—सुदर्शनशास्त्रीविरचित भाषा । १ ४ ०

१७९१ **नित्याचारदर्पण**—श्रीस्वामीब्रह्मानन्दविरचित । मुम्बई ० १० ०

१७९२ **नैष्कर्म्यसिद्धिः**—श्रीसुरेश्वराचार्यविरचिता । सटीका । खण्डचतुष्टये सम्पूर्णा । बनारस ३ ० ०

१७९३ **नैष्कर्म्यसिद्धिः**—सुरेश्वराचार्यप्रणीता । चन्द्रिकाटीकासहिता । अत्युत्तम टाईप । पूना ३ ० ०

१७९४ **न्यायतरंगिणी**—श्रीव्यासरामाचार्यविरचिता । मुम्बई ६ ० ०

१७९५ **न्यायपरिशुद्धिः**—(वेदान्त, रामानुजसम्प्रदाय) श्रीमद्वेंकटनाथश्रीवेदान्ताचार्यप्रसादिता । श्रीनिवासाचार्यविरचितन्यायसारसमाख्यया टीकया युता । ५ खण्डेषु सम्पूर्णा ।
बनारस ७ ८ ०

१७९६ **न्यायभास्करः**—जगन्मिथ्यात्वखण्डनम् । काश्री १ १० ०

१७९७ **न्यायमकरन्दः**—श्रीमदानन्दबोधभट्टारकाचार्यसंगृहीतः । आचार्यचित्सुखमुनिविरचितव्याख्योपेतः । प्रमाणमाला न्यायदीपावली च श्रीमदानन्दबोधभट्टारकाचार्यनिर्मिते । ४ भागेषु सम्पूर्णः । बनारस ६ ० ०

१७९८ **न्यायरत्नामणिः**—श्रीमदप्पयदीक्षितविरचितः । मद्रास ५ ० ०

१७९९ **न्यायसिद्धाञ्जनम्**—भगवद्बोधायनमतानुवर्त्तिनां श्रीसम्प्रदायानुयायिनामभिमतपदार्थनिरूपणपरं प्रकरणम् । श्रीवेङ्कटनाथदेशिकेन प्रणीतम् । काशी १ ८ ०

१८०० **न्यायामृतलहरी**—A Booklet in Sanskrit verse & Prose by Dr. R. Naga Raja Sarma (Devanagari), vindicating the Dvaita Vedanta of Madhva against latest attacks. 1 0 0

१८०१ **पञ्चकोषविवेक**—भाषा में इसमें विस्तार से समझाकर पञ्चकोश से ढके आत्मा का स्पष्ट बोध कराया है । आगरा १ ० ०

१८०२ **पञ्चतत्त्व**—बिडला ब्रादरकृत । जिसमें भवसागर से तरने की नाव, कुरीति सीठना सुधार, हिन्दुस्थान का हित, भजनब्रह्मनिरूपण, सृष्टिसुधार लेख, ये पांच पुस्तकें सम्मिलित हैं । मुम्बई १ ० ०

१८०३ **पञ्चदशी**—रामकृष्णविरचितटीकोपेता गुटका सजिल्द । मुम्बई १ ० ०

१८०४ **पञ्चदशी**—भारतीतीर्थ विद्यारण्यमुनीश्वरकृता । रामकृष्ण विरचित व्याख्या सहिता । कलकत्ता ३ ० ०

१८०५ **पञ्चदशी**—मुनिविद्यारण्यविरचिता । रामकृष्णविरचितपददीपिकाख्यव्याख्या तथा श्री पं० अच्युतरायकृत "पूर्णानन्देन्दुकौमुदी" संज्ञक व्याख्या सहिता सजिल्द । मुम्बई ४ ० ०

१८०६ **पञ्चदशी**—सटीका । पं० रामकृष्णविरचित "तत्त्वविवेक" व्याख्यासहिता । सजिल्द । मुम्बई २ ८ ०

१८०७ **पञ्चदशी**—संस्कृतटीका सहित । लखनऊ १ ० ०

१८०८ **पंचदशी**—पं० मिहिरचन्द्रकृत अत्युत्तम भाषाटीकासहित । सजिल्द । मुम्बई ४ ० ०

१८०९ **पंचदशी वेदान्त**—प्रयागनारायण भाष्य । सुप्रसिद्ध टीकाकार पं० सूर्यदीन सुकुलकृत सरल भाषाटीकासहित । लखनऊ ३ ८ ०

१८१० **पंचदशी**—केवलभाषा आत्मस्वरूपजीकृत । सजिल्द । मुम्बई ४ ० ०

१८११ **पंचदशी**—पं० रामावतार शास्त्रिकृत भाष टीका सहित । लाहौर २ १० ०

1812 Panchadaśī—Or an exposition in fifteen chapters of the Principles of Advaita Philosophy. By Srimad-Vidyaranya Swami. Translated freely into English with the help of commentaries, &c. Bombay 2 8 0

1813 Pañchapādikā (**पंचपादिका**)—of Padmapāda, edited by Rāma Shāstrī Bhāgavatāchārya. Complete text. काशी २ ४ ०

1814 Panchapādikā Vivaraṇa (**पंचपादिकाविवरणम्**)—of Prakāśātman with extracts from the Tattvadīpana and Bhāvaprakāśikā, edited by Ram Shastri Bhāgavatāchārya. Benares. 4 8 0

१८१५ **पंचीकरणम्**—६ संस्कृत व्याख्याओं सहित । मुम्बई १ ८ ०

१८१६ **पंचीकरणम्**—टीकाद्वयोपेतम् । बनारस ० ८ ०

१८१७ **पंचीकरणम्, संमिश्रपञ्चीकरणम्, पंचीकृतम्, साधनचतुष्टयं च**— मद्रास ० २ ०

१८१८ **पंचीकरणम्**—भाषाटीकासहितम् । मुम्बई २ ० ०

१८१९ **पंचेन्द्रियचित्र**—महात्मासुन्दरदासकृत । मुम्बई ० ६ ०

१८२० **पत्रावलम्बनम्**—वल्लभाधीश्वर-प्रणीतम् । पुरुषोत्तममहाराजकृतविवरणोपेतम् । मुम्बई ० ५ ०

१८२१ **पदार्थतत्त्वनिरूपणम्**—तार्किकशिरोमणिश्रीरघुनाथविरचितम् । श्रीरघुदेवन्यायालङ्कारविरचितया टीकया श्रीरामभद्रसार्वभौमविरचितया पदार्थतत्त्वविवेचनप्रकाशाभिधया टीकया च समन्वितम् । बनारस

१८२२ **परतत्त्वनिर्णयः**— काशी ० ३ ०

१८२३ **परमार्थसारः**—श्रीमदभिनवगुप्ताचार्यविरचितः । श्रीमद्योगराजाचार्यकृतविवृत्युपेतः । सजिल्द । काश्मीर २ ८ ०

१८२४ **परमार्थसारः**—श्रीराघवानन्दविरचितविवरणसमेतः । मद्रास ० १० ०

१८२५ **परमार्थसारम्**—श्रीभगवदादिशेषप्रणीतम् । श्रीराघवानन्दविरचितेन विवरणेन समेतम् । काशी ० ६ ०

१८२६ **परात्रिंशिका**—श्रीमदभिनवगुप्तपादकृतविवृत्युपेता । सजिल्द । काश्मीर ३ ६ ०

१८२७ **परापूजा**—श्रीस्वामिशंकराचार्यकृत । मूल और रायबहादुर बा० जालिमसिंह कृत भाषाटीका सहित । लखनऊ ० ४ ०

१८२८ **पारसभाग**—इसमें वेदान्तमतानुसार काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह तथा अहंकार के नाश करने के उपाय इत्यादि इतिहास और कथा के रूप में अति सरल भाषा में वर्णित हैं । लखनऊ ४ ० ०

१८२९ **पाराशर्यविजयः**—(प्रथमाध्याय प्रथमपादः) । काशी ४ ४ ०

१८३० **पुरञ्जनोपाख्यान**—भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ६ ०

१८३१ **पुष्टिप्रवाहमर्यादा**—वल्लभाचार्यप्रणीता । चतुर्विवरणसमेता । मुम्बई १ ४ ०

१८३२ **पूर्णप्रज्ञदर्शनम्**—आनन्दतीर्थकृतमध्वभाष्यसहितम् । कलकत्ता १ ४ ०

1833 Purna Sutras—By Swami Jnānānanda. Bhimavaram

१८३४ **प्रकरणपञ्चकम्**—श्री शंकराचार्य के आत्मबोध, प्रौढानुभूति, तत्त्वोपदेश आदि प्रकरण ग्रन्थों का भाषानुवादसहितसंग्रह । काशी ० ८ ०

१८३५ **प्रज्ञानान्दप्रकाशः**—श्री १०८ परमहंसपरिव्राजकाचार्यप्रज्ञानानन्दसरस्वतीस्वामिविरचितः । 'भावार्थकौमुदी'टीकोपेतः । प्रज्ञानानन्दपरिशिष्टाभ्यां भाषानुवादेन च सहितश्च । बनारस ३ ० ०

1836 Praṇava-Vāda—By Maharshi Gārgyāyaṇa. Text containing Swami Yogānanda's Kārikā (Sanskrit) with English translation. Foreword by Dr. Sri S. Subrahmanya Iyer. Editor's Sanskrit preface and its English translation, &c. Two Vols. Madras 8 0 0

१८३७ **प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणिः**—श्रीसदानन्दव्यासविरचितः, २ भागौ । काशी ४ ४ ०

१८३८ **प्रत्यभिज्ञाहृदयम्**—श्रीक्षेमराजविरचितम्। सजिल्द १ ६ ०
१८३९ **प्रत्येकानुभवशतक**—भाषा। मुम्बई ० ५ ०
१८४० **प्रपन्नपारिजातः**— काञ्ची ० ५ ०
१८४१ **प्रबोधरत्नाकर**—श्रीवैष्णवप्रेमदासरामाचार्यभाषापद्य। मुम्बई ० १० ०
१८४२ **प्रमाणलक्षणटीका**—राघवेन्द्रतीर्थीय व्याख्यासहित। मुम्बई १ ८ ०
१८४३ **प्रमेयरत्नावली**—बलदेवविद्याभूषणकृता। गौडीयवैष्णवदर्शनसारभूता। कलकत्ता १ ४ ०
१८४४ **प्रश्नोत्तरपयोनिधि**—बलरामदासमुनिकृत। मुम्बई ० ३ ०
१८४५ **प्रश्नोत्तरमुक्तावली**—भाषाटीकासहित। इसमें अतिश्रेष्ठ १२२ प्रश्न और उनके यथार्थ उत्तर हैं। गुरुशिष्य संवाद। मुम्बई ० ३ ०
१८४६ **प्रश्नोत्तररत्नमाला**—सटीक। मुम्बई ० २ ०
१८४७ **प्रश्नोत्तरी**—(प्रश्नोत्तरमणिरत्नमाला) श्रीमच्छंकराचार्यकृतमूल तथा पं० नन्दलालशास्त्रीकृत भाषाटीकासमेत। (गुरुशिष्य संवाद)। मुम्बई ० १ ६
१८४८ **प्रस्थानरत्नाकरः**—गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमविरचितः। २ खण्डों में। बनारस ३ ० ०
१८४९ **प्रस्थानरत्नाकरः**—गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तममहाराजविरचितः। मुम्बई ० १२ ०
१८५० **प्रेमपत्तनम्**—रसिकोत्तंसकृतम्। अद्भुतकृतटीकासहितम। काशी १ ० ०
१८५१ **प्रेमपन्थप्रकाश**—भाषा। स्वामीसहजानन्दविरचित। मुरादाबाद ० १२ ०
१८५२ **बालबोधः**—वल्लभाचार्यविरचितः। तिसृभिष्टीकाभिः समलंकृतः। मुम्बई १ ४ ०
१८५३ **बालबोधभाषा**—पं० पीताम्बरकृत। मुम्बई २ ४ ०
१८५४ **बृहदारण्यकवार्त्तिकसारः**—श्रीमद्विद्यारण्यस्वामिविरचितः। महेश्वरतीर्थकृतया लघुसंग्रहाख्यया टीकया समलंकृतः। बनारस १५ ० ०
१८५५ **बोधसारः**—श्रीविद्वद्वर्यनरहरिविरचितः। तच्छिष्यश्रीदिवाकरकृतया "अर्थदीप्त्या" सहितः। १० खण्डेषु सम्पूर्णः। बनारस १५ ० ०
१८५६ **ब्रह्मज्ञानदर्पण**—(अर्थात् ज्ञान की आरसी)। मुम्बई ० २ ०
१८५७ **ब्रह्मज्ञानसागर**—श्रीस्वामीचरणदासजीकृत। भाषा। मुम्बई ० ३ ०
1858 Brahma-Darśanam or Intuition of the Absolute, being an introduction in English the study of Hindu Philosophy by Śrī Anandacharya. 9 8 0
१८५९ **ब्रह्मनिरूपण**—ज्ञानांकुश अथवा रामायण भक्तों का सुगम मोक्षोपाय। सजिल्द। मुम्बई २ ० ०

१८६० **ब्रह्मबोध**—भाषा। सजिल्द। मुम्बई ० १० ०

१८६१ **ब्रह्ममीमांसाभाष्यम्**—श्रीनिम्बार्काचार्यविरचितं वेदान्तपारिजातसौरभम् सम्पूर्णम्। बनारस १ ८ ०

१८६२ **ब्रह्मवादः**—गो० हरिरायजीविरचितः। गोपालकृष्णभट्टकृतव्याख्यायुतः तथा गो० व्रजनाथविरचितो **ब्रह्मवादः** तथा **शुद्धाद्वैतपरिष्कारः** रामकृष्णभट्टविरचितः रघुनाथशास्त्रिविरचितशुद्धाद्वैतपरिष्कारतात्पर्य्यम्। काशी १ ० ०

१८६३ **ब्रह्मविद्याभरणम्**—श्रीमच्छारीरिकसूत्रभाष्यव्याख्यानम्।
Brahma-Vidyābharaṇam—By Advaitānanda
Madras 12 0 0

१८६४ **ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यम्**—सटिप्पणम्। सजिल्द। मुम्बई २ ८ ०

१८६५ **ब्रह्मसूत्रभाष्यम्**—श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यविरचितम्। सूत्रपाठसहितम्। मद्रास १ ६ ०

१८६६ **ब्रह्मसूत्रम्**—(शारीरकम) इसमें **शांकरभाष्य** तथा उस पर गोविन्दराजकृत **रत्नप्रभा,** सर्वतन्त्रस्वतन्त्रवाचस्पतिमिश्रकृत **भामती** और आनन्दगिरिकृत **न्यायनिर्णय** ये तीनों टीकाएं सम्मिलित हैं। सजिल्द। मुम्बई १२ ० ०

१८६७ **ब्रह्मसूत्रशङ्करभाष्यम्**—चतुःसूत्र्यन्तपूर्णानन्दीयव्याख्याशेषं श्रीगोविन्दानन्दप्रणीतया रत्नप्रभया समन्वितम्। २ भाग। (अत्र चतुःसूत्र्यन्तपूर्णानन्दीया रत्नप्रभाव्याख्याऽपि समावेशिता)। बनारस ५ ० ०

१८६८ **ब्रह्मसूत्रभाष्यम्**—श्रीभास्कराचार्यविरचितम्। बनारस ४ ८ ०

१८६९ **ब्रह्मसूत्रभाष्यम्**—बादरायणप्रणीतवेदान्तसूत्रस्य यतीन्द्रश्रीमद्विज्ञानभिक्षुकृतव्याख्यानम्। ६ खण्डों में सम्पूर्ण। बनारस ९ ० ०

१८७० **ब्रह्मसूत्रभाष्यम्**—भामती-कल्पतरु-परिमलव्याख्यासहितम्। ६ भाग अपूर्ण। मद्रास ६ ० ०

१८७१ **ब्रह्मसूत्रभाष्य**—(आनन्दतीर्थीय) तात्पर्यचन्द्रिकादिसमेत। ४ भाग। मद्रास २० ० ०

१८७२ **ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यम्**—भाष्यरत्नप्रभा-भामती-न्यायनिर्णयवृत्त्युपेतम्। बम्बई ८ ० ०

१८७३ **ब्रह्मसूत्र-शाङ्करभाष्य-रत्नप्रभाटीका**—यह सब मूल तथा इन सबका हिन्दी अनुवाद। ३ भाग। काशी १४ ० ०

१८७४ **ब्रह्मसूत्रम्** (वेदान्तदर्शनम)—शांकरभाष्य, गोविन्दानन्द टीका अधिकरणमाला। सजिल्द। कलकत्ता ६ ० ०

१८७५ **ब्रह्मसूत्र**—शंकरभाष्यभाषानुवाद। २ भाग। आगरा ६ ० ०

१८७६ **ब्रह्मसूत्र**—(वेदान्तदर्शन) भाष्यानुसार सरलभाषा में। मुम्बई १ ८ ०

१८७७ **ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य**—with the प्रकटार्थविवरण editd by Mr. T. R. Chintamani Vol. I. Madras 6 12 0

१८७८ ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्—भामती-पञ्चपादिका-पञ्चपादिकाविवरण-तत्त्वदीपन-पञ्चपादिकाविवरणटीकाऋजुविवरण-भामतीटीका-ऋजुप्रकाशिका-चित्सुखकृतभाष्यभावप्रकाशिका-नारायणसरस्वतीकृतवार्त्तिकनवीनटिप्पणी-प्रदीपव्याख्योपव्याख्यानवकोपेतम् । संस्कृतभूमिका-सूचीपत्रादिसमेतम् । म० म० श्रीअनन्तकृष्णशास्त्रिणा संस्कृतम् । आङ्गलभूमिकया च सहितम् । (चतुःसूत्रीपर्य्यन्तम्) । खण्डद्वयम् । कलकत्ता १५ ० ०

1879 Brahma Sūtras (ब्रह्मसूत्राणि) of Bādarāyaṇa—with the comment of Śaṅkarāchārya, Chapter II. 1 & 2 edited in original Sanskrit with notes & English translation by Dr. S. K. Belvalkar. Poona 6 0 0

१८८० ब्रह्मसूत्रम्—With introduction, text, word-for-word rendering, translation & comments in English according to Śaṅkara's views; Edited by Vireshvaranand. [In the Introduction the date & authorship of the Brahmasūtras is discussed, and views of the other commentators are also given] Madras 3 0 0

१८८१ ब्रह्मसूत्रतात्पर्य्यविवरणम्—श्रीयुक्तेन तिलकोपनाम्ना भैरवशर्मणा कृतम् । बनारस १ ८ ०

१८८२ ब्रह्मसूत्रम् [श्रीनिम्बार्कभाष्यसहितम्]—श्री निम्बार्काचार्यकृतेन वेदान्त-पारिजातसौरभेन, श्रीनिवासाचार्यकृतेन वेदान्तकौस्तुभेन च सहितम् । काशी ३ ० ०

१८८३ ब्रह्मसूत्रम्—द्वैताद्वैतदर्शनम् । श्रीसुन्दरभट्टविरचितसिद्धान्तसेतुकाख्यटीकोपेतं श्रीदेवाचार्यप्रणीतसिद्धान्तजाह्नवीयुतम् । निम्बार्काचार्यकृता दशश्लोकी, गिरिधरप्रपन्नकृत-लघुमञ्जूषाव्याख्यासहिता । ३ खण्डों में सम्पूर्ण । काशी ४ ८ ०

१८८४ ब्रह्मसूत्राणि—ब्रह्मामृतवर्षिणीशङ्करानन्दकृतदीपिकाभ्यां समेतानि ।
पूना ४ ८ ०

१८८५ ब्रह्मसूत्राणि—शाङ्करभाष्य तथा आनन्दगिरिटीकासमेत । २ भाग ।
पूना १२ ० ०

1886 Brahmasūtras of Bādarāyaṇa—Text with different readings according to various commentators together with Word-Index by Kapileshvara Mishra.
Calcutta 3 0 0

1887 Vedanta Philosophy—An English commentary of the Brahmasūtras according to Nimbārka school of thought, by Sridhar Mojumdar, M. A. Bankipore 5 0 0

१८८८ ब्रह्मसूत्रदीपिका—श्रीमच्छंकरानन्दभगवद्विरचिता । तथा तत्त्वानुसन्धानम्—महादेवानन्दसरस्वतीविरचितम् । खण्डद्वये संपूर्णम् । बनारस ३ ० ०

१८८९ ब्रह्मसूत्रभाष्यार्थरत्नमाला—सुब्रह्मण्यविरचिता । पूना ४ ४ ०

१८९० ब्रह्मसूत्राणुभाष्यम्—वल्लभाचार्यप्रणीतम् । ४ खण्डों में । मुम्बई ७ १० ०

१८९१ ब्रह्मसूत्रभाष्यम्—श्रीकण्ठाचार्यविरचितम् अप्पय्यदीक्षितकृत शिवार्कमणि-दीपिकाटीकासहितम् । Edited with सूत्रार्थचन्द्रिका by the late Pandit Halasyanatha. 2 Vols. 18 0 0

1892 Brahma-sūtra-Bhāshya of Sri Madhvāchārya—A new & critical edition of the Catussūtrī Bhāṣya of Śrī Madhvāchārya (1238—1317 A. D.) the greatest exponent of Indian Realism, with an elaborate English Introduction & notes. Madras 2 12 0

१८९३ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—श्रीसदाशिवेन्द्रसरस्वतीविरचितब्रह्मतत्त्वप्रकाशिकासहिता । मद्रास २ ८ ०

१८९४ ब्रह्मसूत्रवृत्तिः—अद्वैतमञ्जरीभगवत्पाद-(आद्यशंकराचार्य)शिष्यकृता । मुम्बई ० १२ ०

१८९५ सूत्रवृत्तिः—श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकरभगवत्पादशिष्यविरचिता। कुम्भकोन १ १३ ०

१८९६ ब्रह्मसूत्रवृत्तिः—हरिदीक्षितकृता । पूना २ ७ ०

१८९७ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—मरीचिका । श्री व्रजनाथभट्टकृता । (शुद्धाद्वैतसम्प्रदाया)। खण्डद्वये सम्पूर्णा । काशी ३ ० ०

१८९८ ब्रह्मानन्दप्रश्नोत्तरी—भाषा । मुम्बई १ ० ०

१८९९ भक्त के भगवान्— औंध ० ८ ०

१९०० भक्तिचन्द्रिका—शाण्डिल्यभक्तिसूत्रव्याख्या नारायणतीर्थकृता । काशी ० १५ ०

१९०१ भक्तिदर्शनम्—महर्षिशाण्डिल्यप्रणीतम् । निगमागमी भाषाभाष्य सहित । मुम्बई ० १२ ०

१९०२ भक्तिप्रकाश—श्रवण, मननादि दशविध भक्ति के सोदाहरण वर्णन १० मयूखों में । पौराणिक लोगों तथा भक्तों के बड़े उपयोग का है । मुम्बई १ ४ ०

१९०३ भक्तिमार्तण्डः—गोस्वामी श्रीगोपेश्वरजीमहाराजविरचित । मुम्बई २ ८ ०

१९०४ भक्तिमीमांसा—अर्थात् शाण्डिल्यऋषिप्रणीत सूत्र और आचार्य स्वप्नेश्वर-विरचित भाष्यसहित । मुम्बई ० ८ ०

१९०५ भक्तिमीमांसादर्शन—संस्कृत तथा भाषाटीकासहित । भगवान् श्रीकृष्ण की प्रशंसित भक्ति का प्रतिपादक ग्रन्थ । मुम्बई ० ८ ०

1906 Bhakti Yoga or Culture of Devotion—By Aswani Kumāra Dutt. Calcutta 3 0 0

१९०७ भक्तिरत्नावलि—With हिन्दीभाषाटीका by a Retired Professor of Sanskrit. Allahabad 1 8 0

१९०८ भक्तिरसामृतसिन्धुः—श्रीरूपगोस्वामिकृतः श्रीजीवगोस्वामिकृतटीकासहितः। काशी ३ ० ०

१९०९ भक्तिरसायनम्—सटीकम्। काशी ० १२ ०

१९१० भक्तिवर्धिनी—श्रीवल्लभाचार्यप्रणीता। बनारस २ ८ ०

1911 Bhakti Śāstra—containing Sūtras of Nārada and Śāṇḍilya and Bhaktiratnavali of Viṣṇu Puri, translated into English by Nand Lal Sinha, M. A., B. L. and a Retired Professor of Sanskrit respectively. Allahabad 7 0 0

१९१२ भक्तिसागर—नारायणभट्टविरचित। बनारस २ ० ०

१९१३ भक्तिसागर—श्रीस्वामी चरणदासजीकृत। लखनऊ ३ ० ०

१९१४ भक्तिसागरादि १७ ग्रन्थ—श्रीस्वामी चरणदासजी कृत। मुम्बई ग्लेज़ कागज़ ३) रफ कागज़ २ ८ ०

१९१५ भक्तिसुधातरङ्गिणी— मद्रास २ ८ ०

1916 Bhakti Sūtras of Śāṇḍilya—with Svapneśvara's commentary. Allahabad 1 2 0

1917 Bhakti Sūtras or the Aphorism of Śāṇḍilya with the commentary of Svapneśvara or the Hindu Doctrine of Faith. Translated by E. B. Cowel. Calcutta 2 0 0

1918 Bhaktyadhikaraṇamālā—By Nārāyaṇa Tīrtha with a commentary by Ananta Śāstrī Phadke. Part I.

भक्त्यधिकरणमाला—श्रीमन्नारायणतीर्थस्वामिकृता, श्रीमन्महर्षिशाण्डिल्यरचितसूत्रीया। फडके इत्युपाख्येनानन्तशास्त्रिणा स्वरचितया संदिग्धार्थप्रकाशिनीसंज्ञकटिप्पण्या संयोज्य सम्पादितः। प्रथमो भागः।

[It is a collection of all the adhikaraṇaṣ in the Śāṇḍilya Sūtra on Bhakti.] Allahabad 1 4 0

१९१९ भगवदाराधनविधि—भाषा में। काशी ० ३ ०

१९२० भगवद् ज्ञान के विचित्र रहस्य—बाबा नगीना सिंहजीकृत। सर्वसाधारण (popular) संस्करण लखनऊ ० ८ ०

१९२१ भगवद्ध्यानसोपानम्— मद्रास ० ६ ०

१९२२ **भगवन्नामकौमुदी**—श्रीलक्ष्मीधरकृता, अनन्तदेवरचित 'प्रकाश' टीका-सहिता। काशी ० १० ०

१९२३ **भगवन्नाममाहात्म्यसंग्रह**— प्रयाग २ १२ ०

१९२४ **भामती (ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यव्याख्या)**—वाचस्पतिमिश्रकृता। कलकत्ता ३ ८ ०

१९२५ **भामती**—श्रीवाचस्पतिमिश्रकृता शांकरभाष्यटीका। काशी २ ८ ०

1926 Bhāmati—of Vācaspati on Śaṅkara's Brahmasūtra Bhāṣya (Catussūtrī). Edited with an English translation by S. S. Sūryanārāyaṇa Śāstrī. Madras 8 0 0

१९२७ **भावप्रकाशिका**—ब्रह्मसूत्रवृत्ति। श्रीकृष्णचन्द्रविरचिता। ४ खण्डों में। मुम्बई २ १२ ०

१९२८ **भावरसामृतभाषा**—स्वामी गुलाबसिंह जी निर्मलसन्तकृत **बोधप्रकाश**-श्रीस्वामीसंगतसिंहजीकृत। मुम्बई ० ५ ०

१९२९ **भावार्थसिंधु**—भाषावेदान्त। मुम्बई ० १२ ०

१९३० **भेदजयश्रीः**—श्रीवेणिदत्ताचार्यकृता। Edited with Introduction by Pt. त्रिभुवनप्रसाद उपाध्याय एम. ए. प्रयाग १ ४ ०

१९३१ **भेदधिक्कार** (सटीक)—खुले पत्रे। १ ४ ०

१९३२ **भेदधिक्कारः**—व्याख्यासहितः। श्रीमदप्पयदीक्षितकृतोपक्रमपराक्रमसहितः। सम्पूर्णः। खण्डद्वयम्। बनारस ३ ० ०

१९३३ **भेदरत्नम्**—श्रीशंकरमिश्रविरचितं तथा **अद्वैतरत्नरक्षणम्**—श्रीमधुसूदनसरस्वतीविरचितम् १ ० ०

1934 Bheda Ratnam (भेदरत्नम)—of M. M. Shankara Miśra, edited with introduction &c. by Pt. Sūryanārāyaṇa Shukla Nyāya Vyākaraṇāchārya. Allahabad 1 8 0

१९३५ **भेदवादः**—तत्क्रतुन्यायविचारः। काञ्ची ० ५ ०

१९३६ **भेदसिद्धिः**—विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यकृता। Edited with notes by Pt. Sūryanārāyaṇa Shukla. Allahabad 1 12 0

१९३७ **भेदोज्जीवन**—सटिप्पणम्। मद्रास १ ८ ०

१९३८ **मणिरत्नमालासटीक**—खुले पत्रे। अहमदाबाद १ ० ०

१९३९ **मणिरत्नमाला**—साधुतुलसीदासजीकृत निवृत्ति मार्ग की अद्भुत पुस्तक। भाषाटीकासहित। मुरादाबाद ० १२ ०

१९४० **मणिरत्नमाला**—(श्रीशंकराचार्यकृतप्रश्नोत्तरी)—भाषा पद्य और विवेचन सहित। सजिल्द। आगरा २ ० ०

१९४१ मध्वमुखालङ्कारः—श्रीमद्वनमालिमिश्रविरचितः श्रीनृसिंहाचार्यविरचितया भूमिकया सहितः ।

[The book deals with refuting the 'Advaita' theory of Śaṅkara & establishing the 'Dvaita' of Madhvāchārya] Allahabad 1 8 0

१९४२ मध्वविजय—नारायण पण्डिताचार्यविरचित इसमें श्रीमध्वाचार्य के दिग्विजय प्रसङ्ग से अत्युत्तम वेदान्तरहस्य का वर्णन है । खुले पत्रे । मुम्बई ० ८ ०

१९४३ मनासा का शास्त्रार्थ—भाषा में । काशी ० ५ ०

१९४४ मनोहरमाला—और सर्वात्मभाव—स्वामी त्रिलोकराम तथा पीताम्बर जी महाराजकृत मनोहरहिन्दी पद्यों में । मुम्बई ० १२ ०

१९४५ महानयप्रकाश— काश्मीर । १ १२ ०

१९४६ महापुरुषों के सिद्धान्त—भाषा । मुम्बई ० २ ६

१९४७ महार्थमञ्जरी—श्रीमहेश्वरानन्दप्रणीतपरिमलाख्यव्याख्योपेता ।

मद्रास २ ४ ०

१९४८ महार्थमञ्जरी—महेश्वरानन्दकृता सटीका । काश्मीर १ १२ ०

१९४९ महावाक्य—भाषा में विस्तृत व्याख्या । आगरा १ ० ०

१९५० महावाक्यरत्नावलि—वेदान्तप्रकरण । मूलमात्र । मुम्बई ० ३ ०

१९५१ महावाक्यविवरण—मूल । खुले पत्रे । मुम्बई ० ४ ०

१९५२ महावाक्यविवरण—स्वामि रामकृष्णानन्द गिरिकृत भाषाटीका सहित । मुमुक्षुओं को आत्मज्ञानसम्पादन में अत्यन्त उपयोगी है । मुम्बई ० १० ०

1953 Mādhva Logic—Being an English translation of the Pramāṇa-Candrikā of छलारिशेषाचार्य with an Introductory outline of Mādhva Philosophy and the text in Sanskrit. By Susil Kumar Maitra, M. A., Ph. D. Calcutta 2 8 0

१९५४ मानमेयरहस्य श्लोकवार्त्तिकम्—सकलशास्त्रसारसंग्रहरूपम् । महामहोपाध्यायेन पण्डितरत्नेन श्रीनिवासाचार्येण प्रणीतम् । मैसूर ६ १२ ०

१९५५ मायावादखण्डनम्—श्रीनिवासतीर्थीयसहितम् । मद्रास ० १० ०

१९५६ मारुतशक्तिः—विट्ठलनाथमहाशयविरचितस्य प्रभाञ्जनस्य शुद्धाद्वैतसिद्धान्तमण्डनग्रन्थस्य पूर्वभागेन सहिता । गोवर्धनशर्मणा प्रणीता । सजिल्द । मुम्बई ५ १२ ०

१९५७ मिताक्षरा—श्रीगौडपादाचार्यकृतमाण्डूक्यकारिकाव्याख्या । श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वयंप्रकाशानन्दसरस्वतीस्वामिकृता शंकरानन्दकृतमाण्डूक्योपनिषद्दीपिका च ।

बनारस १ ४ ०

१९५८ मिथ्या आक्षेपों का निरास— काशी ० ३ ०

1959 Sri Mukundamala—Edited by K. Rama Pisharoti.

3 8 0

१६६० **मुक्ताफलम्**—श्रीबोपदेवविरचितं, हेमाद्रिविरचितटीकासमेतम् । २ भाग
कलकत्ता ६ ० ०

१६६१ **मुक्तिमार्ग**—स्वामी रामरूपजी रचित । विषय नाम ही से प्रकट है। मनुष्य को किस प्रकार मुक्ति मिल सकती है । यही इस में दर्शाया गया है । सजिल्द ।
लखनऊ १ १० ०

१६६२ **मुक्तिसागर**—भाषा में । मुम्बई ० ३ ०

१६६३ **मुमुक्षु का मनन**—भाषा में । मुरादाबाद ० १० ०

१६६४ **मोक्षपंथप्रकाश**—अत्युत्तमसरल भाषानुवादसहित । सुनहरी जिल्द । स्थूलाक्षर । लाहौर ६ ० ०

१६६५ **मोक्षप्रदीप**—(स्वामी ब्रह्मानन्द 'शिवयोगी' कृत) । स्वामी निष्कलानन्द द्वारा केरलीय भाषा से अनुवादित । लखनऊ २ ८ ०

१६६६ **यतिलिङ्गसमर्थनम्**— काञ्ची ० ५ ०

१६६७ **यतिविषयिसंवाद**—भाषा छन्दोबद्ध । मुम्बई ० २ ०

१६६८ **यतिराजवैभव**—भाषा । काञ्ची ० ७ ०

१६६९ **यतीन्द्रमतदीपिका**—मूलमात्र । मुम्बई ० ४ ०

१६७० **यतीन्द्रमतदीपिका**—श्रीवासुदेवशास्त्रिविरचित प्रकाशाख्यव्याख्यासमेता।
पूना १ ४ ०

१६७१ **याज्ञवल्क्यकात्यायनीसंवाद**—भाषा । बाबू ज़ालिमसिंह विरचित ।
मुम्बई ० ६ ०

१६७२ **युक्तिप्रकाश**—स्वामी निश्चलदासकृत । इस अपूर्व ग्रन्थ में ३९ युक्तियां हैं। सजिल्द । मुम्बई १ ४ ०

१६७३ **युक्तिमल्लिका**—श्रीमद्वादिराजतीर्थकृता । सटीका । मद्रास १२ ० ०

१६७४ **योगवासिष्ठ**—सटीक संस्कृत । खुले पत्रे । दुष्प्राप्य । मुम्बई २० ० ०

१६७५ **योगवासिष्ठ**—वासिष्ठ महारामायणतात्पर्यप्रकाशव्याख्यासहित । पूर्व तथा उत्तर रामायणों में उत्तररामायण ही योगवासिष्ठ अथवा वासिष्ठमहारामायण इस नाम से प्रसिद्ध है । इस ग्रन्थ में आद्योपान्त वसिष्ठ ऋषि और भगवान् श्री रामचन्द्रजी का संवाद गद्य पद्य में है । २ भागों में सम्पूर्ण । मुम्बई १४ ० ०

१६७६ **योगवासिष्ठ बड़ा**—भाषा । छः प्रकरणों में । २ जिल्दों में सम्पूर्ण सजिल्द।
मुम्बई १४ ० ०

१६७७ **योगवासिष्ठ** (भाषावार्तिक)—इसमें महर्षि वसिष्ठ ने श्री रामचन्द्रजी को वैराग्य, मोक्ष, उत्पति, स्थिति, उपशम और निर्वाण नाम छः प्रकरणों में आत्मयोग या ब्रह्मज्ञान समझाकर उनके अनेक सन्देह दूर किये हैं । लखनऊ ७ ० ०

१६७८ **योगवासिष्ठ**—भाषा में वैराग्य और मुमुक्षुप्रकरण । बड़े अक्षर । ग्लेज़ कागज़ । सजिल्द । मुम्बई १ ० ०

१९७९ योगवासिष्ठ—भाषा में वैराग्य और मुमुक्षु प्रकरण । छोटा गुटका।
मुम्बई ० ८ ०

1980 Yogavāsiṣṭha—The story of Queen Chūḍala and sermons by Holy Vasiṣṭha, translated from original Sanskrit by H. P. Shāstri. London 3 8 0

१९८१ योगवासिष्ठसार—सम्पूर्णयोगवासिष्ठ का सार भाषा में वर्णित है। ग्लेज कागज । सजिल्द । मुम्बई २ ८ ०
रफ कागज़ २ ० ०

1982 Philosophy of Yoga-Vāsiṣṭha—A comparative, critical & synthetic survey of the Philosophical ideas of Vasiṣṭha as presented in Yoga-Vāsiṣṭha-Mahārāmāyaṇa by B. L. Atreya. Madras 12 0 0
रफकागज २ ० ०

१९८३ योगानन्दसतसंगग्रन्थ—स्वामीयोगानन्दनिर्मित । मुम्बई १ ८ ०

१९८४ रत्नत्रय—भोगकारिका, नादकारिका, मोक्षकारिका, परमोक्षनिरासकारिका संस्कृतटीकासहिता । मद्रास १ १० ०

१९८५ रत्नपञ्चकम् (सोपानपञ्चकम्)—सभाष्यम् । २ विद्वदनुभवानन्दलहरी (शिवानन्दलहरी), ३ शतश्लोकीसारसंग्रहः ४ कौपीनपञ्चकम्, ५ एकोविष्णुपद्यस्य श्रीनिवासाचार्यकृतव्याख्यानम् । इन पांच अपूर्व विषयों का संग्रह है । मुम्बई ० ३ ०

१९८६ रामकृष्णोपदेशसंग्रह—परमहंसरामकृष्ण के उपदेशों का संग्रह ।
मुरादाबाद ० २ ०

१९८७ श्रीरामतीर्थगीतावली—हिन्दीपद्य ० २ ०

१९८८ रामतीर्थग्रन्थावली—कपड़े की जिल्द लखनऊ १५ ० ०

१९८९ श्रीरामानुजसम्प्रदाय की प्राचीनता— काञ्ची ० २ ०

१९९० रामानुजसिद्धान्तसारः— काञ्ची १ १ ०

१९९१ लघुचन्द्रिका—श्रीब्रह्मानन्दसरस्वतीकृत । मद्रास ८ ८ ०

1992 Laghu Yoga Vāsiṣṭha—translated into English by K. Narayana Swami Aiyar. Bound. 3 8 0

१९९३ लघुयोगवासिष्ठ—आत्मसुखकृतवासिष्ठचन्द्रिकाटीकासहित । खुले पत्रे ।
मुम्बई ६ ० ०

१९९४ लघुवासुदेवमननम्— मुम्बई ० ८ ०

१९९५ लघुवासुदेवमननम्—A clear synopsis of the Advaita Vedanta wlth an English introduction by R. Krishnaswamy Aiyar. Madras. 1 4 0

१९९६ **लल्लेश्वरीवाक्यानि**—राजानकभास्करकृतसंस्कृतटीकासहितानि।
कश्मीर ० ६ ०

१९९७ **लावनी**—अर्थात् मरहटी खयाल। श्रीकाशीगिरिबनारसीपरमहंसविरचित।
लखनऊ ० ७ ०

१९९८ **लावनीब्रह्मज्ञानकी**—काशीगिरिबनारसीनिर्मित। सजिल्द।
मुम्बई १ १२ ०

१९९९ **श्रीवचनभूषणम्**— काञ्ची ० ६ ०

२००० **श्रीमद्वल्लभाचार्यदिग्विजयः**—प्रथमखंड। पं० शंकरदयालुमिश्रकृत-व्रजभाषाटीकोपेतः।
मुम्बई ५ ० ०

२००१ **वाक्यवृत्ति**—मूल, भाषार्थ तथा विवेचन सहित। आगरा ० १२ ०

२००२ **वाक्यवृत्तिः**—श्रीमच्छंकराचार्यकृता। विश्वेश्वरविरचितटीकासमेता।
पूना ० ८ ०

२००३ **वाक्यसुधा**—मूल, हिन्दी अनुवाद और विवेचन सहित। १ ० ०

२००४ **वाक्यसुधा** (भारतीतीर्थकृत) **और योगतारावली** (शंकराचार्यकृत)—भाषान्तरकार तथा व्याख्याकार पं० रामावतारविद्याभास्कर। बिजनौर ० ४ ०

२००५ **वाक्यसुधा**—Of Śrī Śaṅkarāchārya & **वेदान्तसार** of Sadānanda by N. Ward. Bombay 0 6 0

2006 Vākya-Sudhā—Translated by Manilal N. Dvivedi and Vedantasāra translated by Mr. N. Ward.
Bombay 0 6 0

२००७ **वातूलनाथसूत्राणि**—अनन्तशक्तिपादविरचितवृत्त्युपेतानि।
काश्मीर १ ० ०

२००८ **वादनक्षत्रमाला**—(पूर्वोत्तरमीमांसा)—श्रीमदप्पयदीक्षित विरचित। अति-सुन्दर जिल्द। मद्रास २ ८ ०

२००९ **वादावलिः**—पुरुषोत्तमगोस्वामिविरचिता। भट्टश्रीरामनाथशर्मणा शुद्धाद्वैत-भूषणाने टिप्पण्या परिष्कृत्य संशोधिता। मुम्बई १ १४ ०

२०१० **श्रीवादिभीकरवैभवम्** (सचित्रम्)— काञ्ची ० ७ ०
(चित्ररहितम्) ० ५ ०

२०११ **वाल्मीकिभावदीपः**— काञ्ची १ २ ०

२०१२ **श्रीवासिष्ठदर्शनम्**—श्रीयोगवासिष्ठमहारामायणसम्पादितसिद्धान्तात्मकम्। श्रीकाशीस्थहिन्दूविश्वविद्यालये प्राच्यप्रतीच्यदर्शनमनोविज्ञानाध्यापकेन एम० ए०, डी० लिट्—इत्युपाधिधारिणा—आत्रेयोपाह्वन श्रीभीखनलालाख्येन संकलितम्। भूमिकया सहितम्।

In this book the Philosophy of the Yog-Vasiṣtha is briefly presented in the language of the original text,

with the topics arranged in logical sequence. In the Introduction Prof. Ātreya has dealt with (1) the place of Yoga-Vāsiṣṭha in the philosophical literature of India, (2) probable date of its composition, &c. &c.] Allahabad 5 0 0

2013 Vasudeva Manana—The Meditations of Vasudeva—A compendium of Advaita Philosophy translated into English by K. Narayana Swami & R. Sundareśvara Shastri. Bound. Madras 0 10 0

२०१४ **विचारचन्द्रोदय**—सटिप्पण। पं० पीताम्बरकृत बालबोधिनी टीकासमेत। सुन्दर गुटका। मुम्बई २ ० ०

२०१५ **विचारत्रयी** (ब्रह्म-नीति-धर्म-विचारपरा)—वल्लिकामण्डलाभिजनमोहमयी-वास्तव्यरमापतिमिश्रद्वारा टिप्पणेन परिष्कार्य प्रकाशिता। मुम्बई ५ ० ०

२०१६ **विचारदर्शन** (हिन्दी भाषा में अपूर्व ग्रन्थ)—शिवचन्द्र जी भारतीयकृत। सजिल्द। मुम्बई ६ ० ०

२०१७ **विचारदीपक**—स्वामी ब्रह्मानन्दकृत। मुम्बई १ ० ०

२०१८ **विचारमाला**—सटीक। स्वामी श्रीगोविन्ददासकृत सरल भाषा टीका सहित। मुम्बई ० १४ ०

२०१९ **विचारमाला**—मूल। भाषा। मुम्बई ० २ ०

२०२० **विचारसागर**—सटीक। स्वामी निश्चलदास कृत सर्वोत्तम संग्राह्य ग्रन्थ। सजिल्द। मुम्बई २ ० ०

२०२१ **विचारसागर**—सटीक पीताम्बरकृत भाषाटीका सहित। मुम्बई ८ ० ०

२०२२ **विज्ञानभास्कर (वेदान्तग्रन्थ)**—भाषाटीका सहित स्वामी विज्ञानानन्द-कृत। मुम्बई ० ८ ०

२०२३ **विज्ञानभैरवः**—सटीकः। काश्मीर २ ८ ०

२०२४ **विद्वन्मण्डनम् [शुद्धाद्वैतसम्प्रदाय]**—श्रीविट्ठलनाथदीक्षितकृतः। गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजीमहाराजकृतसुवर्णसूत्राख्यव्याख्यासहितम्। काशी ३ ८ ०

२०२५ **विभ्रमविवेकः**—आचार्यमण्डनमिश्रविरचितः। Edited with an English Introduction M. M. Vidyavacaspati S. Kuppuswami Shastri, M. ., I. E. S. and Vedāntālaṅkāra T. V. Rāmachandra Dikshitar. Madras 0 14 0

२०२६ **विरूपाक्षपञ्चाशिका**—श्रीमदाचार्यविरूपाक्षनाथपादप्रणीता श्रीविद्याचक्र-वर्त्तिकृतविवृतिसमेता। मद्रास ० १० ०

२०२७ **विवरणप्रमेयसंग्रहः**—Of Mādhavāchārya Vidyāraṇya edited by Rāma Shastri Tailang. Benares 4 8 0

२०२८ विवरणोपन्यासः—श्रीरामानन्दसरस्वतीविरचितः। विवरणतात्पर्यव्याख्यानरूपः। अपि च सटीका वाक्यसुधा। खंडद्वये सम्पूर्णः। बनारस ३ ० ०

२०२९ विवेकचूडामणिः—मूल, अति सुन्दर। मद्रास ० ५ ०

२०३० विवेकचूडामणिः—शंकराचार्यविरचितः। कलकत्ता ० ६ ०

२०३१ विवेकचूडामणिः—रामप्रसाद वर्माकृत अन्वय, पदार्थ और भावार्थसहित। मुरादाबाद १ ४ ०

२०३२ विवेकचूडामणिः—भाषाटीका समेत सजिल्द। मुम्बई १ ४ ०

2033 Viveka Chuḍāmaṇi—Of Śrī Saṅkarāchārya, text with English translation, notes and an index by Swami Mādhavānanda. Bound. Madras 2 0 0

2034 Viveka Chūḍāmaṇi or, Crest-Jewel of Wisdom of Śri Saṅkarāchārya. Text in Devanāgarī and translation by Mohini M. Chatterjee, F. T. S. Madras 2 8 0

२०३५ विवेकदिवाकर—स्वामी आत्माराम जी कृत। लखनऊ ० ४ ०

२०३६ विवेकधैर्याश्रयः—वल्लभप्रभुविरचितः चतसृभिष्टीकाभिः समलङ्कृतः। मुम्बई १ ८ ०

२०३७ विवेकप्रकाश—लाला गोविन्दसहायकृत। इसमें महाविवेक और महामोह का घोरयुद्ध दोहे चौपाई और सोरठा आदि छन्दों में वर्णन किया गया है। लखनऊ ० ५ ०

२०३८ विवेकमार्त्तण्डः—विश्वरूपदेवकृतः। मद्रास ० ८ ०

२०३९ विशिष्टाद्वैतमतविजयवादः—नरहरिपण्डितकृतः। मुम्बई ० १ ०

२०४० विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तसारसंग्रह—भाषा में। काञ्ची ० २ ०

२०४१ विशिष्टाद्वैताधिकरणमाला—पं० सुदर्शनाचार्यशास्त्री विरचित टीका। मुम्बई १ ० ०

२०४२ विषयवाक्यदीपिका—श्रीरङ्गरामानुजमुनिप्रणीत। सटिप्पण। सजिल्द। मुम्बई ३ ० ०

२०४३ विहार-वृन्दावन—महात्मा वृन्दावनजी कृत। लखनऊ १ २ ०

२०४४ वृत्तिप्रभाकर—स्वामी श्रीनिश्चलदास जी कृत। भाषा। षट्शास्त्र के मत से भली भांति वेदान्त मत का प्रतिपादन किया गया है। सजिल्द। मुम्बई ३ ८ ०

२०४५ वृत्रासुरचतुःश्लोकीविवृतिः—विट्ठलेशप्रभुचरणनिर्मिता। मुम्बई ० १२ ०

२०४६ वेदप्रमाणचन्द्रिका—जिसमें वेद, वेदान्त, मीमांसादि सच्छास्त्रों के प्रमाणों तथा बौद्ध, चार्वाकादि नास्तिकों के मतों का दृढ़ युक्तियों से भली भांति खण्डन किया गया है। मुम्बई ० १२ ०

२०४७ वेदवेदान्तसारशिरोमणिः—सटीक। श्री भास्करानन्द सरस्वती व श्री-हरिहरानन्द सरस्वती निर्मित। लखनऊ ० २ ६

२०४८ वेदानुवचन—बाबा नगीनासिंहद्वारा रचित। जिसको पं० रामस्वरूप शर्मा और पं० रामचन्द्रशर्मा ने मुमुक्षु पुरुषों के हितार्थ हिन्दी भाषा में अनुवादित कर प्रकाशित किया है। २ भाग। मुरादाबाद १ ८ ०

2049 Vedanta—By Dr. V. S. Ghate. A study of the Brahmasūtras with the Bhāṣyas of Śaṅkara, Ramānuja, Nimbārka, Madhva & Vallabha. Poona 2 0 0

2050 Vedanta or the Science of Reality—by K. A. Krishnaswamy Aiyar, B. A. Madras 10 0 0

२०५१ वेदान्तकल्पतरुः—निखिलदर्शनपारदृश्ववाचस्पतिमिश्रकृतभामतीव्याख्या-रूपः परमहंसपरिव्राजकाचार्यवर्यश्रीमदमलानन्दभगवदुपनिबद्धः। तत्र द्वितीयो भागः द्वितीयाध्याय-मारभ्य चतुर्थाध्यायान्तः। काशी ११ ४ ०

२०५२ वेदान्तकल्पतरुपरिमलः—अप्पयदीक्षितविरचितः ३ भागाः।
काशी २० ४ ०

२०५३ वेदान्तकल्पलतिका—मधुसूदनसरस्वतीकृता। Edited with Introduction &c. By Ramanuja Pandeya.
Allahabad 1 12 0

२०५४ वेदान्तग्रन्थपञ्चक—जिसमें वाक्यप्रदीप, वाक्यसुधारस, हस्तामलक, निर्वाणपञ्चक, मनीषापञ्चक ये पांचों ग्रन्थ अवश्य विचार करने योग्य हैं। मुम्बई ० ८ ०

२०५५ वेदान्तचिन्तामणिः—पं० गट्टूलाल वेदान्ताचार्यकृत। मुम्बई १ ० ०

२०५६ वेदान्तडिण्डिमः—मद्रास, मुम्बई ० २ ०

२०५७ वेदान्ततत्त्वविवेकः—श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यनृसिंहाश्रमविरचितः।
बनारस ० १२ ०

२०५८ वेदान्तदर्शनम्—निम्बार्काचार्यकृतसंस्कृतभाष्योपेतम्, महन्तसन्तदासजीप्रणीत-भाषाटीकासहितम्। प्रयाग ४ ० ०

२०५९ वेदान्तदर्शनम्—परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीरामानन्दसरस्वतीस्वामिकृतब्रह्मामृत-वर्षिणीसमाख्यव्याख्यासंवलितम्। ४ भागों में सम्पूर्ण। बनारस ६ ० ०

2060 Vedānta-tattvasāra of Rāmānuja—Text with English version by Rev. J. J. Johnson. Benares

२०६१ वेदान्तदीपः—श्री १०८ भगवद्रामानुजाचार्यनिर्मितः। बादरायणसूत्राणां संग्रहो व्याख्यारूपश्च। श्रीमदाचार्यभट्टनाथस्वामिना संशोधितः। ३ भागों में सम्पूर्ण।
बनारस ४ ८ ०
आगरा १ ८ ०

२०६२ वेदान्तदीपिका—हिन्दी।

२०६३ **वेदान्तधर्म**—स्वामी विवेकानन्दकृत। प्रयाग १ ४ ०

२०६४ **वेदान्तनवमालिका**—(ब्रह्मसूत्रलघुवृत्तिः)। नीलमेघशास्त्रिविरचिता। मद्रास २ ० ०

२०६५ **वेदान्तपरिभाषा**—मूलमात्र। कलकत्ता ० ८ ०

२०६६ **वेदान्तपरिभाषा**—महामहोपाध्यायानन्तकृष्णशास्त्रिकृतपरिभाषाप्रकाशाख्यव्याख्यासहिता। सजिल्द। कलकत्ता ६ ० ०

२०६७ **वेदान्तपरिभाषा**—शिखामणिटीका और मणिप्रभा टीकासहित। सजिल्द मुम्बई ३ ८ ०

२०६८ **वेदान्तपरिभाषा**—अर्थदीपिकाटीकासमेत। सजिल्द मुम्बई ८ ०

२०६९ **वेदान्तपरिभाषा**—धर्मराजाध्वरीन्द्रकृता। शिवदत्तपंडितकृतार्थदीपिकाटीकासहिता वेदान्ताचार्यभट्टत्र्यम्बकरामशास्त्रिकृतविषमस्थलावबोधिन्या बृहट्टिप्पण्या सहिता। बनारस १ ४ ०

२०७० **वेदान्तपरिभाषा**—पेद्दादीक्षितकृत प्रकाशिका टीकासहित। मद्रास १ ८ ०

२०७१ **वेदान्तपरिभाषा**—साधुगोविन्दसिंहकृतभाषाटीकासमेता। सजिल्द। मुम्बई १ ४ ०

२०७२ **वेदान्तपरिभाषा**—महामहोपाध्यायश्रीधर्मराजाध्वरीन्द्रविरचिता। श्रीजीवानन्दविद्यासागरभट्टाचार्येण प्राचीनां व्याख्यामवलम्ब्य संकलितया विस्तृतव्याख्यया समलंकृता। कलकत्ता १ ८ ०

२०७३ **वेदान्तप्रदीपिका भाषा**—स्वामीलक्ष्मानन्द विरचित। मुम्बई १ ४ ०

२०७४ **वेदान्त प्रदीप**—पं० जगन्नाथजी व्यासप्रणीत। भाषाटीका। ० १० ०

२०७५ **वेदान्तमतदर्शन**—भाषा। यह ग्रन्थ अत्युत्तम है। इस में दो खण्ड तथा वेदान्त विधि विचारादि ५० प्रसंग हैं। जिन में १८२ मत हैं। और अनेक स्थलों पर सूत्र और वृत्तियों के प्रमाण भी दिये हैं। मुम्बई ० १२ ०

२०७६ **वेदान्तमूल**—हृदयमूलक चुन्नीलाल औघड़कृत भाषाग्रन्थ। चारों भाग। मुम्बई ० १२ ०

२०७७ **वेदान्तरत्नमञ्जूषा**—श्रीनिम्बार्काचार्यविरचितदशश्लोकीव्याख्या श्रीभगवत्पुरुषोत्तमाचार्यकृता। **वेदान्ततत्त्वबोधश्च** विद्वद्वरश्रीमदनन्तरामविरचितः। खण्डद्वये सम्पूर्णः। ३ ० ०

२०७८ **वेदान्तरहस्य**—भाषा में। आगरा ० १० ०

२०७९ **वेदान्तरहस्यम्**—वेदान्तवागीशभट्टाचार्यविरचितम्। मुम्बई ० १ ०

२०८० **वेदान्तरक्षामणिः**—(**श्रीभाष्यसमालोचनम्**)—श्रीअनन्तकृष्णशास्त्रिविरचितः। २ भागौ। कलकत्ता ६ ० ०

[The book is written from the Advaita point of

view, in answer to the objections raised by Śrī Rāmānujāchārya in his commentary to the Brahmasūtras]

२०८१ वेदान्तरहस्य—भाषा । काशी ० ५ ०

२०८२ वेदान्तरामायण—भाषाटीकासहित । रामायण का वेदान्तपक्ष में भावार्थ लिखा गया है । सजिल्द । मुम्बई १ ८ ०

२०८३ वेदान्तशास्त्र—मूलमात्र । मुम्बई ० २ ०

२०८४ वेदान्तसंग्रह—भाषा । मुम्बई ० २ ०

२०८५ वेदान्तसंज्ञा—भाषाटीकासमेत । मुम्बई ० ८ ०

२०८६ वेदान्तसंज्ञावली—सटीक । मंगेशर मकृष्णतैलंगइत्यनेन संशोधिता । मुम्बई ० १० ०

२०८७ वेदान्तसमुच्चयः—श्रीमच्छंकराचार्यैर्विरचिता । वेदान्तस्तोत्राणां सञ्चयरूपः । मुम्बई २ ८ ०

२०८८ वेदान्तसारः—न्यायाचार्यश्रीशिवदत्तमिश्रगौड़कृतः । गङ्गाटीकासहितः । काशी ० १० ०

२०८९ वेदान्तसार—सदानन्दयोगीन्द्रकृतः । श्रीनृसिंहसरस्वतीकृतसुबोधिनीव्याख्यया तथा श्रीरामतीर्थकृतविद्वन्मनोरंजनीव्याख्यया सहितः तथा श्रीमच्छंकरभगवत्कृतभाष्योपेतहस्तामलकान्वितश्च । कलकत्ता १ ४ ०

२०९० वेदान्तसार—श्रीसदानन्दविरचितश्रीमहोपदेवकृतबालबोधिनीव्याख्यासहित With Introduction in English. मद्रास १ ८ ०

२०९१ वेदान्तसारः—आपदेवकृतदीपिकाख्यव्याख्यासमेत । बनारस ० ६ ०

२०९२ वेदान्तसार—संस्कृतमूल और संस्कृतटीका तथ ।भाषाटीकासहित । मुम्बई १ ० ०

२०९३ वेदान्तसारः—श्रीमत्सदानन्दयतिविरचितः । आपदेवप्रणीततत्त्वदीपिकाव्याख्यासहितः । मुम्बई ० ४ ०

२०९४ वेदान्तसार—नृसिंहसरस्वतीस्वामिकृतसुबोधिनी तथा रामतीर्थविरचितविद्वन्मनोरञ्जनीव्याख्या और अंग्रेजी नोट सहित । मुम्बई १ ४ ०

Vedāntasāra of Sadānanda, with English Notes (Second edition) by Colonel G. A. Jacob. 1 4 0

2095 Vedantasara (वेदान्तसारः)—A work on Vedanta Philosophy by Sadananda, edited with introduction, translation & explanatory notes by Hiriyanna. Poona 1 8 0

2096 Vedāntasāra—with introduction, text, English translation and comments by Swami Nikhilanand. Calcutta 1 4 0

२०९७ वेदान्तसारवार्त्तिकराजसंग्रह, पञ्चीकरणवार्त्तिकञ्च—सुरेश्वराचार्यकृतम्। मद्रास ० ३ ०

२०९८ वेदान्तसारशिरोमणिः—श्रीहरिहरानन्दजीसरस्वतीविरचितः। लखनऊ ० २ ६

२०९९ वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली—परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीप्रकाशानन्दविरचिता। पं० जीवानन्दभट्टाचार्यविरचितविस्तृतव्याख्यासहिता। कलकत्ता २ ८ ०

२१०० वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली—भाषानुवादसहित। काशी १ ० ०

2101 Vedānta Siddhānta Muktāvalī of Prakāshānanda. Text, Notes and English translation by late Dr. Arthur Venis, M. A., C. I. E., Benares 1 12 0

२१०२ वेदान्तसिद्धान्तादर्श—श्रीमोहनलालवेदान्ताचार्यप्रणीतः। बनारस १ ० ०

२१०३ वेदान्तसिद्धान्तसंग्रहः—श्रुतिसिद्धान्तापरनामकः श्रीब्रह्मचारिवनमालिमिश्रविरचितः। द्वैताद्वैतदर्शनानुगतः। वेदान्तकारिकावलिः। ३ भागों में सम्पूर्ण। बनारस ४ ८ ०

२१०४ वेदान्तसिद्धान्तसूक्तिमञ्जरी—गङ्गाधरेन्द्रसरस्वतीकृता। प्रकाशाख्यव्याख्यया सहिता। मारेन्द्रचन्द्रवेदान्ततीर्थेन सम्पादिता। कलकत्ता ४ ० ०

२१०५ वेदान्तसूत्रपाठः— बनारस ० १ ०

२१०६ वेदान्तसूत्रम्—रामानन्दसरस्वतीकृतब्रह्मामृतवर्षिणीवृत्तिसहितम्। बनारस ३ ४ ०

२१०७ वेदान्तसूत्रमुक्तावली—ब्रह्मानन्दसरस्वतीविरचिता। पूना २ ६ ०

२१०८ वेदान्तसूत्रवैदिकवृत्तिः—स्वामिहरिप्रसादविरचिता। मुम्बई ५ ४ ०

२१०९ वेदान्तस्तोत्रसंग्रह—इसमें श्रीशङ्कराचार्यादि के ३२ स्तोत्रों का संग्रह भाषाटीकासहित है। आगरा ० १० ०

२११० वेदान्तस्तोत्रसंग्रह—प्रातःस्मरण इत्यादि १२ स्तोत्र। मुम्बई ० ३ ०

2111 Vedānta—Syamantaka of Rādhādāmodara (वेदान्तस्यमन्तक) Being a treatise on Bengal Vaiṣṇava Philosophy. Edited with introduction, notes & appendices by Umeshchandra Bhattacharya, M. A., B. L., Lahore 2 8 0

२११२ वेदान्ताधिकरणमाला—दशदिगन्तविजयिश्रीमद्गोस्वामिपुरुषोत्तममहाराजप्रकटिता। सजिल्द। मुम्बई १ ४ ०

2113 Aspects of the Vedanta— Madras 1 0 0

2114 Comparative Studies in Vedāntism—By Mahendra Nath Sircar, M. A., Ph. D.

2115 Hand-book of the Vedanta Philosophy and Religion—by R. V. Khedkar. Kolhapur 4 0 0

2116 Introduction to Vedanta Philosophy—by Pramathanatha Mukhopadhyaya. Calcutta 8 4 0

2117 Man & His Becoming according to Vedanta—By Rane Guenon. Authorized translation by Charles Whitby. London

2118 Outline of the Vedānta System of Philosophy According to Sankara—By Paul Deussen,t ranslated into English by J. H. Woods & C. B. Runkle. Foreign 4 4 0

2119 Philosophy of the Vedanta—By Paul Deussen. Bombay 0 2 0

2120 Practical Vedanta—By Swami Vivekānanda. Almora 0 10 0

2121 Rambles in Vedanta—By B. R. Rajam Aiyar. Madras 4 0 0

2122 A Sketch of the Vedanta Philosophy—To which is prefixed the life of Sujara Gokulji Lala, a typical Vedantin, by M. S. Tripathi, English, Bound. 3 0 0

2123 Studies in the Vedānta Sūtras (of Bādarāyaṇa)—Containing a critical & comparative study of fhe different commentaries & glosses of the commentators—Sankara, Ramanuja, Madhva, Srīkaṇṭḥa, Vallbhāchārya, Nimbārka, also an original commentary of the Vedanta Sutras by S. C. Basu in Sanskrit & English translation of the same. Second Edition, revised by Nand Lal Sinha M. A., B. L. Allahabad 3 0 0

2124 Studies in Vedantism—by K. C. Bhattacharya, M. A. 4 4 0

2125 Die Sūtras des Vedānta—Or the Sārīraka Mīmāṃsā of Bādarāyaṇa with Shaṅkara's commentary

translated in German by Dr. Paul Deussen.
Foreign 17 0 0

2126 System of Vedanta—Bādarāyaṇa's Brahmasūtras & Śaṅkara's commentary thereon, set forth as a compendium of the Dogmatics of Brāhmanism from the standpoint of Sankara, by Paul Deussen. Foreign 22 8 0

2127 System of Vedantic Thought & Culture—An Introduction to the Metaphysics of Absolute Monism of Sānkara school. By Mahendra Nath Sarkar, M. A., Ph. D.
Calcutta 7 14 0

2128 Thoughts from the Vedanta—A popular presentation. By R. Krishna Swami Aiyar, M. A., B. L., High Court Vakil, Tinnevelly. Cloth. Madras 1 8 0

2129 Thoughts on Vedanta—contains a collection of 6 lectures of Swami Vivekānanda. 0 10 0

2130 Three Lectures on the Vedanta Philosophy—delivered at the Royal Institution by the Right Hon'ble F. Max Müller. Bound. Foreign 8 8 0

2131 Universality of Vedanta—By Swami Prakashananda 0 7 0

2132 Vedanta in practice—By Swami Paramā Nanda. Boston. Cloth-bond 2 0 0

2133 Vedanta, Its Doctrine of Divine Personality—By K. S. Aiyar, M. A. Madras 1 8 0

2134 The Vedanta Its Ethical Aspect—By K. Sundararama Aiyar, M. A., containing 23 chapters with an appendix on "Gita, How to understand it." Cloth-bound.
Madras 3 0 0

2135 The Vedanta-Its Theory & Practice—By Swami Saradananda. Calcutta. 0 7 0

2136 Vedanta Light— Foreign 1 0 0

2137 Vedanta Philosophy—A lecture & discussion in English by Swami Vivekānanda at the Harvard University. Madras 0 6 0

2138 Vedanta Philosophy Lectures of Gopal Basu Mallik—By S. K. Belvalkar, M. A., Ph. D. Poona 1 6 0

2139 Vedanta Sūtras—with the Srī-Bhāshya of Rāmānujāchārya, translated into English by M. Raṅgāchārya, M. A. and M. B. Varadarāja Aiyangar, B. A., B. L. Madras

2140 Vedānta Sūtras—With the commentary of Śaṅkarāchārya translated into English by George Thibaut. 2 parts. Foreign 20 10 0

2141 Vedānta Sūtras—With the commentary of Śrī Madhvāchārya, translated into English by S. Subba Rao, M. A. Tirupati 4 0 0

2142 Vedānta Sūtras of Bādarāyaṇa—With the commentary of Baladeva on Govinda Bhāṣya, translated into English with text by the late R. B. Srīs chandra Basu. Allahabad 14 0 0

2143 Vedānta Sūtras—with Ramānuja's commentary translated into English by George Thibaut. Foreign 18 12 0

२१४४ **वेदार्थसंग्रहः**—वेदान्तप्रकरणग्रन्थः। श्रीमता भगवद्रामानुजाचार्येण प्रणीतः। वेदव्यासापरनामधेयश्रीसुदर्शनसूरिप्रणीततात्पर्यदीपिकाख्यव्याख्यया संवलितः। पं० श्रीराममिश्रशास्त्रिणा संशोधितः। बनारस ४ ८ ०

२१४५ **वैयासिकन्यायमालाविस्तरः**—भारततीर्थमुनिप्रणीतः। पूना १ १२ ०

२१४६ **वैराग्यप्रकाश**—अमेठीराजा श्रीमाधवसिंह द्वारा रचित। लखनऊ ० ४ ०

२१४७ **वैराग्यप्रदीप**— लखनऊ ० ४ ०

२१४८ **वैराग्यभास्करः**—श्रीस्वामिगोपालदासविरचितस्वकृतसंस्कृतकारिका और भाषाटीका सहित। मुम्बई ० १२ ०

२१४९ **वैराग्यशतक**—संस्कृत टीका तथा भाषाटीकासहित। मुम्बई ० ८ ०

2150 Vairāgyaśatakam—By Bhartri Hari, translated into English. Almora 1 4 0

२१५१ **व्यासतात्पर्यनिर्णयः**—अप्पयदीक्षितकृतः। मद्रास ० ८ ०

२१५२ **व्याससिद्धान्तमार्तण्डः**—श्रीमहामहोपाध्यायेन देशिकाचार्येण विरचितः। With an introduction in English by V. V. Srinivasa Ayyangar. Tirupati 4 0 0

२१५३ शङ्करदिग्विजयः—विद्यारण्यकृतः। धनपतिसूरिकृतडिण्डिमाख्यटीकया मोडकोपाह्वाच्युतरायविरचिताद्वैतराज्यलक्ष्मीटीकान्तर्गतविशेषविभागटिप्पण्या च समेतः। पूना ६ ० ०

२१५४ शाङ्करपादभूषणम्—श्रीमद्रघुनाथसूरिविरचितम्। सटीकम्। २ भागौ। पूना ८ ५ ०

2155. The Great Sankara & His Successors—by N. Venkataraman, M. A. Madras 1 8 0

2156 Minor Works of Śrī Śaṅkarāchārya—(श्रीशङ्कराचार्यविरचितप्रकरणग्रन्थाः) 70 minor works. Poona 4 0 0

2157 Vedanta Doctrine of Shankaracharya—Text and English translation by A. Mahadeva Shastri. Comprising 1. Dakshināmūrti stotra, 2. Praṇava Vārtika, 3. Dakshināmūrti Upanishad, 4. Sanskrit text of Mānasollāsa. Bound. Bombay 2 8 0

2158 Sankaracharya, Philosopher & Mystic--By Kashi Nath Trayambak Telang. Madras 0 6 0

2159 Vedanta according to Śaṅkara & Rāmānuja—By S. Radhakrishnan. London

2160 Works of Sri Sankaracharya—20 Vols. Ordinary Cloth Extra Gilt. 75 0 0

2161 Sri Sankara's Select Works—Sanskrit text and English translation. Translated by S. Venkataramanan. Madras 2 0 0

२१६२ शतदूषणी—४ भागों में। रामानुजाचार्यविरचित चण्डमारुताख्यया व्याख्यया समलंकृता। काञ्ची १६ १० ०

२१६३ शतश्लोकी—भाषाटीका। मुम्बई ० ८ ०

२१६४ शतश्लोकी—शंकराचार्यविरचित। आनन्दगिरिकृत टीकासहित। मुम्बई १ ० ०

2165 Aphorisms of Sāṇḍilya—With the commentary of Swapneswara, originally edited by J. R. Ballantyne, L. L. D. revised & re-edited by Nanda Lal Sinha, M. A., B. L. Allāhābad 1 0 0

२१६६ शाण्डिल्यभक्तिसूत्रभाष्यम्—मुरलीधरदासप्रणीत। मुम्बई

२१६७ शाण्डिल्यसूत्रम् (भक्तिमीमांसा)—स्वप्नेश्वरकृतभाष्यसहित। कलकत्ता ० १० ०

२१६८ **शब्दनिर्णयः**—श्रीप्रकाशात्मयतीन्द्रप्रणीतः। मद्रास ० १२ ०

२१६९ **शारीरकमीमांसादर्शनम्** (ब्रह्मसूत्राणि)— बनारस ० ० ६

२१७० **शारीरकविज्ञानम्** (मधुसूदन वैदिक ग्रन्थमाला)—दूसरा भाग। इसमें श्रीवेदव्यासकृत ब्रह्मसूत्रों के शङ्कर, रामानुज वल्लभादि भाष्यों के मतविवेचनपूर्वक वैज्ञानिक रीति से स्वमत भी बताया गया है। जयपुर ० १२ ०

२१७१ **शास्त्रदर्पण**—श्रीअमलानन्दविरचित। मद्रास २ ८ ०

Shāstra-Darpaṇa—A masterly treatise on Brahma-sūtras. Madras 2 8 0

२१७२ **शास्त्ररहस्यार्याशतकम्**— मुम्बई ० २ ०

२१७३ **शास्त्रसिद्धान्तलेशतात्पर्यसंग्रह**—श्रीवासुदेवब्रह्मेन्द्रसरस्वतीविरचितः। मुम्बई २ ० ०

२१७४ **शिखरणीमाला**—तत्कृतशिवतत्त्वविवेकाख्यव्याख्यासहिता। मद्रास २ ४ ०

२१७५ **शिवकर्णामृत**—श्रीमदप्पयदीक्षित विरचित। बनारस ० ७ ०

२१७६ **शिवतत्त्वरहस्य**—नीलकंठदीक्षितविरचित। बनारस ० १३ ०

२१७७ **शिवनामकल्पलता**—श्रीमदग्निचिद्भास्करप्रणीतवेंकटाचलप्रणीतालबालसुधापुरसहित। सजिल्द। मुम्बई १ ० ०

२१७८ **शिवसंहिता**—भाषाटीका, सजिल्द। मुम्बई १ ८ ०

२१७९ **शिवसूत्रवार्त्तिकम्**—भास्करकृतम्। **शिवसूत्रवृत्तिः, स्पन्दकारिकाः** कल्लटवृत्तिसमेता: Bound in one. Kashmir 2 8 0

२१८० **शिवसूत्रवार्त्तिकम्**—शिवसूत्राणि कृष्णदासापरपर्यायवरदराजविरचितवार्त्तिकोपेतानि। काश्मीर १ ० ०

२१८१ **शिवसूत्रविमर्शिनी**—वसुगुप्तस्य सूत्राणि, श्रीक्षेमराजस्य विमर्शिनीटीकोपेतानि। सजिल्द। काश्मीर ३ ० ०

2182 Shivasūtravimarshinī—English translation by P. T. Srinivasa Iyengar. Benares 3 0 0

२१८३ **शिवस्तोत्रावली**—उत्पलदेवविरचिता। श्रीक्षेमराजविरचितवृत्तिसमेता। बनारस ३ ० ०

2184 Shivādvaita of Srīkaṇṭha—in English by S. S. Surya Narayana Shastri. Madras 5 10 0

२१८५ **शिवाद्वैतनिर्णयः**—अप्पयदीक्षितकृतः। An inquiry into the system of Srīkaṇṭha, with an introduction, translation and notes by S. S. Surya Narayana Shastri, Madras 2 13 0

२१८६ शिवानन्दलहरी—श्रीशंकराचार्यविरचिता । मूलमात्र । मुम्बई ० २ ०

२१८७ शिवानन्दलहरी (शंकराचार्यकृता)—Translated into English by G. Sundaram B. A. Trichur 0 10 0

२१८८ शुद्धाद्वैतमार्तण्डः—श्रीगिरिधरमहाराजविरचितः । रामकृष्णभट्टकृतप्रकाशाख्यव्याख्यासहितः । मुम्बई २ ८ ०

२१८९ शुद्धाद्वैतमार्तण्डः—स्वामिश्रीगिरिधरमहाराजविरचितः । श्रीरामकृष्णभट्टविरचितप्रकाशाख्यव्याख्यासंवलितः । प्रमेयरत्नार्णवश्च श्रीबालकृष्णभट्टविरचितः । सम्पूर्णः । बनारस १ ८ ०

२१९० श्रीकरभाष्य—अर्थात् वेदान्तसूत्राणि श्रीपतिपण्डिताचार्यकृतभाष्यसहितानि । Edited with Introduction by Mr. C. Hayavadana Rao. 2 Vols. Madras 17 0 0

[The commentary belongs to sirca 1400 A. D. and comes next to the wel-known commentaries of Śaṅkara, Rāmānuja and Ānandatīrtha. The author (of the com.) advocates the theory of Bhedābheda. In the Introduction, which is in English & to which Vol. 1 is devoted, an account of the author & his work is given together with an exposition of his work & views of those who preceded him as commentators. The text of the work has been published in Devanāgarī for the first time.]

२१९१ श्रीभाष्यम्—टिप्पणसहितम् । विशिष्टाद्वैतपरं रामानुजदर्शनम् । पादरीजानसन एम. ए. महोदयैः संशोधितम् । बनारस ६ ० ०

२१९२ श्रीभाष्यम्—श्रीरामानुजाचार्यप्रणीतम् । ३ भाग कलकत्ता २ ४ ०

२१९३ श्रीभाष्यम्—मूलमात्रम् । Śrībhāṣya of Rāmānuja, text in 2 Vols; edited by M. M. Vasudeva Sastri Abhyankar. Poona 17 0 0

२१९४ श्रीभाष्यम्—वेदान्तदीपवेदान्तसाराधिकरणसारावलीसहिततत्तत्पुटेष्वधोभागे प्रमाणाकारैः परिष्कृतः । अकारादिक्रमेण सूत्रसूचीसनाथम् । २ भागौ । मद्रास ६ ० ०

२१९५ श्रीभाष्यम्—श्रीभगवद्रामानुजमुनिप्रणीतम् । महामहोपाध्यायसुदर्शनव्यासभट्टप्रणीतश्रुतप्रकाशिकायुतम् । चतुःसूत्रीभागः । मुम्बई ४ ८ ०

2196 Śrī Bhāshyam—Translated into English by Diwan Bahadur V. K. Ramanujachari 3 Vols. Kumbakonam

२१९७ **श्रीभाष्यवार्त्तिकम्**—श्रीमद्रामानुजाचार्यविशिष्टाद्वैतसिद्धान्तप्रतिपादनपरम् । यतीन्द्रमतदीपिका च । श्रीगोविन्दाचार्यसूनुश्रीनिवासाचार्यकृतसकलाचार्यमतसंग्रहश्च । सम्पूर्णम् । बनारस ३ ० ०

२१९८ **श्रीभाष्यविमर्शनपरीक्षा**— काञ्ची ० ७ ०

२१९९ **श्रीवचनभूषणम्**— काञ्ची ० ९ ०

२२०० **श्रीवैष्णवमतदूषणोद्धारः**— काञ्ची १ १ ०

२२०१ **श्रुतिकल्पलता**—श्रीमद्वामनपण्डितविरचिता 'वेदस्तुति' व्याख्या । मुम्बई ३ ८ ०

२२०२ **श्रुतिमतोद्योतः**—त्र्यम्बकशास्त्रिविरचितः । मद्रास ० ८ ०

२२०३ **श्रुतिरत्नप्रकाशः**—कामाक्षिविरचितः । मद्रास ० १२ ०

२२०४ **श्रुतिरहस्यम्**—श्रीगिरिधरचरणविरचितम् । कृष्णभट्टकृतप्रकाशसमेतम् । मुम्बई १ ४ ०

२२०५ **श्रुतिसारसमुद्धरणम्**—गिर्यपरनामकतोटकाचार्यप्रणीतम् । सच्चिदानन्दयोगीन्द्रविरचितवृत्तिसहितम् । पूना ० १३ ० मद्रास ० १२ ०

२२०६ **श्रुतिसिद्धान्तरत्नाकर**—अर्थात् द्वैताद्वैतवेदान्त का सार, भाषा में, अनेक श्रुति स्मृति की टिप्पणियों से विभूषित । सजिल्द । मुम्बई २ ० ०

२२०७ **श्रुत्यन्तकल्पवल्ली** (निम्बार्क)—श्रीमत्पुरुषोत्तमदासविरचिता सम्पूर्णा । काशी ३ ० ०

२२०८ **श्रुत्यन्तसुरद्रुमः**—सविशेषनिर्विशेषश्रीकृष्णस्तवव्याख्यारूपः । विद्वद्वरश्रीपुरुषोत्तमप्रसादविरचितः । **श्रुतिसिद्धान्तमञ्जरी**—श्रीव्रजेश्वरप्रसादकृतः । ३ भागों में सम्पूर्ण । बनारस ४ ८ ०

२२०९ **षट्त्रिंशत्तत्त्वसंदोहः**—**भावोपहारः**—चक्रपाणिनाथकृतः । **बोधपञ्चदशिका**—अभिनवगुप्तकृता । **अनुत्तरप्रकाशपञ्चाशिका**—आदिनाथकृता । **पराप्रवेशिका**—क्षेमराजकृता । Bound in one. Kashmir 1 7 0

२२१० **संकल्पसिद्धि**—ले० स्वामी ज्ञानाश्रमजी । भाषाग्रन्थ । उज्जैन ० १० ०

२२११ **संक्षेपशारीरकम्**—मधुसूदनीटीकासहितम् । बनारस ८ ० ०

२२१२ **संक्षेपशारीरकम्**—श्रीसर्वज्ञात्ममुनिविरचितम् । परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीरामतीर्थस्वामिविनिर्मितान्वयार्थप्रकाशिकाख्यया व्याख्यया समलंकृतम् । पूज्यपादपर्वतीयश्रीमन्नित्यानन्दपण्डितप्रदर्शितरीत्यावभ्रेइत्युपनामकेन भाउशास्त्रिणा संशोधितम् । बनारस ८ ० ०

२२१३ **संक्षेपशारीरक**—सटीकसुबोधिनीटीका तथा अन्वयार्थप्रकाशिका दो टीकाओं समेत । सम्पूर्ण । २ भाग । पूना ९ १ ०

२२१४ **संक्षेपशारीरकम्**—श्रीमत्सर्वज्ञमुनिविरचितम् । श्रीमन्नृसिंहाश्रमविरचितया तत्त्वबोधिन्याख्यया टीकया सहितम् । [The commentary has now been published for the first time.] Allahabad. 1 12 0

२२१५ **संशयतदुच्छेदवादः** (श्रीमधुसूदनझाजीविरचितः)—सृष्टि की उत्पत्ति में पूर्व महर्षियों के वैज्ञानिक मतभेदों का निरूपण और उनका विज्ञानद्वारा समन्वय। ० १२ ०

२२१६ **संन्यासनिर्णयः**—वल्लभाचार्यप्रणीतः। अष्टविवरणसमेतः। मुम्बई १ ४ ०

2217 Satyāḥ Kāmā or True Desires—Being thoughts on the Meaning of Life. By S. E. Stokes. Madras 3 0 0

२२१८ **सत्तत्त्वरत्नमाला**—(ताम्रपर्णीयप्रमेयग्रन्थः)—आनन्दतीर्थाचार्यप्रणीता। यह ग्रन्थ द्वैतफिलासफी के समझने में अच्छी सहायता देता है। मद्रास २ ० ०

२२१९ **सत्यार्थप्रकाश और श्रीवैष्णवसम्प्रदाय**— काशी ० ७ ०

२२२० **सदसद्वादः** (श्रीमधुसूदनजी झा कृत)—इसमें भी सृष्टि के उपादानकारण-वेदोक्त सत्-असत्-सदसत् इन तीन मूल तत्त्वों का विवेचन २१ तरह से किया गया है। ० ८ ०

२२२१ **सदाचार**—भाषानुवादसहित। आगरा ० १२ ०

२२२२ **श्रीसदाशिवेन्द्रकृतप्रकरणानि**— मद्रास ० ६ ०

२२२३ **सद्विद्याविजयः**—श्रीमहाचार्यविरचितः। मद्रास १ ८ ०

२२२४ **सनत्सुजातीयम्**—श्रीशंकराचार्यकृतभाष्येण नीलकण्ठीयटीकया सहितम्। काशी १ ४ ०

२२२५ **सन्तप्रभाव**—साधु श्रीमाणिकदास जी कृत। मुम्बई ० ६ ०

२२२६ **सन्तोषसुरतरु**—साधु श्रीमाणिकदास जी कृत। मुम्बई ० ६ ०

२२२७ **सर्वमूलम्**—श्रीमध्वाचार्यकृताः सर्वे मूलग्रन्थाः। मद्रास, १३ ८ ०

२२२८ **सर्वलक्षणसंग्रहः**—भिक्षुगौरीशंकरेण संगृहीतः। पुस्तकेऽस्मिन्दार्शनिकविषयाणां तथान्यान्यसमस्तशास्त्रीयपदार्थानामकारादिक्रमेण ३२३१ लक्षणान्येकत्रितानि। काशी ० ४ ०

२२२९ **सर्ववेदान्तसिद्धान्तसारसंग्रहः**—शंकरभगवत्पादाचार्यविरचितः। मद्रास ० ६ ०

२२३० **सर्ववेदान्तसिद्धान्तसारसंग्रहः**—पं० रामस्वरूप जी कृत भाषाटीका सहित। सजिल्द मुरादबाद २ ० ०

२२३१ **सहजप्रकाश**—सहजोबाई कृत। मुम्बई ० ६ ०

२२३२ **सारुक्तावली**—भाषा हरदयालकृत। मुम्बई ० ३ ०

२२३३ **सिद्धान्तकल्पवल्ली**—श्रीसदाशिवेन्द्र सरस्वतीकृतव्याख्या सहित। मद्रास ० ८ ०

२२३४ **सिद्धान्तचन्द्रिका**—रामानन्दप्रणीता सटीका। मुम्बई ० १० ०

२२३५ **सिद्धान्तचिन्तामणिः**— कांची ० १४ ०

२२३६ **सिद्धान्ततत्त्वं नाम वेदान्तप्रकरणम्**—मीमांसाधुरंधरश्रीमदनन्तदेवेन निरूपितम्। बनारस ० १२ ०

२२३७ **सिद्धान्ततत्त्वबिन्दुः**—सटीक। मुम्बई १ ८ ०

2238 Siddhānta Darśana—Original text with English translation by Pt. Mohan Lal Sandal. Allahabad 3 0 0

२२३९ **सिद्धान्तदर्शनम्**—महर्षिवेदव्याससूत्रश्रीमन्मनस्विविश्वदेवाचार्यकृतनिरञ्जन-भाष्यसमेतम्। पूना १ ४ ०

२२४० **सिद्धान्तप्रकाश**—काशीनिवासी महात्मा परमहंस परमानन्द जी कृत। लखनऊ ० ७ ६

२२४१ **सिद्धान्तबिन्दु**—भाषाटीका सहित। काशी १ ६ ०

२२४२ **सिद्धान्तबिन्दुः**—मधुसूदनसरस्वतीविरचितः। ब्रह्मसरस्वतीविरचितरत्ना-वल्याख्यया टीकया सहितः। मद्रास ४ ६ ०

२२४३ **सिद्धान्तबिन्दुः**—मधुसूदनसरस्वतीकृत पुरुषोत्तमकृतव्याख्यायुतः। Edited by P. C. Divanji M. A. बड़ोदा ११ ० ०

२२४४ **सिद्धान्तबिन्दु**—श्रीमधुसूदनसरस्वतीविरचितः श्रीभगवच्छंकराचार्यविरचित-दशश्लोकव्याख्यारूपः। श्रीगौडब्रह्मानन्दविरचितन्यायरत्नावल्या नारायणतीर्थविरचितलघुव्याख्यया च युतः। टिप्पणीसहितः। बनारस ४ ० ०

२२४५ **सिद्धान्तबिन्दुः**—मधुसूदनसरस्वतीकृतः ० म० वासुदेवशास्त्रिअभ्यंक-रकृतव्याख्यासहितः। पूना २ ८ ०

2246 Siddhanta Bindu—English translation by P. M. Modi M. A. With a foreword by Rev. Zimmermann. Bombay 3 0 0

२२४७ **सिद्धान्तबिन्दुसारः** तथा **ब्रह्मस्तोत्रम्**—श्रीतारानाथ तर्कवाचस्पतिकृत व्याख्या सहित। कलकत्ता ० ८ ०

२२४८ **सिद्धान्तमुक्तावली**—विट्ठलेश्वरकृतविवृतिसमेता वल्लभाचार्यप्रणीता। मुम्बई १ ४ ०

२२४९ **सिद्धान्तरत्नम्**—बलदेवविद्याभूषणकृतम्। Edited with Introduction by Gopinath Kaviraj, M. A., 2 parts. Allahabad 3 14 0

२२५० **सिद्धान्तरहस्यम्**—वल्लभाचार्यप्रणीतम। एकादशविवरणसमेतम्। मुम्बई १ ४ ०

२२५१ **सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः** Siddhāntaleśa Saṅgraha of Appaya Dīkshita—Edited &c. by Mr. S. S. Sūryanārāyaṇa Śāstrī. Vol. I. English translation. Madras 5 10 0

Vol. II Roman & Sanskrit text. 3 6 0

Vol. II Sanskrit text. 1 12 0

२२५२ **सिद्धान्तलेशसंग्रहः**—अप्पयदीक्षितविरचितः कृष्णानन्दतीर्थविरचितया कृष्णालंकाराख्यया व्याख्यया समलंकृतः। बनारस ६ ० ०

२२५३ **सिद्धान्तलेशसंग्रहः**—विस्तृतव्याख्यासहितः। कलकत्ता ४ ८ ०

2254 Siddhāntalesha (सिद्धान्तलेशसंग्रहः सटीक)—Of Appaya-Dīkshita with extracts from the commentary of Śrī Krishṇalaṅkāra Achyutakrishṇānanda Tīrtha. Edited by M. M. Gaṅgādhara Shāstrī. Benares 2 13 0

२२५५ **सिद्धान्तलेशसंग्रह**—भाषानुवाद सहित। काशी ३ ० ०

२२५६ **(शास्त्र) सिद्धान्तलेशसंग्रहः**—अच्युतकृष्णानन्दतीर्थकृतया कृष्णालङ्काराख्यटीकया सहितः। With an Introduction in English by P. P. S. Shastri, B. A. (Oxon.), M. A. Vol. I. Madras 2 8 0

२२५७ **सिद्धान्तसिद्धाञ्जनम्** श्रीकृष्णानन्दविरचितम्। ४ भागों में। मद्रास ७ ० ०

२२५८ **सिद्धित्रयम्**—वेदान्तप्रकरणम्। विशिष्टाद्वैतब्रह्मनिरूपणपरम्। श्रीयामुनमुनिविरचितम्। सम्पूर्णम्। बनारस १ ८ ०

२२५९ **सिद्धित्रयीप्रत्यभिज्ञाकारिकावृत्ति**। Bound in one. Kashmir 3 0 0

२२६० **सिद्धिसाधन**—भाषाटीका। लखनऊ ० ४

२२६१ **सुदर्शनमीमांसा**— काञ्ची ० ११

२२६२ **सुन्दरविलास**—टिप्पणसहित। मुम्बई ० १२

२२६३ **सुन्दरविलास**—ब्रह्मनिष्ठ पं० पीताम्बरकृत विपर्यय अङ्ग की टीका सहित और ज्ञानसमुद्र सुन्दर काव्यसहित। सजिल्द। मुम्बई १ १२

२२६४ **सुन्दरविलास**—(ज्ञानसमुद्र, ज्ञानविलास, सुन्दराष्टकादि सहित)। सटिप्पण। सजिल्द। मुम्बई १ ४

२२६५ **सुन्दरविलास**—सुन्दरदासजी के जीवनचरित्रसहित। भाषा पद्य। इलाहाबाद १ १

२२६६ **सुन्दरविलास**—(महात्मा सुंदरदास)। गुरुमाहात्म्य, भजनप्रसंग, देहान्त विछोह, तृष्णानिवारण आदि विषयवर्णित हैं। लखनऊ

२२६७ **सुमध्वविजय**— मद्रास ० १२

२२६८ **सूक्तावलीसहिता सारुक्तावली**—भाषाटीकासहित। मुम्बई ० ८

२२६९ **सूतसंहिता**—माधवाचार्यप्रणीततात्पर्यदीपिकाव्याख्यासहिता। सम्पूर्ण। मद्रास ६ ०

२२७० **सूतसंहिता**—माधवाचार्यप्रणीततात्पर्यदीपिकाव्याख्यया सहिता। ३ भाग सम्पूर्ण। पूना ११ ८ ०

२२७१ **सूरदास का दृष्टिकूट**—सटीक। इस में कविशिरोमणि सूरदास जी के दृष्टिकूट छन्दों का समावेश किया गया है। लखनऊ ० ८ ०

२२७२ **स्पन्दकारिका**— काश्मीर २ १२ ०

२२७३ **स्पन्दनिर्णय**—क्षेमराजकृत। काश्मिर ४ ० ०

2274 Spanda Pradīpikā (**स्पन्दप्रदीपिका**)—Of Utpalāchārya. A. commentary on the Spandakārikā edited by Pt. Vaman Shastri Islampurkar. Benares 1 2 0

२२७५ **स्पन्दसन्दोह**—क्षेमराजकृत। काश्मीर ० ८ ०

२२७६ **स्वरूपानुसन्धान**—रियासत भावनगर के सुप्रसिद्धदीवान श्रीगौरीशंकर उदयशंकरओझा विरचित गुर्जर भाषाके अपूर्व वेदान्त ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद मुम्बई ३ ० ०

२२७७ **स्वर्ग का विमान**—गुजराती भाषा से बूंदीराज्यनिवासी पं० रामजीवनजी नागर द्वारा अनुवादित। मुम्बई

२२७८ **स्वात्मनिरूपणम्**—श्रीमच्छंकराचार्यविरचितसच्चिदानन्दसरस्वतीप्रणीतया व्याख्यया समलंकृतम्। मुम्बई ० ४ ०

२२७९ **स्वात्मनिरूपण**—भाषाटीका सहित। मुरादाबाद ० ४ ०

२२८० **स्वानुभवप्रकाशः**—पं० हनुमद्व्यासेन विरचितः। मुम्बई ० १ ६

२२८१ **स्वानुभवादर्श**—श्रीमत्परमहंसनारायणाश्रमशिष्यमाधवाश्रमविरचितः। स्वकृतटीकाविभूषितश्च। २ भागों में सम्पूर्ण। बनारस ३ ० ०

२२८२ **स्वानुभूतिविलासः**—खुला पत्रा। मुम्बई ० ४ ०

२२८३ **स्वाभाविकधर्म**—महात्मानथूरामजीकृत। भाषामें। मुरादाबाद ० ४ ०

२२८४ **स्वाराज्यसिद्धिः**—सुरेश्वराचार्यकृत। पं० रामचन्द्रकृत भाषाटीकासहित। मुरादाबाद ० ८ ०

२२८५ **स्वाराज्यसिद्धिः**—भाषानुवाद सहित। आगरा १ ४ ०

२२८६ **हंससन्देशः**—सभाष्यः। मद्रास ० ८ ०

२२८७ **हरिमीडे नामकं स्तोत्रम्**—हरितत्त्वमुक्तावल्याख्यव्याख्यासमन्वितम्। मुम्बई १ ४ ०

2288 Abhoga—A rare commentary on the Kalpataru by Lakshmi Nrisiṃha. Part I. To the end of the Chatussūtrī. 2 0 0

2289 Advaitism and the Religions of the East—By R. V. Khedkar. 4 8 0

2290 Altar Flowers. Almora 1 4 0

2291 A Brief Sketch of Rama's Life—Popular edition.
Lucknow 0 6 0

2292 Complete Works of Swami Rama—"In woods of God-realization". 8 vols. Lucknow 7 0 0

2293 Crest-Jewel of Wisdom of Shree Shankarachārya—translated by Mr. J. N. Paramananda.
Bombay 0 8 0

2294 Rama's Life or रामजीवनचरित—गोस्वामी रामतीर्थ का जीवन चरित हिन्दी । लखनऊ २ ८ ०

2295 Complete Works of Swami Vivekananda—7 Vols. With Index. Board. Almora 21 10 0

2296 Democratic Hinduism—By G. Krishna Shastri.
Poona 2 8 0

2297 Discourses on Jnāna Yoga, Etc.—By Swāmī Vivekānanda. Calcutta 0 10 0

2298 Divine Message—By Hanumān Prasad Poddar.
Gorakhpore 0 0 9

2299 Essentials of Advaitism—By Dr. R. Das or a free translation of Sureshwar's नैष्कर्म्यसिद्धि । Lahore 5 0 0

2300 Heart of Rāma—Popular edition.
Lucknow 0 4 0

2301 Hindu Monism and Pluralism—By M. H. Harrison. Bombay 7 8 0

2302 Indische Theosophie or the Indian Theosophy by J. S. Speyer. Bound. Library edition. Foreign 12 8 0

2303 Introduction to Advaita Philosophy—By Kokileśwar Śāstrī Vidyāratna M. A. The work is a brilliant exposition of the Shankara-school of the Vedanta Philosophy. Calcutta 4 0 0

2304 Karlima Rani—By Śrī Ānanda Āchārya. Being a series of eighteen lectures on the Reconstruction of the Humanity. Ideal together with a new Interpretation of the Laws of Real Living and their relation to a hitherto undiscovered aspect of Nature, called Person-Nature.

and to God, delivered by Sister Karlima Rani, Abbess of the Kristo Cloisters on the slopes of Mount Kailasa above Lake Mansarovara in the Hymalayas, Scandinavia.

2305 Kashmir Shaivism—Brief-introduction to the history, literature and doctrines of the Advaita Shaiva Philosophy of Kashmir. Srinagar 2 8 0

2306 Lectures on Jnana Yoga—By Swami Vivekānanda. Calcutta 1 12 0

2307 Light cn Life—Six Spiritual Discourses and an Auto-biographical Sketch. By Bharati. Madras 1 0 0

2308 Metaphysics of Pragmatism—By Sydney Hook. London

2309 Madhva's Philosophie des Vishnu-Glaubens—Mit eiver einleitung Über Madhva and seine Schule Ein Beitrag Zur Sektengeschichte des Hinduismus. Von Helmuth Von Glasenapp. Foreign 10 8 0

2310 A Metaphysique of Mysticism—By A Govindacharya. Mysore 8 0 0

2311 The Mind Aspect of Salvation. Part I. By F. T. Brooks. Madras

2312 Object of Wisdom and Bhakti for जन्मसाफल्य, with notes. Palghat 0 8 0

2313 Parables of Rama—Popular edition. Lucknow 2 0 0

2314 Philosophy of Shankara—The Sujna Gokulji Lala Vedanta Prize Essay. By Magan Lal A. Buch, M. A. Baroda

2315 Poems of Rama—Popular edition. Lueknow 0 4 0

2316 Rama's Note Books—2 Vols. cloth-bound. Lucknow 2 0 0

2317 Reign of Realism in Indian Philosophy—The first authoritative Exposition of Ten Works of Madhva (दशप्रकरण) in easy and eloquent English by Dr. R. Naga Raja Sarma. 16 0 0

2318 Śivādvaita of Śrīkaṇṭha—By S. S. Sūryanārāyaṇa Sastri, M. A., B. Sc., Barrister-at-Law. Madras 5 0 0

2319 Songs of the Soul—By Swami Yogananda. 4 8 0

2320 Story of Swami Rama—By S. Puran Singh, Popular Edition. Lucknow 2 8 0

2321 Studies in Post-Śaṅkara Dialectics—By Ashutosh Bhattacharya Shāstrī. Throwing much new light on Vedantic theories of Śrīharṣa, Chitsukha and Madhusūdana. Calcutta 4 0 0

2322 Sujna Gokulji Lala Vedanta Prize Essay for 1915—Discuss how far Sankaracharya truly represents the view of the author of the Brahmasūtras. By M. T. Telivala, B. A., LL. B. Bombay

2323 Die Sūtras des Vedanta—Oder die Cārīraka-Mīmāṃsā der Bādarāyaṇa Nalist dem vollständigen commentare des Cáṅkara. Aus dem Sanskrit übersetzt Von Dr. Deussen. Leipzig

2324 Swami Rama, His Life and Legacy—By Pt. Brij Nath, M. A., LL. B. Popular edition. Lucknow 3 0 0

2325 Swami Ram Tirtha's complete Works—In 8 Vols. Lucknow 8 0 0

2326 Swami Vivekanand's Speeches and Writings—Madras 3 0 0

2327 Ten Commandments of Swami Rama—Cloth-bound, in Hindi or English. Lucknow 1 0 0

2328 Three Great Āchāryas, : Śaṅkara, Rāmānuja and Madhva— Madras 2 0 0

2329 Three Tattvas—Being the criticism by Sri Rāmānuja of the theories of oneness. Translated into English by Diwan Bahadur V. K. Rāmānujāchāri. Kumbakonam 3 0 0

2330 Way to God-Realization—By Hanuman Prasad Poddar. Gorakhpur 0 4 0

गीता-ग्रन्थाः

२३३१ अर्जुनगीता भाषा—कृष्णार्जुनसंवाद। मुम्बई ० ४ ०

२३३२ अवधूतगीता (दत्तात्रेय)—मूल। रेशमी जिल्द। मुम्बई ० ७ ०
सादा जिल्द ० ४ ०

२३३३ अवधूतगीता (दत्तात्रेय)—स्वामीपरमानन्दकृत भाषाटीका सहित १ ८ ०

२३३४ अवधूतगीता—भाषाटीका सहित छोटी। मुम्बई ० ६ ०

२३३५ अवधूतगीता—भाषाटीका सहित। ० ४ ०

2336 Avadhūta Gīta of Dattātreya—Translated with an exhaustive introduction by Kannoo Mal, M. A. Madras 1 0 0

२३३७ अष्टादशश्लोकीगीता—भाषाटीका सहित ० १ ०

२३३८ अष्टावक्रसंहिता—सटीका। कलकत्ता १ ० ०

२३३९ अष्टावक्रगीता (अष्टावक्र)—ब्रह्मचारी नर्मदानन्द जी कृत भाषाटीका सहित मुरादाबाद ० ८ ०

२३४० अष्टावक्रगीता (अष्टावक्र)—भाषाटीका सहित। सजिल्द। मुम्बई १ ० ०

२३४१ अष्टावक्रगीता—जालिमसिंहकृत भाषाटीका सहित। सजिल्द लखनऊ १ ८ ०

2342 Īśvaragītā—translated into Engish by L. Kannoo Mal, M. A. Lahore 1 8 0

2343 L' Īśvaragītā—Le chant de Siva. Texte Extrait du Kūrma-Purāṇa. Traduit du Sanskrit par P. E. Dumont. Paris 16 0 0

२३४४ उत्तरगीता—गौडपादाचार्यकृत संस्कृतटीकासहित। ० ३ ०

२३४५ उत्तरगीता—गौडपादाचार्यकृत संस्कृत व्याख्यासहित। मद्रास ० ६ ०

2346 Uttara Gītā—English translation, being the initiation of Arjuna by Shri Krishna into Yoga and Dhyana. Bombay 0 4 0

2347 Uttara Gītā—With English translation and notes By B. K. Laheri, F. T. S. Madras 0 8 0

२३४८ कपिलगीता (भागवतान्तर्गत)—कपिलदेव जी का अपनी माता देवहूति को ज्ञानोपदेश। पं० ज्वालाप्रसादकृत भाषाटीकासहित। ० १२ ०
गोरखपुर ० ० ६

२३४९ ग़ज़लगीता—भाषा।

२३५० गणेशगीता—मूलमात्र।) रेशमी जिल्द। मुम्बई ० ६ ०
२३५१ गणेशगीता (गणेशपुराणान्तर्गत)—पं० ज्वालाप्रसादकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई ० ८ ०
२३५२ गणेशगीता (गणेशपुराणान्तर्गता)—नीलकंठविरचितटीकासमेता। पूना २ ० ०
२३५३ गर्भगीता—भाषा। श्रीकृष्णार्जुनसंवादः। बनारस, मुम्बई ० १ ०
२३५४ जीवन्मुक्तिगीता—भाषाटीकासहित। ० १ ०
२३५५ देवीगीता (देवीभागवतान्तर्गत)—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई ० १० ०
२३५६ धीशगीता—भाषाटीकासहित। ० १२ ०
२३५७ नारदगीता—मूलमात्र। मुम्बई ० १ ०
२३५८ नारदगीता—भाषाटीकासहित। मुम्बई ० १ ०
२३५९ पञ्चदशगीता—महाभारतान्तर्गत काश्यपगीता, शौनकगीता, अष्टावक्रगीता, नहुषगीता, सरस्वतीगीता, युधिष्ठिरगीता, धर्मव्याधगीता, तथा कृष्णगीतादिक का एकत्र संग्रह है। मुम्बई ० १२ ०
२३६० पञ्चरत्नगीता—सादी। मुम्बई ० १२ ०
२३६१ पञ्चरत्नीगीता—६४ पेजी रेशमी जिल्द सूक्ष्माक्षर। मुम्बई ० ८ ०
२३६२ पञ्चरत्नीगीता—इसमें भगवद्गीता, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, मनुस्मृति और गजेन्द्रमोक्ष इतने प्रकरण हैं। रेशमी जिलद स्थूलाक्षर। मुम्बई १ ४ ०
२३६३ पञ्चरत्नीगीता—रेशमी जिल्द मध्यमाक्षर। मुम्बई ० १४ ०
२३६४ पाण्डवगीता—मूल ० १ ०
२३६५ पाण्डवगीता—भाषाटीकासहित। मुम्बई ० ३ ०
२३६६ ब्रह्मानन्दमोक्षगीता—स्वामीब्रह्मानन्दजीकृत। मुम्बई १ ४ ०
२३६७ अनासक्तियोग—(श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद)। महात्मागान्धीजीकृत। ० २ ६
२३६८ गीता—भाषा। पं० ज्वालाप्रसादकृत। लाहौर ० ६ ०
२३६९ गीता—राधेश्यामकृत। १—अर्जुनमोह, २—आत्मा की अमरता, ३—कर्मयोग, ४—विराट्रूपदर्शन, ५—जीवब्रह्मविवेक, ६—अर्जुन का समाधान। प्रत्येक ० ३ ०
२३७० गीता—रयोड़ी मूल लघुगुटका रेशमी ० ५ ०
२३७१ गीताभगवद्भक्तिमीमांसा—पं० सीतारामशास्त्रिकृत गीता की भक्ति-प्रधान व्याख्या ० ४ ०
२३७२ गीतामृतधारा—त्रयोदशरत्न (भाषा)। मुम्बई ० १२ ०
२३७३ गीता में ईश्वरवाद—श्रीहीरेन्द्रनाथदत्तकृत। प्रयाग १ १२ ०
२३७४ गीतारत्नमाला—अर्थात श्रीमद्भगवद्गीता का पद्यानुवाद। लेखक—वासुदेव कवि। कलकत्ता १ ८ ०

२३७५ गीतारहस्य—अथवा कर्मयोगशास्त्र। लोकमान्यबालगंगाधरतिलकविरचित। भगवद्गीता की भाषाटीका, बृहद्भूमिकासहित। पूना ४ ० ०

२३७६ गीतार्थसंग्रहः—रक्षया सहितः। काशी ० ७ ०

2377 Gitārtha Saṅgraha गीतार्थसंग्रह—Summary of the teaching of the Bhagavadgītā By Yāmunārya. with explanation in English by V. K. Ramanujachari. Kumbakonam. 0 12 0

२३७८ गीतासङ्गीतसुधासागर—भाषा में। काशी ० २ ०

२३७९ गीतासंग्रह—इसमें पुत्रगीता; मङ्किगीता, बोध्यगीता, पिङ्गलागीता, शम्याकगीता, अजगरगीता, शृगालगीता, षड्जगीता, हारीतगीता, हंसगीता, व्यासगीता, नारदगीता—इनका संग्रह है। महाभारत से छांटकर यह संग्रह किया गया है। इटावा ० ६ ०

२३८० गीतासंग्रह—प्रथमो भागः। पूना २ ८ ०

२३८१ गीतासतसई (सुदर्शनाचार्य)—दोहा काव्य ० ४ ०

२३८२ गीतासमीक्षा— ० २ ०

२३८३ गीतासाररत्नमाला—अभेदभक्त श्रीगंगाविष्णुमाहेश्वरी सोमाणी रचित। मुंबई ० १२ ०

२३८४ गीतासूची—गीतासाहित्य की विस्तृत सूची। ० ८ ०

२३८५ गुरुगीता—(स्कन्दपुराणान्तर्गत)—भाषाटीकासहित ० २ ०

२३८६ गोविन्दनामगीता— ० ८ ०

२३८७ श्रीमद्भगवद्गीता—छोटा गुटका। सुन्दर जिल्द ० ८ ०

२३८८ श्रीमद्भगवद्गीता—गुटका। सुन्दर जिल्द। मुम्बई ० ७ ०

२३८९ भगवद्गीता—मूल ० १ ६

२३९० भगवद्गीता—मूलमात्र। ० ८ ०

२३९१ भगवद्गीता—मूल। रेशमी। ३२ पेजी। मुम्बई ० ६ ०

२३९२ भगवद्गीता—मूल। ६४ पेजी। रेशमी जिल्द। मुम्बई ० ६ ०

२३९३ भगवद्गीता मूल—सचित्र। स्थूलाक्षर गोरखपुर ० ५ ०

२३९४ भगवद्गीता मूल—बुकसाईज। मध्यमाक्षर। सादी। मुम्बई ० ५ ०

२३९५ भगवद्गीता मूल—मध्यमाक्षर। सादी। मुम्बई ० ७ ०

२३९६ भगवद्गीता—मूलमात्र। १६ पेजी। सजिल्द। ० १० ०

२३९७ भगवद्गीता—मूल (तावीजी)। रेशमी जिल्द। २×२½ इञ्च ० ४ ०

२३९८ भगवद्गीता मूल विष्णुसहस्रनामसहित—गोरखपुर ० १ ६

२३९९ भगवद्गीता—मूल। विष्णुसहस्रनामसहित। रेशमी जिल्द। मुम्बई ० १० ०

२४०० भगवद्गीता (मूल)—अतिस्थूलाक्षर, विष्णुसहस्रनामसहित । खुले पत्रे ।
मुम्बई १ ० ०

२४०१ भगवद्गीता—मूलमात्र । रेशमी जिल्द । १६ पेजी गुटका ० १४ ०

२४०२ भगवद्गीता—मूलमात्र । स्थूलाक्षर खुले पत्रे । मुम्बई ० १२ ०

२४०३ भगवद्गीता—मूलमात्र । रेशमी जिल्द । मध्यमाक्षर । मुम्बई ० ६ ०

२४०४ भगवद्गीता—६४ पेजी पाकट रेशमी जिल्द । मुम्बई ० ७ ०

२४०५ भगवद्गीतामूलसप्तश्लोकी— ० ० ६

२४०६ भगवद्गीता—Edited in देवनागरी text by J. Cockburn Thomson. London 3 7 0

२४०७ भगवद्गीता—मूल । पूना ३ ० ०

Srimad-Bhagavad Gita—Edited with numerous variants from old Kashmirian Mss., an exhanstive introduction and critical notes. By S. N. Tadpatrikar, M. A. Poona 3 0 0

२४०८ भगवद्गीतादिपञ्चरत्न-नवरत्न—इसमें गीतामंगल, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, अनुस्मृति, गजेन्द्रमोक्ष, चतुःश्लोकीभागवत, सप्तश्लोकीगीता, आचार्यकृत अष्टपदी, विष्णोरष्टाविंशति नाम स्तोत्र हैं । पाकेट साईज । ० १० ०

२४०९ भगवद्गीतादिपञ्चरत्न—भाषाटीकासहित बड़ा आकार । स्थूलाक्षर सजिल्द मुम्बई, बनारस २॥) छोटाअक्षर गुटका । मुम्बई १ ६ ०

२४१० भगवद्गीतादिपंचरत्न-द्वादशरत्न—इसमें गीता माहात्म्य, गीतार्थसंग्रह, गीता, अच्युताष्टक, विष्णुसहस्रनाम, शापमोचन, भीष्मस्तवराज, अनुस्मृति, गजेन्द्रमोक्ष, अष्टादशश्लोकी गीता, सप्तश्लोकी गीता और चतुःश्लोकी भागवत हैं । ० १४ ०

२४११ भगवद्गीतादि पंचरत्न, एकादशरत्न—इसमें गीतामाहात्म्य, गीतार्थसंग्रह, गीतामंगलाचरण, गीता, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, अनुस्मृति, गजेन्द्रमोक्षादि हैं ।
मुम्बई १ ४ ०

२४१२ गीतापंचरत्नम्—(गीता, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराजः, अनुस्मृतिः, गजेन्द्रमोक्षश्च) ।
काशी ० ६ ०

२४१३ गीता (पञ्चरत्नी)—६४ पेजी, रेशमी जिल्द । सूक्ष्माक्षर । ० ८ ०

२४१४ गीतापंचरत्न—मूल रेशमी ६४ पेजी । मुम्बई ० १२ ०

२४१५ गीतापंचरत्न—मध्यमाक्षर रेशमी जिल्द ॥=) सादा जिल्द ० १२ ०

२४१६ गीतापंचरत्न—मूलमात्र अतिस्थूलाक्षर । गीता, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, अनुस्मृति, और गजेन्द्रमोक्ष । रेशमी जिल्द । १।=) खुले पत्रे मुम्बई १ ० ०

2417 Bhagavad Gītā and the Gītārtha Sangraha—

Edited by K. T. Sreenivasachariar (Sanskrit text). Madras 2 0 0

२४१८ श्रीमद्भगवद्गीता—श्रीशंकरभगवत्पादाचार्यविरचितेन भाष्येण सहिता। Critically edited by Prof. Dinkar Vishnu Gokhale, B. A. Bombay 2 0 0

२४१९ भगवद्गीता—शांकरभाष्योपेता। पूना २ ० ०

२४२० भगवद्गीताभाष्यम्—शंकराचार्यविरचितम्। बनारस १ ८ ०

२४२१ भगवद्गीता—आनन्दगिरिकृत टीकासंवलित शाङ्करभाष्यसमेत। पूना ६ ४ ०

२४२२ भगवद्गीता—शंकराचार्यकृत भाष्य, आनन्दगिरिकृतटीका, श्रीधरस्वामिकृत सुबोधिनी टीका समेत। कलकत्ता ५ ० ०

२४२३ भगवद्गीता—शाङ्करभाष्य तथा सरल हिन्दी अनुवादसहित। साधारण जिल्द २।।) कपड़े की जिल्द गोरखपुर। २ १२ ०

२४२४ भगवद्गीता—शंकरानन्दी टीकासहित। मुम्बई २ ८ ०

२४२५ भगवद्गीता—श्रीमधुसूदनसरस्वतीकृत मधुसूदनी टीकासहित। बनारस १ ८ ०

२४२६ भगवद्गीता—मधुसूदनसरस्वतीविरचितगूढार्थदीपिकया तथा श्रीधरस्वामिविरचित-सुबोधिनीव्याख्यया समेता। पूना ५ ४ ०

२४२७ भगवद्गीता—मधुसूदनसरस्वतीकृत गूढार्थदीपिका संस्कृतटीकासहित सजिल्द। मुंबई २ ८ ०

२४२८ भगवद्गीता—श्रीधरस्वामिकृत 'सुबोधिनी' संस्कृतटीका तथा व्रजरत्न भट्टाचार्य कृत भाषाटीकासहित। सजिल्द। मुम्बई ३ ० ० ×

२४२९ भगवद्गीता—श्रीधरी टीकासहित। बुकसाईज़। मुम्बई १ ० ०

२४३० श्रीभगवद्गीताभाष्यम् (हंसयोगिकृतम्)—Śrī Bhagavadgītā Bhāshya—By Hansa Yogi, Vol. I Upodghāta (Introduction) भाग १ उपोद्धातः Sanskrit text with Summary in English by Dr. S. Subrahmanya Iyer. Madras 2 8 0

२४३१ भगवद्गीता—सदानन्दस्वामिकृतभावप्रकाशनामक श्लोकबद्ध संस्कृतटीका सहित। मुम्बई ४ ० ०

२४३२ भगवद्गीता—व्याख्याष्टकमण्डिता १ शांकरभाष्य २ आनन्दगिरिव्याख्यासहित ३ नीलकंठी ४ मधुसूदनी ५ भाष्योत्कर्षदीपिका ६ श्रीधरी ७ अभिनवगुप्तपादाचार्यव्याख्यायुत तथा ८ श्रीधर्मदत्तशर्म (प्रसिद्ध बच्चाशर्म) मैथिल प्रणीत गूढार्थतत्त्वालोक (मधुसूदनी व्याख्या विवरण) सहित। मुम्बई ८ ० ०

२४३३ भगवद्गीता—अन्याष्टटीकायुता—१ द्वैताद्वैतसम्प्रदाय के आचार्य निम्बार्क-

स्वामी के शिष्य केशवकाश्मीरी भट्टाचार्य का 'तत्त्वप्रकाशिका' भाष्य २ अद्वैतमतानुयायी मधुसूदनसरस्वती की 'गूढार्थदीपिका' टीका ३ शंकरानन्दस्वामी की तात्पर्यबोधिनी टीका ४ श्रीधरीटीका ५ सदानन्दमुनिकृत 'भावप्रकाश' टीका ६ धनपतिसूरिकृतभाष्योत्कर्षदीपिकाव्याख्या ७ पं० श्रीसूर्य की 'परमार्थप्रपा' टीका ८ राघवेन्द्रकृत 'अर्थसंग्रह' नाम की द्वैतसम्प्रदायानुसारिणी व्याख्या। सजिल्द। द्वितीयो गुच्छः। मुम्बई १० ० ०

२४३४ भगवद्गीता—श्रीबालबोधिन्याख्यटीकया समेता। २ ० ०

२४३५ श्रीमद्भगवद्गीतायाः प्रथमद्वितीयाध्यायौ—श्री० म० म० विद्वद्रत्न-अभ्यंकरोपाह्ववासुदेवशास्त्रिप्रणीताङ्कुराख्यटीकासंवलितौ। पूना २ ३ ०

२४३६ भगवद्गीता—रामानुज भाष्य तथा वेदान्तदेशिकरचित 'तात्पर्यचन्द्रिका' व्याख्योपेता। १६ भागों में सम्पूर्ण होगा। २ भाग छपचुके हैं। प्रत्येक भाग का दाम १ ० ०

२४३७ भगवद्गीता—श्रीरामानुजभाष्येण, तद्व्याख्यया श्रीकवितार्किकसिंहसर्वतन्त्र-स्वतन्त्रश्रीमद्वेदान्तदेशिकविरचितया तात्पर्यचन्द्रिकया, श्रीशङ्करभाष्येण, श्रीमदानन्दतीर्थभाष्येण, जयतीर्थमुनिविरचितया तद्व्याख्यया च अनुगता। ३ भाग। मद्रास ८ ० ०

२४३८ भगवद्गीता—रामानुजभाष्यसहित (विशिष्टाद्वैत परक) मुम्बई २ ० ०

२४३९ श्रीमद्भगवद्गीता—तात्पर्यचन्द्रिकाटीका समेत रामानुजभाष्यसहित। पूना ७ ८ ०

२४४० भगवद्गीता—वेंकटनाथ 'ब्रह्मानन्दगिरि' कृत अद्वैतव्याख्योपेत। मद्रास ४ ० ०

२४४१ भगवद्गीता—वरवरमुनिकृतसंस्कृतव्याख्यासहित। काञ्ची २ ७ ०

२४४२ भगवद्गीता—यामुनाचार्यकृतप्रतिपदार्थविवरणसहिता। २ २ ०

२४४३ भगवद्गीता—पं० सुदर्शनाचार्यशास्त्रिप्रणीतविशिष्टाद्वैतमतानुयायी 'तत्त्वार्थ-सुदर्शनी' नामकसंस्कृतटीका तथा भाषाभाष्यसहित। सजिल्द मुम्बई ४ ० ०

२४४४ भगवद्गीता—गोस्वामिपुरुषोत्तमजीमहाराजकृतामृततरङ्गिणीव्याख्यासहिता। २ ८ ०

२४४५ गीतातात्पर्यस्य टीका न्यायदीपिका—ताम्रपर्णीयसहिता। मद्रास ८ ० ०

२४४६ भगवद्गीता—महामहेश्वरराजानकअभिनवगुप्तकृतभाष्येण सहिता। Edited with notes by Pt. Lakṣman Raina. कश्मीर २ ० ०

२४४७ भगवद्गीता—हनुमद्विरचितपैशाचभाष्यसमेत। पूना १ ८ ०

२४४८ श्रीमद्भगवद्गीतोपनिषद्वैदिकभाष्यम्—श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्योदासीनवर्यनिखिलशास्त्रनिष्णातपण्डितस्वामिहरिप्रसादवैदिकमुनिविरचितम्। लाहौर १ ८ ०

२४४९ भगवद्गीता—पं० गयाप्रसादशास्त्रिविरचित 'श्रीबालबोधिनी—गीतार्थचन्द्रिकाख्यव्याख्याद्वयसंवलिता तथा भाषाटीकासहित। १ ० ०

२४५० श्रीभगवद्गीता—सिद्धिदात्रीसंस्कृतटिप्पणी तथा गुजरातीभाषान्तर। कर्ता-राजवैद्य जीवरामकालिदासशास्त्री। काठियावाड़ ४ ० ०

२४५१ **भगवद्गीताज्ञानेश्वरी**—ज्ञानेश्वरमहाराजकृत 'भावार्थदीपिका' गीताव्याख्या का पं० रघुनाथरावभगाड़ेकृत हिन्दी अनुवाद सहित । सजिल्द ४ ० ०
तथा बनारस ३ ० ०

२४५२ **श्रीमद्भगवद्गीता**—'पुरुषार्थबोधिनी' भाषाटीकासहित । ३ भाग सजिल्द। औन्ध २ ० ०

२४५३ **भगवद्गीता**—बाबूरावविष्णुपराडकरकृतभाषाटीकासहित । ० ८ ०

२४५४ **भगवद्गीता**—साधारणभाषाटीकासहित । छोटा साईज़ । स्थूलाक्षर । अजिल्द ० ८ ०

२४५५ **भगवद्गीता (गुटका)**—पदच्छेद, अन्वय और साधारण भाषाटीकासहित । सजिल्द । गोरखपुर ० ८ ०

२४५६ **भगवद्गीता**—मूल श्लोक, पदच्छेद, अन्वय और शब्दार्थसहित । स्थूलाक्षर। सजिल्द । बड़ा साईज़ । १।) । हलका कागज । सजिल्द ॥।=) । हलका कागज अजिल्द ।
गोरखपुर ० ११ ०

२४५७ **भगवद्गीता**—भाषाटीकासहित । काशी १ ८ ०

२४५८ **भगवद्गीता**—पं० सूर्यदीनकृत भाषाटीकासहित । लखनऊ १ ० ०

२४५९ **भगवद्गीता**—हंसनादिनी भाषाटीका । १८ खंड । अलवर १८ ० ०

२४६० **भगवद्गीता**—हरिदासकृत सरल हिन्दी अनुवादसहित सजिल्द ३॥) अजिल्द । मथुरा ३ ० ०

२४६१ **भगवद्गीता**—महामहोपाध्याय पं० गिरिधरशर्म चतुर्वेदिकृत तिलकभाष्यानुसार हिन्दीभाषानुवादसहिता । सुनहरी जिल्द । बढ़िया कागज और छपाई । लाहौर ० १२ ०

२४६२ **भगवद्गीता**—अमृततरङ्गिणी, दोहा तथा भाषाटीका सहित । गुटका सायज़ ।
मुम्बई ० १२ ०

२४६३—**भगवद्गीता**—पं० रघुनाथप्रसादकृत 'अमृततरङ्गिणी' भाषाटीका सहित सजिल्द । ग्लेज़ मुम्बई १ २ ०

२४६४ **भगवद्गीता**—R. S. नारायण स्वामिकृत सविस्तर हिन्दी टीका सहित । २ भाग । विना जिल्द ४) कपडे की जिल्द लखनऊ ६ ० ०

२४६५ **भगवद्गीता**—पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत 'भगवद्गीतार्थ प्रकाशिका' भाषा-टीका सहित । सजिल्द गुटका । मुम्बई १ ० ०

२४६६ **भगवद्गीता**—पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत हिन्दी अनुवाद सहित । श्लोकाङ्क, अन्वय, सरलार्थ और अध्यात्म भाष्य समेत । ३ ० ०

२४६७ **भगवद्गीता**—साधारण भाषाटीका सहित बहुत सस्ता संस्करण ।
गोरखपुर ० २ ६

२४६८ **भगवद्गीता**—रायबहादुर जालिमसिंहकृत पदच्छेद, अन्वय, शब्दार्थ और भावार्थ सहित । सजिल्द । लखनऊ २ ८ ०

२४६६ **भगवद्गीता**—स्वामी चिद्घनानन्द जी कृत शांकरभाष्यानुसार "गूढार्थदीपिका" पदच्छेद, अन्वयाङ्क तथा पदार्थ सहित भाषाटीका समेत सजिल्द । मुम्बई ८ ० ०

२४७० **भगवद्गीता**—चिद्घनानन्दी टीकानुसार पदच्छेद अन्वयाङ्क पदार्थ और भाषाटीका सहित गुटका साइज़ १ ० ०

२४७१ **भगवद्गीता**—स्वामी आनन्दगिरिकृत अन्वय, भाषा में शब्दार्थ और भावार्थ सहित । सजिल्द ग्लेज़ ३॥), रफ ३ ० ०

२४७२ **श्रीमद्भगवद्गीता**—सरल भाषानुवाद और टिप्पणी सहित । अनुवादक पं० गिरिजाप्रसादद्विवेदी । लखनऊ ० १२ ०

२४७३ **श्रीमद्भगवद्गीता (सटीक)**—संशोधित संस्करण । टीकाकारश्रीयुत मुंशी हरिवंशलाल जी । लखनऊ ० ६ ०

२४७४ **श्रीमद्भगवद्गीता**—सुबोधकौमुदी नामक हिन्दी भाषाटीका सहित । मुम्बई ० १० ०

२४७५ **श्रीमद्भगवद्गीता**—प्रोफेसर पं० राजारामकृत सरल हिन्दी भाष्य सहित । सजिल्द लाहौर १ ८ ०

२४७६ **भगवद्गीता**—केवल भाषा । मध्यमाक्षर ० ४ ०

२४७७ **भगवद्गीता**—(कृष्णदासकिशोरदास) केवल भाषा । बढ़िया कागज़ । अतिस्थूलाक्षर । सजिल्द । तिरंगे चित्रों सहित । १ ० ०

२४७८ **गीतादर्शन** (हिन्दी)—ले० कन्नोमल, एम० ए०, धौलपुर २ ० ०

२४७९ **गीताभाषावार्त्तिक**—हिन्दी में । विख्यात पं० ज्वालाप्रसादकृत । मुम्बई ० ६ ०

२४८० **भगवद्गीता**—सान्वय, भाषाटीका और दोहे सहित । सजिल्द । ग्लेज़ कागज़ १।≈) रफ मुम्बई १ २ ०

२४८१ **कृष्णविज्ञान**—अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीता का मूल सहित हिन्दी पद्यानुवाद । सचित्र । सजिल्द । १ ० ०

२४८२ **भगवद्गीता**—भावार्थ । रंगत लावणी वा ख्याल में । मूल श्लोक, नीचे सरल भाषा में अनोखे ख्याल । 'धर्मोपदेश' 'ईश्वरप्रार्थना' और 'वेदान्तरामायण' नामक ३ निबंधों समेत । मुंबई १ ० ०

२४८३ **भगवद्गीता**—वैष्णव हरिदासजी कृत पद्यात्मक (दोहे चौपाइयों में) तथा 'परमानन्द प्रकाशिका' भाषाटीकासहित । मुम्बई १ ० ०

२४८४ **चतुःश्लोकी भागवत-सप्तश्लोकी गीता**—भाषाटीका सहित । ० १ ०

2485 Bhagavadgita—With Sanskrit text, free translation into English, a word-for-word translation, an introduction to Sanskrit Grammar, and complete Word-Index. By Annie Besant and Bhagwan Das. Madras 2 8 0

2486 Bhagavad Gita (Students' edition). Text and English translation with Introduction and notes by D. S. Sharma. Madras 1 11 0

2487 Srimad Bhagavadgita—A study : Text with an English translation, Explanatory notes and an Introduction. By S. D. Budhiraja, M. A., L. L. B. Madras

2488 Bhagavadgita—with the Commentary of Śrī Śaṅkarāchārya : translated into English by A. Mahadeva Shastri, B. A. Text in original Sanskrit. Bound. Mysore 5 0 0

2489 Bhagavad Gita—Text in Devanāgarī and English translation by Dr. Besant. Madras 0 4 0

2490 Bhagavad Gita—Sanskrit text and English translation with English notes. By Charles Wilkins. Calcutta 0 12 0

2491 Bhagavad Gita—By Annie Besant and Das. Superior paper and binding. Madras 9 0 0

2492 Bhagavad Gita—Text with English translation, by Radha Charan, B. A. Allahabad 1 8 0

2493 Bhagavad Gita—With an English translation and Explanatory notes from all the three Bhashyas by K. S. Rama Swami Shastri B. A., B. L. Vol. I (chapters 1—6). 2 0 0

2494 Bhagavad Gita—Sanskrit text and English translation by F. T. Brooks. Madras 1 4 0

2495 Bhagavad Gita—Text in Devanāgarī and English translation. By D. S. Sharma, M. A. Madras 0 5 0

2496 Shri Bhagavad Gita (श्रीभगवद्गीता)—Revised in the light of a rare and ancient manuscript with various readings incorporated herein and edited with its gloss. "Siddhi-Datri" in its English rendering explaining the variants. By Rajvaidya Jiva Ram Kalidas Shastri [Very useful for Research Scholars]. काठियावाड़ १० ० ०

2497 Srimad Bhagavadgita—With text, word-for-word translation, English rendering, comments and index by Swami Swarupanand. Bound with gilt letters. 2 8 0

2498 Bhagavad Gita—the Divine path to God. By K. S. Ramaswamy Shastri. Madras 1 0 0

2499 Introduction to the Bhagavadgita Text and English translation by Dewan Bahadur V. K. Ramanujacharya, B. A., with a general introduction and notes. Bound in cloth. Text in original Sanskrit. 3 0 0

2500 Gitārahasya : By Lokmānya Tilaka. English translation by Bhalchandra Sita Ram Sukthankar, M. A., LL. B.. 2 Vols. Poona 10 0 0

2501 Song Celestial or Bhagavad Gita—Translated into the form of English poetry by Sir Edwin Arnold. 5 0 0

2502 Der Gesang Des Heiligen or the Bhagavad Gita—translated from the Sanskrit by Dr. Paul Deussen. Bound. Foreign 3 4 0

2503 Bhagavadgītā—A metrical English rendering by Arthur W. Ryder. Chicago 5 8 0

2504 Bhagavad Gita—Or the Lord's song, translated into English by Annie Besant. Wrapper 0 12 0

2505 Lectures on the Bhagavad Gita—With an English translation of the Gita by D. S. Sharma, M. A. Foreign 3 0 0

2506 Bhagavad Gita or the Sacred Lay—Translated with notes by John Davies, M. A. London 9 6 0

2507 Musings on the Bhagavad Gītā—With the Shlokas translated line by line and grouped subjectwise under appropriate heads. By Nihal Chand Vaish, M. A., B. Sc., LL. D. Allahabad 4 0 0

2508 Song of the Lord—Bhagavad Gita translated with introduction and notes by Edward J. Thomas, M. A., D. Litt. Foreign 4 8 0

2509 Bhagavad Gita or the Lord's Lay—With commentary and notes, as well as references to the Christian Scriptures. Translated from the Sanskrit for the benefit of those in search of Spiritual light by Mohini M. Chatterji, M. A. Foreign 5 0 0

2510 Srimad Bhagavadgita—Or the Blessed Lord's song translated into English by Swami Paramananda Best edition. Pocket size. Bound in cloth with gilt letters. 2 0 0

2511 Bhagavadgita—The Song Divine—A metrical English rendering by C. C. Caleb, M. B., M. S. Lahore 1 8 0

2512 Bhagavadgita with the Sanat-Sugātīya and the Aṇugītā, translated by the Late Kāśinath Trimbak Telang, M. A. Foreign 9 6 0

2513 Bhagavadgītā—Translation and commentaries in English according to Śrī Madhvāchārya's Bhāṣya, by S. Subba Rau, M. A. Madras 3 4 0

2514 Bhagavadgītā—translated from the Sanskrit with an introduction, an argument and a commentary by W. Douglas P. Hill M. A. London 11 4 0

2515 Bhagavad Gita or Song of the Blessed One—Interpreted by Franklin Edgerton. London 5 0 0

2516 Original Bhagavad Gītā—The Song of the Exalted one with appendices and analytical notes by Rudolf Otto. Translated by J. E. Turner. In this translation of the Bhagavad Gita Dr. Otto has distinguished what he regards as the original form of the Ancient Hymn from later accretions. This extremely important and difficult analysis is accompanied by critical notes and comments dealing with the way and varied aspects of a complex and subtle problem and discussing the views already advanced by other learned authorities. London 9 4 0

२५१७ श्रीमद्भगवद्गीता की श्लोकार्ध सूची—इसमें अकारादि क्रम से आद्याक्षर सूची तथा उसी क्रम से अन्त्याक्षर सूची भी है। औंध ० ६ ०

२५१८ भगवद्गीतानुक्रमणिका—श्लोक प्रतीकों की शृंखला।
मुम्बई ० १ ०

२५१९ श्रीमद्भगवद्गीतालेखमाला—भाग १, २, ३। प्रत्येक का मूल ॥).
भाग ४, ५, ६। प्रत्येक का मूल्य १ ० ०

2520 Bhagavadgītā—A fresh study. By D. D. Vadekar, M. A. Poona 1 0 0

2521 Bhagavad Gita—An exposition on the basis of Psycho-Philosophy and Psycho-analysis by Vasant G. Rele. Bombay 7 0 0

2522 Bhagavadgita—A Study. By Vishwas G. Bhat, M. A. Poona 2 8 0

2523 Bhagavadgita Jeevan-Mukti-Saar—Or the Hindus' Book of Life and Salvation in simple easy English by S. S. Ananda, B. A., B. T. Unbound -/8/-. Bound -/10/-. Superior paper and binding. Lahore 1 0 0

2524 Essays on the Gita—By Aurobindo Ghose. Bound. Complete in 2 series. First series. 6 0 0
Second „ 7 8 0

2525 Evolution of Gita—Containing chronology and origin of Gītā's main thoughts and its teachings. 4 0 0

2526 Gita Idea of God—By Brahmachari Gitanand. 5 0 0

2527 Gospel of Life—By F. T. Brooks, an Introduction to the study of the Bhagavad Gita and the Upanishads. Vol. I. Madras 1 8 0

2528 Hints on the Study of the Bhagavadgītā—By Annie Besant. Madras 1 0 0

2529 An Introduction to the Bhagavad Gītā—By D. S. Sharma. Madras 1 0 0

2530 Introduction to the Bhagavadgītā—By Richard Garbe. Translated into English by N. B. Utgikar. Bombay 1 12 0

2531 Kashmir Recension of the Bhagavadgītā—By F. Otto Schrader. Germany 5 0 0

2532 Krishna's Flute—By Pof. T. L. Vaswani.
Madras 1 8 0

2533 Krishna Problem—By S. N. Tadpatrikar, M. A.
Poona 1 0 0

2534 Kurukshetra—or the Moral Nature of the Holy War to which the Bhagavad Gita calls mankind. 0 6 0

2535 Lectures on the Study of Bhagavadgita—Being a help to students of its Philosophy by T. Subba Rao, B. A., B. L. Bombay 0 10 0

2536 Philosophy of the Bhagavadgītā—By T. Subba Row. Madras 1 4 0

2537 Philosophy of the Bhagavad Gita—An exposition in English, by Chhagan Lal G. Kaji. 2 Vols. Bound.
8 0 0

2538 Practical Gita—By B. Narayana Swarup, B. A., L. T. Lucknow 0 4 0

2539 Religion and Philosophy of the Gita—By Swami Sharvananda. 1 4 0

2540 A Synopsis of the Gita—By F. T. Brooks.
Madras 0 4 0

2541 Synthesis of the Bhagavad Gita—By the Editor of the Shrine of Wisdom.

2542 Teachings from the Bhagavad Gita—
Foreign 2 0 0

2543 Thoughts from the Gita—By R. Krishnaswamy Aiyar 1 0 0

2544 Yoga of the Bhagavad Gita—By Sri Krishna Prem. A devotee of Western birth sits reverently at the feet of Ancient India and most illuminatingly sets down what he has learnt about the inner Path by which man can unite his finite self with Infinite Being.
Bombay 6 6 0

२५४५ **मोक्षगीता**—सवा लाख रामनाम संग्रह । सजिल्द । लाहौर १ ० ०

२५४६ **मोक्षगीता तथा विवेकवीरविजय**—श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री-स्वामी लक्षानन्द कृत । मुम्बई ० २ ०

२५४७ रामगीता—मूलमात्र। माहात्म्यसहित। ० १ ६

२५४८ रामगीता—भाषाटीकासहित। सुप्रसिद्ध टीकाकार राय बहादुर जालिमसिंह कृत। लखनऊ ० १० ०

२५४९ रामगीता—भाषाटीका, पदप्रकाशिका, अनुवादसमुच्चय और विषमपदी सहित। ० ८ ०

२५५० विज्ञानगीता—कविवर श्रीकेशवदासकृत अपूर्ववेदान्त। मुम्बई ० १२ ०

२५५१ विष्णुगीता—भाषाटीका सहित। काशी १ ० ०

२५५२ शक्तिगीता—भाषाटीका सहित। १ ० ०

२५५३ शम्भुगीता—भाषाटीका सहित। काशी १ ० ०

२५५४ शिवगीता—लक्ष्मीनरहरिसूनुकृत बालानन्दिनी व्याख्यासहित ० १२ ०

२५५५ शिवगीता—परमशिवेन्द्रसरस्वतीकृत व्याख्यासहित। अध्याय १-३। भाग १ ० ८ ०

२५५६ शिवगीता—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहित ० १४ ०

२५५७ शिवगीता (पद्मपुराणोक्त)—शिवजी का रामचन्द्रजी को ज्ञानोपदेश ॥) रेशमी जिल्द। ० १२ ०

२५५८ शिवगीता (सटीका)—खुले पत्रे। ० ८ ०

२५५९ संन्यासगीता—भाषाटीकासहित। १ ० ०

२५६० सत्याग्रह गीता—By Mrs. Kshama Row. Bombay 2 8 0

२५६१ सूर्यगीता—भाषाटीकासहित। ० ८ ०

2562 Sūrya Gītā (Sun-song)—together with the 'Garland of Life' and 'Maulted Feathers' By James H. Cousins. Bound. The volume will give lovers of poetry an impressive idea of the amount and variety of Mr. Cousin's poetry. Madras 2 0 0

न्याय-वैशेषिक-ग्रन्थाः

२५६३ अनुमानचिन्तामणिः (गङ्गेशोपाध्यायकृतः)—काणभट्ट(शिरोमणि)कृत "दीधिति" टीकासहितः। कलकत्ता ४ ८ ०

२५६४ अनुमानदीधितिप्रसारिणी—सटीक। कृष्णदाससार्वभौमकृत। ३ खण्डा मुद्रिताः। अवशिष्टं मुद्र्यते। कलकत्ता २ ४ ०

२५६५ अवच्छेदकतानिरुक्तिः— कांची १ ० ०

२५६६ अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः—जगदीशतर्कालङ्कारकृतः। न्यायाचार्यश्रीशिवदत्त-मिश्रकृतगङ्गाख्यव्याख्या टिप्पणीसहिता। बनारस १ ४ ०

२५६७ अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः—जगदीशतर्कालङ्कारकृतः। ० ३ ०

२५६८ आत्मतत्त्वविवेकः—बौद्धाधिकारः। उदयनाचार्यकृतः।
कलकत्ता २ ० ०

२५६९ आत्मतत्त्वविवेकः—उदयनाचार्यकृतः। श्रीरामतर्कालङ्कारभट्टाचार्यकृतटिप्पण्या, श्रीरघुनाथकृतया 'दीधिति' विवृत्या, श्रीशङ्करमिश्रकृतया 'कल्पलता' व्याख्यया च समन्वितः। खण्डाः ५। सम्पूर्णः।
काशी ७ ८ ०

२५७० आत्मतत्त्वविवेकः—उदयनाचार्यकृतः। खण्डाः १-५।
कलकत्ता ३ १२ ०

२५७१ ईश्वरप्रतिपत्तिप्रकाश—श्रीमधुसूदनसरस्वतीप्रणीत। मद्रास ० ४ ०

२५७२ उपमानचिन्तामणिः—गङ्गेशोपाध्यायकृतः। ० २ ०

२५७३ उपाधिवादः (गदाधरस्य)— काशी २ २ ०

२५७४ उभयाभावादिवारकपरिष्कारः (लोकनाथशर्मा)—पं० श्रीबालकृष्णमिश्रविरचितप्रकाशाख्यविवरणसमेतः। बनारस ० १२ ०

२५७५ काणादसिद्धान्तचन्द्रिका—गङ्गाधरसूरिकृता। मद्रास १ ८ ०

२५७६ कारिकावली—मूल। ० २ ०

२५७७ कारिकावली—श्रीमान् पं० गणेशदत्तशास्त्री प्रोफेसरकृत सरलसंस्कृत और भाषाटीकासहित। लाहौर ० १२ ०

२५७८ कारिकावली—देवीसहायमिश्रकृतमुक्तावलीकण्ठाभरणव्याख्यासहिता।
० ८ ०

२५७९ कारिकावली—सिद्धान्तमुक्तावलीसहिता। मुम्बई ० १० ०

२५८० कारिकावली—पं० सूर्यनारायण शुक्लरचित मयूखोद्भासितसिद्धान्तमुक्तावलीसहिता। काशी १ ४ ०

२५८१ कारिकावली—मुक्तावली न्यायचन्द्रिकाटीकाद्वयसहिता।
बनारस १ ० ०

२५८२ कारिकावली-मुक्तावली-दिनकरी-रामरुद्रीसहिता—शब्दखण्डमात्र
० ४ ०

२५८३ कारिकावली—मुक्तावली, दिनकरीय, रामरुद्रीय सशब्दखण्ड तथा गुणनिरूपण दिनकरीय, महामहोपाध्याय पं० श्रीलक्ष्मणशास्त्रिकृत व्याख्यासहिता।
बनारस ६ ० ०

२५८४ कारिकावली—अस्मिन् पुस्तके कारिकावलीकारिकाव्याख्या मुक्तावली, तद्व्याख्या प्रभा, मञ्जूषा, दिनकरीयं, दिनकरीयव्याख्या रामरुद्रीयम्, दिनकरीयखण्डन गङ्गारामजटीयं च संयोजितम्। मद्रास ८ ० ०

२५८५ किरणावली—उदयनाचार्यविरचिता वर्धमानोपाध्यायकृतटीकासहिता। ३ खण्डाः। अवशिष्टं मुद्र्यते। कलकत्ता २ ४ ०

२५८६ किरणावलीप्रकाशः (गुणः)—वर्द्धमानकृतः। २ भागौ।
प्रयाग ३ ० ०

२५८७ **किरणावलीप्रकाशदीधितिः (गुणः)**—रघुनाथशिरोमणिकृतः।
प्रयाग १ १२ ०

२५८८ **किरणावलीभास्कर**—A commentary on Udayana's किरणावली-द्रव्य Section by पद्मनाभमिश्र। Edited with Introduction and Index by Gopinath Kaviraj, M. A. Benares 1 12 0

२५८९ **कुसुमाञ्जलिबोधिनी**—वरदराजकृता न्यायकुसुमाञ्जलिटीका।
प्रयाग २ ० ०

२५९० **कुसुमाञ्जलिः (उदयनाचार्यकृतः)**—हरिदासभट्टाचार्यकृतटीकासहितः। कलकत्ता ।=), स एव सटिप्पणः। बनारस ० ८ ०

२५९१ **केवलान्वयी**—शिरोमणिकृतटीकया जागदीशविवृत्या जगदीशकृतटीकाया वादर्थेन च सहिता। कलकत्ता १ ० ०

२५९२ **क्रोडपत्रसंग्रहः**—अत्र श्रीकालीशंकरसिद्धान्तवागीशविरचितानि अनुमानजागदीश्याः प्रत्यक्षानुमानगादाधर्याः प्रत्यक्षानुमानमाथुर्या व्युत्पत्तिवादस्य शक्तिवादस्य मुक्तिवादस्य शब्दशक्तिप्रकाशिकायाः कुसुमाञ्जलेश्च क्रोडपत्राणि। ८ खण्डेषु सम्पूर्णः। १२ ० ०

२५९३ **गादाधरी**—पञ्चलक्षणी। काश्ची ० १ ०

२५९४ **गादाधरीपञ्चलक्षणी, चिन्तामणिदीधिति, गादाधरी, कृष्णंभट्टीय, न्यायरत्नेति न्यायपञ्चग्रन्थीसंग्रहः**—सिंहव्याघ्रलक्षणसार्वभौमपरिष्कारोपेतः।
मुम्बई १ ८ ०

२५९५ **गादाधरी**—शब्दखण्डः। काश्ची १ ६ ०

२५९६ **गादाधरी**—श्रीगदाधरभट्टाचार्यचक्रवर्त्तिविरचिता। गंगेशोपाध्यायविरचित-तत्त्वचिन्तामणिना श्रीरघुनाथतार्किकशिरोमणिना विरचितयादीधित्या च गर्भिता। २१ भागेषु सम्पूर्णः। काशी २१ ० ०

२५९७ **गादाधरी चतुर्दशलक्षणी**— काश्ची २ ० ०

२५९८ **गूढार्थतत्त्वालोकः**—सामान्यनिरुक्तिगदाधरीटीका श्रीधर्मदत्तशर्मविरचितः। पं० श्रीलक्ष्मीनाथझाशर्मणा श्रीजगदीशशर्मणा च संशोधितः। बनारस १ ८ ०

२५९९ **जागदीशी**—इयम् अनुमानचिन्तामणिव्याख्यायाः शिरोमणिकृतदीधित्या विवृतिः। प्रसिद्धोऽयं ग्रन्थः तत्र च सुप्रसिद्धानि प्रकरणानि वर्त्तन्ते सम्पूर्णा चेयम्।
काशी १६ ८ ०

२६०० **जागदीशी पक्षता**—श्रीजगदीशतर्कालंकारविरचिता। पं० शिवदत्तमिश्रन्यायाचार्येण 'गंगा'टीकया सह सम्पादिता। १ ८ ०

२६०१ **जागदीशीसिद्धान्तलक्षणम्**—न्यायाचार्यश्रीवामाचार्यभट्टाचार्यविरचितया विवृत्या व्याकरणाचार्यश्रीगुरुप्रसादशास्त्रिसंकलितया 'दीपिकया' तथा कालीशंकरविवेचनया च समुद्भासितम्। काशी १ १२ ०

२६०२ **जागदीशीपञ्चलक्षणीसिंहव्याघ्रलक्षणञ्च**—(जगदीशतर्कालङ्कार) पं० शिवदत्तमिश्रविरचितगंगानिर्झरिणीव्याख्यया टिप्पण्यादिभिर्विभूषितं च। बनारस ० ८ ०

२६०३ **जागदीशीव्यधिकरणम्**—न्यायाचार्यश्रीशिवदत्तमिश्रविरचितगंगाख्यव्याख्याटिप्पणीसहितम् । बनारस २ ८ ०

२६०४ **जागदीशीव्यधिकरण-टिप्पण**—कालीशंकरी, मूलमात्र, खुलेपत्रे, शिलाक्षर । काशी ० ५ ०

२६०५ **जागदीशीसिंहव्याघ्रलक्षणम्**—तर्कतीर्थन्यायाचार्यश्रीवामाचरणभट्टाचार्यविरचितया विवृत्या मनोरमया च समुद्भासितम् । बनारस ० ८ ०

२६०६ **जागदीशीसिद्धान्तलक्षणस्य क्रोडपत्रम्** (कालीशंकर)—० १० ०

२६०७ **जागदीशीयपञ्चलक्षण्यां सिंहव्याघ्रलक्षणयोश्च क्रोडपत्रम्**—(कालीशंकर) ० ३ ०

२६०८ **जैनवार्त्तिकम्**—शान्त्याचार्यविरचितवृत्तिसहित । बनारस १ १२ ०

२६०९ **तत्त्वचिन्तामणिदीधितिविवृति**—गदाधरभट्टाचार्यविरचिता १३ खण्डाः मुद्रिताः । अवशिष्टं मुद्र्यते । कलकत्ता ६ १२ ०

२६१० **तत्त्वचिन्तामणि**—ईश्वरानुमानखण्ड (श्रीगणेशोपाध्यायकृत) श्रीमथुरानाथतर्कवागीशविरचितरहस्यनामकटीकासहित । कलकत्ता १ ८ ०

२६११ **तत्त्वचिन्तामणिः** (उपमानखण्डः)—सटीकः सम्पूर्णः । कलकत्ता ० १२ ०

२६१२ **तत्त्वचिन्तामणिः**—शब्दाख्यस्तुरीयः खण्डः सम्पूर्णः । सटीकः । कलकत्ता १२ १२ ०

२६१३ **तत्त्वचिन्तामणिदीधिति-प्रकाशः**—६ भाग Tattva-Chintamani Didhiti Prakasha—by Bhavananda Siddhānta Vāgisha, Calcutta 4 8 0

२६१४ **तत्त्वचिन्तामणौ अवयवग्रन्थः**— काशी १ १ ०

२६१५ **तत्त्वसंग्रहः** बौद्धन्यायशास्त्रम्)—श्रीशान्तरक्षितविरचितः । श्रीकमलशीलविरचितपञ्जिकाटीकोपेतः । अत्र वेदादिशास्त्राणां अपौरुषेयत्वादिवादो महत्याऽऽरभट्या खण्डितः । विदुषां दर्शनार्होऽयं ग्रन्थः । भागद्वयम् । मुम्बई २४ ० ०

2616 Tattvasaṅgraha—of Śāntarakṣita with the commentary of Kamalśila translated into Eng Mahmahopādhyāya Dr. Ganga Nath Jha. Vol. 1. Baro 0 0

२६१७ **तत्त्वसारः**—राखालदासन्यायरत्नकृतः ० ०

२६१८ **तरङ्गिणी**—न्यायामृतस्य टिप्पणी । मद्रास १० ० ०

२६१९ **तर्ककौमुदी**—(लौगाक्षिभास्करकृता) मुम्बई ० २ ०

२६२० **तर्कपद्यरत्नावली**—वाजपेयसुन्दराचार्यकृता । मद्रास १ ० ०

२६२१ **तर्कभाषा—मूलम्** । Edited by N. N. Kulkarni, B. A. LL. B. Poona 0 8 0

२६२२ **तर्कभाषा**—केशवमिश्रविरचिता । चिन्नंभट्टविरचितया 'तर्कभाषाप्रकाशिकाख्यया' टीकया परिष्कृता । [It is an epitome of the Nyaya System of Gotama with a commentary published for the first time. While explaining the fourth प्रमेय i. e अर्थ, the author has explained all the categories of the Vaiśesika System also. In the introduction, which is in English, a history of both the systems is given. Edited by D. R. Bhandarkar and Pt. Kedarnath Poona 2 4 0

२६२३ **तर्कभाषा**—केशवमिश्रकृता । श्रीमद्विश्वकर्मविरचितया न्यायप्रदीपाख्यटीकया सहिता । बनारस १ १२ ०

२६२४ **तर्कभाषा**—By Prof. S. M. Paranjpe. Poona 2 4 0

2625 Tarka Bhasha (तर्क भाषा —English translation by Dr. Jha, Poona 1 4 0

२६२६ **तर्कमकरन्द**—श्रीमदन्नम्भट्टकृततर्कदीपिका । काशी ० ३ ०

२६२७ **तर्कमार्त्तण्ड**—तर्कमकरन्द-अन्नंभट्टकृततर्कदीपिका प्रश्नोत्तररूप: । ० ३ ०

२६२८ **तर्कसंग्रहः**—अन्नम्भट्टकृतः । मूल । स्थूलाक्षर । मुम्बई ० १ ६

२६२९ **तर्कसंग्रह**—श्रीमदन्नंभट्टविरचित: । शुक्ल श्रीराजनारायण शास्त्रिणा लक्षणटिप्पणीभिर्विभूष्य सम्पादितः । बनारस ० १ ०

२६३० **तर्कसंग्रह**—दीपिकासहितः । Critically edited by Prof. D. V. Gokhale. Poona 0 6 0

२६३१ **तर्कसंग्रह**—'दीपिका', 'नीलकंठी' टीकाओं सहित । मुम्बई ० १२ ०

२६३२ **तर्कसंग्रह**—दीपिका और न्यायबोधिनी टीका सहित । Edited with notes &c. by Y. V. Athalye & an Introduction by M. R. Bodas M. A., LL. B. Poona 2 8 0

२६३३ **तर्कसंग्रहः**—दीपिका, न्यायबोधिनी, परिमल, आमोद इन चार टीकाओं सहित । ० ८ ०

२६३४ **तर्कसंग्रह**—न्यायबोधिनी-पदकृत्य-टीकाद्वयोपेतः । मुम्बई ० ६ ०

२६३५ **तर्कसंग्रह**—श्रीकृष्णशास्त्रिविरचित गुप्तार्थ दीपिकाख्यया व्याख्यया सहितः । मद्रास १ १२ ०

२६३६ **तर्कसंग्रहः**—लघुबोधिनी टीकासहितः । मुम्बई ० ८ ०

२६३७ **तर्कसंग्रह**—मेरुशास्त्रकृत वाक्यवृत्ति सहित । मुम्बई ० ५ ०

२६३८ **तर्कसंग्रहः** (व्याप्त्यन्तः) श्रीमदन्नंभट्टविरचितः श्रीमत्पट्टाभिरामप्रणीतवाक्यार्थसहितः । मुम्बई ० ६ ०

२६३९ **तर्कसंग्रहः**—न्यायबोधिनी-पदकृत्यटीकाद्वयसहितः। तथा पं० ढुंढिराजशास्त्रि-विरचित'विरलया'च सहितः। सटिप्पणः। ० ६ ०

२६४० **तर्कसंग्रह**--पण्डितप्रवरगोवर्धनाचार्यविरचितया 'न्यायबोधिन्या', श्रीमदन्न-भट्टविरचित 'दीपिकाख्यव्याख्यया' न्यायव्याकरणाचार्यमीमांसकशिरोमणिना पं० श्रीसूर्यनारायण-शुक्लेन विनिर्मितया 'मयूख'व्याख्यया विषमस्थलटिप्पणया हिन्दीअनुवादेन च समन्विता। काशी ० १० ०

२६४१ **तर्कसंग्रह**—महामहोपाध्यायैरन्नम्भट्टैर्विरचितः। न्यायबोधिनीपदकृत्य बालम-नोरमा-परीक्षाटीकालंकृतः। किञ्च भाषाटीकाविराजितः। काशी ० ६ ०

२६४२ **तर्कसंग्रह**—प्रत्येक परिभाषा को सलक्षण लिखकर उसकी सरल भाषा में व्याख्या की गई है जिससे कि न्याय का गूढ़भाव सरलता से शीघ्र समझ में आजाता है। ० ४ ०

२६४३ **तर्कसंग्रहः**—भाषाटीकासहितः। मुम्बई ० ६ ०

२६४४ **तर्कसंग्रहः**—सिद्धान्तचन्द्रोदय संस्कृतव्याख्यासहित। मुम्बई ० १० ०

२६४५ **तर्कसंग्रहः** (अन्नंभट्टकृतः)—न्यायबोधिनी, वाक्यवृत्ति, निरुक्तिः, पट्टाभिराम-टिप्पणी, तर्कसंग्रहदीपिका, नीलकंठप्रकाशिका, रामरुद्रीयं, नृसिंहप्रकाशिका, पट्टाभिरामप्रकाशिका चेत्येतैर्नवभिर्व्याख्यानैः समन्वितः। मद्रास २ १२ ०

२६४६ **तर्कसंग्रह**—साहित्यदर्शनशास्त्राध्यापकेन सारस्वतवंशावतंसन्यायविशारदकवि-तार्किकनृसिंहदेवशास्त्रिणा दर्शनाचार्येण रचितया 'सौभाग्यवती'नामकविषमस्थलटिप्पणीसहितया त्रहितकारिणया 'बालबोधिनी'नाम्न्या टीकयोपेतः। अतिसरलहिन्दीभाषाभूषितः ० ६ ०

२६४७ **तर्कसंग्रहः**—तस्य व्याख्या 'सुखप्रवेशिनी'। तर्कार्णवेन शिरोमणिना (उत्तमूर्) ति. वीरराघवाचार्येण विरचिता। मद्रास १ २ ०

२६४८ **तर्कसंग्रहचन्द्रिका**—(तर्कसंग्रहसहिता) यह व्याख्या अत्यन्त उत्कृष्ट है। उस पर टिप्पणरूप से परिष्कार भी बहुत उत्तम किये गए हैं। मुम्बई ० ६

२६४९ **तर्कसंग्रहसर्वस्वम्**—कुरुगण्टिश्रीरामशास्त्रितर्कपण्डितकृतम्। श्रीमदन्नम्भट्ट विरचिततर्कसंग्रहव्याख्यानरूपम्, तर्कसंग्रहाख्यमूलग्रन्थेन टिप्पणया च समन्वितम्। मद्रास २ ४ ०

2650 Annambhatta's Tarka-Saṃgraha—ein Kompendium de Dialektik and Atonūstik. mit des Verfassers eigenem Kommentar, gananut Dīpikā. Aus dem Sanskrit übersetzt. Von E. Hultzsch. Berlin 4 0 0

2651 Tarka-Saṇgraha--With English translation by Pt. Jibanand. Calcutta 0 8

२६५२ **तर्कसार**—तर्कशास्त्र के विद्यार्थियों के लिये प्रारम्भिक पुस्तक। मूलमात्र। मद्रास ० ८ ०

२६५३ **तर्कामृतम्**—जगदीशभट्टाचार्यकृतम् । मूलमात्रम् । कलकत्ता ० ४ ०

२६५४ **तर्कताण्डवः**—श्रीव्यासतीर्थविरचितः । श्रीराघवेन्द्रतीर्थकृतन्यायदीपाख्यव्याख्यासमलंकृतः । आद्यौ प्रथमद्वितीयभागौ । मैसूर ५ १० ०

२६५५ **तर्कताण्डवः**—संचिकाद्वयम् । ३ ३ ०

२६५६ **तर्कामृततरङ्गिणी**—टीकोपेता । ० ६ ०

२६५७ **तार्किकरक्षा** (आचार्यवरदराज)—कोलाचलमल्लिनाथसूरिविरचितया टीकया सहिता । बनारस ३ ३ ०

२६५८ **दीपिकासर्वस्वम्**—कुरुगुण्टिश्रीरामशास्त्रितर्कपण्डितकृतम् । अन्नम्भट्टविरचिततर्कसंग्रहदीपिकाव्याख्यानरूपम्, एतदुपयुक्तपारिभाषिकपदार्थसंग्रहटिप्पणीमूलग्रन्थैरुपशोभितम्, अयथार्थानुभवादिनिरूपणषोडशपदार्थनिरूपणविधिवादादिग्रन्थसहितम्, बहुविषयसमेतम् । मद्रास २ १२ ०

२६५९ **नवमुक्तिवादः**—गदाधरविरचितः । शिवरामकृतटीकासहितः । कपिलपादतर्काचार्येण मुक्तिदीपिकया टीकया समलंकृत्य सम्पादितः । कलकत्ता ५ ० ०

२६६० **न्यायकलिका**—जयन्तविरचिता । महामहोपाध्यायश्रीगंगानाथझासम्पादिता । प्रयाग ० १४ ०

२६६१ **न्यायकुसुमाञ्जलि** (उदयनाचार्य)—हरिदासभट्टाचार्यकृतव्याख्योपेतः । म० म० श्रीअम्बादासशास्त्रिणा विरचितया टिप्पण्या समलंकृतः ० ८ ०

२६६२ **न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकरणम्**—म० म० रुचिदत्तकृतमकरन्दोद्भासितं म० म० वर्द्धमानोपाध्यायप्रणीतप्रकाशसहितम् । कलकत्ता २५ ० ०

२६६३ **न्यायकौस्तुभः** (प्रत्यक्षम्)—by Mahadeva Punatamkara. Edited with Introduction &c, by Pt. Umesh Mishra, M. A. Allahabad. 3 4 0

२६६४ **न्याय** (सूत्रपाठः) **दर्शनम्**— बनारस ० ३ ०

२६६५ **न्यायसूत्रविवरणम्**—श्रीराधामोहनविद्यावाचस्पतिगोस्वामिभट्टाचार्यविरचितम् । बनारस ३ ० ०

२६६६ **न्यायसूत्रवैदिकवृत्तिः**—स्वामिहरिप्रसादकृतसंस्कृतभाष्यसहिता । २ १० ०

२६६७ **न्यायदर्शनम्**—महर्षिगोतमप्रणीतम् । कुरुक्षेत्रभूषण पं० छज्जूरामशास्त्रिविद्यासागरकृतया परीक्षोपयोगिच्छज्जूरामवृत्त्या सहितम् । देहली ० ८ ०

२६६८ **न्यायदर्शनम्**—श्रीविश्वनाथवृत्तिसहितम् । श्रीमत्पण्डितप्रवरश्रीबालकृष्णमिश्रविरचितचतुःसूत्रीतात्पर्यविवृत्या च समेतम् । १ ० ०

२६६९ **न्यायसूत्राणि** (गौतम)—वात्स्यायनभाष्यविश्वनाथवृत्तिसमेतानि । अयं ग्रन्थः पुष्कलाभिर्विस्तृताभिश्च टिप्पणीभिः पाठान्तरैश्च संयोज्य परिष्कृतोऽस्ति । ४ ८ ०

२६७० **न्यायदर्शनम्**—वात्स्यायनमुनिप्रणीतभाष्यसहितम् । श्रीविश्वनाथन्यायपञ्चाननभट्टाचार्यविरचितन्यायसूत्रवृत्त्यनुगतम् । २ ८ ०

२६७१ **न्यायदर्शनम्**—विश्वनाथकृतवृत्त्या वात्स्यायनकृतभाष्येण च सहितम् । कलकत्ता २ ८ ०

२६७२ **न्यायदर्शनम्**—वात्स्यायनभाष्येण तदुपरिपण्डितसुदर्शनाचार्यकृत'प्रसन्नपदा-' नाम्न्या विस्तृतया सरलया च टीकया समेतम् । ६ ० ०

२६७३ **न्यायदर्शन**—भाषाटीकासहित । मुरादाबाद १ ८ ०

२६७४ **न्यायसूत्रम्**—श्रीमहर्षिगोतमप्रणीतम् । श्रीविश्वनाथन्यायपञ्चाननविरचित-वृत्त्या समुद्भासितम् । बनारस १ १० ०

2675 Nyāya Sūtras of Gotama--Translated into English by Mahāmahopādhyāya Satiśa Chandra Vidyābhūṣaṇa, M. A. Ph. D. Allahabad. 8 0 0

२६७६ **न्यायदर्शनम्**—वात्स्यायनभाष्यवार्त्तिकतात्पर्यटीका-विश्वनाथवृत्तिटिप्पन्यादि-समेतम् । कलिकात्तासंस्कृत-कालेजाध्यापक-श्रीतारानाथ न्यायतर्कतीर्थेन रवीन्द्रनाथ-गीताञ्जल्यनुवादात्मक-संस्कृतगीताञ्जलिकृदध्यापक-श्रीअमरेन्द्रमोहनतर्कतीर्थेन च संस्कृतम् । तृतीयाध्याय-पर्यन्तम् । १० ० ०

२६७७ **न्यायदर्शन**—वात्स्यायनभाष्य तथा उदयनारायणसिंहकृतभाषाटीकासहित । विधुपुर ३ ८ ०

२६७८ **न्यायदर्शनम्**—वात्स्यायनभाष्यसहितम् । गंगानाथझाशर्मणा प्रणीतेन खद्योतेन नैयायिकचूडामणिरघूत्तमविरचितेन तृतीयाध्यायद्वितीयाह्निकस्य सप्तदशसूत्रान्तेन भाष्यचन्द्रेण च समन्वितम् । म० म० अम्बादासशास्त्रिणा कृतया भाष्यचन्द्रानुगामिन्या टिप्पण्या च समेतम् । सम्पूर्णम् । १० खण्डाः । बनारस १० ० ०

२६७९ **न्यायसूत्र और** (वात्स्यायनकृत) **न्यायभाष्य का भाषानुवाद**—अनुवादक पं० राजाराम । लाहौर ४ ० ०

२६८० **न्यायदीपिका**—काव्यतीर्थश्रीश्रीलालव्याकरणशास्त्रिणा संशोधिता । ० ४ ०

२६८१ **न्यायदीपिका**—श्रीधर्मभूषणयतिविरचितखूबचन्द्रकृत हिन्दीभाषाटीकासहित । मुम्बई ० १२ ०

२६८२ **न्यायपरिशिष्टम्** (प्रबोधसिद्धिः)—उदयनाचार्यकृतम् । वर्धमानोपाध्याय-कृत-प्रकाशटीकाटिप्पन्यादिसमेतम् । आङ्गलभूमिकासूचीपत्रादिभिः समलङ्कृतम् । कलकत्ता ५ ० ०

२६८३ **न्यायपरिशुद्धिः**—श्रीमद्वेंकटनाथश्रीवेदान्ताचार्यप्रसादिता । श्रीनिवासाचार्य-विरचितन्यायसारसमाख्यया टीकया युता । ५ खण्डाः । सम्पूर्णा । बनारस ७ ८ ०

२६८४ **न्यायपरिशुद्धि**—कवितार्किकसिंहैः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रैः श्रीनिगमान्तमहादेशिकैः विरचिता । मद्रास २ २ ०

२६८५ **न्यायप्रकाश** (स्वामीचिद्घनानन्दकृत)—भाषा । मुम्बई ७ ० ०

२६८६ न्यायप्रदीप—लेखकसाहित्यरत्नदरबारीलालन्यायतीर्थ। मुम्बई १ ० ०

२६८७ न्यायप्रदीप—बूंदीनिवासी पं० गंगासहायजीकृत । न्यायशास्त्र के ज्ञान के लिये अत्युपयोगी। मुम्बई १ ० ०

२६८८ न्यायप्रवेशः—Part I--(On Buddhist Logic) of Dinnāga with commentaries of Haribhadra Sūri and Pārśvadeva : edited by Principal A. B. Dhruva. M. A. LL. B. Pro Vice Chanceller, Hindn University Benares. 1930. Baroda 4 0 0

Part II—(Tibetan Text) compared with Sanskrit and Chinese Versions and edited with an introduction, comparative notes and indices by Vidhuśekhara Bhattacharya. Bombay 1 8 0

२६८९ न्यायबिन्दुप्रकरणम्—श्रीमदाचार्यधर्मकीर्त्तिविरचितम् । न्यायबिन्दुटीकया सहितम् । Foreign. ६ ० ०

२६९० न्यायबिन्दुः—धर्मकीर्त्तिकृतः । संस्कृत तथा भाषाटीकासहित ।
बनारस १ ८ ०

२६९१ न्यायबिन्दुटीका—धर्मोत्तराचार्यकृता । कलकत्ता १ ४ ०

२६९२ न्यायबोधिनी—नीलकण्ठीयविषयमालामायुरस्थकामाक्षीसंगृहीता । अत्युत्तम टाईप । मद्रास ० १० ०

2593 Nyāyamukha of Dignāga—Oldest Buddhist text on logic. By Guiseppe Tucci. Foreign

२६९४ न्यायमञ्जरी—(जयन्त)—पं० सूर्यनारायणशास्त्रिकृतया टिप्पण्या समेता ।
काशी ८ ० ०

२६९५ न्यायभास्कर—जगन्मिथ्यात्वखण्डनम् । १ ८ ०

२६९६ न्यायलीलावती (वल्लभाचार्यकृता)—मूलमात्र । मुम्बई ० १२ ०

२६९७ न्यायलीलावती—वल्लभकृता । काशी ० ८ ०

२६९८ न्यायलीलावती (वल्लभाचार्यकृता)—श्रीभगीरथठक्कुरकृत'विवृति'सनाथेन श्रीवर्धमानोपाध्यायकृत'प्रकाशेन'समुद्भासिता, श्रीशंकरमिश्ररचित'कण्ठाभरणेन' च समन्विता। सम्पूर्णा । बनारस १२ ८ ०

२६९९ न्यायवार्त्तिकम्—भारद्वाजोद्योतकरकृतम् । महर्षिगोतमादिचरितसंवलितबृहद्भूमिकासहितम् । २ भागों में । बनारस ६ ० ०

२७०० न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका—वाचस्पतिमिश्रकृता ।
बनारस ६ ० ०

२७०१ न्यायवार्त्तिकतात्पर्यपरिशुद्धिः—श्रीमदुदयनाचार्यविरचिताश्रीवर्धमानोपाध्यायविरचितन्यायनिबन्धप्रकाशव्याख्यासहिता । प्रथम ८ भाग । कलकत्ता ६ ० ०

२७०२ न्यायसार—महादेवपण्डितविरचित । बनारस २ ४ ०

२७०३ न्यायसारः—वासुदेवसूरिकृत टीकासहितः । मद्रास १ ८ ०

२७०४ न्यायसारः—श्रीजयसिंहसूरिविरचितया न्यायतात्पर्यदीपिकासमाख्यया टीकया सहितः । कलकत्ता ३ ० ०

2705 Nyāyasāra of Bha Sarvajna—Edited with English notes by V. P. Vaidya. Bombay 1 4 0

2706 Nyāyasāra (न्यायसार)—Critically edited with the commentary of Vasudeva Suri. English translation and notes by Prof. C. R. Deodhar M. A. Poona 2 8 0

२७०७ न्यायसिद्धाञ्जनम्—श्रीवेंकटनाथदेशिकेन प्रणीतम् । बनारस १ ८ ०

२७०८ न्यायसिद्धान्तदीपः—शशधराचार्यविरचितः । सटीकः । बनारस ५ ० ०

२७०९ न्यायसिद्धान्तमञ्जरी—(भट्टाचार्यचूडामणिजानकीनाथकृता) नीलकण्ठदीक्षितप्रणीतया बृहत्तर्कप्रकाशाभिधया व्याख्यया समेता । १ ८ ०

२७१० न्यायसिद्धान्तमञ्जरी—जानकीनाथभट्टाचार्यकृता । यादवाचार्यकृतटीकया सहिता । बनारस २ ४ ०

२७११ न्यायसिद्धान्तमाला—श्रीजयरामपञ्चाननभट्टाचार्यविरचिता । श्रीमङ्गलदेवशास्त्रिणा संपादिता । प्रयाग । २ भागौ । काशी ३ ४ ०

२७१२ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली—पं० नृसिंहदेवकृतया अतिसरलया विस्तृतया प्रभाटीकयोपेता । सम्पूर्ण । लाहौर ४ ८ ०

२७१३ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली—कवितार्किक पं० नृसिंहदेव जी शास्त्री दर्शनाचार्यकृतविस्तृतसंस्कृत टिप्पण 'सरला' नामक विवृतिसहित । सजिल्द । लाहौर १ ८ ०

२७१४ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली—दिनकरीरामरुद्रीव्याख्याभ्यां सहिता । सजिल्द । मुम्बई ३ ० ०

२७१५ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली—निर्मलसाधु गोविन्दसिंहकृत भाषाटीकासहित । इस में भली भांति उदाहरणादि दर्शाए गए हैं । संस्कृत न जानने वालों के लिये यह ग्रन्थ गुरुतुल्य है । मुम्बई ३ ० ०

२७१६ न्यायामृताद्वैतसिद्धी—न्यायामृततरङ्गिण्या दिव्याख्योपव्याख्यासप्तकोपेते । संस्कृतभूमिकाङ्गलभूमिका-टिप्पनी-सूचीपत्रादिभिः समलंकृते । साचिबाध-विचारपर्यन्तम् । कलकत्ता १२ ० ०

२७१७ पञ्चलक्षणीसर्वस्वम्—कुरुगण्टिश्रीरामशास्त्रितर्कपण्डितप्रणीतम् । मथुरानाथीयपञ्चलक्षणीव्याख्यानरूपम्, मूलग्रन्थ टिप्पणीभ्यां समलंकृतम्, एतदुपयोगिपारिभाषिकपदार्थसंग्रहसमन्वितम्, पूर्वपक्षयी व्याप्तिपञ्चकसिंहव्याघ्रसार्वभौमाख्यलक्षणतद्दलसार्थक्यपर्याप्तिगर्भनिवेशप्रकारतत्प्रयोजनादिबहुविधविषयविचारचतुर्दशलक्षणीग्रन्थघटकचतुर्दशलक्षणतत्समन्वयसिद्धान्तलक्षणतद्विचारविराजितम् । १ ६ ०

२७१८ पदवाक्यरत्नाकरः— काशी २ १२ ०

२७१९ पक्षता—गणेशोपाध्यायकृत। शिरोमणि, जागदीशी, माथुरी टीका तथा फक्किकोत्तरसहित। कलकत्ता १ ४ ०

२७२० पक्षता—गादाधरी। १ १० ०

२७२१ पदार्थदीपिका—कौण्डभट्टकृता। काशी ० ८ ०

२७२२ पदार्थतत्त्वनिरूपणम्—युक्त्या वैशेषिकमतसिद्धपदार्थानां खण्डनं, श्रीतार्किकशिरोमणिरघुनाथभट्टाचार्यविरचितं श्रीरघुदेवन्यायालङ्कारेण विरचितया टीकया तथा श्रीरामभद्रसार्वभौमविरचितया टीकया च समन्वितम्। काशी १ ४ ०

२७२३ पदार्थमण्डनम्—श्रीवेणिदत्तकृतम्। प्रयाग ० १४ ०

२७२४ पदार्थरत्नमाला—श्रीपं०रघुनाथनिर्मिता। काशी ० ८ ०

२७२५ परीक्षामुखसूत्रम्—तर्कशास्त्रे दिगम्बरजैनग्रन्थः। माणिक्यनन्दिविरचितः। अनन्तवीर्यविरचितपरीक्षामुखलघुवृत्तिसहितम्। कलकत्ता २ ० ०

२७२६ पाटलिपुत्रसमाचर्या—प्रातिपदिकार्थसूत्र तथा सामान्यनिरुक्ति का शास्त्रार्थ। ० २ ०

२७२७ प्रमाणपद्धतिः—जयतीर्थाचार्यकृता। जनार्दनभट्टकृतटिप्पणसहिता। मद्रास १ १० ०

२७२८ प्रमाणमञ्जरी—श्रीसर्वदेवसूरिविरचिता। प्राचीनन्यायग्रन्थः। तैलङ्गइलुपाह्वरामकृष्णात्मजमंगेशशर्मणा सुपरिष्कृता। मुम्बई ० २ ०

२७२९ प्रामाण्यवादः—महामहोपाध्यायश्रीगदाधरभट्टाचार्यविरचितेन तत्त्वचिन्तामणिना तार्किकशिरोमणिश्रीरघुनाथसूरिविरचितया दीधित्या च सह। प्रथमः सम्पुटः—ज्ञप्तिवादान्तः। काशी ३ ८ ०

२७३० प्रामाण्यवादगादाधरीक्रोडपत्रम्—श्रीकृष्णभट्टविरचितम्। महामहोपाध्यायन्यायाचार्यवामाचरणभट्टाचार्यविरचितम्। बनारस ३ ४ ०

२७३१ प्रमाणसमुच्चयः (chapter I)—Dinnāga's Pramāṇa-Samuccaya. Edited and restored into Sanskrit with Vritti, tīkā and notes by H. R. Rangaswamy. Iyengar, M. A. Mysore. 3 6 0

२७३२ प्रमेयकमलमार्तण्ड—(श्रीप्रभाचन्द्राचार्यविरचित) जैनदर्शन का यह बहुत ही विलक्षण और उच्चकोटिका न्यायग्रन्थ है। श्रीमाणिक्यनन्दि आचार्य का जो परीक्षामुख नाम का प्रसिद्ध ग्रन्थ है, उसकी यह बृहद्वृत्ति है। छपता है। मुम्बई

२७३३ प्रशस्तपादभाष्यटीकासंग्रहः—तत्र व्योमशिवाचार्यकृता व्योमवतीपद्मनाभमिश्रकृतः सेतुः, जगदीशभट्टाचार्यकृता सूक्तिश्च। ७ खण्डाः। बनारस १० ८ ०

२७३४ प्रशस्तपादभाष्यटीकासंग्रहः—तत्र कणादरहस्यम्। श्रीशंकरमिश्रविरचितम्। प्रशस्तपादभाष्यसमालोचनं कैलाशचन्द्रशिरोमणिकृता तर्कालंकारभाष्यपरीक्षा च। बनारस ३ ० ०

२७३५ **बाधग्रन्थः**—महामहोपाध्यायश्रीगदाधर-भट्टाचार्यविरचितः । श्रीगंगेशोपाध्याय-रघुनाथशिरोमणिविरचिताभ्यां मणिदीधितिभ्यां सहितः । श्रीकाञ्चीप्रतिवादिभयंकरानन्ताचार्येण परिशोधितः । मद्रास १ ० ०

२७३६ **भाट्टचिन्तामणिः**—भट्टकुलावतंसमहामहोपाध्यायश्रीगागाभट्टविरचितः । २ भागों में सम्पूर्ण । बनारस ३ ० ०

२७३७ **भाषापरिच्छेद** (मैथिलमुकुन्दझाकृत)—कारिकावली और अर्थदीपिका-सहित । पदान्वययोजना विशेष सरल है । ० १० ०

२७३८ **भाषापरिच्छेदः** (कारिकावली)—न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीसहितः । विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यरचित । ० १२ ०

२७३९ **भाषापरिच्छेदः**—सिद्धान्तमुक्तावलीसहितः । श्रीमत्पण्डितराजविश्वनाथ-पञ्चाननभट्टाचार्यविरचितः । पण्डितकुलपतिना बी. ए. उपाधिधारिणा श्रीजीवानन्दविद्यासागर-भट्टाचार्येण संस्कृतः । कलकत्ता ० १२ ०

२७४० **भाषारत्नम्**—कणादतर्कवागीशकृतम् । कलकत्ता ३ ८ ०

२७४१ **भास्करोदया**—नीलकंठभट्टकृत तर्कसंग्रहदीपिका प्रकाश (नीलकंठी) की व्याख्या । मुम्बई १ ४ ०

२७४२ **भुवनेशलौकिकन्यायसाहस्री**—पं० ठाकुरदत्तकृता । व्याकरणमहाभाष्य, वेदान्तदर्शन, महाकाव्य, भारतादि आर्ष प्रामाणिक ग्रन्थों से सोदाहरण उद्धृत । मुम्बई २ ८ ०

२७४३ **मणिदर्पणः**—राजचूडामणिमखिकृतः । मद्रास १ ४ ०

२७४४ **मणिसारः**—गोपीनाथकृतः । मद्रास १ ८ ०

२७४५ **महाविद्याविडम्बन**—वादीन्द्रभट्टविरचित । मुम्बई २ ८ ०

२७४६ **माथुरीपञ्चलक्षणीसिंहव्याघ्रलक्षणसहिता**—पं० नृसिंहदेवशास्त्रिदर्शनाचार्यकृतव्याख्योपेता । लाहौर ० ८ ०

२७४७ **मथुरानाथीयव्याप्तिपञ्चकटीकायाः क्रोडपत्रम्** (कालीशंकरकृतम्) बनारस ० ३ ०

२७४८ **माथुरीपञ्चलक्षणी**—सिंहव्याघ्रलक्षणसहिता । बनारस ० ३ ०

२७४९ **माथुरीपञ्चलक्षणी**—पं० उमानाथज्योतिर्विदकृतव्याख्यासहिता तथा **माथुरीसिंहव्याघ्रलक्षणम्**—पं० श्री हरिरामशुक्लविरचितया व्याख्यया सहितं तथा पं०हरिहरशास्त्रिसंकलितमाथुरीपञ्चलक्षणीक्रोडपत्रेण च । ० ६ ०

२७५० **मुक्तावली-शब्दखंडः**—पं० श्रीसूर्यनारायणशुक्ल विरचितमयूखसंस्कृतटीका-भाषाटीकासहितः । ० ४ ०

२७५१ **मुक्तिवादः**—गदाधरभट्टाचार्यकृतः । पं० ढुण्ढिराजशास्त्रिणा कृतया विषमस्थलोपयुक्तया चन्द्रिकाख्यविवृत्या समलंकृतः । बनारस ० ८ ०

२७५२ **रससारः**—उदयनकृतकिरणावली(गुणपदार्थ-)व्याख्या भट्टवादीन्द्रकृता । प्रयाग १ २

२७५३ लक्षणसंग्रहः—भिक्षुगौरीशंकरेण संगृहीतः । पुस्तकेऽस्मिन्दार्शनिकविषयाणां तथान्यान्यसमस्तशास्त्रीयपदार्थानामकारादिक्रमेण ३२३१ लक्षणान्येकत्रितानि ।
काशी ० ४ ०

२७५४ लक्षणावली—उदयनाचार्य विरचित मूलमात्र । मुम्बई ० ४ ०

२७५५ लक्षणावली—उदयनाचार्यकृता । सटीका काशी १ ४ ०

२७५६ लौकिकन्यायसंग्रहः—उदासीनश्रीरघुनाथवर्मविरचितः ।
बनारस १ ६ ०

२७५७ लौकिकन्यायाञ्जलिः—३ भागाः, A Handful of Popular Maxims. By Colonel G. A. Jacob. 3 parts.
Bombay 2 8 0

२७५८ वाक्यतत्त्वम्— बनारस ० ८ ०

२७५९ वादवारिधिः (गदाधरभट्टाचार्यादिविरचितः)—२ खण्डौ ३ ० ०

२७६० वादिविनोदः—महामहोपाध्यायमैथिलसन्मिश्रशंकरकृतः । Edited by M. M. Dr. Ganga Nath Jha. प्रयाग १ ० ०

२७६१ वार्तिकालङ्कारः—प्रज्ञाकरगुप्तस्य । धर्मकीर्तेः प्रमाणवार्त्तिकस्य भाष्यम् । त्रिपिटकाचार्येण राहुलसांकृत्यायनेन सम्पादितः । सारनाथ (बनारस) ३ ० ०

२७६२ विधिस्वरूपविचारः—(गदाधरभट्टाचार्यकृत) । ० ८ ०

२७६३ विभक्त्यर्थनिर्णयः—न्यायानुसारिप्रथमादिसप्तविभक्तिविस्तृतविचाररूपः । नैयायिकाग्रणी श्रीगिरिधरभट्टाचार्यविरचितः । ५ खण्डेषु सम्पूर्णः । बनारस ७ ८ ०

२७६४ वैशेषिकदर्शन—मूलमात्र । अतिस्थूलाक्षर । मुम्बई ० ४ ०
सूक्ष्माक्षर । बनारस ० ३ ०

२७६५ वैशेषिकदर्शन—मूलसूत्र, भाषानुवाद और विवरण सहित ।
मुरादाबाद १ ० ०

२७६६ वैशेषिकदर्शन—(कणादमुनिप्रणीत) भाषाटीकासहित ।
मुम्बई १ ० ०

२७६७ वैशेषिकदर्शन—पं० प्रभुदयालकृत भाषाटीकासहित । सजिल्द ।
मुम्बई २ ० ०

२७६८ वैशेषिकसूत्रवैदिकवृत्तिः—स्वामि हरिप्रसादकृता । मुम्बई १ १० ०

२७६९ वैशेषिकदर्शनम्—(कणादमुनिप्रणीतम्) पंडिताग्रगण्यश्रीयुक्तजयनारायणतर्कपञ्चाननकृतविवृतिसहितम् । कलकत्ता २ ० ०

२७७० वैशेषिकदर्शनम्—शंकरमिश्रकृत उपस्काराख्यव्याख्यासहितम् ।
कलकत्ता ३ ० ०

२७७१ वैशेषिकदर्शनम्—प्रशस्तपादभाष्य तथा पं० श्रीकृष्णशास्त्रिकृतटिप्पणीसहितम् । मुम्बई ० १२ ०

२७७२ वैशेषिकदर्शनम्—पं० ढुण्ढिराजशास्त्रिकृतविवरणोपेताभ्यां प्रशस्तपाद-भाष्योपस्काराभ्यां समन्वितम् । बनारस १ ८ ०

२७७३ वैशेषिकदर्शनम्—श्रीमदुदयनाचार्यविरचितकिरणावलीटीकासंवलितप्रशस्त-पादप्रणीतभाष्यसहितम् । ५ भागों में सम्पूर्ण । बनारस ७ ८ ०

२७७४ वैशेषिक दर्शनम्—प्रशस्तपादभाष्यसहितकालीपादतर्काचार्येण स्वकृतसूक्ति-दीपिकाख्यटीकासहितम् । वंगभाषामयभाष्यतात्पर्यप्रभृतिभिः समलंकृत्य सम्पादितम् ।
कलकत्ता २ ० ०

२७७५ वैशेषिकदर्शनम्—कणादमुनिप्रणीतम् । श्रीशंकरमिश्रकृतवैशेषिकसूत्रो-पस्कारसमलंकृतम् । काशी १ ८ ०

2776 Padārtha Dharma Saṃgraha—Praśastapāda Bhāṣya on the Vaiśeṣika Sūtras of Kaṇāda—along with the Nyāyakandalī—Śrīdhara's commentary on the Bhāṣya. Translated into English by Dr. Ganga Nath Jha.
Benares 10 0 0

2777 Vaiśeṣika Philosophy, according to the Daśa-padārtha-Shāstra. Chinese text and translation. Edited by F. W. Thomas. Foreign 6 8 0

2778 Vaiśeṣika Sūtras of Kaṇāda—With the commentary of Śaṅkara Miśra and extracts fromt he gloss of Jaya-Nārāyaṇa and Chandra Kānta. Translated into English by Nand Lal Sinha. Allahabad 7 8 0

2779 Vaiśeṣika System described with the help of the oldest texts, translated into English by Dr. B. Faddegon.
Holland 29 0 0

२७८० व्यधिकरणप्रकरणम्—श्री जगदीशतर्कालंकारकृतम् ।
बनारस २ ० ०

२७८१ व्याप्तिपञ्चकम् (गङ्गेशोपाध्यायकृतम्)—इसमें माथुरी तथा जागदीशी-टीकासहित ('पञ्चलक्षण' एवं माथुरी तथा जागदीशीसहित 'सिंहव्याघ्रलक्षण' सरलसंस्कृतटीका सहित है । इस टीका द्वारा माथुरी जागदीशी की गूढ़पंक्तियों का भावार्थ समन्वय के साथ सरलतापूर्वक समझ में आ जाता है । काशी ० १२ ०

२७८२ व्याप्तिपञ्चकम्—शिरोमणिटीका+जगदीशकृतशिरोमणिटीकाविवृति+जग-दीशविवृतेष्टिप्पनी+गदाधरकृतशिरोमणिटीकाविवृति+माथुरीटीका+माथुरी-जागदीशी-गादाधरी-टीकापत्रिकाचतुष्टयसमन्वितम् । कलकत्ता १ ० ०

२७८३ व्याप्तिपञ्चकरहस्यं सिंहव्याघ्रलक्षणरहस्यं च—(मथुरानाथतर्क-

वागीशकृतम्) पं० शिवदत्तमिश्रविरचितगंगानिर्झरिणीव्याख्यया टिप्पण्यादिभिर्विभूषितं च । ० १२ ०

२७८४ **व्युत्पत्तिवादः**— काञ्ची २ ११ ०

२७८५ **व्युत्पत्तिवादः** (गदाधरभट्टाचार्यकृतः)— काशी १ ८ ०

२७८६ **व्युत्पत्तिवादः**—पं० सुदर्शनाचार्यशास्त्रिप्रणीतादर्शाख्यव्याख्यासहितः । शब्दखंड का ग्रन्थ है । इसमें प्रत्ययशक्ति का निरूपण है । वस्तुगत्या यह शक्तिवाद का उत्तरार्द्धभूत है । मुम्बई ६ ० ०

२७८७ **व्युत्पत्तिवादः**—श्रीमद्गदाधरभट्टाचार्यविरचितः । लक्ष्मीनाथझाविरचित-'प्रकाश'व्याख्यया सहितः । ४ ० ०

२७८८ **व्युत्पत्तिवादः**—श्रीवेणीमाधवशास्त्रिरचितः (शास्त्रार्थपरीक्षोपयोगी) । शास्त्रार्थकलाटीकासहितः । काशी २ ० ०

२७८९ **शक्तिवादः**—कृष्णभट्टकृतया मञ्जूषया, माधवभट्टाचार्यनिर्मितया विवृत्या, श्रीमन्माध्वसंप्रदायाचार्यदार्शनिकसार्वभौमसाहित्यदर्शनाचार्यतर्करत्नन्यायरत्नगोस्वामिदामोदरशास्त्रिरचितया विनोदिन्या च समेतः । बनारस २ ० ०

२७९० **शक्तिवादः**—श्रीगदाधरभट्टाचार्यप्रणीतः । श्रीहरिनाथविरचितविवृतिसहितः । काशी ३ ० ०

२७९१ **शक्तिवादः**—पं० सुदर्शनार्यकृतः । आदर्शाख्यव्याख्यया सहितः । शब्दखंड का विषय है । मुम्बई २ ८ ०

२७९२ **शतकोटि**— काञ्ची ० ७ ०

२७९३ **शतकोटिखण्डनम्**—कृष्णताताचार्यकृतम् । काञ्ची ० ७ ०

२७९४ **शतकोटिखण्डनम्**—अनन्ताचार्यकृतम् । ० १४ ०

२७९५ **शतकोटिमण्डनम्**—विजयराघवाचार्यकृतम् । काञ्ची १ १ ०

२७९६ **शब्दशक्तिप्रकाशिका**— कलकत्ता १ ४ ०

२७९७ **शब्दशक्तिप्रकाशिकायां**—समासान्तः प्रथमो भागः । न्यायाचार्य-श्रीजगदीशतर्कालंकारविरचितः । महामहोपाध्यायश्रीगुरुचरणतर्कदर्शनतीर्थविरचित-विषमस्थलटिप्पणी-समन्वितः । कलकत्ता १ ६ ०

२७९८ **शब्दशक्तिप्रकाशिका** (जगदीशतर्कालंकारकृता)—कृष्णकान्तीयराम-भद्रीयटीकाद्वयसहिता । बनारस ४ ८ ०

२७९९ **संगमेश्वरक्रोडम्**—जगदीशतर्कालंकारविरचितस्य सिद्धान्तलक्षणस्य क्रोड-पत्रम् । श्रीसंगमेश्वरशास्त्रिणा विरचितम् । मद्रास १ ० ०

२८०० **सत्प्रतिपक्षग्रन्थः**— काञ्ची १५ ० ०

२८०१ **सप्तपदार्थीनामवैशेषिकप्रकरणम्**—विद्वद्वर्यश्रीशिवादित्यनिरूपितम् । श्रीमद्यतीन्द्रमाधवसरस्वतीविरचितमितभाषिण्याख्यया व्याख्यया समलंकृतम् । काशी १ ११ ०

२८०२ **सप्तपदार्थी**—शिवादित्यविरचिता, शेषानन्तकृतपदार्थचन्द्रिकासमेता । अंग्रेजी नोट सहित । मुम्बई १ ८ ०

[With Introduction and notes by the late Dr. V. S. Ghate.] 1 8 0

२८०३ सप्तपदार्थी—शिवादित्यकृता । मितभाषिणी-पदार्थचन्द्रिका-बलभद्रसन्दर्भ-जिनवर्धनकृतटीका-टिप्पन्यादिसमेता । संस्कृतभूमिकाङ्गलभूमिका-सूचीपत्रादिभिः समलंकृता । कलकत्ता ४ ० ०

2804 Sapta-Padārthī—A manual of the Seven Categories. Text in Devanagari, Roman transliteration and English translation by D. Gurumurti, M. A. (Hons.). With a Foreword by Prof. Rādhākrishnan M. A. Madras 2 8 0

२८०५ सामान्यनिरुक्तिः—शिरोमणि-गदाधरकृतवृत्तिद्वयसहिता गदाधरकृतटीकाया वादार्थेनान्विता च । कलकत्ता २ ० ०

२८०६ सामान्यनिरुक्तिः— काञ्ची ० १३ ०

२८०७ सिंहव्याघ्रलक्षणम्— काशी ० ८ ०

२८०८ सिद्धान्तमाला—श्रीगोदवर्मराज । मद्रास ० ७ ०

२८०९ सिद्धान्तमुक्तावली—श्रीविश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यप्रणीता । पं० छज्जूराम-शास्त्रि-विद्यासागर-प्रणीतया मूलचन्द्रिकाख्यविवृत्यनुगता । बनारस १ १२ ०

२८१० सिद्धान्तलक्षणम्—श्रीजगदीशतर्कालङ्कारकृतम् । न्यायाचार्यपण्डितश्रीशिवदत्तमिश्रगौडेन विरचितया समूलजागदीशीव्याख्यानसनाथ-क्रोडपत्ररूपया गंगाख्यव्याख्यया बृहत्क्रोडपत्रसंग्रहपराभिधया विषमस्थलटिप्पण्या च संवलितम् । काशी १ ८ ०

२८११ सिद्धान्तलक्षणजागदीश्याः कालीशंकरीतिपदव्यवहृता पत्रिका—द्राविडोपाख्यसीतारामशास्त्रिणा संशोधिता । बनारस ० ८ ०

२८१२ सिद्धान्तलक्षणम् (गंगेशोपाध्यायकृत)—शिरोमणिटीका+जगदीशकृतशिरोमणिटीकाविवृति+माथुरीटीकासहितं, जगदीशकृतविवृतेः फक्किकाविवृतिसमन्वितञ्च । कलकत्ता १ ० ०

२८१३ सिद्धान्तलक्षणम्— काञ्ची १ ६ ०

२८१४ सिद्धान्तलक्षणम्—श्रीरघुनाथशिरोमणि-श्रीजगदीशभट्टाचार्य-श्रीमथुरानाथ-तर्कवागीशविरचितेन टीकात्रयेण जागदीश्याः क्रोडपत्रेण च समन्वितम् । बनारस ० १२ ०

2815 Conception of Matter according to Nyāya-Vaiśeṣika—By Umesh Mishra. With a foreword by Dr. Ganga-Nath Jha. 8 0 0

2816 Hindu Philosophy—Tarka-Sangraha—Text with English translation by J. R. Ballantyne LL. D. Calcutta

2817 Hindu Realism—Being an introduction to the Metaphysics of the Nyaya-Vaiśeṣika System of Philosophy, by Jagadisha Chandra Chatterji, B. A. (Cantab.), Vidyavāridhi. Kashmir 3 0 0

2818 History of Indian Logic (Ancient, Mediaeval and Schools)—By Mahāmahopādhyāya Satis Chandra Vidyābhūshan, M. A., Ph. D., M. R. A. S., F. A. S. B. With a Foreword by Sir Ashutosh Mukerji. Slightly damaged copies are available. Reduced price 12 0 0

2819 Indian Logic and Atomism—An exposition of the Nyāya and Vaisheshika Systems in English. By A. B. Keith. Foreign 2 8 0

2820 Indian Logic Early Schools—A study of the Nyaya Darsana. By H. N. Randle, M. A. Foreign 7 8 0

2821 Nyāya-The Science of Thought—By Champat-Rai Jain, Barrister-at-Law, Arrah.

2822 Pre-Diṅnāga Buddhist texts on Logic from Chinese Sources. 9 0 0

2823 Primer of Indian Logic—according to Annambhaṭṭa's Tarkasangraha by M Vidya-Vachaspati S. Kuppu Swami Sastri, M. A., I. E. S. Madras 4 8 0

2824 Short History of the Mediaeval School of Indian Logic—By M. M. Satis Chandra, M. A., Ph. D. Bound with gilt letters. 7 8 0

योग-ग्रन्थाः

२८२५ अमनस्कखण्डः—मूलमात्र । मुम्बई ० ४ ०

२८२६ आसन— औंध २ ० ०

2827 Asanas—The Popular Yoga. Illustrated edition. Part I. By Kuvalayananda. Bombay 4 12 0

२८२८ गोरक्षनाथोत्पत्ति—मूलमात्र । लाहौर ० १ ०

२८२९ गोरक्षपद्धति—भाषाटीकासहित । इस ग्रन्थ में योगाभ्यास का फल सुगम रीति से वर्णित है । मुम्बई ० १० ०

२८३० गोरक्षसंहिता—मूल । मुम्बई ० २ ०

२८३१ **गोरक्षसिद्धान्तसंग्रहः**—भागः १। प्रयाग ० १४ ०

२८३२ **घेरण्डसंहिता**—भाषाटीकासहित। इसमें अष्टांगयोगवर्णन भली भांति किया गया है। मुम्बई ० १० ०

2833 Gheraṇḍa Saṃhitā—with English translation by S. C. Basu. Allahabad 1 8 0

2834 Gheraṇḍa Saṃhitā (घेरण्डसंहिता)—A treatise on Haṭha Yoga together with an English translation by Sris Chandra Vasu, B. A., F. T. S. Madras 2 0 0

२८३५ **ज्ञानसंकलनीतन्त्र**—मूलमात्र। मुम्बई ० १ ०

२८३६ **नेत्रज्योतिप्रकाशिनी नेति** (Neti Tract)—भाषा। लेखक श्री ब्रह्मचारीगोपालानन्दजी। इसमें हठयोग की 'नेति' क्रिया से नेत्रों की ज्योति बढ़ाने तथा जुकामादि रोगों की निवृत्ति के उपाय लिखे हैं। लाहौर ० ८ ०

२८३७ **पातञ्जलयोगसूत्रपाठः**—मूलमात्र। बनारस ० ३ ०

२८३८ **पातञ्जलदर्शन**—व्यासभाष्य तथा वाचस्पतिमिश्रकृतटीकासंवलित। कलकत्ता २ ४ ०

२८३९ **पातञ्जलयोगसूत्रम्**—वाचस्पतिमिश्रकृतटीकायुतेन व्यासभाष्येण, नागोजी-भट्टकृतया वृत्त्या च सहितः। पूना ३ ८ ०

२८४० **पातञ्जलसूत्रम्**—भोजदेवकृतवृत्तिसहितम्। कलकत्ता १ ० ०

२८४१ **पातञ्जलयोगसूत्राणि**—वाचस्पतिमिश्रकृतटीकासंवलितव्यासभाष्येण तथा भोजदेवविरचितवृत्त्या समेतानि। पूना ३ ० ०

२८४२ **पातञ्जलदर्शन**—व्यासभाष्य तथा विज्ञानभिक्षुकृतयोगवार्त्तिकव्याख्यासहित। कलकत्ता ३ ० ०

२८४३ **पातञ्जलदर्शनम्**—नागेशकृतभाष्यछायाख्यवृत्तिसहितम्। बनारस २ १२ ०

२८४४ **पातञ्जलयोगसूत्रम्**—भावगणेशीयवृत्तिनागोजीभट्टीयवृत्तिसहितम। मुम्बई ० १४ ०

२८४५ **पातञ्जलयोगदर्शनम्**—अनन्तपण्डितविरचितया पदचन्द्रिकाख्यया टीकया तथा चाधिकरणदर्शकनूतनटिप्पणसमेतम् मुम्बई ० ८ ०

२८४६ **पातञ्जलदर्शन**—अनन्तपण्डितकृतव्याख्यासहित। मद्रास ० ६ ०

२८४७ **पातञ्जलदर्शन** (योगसूत्र)—मणिप्रभाख्यटीकासहित। कलकत्ता १ ४ ०

२८४८ **पातञ्जल-योगदर्शनम्**—व्यासभाष्यभोजवृत्तिसहितम्। स्वर्गीय पण्डितरुद्रदत्त शर्म्माकृत हिन्दीअनुवादसमेत। सजिल्द। मुरादाबाद ३ ० ०

२८४९ **पातञ्जलयोगदर्शन**—दोहा तथा भाषाटीकासहित। इसमें अष्टांगयोगनिरूपण बहुत ही सरल और सुगम लिखा गया है। जिल्दसहित। मुम्बई १ ० ०

२८५० **पातञ्जलदर्शनप्रकाश** यतीन्द्रस्वामिबालराम उदासीनकृत हिन्दी अनुवाद। बांकीपुर २ ८ ०

२८५१ **सांगयोगदर्शनम्**—अर्थात् पातञ्जलदर्शनं भगवत्पतञ्जलिविरचितम्। राघवानन्दकृतटिप्पण्या, वाचस्पतिमिश्रकृतव्याख्यया, विज्ञानभिक्षुकृतयोगवार्त्तिकेन, श्रीहरिहरानन्दारण्यकृतवृत्त्या च सहितेन व्यासभाष्येण समन्वितम्। काशी ४ ० ०

2852 Prāṇāyāma (प्राणायाम), the Popular Yoga—By Kuvalaya Nanda. Translated into English. Illustrated edition. Part I. Bombay 2 8 0

२८५३ **बिन्दुयोगः**—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकासमलंकृतः। मुम्बई ० ८ ०

२८५४ **बृहद्योगसोपान**—भाषाटीकासहित। लेखक पं० रामनरेशमिश्र शास्त्री। मुम्बई ० १४ ०

२८५५ **योगतत्त्वप्रकाश**—भाषा में अत्युत्तम योगमार्ग वर्णित है। मुम्बई ० २ ०

२८५६ **योगदर्शनम्**—नारायणतीर्थकृतया विस्तृतया योगचन्द्रिकाख्यया व्याख्यया कैवल्यपादीयतृतीयसूत्रावधि समुपलभ्यया सहितम्। तत्कृतयैव संक्षिप्तया सूत्रार्थबोधिन्या च सम्पूर्णया सहितम्। २ खण्डौ। काशी ३ ० ०

२८५७ **योगदर्शन**—पतञ्जलिकृतम्। १ भोजवृत्ति; २ भावागणेशवृत्तिः, ३ नागोजीभट्टवृत्तिः, ४ मणिप्रभा, ५ योगचन्द्रिका, ६ योगसुधाकराख्यटीकाषट्कसमेतम्। काशी २ ० ०

2858 Yogadarshana—Sūtras of Patanjali and Commentary of Vyāsa translated into English by Dr. Ganga-Nath Jha. Bombay 1 8 0

2859 Yoga Darshana—Comprising the Sūtras of Patanjali with the Bhāshya Vyāsa—translated into English with notes by Ganga Nath Jha. Second Edition—Thoroughly revised. Madras 3 0 0

2860 Yogadīpikā—English translation by K. T. Sreenivāsāchāriar. Madras 0 12 0

2861 Yogadīpikā (योगदीपिका)—Of Bhagavan Narayana (Sanskrit text) with English translation and Sanskrit preface. Foreword by Dr. Sir S. Subrahmanya Iyer. Madras 1 4 0

२८६२ **योगप्रेमवर्षा**—रचयिता-मुलखराजवर्मा। इसमें योग से प्रेम, भक्ति, वैराग्य, ज्ञान उत्पन्न करने वाले भजन दिये गए हैं तथा यम का स्वरूप भजनों में प्रकट किया है। अमृतसर ० ८ ०

२८६३ **योगभक्तिदर्पण**—पं० रामलालयोगिराजकृत। इस पुस्तक में चौरासीलाख के दुःखों से दुःखी जीवों के लिये शान्त परमानन्दपद पहुंचाने के सरल साधन बताए गए हैं। ० ५ ०

२८६४ **योगमार्गप्रकाशिका**—अर्थात् योगरहस्यभाषाटीकासहित। ० १२ ०

२८६५ **योगयाज्ञवल्क्यम्**— मद्रास ० ४ ०

२८६६ **योगियाज्ञवल्क्यसंहिता**— मुम्बई ० ६

२८६७ **योगरसायन**—भाषाटीका स्वामीब्रह्मानन्दविरचित। मुम्बई ० १० ०

२८६८ **योगवार्त्तिकम्**—विज्ञानभिक्षुविरचितम्। योगसूत्रव्यासभाष्यव्याख्यारूपम बनारस ३ ० ०

२८६९ **योगवित्**—भाषाटीकासमेत। मुम्बई ० ४ ०

2870 Yoga-Shastra or a treatise on Practical Yoga consisting of (1) Shiva Samhita (2) Gheranda Samhita (3) Haṭha-Yoga-pradīpikā (4) And an Introduction to Yoga Philosophy with English translation by S. C. Vidyarnava. Each part @ 1/8/-. Complete set. Allahabad 6 0 0

२८७१ **योगशास्त्र**—प्रताकारसटीक। काठियाबाड़ १२ ० ०

२८७२ **योगसन्ध्याभाषाटीका**—(साधन करने वालों को अमृत की लता) योगाभ्यासियों के लिये परमोपयोगी है। मुम्बई १ ४ ०

२८७३ **योगसाधन की तैयारी**— औंध ० १२ ०

२८७४ **योगसार**—भाषाटीका। मेरठ ० ३ ०

२८७५ **योगसारसंग्रहः**—श्रीविज्ञानभिक्षुविरचितः। बनारस ० ८ ०

2876 Yogasāra-Saṅgraha of Vijñāna Bhikṣu—Text with translation by Ganganath Jha M. A., F. T. S. Madras 2 8 0

2877 Yogasārasaṃgraha of Vijñāna Bhikṣu—Text with English translation by Dr. Ganga Nath. Bombay 1 0 0

२८७८ **योगसूत्रम्**—पातञ्जलदर्शनम्। श्रीमद्यतिरामानन्दसरस्वतीकृतमणिप्रभावृत्त्युपेतम्। कलकत्ता १ ८ ०

२८७९ **योगसूत्रम्**—पतञ्जलिकृतम्। श्रीबलदेवमिश्रकृतया योगसूत्रप्रदीपिकया टीकया सहितम्। काशी १ ० ०

२८८० **योगसूत्रवृत्ति**—अर्थात् योगसुधाकर। सदाशिवेन्द्रसरस्वतीविरचित। मद्रास १ ८ ०

२८८१ **योगसूत्रवैदिकवृत्तिः**—पं० स्वामिहरिप्रसादेन निर्मिता। ० १२ ०

2882 Yoga Sūtras of Patanjali—With the Sāṅkhya

Pravachana Commentary of Vyasa and the gloss of Vāchaspati Miśra; translated into English with text by Rāma Prasāda, M. A., 7 0 0

2883 Yoga-Sūtras of Patanjali—translated by Prof. Manilal Nabhubhai Dvivedi B. A., with notes explaining fully the meaning of each sūtra with the help of Vyāsa's commentary and other works by subsequent writers. Bombay 1 12 0

2884 Yoga System of Patanjali—or the ancient Hindu doctrine of concentration of mind embracing Mnemonic rules, called Yoga Sūtras of Patanjali and the comment, called the Yoga Bhashya, attributed to Veda Vyasa and the Explanation of Vacaspati Mishra, translated into English by J. H. Woods. U. S. A. 18 4 0

2885 Raja Yoga—Or conquering the Internal Nature by Swami Vivekanand in English. Contains also the aphorisms of Patanjali. Calcutta 1 4 0

२८८६ यौगिकसंघ व्यायाम—मूललेखक श्रीस्वामी कुवलयानन्द, हिन्दी अनुवादक पं० भगवतीप्रसाद पाण्डे बी० ए०। ० १० ०

२८८७ विवेकमार्त्तण्डः—विश्वरूपदेवकृतः। योगवैराग्यादिविषयकः। ० ८ ०

२८८८ शिवसंहिता—भाषाटीकासहित। इसमें शिवजी से कहा हुआ योगोपदेश, ब्रह्मज्ञान, हठयोगक्रिया तथा राजयोगादि का वर्णन है। सजिल्द। मुम्बई १ ८ ०

२८८९ शिवसंहिता—श्र० कु० पं० रामचन्द्रशर्मकृतभाषाटीकासहित। मुरादाबाद ० १० ०

2890 Shiva Saṃhitā (शिवसंहिता)—with English translation by S. C. Vasu. Allahabad 1 8 0

२८९१ शिवस्वरोदय—भाषाटीकासहित, इसमें स्वरों का और इडा, पिंगला, सुषुम्णा नाड़ियों से प्रश्नादि और राजयोग, हठयोग, प्राणायामादि पंचतत्त्वों के जानने की विधि भली प्रकार वर्णित है। मुम्बई ० १० ०

२८९२ षट्चक्रनिरूपण—सटीक। श्रीपूर्णानन्दयतिविरचित। मुम्बई ० ८ ०

२८९३ षट्चक्रनिरूपण—भाषाटीकासहित। हरिद्वार ० ५ ०

2894 Shat Chakra Nirūpaṇa Chitram (षट्चक्रनिरूपणचित्रम्) स्वामीहंसस्वरूपजीकृत। An important phrenological treatise of Yoga useful for all interested in Hathayoga and Rajayoga. 3 4 0

२८९५ **सचित्रयोगासन**—योग के ४० आसन (फोटो) भाषा में विवेचन सहित हैं। आगरा १ ८ ०

२८९६ **सर्वशिरोमणिसिद्धान्तसार**—भाषा। अलवरनिवासीयोगमार्गनिपुण श्री स्वामी आनन्दमंगल जी का अनुभव १२ प्रकाशों में वर्णित है। इसमें योगमार्ग, कर्ममार्ग, छन्दःशास्त्र, वैद्यक, कर्मकाण्ड, ज्योतिष इत्यादि १५ विषयों में शंकासमाधानपूर्वक सिद्धान्त भली भांति लिखा गया है। मुम्बई २ ० ०

२८९७ **सहजप्रकाश**—श्रीस्वामीचरणदासजी की बहिन सहजोबाईकृत। भाषा में। मुम्बई ० ६ ०

२८९८ **सिद्धसिद्धान्तसंग्रह**—बलभद्रकृतः। Edited with Introduction by Gopinath Kaviraj M. A. Allahabad 0 14 0

२८९९ **सूर्यभेदनव्यायाम**—(सचित्र)। बलवर्द्धकयोग के व्यायाम। औंध ० ८ ०

२९०० **स्वरदर्पणसटीक**—भाषा में स्वर पर प्रश्नवर्णित हैं। ० ६ ०

२९०१ **स्वरोदयसार**—चरणदासकृत। मुम्बई २ ६ ०

२९०२ **हठयोगप्रदीपिका**—संस्कृत टीका तथा भाषा टीका सहित। इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायामप्रकरण, मुद्राप्रकरण, प्रत्याहारादि समाधिक्रमादि का अच्छा वर्णन किया गया है। सजिल्द। मुम्बई २ ० ०

2903 Hatha Yoga Pradīpikā (हठयोगप्रदीपिका)—Translated into English by Pancham Singh. Text in Devanāgarī. Allahabad 1 8 0

2904 Haṭhayoga Pradīpikā of Svātmārāma—With text and English translation by Yogi Śrīnivāsa Iyengar. Madras 3 0 0

2905 Haṭha Yoga Pradīpikā (हठयोगप्रदीपिका)—English translation with the Sanskrit text, commentary and introduction, proving that the Yoga is a complement of the Dhyana (Knowledge) and vice versa. By Swatmaram Swami. Bombay 1 0 0

2906 Bases of Yoga—By Aurobindo Ghose. 3 0 0

2907 A Compendium of the Raja Yoga Philosophy—Comprising principal treatises of Shankaracharya Swami; such as the अपरोक्षानुभूति, आत्मानात्मविवेक, विवेकचूडामणि, चर्पटमञ्जरी and वाक्यसुधा with the वेदान्तसार of सदानन्दस्वामी। Some of these are printed in Sanskrit texts. Bombay 1 4 0

2908 Descriptive Outline of Yogoda—or a system for harmonious and full development of body, mind and soul. A method of re-charging the body, mind and soul batteries from Inner Cosmic Energy, as taught by Swami Yogananda, M. A. 1 4 0

2909 The Doctrine and Practice of Yoga—By Swāmi A. P. Mukerji. Including the practices and exercises of Concentration both of objective, subjective, active and passive mentation, an elucidation of Māyā, Guru-worship and worship of the terrrible, also the mystery of Will-force. Foreign 15 0 0

2910 Fourteen Lessons in Yogi Philosophy—A unique work covering the entire field of the Yogi Philosophy and Oriental occultism stating the most profound truth and hidden mysteries in the plainest, simplest English style by Yogi Rama Charaka. Foreign 6 0 0

2911 Hatha Yoga—A complete manual of the great Oriental Yogi System of Physical well being, health, strength and vigour. By Yogi Ramacharaka. Foreign 5 8 0

2912 Higher Life or Rules of Rajayoga—By Bhagavān Buddha. Bombay 0 2 0

2913 Hindu Yogi Science of Breath—A complete manul of the Oriental Philosophy of physical, mental psychic and spiritual development by the intelligent control of the breath. By Yogi Rama Charak. 2 8 0

2914 How to be a Yogi—By Swami Abhedanand. 2 0 0

2915 Ideal of the Karmayogin—By Sir Aurobindo Ghos Chandernagore 1 8 0

2916 An Introduction to the Study of the Yoga Aphorisms of Patanjali—By Ges. C. Williams, F. T. S. Bombay 0 4 0

2917 An Introduction to Yoga—By Annie Besant in

English. Theosophical Convention Lectures. Contents: The Nature of Yoga; Schools of Thought; Yoga as science; ; Yoga as practice. Madras 1 0 0

2918 Introduction to Yoga Philosophy—By S. C. Basu. Allahabad 1 8 0

2919 Jñāni Yoga—By Yogi Rama Charaka. Foreign 5 0 0

2920 Karma Yoga and Bhakti Yoga--By Swami Vivekanand, in English. Calcutta 1 8 0

2921 Kunstform und Yoga Im Indischen Kultbild—Von Heinrich Zimmer. Berlin 12 6 0

2922 Lectures on Jñāna Yoga—By Swami Vivekananda. Calcutta 1 12 0

2923 Lights on Yoga—By Sri Aurobindo. Howrah 1 6 0

2924 Mind, Its Mysteries and Control—By Sivanand Swami. Gorakhpur 0 8 0

2925 Mysterious Kundalini—The Physical Basis of the "Kundalinī (Haṭha) Yoga" aocording to our present knowledge of Western Anatomy and Physiology. By V. G. Rele, F. C. P. S., L. M. and S. With a foreword by Sir John Woodroffe (Arthur Avalon) Late chief Justice of Calcutta High Court. Illustrated with original diagrams and four photogravure plates. Revised and enlarged edition. 3 12 0

2926 Practical Yoga—By O. Hashnu Hara. A Series of thoroughly practical lessons on the Philosophy and practice of Yoga with a chapter devoted to Persian Magic. 2 8 0

2927 Raja Yoga—Die gebeime Lehre Indiens Zur Erlaugung eines besseren. By Arkaji. Foreign 1 8 0

2928 Practice of Yoga—By Swami Shivananda. Second edition in the press. Madras 2 8 0

2929 Psychological Chart Swami Yogananda. Foreign 2 8 0

2930 Raja Yoga—By Yogi Rama Charaka. Foreign 5 0 0

2931 Science of Psychic Healing—A sequel to Hatha Yoga. By Yogi Ramacharaka. London 4 8 0

2932 Scientific Healing Affirmations—By Inspiration of Swami Yogananda. California 2 0 0

2933 Serpent Power—Being the Shat-Chakra-Nirūpaṇa and Pādukā-pañchaka. Two works on Laya-Yoga, translated into English by Arthur Avalon. 20 0 0

2934 Six Lectures on Rāja-Yoga—By Swami Vivekānanda. 0 8 0

2935 Songs of the Soul—Including "vision of visions" (from the Bhagavadgita) By Swami Yogananda with a preface by Dr. Frederick B. Robinson. Foreign 6 0 0

2936 Speeches and Writings—The Yoga Philosophy. Collected by Bhagu F. Karbhari. 2nd edition. By R. Vir Chand Gandhi. Bombay 4 8 0

2937 Study of Patanjali—By Surendra Nath Dasgupta, M. A. Calcutta 4 8 0

2938 A Study of Yoga—By Yajneshwar Ghosh. Hooghly 4 0 0

2939 Theory and Practice of Yoga—By Sardar Sulakhan Singh. [It contains an exposition of the Yoga-Sūtra of Patanjali, with an introduction. The Appendix consists of 'The Basic Principles of Vedanta Philosophy'] 2 0 0

2940 A Treatise on the Yoga Philosophy—4th edition. By N. C. Paul. Bombay 0 8 0

2941 A Visit to a Gnani—By Edward Carpenter. The Hindu Science of Breath. 1 4 0

2942 Yoga and Its Objects—With a Glossary. Chandranagore 0 12 0

2943 Yoga As Philosophy and Religion—By S. Dasgupta. Foreign 8 8 0

2944 Yoga—A Study of the Mystical philosophy of the Brahmins and Buddhists by J. F. C. Fuller. Foreign 7 0 0

2945 Yoga Lessons—for developing spiritual consciousness by Swami A. P. Mukerji. Foreign 5 0 0

2946 Yoga : Lower and Higher—By K. Narayana Swami Aiyer. Bound. Madras 1 8 0

2947 Yoga Methods—How to prosper in Mind, Body and Estate, written in English by R. Dimsdale Stocker. 1 12 0

2948 Yoga of Yama—What death said. A Version of the Kaṭhopaniṣad with commentary, being a system of yoga or means of attainment. By W. Gorn Old. Foreign 1 8 0

2949 Yoga Philosophy in relation to other systems of Indian Thought—By S. N. Dasgupta. 5 0 0

2950 Yoga Praxis—Ein Wegweiser Zur Erlangunj hoberer Geisteskrafte by Durga Prasad. Foreign 1 8 0

2951 Yogic and Vedantic Sadhan—By Swami Sivananda. Madras 0 8 0

मीमांसा-ग्रन्थाः

२९५२ **अधिकरणकौमुदी** (देवनाथठक्कुरकृता)— १ ० ०

२९५३ **अध्वरमीमांसाकुतूहलवृत्तिः**—वासुदेवदीक्षितकृता । Edited by S. Kupppu Swami Sastrigal, M. A., Vol. I (To the end of Pada 4 of Chapter III) 10 0 0

२९५४ **अर्थसंग्रहः**—लौगाक्षिभास्करकृतः । मूलमात्र । कलकत्ता ० ४ ०

२९५५ **अर्थसंग्रहः**—लौगाक्षिभास्करकृतः । जीवानन्दविद्यासागरकृतसंस्कृतव्याख्यासहितः । १ ० ०

२९५६ **अर्थसंग्रहः**—लौगाक्षिभास्करकृतः । श्रीरामेश्वरशिवयोगिभिक्षुप्रणीतमीमांसार्थसंग्रहकौमुदीव्याख्यायुतः । मुम्बई । काशी ० १४ ०

२९५७ **अर्थसंग्रहः**—मीमांसार्थसंग्रहकौमुदीटीकासहितः । Edited by D. V. Gokhale with English translation. The text has been collated with all the extant editions. Poona 2 0 0

२९५८ **जैमिनिन्यायमाला**—श्रीमन्माधवाचार्यविरचिता । तद्विरचितेन विस्तरेण विभूषिता (तृतीयाध्यायान्ता) । काशी २ ० ०

२९५९ **जैमिनीयन्यायमालाविस्तरः**—माधवाचार्यकृतः मीमांसादर्शनस्य अधिकरणमाला । कलकत्ता ६ ० ०

२९६० **जैमिनीयन्यायमालाविस्तरः**— माधवाचार्यकृतः । अत्र कर्मकाण्डीयवेदवाक्योदितधर्मनिर्णायकजैमिनिमुनिप्रोक्ताथातो धर्मजिज्ञासेत्यादिन्यायानां सुगमतया श्लोकैः संग्रहः प्रदर्शितः । श्लोकविवरणं च ग्रन्थकृता स्वयमेव यथावत् कृतमस्ति । पूना ८ ० ०

२९६१ **तत्त्वबिन्दु**—(वाचस्पतिमिश्रकृतः) । ऋषिपुत्रपरमेश्वरकृततत्त्वविभावनोपेतः । [With an exhaustive introduction giving history of Mīmāṃsā literature, also with an analysis of the Tattvabindu]. Edited by V. A. Rama Swami Sastry M. A. Madras 3 12 0

२९६२ **तत्त्वबिन्दु**—वाचस्पतिमिश्रकृतः । बनारस ० ६ ०

२९६३ **तन्त्ररत्नम्**—पार्थसारथिमिश्रकृतम् । Edited by Ganga Nath Jha, M. A., and Gopal Shastri Nene. 2 parts. Allahabad 4 2 0

२९६४ **तन्त्रवार्त्तिकम्**—कुमारिलभट्टपादकृतम् । श्रीशबरस्वामिभाष्यप्रथमाध्यायद्वितीयपादात् तृतीयाध्यायपर्यन्तं व्याख्यानरूपम् । १३ खण्डों में सम्पूर्ण । काशी ३० ० ०

२९६५ **तन्त्रवार्त्तिकावशेषः**—टुप्टीका-कुमारिलभट्टपादविरचिता । श्रीशबरस्वामिभाष्यचतुर्थाध्यायपर्यंतम् । व्याख्यानरूपम् । ४ खण्डों में सम्पूर्ण । बनारस ४ ० ०

2966 Tantra Vartika of Kumarila Bhatta—Translated into English by Ganga Nath Jha, M. A. Calcutta 25 0 0

२९६७ **निराकारमीमांसादर्शन**—महर्षिगुरुनानकदेवप्रणीतश्रीस्वामिकेशवाचार्यविरचितकेशवभाष्य-स्वरूपसूरिविरचितस्वरूपदीपिकाख्यसंस्कृतव्याख्या-श्रीस्वामिशङ्करानन्दविरचित-भाषाभावार्थदीपिकालंकृता । हरिद्वार ५ ० ०

२९६८ **न्यायबिन्दुः**—पूर्वमीमांसाया अधिकरणार्थसंग्राहको ग्रन्थः । वैद्यनाथकृतटिप्पणीसहितः । मुम्बई १ ४ ०

२९६९ **न्यायरत्नमाला**—पार्थसारथिमिश्रकृता । २ खंडों में सम्पूर्ण । काशी ३ ० ०

२९७० **न्यायरत्नमाला**—पार्थसारथिमिश्रकृता, रामानुजाचार्यकृतया नायकरत्नाख्यव्याख्यया सहिता । With Introduction in English. बड़ोदा ४ ८ ०

२९७१ **न्यायसुधा**—भट्टसोमेश्वरकृता । तन्त्रवार्त्तिकव्याख्या । श्रीमद्भट्टसोमेश्वरकृता । प्रथमाध्यायद्वितीयपादमारभ्य तृतीयाध्यायसप्तमाष्टमपादपर्यन्तं मुद्रिता । १६ खण्डाः । काशी २४ ० ०

२९७२ **पूर्वमीमांसाधिकरणकौमुदी**—महामहोपाध्यायपं० रामकृष्णभट्टाचार्यविरचिता । नेने इत्युपाख्यगोपालशास्त्रिणा परिशिष्टाधिकरणनिरूपणपूर्वकं टिप्पणया परिष्कृतः । बनारस १ ८ ०

२९७३ **प्रकरणपञ्चिका**—शालिकनाथमिश्रकृता । प्रभाकरमतानुसारि मीमांसादर्शनम् । सम्पूर्णम् । तथा मीमांसासारसंग्रहः शंकरभट्टकृतः । बनारस ५ ० ०

२९७४ प्रभाकरविजयः—नन्दीश्वरविरचितः। कलकत्ता १ ४ ०

2975 Bṛhati (बृहती)—Of Prabhakara—Edited by S. K. Ramanatha Shastri. 2 parts. Madras 8 8 0

२९७६ बृहती—प्रभाकरमिश्रकृता शबरभाष्यव्याख्या। म० म० मिश्रशालिकनाथ-विरचितया 'ऋजुविमलया' विभूषिता। खण्डाः ३। काशी ४ ८ ०

२९७७ भाट्टचिन्तामणिः—(भाट्टदीपिकाव्याख्या) श्रीवाञ्छेश्वरयज्वभिः प्रणीतः। अधिकरणानुक्रमणिकया, सूत्रानुक्रमणिकया, उद्धृतवाक्यानामाकरसूच्या च सहितः। मद्रास ६ १२ ०

२९७८ भाट्टचिन्तामणिः—म० म० श्रीगागाभट्टेति प्रसिद्धश्रीविश्वेश्वरभट्टकृतः। अस्य प्रथमाध्याये प्रथमः पादो मुद्रितः। अयं जैमिनीयसूत्राणां विस्तृतव्याख्यानरूपः। २ खण्डौ। ३), प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादमारभ्य समाप्तिपर्यन्तः। काशी १ ८ ०

२९७९ भाट्टदीपिका—महामहोपाध्यायखण्डदेवकृता। शम्भुभट्टप्रणीतप्रभावली-व्याख्यासहिता (निर्वीतान्तो भागः)। ६ ० ०

२९८० भाट्टभाषाप्रकाशः—नारायणतीर्थमुनिकृतः। ० १० ०

२९८१ भाट्टरहस्यम्—मूलमात्र। काञ्ची १ १० ०

२९८२ भावनाविवेकः—मण्डनमिश्रविरचितः। उम्बेकभट्टकृतव्याख्योपेतः। Edited with Introduction by Dr. Ganga Nath Jha, M. A., D. Litt. 2 parts. Allahabad 1 8 0

2983 Mānameyodaya (मानमेयोदय)—An Elementary Treatise on the Mīmāṃsā. By Nārāyaṇa. Edited with an English translation by C. Kunhan Raja and S. S. Surya Narayana Shastri. Madras 5 5 0

२९८४ मीमांसार्थप्रकाशः—लौगाक्षिभट्टकेशवविरचितः। वेङ्कटरङ्गनाथस्वामिना सूची-टिप्पण्यादिविन्यासपूर्वकं संशोधितः। मद्रास १ ० ०

२९८५ मीमांसाकौस्तुभः—खण्डदेवविरचितः। भागः १ १।=), भागः २ १॥=), भागः ४ १॥), भागः ५ मद्रास १ ८ ०

२९८६ मीमांसाकौस्तुभः—खण्डदेवकृतः। सूत्रोपरि काचन विस्तृता टीका प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादात्मको भागः। ३ खंडाः ४॥), द्वितीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ, तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयतृतीयपादात्मकोऽयं भागः। ४ खंडाः ६), प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः, द्वितीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादात्मकोऽयं भागः। ५ खण्ड काशी ७ ८ ०

२९८७ मीमांसानुक्रमणिका—मण्डनमिश्रकृतः। महामहोपाध्यायगङ्गानाथझा-शर्मणा मैथिलेन रचितेन मीमांसामण्डनेन मण्डितः। सम्पूर्णा। ५ खण्डाः। काशी ७ ८ ०

२९८८ मीमांसान्यायप्रकाशः—आपदेवकृतः। श्रीचिन्नस्वामिशास्त्रिकृतया सार-विवेचिन्या व्याख्यया सहितः। बनारस २ ० ०

२९८९ **मीमांसान्यायप्रकाशः**—आपदेवकृतः। अनन्तदेवविरचितया "भाट्टालङ्कारा" ख्यव्याख्यया सहितः। ५ खण्ड। सम्पूर्ण। बनारस २ ८ ०

२९९० **मीमांसान्यायप्रकाशः** (आपोदेवी)—आपदेवकृतः। महामहोपाध्यायाभ्यंकरोपाह्ववासुदेवशास्त्रिविरचितया प्रभाख्यया व्याख्यया समेतः। [In the Introduction, which is also in Sanskrit, the commentator has given a history of the Mīmāṃsā school from the earliest to the latest period.] 1937 Poona 3 8 0

२९९१ **मीमांसान्यायप्रकाशः** (आपोदेवी)— मुम्बई ० ८ ०

2992 Mīmāṃsā Nyāya Prakāśa—with Mīmāṃsā Sudhāswāda dy Tarkārṇava Panditaratnam T. Vīrarāghavāchārya Siromaṇi. Madras 4 0 0

2993 Mīmāṃsā Nyāya Prakāśa—or Āpadevī : a treatise on the Mīmāṃsā system by Āpadeva. Translated into English, with an Introduction, transliterated Sanskrit text, and glossarial index by Franklin Edgerton. Foreign 13 8 0

२९९४ **मीमांसापरिभाषा** (कृष्णयज्वकृता)—म० म० पर्वतीयनित्यानन्दपन्तविरचितया लघुटिप्पण्या सहिता। ० २ ०

२९९५ **मीमांसापरिभाषा** (कृष्णयज्वकृता)—मूलमात्र। मुम्बई ० ४ ०

२९९६ **मीमांसापरिभाषा**—कृष्णयज्वकृता श्रीगंगानाथझाशर्मणा परिशोधिता। बनारस ० ६ ०

२९९७ **मीमांसापरिभाषा**—कृष्णयज्वकृता। श्रीयुक्तचण्डीचरणतर्कतीर्थ-भट्टाचार्येण स्वकृतार्थप्रसाधिनीटीकया समलंकृत्य सम्पादिता। कलकत्ता ० १० ०

२९९८ **मीमांसापादुका**— काञ्ची ० ६ ०

२९९९ **मीमांसाबालप्रकाशः** (भट्टशंकरकृतः)—२ खण्डों में सम्पूर्ण। बनारस ३ ० ०

३००० **मीमांसाशास्त्रसार**—अनन्तकृष्णशास्त्रिकृत। निवीतान्तमीमांसासिद्धान्ततत्त्वार्थप्रकाशः। मुम्बई १ ० ०

३००१ **मीमांसाश्लोकवार्त्तिकम्**—सुचरितमिश्रकृत 'काशिका' व्याख्यासहितम् भागद्वयम्। ४ ८ ०

३००२ **मीमांसासूत्रपाठः**—महर्षिजैमिनिकृतः। बनारस ० ६ ०

३००३ **मीमांसादर्शनम्**—जैमिनिप्रणीतम्। ६ भागाः। सतन्त्रवार्त्तिकशबरभाष्योपेतम्। पूना २५ ६ ०

३००४ **मीमांसादर्शनम्**—जैमिनिकृतम्। शबरस्वामिविरचितभाष्यसहितम् संपूर्णम्। कलकत्ता १० ० ०

३००५ जैमिनीयसूत्रवृत्तिः—सुबोधिनीनामिका श्रीयुतरामेश्वरसूरिविरचिता । बनारस ५ ८ ०

3006 Mīmāṃsā Sūtras of Jaimini—with English translation by Pt. Mohan Lal Sandal, M. A. LL. B. Allahabad 23 0 0

३००७ विधिरसायनम्—अप्पयदीक्षितकृतम् । २ खण्डों में सम्पूर्ण । बनारस ३ ० ०

३००८ विधिविवेकः—श्रीमदाचार्यमण्डनमिश्रविरचितः । काशी ३ १२ ०

३००९ विधिस्वरूपविचारः—गदाधरकृतः । बड़ौदा ० ५ ०

३०१० वेदप्रकाशः—सत्यज्ञानानन्दतीर्थकृतः । पूर्वमीमांसाप्रकरणग्रन्थः । सम्पूर्णः १ ८ ०

3011 Śabara Bhāshya on the Mīmāṃsā Sūtras of Jaimini—translated into English by M. M. Dr. Ganga-Nath Jha. In 3 Vols. Baroda 48 0 0

३०१२ शास्त्रदीपिका—पार्थसारथिमिश्रकृता । पं० रामकृष्णविरचितयुक्तिस्नेहप्रपूरणाख्यव्याख्यया सहिता । तर्कपादः । ५ खण्डाः । काशी १ ८ ०

३०१३ शास्त्रदीपिका—पार्थसारथिमिश्रकृता । पं० सुदर्शनाचार्य-शास्त्रिप्रणीतप्रकाशाख्यव्याख्यासहितः तर्कपादः । ५ ० ०

३०१४ शास्त्रदीपिका—पार्थसारथिमिश्रकृता । प्रथमस्तर्कपादः । प्रत्यधिकरणविभक्तन्यायमालायुतः । सोमनाथप्रणीतमयूखमालिकाव्याख्यासहितः । रामकृष्णप्रणीतयुक्तिस्नेहप्रपूरणीसिद्धान्तचन्द्रिकाव्याख्यायुतः, स्वोपज्ञसिद्धान्तचन्द्रिकागूढार्थविवरणसहितश्च । मुम्बई ८ ० ०

३०१५ श्लोकवार्त्तिकम्—श्रीमत्कुमारिलभट्टपादविरचितम् । श्रीपार्थसारथिमिश्रप्रणीतया न्यायरत्नाकराख्यया व्याख्यया समलंकृतम् । १० खण्डों में सम्पूर्ण । बनारस १५ ० ०

३०१६ श्लोकवार्त्तिकम्—सुचरितमिश्रकृतकाशिकाव्याख्यासहितम् । २ भागौ । मद्रास ४ ८ ०

3017 Ślokavārtikam—Translated from original Sanskrit with extracts from the commentaries of Sucharita Mishra (the Kāśikā) and Pārthasārathi Mishra (the Nyāya-Ratnākara) by Ganga Nath Jha, M. A. Calcutta 10 0 0

३०१८ संकर्षकांड—जैमिनिप्रणीतभास्करभट्टकृतचन्द्रिकाव्याख्या तथा श्रीराममिश्रकृतटिप्पणीसहित । बनारस १ ४ ०

३०१९ सेश्वरमीमांसा—मूलमात्र । काञ्ची २ ० ०

3020 Brief Sketch of the Pūrva Mīmāṇsā System— By P. V. Kane, M. A. LL. M. Poona

3021 Introduction to the Mīmāṃsā Sūtras—By Pt. Mohan Lal Sandal. Allahabad 4 8 0

3022 Karma Mīmāṃsā—By A. B. Keith. Foreign 1 6 0

3023 Picture Album of the Practical Apparatus for the Scientific study of Pūrva-Mīmāṃsā. Poona 2 8 0

सांख्य-ग्रन्थाः

३०२४ Sāṃkhya Karika studied in the light of the Chinese Version. By S. S. Sūryanārāyaṇa Shastri. Madras 1 2 0

3025 Sāṃkhya Karika of Ishvara Krishna—Sanskrit text with an introduction translation and notes in English by S. S. Surya Narayna. Shastri. Madras 2 4 0

३०२६ सांख्यकारिका—गौडपादाचार्यविरचितभाष्यसहिता । बनारस ।-) कलकत्ता ० ६ ०

3027 Sāṃkhya Kārikā (सांख्यकारिका गौडपादभाष्यसहिताः)— with the commentary of Gauḍapādāchārya. Critically edited with introduction, translation and notes by Har Dutt Sharma, M. A., Ph. D, 2 0 0

३०२८ सांख्यकारिका—ईश्वरकृष्णविरचिता । माठराचार्यविरचितया माठरवृत्त्यासहिता । १ ८ ०

3029 An Essay on Māṭhara-Vritti (Commentary on Sāṅkhya Kārikas by Māṭhara)— Poona 1 0 0

३०३० सांख्यकारिका—चन्द्रिकाटीकासहिता । बनारस १ ० ०

३०३१ सांख्यसप्ततिः—श्रीशंकराचार्यविरचितजयमङ्गलानाम्नीटीका । Edited by Prof. H. Sharma, M. A., Ph. D., with an introduction by Gopi Nath Kaviraj, M. A. Calcutta 2 0 0

३०३२ युक्तिदीपिका (सांख्यसप्ततिविवरणम्)—अदृष्टपूर्वप्राचीनग्रन्थोऽयं विदुषां समीपे प्रथममधुनैवोपस्थाप्यते । प्राचीनशैल्या, विचारनैपुण्येन तथा केषांचित् प्राचीनानामश्रुतपूर्वाणां सांख्याचार्याणां मतोल्लेखदर्शनेन चायं ग्रन्थोऽपूर्वः । कलकत्ता ५ ० ०

[Critically edited for the first time, from original manuscripts by Phulinbehari Chakravarty M. A. It is written in a style remeniscent of ancient writers like Śabara

Svāmin &c. It is full of quotations from very ancient Sankhya teachers, whom we know very little.]

३०३३ **सांख्यकारिका** (ईश्वरकृष्णविरचिता)—श्रीगुरुमण्डलसंस्थापकाचार्यनिखिलशास्त्रनिष्णातपूज्यपादस्वामिश्री १०८बालरामोदासीनविरचिताभ्यां विद्वत्तोषिणीव्याख्यातत्कृतटिप्पणीभ्यां समलंकृतया निखिलतन्त्रस्वतन्त्रप्रतिभश्रीमद्वाचस्पतिमिश्रविरचितया सांख्यतत्त्वकौमुद्या विभूषिता । मुम्बई २ ० ०

३०३४ **सांख्यतत्त्वकौमुदी**—षड्दर्शनकृद्वाचस्पतिमिश्रविरचिता । पण्डितराजश्रीराजेश्वरशास्त्रिणा कृतया विषमस्थलटिप्पण्या सहिता । बनारस ० १२ ०

३०३५ **सांख्यतत्त्वकौमुदी**—वाचस्पतिमिश्रप्रणीता ईश्वरकृष्णकारिकाव्याख्या । सुषमाख्यकौमुदीव्याख्यासमलङ्कृता । काशी १ ६ ०

३०३६ **सांख्यतत्त्वकौमुदी**—ईश्वरकृष्णस्य सांख्यकारिका रघुनाथस्य सांख्यतत्त्वविलासोपोद्घातसमुपेता । रमेशचन्द्रतर्कसांख्यवेदान्तमीमांसातीर्थेन सम्पादिता । १ ८ ०

३०३७ **सांख्यतत्त्वकौमुदी**—श्रीवाचस्पतिमिश्रविरचिता । पण्डितराङ्वंशीधरमिश्रविरचित "तत्त्वविभाकर" टीकोपेता । ५ खण्डेषु सम्पूर्णा । बनारस २ ८ ०

३०३८ **तत्त्वकौमुदी** (सांख्य)—वाचस्पतिमिश्रकृता ईश्वरकृष्णप्रणीतसांख्यकारिकाटीका । विस्तृतोपोद्घातपाठान्तरटिप्पण्यादिभिः म० म० डा० गंगानाथझा तथा डा० हरदत्तशर्मभ्यां समलंकृता । पूना २ ० ०

3039 Tattva-Kaumudī (Sāṃkhya)—तत्त्वकौमुदी (सांख्य), वाचस्पतिमिश्रकृता with Introduction, translation and Notes in English and text and Footnotes on Kārikās, in Devanāgarī by M. M. Dr. Ganganatha Jha and Dr. Har Dutt Sharmā. Poona 3 0 0

3040 Sāṅkhya-Tattva-Kaumudī of Vāchaspati Miśra. with an English translation of the Sanskrit text by Ganga Nath Jha, M. A. Bombay 2 0 0

३०४१ **सांख्यतत्त्वकौमुदी**—वाचस्पतिमिश्रकृता । पं० तारानाथतर्कवाचस्पतिकृतव्याख्यासहिता । कलकत्ता २ ० ०

३०४२ **सांख्यदर्शन**—(ईश्वरकृष्णीय सांख्यकारिका) पण्डित सीतारम शास्त्रिकृत भाषा टीका सहित । ० ६ ०

३०४३ **सांख्यतत्त्वसुबोधिनी**—भाषाटीका समेत । लखनऊ ० ५ ०

३०४४ **साङ्ख्यतत्त्वालोकः**—सांख्ययोगाचार्यश्रीमद्धरिहरानन्द-आरण्यविरचितः । [The book has proceeded from the pen of one of the foremost Sāṅkhya teachers of modern India. The author himself is a practical Yogī. The book represents the

system consistently and in an integral manner. In the Introduction, which is in English. a synopsis of the book is given. In the appendix, the technical terms are explained in Sanskrit and English. Allahabad 1 6 0

३०४५ सांख्यदर्शन—मूलमात्र। अतिस्थूलाक्षर। ० ४ ०

३०४६ सांख्यसूत्रपाठः—सांख्यशास्त्र मूल। बनारस ० ३ ०

३०४७ सांख्यसूत्राणि सांख्यकारिकाश्च (मूलमात्राणि पाठान्तरसहितानि च)— पूना ० ८ ०

३०४८ सांख्यदर्शनम्—हिन्दी भाषानुवादसहित। मथुरा १ ० ०

३०४९ सांख्यदर्शनम्—भाषाटीका समेत। मुम्बई १ ८ ०

३०५० सांख्यदर्शनम्—श्रीमद्विज्ञानभिक्षुकृतसांख्यप्रवचनभाष्यसहितम्। बनारस २ ० ०

३०५१ सांख्यदर्शनम्—विज्ञानभिक्षुकृत सांख्यप्रवचन भाष्यसहित। कलकत्ता २ ० ०

३०५२ सांख्यसूत्रम्—अनिरुद्धकृतवृत्त्या म० म० श्रीप्रमथनाथतर्कभूषणकृतविस्तृतटीकया च सहितम्। कलकत्ता १ ४ ०

3053 Sāṃkhya Sūtras of Pancaśikha and other ancient sages—Compiled and annotated in Sanskrit by Sānkhya-Yogāchārya Śrīmat Swāmi Hariharānanda Araṇya. With a glossary, introduction, translation, notes and Index in English, Edited by Jajñeśwar Ghosh, M. A., Ph. D., Chinsura. 1 0 0

[Students of Sāṅkhya are generally not aware of the existance of these sūtras. The book will add to their information.]

३०५४ सांख्यसंग्रहः—अत्र १ षिमानन्द [क्षेमेन्द्र] विरचितं सांख्यतत्त्वविवेचनम्। २ भावागणेशकृतं तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम्। ३ संक्षिप्तकपिलसूत्रवृत्तिः सर्वोपकारिणी ४ सांख्यसूत्रविवरणम्। ५ तत्त्वसमाससूत्रवृत्तिः। ६ भट्टकेशवविरचिता सांख्यतत्त्वप्रदीपिका, ७ वैकुण्ठयतिशिष्यकविराजयतिविरचितः सांख्यतत्त्वप्रदीपः। ८ कृष्णमित्रमिश्रविरचिता सांख्यमीमांसा। ९ सांख्यपरिभाषा इत्यादयो ग्रन्थाः संगृहीता वर्तन्त इति। सर्वे एते समाससूत्रानुसारिणो निबन्धाः। खण्डद्वये सम्पूर्णः। ३ ० ०

३०५५ सांख्यसारः—विज्ञानभिक्षुकृतः। मूलमात्र। कलकत्ता ० ४ ०

३०५६ सांख्यसूत्रवैदिकवृत्तिः—स्वामिहरिप्रसादकृतटीकोपेता। मुम्बई १ ० ०

3057 Critical Study of the Sāṅkhya System on the lines of the Sāṅkhya-Kārikā, Sāṅkhya Sūtras and their commentaries and texts of सांख्यसूत्रs and सांख्यकारिका, by Prof. Sovane V. V. 1 0 0

3058 Sāṅkhya and Modern Thought—By J. Ghosh, M. A., Ph. D., Calcutta 6 0 0

3059 Sankhya Conception of Personality By Abhaya Kumar Majumdar. With a foreword by S. Radha Krishnan 2 8 0

3060 Sāṅkhya or the Theory of Reality—A critical and constructive study of Iśvara Kṛṣṇa's Sāṅkhya-Kārika. By J. N. Mukerji, M. A. Calcutta 2 8 0

3061 Sāṅkhya System—or a History of the Sāṅkhya Philosophy, by A. B. Keith. Bound 2 0 0

मिश्रित-दार्शनिक-ग्रन्थाः

३०६२ अवैदिकदर्शनसंग्रहः—गङ्गाधरवाजपेययाजिकृतः। मद्रास ० ३ ०

३०६३ उपेन्द्रविज्ञानसूत्रम् (स्वोपज्ञभाष्यसहितम्)—श्री पं० उपेन्द्रदत्तपाण्डेयकृतम्। Edited with an Introduction in English by Dr. Mangal Deva Shastri, M. A., D. Phil. (Oxon.). It is a modern work on Philosophy that does not belong to any of the established schools. Allahabad 1 0 0

३०६४ ऐकशास्त्र्य-मीमांसा— काञ्ची ० ६ ०

३०६५ गणकारिका—A work on philosophy (Pāshupata School) by Bhāsarvajña, who lived in the 2nd half of the 10th century, edited by C. D. Dalal. Baroda 1 4 0

३०६६ द्वादशदर्शनसोपानावलि (मोक्षमन्दिरस्य)—हसूरकरोपाह्वश्रीपादशास्त्रीकृता। इन्दौर ३ ० ०

३०६७ न्यायकोशः—सकलशास्त्रोपकारकन्यायादिशास्त्रीयपदार्थप्रकाशकः। महामहोपाध्याय-भीमाचार्येण विरचितः। Dictionary of Technical Terms of Indian Philosophy. पूना १५ ० ०

३०६८ भुवनेशलौकिकन्यायसाहस्री—पं० ठाकुरदत्तकृता। व्याकरणमहाभाष्य, वेदान्तदर्शन; महाकाव्य, भारतादि आर्ष प्रामाणिक ग्रन्थों से सोदाहरण उद्धरण। मुम्बई २ ८ ०

३०६९ यथार्थदर्शन—By Pt. Vidyadhar Shastri. M. A. Churu 0 8 0

३०७० लक्षणसंग्रहः—भिक्षुगौरीशंकरेण संगृहीतः। पुस्तकेऽस्मिन् दार्शनिकविषयाणां तथान्यान्यसमस्तशास्त्रीयपदार्थानामकारादिक्रमेण ३२३१ लक्षणान्येकत्रितानि।
काशी ० ४ ०

३०७१ लौकिकन्यायाञ्जलिः—३ भागाः। A Handful of Popular Maxims. By Colonel G. A. Jacob, 3 parts. Bombay 2 8 0

३०७२ विद्वन्मोदतरङ्गिणी—म० म० वामदेवचिरञ्जीविभट्टाचार्यरचितगद्यपद्यविभूषिता। इसमें सब दर्शनशास्त्रों तथा सर्वसम्प्रदायों का सिद्धान्त दर्शाया है।
मुम्बई ० ४ ०

३०७३ षड्दर्शन—मूल। पातञ्जलयोग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा, वेदान्तदर्शन एकत्र)। मुम्बई १ ८ ०

३०७४ षड्दर्शनसमुच्चयः—श्रीहरिभद्रसूरिविरचितः। मणिभद्रकृतलघुवृत्तिसहितः।
काशी १ ८ ०

३०७५ षड्दर्शनसूत्राणि—जैमिनि, गोतम, कणाद, कपिल, पतञ्जलि, व्यासप्रणीतानि। १ ४ ०

३०७६ सद्विद्याविजयः—महाचार्यकृत। मद्रास १ ११ ०

३०७७ सर्वसिद्धान्तसंग्रहः—शंकराचार्यविरचित। Critically edited, translated and annotated by Prem Sundar Bose M. A. 2 parts. Calcutta 1 8 0

३०७८ सर्वदर्शनकौमुदी—माधवसरस्वतीकृता। १ ० ०

३०७९ सर्वदर्शनशिरोमणिः— काशी ० ४ ०

३०८० सर्वदर्शनसंग्रहः—श्रीमत्सायणमाधवाचार्यप्रणीतश्रीवासुदेवशास्त्रिअभ्यंकरविरचितया दर्शनाङ्कुराभिधया व्याख्यया समेतः। पूना १० ० ०

३०८१ सर्वदर्शनसंग्रहः—मूल। माधवाचार्यकृतः। कलकत्ता १ ४ ०

३०८२ सर्वदर्शनसंग्रहः—माधवाचार्यप्रणीतः। पूना २ ० ०

३०८३ सर्वदर्शनसंग्रहः—गोविन्दाचार्यकृत विशद हिन्दीभाषाटीकासहित। इसमें चार्वाक, बौद्ध, आर्हतदर्शन, रामानुजदर्शनादि सब दर्शनों के सिद्धान्त जितलाए हैं। दार्शनिकों को अतीव उपयोगी है। मुम्बई ३ ० ०

3084 Sarvadarśana Saṅgraha—English translation by E. B. Cowell and A. F. Gough. London 10 0 0

३०८५ सर्वमतसंग्रहः— मद्रास १ ४ ०

३०८६ सर्वशिरोमणिसिद्धान्तसार—श्रीआनन्दमंगलजीकृत। भाषा।
मुम्बई २ ० ०

3087 Dederot's Early Philosophical Works—Translated and edited by Margaret Jourdain. London 4 0 0

3088 Dārśanika Mahā Pravachana. By Swami Jnānānand. Narasimha Bhavanam. 2 8 0

3089 Hindu Mysticism—Six lectures by Prof. S. N. Dasgupta, M. A., Ph. D. London 10 0 0

3090 Hindu Philosophy by Dhirendra Nath Paul. Calcutta 1 8 0

3091 Hindu Realism— Kashmir 3 0 0

3092 History of Indian Philosophy—(In eight volumes) Vol. II. The Creative Period. By S. K. Belvalkar, M. A., Ph. D. and R. D. Ranade, M. A. Poona 15 0 0

3093 History of Pre-Buddistic Indian Philosophy—By B. M. Barua, M. A, (Cal.), D. Lit. (Lond.) 10 8 0

3094 Indian Philosophy—By S. Radhakrishnan. 2 Vols. Vol I. Rs 21/-/-. Vol II— Bombay 25 0 0

3095 Indische Philosophie—Von Otto Strauss. Foreign 5 8 0

3096 Intelligent Man' Guide to Indian Philosophy—By Manu Bhai C. Pandya with a foreword by M. M. Dr. Ganga Nath Jha. Bombay 11 8 0

3097 Philosophy of Ravindra Nath Tagore—By Prof. S. Radha Krishnan. London 3 8 0

3098 Philosophical Discussions—Part I. By R. V. Khedkar. Kolhapnr 1 8 0

3099 Philosophy of Ancient India—By Richard Garbe. Chicago 2 8 0

3100 Outlines of Indian Philosophy—By P. T. Srinivas Iyangar. Madras 1 4 0

3101 Philosophy of Hindu Sadhana—By Nalinikanta Brahma, M. A., Ph. D., London 8 8 0

3102 Science and Philosophy of Religion—A comparative study of Sāṅkhya, Vedānta and other systems of thought, by Swami Vivekanand 0 12 0

व्याकरण-ग्रन्थाः

३१०३ अनुवाददीपिका—पं० सीतलप्रसादविरचित। बनारस ० १२ ०

३१०४ **अनुवादप्रभा**—अनुवाद सिखाने वाली सबसे बढ़िया पुस्तक। पं० गौरी-शंकरशास्त्रिणा निर्मिता। लाहौर ० १२ ०

३१०५ **अनुवादभानु**—A manual of Sanskrit Composition by Rekhal Dass, Vidyaratna. Hindi translation by Pt. Krishna Datta. Lahore. 0 8 0

३१०६ **अनेकार्थसंग्रहः**—श्रीहेमचन्द्राचार्यप्रणीतः। श्रीमहेन्द्रसूरिविरचितटीकासार-सहितः। Edited with various readings by Theodore Zachariae. 15 0 0

३१०७ **अपभ्रंशपाठावलि**—मूलपाठ की संस्कृतछाया, अपभ्रंश व्याकरण, संस्कृत-निवेदन, गुजराती उपोद्घात, टिप्पणी, शब्दकोषसहित। [This is an excellent book of the Apabhraṃśa]. Editid by M. C. Modi 3 4 0

३१०८ **अर्थप्रकाशिका**—भाषाभाष्य। व्याकरण पढ़ने वालों को अत्युपयोगी है। मुम्बई ० ८ ०

3109 Ardha Māgadhi Grammar for Beginners, by Prof. V. M. Shah. Ahmedabad 0 12 0

३११० **अष्टाध्यायी** (पञ्चपाठी)—गणपाठ, धातुपाठ, वार्त्तिकपाठ और लिंगानु-शासन, विद्यार्थियों को परमोपयोगी है। सजिल्द। मुम्बई ० १२ ०

३१११ **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**—वार्तिकगणपाठ-धातुपाठ-पाणिनीयशिक्षा-परिभाषा-पाठसहितः। मद्रास १ ० ०

३११२ **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**—इसके पढ़ने से कौमुदी का जल्दी पठन होता है। ० ६ ०

३११३ **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**— काशी ० ३ ०

३११४ **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**—श्रीपाणिनिमहामुनिविरचितः। सरलाख्यटीका-न्वितः— ॥) सजिल्द ० १० ०

३११५ **अष्टाध्यायी**—श्रीपाणिनिमुनिप्रणीता। श्रीजीवारामोपाध्यायप्रणीतया पाणि-निसूत्रवृत्त्या समेता। २ भाग। मुरादाबाद ६ ० ०

3116 Pāṇini's Grammatik—Or the Grammar of Pāṇini. Text in Devanāgarī with German translation. Alphabetical word Index of Sūtras, Gaṇapaṭha and Dhatupaṭha, &c, &c, by O. Bohtlingk. 25 0 0

3117 Index to Pāṇini's Sūtras, Dhātupaṭha, &c. Allahabad 1 8 0

३११८ **आख्यातचन्द्रिका**—नामक्रियाकोशः श्रीभट्टमल्लविरचितः। वेंकटरङ्गनाथ-स्वामिना पदसूच्यादिविन्यासपूर्वकं संशोधितः। काशी १ ८ ०

३११९ आंगलसंस्कृतानुवादमहोदधि—अलीगढ़ । प्रथम भाग ० ६ ०
द्वितिय भाग ० ६ ०

३१२० आर्ष पाणिनीयं व्याकरणम्—उणादिपाठ, पाणिनीयशिक्षा, गणपाठ, धातुपाठ, लिंगानुशासन, फिट्सूत्र, परिभाषापाठसहितम् । अत्र पाणिनीयाष्टकोणादिपाठलिङ्गानुशासनफिट्सूत्राणामुदाहरणसूच्योऽप्यन्ते निवेशिता अनेनायं ग्रन्थ अतीवोपयोगार्हो जातः ।
पटना २ १२ ०

The book is very useful as indices of examples of sūtras of Ashṭādhyāyī, Uṇādipāṭha, Lingānuśāsana and Phitsūtrapāṭha have for the first time, been given here at the end. 2 12 0

३१२१ आशुबोधव्याकरण—पं० तारानाथसंकलित । कलकत्ता २ ० ०

३१२२ उणादिसूत्रम्—भोजकृतं दण्डनाथनारायणकृतवृत्तिसमेतम । कातन्त्र-उणादिसूत्राणि दुर्गसिंहवृत्तिसमेतानि च। Edited by T. R. Chintamani, M. A. Ph. D. Madras. Part I. 3/6/0. Part II. 2/13/0. Part III. 3 6 0

३१२३ उणादिसूत्रसटीक—उज्ज्वलदत्तविरचित वृत्तिसहित ।
कलकत्ता २ ० ०

3124 Uṇādigaṇasūtra of Hema Chandra—With the Author's own commentary. Edited by John Kirste.
Bombay 12 0 0

३१२५ उत्तरपद्मावलिः— मुम्बई ० ४ ०

३१२६ उत्तरपद्मावलिः—सपरिष्कृता । काशी ० ४ ०

३१२७ उपक्रमपाठावलिः—A Sanskrit First Reader.
Madras 0 10 0

३१२८ उपसर्गवर्गः—महादेवभट्टाचार्यविरचितः । वेङ्कटरङ्गनाथस्वामिना सूचीटिप्पण्यादिविन्यासपूर्वकं संशोधितः । बनारस ० ८ ०

३१२९ उपसर्गवृत्तिः—प्राद्युपसर्गार्थोदाहरण । बनारस ० १ ०

३१३० ऋजुपाठ—प्रथम भाग । ईश्वरचन्द्रविद्यासागरप्रणीत । जिसको मित्रविलासवर्मा शास्त्री ने व्याकरण, सन्धिच्छेद, शब्दार्थ आदि अनेक गुणों से सुशोभित किया ।
लाहौर ० ६ ०

३१३१ कलापव्याकरणं वा कातन्त्रम्—शर्ववर्मकृतं दुर्गसिंहकृतवृत्तिसहितम् ।
कलकत्ता २ ० ०

३१३२ कल्पलता—श्रीकृष्णमित्रकृता प्रौढमनोरमाव्याख्या 'अव्ययीभाव'पर्यन्ता ।
बनारस ३ ० ०

३१३३ **कल्पलता**—प्रौढमनोरमाव्याख्या अव्ययीभावान्ता। मद्रास २ ० ०

३१३४ **कविकल्पद्रुमः** (धातुपाठः)—वोपदेवरचितः। कलकत्ता ० ४ ०

३१३५ **कविकल्पद्रुम** (धातुपाठ)—दुर्गसिंहकृत टीका, वोपदेवीयकामधेनुटीका तथा नित्यरञ्जनशास्त्रिकृत टिप्पणी सहित। कलकत्ता १ ८ ०

३१३६ **कातन्त्रपञ्चसन्धि अर्थात् बालबोध**—पञ्चसन्धि भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ४ ०

३१३७ **कातन्त्ररूपमाला**—कलापव्याकरणस्य भावसेनत्रैविद्यकृता टीका। १ ८ ०

३१३८ **कारकचक्रम्**—टीकया टिप्पण्या च सहितम्। कलकत्ता १ ४ ०

३१३९ **कारकवादार्थ**—जयरामपण्डितप्रणीत। इस से शब्दबोध, व्याकरण, तथा न्यायसम्बन्धी शब्दज्ञान होता है। मुम्बई ० ३ ०

३१४० **कारकशब्दबोधप्रकरण**—राघवेन्द्राचार्यविरचित। मद्रास ० ३ ०

३१४१ **कारकशब्दरत्नप्रभा**—श्रीराघवेन्द्राचार्यविरचित। मद्रास ० ४ ०

३१४२ **कारकस्वरूपप्रकाश**—भाषा टीका सहित। इसके द्वारा काल द्रव्यादिक का शीघ्र बोध होता है। मुम्बई ० ८ ०

३१४३ **कारकोल्लासः**—भरतमल्लिकविरचितः। कलकत्ता ० २ ०

३१४४ **काशिका**—श्रीपाणिनिमुनिविरचितव्याकरणसूत्राणां वृत्तिः। विद्वद्वर-वामनजयादित्यविनिर्मिता। काशी ४ ८ ०

३१४५ **काशिका**—पाणिनीयव्याकरणसूत्रवृत्तिः। पण्डितवरजयादित्यविरचिता। पं० बालशास्त्रिणा परिशोधिता बनारस ४ ८ ०

३१४६ **काशिकाविवरणपञ्जिका** (न्यासापरनाम्नी)—श्रीबोधिसत्त्वदेशीयाचार्यश्रीजिनेन्द्रबुद्धिपादविरचिता। सम्पूर्ण। सजिल्द बंगाल २४ ० ०

3147 Kusumamālā (कुसुममाला)—By Apte. 2 parts. Bombay 2 4 0

३१४८ **कौमुदीकल्पलतिका**—पंडितराजश्रीवेणीमाधवशुक्लकृता। काशी १ ८ ०

3149 Kauhali-Sikṣā—Criticallay edited for the first time with notes. By Sadhu Ram, M. A. 1 0 0

३१५० **गणरत्नमहोदधिः**—श्रीमत्पण्डितवर्धमानकविना पद्यात्मना संगृहीतो व्याख्यातश्च। सजिल्द। इटावा २ ० ०

३१५१ **गीर्वाणभाषा**—I Reader -/6/-. II Reader -/9-. III Reader. Madras 0 9 0

३१५२ **चन्द्रिका**—श्रीराघवेन्द्राचार्यविरचिता लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या। श्रीकृष्णाचार्यसम्पादिता। तंजौर ० १२ ०

3153 Cāndra-Vritti—Der Original-Kommentar Candragomin's zu seinem Grammatischen Sutra. Herausgegeban. Von Dr. Bruno Liebich. Leipzig 14 0 0

३१५४ चान्द्रव्याकरण (Chāndra-Vyākaraṇa)—Die Grammatik Des Chandragomin. Sūtra, Uṇādi, Dhātupāṭha. Herausgegeben. Von Bruno Liebich, Dr. Phil. Leipzig 18 0 0

३१५५ चित्रप्रभा—श्रीहरिदीक्षितविरचितस्य लघुशब्दरत्नस्य व्याख्या। भागवतोपनामकपण्डितवरश्रीहरिशास्त्रिविरचिता। महामहोपाध्यायसुब्रह्मण्यशास्त्रिणा संशोध्य स्वकृतलघुटिप्पण्या संयोजिता। मद्रास ३ १२ ०

३१५६ जैनसिद्धान्तकौमुदी (अर्धमागधीप्राकृतव्याकरणम्)—शतावधानिजैनमुनिश्रीरत्नचन्द्रजीमहाराजकृतया स्वोपज्ञवृत्त्या सूत्रपाठेन, धातुपाठेन, सूत्रानुक्रमणिकया च सहिता। लाहौर १५ ० ०

[This is the first up-to-date and complete grammar of Ardhamāgadhī Prākrita published together with author's own Sanskrit commentary]

३१५७ जैनेन्द्रव्याकरणम्—देवनन्दिविरचितम्। अभयनन्दिसूरिविरचितया टीकया सहितम्। २ भाग। बनारस ४ ४ ०

3158 Tiṅantārṇava Taraṇī (तिङन्तार्णवतरणिः) - Or Sanskrit Verbs made easy by Dhanvada Gopala Krishnacharya Somayaji. 8 7 0

३१५९ धर्मदीपिका (जैनव्याकरणम्)—न्यायविशारदन्यायतीर्थोपपदविभूषितेन उपाध्यायश्रीमंगलविजयेन विरचिता। ३ ० ० 3-0-0

३१६० धातुरत्नाकरः—प्रणेता मुनिश्रीलावण्यविजयः। ६ भागाः। अहमदाबाद २२ ० ०

३१६१ धातुपाठः (पाणिनीयः)—पं० कनकलालठाकुरकृत टिप्पणीसहित। काशी ० ३ ०

३१६२ हैमधातुपारायणम्—श्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितं स्वकृतसंस्कृतटीकोपेतम्। १६ ० ०

Dhatupatha of Hemachandra—With the author's own commentary. Edited with roots in an alphabetical order and notes by Dr. J. Kirste. Text and commentary both in original Sanskrit. 16 0 0

३१६३ धातुमञ्जरी (धातुकोशसहिता)—महोपाध्याय-शिरोमणि-साहित्यनिपुणाद्यनेकबिरुदालंकृतेन के. एल. व्यासरायशास्त्रिणा विरचिता। मद्रास ० ८ ०

३१६४ **धातुरूपकल्पद्रुम**—गुरुनाथविद्यानिधिविरचित । संस्कृत भाषा में जितनी प्रचलित धातु हैं उनके समस्त रूप कृदन्त, तद्धितादि विस्तार से लिखे गए हैं । संस्कृत भाषा लिखने वा सीखने वाले को दुरूह धातुओं के रूप ज्ञान के लिये इससे उत्कृष्ट दूसरी पुस्तक आज तक नहीं लिखी है । अंग्रेजी में भी धातु का अर्थ उसके साथ ही लिख दिया गया है। सजिल्द । कलकत्ता ३ ० ०

३१६५ **धातुरूपचन्द्रिका** (धातुपाठसहिता)—Containing all irregular and noteworthy forms by P. V. Upadhyaya. Bound. Bombay 4 4 0

३१६६ **धातुरूपादर्श**—तारानाथतर्कवाचस्पतिभट्टाचार्य कृत । कलकत्ता १ ८ ०

३१६७ **धातुरूपार्णव**—इसमें सहज प्रचलित ३०० मुख्य २ धातुओं के रूप, गण, प्रक्रिया, और कृदन्त तक दिये हैं । अलीगढ़ ० ८ ०

३१६८ **धातुरूपावली**—लघुपाठसहित । इससे धातुओं का शीघ्र बोध होता है। मुम्बई ० ३ ०

३१६९ **धातुरूपावली** (बृहद्)—पं० टी० आर० कृष्णाचार्यविरचिता । मद्रास ४ ४ ०

३१७० **संस्कृतधात्वर्थ मञ्जूषा**—Edited with English and Hindi translations by Dr. R. S. R. D. Khanolkar. 2 0 0

३१७१ **धात्वर्थरूपमीमांसा**—पं० कालूरामशास्त्रिविरचिता । प्रथमो भागः । यस्यां भ्वादिगणपठितधातूनां रूपाण्यर्थाश्च स्पष्टीकृताः । प्रयाग ० ४ ०

३१७२ **धातुप्रदीप**—मैत्रेयरक्षित । बंगाल १ ८ ०

Dhātupradīpa—A work on Pāṇinīya Dhātupāṭha, i.e. on Sanskrit Verbal roots by Maitreya Rakṣita. Edited by S. C. Chakravarty Shastri, B. A. Bengal 1 8 0

३१७३ **धातुमञ्जरी**—धातुकोशसहिता । बम्बई ० ८ ०

३१७४ **नागेशाशयनिर्णयः**—परिभाषेन्दुशेखर की व्याख्या । भाग १-३ मद्रास १ २ ०

३१७५ **नागेशोक्तिप्रकाश**—लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या नपदान्तसूत्रपर्यन्ता । श्रीखुद्दीझाशर्मणा मैथिलेन विनिर्मिता । बनारस ५ ० ०

३१७६ **पंक्तिचन्द्रिका**—सिद्धान्तकौमुद्याः फक्किकांशानां विवृतिः । ३ भागों में सम्पूर्ण । भरतपुर २ २ ०

३१७७ **पदार्थदीपिका**—कौण्डभट्टकृत । काशी ० ८ ०

३१७८ **परमलघुमञ्जूषा**—टिप्पण्या टीकया च सहिता । काशी ० १२ ०

३१७९ **परिभाषापाठ**—मूल । बनारस ० १ ०

३१८० **परिभाषावृत्तिः**—अर्थात् परिभाषेन्दुशेखरादिव्याकरणपरिभाषाविषयग्रन्थानां

मूलभूतो ग्रन्थविशेषः । महामहोपाध्यायश्रीसीरदेवविरचितः । खण्डद्वये सम्पूर्णः ।

बनारस २ ० ०

३१८१ **परिभाषावृत्तिः**—श्रीनीलकंठदीक्षितविरचिता । मद्रास ० ८ ०

३१८२ **परिभाषाभास्करः** (परिभाषेन्दुशेखरखण्डरूपः)—श्रीशेषाद्रिनाथसुधिया विरचितः । मद्रास १ ४ ०

३१८३ **परिभाषेन्दुशेखरः**—श्रीनागेशभट्टेन विरचितः पायगुण्डेवैद्यनाथभट्टेन कृतया गदाख्यया व्याख्यया सहितः । मद्रास २ ८ ०

३१८४ **परिभाषेन्दुशेखरः**—महामहोपाध्यायश्रीनागेशभट्टरचितः । महामहोपाध्याय-भैरवमिश्रविरचितया भैरवीत्यपराख्यया परिभाषावृत्त्या सहितः । त्रिपाठिलक्ष्मणशर्मणा संगृहीततत्त्वेन सहितः । तेनैव च संशोधितः । बनारस २ ८ ०

३१८५ **परिभाषेन्दुशेखरः**—नागोजीभट्टकृतः । भैरवमिश्रकृतटीकासहितः ।

कलकत्ता १ ८ ०

३१८६ **परिभाषेन्दुशेखरः**—वैद्यनाथकृतगदाटीकासंवलितः । पूना २ ६ ०

३१८७ **परिष्कारदर्पणः** (शास्त्रार्थकलासहितः)—वैयाकरणशिरोमणिपण्डितराज-शुक्लश्रीवेणीमाधवशास्त्रिविरचितः । सटिप्पणः । काशी १ २ ०

३१८८ **पाणिनितन्त्रक्रोडपत्र**—२ भागों में । २ ० ०

३१८९ **पाणिनितन्त्रवादनक्षत्रमाला**—श्रीमदप्पयदीक्षितविरचिता । १ ८ ०

३१९० **पाणिनिव्याकरणे वादरत्नम्**—न्यायव्याकरणाचार्य-मीमांसकशिरोमणि-पण्डितसूर्यनारायणशुक्लेन विरचितम् । तत्र च न्यासपरिष्कारपरिशिष्टभेदेन प्रकरणत्रयम् । भागः १—१॥). भागः २— बनारस १ ४ ०

३१९१ **पाणिनीयप्रदीपः**—२ भागों में । श्रीरामलग्नत्रिपाठिना निर्मितः ।

बनारस १ ४ ०

३१९२ **पाणिनीयमिताक्षरा**—सर्वतंत्रस्वतंत्रश्रीमदन्नंभट्टप्रणीता । श्रीनिवासजगन्नाथ-स्वामिभिरार्यवरगुरुभिः तत्पुत्रेण आचार्यभद्रनाथस्वामिना च संशोधिता । दस खंडों में सम्पूर्ण ।

बनारस १५ ० ०

३१९३ **पाणिनीयशिक्षा**—पञ्जिकाभाष्यसहिता । बनारस ० २ ०

३१९४ **पाणिनीयशिक्षादिदशपाठसंग्रहः**—अर्थात् पाणिनीयशिक्षा भाष्यसहिता, अष्टाध्यायीसूत्रपाठः, गणपाठः, वार्त्तिकपाठः, परिभाषापाठः, धातुपाठः सटिप्पणः, लिङ्गानुशासनम्, उणादिसूत्रपाठः, फिट्सूत्रपाठः, नवाह्निकभाष्यवार्त्तिकपाठश्चैतद्दशपाठसंग्रहात्मकोऽयं ग्रन्थः ।

० ८ ०

३१९५ **पाणिनीयसूत्रपाठस्य तत्परिशिष्टानां च शब्दकोशः**—महामहोपाध्याय-वेदान्तवागीश-पाठकोपाह्वश्रीधरशास्त्रिणा तथा च विद्यानिधिचित्रावोपाह्वसिद्धेश्वरशास्त्रिणा संगृहीताः ।

पूना १२ ० ०

Word Index to Pāṇini's Sūtrapāṭha and Pari-

Śiṣṭas—Compiled by M. M. Vedānta Vāgīśa Shrīdhar Shastri Pathak and Vidya Nidhi Siddheshvar Shastri Chitrao. Poona 12 0 0

३१९६ पालिपाठमाला—Or a Graduated Pali Reader. By R. G. Bhadkamkar. Two parts. Bombay 3 0 0

३१९७ पालिपाठावली—प्रथम भाग। मूलपाठ। सम्पादक–मुनिजिनविजय। अहमदाबाद ० १४ ०

३१९८ पालिसद्दरूपावलि—Declension of Pali Nouns and Adjectives, edited in देवनागरी for the first time by Palitīrtha N. V. Tungar. Pocket size. Poona 0 2 0

3199 Pūrvatrāsiddham—Analytische onderzock Aangaande Het Systeem der Tripaoli Van Pāṇini's Aṣṭādhyāyi. By H. E. Buiskool. 12 0 0

३२०० पूर्वपक्षावली—पं० गोपालशास्त्रिनेनेकृतटिप्पणीसहिता। काशी ० ३ ०

३२०१ पूर्वपक्षावली—(पाणिनीयव्याकरण पर)। मुम्बई ० ४ ०

३२०२ प्रक्रियाकौमुदी—श्रीविट्ठलाचार्यकृतेन 'प्रसादेन' उपोद्घातेन च सहिता। Edited by K. P. Trivedi in 2 vols. 20 0 0

३२०३ प्रक्रियासर्वस्वम्—श्रीनारायणभट्टकृतं सव्याख्यम्। प्रथमो भागः। १ ० ०

३२०४ प्रयोगशास्त्रार्थकला—श्रीवेणीमाधवशास्त्रिकृता। काशी ० ३ ०

३२०५ प्रश्नोत्तरपयोनिधिः—श्रीवलरामदासमुनिरचितः। मुम्बई ० ३ ०

३२०६ प्राकृतप्रकाशः—वररुचिकृतः। भामहकृतसूत्रैः सहितः। ० ८ ०

३२०७ प्राकृतप्रकाशः—वररुचिकृतसूत्राणां भामहकृतव्याख्या सटिप्पणा। बनारस १ ४ ०

३२०८ प्राकृतप्रकाशः—महामुनिवररुचिप्रणीतः। भामहविरचितया मनोरमाख्यवृत्त्या तथा विविधज्ञातव्यविषयैः परिशिष्टादिभिश्च समलंकृतः। कलकत्ता १ ० ०

३२०९ प्राकृतप्रकाश—by वररुचि with the प्राकृतसञ्जीविनी by वसन्तराज, parts 1 & 2. Allahabad 5 0 0

३२१० प्राकृतप्रकाशः—वररुचिप्रणीतः। Revised & enlarged, with appendices &c. by Dr. P. L. Vaidya. Poona 3 0 0

३२११ प्राकृतमञ्जरी—कात्यायनमुनिप्रणीतप्राकृतसूत्रवृत्ति (बालभाषा का व्याकरण)। मुम्बई ० ६ ०

३२१२ प्राकृतमार्गोपदेशिका—पं० बचरदासजीवराजकृत। २ ० ०

3213 Prakrit Rūpāvatāra (प्राकृतरूपावतार)—A Prākrit Grammar based on the Vālmīki Sūtras by Siṃharāja. Text in original Devanāgarī characters. Edited with notes and an Index to the Sūtras by E. Hultzsch. 5 0 0

३२१४ प्राकृतलक्षणम् (चण्डप्राकृतव्याकरण)— कलकत्ता १ ० ०

३२१५ प्राकृतव्याकरणम्—हेमचन्द्राचार्यकृतम् । With index of Prakrit words. पूना २ ० ०

3216 Prakrit Vyakarana (प्राकृतव्याकरण)—With English translation by Pt. Rikhikesh Shastri. 1 8 0

३२१७ प्राकृतव्याकरणवृत्तिः—श्रीत्रिविक्रमदेवविनिर्मिता ससूत्रा । खण्डाः ५ । सम्पूर्ण । काशी ७ ८ ०

३२१८ प्रौढपाठावलिः—An Advanced Reader of Sanskrit. Madras 0 12 0

३२१९ प्रौढमनोरमा—भट्टोजिदीक्षितविरचिता । तत्पौत्रहरिदीक्षितविरचितलघुशब्दरत्नव्याख्यायुता । शब्दरत्नभैरवीव्याख्यया भैरवमिश्रकृतया, प्रभाटिप्पण्या माधवशास्त्रिभण्डारिकृतया, शब्दरत्नदीपकटिप्पण्या जगन्नाथशास्त्रिविरचितया चाऽऽलङ्कृता । भाग १ । काशी ४ ० ०

३२२० प्रौढमनोरमा—भट्टोजिदीक्षितविरचिता । तत्पौत्रश्रीहरिदीक्षितविरचितलघुशब्दरत्नेन, श्रीजगन्नाथशास्त्रिविरचितज्योत्स्नया, माधवशास्त्रिभाण्डारिप्रणीतप्रभया, जगन्नाथपण्डितकृतकुचमर्दिन्या, सदाशिवशास्त्रिविरचित'विभा'नामकटिप्पण्या च सहिता । काशी ३ ० ०

३२२१ प्रौढमनोरमाखण्डनम्—पण्डितवरश्रीचक्रपाणिदत्तविरचितम् । बनारस १ ४ ०

३२२२ फक्किकाप्रकाशः—व्याकरण के पठन पाठन में क्लिष्ट पंक्तियों पर शंकासमाधान है । मुम्बई १ ४ ०

३२२३ फक्किकाप्रकाशः—वैयाकरणकेसरि-विरुदान्तिकमैथिलेन्द्रदत्तशर्मविरचितः । बनारस १ ४ ०

३२२४ फक्किकारत्नमञ्जूषा—सिद्धान्तकौमुदीस्थपंक्तिव्याख्यानरूपा । २ भागों में । बनारस ४ ० ०

३२२५ फक्किकासरलार्थः—पं० रामचरित्रत्रिपाठिकृता । काशी ० ६ ०

३२२६ फिट्सूत्राणि, Cāntanava's Phitsūtra—Mit verschiedenen indischen. Commentaren, inleitung, Uebersetzung und Anmerkungen herausgegeben Von Franz Kielhorn. Leipzig 7 8 0

३२२७ बालसंस्कृतप्रभाकर—नवीन संस्कृत सीखने वालों को बहुत उपयोगी है।
मुम्बई ० १० ०

३२२८ बालसंस्कृतबोधिनी—भाषाटीकासहित। यह विद्यार्थियों को अतीव उपयोगी है।
मुम्बई ० ८ ०

३२२९ बृहच्छब्दरूपावली—
मद्रास ० ८ ०

३२३० बृहत्संस्कृतशिक्षावाटिका—श्री पं० जगन्नाथशुक्लकृता। काशी १ भाग ≡), २ भाग ।), ३ भाग
० ५ ०

३२३१ बृहद्धातुरूपावलिः—टी० आर० कृष्णाचार्येण विरचिता पण्डितशंकरसुब्रह्मण्यशास्त्रिभिः शोधिता च।
कुम्भघोण ४ ४ ०

३२३२ बृहद्वैयाकरणभूषणम्—सर्वतन्त्रस्वतन्त्रश्रीमत्कौण्डभट्टविरचितम्। सम्पूर्ण
काशी ६ ० ०

३२३३ प्रौढमनोरमा—२ भाग। भैरवी, भावप्रकाश, सरलाटीकोपेता। लघुशब्दरत्नश्च। त्रिषु भागेषु सम्पूर्णा भविष्यति। सम्पूर्णायाः
६ ० ०

३२३४ भावबोधिनी—वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी पंक्तिपदार्थविवरणरूपा टीका। स्त्रीप्रत्ययान्तो भागः।
बनारस २ ० ०

३२३५ भाषाचन्द्रिका—पण्डितनारायणशास्त्री पटवर्धन विरचित हिन्दी भाषा का व्याकरण।
बनारस ० ४ ०

३२३६ भाषान्तरमयूखस्य प्रथमो विलासः—अंग्रेजी से संस्कृत अनुवाद शिक्षक।
मुम्बई ० ८ ०

३२३७ भाषाविज्ञान—अर्थात् पंजाबी तथा हिन्दी भाषाओं के इतिहास, विकास, ध्वनि, ध्वनिपरिवर्त्तन, अर्थपरिवर्त्तन, तथा व्याकरणिक रूपों वा चिह्नों का विवेचन। लेखक श्री प्रो० दुनिचन्द-ऐम० ए०।
लाहौर ३ ४ ०

३२३८ भाषावृत्तिः—पुरुषोत्तमदेवकृतश्रीसृष्टिधराचार्यरचितविवृतिसहित।
कलकत्ता ० १२ ०

३२३९ भाषावृत्तिः—महामहोपाध्यायश्रीपुरुषोत्तमदेवविरचिता। सा च केवलवेदविषयकसूत्रव्यतिरिक्तपाणिनीयसूत्रवृत्तिः। श्रीश्रीशचन्द्रचक्रवर्तिभट्टाचार्येण संस्कृता। सम्पूर्ण।
बंगाल ६ ० ०

3240 Bhāṣāśāstrapraveśinī (भाषाशास्त्रप्रवेशिनी)—A Hand-book of Comparative Philology in Sanskrit for the use of Sanskrit students by Prof. R. S. Venkatarama Śāstri, M. A.
Madras 2 0 0

३२४१ मध्यकौमुदी—व्याकरणाचार्य पं० श्रीधरानन्दशास्त्रिकृतसरलटिप्पणीयुता। विषयानुक्रमणिका, प्रत्याहार, अज्भेद, वर्णस्थान, वर्णप्रयत्नप्रदर्शकचक्र, लिङ्गानुशासन, गणपाठ, सूत्रवर्णक्रमसूच्याद्युपयोगिविषयसंवलिता। सजिल्द।
१ ४ ०

३२४२ मध्यसिद्धान्तकौमुदी—टिप्पणी सहित। मुम्बई १ ० ०

३२४३ मध्यसिद्धान्तकौमुदी—श्रीवरदराजकृत, अत्युत्तम टिप्पण और सूत्रों के वर्णक्रमकोश सहित। मुम्बई १ ० ०

३२४४ मध्यसिद्धान्तकौमुदी सटीक—प्रथम भाग पं० नृसिंहदेवशास्त्रिविरचित-प्राज्ञचित्तप्रसादिनी व्याख्या सहित। लाहौर १ १२ ०

३२४५ मध्यमधातुरूपावलिः—पण्डित टी० आर० कृष्णाचार्यसंकलिता। मद्रास १ ० ०

३२४६ मध्यमपाठावलिः—A Middle Reader of Sanskrit. Madras 0 10 0

३२४७ मनोरमाशब्दरत्नप्रश्नावली—२ भागौ। शुक्लश्रीराजनारायणशास्त्रिकृत। काशी ० १० ०

३२४८ महाभाष्यम्—मूलमात्रम्। Edited by Dr. F. Kielhorn, incomplete, Vol. 2 (parts 1-3) and Vol. 3 (parts 1-3). Poona 18 0 0

३२४९ महाभाष्यम्—पतञ्जलिकृतम्। प्रदीपोद्द्योतसहितम्। नवाह्निकम्। काशी ५ ० ०

३२५० महाभाष्यम्—भाग १ (नवाह्निक), कैयटविरचितप्रदीप, नागोजीभट्टकृतोद्द्योत तथा पायगुण्डेकृत छायासहित। सजिल्द। मुम्बई ५ ० ०

३२५१ महाभाष्यम्—पतञ्जलिकृतम्। भाग २ (विधिशेषरूपं द्वितीयखण्डम्) प्रथमाध्यायद्वितीयपादादि द्वितीयाध्यायांत तक। कैयटप्रणीत प्रदीप और नागेशकृत उद्द्योत सहित। यह भी पहिले मुद्रित नवाह्निक की भांति ही पूर्वपक्षिसिद्धान्त्येकदेशि-सिद्धान्त्युक्ति आदि, बीच के विषयों का शिरोलेख (हेडिङ्ग) देकर छपा है। कि जिस से थोड़ा सा व्याकरण जानने वालों को भी भाष्य रहस्य का ज्ञान होजाय। सजिल्द। मुम्बई ४ ८ ०

३२५२ महाभाष्यम्—पतञ्जलिकृतम्। भाग ३ (विधिप्रकरणरूपं तृतीयखण्डम्)। तृतीयाध्यायात्मकम्। भगवत्पतञ्जलिमुनिनिर्मितम्। कैयटप्रणीतभाष्यप्रदीपेन नागेशभट्टविरचितभाष्यप्रदीपोद्द्योतेन च सहितम्। महामहो० शिवदत्तेन पं० रघुनाथशास्त्रिणा वैद्यनाथप्रणीतभाष्यप्रदीपोद्द्योतच्छायासारं पदमञ्जरीशब्दकौस्तुभौ समवलम्ब्य, विषमस्थलटिप्पण्या पाठभेदादिपूरणेन च सम्भूय संशोधितम्। मुंबई ३ ० ०

३२५३ महाभाष्यम्—भाष्यपरिभाषणाख्यभाषाविवरणबृंहितम् (भाषाटीकासहितम्)। पं० साधुरामशास्त्री, बी० ए० कृतम्। प्रथमद्व्याह्निकम्। लाहौर १ ० ०

३२५४ महाभाष्यम्—प्रथमाध्यायप्रथमपादस्याह्निकद्वयम्। पं० बालासहायशास्त्रिणा संपाद्य प्रकाशितम्। लाहौर १ ० ०

३२५५ महाभाष्यस्य आद्यमाह्निकद्वयम्—श्रीमाधवशास्त्रिणा निर्मितया स्फोटविमर्शिन्याख्यया व्याख्यया सहितम्। लाहौर १ ५ ०

३२५६ **महाभाष्यम्**—पतञ्जलिकृतम् । नागोजिभट्टकृतप्रदीपसहितम् । अङ्गाधिकारः । काशी २ ८ ०

३२५७ **महाभाष्यम्**—अङ्गाधिकारः । कैय्यटकृतेन 'प्रदीपेन' नागोजिभट्टकृतेन 'उद्द्योतेन' च सहितम् । भागः १—२॥।), भाग २— पूना १ ८ ०

३२५८ **महाभाष्यप्रदीपोद्द्योतः**—श्रीनागेशभट्टविरचितः, बहुवल्लभशर्मणा परिशोधितः । ३६ भाग । अपूर्ण । कलकत्ता ३१ ८ ०

३२५९ **महाभाष्यम्**—पतञ्जलिकृतम् । कैयटविवरणटीकोपेतम् । सम्पूर्णम् । बनारस २५ ० ०

३२६० **महाभाष्यशब्दकोषः**—पं० श्रीधरशास्त्री पाठक तथा पं० सिद्धेश्वरशास्त्रि-चित्राव द्वारा संकलित । भाग १—१५), भाग २— पूना १२ ० ०

Word Index to Vyākaraṇa-Mahābhāṣya compiled by M. M. Shrīdhara Shāstrī Pāṭhaka and Pt. Siddheśwar Shāstrī Chitrao. Vol. I. 15/-/-, Vol II. Poona 12 0 0

३२६१ **माधवीया धातुवृत्तिः**—श्रीमत्सायणाचार्यविरचिता । काशी ५ ० ०

३२६२ **मार्गोपदेशिका**—आङ्गलभाषाजिज्ञासुओं के लिये । रामनारायणदुबे-विरचिता । मुम्बई ० ८ ०

३२६३ **मुग्धबोधव्याकरण**—बोपदेवरचित । दुर्गादास तथा श्रीरामकृतटीकासहित । कलकत्ता ४ ० ०

३२६४ **मुग्धबोधव्याकरण**—७ खंड । अपूर्ण । कलकत्ता ५ ४ ०

३२६५ **रामचन्द्रिका**—गुंजीकरकृत संस्कृत शब्दरूपावली । मुम्बई ० ५ ०

३२६६ **रूपकौमुदी**—श्रीगुरुप्रसादशास्त्रिसंकलिता । प्रथमपरीक्षोपयोगिशब्दधातुरूप-संग्रहरूपा । बनारस १ ० ०

३२६७ **रूपमाला**—महामहोपाध्याय पं० शिवदत्तविरचिता । १ व्याकरणषड्लिंग-विभाग ॥) २ सन्धिविभाग ।=) ३ अव्ययार्थभाग ।) ४ प्रयोगविधिसंग्रह-कारक, समास, तद्धितादिक =) ५ क्रियाकलाप, धातुरूपभेद, आख्यातचन्द्रिका श्लोकयोजनिकोपाय । मुम्बई ० ८ ०

३२६८ **लकारार्थनिर्णयः**—श्रीभवानन्दसिद्धान्तवागीशविरचितः । तर्कतीर्थोपाधिक-श्रीवीरेश्वरदेवशर्मविरचितदीपनीनामव्याख्यावङ्गानुवादाभ्यां समेतः । कलकत्ता ० १२ ०

३२६९ **लघुजूटिका**—अर्थात् अभिनवा परिभाषेन्दुशेखरपरिष्कृतिनिर्मितिः । बनारस ० ८ ०

३२७० **लघुत्रिमुनिकल्पतरु**—इसमें पाणिनीय व्याकरण आदि का वृत्तान्त भले प्रकार है । मुम्बई ० ४ ०

३२७१ **लघुधातुरूपसंग्रहः** (टिप्पणीसहित)—पं० श्रीदेवानन्दझाप्रणीत । इसमें लघुसिद्धान्तकौमुदी के सब धातुओं की रूपसिद्धि ऐसी अच्छी लिखी है कि इसके पढ़ने वाले बालकों को पढ़ने में बड़ी सुगमता होती है । मुम्बई ० ४ ०

३२७२ लघुभाष्य—श्रीसरस्वतीकृतसम्पूर्णव्याकरणसूत्रव्याख्यान। सारस्वत के सूत्रों पर महाभाष्य के अनुसार सर्वोत्तम व्याख्या है। मुम्बई ३ ० ०

३२७३ लघुव्याकरण—श्रीनवीनचन्द्ररायप्रणीत। पंजाबदेशीय सरकारी पाठशालाओं के निमित्त। लाहौर १ ० ०

३२७४ लघुशब्दरूपावलिः— मद्रास ० ३ ०

३२७५ लघुशब्देन्दुशेखरः—महामहोपाध्यायनागेशभट्टविरचितः। श्रीविश्वनाथ-दाण्डभट्टविरचितयाऽभिनवचन्द्रिकाटीकया, श्रीवैद्यनाथपायगुण्डेविरचितया चिदस्थिमालाटीकया, श्रीसदाशिवभट्टविरचितेन विवृतिसंग्रहेण, श्रीमद्भट्टोदयङ्करपाठकविरचितया ज्योत्स्नाटीकया, श्री-राघवेन्द्राचार्यकृतया विषमपदविवृत्या, श्रीगुरुप्रसादशास्त्रिविरचितया वरवर्णिन्या, किञ्च टिप्पण्या च विराजितः। टीकाषट्कोपेतः। काशी ८ ० ०

३२७६ लघुशब्देन्दुशेखरः—(भैरवी) चन्द्रकलाटीकासहितः। बनारस। अव्य-यीभावान्तः प्रथमो भागः ५) तत्पुरुषादि समाप्तिपर्यन्तो द्वितीयो भागः। ८ ० ०

३२७७ लघुशब्देन्दुशेखरः (नपदान्तसूत्रान्तो भागः)—श्रीमदुमादत्तशर्मतनुजन्मना श्रीखुद्दीशझाशर्मणा मैथिलेन मनीषिणा विरचितया नागेशोक्तिप्रकाशव्याख्यया संवलितः। बनारस २ ८ ०

३२७८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराजकृत। महामहोपाध्याय पं० शिवदत्तशर्म-कृतटिप्पणीसहित। मुम्बई ० ८ ०

३२७९ लघुसिद्धान्तकौमुदी—मूलमात्रम्। धातुपाठ-गणपाठ-वार्त्तिकपाठ-परिभाषा-पाठ-प्रत्याहार-अचामष्टादशभेद-वर्णस्थानप्रयत्नबोधकचक्र-पाणिनीयशिक्षा-विषयानुक्रमणीसूत्रानु-क्रमण्यादिविषयैश्च संवलिता। पं० विजयानन्दखण्डूड़ीशास्त्रिणा सम्पादिता। ० ४ ०

३२८० लघुसिद्धान्तकौमुदी—धातुपाठ, गणपाठ, वार्त्तिकपाठ, परिभाषापाठ, प्रत्याहार, अचामष्टादशभेद, वर्णस्थानप्रयत्नबोधकचक्र, पाणिनिशिक्षा, विषयानुक्रमणी, सूत्रानु-क्रमण्यादिविषयैश्च संवलिता। म० म० पं० गिरिधरशर्मचतुर्वेदेन, वि० भा० पं० परमेश्वरा-नन्दशास्त्रिणा च विरचितया सरलटिप्पण्या समलंकृता। ० ८ ०

३२८१ लघुसिद्धान्तकौमुदी—पंडित सूर्य्यनारायणशुक्लकृत 'बालमनोरमा' टीका सहिता। काशी २ ० ०

३२८२ लघुसिद्धान्तकौमुदी—उद्धवजीपुत्रेण रणछोड़जी शास्त्रिणा विरचितया सरलासारबोधिनीसमाख्यया व्याख्यया समेता। मुम्बई १ १२ ०

३२८३ लघुसिद्धान्तकौमुदीप्रयोगसूची—श्रीशिवदत्तमिश्रकृता। काशी ० ४ ०

३२८४ लघुसिद्धान्तकौमुदी—संक्षिप्तबालबोधिनीटीकासहिता (वार्त्तिकपाठपरि-भाषापाठ-धातुपाठ-गणपाठ-सूत्रानुक्रमणी, पाणिनीयशिक्षासहिता)। काशी ० १० ०

३२८५ लघुसिद्धान्तकौमुदी—विद्वद्वर्यश्रीवरदराजाचार्यविरचिता। विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादमिश्र विरचिता भाषाटीका सहित। मुम्बई ३ ० ०

३२८६ लघुकौमुद्याः "सरला टीका"—पं०जीवाराम उपाध्यायकृता । २ ८ ०
[भो ! परीक्षादित्सवो व्याकरणाधिजिज्ञासवोऽन्तेवासिनो विदांकुर्वन्तु भवन्तः । भवतां सौलभ्याय सुबोधाय चेयं लघुकौमुदी सरलया टीकया सरला कृता । संस्कृते क्रमशः प्रत्येक-प्रयोगस्य साधनमकारि]

3287 Laghusiddhanta-Kaumudi, Part I. (लघुसिद्धान्तकौमुद्याः प्रथमो भाग:) । Comprising sections on Saṃjñās, Sandhis, Kṛt affixes, cases, affixes and compounds, edited with an original Sanskrit commentary and English translation, Copious, Critical and Explanatory notes and appendices, by Prof. V. V. Mirashi M. A., Poona 2 8 0

३२८८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—With an original Sanskrit commentary, Bengali and necessary English translation (complete) श्रीसारदारञ्जनविद्याविनोदस्य कयाचित् टिप्पण्या च समेता । श्रीकुमुदरञ्जन एम० ए०, भिषगाचार्य्येण सम्पादिता । कलकत्ता १ ८ ०

3289 Laghu Kaumudi—A Sankrit grammer with an English version, commentary and reference, by Dr. Ballantyne. Benares 4 0 0

३२९० लघुसुबन्तरूपावलिः—श्रीभट्टविनायकेन वित्रत्य शब्दसूत्रादिभिः सनाथीकृता । मुम्बई ० ४ ०

३२९१ लिङ्गनिर्णयभूषणम्— काश्री ० ३ ०

३२९२ लिङ्गबोधव्याकरण—भाषा टीका सहित । इसके अभ्यास से पुँल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग आदि का ज्ञान शीघ्र होता है । मुम्बई ० २ ०

३२९३ लिङ्गानुशासनम्—तर्कवाचस्पतिकृतटीकासहितम् । कलकत्ता ० ६ ०

३२९४ लिङ्गानुशासनम्—वामनप्रणीतं स्वोपज्ञवृत्तिसमेतम् । मुम्बई ० ८ ०

३२९५ लिङ्गानुशासनम्—हर्षवर्द्धनकृतम् । पृथ्वीश्वरकृतसर्वलक्षणाख्यटीकोपेतम् । मद्रास १ ११ ०

३२९६ वाक्यतत्त्व—अनन्तनारायणशास्त्रिणा संकलितम् । A small treatise on Sanskrit Syntax and composition. Trichur 0 6 0

३२९७ वाक्यपदीयम्—हेलराजकृतप्रकीर्णकप्रकाशटीकया सहितम् । प्रथम भाग । मद्रास १ ८ ०

३२९८ वाक्यपदीयम्—ब्रह्मकाण्डम् । भर्तृहरिकृतम् । भावप्रदीपाख्यया व्याख्यया सहितम् । बनारस १ ० ०

३२९९ वाक्यपदीयम्—भर्तृहरिविरचितम् । तत्र हर्य्युपज्ञवृत्तिसनाथं वृषभदेवटीकासंयुतं प्रथमं काण्डम् । परिष्कर्त्ता-पं० चारुदेवः शास्त्री पाणिनीयः । लाहौर ३ ० ०

३३०० **वाक्यपदीयम्**—तृतीयकाण्डम् (जातिसमुद्देशो द्रव्यसमुद्देशश्च)।
कलकत्ता ० ४ ०

३३०१ **वाक्यार्थचन्द्रिका**—परिभाषेन्दुशेखरव्याख्या हरिशास्त्रिरचिता।
बनारस ५ १० ०

३३०२ **वादार्थसंग्रहः**—प्रथमो भागः। अत्र शेषकृष्णकृतस्फोटतत्त्वनिरूपणं, श्रीकृष्णमौनिकृता स्फोटचन्द्रिका, गोडबोलकृतः प्रातिपदिकसंज्ञावादः, वाक्यवादः, हरियशोमिश्रकृता वाक्यदीपिकेति पञ्च ग्रन्थाः संकलिताः। पण्डितानां प्रौढच्छात्राणां च प्रभूतोपकारकः।
मुम्बई ० ६ ०

३३०३ **वादार्थसंग्रहः**—द्वितीयो भागः। अत्र भवानन्दसिद्धान्तवागीशकृतं षट्कारकविवेचनम्, जयरामभट्टाचार्यकृतः कारकवादः, समासवादश्च एवकारवादश्चेति चत्वारो ग्रन्थाः सन्ति। मुम्बई ० ६ ०

३३०४ **वादार्थसंग्रह**—तृतीयो भागः। श्रीकृष्णाचार्यकृतः वादसुधाकरः, मानिश्रीकृष्णकृतः लघुविभक्त्यर्थनिर्णयः, रामकिशोरकृता शाब्दबोधप्रकाशिका चेति शाब्दिकानां त्रयो ग्रन्थाः सन्ति। मुम्बई ० ८ ०

३३०५ **वादार्थसंग्रहः**—चतुर्थभाग। मुम्बई ० १२ ०

३३०६ **वार्त्तिकपाठः**— इटावा ० ८ ०

३३०७ **विभक्त्यर्थनिर्णयः**—श्रीगिरिधरोपाध्यायविरचितः। ५ खण्डेषु सम्पूर्णः।
काशी ७ ८ ०

३३०८ **विषमपदवाक्यवृत्तिः**—श्रीराघवेन्द्राचार्यकृतलघुशब्देन्दुशेखरव्याख्याकारकप्रकरणपर्यन्ता। काशी २ ८ ०

३३०९ **वृत्तिदीपिका**—By Mauni Sri Krishna Bhatta.
Allahabad 1 2 0

३३१० **वेदाङ्गप्रकाश**—१४ खंडों में सम्पूर्ण। अजमेर ६ ० ०

३३११ **वैदिकस्वरप्रक्रियाप्रयोगस्मृतिसूची**—श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितविरचिताया वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्या व्याख्याऽमृताख्यायुता। श्रीनगेन्द्रनारायणमिश्रशास्त्रिणा सम्पादिता।
काशी ० ४ ०

३३१२ **वैयाकरणभूषणम्**—कौण्डभट्टविरचितम्। With the व्याकरणभूषणसार and कालोपनामक हरिरामप्रणीतकाशिकाख्यटीका। Edited with notes by Rao Bahadur K. P. Trivedi. Poona 10 0 0

३३१३ **वैयाकरणभूषणसारः**—सरलाटीकासहितः। काशी १ ० ०

३३१४ **वैयाकरणभूषणसारः**—कौण्डभट्टकृतः। कलकत्ता ० १४ ०

३३१५ **वैयाकरणभूषणसारः**—श्रीकौण्डभट्टनिर्मितः। गोपीकृष्णशर्मणा संशोधितः स्वनिर्मितटिप्पण्या विभूषितश्च। बनारस ० १२ ०

३३१६ **वैयाकरणभूषणसारः**—महामहोपाध्यायकौण्डभट्टकृतः पं० हरिशास्त्रि पं०

हरिवल्लभशास्त्रिविरचितकाशिकादर्पणटीकाभ्यां समलंकृतः । पं० नन्दकिशोरशास्त्रयायुर्वेदाचार्यसम्पादितः । पं० गुरुप्रसादशास्त्रिकृतटिप्पणीसमेतः । २ १२ ०

३३१७ **वैयाकरणभूषणसारः**—श्रीकौण्डभट्टकृतः । सपरिष्कृतदर्पणसहितः । काशी सं० सीरीज़ १॥), भार्गवपुस्तकालय बनारस ४ ० ०

३३१८ **वैयाकरणसिद्धान्तकारिकाः**—भट्टोजिदीक्षितविरचिताः । कौण्डभट्टविरचितवैयाकरणभूषणसाराख्यव्याख्यासमेताः । पूना ० १२ ०

३३१९ **वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा**—महामहोपाध्यायश्रीनागेशभट्टविरचिता। श्रीमद्दुर्बलाचार्यबालम्भट्टाभ्यां विरचितकुञ्जिकाकलाह्वटीकाद्वयसंवलिता । सम्पूर्णा । १५ खण्डाः। बनारस १५ ० ०

३३२० **व्याकरणदीपिका**—पाणिनिसूत्रवृत्तिः । औरम्भट्टविरचिता । बनारस ५ ० ०

३३२१ **व्याकरण बालबोध**—Sanskrit Grammar. I Book with English -/10/-, II Book with English Madras 0 14 0

३३२२ **व्याकरणसार**—इसमें अङ्गरेज़ीव्याकरणानुसारपदव्यवस्था (Parsing), वाक्यविश्लेष (Analysis), वाच्यपरिवर्त्तन, सेट् अनिट् भेद सोदाहरण हैं। ० ६ ०

3323 Vyakarana Siddhanta-Darpan—A Sanskrit Grammar in English by Pt. Bachchan Panday. Benares 2 0 0

३३२४ **व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधिः**—पर्वतीयविश्वेश्वरसूरिविरचितः । अ० १-३ । १५ खंडाः । बनारस १५ ० ०

३३२५ **व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोध**—व्यवहार में जो संस्कृत शब्द प्रायः प्रयुक्त होते हैं तथा जितना व्याकरण अत्यन्त उपयोगी है इस पुस्तक में वह सब देकर संस्कृत को अत्यन्त सरल कर दिया गया है । २ ० ०

३३२६ **शक्तिवादः**—माधवी, मञ्जूषा, विनोदिनीटीकात्रयोपेतः । काशी २ ० ०

३३२७ **शब्दकौस्तुभः**—नवाह्निकमात्र-व्याकरणग्रन्थः । बनारस ६ ० ०

३३२८ **शब्दकौस्तुभः**—श्रीभट्टोजिदीक्षितकृतः । तथा **स्फोटचन्द्रिका**-श्रीमन्मौन्युपाह्वश्रीकृष्णभट्टकृता । प्रथमो भागः—अ० १—अ० ३पा० २, द्वितीयो भागः—अ० ४ पा० १—अ० ४ पा० ४ । काशी १८ ० ०

३३२९ **शब्दभेदप्रकाशः** (शब्दद्वैधकोशः)—एकाक्षरकोशश्च । बम्बई ० १ ०

३३३० **शब्दमञ्जरी**—तिङन्त-समास-अव्ययप्रकरणशब्दार्थकोशसहिता । के० एल० व्यासरायशास्त्रिणा संकलिता । पालघाट ० ६ ०

३३३१ **शब्दमञ्जरी**—कृष्णमाचार्यकृता । कुम्भघोण ० ५ ०

३३३२ **शब्दमञ्जरी**— मुम्बई ० ४ ०

३३३३ **शब्दरूपमहोदधिः**—पं० कमलाकान्तपाण्डेयेन विरचितः।
काशी ० ६ ०

३३३४ **शब्दरूपादर्श**—पं० जीवानन्दभट्टाचार्य संकलित। कलकत्ता ० १० ०

३३३५ **शब्दरूपावलिः**— मद्रास ० ४ ६

३३३६ **शब्दरूपावली समासचक्रञ्च** ० २ ०

३३३७ **शब्दरूपावलिः**—खण्डूड़ीत्युपाह्व पं० श्रीविजयानन्दशास्त्रिणा सम्पादिता।
लाहौर ० २ ६

३३३८ **शब्दरूपावलिः** (बृहत्)—एकाक्षरीकोषसमासचक्रसहिता।
काशी ० २ ०

3339 Śabdarūpāvalī and Samāsa (शब्दरूपावली, समास)—
Poona 0 3 0

३३४० **शब्दशक्तिप्रकाशिका**—कृष्णकान्तकृतटीकया, श्रीमद्रामभद्रकृतया व्याख्यया, पं० ढुंढीराजकृतविषमस्थलटिप्पण्या च सहिता। काशी ४ ० ०

३३४१ **शब्दशक्तिप्रकाशिका**—पं० जगदीशतर्कालंकारविरचिता। प्रथमभाग।
कलकत्ता १ ६ ०

३३४२ **शब्दार्थरत्न**—तारानाथतर्कवाचस्पतिसंकलित। कलकत्ता ० १२ ०

३३४३ **शाकटायनव्याकरणम्**—चिन्तामणिलघुवृत्तिसहितम्। आचार्यप्रवरयक्षवर्मविरचितटीकयोपयुक्तम्। बनारस ५ ० ०

३३४४ **शाङ्करी**—लघुशब्देन्दुशेखर। २ भागों में। मुम्बई १ ४ ०

३३४५ **शाङ्करी**—शङ्करभट्टकृतलघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या (परिभाषाप्रकरणपर्यन्ता)।
काशी १ ० ०

३३४६ **शेखरव्याख्या सदाशिवभट्टी**— मुम्बई ३ ० ०
,, **विषमी** बनारस २) **श्रीधरी** बनारस १ ० ०

३३४७ **श्रैधरीया**—लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्यापंडितवरश्रीधरशर्मविरचिता। प्रथमकारकपर्यन्ता। काशी १ ८ ०

३३४८ **षड्भाषाचन्द्रिका**—श्रीमल्लक्ष्मीधरप्रणीता। With critical and explanatory notes in English by Rao Bahadur K. P. Trivedi.
Poona 7 8 0

३३४९ **संस्कृतनामावली**—भाषाटीका। मुम्बई ० २ ६

३३५० **संस्कृतपाठमाला**—संस्कृत भाषा का अध्ययन करने का सुगम उपाय। २४ भाग। संपूर्ण। ६ ० ०

३३५१ **संस्कृत प्रथम पुस्तक**—डा० भाण्डारकरकृत हिन्दी अनुवाद। अनुवादक पंडित जगन्नाथपांडेय, इन्दौर १ ० ०

३३५२ **संस्कृतप्रदीप**—भाषाटीका। अति उत्तम। मुम्बई ० ४ ०

३३५३ संस्कृतप्रवेशिका—भाषाटीका सहित। यह भी विद्यार्थियों को लाभदायक है। मुम्बई ० २ ०

३३५४ संस्कृतप्रवेशिनी— मद्रास ० ६ ०

३३५५ संस्कृतबालबोधिनी—भाग १ से ४। चूरू ० १२ ०

३३५६ संस्कृतभानु—लड़के लड़कियों को परस्पर संस्कृत भाषा बोलना सिखाने वाली पुस्तक। ब्रह्मर्षि पं० भानुदत्त विद्यारत्न द्वारा रचित। लाहौर ० १ ६

३३५७ संस्कृतरीडर—४ भागों में। मद्रास २ ४ ०

३३५८ संस्कृतलघुबोधिनी—संस्कृत व्याकरण। मद्रास ० ७ ०

३३५९ संस्कृतशब्दरूपावलिः—अकारादि अनुक्रमयुक्त शब्दकोषसहित। मूल लेखक मुनिराज श्रीमोतीसागरजी। अहमदाबाद २ ० ०

३३६० संस्कृतशिक्षामञ्जरी—नूतनविद्यार्थी इसे अवश्य संग्रह करें। मुम्बई ० २ ०

३३६१ संस्कृतशिक्षामञ्जरी—श्रीमज्जीवानन्दविद्यासागरभट्टाचार्येण संकलिता। प्रथमभाग ≶), द्वितीयभाग ।=), तृतीयभाग ॥।), चतुर्थभाग – कलकत्ता ० ४ ०

३३६२ बृहत्संस्कृतशिक्षावाटिका—३ भाग। काशी ० १२ ०

तीनों भाग पृथक् २ भी मिलते हैं। भाग१—≶), भाग२—।), भाग३—।")

३३६३ संस्कृतसोपान--A new and very useful Reader and Grammar by Prof. K. Chattopadhyaya, M. A.

Part I -/7/- Part II 0 8 0

३३६४ संस्कृतानुवादशिक्षक—Or a Guide to Sanskrit Composition and translation. विद्यार्थियों को संस्कृतानुवाद सिखाने वाली अद्वितीय पुस्तक। लेखक श्री पं० जे० रामचन्द्र साहित्य भूषण। बनारस ० १० ०

३३६५ संस्कृतारोहण—पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत भाषा टीका। यह छोटी सी पुस्तक वाक्यरचना में सर्वोत्तम है। विद्यार्थियों को अवश्य लेने योग्य है। मुम्बई ० ६ ०

३३६६ सज्जनेन्द्रप्रयोगकल्पद्रुमः—कृष्णपण्डितधर्माधिकारिविरचितम्। काशी १ ८ ०

३३६७ सदाशिवभट्टी—सदाशिवभट्टकृता लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या। (स्त्रीप्रत्ययप्रकरणपर्यन्त)। काशी ३ ० ०

३३६८ सन्धिप्रकरणम्—A Guide to Sanskrit Sandhi. मुम्बई ० २ ६

३३६९ समासकुवलयाकर—नियमों के साथ उदाहरण। त्वरा से पदों का समास कर सकते हैं। मुम्बई ० ४ ०

७० समासकुसुमावली— मुम्बई ० २ ०

३३७१ समासचक्र— मुम्बई ० १ ०

३३७२ **समासचन्द्रिका**—मूल। काशी ० १ ०

३३७३ **सरलसंस्कृतबोधनी**—संस्कृत व्याकरण के आरम्भिक ज्ञान के लिये अत्यन्त सरल और सुबोध व्याकरण ग्रन्थ। लेखक पं० बलदेवप्रसाद, एम० ए०। लाहौर १ ० ०

३३७४ **सरस्वतीकण्ठाभरणम्**—भोजदेवकृतम्। श्रीनारायणदण्डनाथकृतव्याख्यासहितम्। २ भागौ। मद्रास ३ ० ०

३३७५ **सवार्त्तिकगणाष्टाध्यायीसूत्रपाठ**— मद्रास १ ० ०

३३७६ **सादृश्यशास्त्रार्थकला तथा लकारार्थशास्त्रार्थकला**—पं० श्रीवेणीमाधवशास्त्रिकृता। काशी ० ३ ०

३३७७ **सारमञ्जरी**—शाब्दिकजयकृष्णविरचिता पण्डिताग्रणीरजनीकान्ततर्करत्नभट्टाचार्यविरचितबालबोधिनीटीकोपेता। कलकत्ता ० १० ०

३३७८ **सारस्वतव्याकरण** (मूल)—पूर्वार्ध। कपड़े की जिल्द ० ६ ०
कागज की जिल्द। मुम्बई ० ७ ०

३३७९ **सारस्वत**—मूल पूर्वार्द्ध। काशी ० १० ०

३३८० **सारस्वत**—मूल। पूर्वार्ध। मुम्बई, काशी ० ८ ०

३३८१ **सारस्वतम्**—सटिप्पणम्। पूर्वार्द्ध। काशी ० ७ ०

३३८२ **सारस्वत**—सुबोधिनी भाषाटीका सहित। पूर्वार्द्धमात्र। इससे विद्यार्थी सुगम रीति से समझ सकते हैं। सजिल्द मुम्बई २ ४ ०

३३८३ **सारस्वत**—चन्द्रकीर्त्ति टीका सहित। उत्तरार्द्ध। मुम्बई २ ८ ०

३३८४ **सारस्वत**—चन्द्रकीर्त्ति टीका सहित। पूर्वार्ध। मुम्बई १ १२ ०

३३८५ **सारस्वत**—सम्पूर्ण चन्द्रकीर्त्ति टीका सहित। मुम्बई ३ ० ०

३३८६ **सारस्वत (सटीक)**—पूर्वार्ध पं० उमादत्त त्रिपाठी तथा पं० शक्तिधर शुक्लकृत भाषाटीका सहित। लखनऊ २ १२ ०

३३८७ **सारस्वत**—वासुदेव विरचित प्रसादटीका व टिप्पणी सहित। मुम्बई १ ० ०

३३८८ **सारस्वत व्याकरण पञ्चसन्धि**—सटीक। अनुभूतिस्वरूपाचार्यकृत। भाषाटीका पं० रामबिहारी शुक्ल। लखनऊ ० २ ०

३३८९ **सारस्वत व्याकरण**—श्रीमदनुभूतिस्वरूपाचार्यप्रणीत और पण्डितवर्यमाधवकृतविवरणोपेत। सजिल्द। मुम्बई २ ८ ०

३३९० **सारस्वतं व्याकरणम्**—पूर्वार्द्धम्। अनुभूतिस्वरूपाचार्यकृतम्। पं० गुरुप्रसादशास्त्रिकृतसरलाटीकासहितम्। काशी ० ७ ०

३३९१ **सारस्वतव्याकरणम्**—श्रीचन्द्रकीर्त्तिकृतसुबोधिकया व्याख्यया, श्रीवासुदेवकृतप्रसादाख्यटीकया च समन्वितम्। श्रीनवकिशोरशास्त्रिणा निर्मितया मनोरमया विवृत्या सटीकलिङ्गानुशासनप्रक्रियया च समुद्भासितम्। काशी। सम्पूर्णग्रन्थस्य मूल्यम् ३)। पूर्वार्द्धम् १॥), उत्तरार्धम्— २ ० ०

३३९२ सारस्वतव्याकरण—तीनों वृत्ति । मुम्बई । कागज की जिल्द । १=) कपड़े की जिल्द । १ ४ ०

३३९३ सारस्वतसूत्रवृत्तिः—सरस्वतीसूत्र अर्थात् सारस्वतसूत्रों की अलभ्य टीका पं० श्रीहरिद्वारीप्रणीता । मुम्बई २ ० ०

३३९४ सारस्वतपूर्वपक्षावली—इसमें पाणिनीयव्याकरण के समान ही पूर्वपक्ष, शंका और उत्तरपक्षसमाधान के विषय विस्तारपूर्वक दिये गए हैं । मुम्बई ० २ ६

३३९५ सिद्धहेमचन्द्र व्याकरणम्—कलिकालसर्वज्ञश्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितम् । मुनिहिमांशुविजयेन सम्पादितम् । अहमदावाद ६ ० ०

३३९६ सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजिदीक्षितकृत, अष्टाध्यायीसूत्रपाठ, गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानुशासन, शिक्षा और सूत्रानुक्रमणीसहित सजिल्द । मुम्बई ३ ० ०

३३९७ वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी—श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितविरचिता । सभाष्यशिक्षाऽष्टाध्यायीगणवार्तिकधातुपरिभाषोणादिसूत्रफिट्सूत्रलिङ्गानुशासनसूत्रपाठैः सहिता । अष्टाध्याय्याद्यष्टकाकाराद्यनुक्रमसूचीभिः संवलिता । मूलगुटका । [अस्मिन् संस्करणे गणशब्दसूची अपूर्वैव सन्निवेशिता न कुत्राप्यद्यावधि दृष्टपूर्वा मुद्रिता वा वर्त्तते] बनारस ३ ० ०

३३९८ सिद्धान्तकौमुदी—सरलाव्याख्या । रूपलेखनप्रकार, पङ्क्तिलेखनप्रकारादिसहिता । भागः १ काशी १ ४ ०

३३९९ सिद्धान्तकौमुदी—महामहोपाध्याय भट्टोजिदीक्षितविरचित । पाणिनीयशिक्षा, परिभाषा, अष्टाध्यायी, गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानुशासन, सूत्रपाठ, अकाराद्यनुक्रमणिका, धातुसूची और लघुत्रिमुनिकल्पतरु अर्थात् मुनित्रयजीवनवृत्तान्तसमेत । मुम्बई ४ ० ०

३४०० सिद्धान्तकौमुदी—सञ्जीविनीनामक हिन्दी भाषा टीका समेत । विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादमिश्र जी की यह सुबोध भाषाटीका है । इसमें अकारादिक्रम से सूत्रसूची, वार्तिकसूची, उणादिसूची, गणसूची, फिट्सूत्रसूची लगाई गई है । इससे पठन पाठन में बड़ी सुगमता आ गई है । सजिल्द । मुम्बई १२ ० ०

३४०१ सिद्धान्तकौमुदी श्रीवासुदेवदीक्षितविरचितया बालमनोरमाख्यया व्याख्यया समेता । २ भागों में सम्पूर्ण । ६ ० ०

३४०२ सिद्धान्तकौमुदी-तत्त्वबोधिनी—टीकासहित सम्पूर्ण । इसके लौकिकभाग में तत्त्वबोधिनी टीका, वैदिक भाग में सुबोधिनी टीका, लिङ्गानुशासन में चन्द्रकला टीका, और महामहोपाध्याय पं० शिवदत्तविरचितटिप्पणियां जोड़ दी गई हैं । तथा गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानुशासन, पाणिनीयशिक्षा, परिभाषापाठ, सूत्रसूची, वार्तिक, गणसूत्र, परिभाषासमुच्चितसूची, उणादिसूत्रसूची, धातुसूची, फिट्सूत्रसूची, लिङ्गानुशासनसूची तथा लघुत्रिमुनिकल्पतरु अर्थात् मुनित्रय (पाणिन्यादि) की चरितावली भी संयुक्त है ।
मुम्बई ६ ० ०

३४०३ सिद्धान्तकौमुदी— तत्त्वबोधिनी नामक टीका सहित । (सूत्रपाठ, अष्टाध्यायीसूत्रक्रमाङ्कविभागसमेत) । यह तत्त्वबोधिनी उत्तरकृदन्त तक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री

मञ्ज्ञानेन्द्रसरस्वतीकृत है । और आगे उत्तरकृदन्त, स्वरवैदिक प्रभृति प्रकरणों पर श्रीमज्जयकृष्ण-विरचित सुबोधिनी है । और लिंगानुशासन पर भैरवी टीका है । अन्त में कौमुदी के सब परिशिष्ट तथा पांच सूचियां जोड़ दी गई हैं । सजिल्द । मुम्बई ५ ० ०

३४०४ **सिद्धान्तकौमुदी**—तारानाथतर्कवाचस्पतिकृत सरला व्याख्या सहित । २ भागों में सजिल्द । कलकत्ता १० ० ०

3405 Bhattoji's Siddhanta Kaumudi—With Sanskrit and English commentaries by K. Ray. Vol I Part I Upto Sandhi. 2/8/-. Vol I Part II Śabda Prakaraṇa and Strī-Pratyaya. 2/8/-. Vol II Part I Kāraka. 1/-/-. Vol II Part II Samāsa 3/8/-. Vol III Part I Taddhita (अपत्याधिकार) 1/-/-. Vol III Part II Taddhita-in the press. Vol IV Bhvādi 3/8/-. Vol V Adādi to लकारार्थ प्रक्रिया 4/-/- Vol VI. Remaining portion. In the press. Calcutta

३४०६ **वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः ण्यन्तादिकृदन्तान्तप्रक्रियाप्रयोग-सूची**—प्रश्नपत्रसहिता । काशी ० ४ ०

३४०७ **वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः शैषिकादिद्विरुक्तान्ततद्धितप्रक्रिया-प्रयोगस्मृतिसूची**—प्रश्नपत्रसहिता । काशी ० ३ ०

३४०८ **वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः स्त्रीप्रत्ययादारभ्य चातुरर्थिकान्त-प्रक्रियाप्रयोगसूची**—प्रश्नपत्रसहिता । काशी ० ४ ०

३४०९ **सिद्धान्तचन्द्रिकोत्तरार्द्ध**—पं॰ चन्द्रमौलि तथा पं॰ शक्तिधरशुक्लकृत भाषाटीका सहित । लखनऊ ३ ८ ०

३४१० **सिद्धान्तचन्द्रिका**—उत्तरार्द्ध भाषाटीका सहित । मुम्बई ४ ० ०

३४११ **सिद्धान्तचन्द्रिका**—मूलमात्र सम्पूर्ण । इसी का प्रचार सर्वत्र है । मुम्बई ० १२ ०

३४१२ **वैयाकरणसिद्धान्तचन्द्रिका**—श्रीराममिश्रप्रणीतसंक्षिप्तबालबोधिनी-टीकासहिता । सम्पूर्ण । बनारस ० १२ ०

३४१३ **सिद्धान्तचन्द्रिका**—श्रीरामाश्रमप्रणीता । श्रीसदानन्दकृतसुबोधिन्या, श्रीलोकेशकरकृततत्त्वदीपिकाव्याख्यया च सहिता । पं॰ श्रीनवकिशोरशास्त्रिनिर्मितया चक्रधराख्य-महत्या टिप्पण्या तथा अव्ययार्थमालया लिङ्गानुशासनप्रक्रियया, उणादिकोषेण च सहिता । २ भागौ । सम्पूर्ण ५), पूर्वार्द्धम् २॥), उत्तरार्द्धम्- काशी २ ८ ०

३४१४ **सिद्धान्तचन्द्रिका**—सटीक । सुबोधिनी और तत्त्वदीपिका समेत सम्पूर्ण । सुन्दर जिल्द सहित । मुम्बई ५ ० ०

३४१५ **सिद्धान्तचन्द्रिका**--सुबोधिनी और तत्त्वदीपिका नामक संस्कृत टीकाओं समेत । पूर्वार्द्ध ३), उत्तरार्द्ध- मुम्बई ३ ० ०

३४१६ **सुगमकौमुदी**—(प्रथमद्वितीयखराडात्मिका) प्रथमो भागः । सजिल्द। मुम्बई ३ ० ०

३४१७ **सुबोधपाठावली**—प्रथमा ≶), द्वितीया ।–), तृतीया ।≡), चतुर्थी– ० १२ ०

३४१८ **सुबोधसंस्कृत** Or Easy Steps to Sanskrit by B. B. Kamat. First part. Bombay 1 0 0

३४१९ **स्फोटसिद्धिः**—आचार्यमंडनमिश्रविरचिता । ऋषिपुत्रपरमेश्वरकृतगोपालिकोपेता । मद्रास ३ ६ ०

३४२० **स्फोटसिद्धिः**—भरतमिश्रकृता । मद्रास ० ८ ०

३४२१ **स्फोटसिद्धिन्यायविचार**— मद्रास ० ४ ०

३४२२ **स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका**—श्रीनिवासयज्वकृत । मद्रास ६ ० ०

३४२३ **हिन्दी अंग्रेजी शिक्षक**—Or English Teacher. लेखक हरिराम भार्गव । लखनऊ ० १२ ०

३४२४ **हिन्दीसहायकप्रभा**—पं० गौरीशंकरशास्त्रिणा संकलिता । (A Help Book for Hindi Examination) लाहौर ० २ ६

3425 Altindische Grammatika—(or the Grammar of the old Indian Language) by Jakob Wackernagel. Band I–II (I. Lantlehre I I Einleitung Zur Worllehre, Nominal Komposition). 22 0 0

Band III Nominalflexion-Zahlwort-Pronomin. 35 0 0

3426 Aorist in 10 Lessons. Poona 0 6 0

3427 Zur Aussprache des Sanskrit und Tibetischen. By M. Walleser. Foreign 4 8 0

3428 Apte's Sanskrit Exercises. By Apte. 2 parts. Bombay 1 4 0

3429 Beitrage Zur Grammatik des Jaina Prakrit—Von Dr. E. Müller. Berlin 3 0 0

3430 Bhandarkar's First Book of Sanskrit. Bombay 1 2 0

Bhandarkar's Second Book of Sanskrit— Bombay 1 10 0

3431 Comparative Prakrit Grammar—By V. J. Chokshi, B. A. (Hons.) Ahmed bad 0 10 0

3432 Companion to Sanskrit Composition—By Krishnaji Govind Oka. Poona 0 12 0

3433 Critical Studies in the Phonetic Observations of Indian Grammarians by Siddheshwar Varma, M. A., D. Litt. London 12 6 0

3434 Development of Language and of Sanskrit, Pali and other dialects—Relations between Sanskrit, Pali, the Prakrits and modern vernaculars. By R. G. Bhandarkar. Bombay 3 0 0

3435 Elementar buch der Sanskrit Sprache—Grammatik, text, Worterbuch. By A. Fr. Stenzler. Foreign 1 8 0

3436 Elementary Sanskrit Grammar—Wi h supplementary Dhatukosh for use in the Upper classes of Higher English Schools. Bound. Revised edition. 3 0 0

3437 Etudes de Grammaire Sanskrit, Premiere Serie par Louis Renou. Paris 10 0 0

3438 Evolution of Māgadhi—By Anant Prashad Banerji Shastri, M. A. Oxford 5 0 0

3439 Exercises in Sanskrit Grammar & Translation—By M. P. Oka. Poona 1 2 0

3440 First Sanskrit course for Standard IV—By Late Mahadeva Shiva Ram Gole, M. A. Bombay 0 10 0

3441 First Sanskrit Reader—By Prof. Devadhar and Suru. Poona 1 2 0

3442 Geschichte der Sanskrit Philologie—und Indischen Altertumskunde. By E. Windisch. 2 Tle. U. Nachtrag in 1 Bde. Foreign 37 8 0

3443 Grammaire Elementaire de la Langue Sanscrite comparee avec celle des Langues Indo-Européennes. Par Albert Carnoy. Louvain. 5 8 0

3444 Grammaire Sanscrite—Francaise Par M. Desgranges. 2 parts. Paris 12 0 0

3445 Les Grammairiens Prakrits by Luigia Nitti-Dolgi. Paris 16 0 0

3446 A Grammar of the Ardha-Māgadhī Prākrita—Together with an Introduction, author's own commentary, the Sūtrapāṭha Dhātupāṭha, and an alphabetical Index of the Sūtras compiled by His Holiness Śrī Śatavādhāni Ratnachandra ji Jain Muni. This is the first up-to-date and complete grammar of Ardha-Māgadhī Prākrita published together with the author's own Sanskrit commentary. A first rate contribution to the history of Indian Grammar and a unique exposition of this branch of Prakrits. Lahore 15 0 0

3447 Grammar of the Braj Bhākhā—By Mirza Khan. Calcutta 4 0 0

3448 Grammar of the Hindi Language—English-Hindi by Rev. E. Greaves. Benares 6 8 0

3449 Grammar of the Sanskrit Language—By Charles Wilkins, LL.D., F. R. S. London 7 0 0

3450 Grammar of Sanskrit Language—By Dr. F. Kielhorn. Revised fifth edition. Bombay 2 8 0

3451 Grammar of Tulsi Dasa Ramayana—By the Rev. E. Greaves. Benares 1 0 0

3452 Hemachandra's Lingānuśāsana—Mit Commentar und Uebersetzung-Lerausgegeben Von Dr. R. Otto Franke. Foreign 4 0 0

3453 Higher Sanskrit Grammar—By M. R. Kale. Bombay 4 0 0

3454 Index to Pāṇini's Sūtras, Dhātupāṭha, etc. Allahabad 1 8 0

3455 Introduction to Comparative Philology of the Indo-Aryan Languages—By Prof. R. V. Jahagirdar, M. A. 3 0 0

3456 Introduction to Hindi Prose Composition—By G. J. Dann. Benares 2 0 0

3457 Introduction to the Grammar of the Sanskrit Language—By H. H. Wilson, M. A., F. R. S. London 6 0 0

3458 Junior Sanskrit Reader—By Prof. C. R. Devadhar. Poona 0 14 0

3459 Key to Apte's Guide to Sanskrit Composition. Bombay 1 8 0

3460 Languages in History and Politics—By A. C. Woolner. Foreign 8 0 0

3461 Linguistic Introduction to Sanskrit—By Batakrishna Ghosh. Calcutta 5 0 0

[The book is a very useful guide to Vedic and Comparative Philology].

3462 Linguistic Speculations of the Hindus—By Prabhat Chandra Chakarbarti, M. A. Ph. D. 6 0 0

3463 Manual of Ardhamāgadhī Grammar—Second Edition. Poona 0 12 0

3464 Manual of Pali—By Prof. C. V. Joshi. M. A. This is the revised and third edition brought upto-date doing full justice to the requirements of students who take up Pali, being unable to cope with Sanskrit for their examinations. It is a graduated course well adapted even to a beginner in the study of the Pali Language. 2 0 0

3465 Manual of Sanskrit Grammar—By Sant Gokal Chandra Shastri, B. A. Lahore 1 4 0

3466 New Sanskrit Primer—An Elementary book for the use of first learners of the Sanskrit Language and the Devanagari characters. By T. K. Rama Chandra Rao. Madras 0 12 0

3467 Palī Grammatik—Von Bhikhu Nyāṇatiloke. Breslan 6 8 0

3468 Panini, His Place in Sanskrit Literature—By Theodore Goldstucker. (Reprint). Allahabad 5 0 0

3469 Panini—By Rajanikanta Gupta. 1928. 1 8 0

3470 Philosophy of Sanskrit Grammar By Prabhat Chandra Chakravarty, M. A. 5 0 o

3471 Practical Guide to Sanskrit Translation—By H. R. Aggarwal, B. A. Hons., M. A, Lahore 2 8 0

3472 Sanskrit Grammar for beginners, by A. A. Macdonell. Second edition revised and enlarged. 8 0

3473 Sanskrit Grammar—Including both the Classical Language and the older dialects of Veda and Brahmana. By W. D. Whitney. 1924. Foreign 15 0 0

3474 Sanskrit Grammar in Devanagari and Roman Letters. 2nd edition. By F. M. Müller. Foreign 7 8 0

3475 A Sanskrit Composition & Translation Manual—Hindi edition. By P. Sarda Prasad Bidyabhusan. 1 8 0

3476 Sanskrit made Easy—A Modern way to learn the language in a comparatively short time. Part I by B. N. Babulikar. Bombay 3 0 0

3477 Sanskrit Primer— Madras 0 4 0

3478 Sanskrit Primer—based an Prof. G. Buhler's Sanskrit Grammar by E. D. Perry. Very useful for beginners. Revised edition, 1936. Foreign 10 0 0

3479 Sanskrit Raja Marga—By Raja Ram Shastri. 2 parts. Bombay 1 14 0

3480 Sanskrit Reader—By C. R. Devadhar and N. G. Suru. Poona 1 10 0

3481 Sanskrit Reader—4 Vols. Madras 2 4 0

3482 Sanskrit Reader with Vocabulary and notes. By C. R. Lanman. Foreign 7 8 0

3483 Sanskrit Syntax—With an introduction by H. Kern. By J. S. Speyer. Foreign 20 0 0

3484 Sanskrit Teacher—Containing interesting sentences and verses from Sanskrit literature by Rao Bahadur Kamala Shankar Prāṇa Shankar Trivedi, B. A. in English. Bombay 2 4 0

3485 Sanskrit Translation Guide—By G. L. Sharma. Part I -/8/-. Part II— 0 12 0

3486 Sanskrit Tutor (a self-instructor)—By K. Sambasiva Sastriyal in 10 parts. Trivandrum 4 0 0

3487 Second Sanskrit Course—By Late Mahadev Shivram Gole, M. A. Part I for standard V 0 9 0
Part II for standard VI. 0 9 0

3488 Self-Interpreter—The Royal Road to Translation. By G. L. Sharma. Rewari 1 0 0

3489 Short Introduction to the Study of Comparative Grammar—Indo-European By T. Hudson Williams. Cardiff 4 0 0

3490 Shubhachandra and His Prakrit Grammar—By A. N. Upadhyaya, M. A. Poona 2 8 0

3491 Smaller Sanskrit Grammar—By M. R Kale. Bombay 3 0 0

3492 Solutions to Oka's "Exercises in Sanskrit Grammar and Translation." Bombay 1 7 0

3493 Student's Guide to Sanskrit Composition—Being a treatise on Sanskrit syntax by the Late V. Shivaram Apte, M. A. Bombay 2 12 0

3494 Studies in the Apabhraṃśa Dakarnava by Nagendra Narayana. Calcutta 5 0 0

3495 Studies on Pāṇini Grammar—By Barend Faddagon. Foreign 5 12 0

3496 Systems of Sanskrit Grammar—By Dr. S. K. Belvakar, M. A., Ph. D. Poona 3 0 0

3497 Third Sanskrit Course for Standard VII—By Late Mahadev Shivram Gole M. A., Bombay 0 9 0

3498 Truths of Language—Or Comparative Philology of the Sanskrit, Bengali and incidently other Prakrits. Calcutta 2 8 0

3499 Vedic Grammar for students by A. A. Macdonell, including a chapter on Syntax and three appendices : list of Verbs, Metre and Accent. 6 0 0

3500 Woolner Memorial Number of the Indian Students, Handbook of Philology 1937. Lahore 1 0 0

३५०१ अंग्रेजीहिन्दीकोष—English and Hindi Dictionary compiled by Ganesh Kashinath Kale. Bombay 2 8 0

कोश-ग्रन्थाः

३५०२ **अंग्रेजी हिन्दी डिक्शनरी**—इससे अंग्रेजी से हिन्दी का शब्दज्ञान शीघ्र होता है। मुम्बई १ ८

३५०३ **अनेकार्थसंग्रहो नाम कोशः**—आचार्यश्रीहेमचन्द्रेण विरचितः। बनारस २ ०

३५०४ **अनेकार्थसंग्रहः**—हेमचन्द्रसूरिप्रणीतः। श्रीमहेन्द्रसूरिविरचित-टीकासहितः।

Anekartha Sangraha of Hemachandra—Together with extracts from the original Sanskrit Commentary of Mahendra. Edited with various readings by Theodor Zachariae. Text and commentary both on Devanagari characters. Foreign. 12 0

3505 Anekārthasamuchchaya—**अनेकार्थसमुच्चय** of Shashvata. Ein homony misches Sanskrit worter buch. hrsg. V. Th. Zachariae. Foreign. 10 0

३५०६ **अभिधर्मकोशः**—आचार्य-वसुबन्धुप्रणीतः। महापण्डितत्रिपिटकाचार्य श्रीराहुल-सांकृत्यायन-विरचितया नालन्दिकाभिधया टीकया परिशिष्टादिना च सहितः। बनारस ५ ०

3507 Abhidharmakośa Vasubandhu—Traduit et annoté par Louis de la Vallée Poussin. Paris. 23 0

३५०८ **अभिधानचिन्तामणि**—श्रीहेमचन्द्राचार्यप्रणीत। स्वोपज्ञटीका विवरण तथा अकारादिक्रम से अनुक्रमणिका सहित २ भाग। मुम्बई १० ०

3509 Abhidhanappadipika (अभिधानप्पदीपिका) Or Dictionary of the Pali Language by Moggalana Thero, with English and Singhalese interpretations, notes and appendices by Woskaduwe Sublmic. Bound. Europe. 9 0

३५१० **अभिधानरत्नमाला**—हलायुधविरचित। १० ०

Halayudha's Abhidhanaratna-Mala (अभिधानरत्नमाला) A Sanskrit Vocabulary edited with a Sanskrit English Glossary by T. H. Aufrecht. Foreign 10 0

३५११ **अभिधानराजेन्द्रकोषः**—मागधी (प्राकृत) संस्कृतकोषः श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरकृतः सम्पूर्णः। ७ भाग। २२५ ०

३५१२ **अमरकोषः**—श्री पं० हरगोविन्दशास्त्रिकृतया 'मणिप्रभा'ख्यहिन्दीटीकया 'अमरकौमुद्या'ख्यसंस्कृतटिप्पण्या अतिविस्तृतभूमिकापरिशिष्ट-अकारादिशब्दानुक्रमणिकाभिः समलङ्कृतः संशोधितश्च। काशी २ ०

३५१३ **अमरकोषः**—स्वर्गीयकविचक्रवर्त्ति पं० श्रीरघुनन्दनप्रसादशास्त्रिविरचितया अभिनवराजलक्ष्मीटीकया विराजितः। काशी ० ११ ०

३५१४ **अमरकोषः**—श्रीमन्नालाल 'अभिमन्यु' एम० ए० इत्यनेन विरचितया 'धराख्य'हिन्दीटीकया संवलितः। तेनैव चोपयुक्तटिप्पण्यादिभिः समलङ्कृतः। काशी २ ४ ०

३५१५ **अमरकोश**—मूल सटिप्पण छोटे अक्षर। बनारस ० ७ ०

३५१६ **अमरकोश**—मूल शब्दकोशसहित। स्थूलाक्षर। मुम्बई ० १० ०

३५१७ **अमरकोष**—अमरसिंह-कृत, भानुजीदीक्षितकृत व्याख्यासुधा अथवा रामाश्रमी टीकासहित। मुम्बई ४ ८ ०

३५१८ **अमरकोष**—सटीक शब्दकोशसहित गुटका। मुम्बई १ ० ०

३५१९ **अमरकोषभाषाभाष्यसमेत**—इसके भाषाभाष्यकर्त्ता हैं लखनऊ-निवासी पं० शक्तिधर शर्मा शास्त्री। लखनऊ ३ ८ ०

३५२० **अमरकोष**—पं० रामस्वरूपकृत भाषाटीका समेत। तथा शब्दानुक्रमणिका सहित। ग्लेजकागज। मुम्बई २ ८ ०

३५२१ **अमरकोष संस्कृतव्याख्यासमेत**—यह रसाला व्याख्या समलंकृत अमरकोष सब कोषों में शिरोमणि है। सजिल्द। लखनऊ ३ ८ ०

३५२२ **अमरकोषः**—नामलिङ्गानुशासनाभिधः। श्रीमदमरसिंहविरचितः। महामहोपाध्याय पं० श्रीशिवदत्तात्मज-विष्णुदत्तशर्मसंगृहीतया नामचन्द्रिकाख्यया व्याख्यया विभूषितः सटीकत्रिकाण्डशेष-हारावली-द्विरूपकोषद्वय-एकाक्षरकोश, इति कोषपञ्चक-समेतः। मुम्बई ४ ८ ०

३५२३ **अमरकोषनामलिङ्गानुशासनम्**—भट्टक्षीरस्वामिविरचितटीकासहितम्। पूना ३ ८ ०

३५२४ **नामलिङ्गानुशासनम्** (अमरकोषः)—अमरसिंहविरचितं वन्द्यघटीयसर्वानन्दकृतटीकासर्वस्वसहितम्। ४ भागाः। (द्वितीयतृतीयभागयोः क्षीरस्वामिकृताऽमरकोषोद्घाटनाख्यटीकाऽपि वर्त्तते)। मद्रास ८ ० ०

३५२५ **अमरसार**—संस्कृत से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से संस्कृतकोष जेबी गुटका। मुम्बई ० १४ ०

३५२६ **अर्धमागधी कोष**—सचित्र। अर्धमागधी (प्राकृत) शब्द और संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, चार भाषाओं में अर्थ। Ardha Magadhi Dictionary: Literary, Philosophic and Scientific. With Sanskrit, Gujrati, Hindi and English equivalents, references to the texts and copious quotations. By Shatāvadhāni Jain Muni Shri Ratna Chandra ji Maharaja, in 4 Vols. Complete. Introduction by Dr. A C. Woolner. 30 0 0

३५२७ **आख्यातचन्द्रिका**—क्रिया-कोष श्रीभट्टमल विरचित। बनारस १ ८ ०

३५२८ **इम्पीरियल हिन्दी और अंग्रेजी डिक्शनरी**—एम० बी० त्रैलोक्य विरचित। मुम्बई २ ० ०

३५२९ **उर्दू हिन्दी कोष**—संपादक एम० वि० जम्बुनाथन, एम० ए०, बी० एस्० सी०। बंगलौर १ ० ०

३५३० **कल्पद्रुकोषः**—संस्कृत। २ भाग। Edited with a critical introduction by Ramavatara Sharma, M. A., Sahityacharya. 2 Vols. Baroda 14 0 0

३५३१ **चतुर्वेदी संस्कृत-हिन्दी कोष**—हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी द्वारा संकलित। लखनऊ ३ ० ०

३५३२ **जेबी-हिन्दी-कोष**— अलीगढ़ १ ४ ०

३५३३ **डिंगलकोश**—(खड़ी बोली के शब्दों का डिंगलभाषा में पर्याय) श्रीमान् स्वर्गवासी महाराजाधिराज महाराव राजा श्री १०८ श्री सर रामसिंह जी साहब बहादुर जी० सी० आई० ई० बूँदी नरेश की आज्ञा से बूँदी के राजकवि श्रीयुत मुरारिदान जी रचित। बूँदी ५ ० ०

३५३४ **त्रिकाण्डशेष (कोष)**—सारार्थचन्द्रिका टीका सहित। प्रसिद्ध अमरकोष की पूर्णता इसी से होती है। सब से पहले सटीक छपा है। मुम्बई ३ ० ०

३५३५ **देशीनाममाला**—हेमचन्द्राचार्य कृता। Edited by Prof. Pischel and Dr. G. Bühler with Introduction, critical notes and glossary by P. V. Ramanuja Swami M. A. Poona 4 8 0

३५३६ **देशीनाममाला**—हेमचन्द्रविरचिता। Edited with text, various readings, introduction and index of words. By Murlidhar Banerjee, M. A. Calcutta 6 0 0

३५३७ **धनञ्जयनाममाला**—द्विसन्धान महाकाव्य के रचयिता महाकविधनञ्जयकृत मूल और घनश्यामदास जी कृत भा० टी०। पुस्तक के अन्त में अनेकार्थ नाममाला भी है। ० १० ०

3538 Natakalaksana Ratna Kosha By Dillon Myles Oxford 11 4 0

३५३९ **नानार्थसंग्रहः**—अजयपालकृतः। Edited by T. R. Chintamani. Madras 1 8 0

३५४० **न्यायकोशः**—सकलशास्त्रोपकारकन्यायादिशास्त्रीयपदार्थप्रकाशकः। भीमाचार्यप्रणीतः। मुम्बई १५ ० ०

३५४१ **पाइयलच्छि नाममाला**—प्राकृत कोष धनपालकृत। ७ ८ ०

Paiyalachchhi Nama Mala—Edited with critical notes, an introduction and a glossary by G. Buhler Rare. Foreign 7 8 0

३५४२ पइअ-सद्द-महण्णवो (प्राकृतशब्दमहार्णव)—A Comprehensive Prakrit—Hindi Dictionary with Sanskrit equivalents, quotations and complete references in 4 Vols. 25 0 0

३५४३ पद्मचन्द्रकोश—अर्थात् व्युत्पत्ति विषय सहित संस्कृतभाषाकोष। इसमें ३० हजार संस्कृतशब्द प्रकृति प्रत्यय सहित भाषा में वर्णित हैं। इससे अच्छा संस्कृत भाषा का कोष आजतक भारतभर में नहीं छपा। टाइप तृतीयावृत्ति। मुम्बई ६ ० ०

३५४४ बालशब्दसागर (हिन्दी कोष)— इलाहाबाद २ ० ०

३५४५ भारतीय चरिताम्बुधि—A Dictionary of Indian Classical characters. इसमें वैदिक पौराणिक ऋषिमुनि राजा, रानी, स्थान तथा ऐतिहासिक पुरुषों एवं कवियों आदि का हिन्दी भाषा में संक्षिप्त विवरण है। हिन्दी संसार में यह एकदम नई चीज है। लखनऊ ५ ८ ०

३५४६ भावीनाममाला—(छन्दोबद्ध भाषा कोष) इस को जोधपुरनिवासी रामसनेही साधु भावनदासजी महाराज ने विशेष कर अमरकोष तथा हैम-विश्व-व्याडिधरणि-मेदिनी आदि अनेक कोषों का सार लेके अपूर्व ग्रन्थ बनाया है। इसमें संस्कृत तथा भाषा में प्रचलित प्रायः सभी अर्थ आये हैं। मुम्बई १ ४ ०

३५४७ भाषा-शब्द-कोष—लेखक श्री पं० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम० ए०। इलाहाबाद ५ ० ०

३५४८ मङ्खकोषः—टीकासारसहितः। स्थूलाक्षर। The Mankha Kosha—Edited with extracts from the commentary and three indexes by Theodore Zachariae. Text in original Sanskrit. Foreign 10 0 0

३५४९ मदनकोष—अर्थात् जीवन चरित्रस्तोत्र। इसमें संसार के १००० महानुभावों के चरित्र संगृहीत है। टाइप। मुम्बई २ ० ०

३५५० मातृभूमि अब्दकोष १९३०—हिन्दुस्तान का वार्षिक ज्ञान-Hindi year Book 1930 सम्पादक श्रीयुत रघुनाथ विनायक धुलेकर, एम० ए० ४ ० ०

३५५१ मेदिनिकोषः—मेदिनीकरकृतः। बनारस १ ८ ०

३५५२ मेदिनीकोष—मेदिनीकरप्रणीत। कलकत्ता १ ४ ०

३५५३ युगलकोष—The Standard Sanskrit Hindi Dictionary, containing appendices on (1) the important Sanskrit writers, (2) The Sanskrit Prosody (3) The Kavya or court poetry and (4) The drama for the use of scholars of Sanskrit Literature—By Pandit G. D. Vyas. Bound. Allahabad 4 0 0

३५५४ रामकोष—हिन्दी-संस्कृत डिक्शनरी पं० रामलालशास्त्री द्वारा संकलित। सुन्दर जिल्द सहित लाहौर २ ० ०

३५५५ **रामगुलाम शब्दकोष**—जिसमें अकारादि क्रम से संस्कृत, भाषा तथा सदा के व्यवहार में आने वाले अंग्रेजी, फ़ारसी आदि शब्दों का आशय, धातु, धात्वर्थ, अनेकार्थ आदि उत्तम रूप से दर्शाया गया है। विलायती जिल्द सहित। टाइप।

मुम्बई ३ ० ०

३५५६ **लिङ्गनिर्णयभूषणम्**— काशी ० ३ ०

३५५७ **वाचस्पत्यम्** (श्रीतारानाथतर्कवाचस्पतिकृतबृहदभिधानम्)—अस्मिन् कोषे वेद-ब्राह्मण-छन्दोव्याकरण-साहित्य-काव्य-नाटक-चिकित्सा-ज्योतिषादिसकलशास्त्रशब्दानामकारादिक्रमेणार्थव्युत्पत्तयश्च सरलसंस्कृतभाषया व्याख्याता विद्यन्ते। ६ भागेषु सम्पूर्णम् सजिल्द।

३१५ ० ०

३५५८ **विनयकोष**—जिसमें गोस्वामी तुलसीदासकृत विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों को अकारादि क्रम से संग्रह करके उनके विविध अर्थ दिये गये है। सजिल्द।

प्रयाग २ ० ०

३५५९ **विश्वप्रकाशकोशः**—श्री महेश्वरसूरिप्रणीत। २ खंडों में सम्पूर्ण।

काशी ३ ० ०

३५६० **विश्वलोचनकोषः**—आचार्य धरसेनकृत मूल और पण्डित नन्दलाल शर्मा कृत भाषा टीका सहित। अनेकार्थ कोष है, कविता करने वालों के बड़े काम का है। छपाई सफाई सुन्दर है। कपड़े की जिल्द बंधी है। १ १२ ०

३५६१ **वैजयन्ती**—यादवप्रकाशविरचित। अति सुन्दर टाइप। Edited by Gustao Oppert Ph. D. In Press

३५६२ **वैदिकशब्दार्थपारिजात**—प्रथमभाग। लाहौर ५ ० ०

३५६३ **वैद्यकशब्दसिन्धुकोषः**—(आयुर्वेदीय-शब्दौषधनामनिर्णायको बृहत्कोषग्रन्थः) कविराज उमेशचन्द्रगुप्तसंकलितः। टाइप। कलकत्ता (छपता है)

३५६४ **शब्दकल्पद्रुमः**—A Sanskrit Dictionary. Rare and out of print. 4 vols. Nicely bound. 250 0 0

३५६५ **शब्दरत्नसमन्वयः कोशः**—मूल संस्कृत। An interesting lexicon of the नानार्थ type in Sanskrit, Compiled by the Maratha Shahaji of Tanjore: Edited by Pt. Vitthal shastri, Baroda, with a foreword by B. Bhattacharya, M. A.

Baroda 11 0 0

३५६६ **शब्दसागरः**—संस्कृत अंग्रेजी अभिधानम्, अकारादिक्रमेण संस्कृतशब्दानां अर्थाः व्युत्पत्तयश्च इंगलैंडीयभाषया व्याख्याता विद्यन्ते। कलकत्ता १० ० ०

३५६७ **शब्दार्थचिन्तामणि**—यह कोष ग्रन्थ बहुत ही उत्तम और बृहत् है। इसमें अकारादि क्रम से शब्द लिखे हैं और पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग-निर्देशपूर्वक शब्दों की व्युत्पत्ति व सिद्धि के लिए पाणिनि व्याकरण के सूत्र तथा शब्दों के अर्थ व उनके लिए

अनेक कोषों के प्रमाण तथा विशिष्ट शब्दों में अनेक ग्रन्थों से उदाहरण भी दिये गये हैं। यह ग्रन्थ ४ जिल्दों व ३१६३ पृष्ठों में समाप्त हुआ है। हर एक विषय के विद्वानों को अवश्य अपने पास रखने योग्य है। उदयपुर ५० ० ०

३५६८ **शब्दार्थसंग्रहकोष**—इसमें अमरकोष और वैद्यककोष आदि कोषों से अकरादिक्रम से शब्दों का संग्रह किया गया है। लखनऊ १ १० ०

३५६९ **शाश्वतकोषः**—अनेकार्थसमुच्चय। मूलमात्र। Edited by Th. Zachariae. Foreign. 10 0 0

३५७० **शाश्वतकोषः**—अनेकार्थसमुच्चयः। Edited by K. G. Oka. 2 0 0

३५७१ **श्रीधरकोष**—संयुक्त प्रदेश के शिक्षाविभाग के भूतपूर्व डाइरेक्टर श्रीमान् टामस सी० ल्यूम०, एम० ए० तथा देशीय पाठशालाओं के भूतपूर्व इंस्पेक्टर श्रीयुत मालबरो क्रास एम० ए० की प्रेरणानुसार नार्मलस्कूल लखनऊ के भूतपूर्व संस्कृत और भाषा के अध्यापक श्रीयुत पं० श्रीधर त्रिपाठी लिखित। हिन्दी भाषा का यह एक सुप्रसिद्ध कोष है। सजिल्द। लखनऊ ३ ० ०

३५७२ **संक्षिप्तशब्दसागर** (हिन्दीकोष)—इलाहाबाद ४ ० ०

३५७३ **संस्कृत-गुजराती शब्दादर्श महान् शब्दकोष**—श श्रीगिरजाशंकर-मयाशंकरमहेतकृता। २ भाग। अहमदाबाद २० ० ०

३५७४ **संस्कृतधातुकोष**—अकारादि अनुक्रम से सब धातुओं का अर्थ सरल हिन्दी भाषा में। मुम्बई १ ८ ०

३५७५ **संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ**—अर्थात् संस्कृत शब्दों का हिन्दी भाषा में अर्थ बतलाने वाला एक बड़ा कोष। संग्रहकर्त्ता चतुर्वेदी द्वारकाप्रसादशर्मा, एम० आर० ए० एस०। इलाहाबाद ६ ० ०

३५७६ **संस्कृतहिन्दीकोष**—(पं० विश्वम्भरनाथशर्मा)। मुरादाबाद १ ० ०

३५७७ **सचित्रभाषाकोष**—विद्यार्थियों को परमोपयोगी है। शब्दों में यथास्थान चित्र दिये गए हैं। पाठ्यक्रम में भी चालू है। मुम्बई ० १० ०

३५७८ **सरस्वतीकोश**—इसमें १०००० शब्दों के अर्थों का संग्रह है। प्रायः प्रत्येक कठिन से कठिन शब्द इसमें मिल जाता है। समय पर अध्यापक का काम देता है। मुरादाबाद १ ४ ०

३५७९ **हिन्दीकोषगुटका**—कठिन हिन्दी शब्दों का अर्थ सरल हिन्दी भाषा में। इलाहाबाद १ ८ ०

३५८० **हिन्दीपर्यायवाचीकोष**—जिसमें विषयों के अनुसार समस्त व्यावहारिक शब्दों के पर्यायों का वर्गीकरण ४ खण्ड और ३७ वर्गों में किया गया है। २ ८ ०

३५८१ **हिन्दी मुहावरा-कोष**—लेखक प्रोफेसर आर० जे० सरहिन्दी Doctor of Hindi Literature. इलाहाबाद १ १२ ०

३५८२ हिन्दीमुहावराकोष—सम्पादक एम० वि० जम्बुनाथन, एम० ए०, बी० एस० सी०। बंगलौर १ ८ ०

३५८३ हिन्दीविश्वकोष—बंगला विश्वकोष के सम्पादक श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव सिद्धान्तवारिधिशब्दरत्नाकर M. R. A. S. तथा हिन्दी के विद्वानों द्वारा संकलित। यह कोष हिन्दी के महान् ग्रन्थों का भी अभ्यास करने वाले लोगों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। २५ भाग। सम्पूर्ण। सजिल्द। कलकत्ता ३१७ ० ०

३५८४ हिन्दी-शब्द-संग्रह—मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव और राजवल्लभसहाय। जिसमें प्राचीन हिन्दी कवियों द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी इत्यादि के शब्दों के अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रचलित हिन्दी, संस्कृत, फारसी इत्यादि भाषाओं के शब्द भी दिये गये हैं और अर्थ स्पष्ट करने के लिए बहुसंख्यक उदाहरणों का भी समावेश किया गया है। काशी ३ ८ ०

३५८५ हिन्दीशब्दार्थपारिजात—हिन्दी के क्लिष्ट अप्रचलित तथा संस्कृत के प्रचलित शब्दों का तात्पर्यबोधककोश चतुर्वेदी द्वारिकाप्रसादशर्मासम्पादित। अतिउपयोगी। इलाहाबाद ३ ० ०

3586 Hīra Hindi Kosh—The best and correct Hindi Dictionary, Hindi into Hindi. Aligarh. 3 0 0

३५८७ हिन्दुस्तानी-कोष—सम्पादक श्रीरामनरेश त्रिपाठी। इसमें संस्कृत, अपभ्रंश, अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेजी, ब्रजभाषा, बंगला, मराठी तथा गुजराती के वे सब शब्द दिये गये हैं जो हिन्दी और उर्दू जबान में आम तौर से चलते हैं। प्रयाग २ ० ०

३५८८ हिन्दुस्तानी-शब्दकोश—सजिल्द। लहरियासराय। १ ८ ०

3589 Anglo-Hindi School Dictionary—English words with Hindi meanings. Aligarh 1 0 0

3590 Anglo-Hindi School Dictionary—English into Hindi. Allahabad 1 0 0

3591 Bhargava's Concise Dictionary of English Language— Benares 1 0 0

3592 Bhargava's Standard Illustrated Dictionary of the English Language. (Anglo-Hindi Edition). Compiled and edited by Prof. R. C. Pathak, B. A., L. T. Benares 3 0 0

3593 Catalogue of Sanskrit and Pali Books in the British Museum—By Dr. Ernst Haas. 10 0 0

3594 Catalogus Catalogorum—An Alphabetical register of Sanskrit works and authors by Theodore Aufrecht Complete in three very big volumes. Foreign 150 0 0

3595 Crown Sanskrit English Dictionary—By V. G. Apte. Poona 2 8 0

3596 Descriptive Catalogue of Sanskrit Mss—in the Govt. collection in the Asiatic Society of Bengal. By Pt. Haraprasāda. Vol. II—Vedic Mss. Calcutta 17 8 0

3597 Dictionary of Hindu Architecture—By P. K. Acharya. 20 0 0

3598 Dictionary of Pali—by Malasekera, 2 Vols. Foreign 50 0 0

3599 Dictionary of the Pali Language—By R. C. Childers. Foreign 55 2 0

3600 English-Hindustani Dictionary—By S. W. Fallon Calcutta 2 8 0

3601 Etymological Gujarati-English Dictionary—By M. B. Balsare. Ahmedabad 12 0 0

3602 Gem Pocket Pronouncing Dictionary—English words with English and Hindi meanings. 1 0 0

3603 Geographical Dictionary of Ancient and Medieval India—By Nundo Lal De. Second revised and enlarged edition. Calcutta 9 0 0

3604 Gujrati and English Dictionary—With colloquial phrases. In two parts bound in one volume. Compiled by Ookerdabhoy Sewjee Nensey. 5 0 0

3605 Handy English-Sanskrit Dictionary—By B. D. Mulgaokar, M. A. Bombay 4 8 0

3606 Handy Sanskrit English Dictionary—By Vasudev Govind Apte, B. A. Bombay 2 8 0

3607 Hindu Classical Dictionary. A classical dictionary of Hindu Mythology and Religion, Geography, History and Literature. By John Dowson. Foreign 8 0 0

3608 Modern Concise Dictionary—English words with English and Hindi meanings. Allahabad 5 0 0

3609 New English Gujarati Dictionary—By D. J. Vaishnava, B. A. Surat 6 8 0

3610 New Royal Dictionary—English to Hindi. Bound. Aligarh 3 0 0

3611 Portugese Vacables in Asiatic Languages. By A. X. Soares. Baroda 12 0 0

3612 Practical Sanskrit Dictionary—By A. A Macdonell, 1924. Bound, very nicely got up. Foreign 30 0 0

3613 Practical Sanskrit-English Dictionary—By Vaman Shiv Ram, Apte, M. A. Poona 15 0 0

3614 Sanskrit English Dictionary—With appendix explaining the use of affixes in Sanskrit by P. Ram Jasan, 719 pages. Super Royal Octavo. Very valuable dictionary. Benares 5 0 0

3615 A Sanskrit English Dictionary—Etymologically and Philologically arranged, with special reference to cognate Indo-European Languages, by Sir Monier Williams, M. A. New edition. Greatly enlarged and improved by E. Lanmann and C. Cappeller and other scholars 1899. Foreign 55 2 0

3616 A Sanskrit English Dictionary—based upon the St. Petersburg lexicons by Carl Cappeller. Improved edition. Bound. Foreign 20 0 0

3617 A Sanskrit English Dictionary—With references to the best editions of Sanskrit authors and etymologies and comprising of cognate words chiefly in Greek, Latin, Gothic and Anglo-saxon compiled by Theodore Benfey. Out of print. The last copy left in stock. Nicely Bound. Foreign 30 0 0

3618 Sanskrit-English Dictionary (Concise)—by Vidyadhar Vaman Bhide B. A. Cheapest edition. Bound. Poona 4 0 0

3619 Sanskrit English Pocket Dictionary by H. R. Bhagvat, B. A. Poona 2 0 0

3620 Sanskrit Worterbuch—in Kurzerer Fassung. 7 parts in 3 big Vols., complete. 1923-1935. By O. Boehtlingk. Foreign 180 0 0

3621 Students Home Dictionary—Containing English words with English and Hindi meaning. 1 0 0

3622 Students Home Dictionary—Containing Hindi words with their meanings in English. Allahabad 1 0 0

3623 The Student's Practical Dictionary—Containing English words with Sanskrit and Hindi meanings. Allahabad 1 4 0

3624 The Student's Practical Dictionary—Containing Sanskrit words with English and Hindi meanings. Allahabad 1 4 0

3625 Student's Practical Dictionary—Containing English words with English and Hindi meanings in Devanāgarī character with pronunciation in Hindi with a list of Latin and Gree Words and Phrases with their equivalents in English and Hindi and abbreviations in common use, bound in cloth. Allahabad 3 0 0

3626 The Student's Practical Dictionary—Containing Hindi words with Hindi and English meanings and pronunciation in Devanagari character with an appendix containing familiar foreign words and phrases and abbreviations in common use. Allahabad 3 0 0

3627 The Student's Practical Dictionary—Containing English words with English and Hindi meanings and Hindi words with Hindi and English meaning. Allahabad 6 0 0

3628 Student's Sanskrit English Dictionary—By Vaman Shivaram Apte. Second Edition Cloth. Bombay 10 0 0

3629 Twentieth Century Dictionary—Hindi words with Hindi and English meanings—by Jatindra Nath Sen 3/-/-. English to Hindi— Aligaṛh 3 0 0

3630 Universal Dictionary of the English Language—By Henry Cecil Wyld. Foreign 15 12 0

3631 Vocabulaire Bouddhique Sanscrit Chinois—Précis de Doctrine Bouddhique par C. De Harlez. Foreign 5 0 0

काव्य-ग्रन्थाः

३६३२ **अच्युतरायाभ्युदय**—श्रीराजनाथमहाकविकृत । मद्रास १ ० ०

३६३३ **अच्युतशतकम्**—श्रीकविताकिंकसिंहसर्वतन्त्रस्वतन्त्रश्रीमद्वेदान्ताचार्यसूरिविरचितम् । कुमारताताचार्यकविभूषणप्रणीतया ज्योत्स्नाख्यया व्याख्ययानुगतम् । मद्रास ० ४ ०

३६३४ **अद्भुतदर्पणम्**—श्रीमहादेवकविविरचितम् । मुम्बई ० १२ ०

३६३५ **अध्यात्मकल्पद्रुमः**—श्रीमुनिसुन्दरसूरिनिर्मितः । श्रीधनविजयगणिविरचितया विषमपदाधिरोहिण्या सह संयोजितः । मुम्बई ० ८ ०

३६३६ **अपभ्रंशकाव्यत्रयी**—सटीक । मुम्बई ४ ० ०

३६३७ **अमरुशतक**—श्रीमच्छंकराचार्यकृत शृंगार और वेदान्तपर काव्य । संस्कृत टीका तथा घटकर्परकाव्य सहित । ० १० ०

३६३८ **अमरुशतक**—भाषाटीकासहित । ० १० ०

३६३९ **अमरुशतकम्**—अमरुकविविरचित । अर्जुनवर्मदेवप्रणीत रसिकसंजीविनी व्याख्यासहित । मुम्बई ० १२ ०

३६४० **अलिविलासिसंलापो नाम खण्डकाव्यम्**—महामहोपाध्याय (सी. आई. ई.) गङ्गाधरशास्त्रिणा विरचितम् । अत्र सर्वेषां दर्शनानां मतानि निरूपितानि । बनारस २ ० ०

३६४१ **अवदानकल्पलता**—मणिचूडावदानं नाम तृतीयः पल्लवः । बनारस ० ४ ०

३६४२ **अश्वघाटीकाव्य**—भाषाटीका समेत । मुम्बई ० ४ ०

3643 Ahalya Baee—A Poem by Mrs. Joanna Baillie. Allahabad 0 3 0

३६४४ **आनन्दलहरी**—श्रीमदप्पयदीक्षितकृता । चन्द्रिकाख्यया व्याख्यया सहिता । मद्रास १ ८ ०

3645 Wave of Bliss (आनन्दलहरी)—English translation with commentary Sir John Woodroffe. Second edition, revised and enlarged. Madras 1 8 0

३६४६ **आर्यासप्तशती**—गोवर्धनाचार्यविरचित अनन्तपंडितकृत व्यङ्ग्यार्थदीपनी टीका सहित । मुम्बई १ ८ ०

३६४७ **आर्यासप्तशती**—पर्वतीयश्रीविश्वेश्वरपण्डितविरचिता । ग्रन्थकर्तृकृतव्याख्यासंवलिता । खण्डत्रये सम्पूर्णा । काशी ४ ८ ०

३६४८ **इन्द्रविजयकाव्यम्**— जयपुर ३ ० ०

३६४९ **उज्ज्वलनीलमणि**—श्रीमद्रूपगोस्वामिप्रणीत श्रीमद्विश्वनाथरचित आनन्दचन्द्रिकाव्याख्या तथा श्रीजीवगोस्वामिविरचित लोचनरोचना व्याख्यासहित । श्रीराधाकृष्ण की मधुरलीला प्रतिपादक तथा व्युत्पत्ति बढ़ाने के लिये मनोहर काव्य । ३ ० ०

३६५० उदयवर्मचरितम्— मद्रास १ ० ०

3651 Usarika—Dawn-rhythms—By Swāmi Srī Ānanda Achārya. Scandinavia. 2 0 0

३६५२ उषाहरण—त्रिविक्रमविरचित । श्रीसुमतीन्द्रतीर्थ विरचित रसिकरञ्जनाख्य-व्याख्या सहित । मुम्बई १ ० ०

३६५३ ऋतुसंहार—मूलमात्र । मद्रास ० ४ ०

३६५४ ऋतुसंहार—कालिदासकृत । "काले"-विरचित-नवीन संस्कृत व्याख्या अंग्रेज़ी अनुवाद तथा टिप्पणी सहित । [With English translation and notes by Kale] १ ० ०

३६५५ ऋतुसंहारकाव्य—कालिदासकृत । मणिरामकृत टीका सहित और शृंगार-तिलक काव्य । मुम्बई ० ६ ०

३६५६ ऋतुसंहारकाव्य—महाकवि कालिदासकृत । चौरकविकृत चौरपञ्चाशिका काव्य सहित । इसमें षड्ऋतुवर्णनादि राजकुमार बाबू देवनन्दनसिंहकृत छन्दोबद्ध भाषा टीका में है । मुम्बई ० १० ०

३६५७ ऋतुसंहारकाव्य—महाकवि श्रीकालिदासविरचित, मणिरामकृत चन्द्रिका व्याख्या और पं० रामेश्वरभट्टकृत भाषा टीका सहित । मुम्बई ० ५ ०

3658 The Seasons—A Descriptive Poem by Kalidāsa in the original Sanskrit. Von Hanman Kreyenborg. 5 0 0

३६५९ कपालकुण्डला—बंकिमचन्द्रकृत हरिचरणकृत संस्कृतानुवाद सहित । कलकत्ता १ ० ०

३६६० कप्फिनाभ्युदय महाकाव्यम् (Of Śiva Swāmi)—A Buddhist poem printed for the first time. Edited by Prof. Gauri Shankara, M. A. काश्मीरभट्ट श्रीशिवस्वामिकृतम् । इंगलिश-संस्कृत-टीकाद्वयोपेतं सपरिशिष्टं च । लाहौर ६ ० ०

3661 Karlima Rani—Written in English by Shri Anandacharya, being a Series of 18 lectures on the reconstruction of the humanity ideal together with a new interpretation of the laws of real living and their relation to a hitherto undiscoverd aspect of Nature, called Person, Nature, and to God, delivered by Sister Karlima Rani Abbess of the Kristo-Cloisters on the slopes of Mount Kailasha. Foreign 1 8 0

३६६२ कलाविलास—मूल गुजराती का हिन्दी भाषानुवाद, श्री पाण्डे रामप्रताप शर्मा विरचित । मुम्बई ० ४ ०

३६६३ कलिविडम्बन—कलिप्रभाव भाषाटीका सहित। इसमें कलियुगप्रभाव वर्णन है। मुम्बई ० ४ ०

३६६४ कविकल्पलता—सटीक प्रथम २ भाग। कलकत्ता १ ८ ०

३६६५ कविप्रिया—(भाषा काव्य) महाकवि केशवदास विरचित। जिसमें काव्य के सब अंगों का वर्णन विधिपूर्वक किया गया है। लखनऊ

३६६६ कविरहस्य—पं० जीवारामोपाध्यायकृत। मुरादाबाद ० ४ ०

3667 Kavi Rahasya (कविरहस्य) of Halayudha—An original Sanskrit text edited with notes by Ludwig Heller. Foreign 6 0 0

३६६८ कवीन्द्रवचनसमुच्चय—इंगलिश टिप्पणीसहित। कलकत्ता ५ ० ०

Kavīndra Vachana Samuchchaya—A Sanskrit anthology of verses, edited with introduction and notes by F. W. Thomas. 5 0 0

३६६९ कामाक्षिस्तुतिशतक—मूककविविरचित। मुम्बई ० ४ ०

३६७० कार्ष्णिकीर्तनम्—श्रीमत्परमहंसोदासीनशिरोवतंसस्वामिज्ञानदासशिष्यकार्ष्णिगोपालदासविनिर्मितम्। मुम्बई ० २ ६

३६७१ कार्ष्णिकण्ठाभरण—कार्ष्णिगोपालदासविरचित। नरोत्तमीय टीका तथा अमरेश्वरीय टिप्पणी सहित। इसमें भुजङ्गप्रयात, रत्नदशक, तोटक रत्नदशक आदि दस दशक हैं। ० ८ ०

3672 Kalidasa, A Study in the Literature of—By Dr. A. Hillebrandt. Foreign 4 0 0

3673 Kalidasa—By K. S. Rama Swami Shastri in 2 Parts. Part I—His period, personality and poety. Part II—His Genius, ideal and influence. 1937. Madras 4 0 0

3674 An Investigation in some of Kalidasa's Views—By Harris.

३६७५ काव्यप्रभाकर—सटीक (श्रीभानुकविकृत) अर्थात् भाषाकाव्य। मुम्बई ८ ० ०

३६७६ काव्यमञ्जरीभाषा—पदुमनदासकृत। मुम्बई १ ८ ०

३६७७ काव्यमञ्जूषा—रत्नावलीगद्यकाव्य-कामकन्दलनाटकश्रीकालिकामन्दाकान्ताशतक-धर्माधिकारिवंशवर्णन-श्रीरेणुकास्तोत्रनाम्नां ग्रन्थरत्नानां संग्रहः। काशी १ ८ ०

३६७८ काव्यमाला— बम्बई

इसमें प्राचीन कवियों के उत्तमोत्तम संस्कृत काव्य, नाटक, चम्पू, भाण, प्रहसन, छन्द, अलंकार इत्यादि विषयों का यथावकाश संग्रह किया गया है। इसमें संगृहीत ग्रन्थों के नाम—

प्रथमगुच्छ—इसमें (१) राघवचैतन्यविरचितमहागणपतिस्तोत्र (सटीक), (२) लङ्केश्वरविरचित शिवस्तुति, (३) कालिदासकृत श्यामलादण्डक, (४) कुलशेखरविरचित मुकुन्दमाला, (५) जगन्नाथपण्डितराजविरचित सुधालहरी, (६) शंभुमहाकविविरचित राजेन्द्रकर्णपूर, (७) क्षेमेन्द्रविरचित कलाविलास, (८) जगन्नाथपण्डितराजविरचित प्राणाभरण (सटीक), (९) अप्पयदीक्षितविरचित वैराग्यशतक, (१०) जगन्नाथपण्डितराजविरचित अमृतलहरी, (११) रत्नाकरविरचितवक्रोक्तिपञ्चाशिका (सटीक), और (१२) क्षेमेन्द्रविरचित औचित्य-विचारचर्चा, ये १२ काव्य हैं। १ ४ ०

द्वितीयगुच्छक—(१) शंकराचार्यकृत विष्णुपादादि केशान्तवर्णनस्तोत्रम्, (२) गुमानिकविप्रणीतसुपदेशशतकम्, (३) क्षेमेन्द्रकृत सुवृत्ततिलकम्, (४) जगन्नाथपण्डित-राजविरचिता करुणालहरिः, (५) शंभुमहाकविविरचितान्योक्तिमुक्तालता, (६) क्षेमेन्द्रकृतः सेव्यसेवकोपदेशः, (७) विक्रमविरचित नेमिदूतम्, (८) जगन्नाथपण्डितराजविरचिता लक्ष्मी-लहरिः, (९) रुद्रकविकृतः भावविलासः, (१०) क्षेमेन्द्रकृता चारुचर्या, (११) मधुसूदनसरस्वती-विरचिता आनन्दमन्दाकिनी, (१२) शंकराचार्यकृतमम्बाष्टकम् (सटीकम), (१३) मुकुन्द-मुक्तावलिः। १ ० ०

तृतीय गुच्छक—(१) गोकुलनाथविरचितं शिवशतकम्, (२) पञ्चस्तवी, (३) दामोदरगुप्तविरचितं कुट्टनीमतम् (४) रुद्रभट्टकृतं शृंगारतिलकम्, (५) माधवकविप्रणीतं दानलीलाकाव्यम्। १ ० ०

चतुर्थगुच्छक—(१) बाणभट्टकृतं चण्डीशतकम् (सटिप्पणम), (२) नागराज-कविप्रणीतं भावशतकम्, (३) नारायणभट्टपादकृतं स्वाहासुधाकरम्, (४) श्रीकृष्णकविप्रणीतं ताराशशाङ्कम्, (५) रामचन्द्रकविकृतं रसिकरञ्जनम् (सटीकम्), (६) क्षेमेन्द्रकृतं कविकण्ठा-भरणम्, (७) भल्लटकृतं भल्लटशतकम्, (८) नीलकण्ठदीक्षितप्रणीतं सभारञ्जनशतकम्, (९) कालिदासकृता नवरत्नमाला। १ ० ०

पञ्चमगुच्छक—(१) मूककविकृता पञ्चशती, (२) क्षेमेन्द्रकृतः चतुर्वर्गसंग्रहः, (३) वीरेश्वरकृतं अन्योक्तिशतकम्, (४) शिवरामत्रिपाठीकृता नक्षत्रमाला (सटीका), (५) नीलकण्ठदीक्षितकृतं कलिविडम्बनम्, (६) सोमप्रभाचार्यकृता शृंगारवैराग्यतरंगिणी (सटीका) (७) नारायणभट्टकृतं कोटिविरहम्, (८) राजानकरुय्यकप्रणीता सहृदयलीला। १ ० ०

षष्ठगुच्छक—(१) शंकराचार्यकृतं शिवपादादिकेशान्तवर्णनस्तोत्रम्, (२) शंकराचार्यकृतं शिवकेशादिपादान्तवर्णनस्तोत्रम्, (३) नीलकण्ठदीक्षितविरचितः शान्तिविलासः, (४) लोष्टकनिर्मितं दीनाक्रन्दनस्तोत्रम्, (५) श्रीकृष्णवल्लभप्रणीतं काव्यभूषणशतकम्, (६) श्रीनिघासाचार्यविरचितं जानकीचरणचामरम, (७) क्षेमेन्द्रविरचितं दर्पदलनम्, (८) शिवराम-त्रिपाठिप्रणीतो रसरत्नहारः (सटीकः), (९) नीलकण्ठदीक्षितप्रणीतम् अन्यापदेशशतकम्। १ ० ०

सप्तमगुच्छक—(१) मानतुङ्गाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रम्, (२) सिद्धसेन-दिवाकरप्रणीतं कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्, (३) वादिराजप्रणीतम् एकीभावस्तोत्रम्, (४) धनञ्जय-

प्रणीतं विषापहारस्तोत्रम्, (५) भूपालकविप्रणीता जिनचतुर्विंशतिका, (६) देवनन्दिप्रणीतं सिद्धिप्रियस्तोत्रम्, (७) सोमप्रभाचार्यविरचिता सूक्तिमुक्तावली, (८) जम्बूगुरुविरचितं जिनशतकम्, (९) पद्मानन्दकविप्रणीतं वैराग्यशतकम् (१०) जिनप्रभसूरिविरचितः सिद्धान्तागमस्तवः (सावचूरिः), (११) आत्मनिन्दाष्टकम्, (१२) जिनवल्लभसूरिविरचितं महावीरस्वामिस्तोत्रम् ', (१३) हेमचन्द्राचार्यविरचित महावीरस्वामिस्तोत्रम्, (१४) हेमचन्द्राचार्यविरचितं महावीरस्वामिस्तोत्रं द्वितीयम्, (१५) जिनप्रभसूरिविरचितः पार्श्वनाथस्तवः, (१६) जिनप्रभसूरिविरचितं गौतमस्तोत्रम् (१७) जिनप्रभाचार्यविरचितः श्रीवीरस्तवः, (१८) जिनप्रभसूरिविरचितः चतुर्विंशतिजिनस्तवः, (१९) जिनप्रभसूरिविरचितः पार्श्वनाथस्तवः, (२०) जिनप्रभसूरिविरचितः श्रीवीरनिर्वाणकल्याणस्तवः, (२१) विमलप्रणीता प्रश्नोत्तररत्नमाला, (२२) धनपालप्रणीता ऋषभपञ्चाशिका, (२३) शोभनमुनिप्रणीता चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः (सटिप्पणा)। १ ४ ०

अष्टमगुच्छक—(१) श्रीकूरनारायणकविप्रणीतं सुदर्शनशतकम्, (२) श्रीविश्वेश्वरपण्डितप्रणीतं कवीन्द्रकर्णाभरणम् (सटीकम्), (३) प्रबोधसुधाकरः, (४) श्रीजह्लणप्रणीतो मुग्धोपदेशः, (५) श्रीविश्वेश्वरपण्डितप्रणीतं रोमावलिशतकम्, (६) वेदान्ताचार्यश्रीवेंकटनाथप्रणीता सुभाषितनीवी। १ ० ०

नवमगुच्छक—(१) आनन्दवर्धनाचार्यकृतं देवीशतकम् (कैय्यटकृतटीकया समेतम्), (२) अवतारकविप्रणीतमीश्वरशतकम् (सटीकम्), (३) मधुसूदनकविप्रणीतम् अन्योपदेशशतकम्, (४) लक्ष्मणाचार्यप्रणीता चण्डीकुचपञ्चाशिका, (५) विद्यावागीशकविविरचितं कौन्तेयवृत्तम्, (६) उत्प्रेक्षावल्लभकविविरचितं सुन्दरीशतकम्, (७) श्रीनारायणपण्डिताचार्यविरचिता शिवस्तुतिः (सटीका), (८) श्रीमच्छंकराचार्यभगवत्पादविरचितं त्रिपुरसुन्दरीमानसिकोपचारपूजास्तोत्रम्, (९) श्रीसुन्दराचार्यकविनिर्मितं गीतिशतकम्, (१०) श्रीसामराजदीक्षितविरचितं त्रिपुरसुन्दरीमानसपूजनस्तोत्रम्; (११) श्रीशंकराचार्यविरचितं चतुःषष्ट्युपचारमानसपूजास्तोत्रम्। १ ० ०

दशमगुच्छक—(१) दुर्वासोविरचितं ललितास्तवरत्नम् (२) रामभद्रदीक्षितविरचितो रामाष्टप्रासः, सेतुशास्त्रिविरचितया टीकया समेतः, (३) वासुदेवकविविरचितं वासुदेवविजयम् (स्वकृतटीकया समेतम्), (४) धातुकाव्यम् (टीकयासमेतम्)। १ ८ ०

एकादश गुच्छक—(१) श्रीदुर्वासोविरचितं त्रिपुरमहिमस्तोत्रम् (नित्यानन्दविरचितया व्याख्यया समन्वितम्), (२) खड्गशतकम् (सटीकम्), (३) श्रीदक्षिणामूर्तिविरचिता लोकोक्तिमुक्तावली, (४) श्रीनीलकण्ठदीक्षितप्रणीत आनन्दसागरस्तवः (५) श्रीलोलिम्बराजकृतं हरिविलासम्, (६) गोस्वामिश्रीयुतजनार्दनभट्टप्रणीतं शृंगारशतकम्, (७) दैवज्ञश्रीसूर्यकविविरचितं रामकृष्णविलोमकाव्यम् (स्वकृतटीकया समेतम्) १ ० ०

द्वादश गुच्छक—(१) श्रीरामभद्रदीक्षितविरचितो रामचापस्तवः, (२) श्रीरामभद्रदीक्षितविरचितो रामबाणस्तवः, (३) कविवरनरहरिविरचितं शृंगारशतकम्, (४) उत्प्रेक्षावल्लभकविविरचितं भिक्षाटनकाव्यम्। १ ० ०

त्रयोदश गुच्छक—(१) श्रीमद्रामभद्रदीक्षितविरचितं वर्णमाला-स्तोत्रम्, (२) श्रीमद्वादिचन्द्रविरचितं पवनदूतकाव्यम्, (३ पण्डरीविट्ठलाख्य कविविरचितो दूतीकर्मप्रकाशः, (४) श्रीधनदराजकविविरचितं शतकत्रयम्, (५) गिरिधरविरचितं गञ्जीफाखेलनम्, (६) तैलङ्गव्रजनाथविरचितं मनोदूतम्, (७) गोस्वामिजनार्दनभट्टप्रणीतं वैराग्यशतकम्, (८) विह्लणकविविरचितं बिह्लणकाव्यम्। १ ० ०

चतुर्दश गुच्छक—(१) कह्लणमहाकविकृत अर्धनारीश्वरस्तोत्र, (२) लल्लादीक्षितविरचित आनन्दमन्दिरस्तोत्र, (३) रामभद्रदीक्षितविरचित विश्वगर्भस्तव, (४) इन्दुदूत, (५) कृष्णानन्दकवीन्द्रविरचित सुदर्शनचम्पूकाव्य, (६) कुसुमदेवविरचित दृष्टान्तकलिकाशतक, (७) कामराजदीक्षितविरचिता शृङ्गारकलिकात्रिशती, (८) हरिकृष्णभट्टविरचित सीतास्वयंवरकाव्य, (९) व्रजराजदीक्षितविरचित षड्ऋतुवर्णनकाव्य, (१०) सामराजदीक्षितविरचिता शृङ्गारामृतलहरी, इतने काव्य हैं। १ ० ०

गुच्छकों के सिवाय काव्यमाला में जितने ग्रन्थ प्रसिद्ध हुए हैं वे सब नाटक, चम्पू इत्यादि विषयों में लिखे गये हैं।

३६७९ काव्यमुक्तावली—Compiled by Duni Chandra, M. A. Lahore 2 10 0

३६८० काव्यरत्नम्—अर्हद्दासकृतम्। ० १२ ०

३६८१ काव्यसंग्रह—प्रथमभाग भाषा। षड्ऋतुवर्णन। जिसमें भक्तभयहारी कुंजविहारी श्रीराधाकृष्णजी के विहार के ललितपद्य प्राचीन कवियों के रचे हुए हैं। संग्रहकर्त्ता पं० गोवर्द्धन चतुर्वेदी। मुम्बई ० १० ०

३६८२ काव्यसंग्रहः—सटीक (इसमें ६३ काव्य हैं)। ३ भाग। कलकत्ता ९ ४ ०

३६८३ किङ्किणीमाला—A first series of collection of songs, lyrics and short poems, fifty pieces in all. Madras. Cloth bound. (Reduced) 1 8 0

3684 Kiratarjuniya Cantos I. II.—With English translation &c. By Bidhubhushan Goswami, M. A. Calcutta 2 0 0

३६८५ किरातार्जुनीयम्—मल्लिनाथकृतटीका, पाठ्यांशेऽन्वयः, टिप्पनी, वाच्यान्तरम्, वङ्गभाषानुवादः, हिन्दीभाषानुवादश्च, मुखबन्धे कविकथादिका बहव एव विषयाः सन्ति। कलकत्ता ३ ० ०

३६८६ किरातार्जुनीयम्—महाकविभारविकृतम्। मूलमात्रम्। कलकत्ता ० ८ ०

३६८७ किरातार्जुनीयकाव्य—सटीक। ग्लेज कागज। मुम्बई २ ८ ०

३६८८ किरातार्जुनीयम्—चित्रभानुकृतशब्दार्थदीपिकाख्यया व्याख्यया समेतम्। आद्य ३ सर्गाः। मद्रास २ ८ ०

३६८९ किरातार्जुनीयम् (भारविकृतम्)—मल्लिनाथकृतटीकासहितम् । सुप्राङ्क-अन्वयनिर्देशसंक्षिप्तकथाटिप्पण्यादिसमन्वितञ्च । कलकत्ता २ ८ ०

३६९० किरातार्जुनीयम्—श्रीमल्लिनाथविरचितया घंटापथव्याख्यया समुद्दीपितम् । पं० हरिहरदत्तशास्त्रिणा विविच्य संशोधितम् । बनारस १ १२ ०

३६९१ किरातार्जुनीयम्—श्रीमत्कविकुलचूडामणिभारविविरचितम् । मल्लिनाथ-सूरिकृतया घण्टापथसमाख्यया तथा पं० श्रीकनकलालशर्मणा कृतया भावार्थदीपिन्या व्याख्यया समलंकृतम् । सर्गत्रयमात्रम् । बनारस ० ६ ०

३६९२ किरातार्जुनीयम्—श्रीमत्कविशिरोमणि-भारवि-दामोदर-प्रणीतम्, घण्टा-पथ-सुबोधिनी टीकाद्वयोपेतम् । सुभाषितसंग्रह, कथासंक्षेप, सरलार्थ, वाच्यपरिवर्तन तथा विस्तृतभूमिकासहित । काशी ० १४ ०

३६९३ किरातार्जुनीय-काव्यस्य प्रथमादिसर्गत्रयम्—व्याकरणाचार्य पं० मदनमोहनपाठकेन विरचितया छायाख्यविवृत्या सहितम् । काशी ० ८ ०

३६९४ किरातार्जुनीयकाव्य—भारविकृत । मल्लिनाथकृतघण्टापथटीकासहित । मुम्बई १ १२ ०

३६९५ किरातार्जुनीयम्—श्रीमत्कविकुलचूडामणिभारविविरचितम् । मल्लिनाथ-सूरिकृतया घण्टापथसमाख्यव्याख्यया तथा पं० श्रीगंगाधरशर्मणा कृतया सुधाख्यया व्याख्यया समलंकृतम् । सर्गत्रयमात्रम् । बनारस ० १२ ०

3696 Kiratarjuniya Kavya of Bharavi—With English translation, cantos I-X. By L. R. Pangarkar, B. A. Bombay 1 10 0

3697 Kirātārjunīya of Bhāravi—Or Arjuna's combat with the Kirāta, translated from the original Sanskrit and explained by Carl Cappeller. The volume includes an introduction, explanatory notes and various other additions. Foreign 16 0 0

3698 Bharavi's Kiratarjuniyam—with Analysis, Prose Translation, Explanation, Critical notes &c. By Saradaranjan Ray and Kumudranjan Ray. Cantos I-III. Calcutta 3 12 0

3699 Kiratarjuniya Kavya—Cantos I–III with Sanskrit commentary, English notes and translation by M. R. Kale. Bombay 1 10 0

३७०० कीचकवधम्—नीतिवर्मकृतं श्लेषयमककाव्यम् । Critically edited with the commentary of जनार्दनसेन and an Introduction; &c;

&c. by Dr. S. K. De, M. A., D. Litt. (Lond.).
Dacca 4 0 0

३७०१ **कुमारपालचरितम्**—आचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचितं प्राकृतद्व्याश्रयकाव्यम् । पूर्णकलशगणिविरचितया टीकया परिशिष्टे च सिद्धहैमव्याकरणस्याष्टमाध्यायेन सहितम् । द्वितीयं संस्करणं वैद्योपाह्वेन परशुरामशर्मणा संशोधितम् । पूना ६ ० ०

Kumārapālacarita (Prākṛta Dvyāśraya Kāvya) of Hemachandra, illustrating the eighth chapter of his Siddha-Hemacandra or Prakrit Grammar—with a commentary by Pūrṇakalaśagaṇi. Second edition, revised by P. L. Vaidya, M. A. Poona 6 0 0

३७०२ **कुमारपालप्रतिबोध**—सोमप्रभाचार्यविरचित (प्राकृतग्रन्थ)
मुम्बई ७ ८ ०

३७०३ **कुमारसम्भव**—महाकविकालिदासकृत । मल्लिनाथकृत संजीवनीटीकासमेत ।
मुम्बई १ ८ ०

३७०४ **कुमारसम्भवकाव्य**—महाकविकालिदासकृत, मल्लिनाथकृत (१-७ सर्ग) आर० सीतारामकृत (८-१७ सर्ग) सञ्जीविनीटीकासहित । मुम्बई १ ८ ०

३७०५ **कुमारसम्भवं महाकाव्यम्**—महाकविकालिदासविरचितमिदं सप्तमसर्गपर्यन्तं मल्लिनाथकृतसञ्जीवनीटीकया चारित्र्यवर्धनकृतशिशुहितैषिणया च संवलितं तत आसमाप्ति सीतारामकृतसंजीविन्याऽलंकृतं सुललितैरायसाक्षरैर्मुद्रितमतीव दर्शनीयमस्ति ।
बनारस १ ४ ०

३७०६ **कुमारसम्भवम्**—(पूर्वखण्डम्) मल्लिनाथकृतव्याख्यया तथा तर्कवाचस्पतिकृतधातुरूपटिप्पण्यादिना च सहितम् । कलकत्ता १ ४ ०

३७०७ **कुमारसम्भवम्**—(उत्तरखण्डम्) विस्तृतटीकासहितम् ।
कलकत्ता ० १२ ०

३७०८ **कुमारसम्भवम्**—महाकविकालिदासविरचितम् । अरुणगिरिकृतप्रकाशिकया पं० नारायणकृतविवरणेन च सहितम् । भागाः १, २, ३ । मद्रास १० ० ०

३७०९ **कुमारसम्भवम्**—(सप्तमसर्गान्तम्) महाकविश्रीकालिदासप्रणीतम् । मल्लिनाथविरचितया सञ्जीविनीटीकया तथा अन्वयवाच्यान्तरहिन्दीवङ्गानुवादैश्च सहितम् । श्रीहरिदाससिद्धान्तवागीशभट्टाचार्य्येण सम्पादितम् । कलकत्ता १ ४ ०

३७१० **कुमारसम्भवम्**—(सप्तमसर्गान्तम्)—अन्वयवाच्यान्तर-मल्लिनाथटीका-विविध-टिप्पणकविकथा-ग्रन्थसमालोचना-श्लोकस्थपौराणिवार्त्ता-श्रीमहादेवसिंहशर्म्मकृत-सरलहिंदी-अनुवादादिसहितम् । श्रीरेवतीकान्तभट्टाचार्येण सम्पादितम् । कलकत्ता १ ८ ०

३७११ **कुमारसम्भवम्**—मल्लिनाथकृतटीका–भरतमल्लिक–नारायण–नाथकृतटीका-सारभूतटिप्पनी-वाच्यान्तरान्वय-वङ्गानुवादादिसमेतम् । अध्यापक-श्रीरामधनकाव्यतीर्थ-संस्कृतम् । अध्यापकश्रीचिन्तामणिभट्टाचार्यकृतहिन्दिभाषानुवादसहितम् । सप्तमसर्गपर्यन्तम् । १ ८ ०

3712 Kumara Sambhava—(1. VIII) with commentary, English notes and translation by M. R. Kale. Bombay 3 12 0

3713 The Birth of the War God—(कुमारसम्भव)—A poem by Kalidasa, translated into English verse by Ralph T. H. Griffith. Bound. Madras 2 0 0

३७१४ कुम्मापुत्तचरिअं—प्राकृतकाव्यम्। पूना १ ८ ०

३७१५ कृष्णकर्णामृतकाव्यम्—सटीकम्। मद्रास १ ८ ०

३७१६ कृष्णकर्णामृतकाव्य—(बड़ा ही भक्तिमय काव्य है)। मुम्बई ० ६ ०

३७१७ कृष्णकर्णामृत—Ascribed to Līlāśuka Bilvamaṅgala (the Bengal recension) edited by Dr. S. K. De, with commentaries of the Bengal School, viz. Kṛṣṇavallabhā of Gopala Bhatta, Subodhinī of Chaitanya Dāsa and Sāraṅgaraṅgadā of Kṛṣṇadāsa, with an appendix containing additional verses from the South Indian text of Pāpayallaya Suri and from the Bilvamaṅgala Koṣa Kāvya, and with Introduction critical notes Indices etc. Dacca 6 0 0

३७१८ श्रीकृष्णचन्द्रचरितम् (महाकाव्यम्)—पं० अखिलानन्दकविरत्नेन कृतम्। १ ० ०

३७१९ कृष्णलीलामृतकाव्य— मुम्बई ० ५ ०

३७२० कृष्णविजय—शङ्करकवि विरचित। मद्रास ० १४ ०

३७२१ कृष्णविलासकाव्य—सुकुमारकवि प्रणीत सर्ग १-४। मद्रास ० १२ ०

३७२२ कोकसन्देशः—By Viṣṇutrātā. ० ८ ०

३७२३ कोकिलसंदेश— मद्रास ० ५ ०

३७२४ गंगालहरी—मूल। पण्डितराज जगन्नाथकृत गंगाजी की स्तुति। मुम्बई ० २ ०

३७२५ गंगालहरी—भाषानुवाद सहित। मुरादाबाद ० १ ०

३७२६ गंगालहरी—भाषाटीका सहित। अर्गलपुरस्थ पं० राधाकृष्णशर्मकृतान्वय भाषानुवाद तथा सेठ कन्हैयालाल पोद्दार प्रणीत समश्लोकी भाषा पद्यसमेत मुम्बई ० ४ ०

३७२७ गंगालहरी-पीयूषलहरी—व्याख्यासहिता। ० ६ ०

३७२८ गंगालहरी—पं० श्रीसदाशिवभट्टकृत पीयूषलहरीव्याख्यया सहिता। बनारस ० ४ ०

३७२९ गंगावतरणम्—श्रीनीलकण्ठदीक्षितविरचित मुम्बई ० ८ ०

३७३० गद्यपद्यमुक्ताहार—Gadyapadyamuktahara—With copious English notes and exhaustive glossary, by Bhawani Shankar Sukhatankar. Bombay 0 9 0

३७३१ गद्यरत्नावली—सा च बनारसीदासजैन, एम० ए०, पी० एच० डी०, व्याकरणतीर्थ-जगदीशशास्त्रि इत्येताभ्यां संकलिता। लाहौर २ ८ ०

३७३२ गाथासप्तशती—सातवाहनविरचित। नये संस्करण में प्राकृत मूल के साथ **संस्कृत गाथासप्तशती** लगा दी है, तथा **व्यङ्ग्यसर्वंकषा** नाम की नई टीका दी है। इन दोनों ग्रन्थों के निर्माता जयपुर राज्य के एक प्रसिद्ध राजकवि हैं। मुम्बई ३ ० ०

३७३३ गीतगोविन्द—काव्यम्, रामचन्द्रकविकृतं राधाविनोदकाव्यं च। माणांकराजेन संशोधितम्। मूलमात्र। मुम्बई ० ३ ०

३७३४ गीतगोविन्दम्—महाकविश्रीजयदेवविरचितम्। कुम्भनृपति प्रणीत रसिकप्रियाव्याख्या और महामहोपाध्याय शंकरविरचित रसमञ्जरीव्याख्यासहित। मुम्बई १ ० ०

३७३५ गीतगोविन्दकाव्यम्—महाकविश्रीजयदेवविरचितम्। भाषाटीकासमन्वितम्। अम्बिकाप्रसादशर्मणा संशोधितम्। बनारस ० ८ ०

३७३६ गीतगोविन्दम्-राधाविनोदसमेत—भाषाटीका सहित। इसमें जयदेव गोस्वामिकृत अति ललित संस्कृत में रागमय राधाकृष्ण की प्रेममय भक्ति की गाने की चीजें विद्यमान हैं। स्थूलाक्षर, सजिल्द। मुम्बई १ ८ ०

३७३७ गीतगोविन्दकाव्यम्—श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदिकृतहिन्दीटीकासहितम्। काशी ० ८ ०

3738 Gitanjali (Song offerings)—By Rabindra Nath Tagore. A Collection of prose translations made by the author from the original Bengali, with an introduction by W. B. Yeats. London 1 2 0

३७३९ गीतिसप्तशती—मूल। दुष्प्राप्य १ ८ ०

३७४० गुणरत्नकोषः—श्रीपराशरभट्टाचार्यविरचितः। वात्स्यवीरराघवाचार्यकृत-वसुराश्याख्य-व्याख्यानेन सहितः। भाषाटीकया विभूषितश्च। मुम्बई ० ६ ०

३७४१ गुरुपीयूषलहरी—गुरुनानक साहब का वर्णन। मुम्बई ० ६ ०

३७४२ गुरुवंशकाव्यम्—लक्ष्मणशास्त्रिप्रणीतभावबोधिनीसहितम्। प्रथम भाग। मद्रास १ ८ ०

[A very rare work treating of the line of Jagadgurus in the Sringeri Mutt beginning from Sri Sankara Bhagavatpada.]

३७४३ गौडवहोप्राकृतकाव्य (वाक्पतिप्रणीत)—संस्कृत टीका सहित। पूना ५ ८ ०

३७४४ **गौतमीयमहाकाव्यम्**—श्रीरूपचन्द्रकविविरचितम्। काशी ० ८ ०

३७४५ **घटकर्परकाव्य**—भाषा टीका समेत। मुम्बई ० २ ०

३७४६ **चतुःशतकम्**—आर्यदेवविरचितम्। आचार्यचन्द्रकीर्तिपादकृतवृत्तिसहितम्।

Chatuḥ Shataka of Aryadeva; Sanskrit and Tibetan texts with copious extracts from the commentary of Chandra Kirti. 9 0 0

३७४७ **जम्बूस्वामीचरित** (काव्य)— मुम्बई १ ११ ०

३७४८ **जयन्तविजय**—श्रीमदभयदेवविरचित। मुम्बई १ ० ०

३७४९ **जातिशतकम्** (सटीकम्)—श्रीशारदाप्रसादस्मृतितीर्थविद्याविनोदविरचितम्। कलकत्ता ० ८ ०

३७५० **जानकीपरिणय**—चक्रकविविरचित। मुम्बई १ ४ ०

3751 Janakiharaṇa—of Kumar Das with copious English notes, various readings, with a literal English translation by G. R. Nandargikar. Bombay 3 6 0

३७५२ **जिनदत्तचरित** (काव्य)— मुम्बई ० ६ ०

३७५३ **तिलकमञ्जरी**—श्रीधनपालविरचित। मुम्बई छपती है

३७५४ **तुलसीसतसई**—बिहारीलाल चौबे। कलकत्ता ३ १२ ०

३७५५ **त्रिगर्तोद्धारशतकं काव्यम्**—ले० श्रीबृहद्बल 'संयमी' शास्त्री। लुधियाना ० ५ ०

३७५६ **दयानन्ददिग्विजय-महाकाव्य**—कविरत्न पं० श्रीमेधाव्रताचार्यकृत। पं० श्रीश्रुतबन्धुजीशास्त्री वेदतीर्थकृत भाषाटीकासहित। बड़ौदा ३ ८ ०

३७५७ **दशावतारचरित काव्य**—क्षेमेन्द्रविरचित। १ ० ०

३७५८ **देवानन्दमहाकाव्यम् (जैन)**—श्रीमेघविजयोपाध्यायविरचितम्। कलकत्ता २ १२ ०

३७५९ **देवीस्तव**—संस्कृतटीका तथा भाषाटीका समेत। मुम्बई ० ५ ०

३७६० **देशोपदेशनर्ममालाग्रन्थौ**—क्षेमेन्द्रविरचितौ। काश्मीर १ ८ ०

३७६१ **द्व्याश्रयकाव्यम्**—आचार्यश्रीहेमचन्द्रकृतम्। अभयतिलकगणिविरचितया टीकया समेतम्। २ भागों में। पूना १८ ० ०

३७६२ **धर्मशर्माभ्युदयम्**—महाकविश्रीहरिचन्द्रविरचितम्। मुम्बई १ ८ ०

३७६३ **नटेशविजय**—वेङ्कटकृष्णदीक्षित विरचित। मद्रास ० ८ ०

३७६४ **नरनारायणानन्दमहाकाव्यम्**—वस्तुपालविरचितम्। मुम्बई २ ८ ०

३७६५ **नरनारायणीयकाव्यम्**—सिद्धकविश्रीसदानन्दविरचितम्, तत्सूनुश्रीवाणीविलासशास्त्रिकृतया व्याख्यया सहितम्। ० १२ ०

३७६६ **नलाभ्युदयः**—वामनभट्टकृतः । द्वितीया वृत्तिः । मद्रास ० ४ ०

३७६७ **नलोदयकाव्य**—सटीक । इसमें महाराज नल और दमयन्ती का रोचक चरित्र वर्णित है । मुम्बई १ ० ०

3768 Nalodaya Sanscritum Carmen—Calidaso Adscriptum una cum Pradschnacari Mithilensis Schdüs. Edidit Latina Interpretatione atque Annotationibus Criticis instruxit Ferdinandus Benary. Berolini 7 8 0

3769 Nirguṇa School of Hindi poetry. Benares 6 0 0

३७७० **नीतिशतक**—भर्तृहरिकृत । कृष्णशास्त्रिमहाबलकृतटीकासहित । मुम्बई ० ६ ०

३७७१ **नीतिशतक**—(सचित्र) अनुवादक बा० हरिदासवैद्य । बढ़िया जिल्द । हिन्दी अनुवाद । कलकत्ता ५ ४ ०

३७७२ **नीतिशतक श्रृंगारशतक और वैराग्यशतक**—Of Bhartrihari, with Hindi and English translations, copious critical and explanatory notes, parallel thoughts from numerous authors &c. By Purohit Gopinath, M. A. 4 0 0

३७७३ **नीति-श्रृंगार-वैराग्यशतकत्रयम्**—परिशिष्टश्लोकपुरःसरं श्रीरामचन्द्र-पाठक बी० ए० रचितभाषाटीकासहितम् । बनारस ० १४ ०

३७७४ **नीतिश्रृंगारवैराग्यशतकम्**—महाकविभर्तृहरिविरचितम् । निर्मलाटीका-लंकृतम् । टीकाकारः श्रीभगवान् शर्मा पाण्डेयः व्याकरणशास्त्री साहित्याचार्यः । बनारस १ ० ०

३७७५ **नेमिनिर्वाणम्**—महाकविश्रीमद्वाग्भटविरचितम् । मुम्बई ० १४ ०

३७७६ **नैषधचरितम्**—विस्तृतटीकासहितम् । दोनों खण्ड । कलकत्ता ६ ८ ०

३७७७ **नैषधचरितम्**—पं० जगद्रामविरचितकुञ्चिकाव्याख्योपेतम् । (सर्गाः १–५) । २ ८ ०

३७७८ **नैषधचरितम्**—मल्लिनाथविरचितव्याख्यासहितम् । सर्ग १ से १२ तक दो भागों में । मद्रास ३ ८ ०

३७७९ **नैषधीयचरितम्**—श्रीहर्षविरचितम् । नैषधीयप्रकाशाख्य (नारायणी) टीकासहितम् । मुम्बई ६ ० ०

३७८० **नैषधचरितम्**—महाकविश्रीहर्षविरचितम् । महोपदेशकश्रीहरिदाससिद्धान्त-वागीशभट्टाचार्येण प्रणीतया 'जयन्ती' समाख्यया टीकया अन्वयेन वंगानुवादेन च समन्वितम् । २ भाग । कलकत्ता ८ ० ०

3781 Naishadha Carita of Sri Harsha—completely

translated into English for the first time, with critical notes, copious extracts from several unpublished commentaries, valuable introduction, comprehensive appendix and a vocabulary by Principal K. K. Handiqui, M. A.

Lahore 12 0 0

३७८२ पञ्चशती—महाकविमूकप्रणीत। इसमें पांच शतक हैं। अति सुन्दर टाइप बढ़िया कागज। मद्रास ० ३ ०

३७८३ पतञ्जलिचरितम्—श्रीरामभद्रदीक्षितप्रणीत। मुम्बई ० १० ०

३७८४ पदुमावती—(भाषाकाव्य) मलिकमुहम्मदजायसीप्रणीत। कलकत्ता २२ ८ ०

३७८५ पद्मानन्दमहाकाव्यम्—अमरचन्द्रकविकृतं प्रथमजैनतीर्थंकर श्रीऋषभदेव-चरितम। Edited by H. R. Kapadia, M. A. 14 0 0

३७८६ पद्यहर्षचरित—वत्सराजगोपालचक्रवर्तिकृत। मद्रास १ १ ०

३७८७ पद्यावली—Or an anthology of Vaishnava verses in Sanskrit, compiled dy Rupa Goswamin. Critically edited by Dr. S. K. De, M. A. 7 8 0

३७८८ परमेश्वरशतक— मुम्बई ० ६ ०

३७८९ पवनदूतम्—टिप्पणी-पाठान्तरादिभिः समलंकृतम। धोयीकवि-विरचितम्। कलंकत्ता ० १२ ०

३७९० पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका—(महाभारतसारस्वरूप हिन्दी काव्य)—स्वामि-श्रीस्वरूपदासविरचित। देहली ० ३ ०

३७९१ पार्वतीविरह— मद्रास ० ३ ०

३७९२ पार्श्वनाथचरितम् (काव्यम्)— मुम्बई ० ६ ०

३७९३ पुष्पबाणविलास—श्रीकालिदासकृत। पण्डितवरश्रीवेंकटसार्वभौमविरचित-व्याख्या सहित। मुम्बई ० ४ ०

३७९४ पृथिवीराजविजय—जोनराजप्रणीत। ३ भाग। कलकत्ता २ ४ ०

३७९५ प्रद्युम्नचरित— मुम्बई ० ९ ०

३७९६ प्रबन्धकल्पलतिका—स्तवकद्वयात्मिका अध्यापकवरेण श्रीमता रेवतीकान्त-भट्टाचार्येण सम्पादिता। दो भाग कलकत्ता ३ ८ ०

३७९७ प्रबोधचन्द्रिका—श्रीविक्रमार्कतनयपटनाधीशश्रीवैजलभूपतिना विरचिता। काशी ० ४ ०

३७९८ प्रभावकचरितम्—चन्द्रप्रभसूरिप्रणीतं, महाकविगुणदोषविवेचनात्मकम्। मुम्बई १ ८ ०

३७९९ प्रशस्तिकाशिका—श्री बालकृष्णविरचिता।

३८०० प्राकृतसुभाषितसंग्रह—A collection of Prakrit moral verses with introduction and translation in English. 1 8 0

३८०१ प्राचीनगुर्जरकाव्यसंग्रह— मुम्बई २ ४ ०

३८०२ प्राचीनलेखमाला—(द्वितीय भाग)। दुष्प्राप्य मुम्बई २ ० ०

३८०३ प्राचीनलेखमाला—(तृतीय भाग)। मुम्बई १ ० ०

३८०४ प्रेमरसायनम्—श्रीविश्वनाथपंडितरचितम् काशी १ ० ०

३८०५ बालभारतकाव्य—श्रीमदमरचन्द्रसूरिविरचित, टिप्पणीसहित । इस में महाभारत की तरह के अठारह पर्व हैं। मुम्बई छपता है

३८०६ बुद्धचरित—(अश्वघोष) Critically edited by E. H. Johnston. Complete. 4 0 0

3807 Buddha Charita—Translated into English supplemented by the Tibetan version together with an introduction and notes by E. H. Johnston. 5 8 0

3808 बुद्धचरितम्—अश्वघोषविरचितम्। Buddha-Charita (Cantos I-V) with a Scholium by Dattatraya Shastri Nigudkar, and introduction, notes and translation by K. M. Joglekar, M. A. Bombay 2 8 0

३८०९ बुधभूषणम्—श्रीमच्छम्भुनृपविरचितम् । With introduction, notes &c. By Prof. H. D. Velankar, M. A. Poona 1 8 0

३८१० बृहत्कथामञ्जरी—श्रीक्षेमेन्द्रविरचिता । मुम्बई ३ १२ ०

३८११ भगवत्पादाभ्युदयम्—लक्ष्मणसूरिकृतं काव्यम् । मद्रास १ ० ०

३८१२ भट्टिकाव्यम्—विविधटीकाभिः वंगानुवादेन च सहितम् । गुरुनाथविद्यानिधि-सम्पादितम् । संपूर्ण । कलकत्ता ६ ० ०

३८१३ भट्टिकाव्यम्—भट्टिकविकृतं, जयमङ्गलकविप्रणीतं जयमङ्गलटीकासहितम् । मुंम्बई ३ ० ०

३८१४ भट्टिकाव्यम्—जयमङ्गलभरतमल्लिककृतटीकाद्वयोपेतम् । सुन्दर अक्षर । ३ भाग । कलकत्ता ५ ८ ०

३८१५ भरतचरितम्—कृष्णकविप्रणीतम् । मद्रास १ ८ ०

३८१६ भर्तृहरिशतक—नीति, शृंगार तथा वैराग्य तीनों शतक, अति सुन्दर मूल । मद्रास ० ७ ०

३८१७ भर्तृहरिशतकत्रय—पं० रामस्वरूपशर्मकृत भाषाटीका सहित । मुरादाबाद ० १० ०

३८१८ भर्तृहरिशतकत्रय—अर्थात् नीति, शृंगार वैराग्यशतक-संस्कृत टीका और भाषा टीका सहित । मुम्बई १ १२ ०

३८१९ भर्तृहरि-शतकत्रय—हिन्दी और अंग्रेजी टीका टिप्पणीसमेत। रायबहादुर पं० गोपीनाथजी पुरोहित, एम० ए०। सुन्दर ग्लेज कागज पर मुद्रित और मनोहर सुवर्णाक्षरयुक्त जिल्द बंधी। मुम्बई ४ ० ०

3820 Bhartrihari's Niti and Vairagyashataka—(भर्तृहरि-नीतिवैराग्यशतक)—With Sanskrit commentary, English translation and notes by M. R. Kāle. Bombay 2 0 0

३८२१ भविसयत्तकहा—(भविष्यकथा) पञ्चमीकथा। अपभ्रंश भाषया धनपालेन रचितं प्राकृतजैनकाव्यम्। मुम्बई ६ ० ०

३८२२ भामिनीविलासम्—जगन्नाथपण्डितकृतम्, अच्युतरायकृतया प्रणयप्रकाशाख्यया व्याख्यया समेतम्। मुम्बई १ ० ०

३८२३ भामिनीविलास—पं० महावीरप्रसादद्विवेदीकृत भाषाटीका सहित। इसमें प्रस्ताविकविलास, शृंगारविलास, करुणाविलास, तथा शान्तविलासादि अत्यन्त रोचक विषय हैं। पण्डितों के देखने योग्य है। मुम्बई १ ४ ०

3824 Bhāminivilāsa (भामिनीविलास)—of Jagannath Pandit. Critically edited by Dr. H. D. Sharma with variant readings, a lucid Sanskrit Comm. discussing the Alaṅkāra in each verse, Eng. translation with Notes explaining knotty points and alaṅkāra, excellent Introduction both in Sans. and Eng. giving the wonderful life of the Poet. Poona 2 0 0

3825 Bhaminivilasa of Jagannath Pandit—with notes and translation. Bombay 1 10 0

३८२६ भारतपारिजातम्—अयोध्यावास्तव्येन स्वामि-श्रीभगवदाचार्येण विरचितं महात्मगान्धिचरितम्। बड़ोदा ४ ० ०

३८२७ भारतमञ्जरी काव्य—महाकविश्रीक्षेमेन्द्रविरचित। मुम्बई ५ ० ०

3828 भृङ्गसन्देशः—By Vāsudeva. 0 6 0

३८२९ मणिमञ्जरी—नारायणपण्डितकृत। मद्रास ० ३ ०

३८३० मदनमुखचपेटिका—भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ५ ०

३८३१ मनोदूतकाव्यम्—इन्दिरेवाभट्टकृतं हृदयदूतकाव्यं भट्टहरिहरकृतं च। मुम्बई १ ० ०

३८३२ मनोदूतम्—विष्णुदासकृतम्। कलकत्ता ० १० ०

3833 Mayura (मयूर), The Sanskrit Poems of—Edited with an English translation and notes and an introduction together with the text and translation of Chandishataka by G. P. Quackenbos, A. M., Ph. D. America 10 6 0

३८३४ **महाकवि माघ**—माघविषयकप्राचीनगवेषणा । कलकत्ता ० ४ ०

३८३५ **महाकाव्यसंग्रह**—महामहोपाध्याय पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदिद्वारा संगृहीत सटीक । ४ ० ०

३८३६ **महाभारतसुभाषितानि**—सजिल्द । मुम्बई ० १२ ०

३८३७ **मातङ्गलीला**—नीलकण्ठविरचिता । मद्रास ० १० ०

३८३८ **मारुतिस्तव**—सटीक । मुम्बई ० ५ ०

३८३९ **मुक्ताफलम्**—श्रीवोपदेवविरचितं हेमाद्रिविरचितटीकोपेतम् । कलकत्ता ६ ० ०

3840 Srimukundamālā (श्रीमुकुन्दमाला)—श्रीराघवानन्दकृततात्पर्यदीपिका सहिता । Edited hy K. Rama Pisharoti, M. A. Annamalainagar 3 8 0

३८४१ **मूकपञ्चशती**—महाकविश्रीमूकप्रणीता Edited and published by T. S. Sabhesa Iyer, B. A. Madras 0 12 0

३८४२ **मूर्खशतक**—भाषाटीका समेत । ० १ ०

३८४३ **मूलरामायणभारतीयशीलनिरूपणाध्यायौ**—गङ्गाधरमिश्रकृतसुधा-व्याख्यासहितौ । काशी ० ६ ०

३८४४ **मेघदूतकाव्यम्**—महाकविश्रीकालिदासविरचितम् । मल्लिनाथकृतसञ्जीविन्या चारित्रवर्धनाचार्यविरचितचारित्रवर्द्धिन्या तथा साहित्याचार्य पं० श्रीनारायणशास्त्रिखिस्तेकृत-भावप्रबोधिनीव्याख्यया टिप्पण्या च सहितम् । बनारस ० ८ ०

३८४५ **मेघदूतकाव्य**—कालिदासकृत, सान्वय मल्लिनाथीयटीका और भाषाटीका सहित । मुम्बई ० १२ ०

३८४६ **मेघदूतकाव्य**—कालिदासकृत, मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी टीका सहित । मुम्बई ० ८ ०

३८४७ **मेघदूतम्**—मल्लिनाथकृतसञ्जीविनीसमेतं पं० श्रीकनकलालठक्कुरेण भावार्थ-बोधिकानामटिप्पण्या समलंकृत्य संशोधितम् । बनारस ० ८ ०

3848 Meghadūta of Kālidāsa—translated from the Sanskrit by G. H. Rooke of Oriel College, Oxford, together with transliterated text, extracts from Mallinatha's commentary with map and explanatory notes. Introductory poem by Sir Rabindranath Tagore, 1935. Foreign 6 6 0

३८४९ **मेघदूतम्**—महामहोपाध्यायमल्लिनाथसूरिकृतया टीकया समेतम् । पं० अम्बिकाप्रसादशर्मणा विरचितान्वयार्थ-विग्रहवाक्य-वाच्यपरिवर्तनेत्यादिविषयसहितम् । काशी ० ८ ०

३८५० **हिन्दीमेघदूत विमर्श**—महाकवि कालिदासप्रणीत मूल संस्कृत और सम-

श्लोकी पद्य तथा गद्य हिन्दी भाषानुवाद सहित। श्रीकन्हैलाल पोद्दार निर्मित।
प्रयाग १ ८ ०

३८५१ **मेघदूतखण्डकाव्यम्**—महाकविकालिदासविरचित। मल्लिनाथकृत संजीविनी टीका तथा पं० गिरिजाप्रसादद्विवेदिकृत अन्वय वाच्यान्तर प्रकृति प्रत्यय धातुरूपादिपरिष्कृत। हिन्दी भाषानुवाद सहित। लखनऊ ० १० ०

३८५२ **मेघदूत**—कालिदास विरचित। श्रीवल्लभदेवकृत व्याख्या सहित स्थूलाक्षर सजिल्द। ५ ० ०

3853 Meghduta of Kalidasa—Edited from manuscripts with the commentary of Vallabhadeva and provided with a complete Sanskrit English Vocabulary. By E. Hultzsch. Foreign 5 0 0

3854 Kalidasa's Meghadutam (मेघदूतम्)—With the commentary of Mallinatha and English translation, Anglo-Sanskrit notes by Kumudranjan Ray, M. A. Calcutta 2 0 0

3855 Megha Duta—(मेघदूत) With English introduction and notes by Prof. K. B. Pathak. Poona 1 4 0

3856 Megha-Duta—With commentary in Sanskrit, literal English translation and notes by G. R. Nandigikar. Bombay 1 12 0

3857 Meghadutam—(Purvamegha)—With an English translation by Kedar Nath Bharati and Kshiti Nath Glose, B. A., B. E. Calcutta 2 0 0

३८५८ **मेघदूतम्**—सटीकाद्वय-हिन्दीवङ्गानुवादसहितम्। कलकत्ता १ ४ ०

३८५९ **मेघसन्देशः**—कालिदासकृत। पूर्णसरस्वतीकृतविद्युल्लताव्याख्यासहितः। मद्रास १ ८ ०

३८६० **मेघसन्देश**—अत्युत्तम चित्र सहित पाकेट साइज़। मद्रास ० ४ ०

३८६१ **मेघसन्देश**—दक्षिणावर्तनाथकृत प्रदीपाख्या व्याख्या से समुद्भासित। मद्रास १ ८ ०

३८६२ **मेघसन्देशः**—(मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी व्याख्या तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित) With Mallinatha's Sanskrit commentary and English translation. By G. J. Somayaji, M. A., L. T. Madras 1 12 0

३८६३ **यमुनालहरी**—भाषा टीका सहित। मुम्बई ० १ ६

३८६४ यशस्तिलक—श्रीसोमदेवसूरिविरचित, श्रीश्रुतसागरसूरिकृत व्याख्या सहित पूर्वखंड । मुम्बई ३ १२ ०

३८६५ यशस्तिलक—श्रीसोमदेवसूरिविरचित श्रीश्रुतसागरसूरिकृत व्याख्या सहित । उत्तरखण्ड । दुष्प्राप्य । मुम्बई ५ ० ०

३८६६ यात्राप्रबन्ध—समरपुंगवदीक्षित विरचित । मुम्बई १ ० ०

३८६७ यादवाभ्युदयः—वेदान्तदेशिककृतः । श्रीमदप्पयदीक्षितविरचितव्याख्या-समेतः । ३ भागों में जिल्द सहित । मद्रास ४ ८ ०

३८६८ युधिष्ठिरविजयम्—महाकविश्रीवासुदेवविरचितं राजानकरत्नकण्ठरचितया व्याख्यया संयुतम् । दुष्प्राप्य । मुम्बई १ १२ ०

३८६९ रघुवंशम्—मल्लिनाथकृतटीका-टिप्पणी-वाच्यान्तरान्वय-वङ्गानुवादादिसमेतम् । अध्यापकश्रीहेमन्तकुमारतर्कतीर्थ-संस्कृतम् । कलकत्ता ३ ० ०

३८७० रघुवंश—अरुणागिरिनाथकृतसंस्कृतव्याख्यासहितः । प्रथमो भागः, सर्गाः १–६ मद्रास १ ८ ०

३८७१ रघुवंशकाव्य—कालिदासकृत । मल्लिनाथकृत संजीवनी टीका सहित । स्थूलाक्षर । मुम्बई २ ८ ०

३८७२ रघुवंशम्—सञ्जीवनीटीकासहितम् । कनकलालकृतभावबोधिनीटिप्पण्या सहितम् । सम्पूर्णम् । काशी १ ० ०

३८७३ रघुवंशकाव्य—मल्लिनाथकृत संजीवनी टीका सहित । बारीक अक्षर । मुम्बई १ ० ०

३८७४ रघुवंशम्—(सटीकानुवादम्) श्रीहरिदाससिद्धान्तवागीशभट्टाचार्य्यसम्पादितम् । अस्मिन् पुस्तके आदितः शेषपर्य्यन्तं प्रत्येकश्लोक एव अन्वयः, वाच्यान्तरं, मल्लिनाथकृतटीका, हिन्दीभाषानुवादः, वंगानुवादश्च विद्यन्ते । अस्मिन् विशालपुस्तके प्रायेण सार्द्धसहस्रपृष्ठानि वर्त्तन्ते । ईदृशं रघुवंशसंस्करणमपि एतावन्तं कालं यावन् नाभवदेव । कलकत्ता ४ ० ०

३८७५ रघुवंशम्—मल्लिनाथकृतसंजीवनीटीकासहितम् । कलकत्ता २ ८ ०

३८७६ रघुवंशमहाकाव्यम्—सर्गाः १–५ श्रीमल्लिनाथकृतया संजीविन्या टीकयो-पेतम् । काशी ० १२ ०

३८७७ रघुवंशमहाकाव्यम्—पञ्चसर्गात्मकम् । श्रीमल्लिनाथकृतसंजीविनीटीकया पं० श्रीकनकलालठक्कुरकृतार्थप्रकाशिकाटीकया च समलंकृतम् । बनारस ० ७ ०

३८७८ रघुवंशसर्गचतुष्टयम्—छात्रबोधिनीटीकोपेतं भाषार्थसहितम् । मुरादाबाद ० १४ ०

३८७९ रघुवंश—गुरुनाथविद्यानिधि भट्टाचार्यकृत बंगला और हिन्दी अनुवाद तथा टिप्पणी सहित । ३ ० ०

३८८० रघुवंश—सर्ग १४ मूल । (Precious gem book) Madras 1 12 0

३८८१ रघुवंशमहाकाव्यम्—श्रीकाशीस्थ-राजकीय-प्रथमपरीक्षायां निर्धारितम्। २-४ सर्ग। सुबोधिनीटीका, अन्वय, सरलार्थ आदि सहित। १६३६ तक प्रश्न पत्र सहित। काशी ० ८ ०

३८८२ रघुवंशमहाकाव्यम्—विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादजीमिश्रकृत सान्वय भाषाटीकापदयोजना तात्पर्यार्थ और सरलार्थसहित। ग्लेजकागज। मुम्बई ४ ८ ०

३८८३ रघुवंशमहाकाव्य—सटीक तथा रामकृष्णाख्यविलोमकाव्यसटीक। मुम्बई १ ८ ०

३८८४ रघुवंशमहाकाव्यम्—महाकविकालिदासविरचितम्। महामहोपाध्याय-मल्लिनाथकृतसंजीविनीटीकया तथा पं० ब्रह्मशंकरमिश्रकृतपरीक्षोपयोगिसुधाख्यव्याख्यया सहितम्। भाग १ (सर्ग १-५) १॥), भाग २ (सर्ग ६-१०)— काशी १ ८ ०

३८८५ रघुवंश—Raghuvamśa—Cantos 1-6 with two commentaries (दो टीकाओं सहित) Madras 2 0 0

3886 Raghuvaṃśa (रघुवंशम्) of Kalidāsa. Edited with commentary of Mallinātha, introdnction, translation and critical and exhaustive notes by C. R. Devadhar M. A. and N. G. Suru M. A. (cantos I-XIV). Bombay 7 8 0

३८८७ रघुवंशम्—संजीविन्या समेतम्। अंग्रेजीअनुवाद, आलोचनात्मक टिप्पणी आदि सहित। मुम्बई ४ ० ०

Kalidasa's Raghuvaṃsha—With critical and explanatory notes on the text and commentary, translation of the text, and an essay on the life and writings of the poet—By Krishnarao Mahadeva Jogalekar, M. A. Bombay 4 0 0

3888 Raghuvaṃsha of Kalidasa—Cantos I-V. Edited with a full introduction, a map of India at the time of Kalidasa, text, translation, copious notes, &c. by Prof. N. H. Purandare, M. A. Poona 3 0 0

३८८९ रघुवंशसारभाषा—कालिदास के रघुवंशकाव्य का यह सार भाषा जानने वालों को उपयोगी है। मुम्बई ० १२ ०

३८९० रघुवीरचरित—अति उत्तम। मद्रास १ ४ ०

३८९१ रत्नसमुच्चयः—नानाविधविषयतात्पर्यदिग्दर्शकश्लोकचरणानां संग्रहः। जालीहालोपाह्वयरङ्गसूनुना भीमशर्मणा संकलितः। मुम्बई ० ४ ०

३८९२ रसचन्द्रिका—पर्वतीयपण्डितप्रवरश्रीविश्वेश्वरविरचिता। बनारस १ ० ०

३८९३ रसाब्धिमहाकाव्यम्—श्रीदेवकीनन्दनविरचितम्। मुम्बई १ ४ ०

३८६४ रसार्णवः—महामहोपाध्यायमिश्रोपाह्वशङ्करकृतः। काशी ० ८ ०

३८६५ रसिकप्रिया—कविकुलकुमुदकविकेशवदासप्रणीत। कवीश्वरसरदारकृतसुखविलासिकाटीकासहित। मुम्बई १ ८ ०

३८६६ रसिकाष्टककाव्य—नारायणभट्ट पवर्णीकरकृत। मुम्बई ० ६ ०

३८६७ राक्षसकाव्यम्—सटीकम्। काशीनाथ पाण्डुरङ्ग परब इत्यनेन संस्कृतम्। मुम्बई ० १ ०

३८६८ राक्षसकाव्य—संस्कृतटीका और भाषाटीकासहित। मुम्बई ० २ ०

३८६६ राक्षसकाव्य—सटीक। कविकालिदासविरचित। यह अन्वय, शब्दार्थ, भाषानुवाद, संस्कृतटीका और अंग्रेजी टीकाओं से युक्त होने से सभी के उपयुक्त हो गया है। मुम्बई ० ४ ०

३६०० राघवनैषधीयकाव्य—हरदत्तसूरिकृत, स्वकृतटीकासहित। मुम्बई ० १० ०

३६०१ राजप्रशस्ति—तर्कवाचस्पतिकृतसटीक। कलकत्ता ० २ ०

३६०२ राधाविनोदकाव्य—भाषाटीकासमेत। मुम्बई ० २ ०

३६०३ रामकृष्णविलोमकाव्य—संस्कृतटीकासमेत। मुम्बई ० ४ ०

३६०४ रामकृष्णाख्यं विलोमकाव्यम्—दैवज्ञसूर्यसूरिविरचितं तत्कृतटीकासंवलितम्। ० ४ ०

३६०५ श्रीरामगीतगोविन्द—सटीक। जयदेवकृतगीतगोविन्द के अनुकरण पर इसमें श्रीराम की भक्ति की अति ललित संस्कृत में रागनियां वर्णित हैं। मुम्बई ० १० ०

३६०६ रामचरितम्—अभिनन्दकृतम्। बड़ोदा ७ ८ ०

[The author : Abhinanda was the Court poet of Hāravarsha, probably the same as Devapāla of the Pāla Dynasty of Bengal (Cir. 9th century A. D.) edited by K. S. Ramaswami Shastri.]

३६०७ रामवर्मशतकम्—प्रणेता के. रामपिषारकः। त्रिचूर ० ५ ०

३६०८ रामविजयमहाकाव्यम्—रूपनाथकृतम्। Edited by Pt. Ganapati Lal Jha, M. A. Allahabad 2 0 0

३६०६ श्रीरामशतकम्—भाषाटीकासहितम्। अल्मोड़ानिवासि-पं०मोतीरामत्रिपाठिविरचितम्। मुरादाबाद ० ४ ०

३६१० श्रीरामसौन्दर्यलहरी—सार्वभौममहाकविविरचितावेङ्कभट्टकृतव्याख्यया रामस्वामिवर्मकृतद्रविडभाषाविवरणेन च समेता। श्रीरङ्गम्

३६११ रामायणमञ्जरी—क्षेमेन्द्रविरचित। मुम्बई ३ ४ ०

३६१२ रामोदन्तम्—With footnotes &c. श्रीरङ्गम् ० ४ ०

३६१३ रामोदन्तम्—Text with explanatory footnotes and English translation. 0 5 0

३६१४ रावणवहोमहाकाव्य—सेतुबन्धविरचित। २भाग। दुष्प्राप्य, अतिस्थूलाक्षर, पुष्ट कागज। ३५ ० ०

Ravana Vaho Mahakavya of Setubandha—Original Prakrit text edited together with a German translation, notes and an index of words by S. Goldschmidt. Complete in two Volumes. 35 0 0

३६१५ रावणार्जुनीयकाव्य—काश्मीरिक श्रीभट्टभीमविरचित। मुम्बई १ ४ ०

३६१६ राष्ट्रौढवंश महाकाव्य—रुद्रकविविरचित। मुम्बई १ १२ ०

३६१७ रुक्मिणीकल्याणम् (काव्यम्)—राजचूड़ामणि दीक्षितकृतम्—With an English Introduction by T. R. Chintamani. M. A. 1 0 0

६१८ रुक्मिणीकल्याणमहाकाव्यम्—श्रीराजचूडामणि दीक्षितविरचितम्। संस्कृत व्याख्यायुतम्। chapters 1 and 2 only. Madras 2 0 0

३६१६ रुक्मिणीहरणम्—महामहोपाध्याय श्रीयुक्त हरिदास सिद्धान्तवागीश भट्टाचार्यप्रणीतम्। कलकत्ता १ ८ ०

३६२० लक्ष्मीकाव्य—(सुबोधिनी टीका सहित) श्रीलक्ष्मीनाथ जी विरचित। लाहौर १ ४ ०

३६२१ लक्ष्मीसहस्रम्—श्रीमद्वेङ्कटाध्वरिविरचितं, श्रीनिवासपण्डितविरचितसुबोधिनी-व्याख्यया अवतरणेन निःश्रेणिकया च सम्भूषितम्। ८ खण्डेषु सम्पूर्णः। काशी १२ ० ०

३६२२ लघुकाव्यानि—(Minor Poems) श्रीनीलकण्ठदीक्षितविरचित। इसमें ७ पुस्तकें हैं। मद्रास ० १३ ०

३६२३ ललितकाव्यम्—पं० कन्हैयालालशर्मणा निर्मितम्। हिन्दीभाषानुवाद सहित। बनारस १ ० ०

३६२४ ललितरामचरित्र काव्य—सटीक। मुम्बई १ ८ ०

3925 Lalla Vakyani (लल्लावाक्यानि)—Or the wise sayings of Lal Ded, a mystic poetess of ancient Kashmir. Edited with an English translation, notes and a vocabulary by Sir G. Grierson and L. D. Barnett. London 15 0 0

३६२६ लेखपद्धति— मुम्बई २ ० ०

३६२७ वज्जालग्गम्—मूलमात्र। A Prakrit Poetical work on Rhetoric. Edited by Julis Laber. 2 Fas. Calcutta 1 8 0

३६२८ वल्लभाचार्यचरित—मुरलीधरदासकृत। Hrsg. Von Vasantarama sharman. Bombay 0 12 0

३६२९ वसन्तविलासमहाकाव्य—बालचन्द्रसूरिकृत। मुम्बई १ ८ ०

३६३० वसन्तशतक—सटीक, संस्कृत । इसमें वसन्त ऋतु का वर्णन बड़ा ही रोचक है । मुम्बई ० ५ ०

३६३१ वाणीभूषणम्—श्रीदामोदरमिश्रविरचितम् । मुम्बई ० ८ ०

३६३२ विजयशतकम्—श्रीरणजीतसिंहात्मजदिलीपसिंहनृपविजयवर्णनम् । विद्वद्वर-धरणीधरेण विरचितम् । मुम्बई ० ४ ०

३६३३ विटराजविजयः— मद्रास ० ८ ०

३६३४ विदग्धमुखमण्डनकाव्य—धर्मदाससूरिविरचित सटीक । इसमें काव्य के अपूर्व भेद दिखलाये गये हैं । मुम्बई ० ६ ०

३६३५ विदग्धमुखमण्डन—पं० परमेश्वरानन्दविरचित सरलसंस्कृत व्याख्या सहित । लाहौर १ ० ०

३६३६ विद्यासुन्दर और चौरपञ्चाशिका—भाषा टीका सहित । मुम्बई ० ४ ०

३६३७ विद्वन्मोदतरङ्गिणीकाव्य—चिरंजीवभट्टाचार्यरचित गद्यपद्यभूषित । इसमें सर्वशास्त्र और सर्वसम्प्रदायों के सिद्धान्त दिखाये गये हैं । विद्वानों को अतीव उपयोगी है । मुम्बई ० ४ ०

३६३८ विष्णुभक्तिकल्पलताकाव्य—बौद्धकवि पुरुषोत्तम विरचित, महीधरविरचित टीका सहित । मुम्बई ० १० ०

३६३९ वीरेन्द्रशतकम्—अर्थात् वीरेन्द्रजीवनघटनास्तोत्रम् । भाषानुवादसहितम् । ले० श्रीवृहद्बल संयमी शास्त्री साहित्याचार्य । ० ३ ०

३६४० वृन्दसतसई—महाकवि वृन्दरचित । परिशोधित नवीन संस्करण । वैसे तो हिन्दी में अनेक सतसइयां हैं । परन्तु वृन्दसतसई अपने स्थान पर एक ही है । इसमें श्रृंगार और नायक नायिकाभेद वर्णन नहीं है । यह विशुद्ध नीति का ग्रन्थ है । एक एक दोहे में नीति के तत्त्व कूट कूट कर भर दिये गये हैं । भाषा बड़ी सरल है और प्रत्येक दोहे में दृष्टान्त बड़े मनोरञ्जक हैं । हमने इसका नवीन संस्करण सरल हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित कराया है । विद्यार्थियों तथा सर्व साधारण के लिए भी नीतितत्त्व को जानने के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है । १६० पृ० की पुस्तक का मूल्य केवल ० १२ ०

३६४१ वेमभूपालचरित्रम्—वामनभट्टबाणेन विरचितम् । मद्रास २ ० ०

३६४२ वैराग्यशतक—भर्तृहरिकृत । कृष्णशास्त्री महाबलकृत टीका सहित । मुम्बई ० ६ ०

३६४३ वैराग्यशतक—साधु हरदयालकृत भाषा टीका सहित छन्दोबद्ध सजिल्द । मुम्बई ० १२ ०

३६४४ वैराग्यशतक—श्रीरामस्वरूपशर्माकृत अन्वय पदार्थ और भाषार्थ सहित । मुरादाबाद

३६४५ वैराग्यशतक—सचित्र बा० हरिदासजीकृत भाषा टीका तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित । कलकत्ता ५ ० ०

३९४६ **वैराग्यशतकम्**—The Vairagya Shatakam or the hundred Verses on Renunciation by Bhartrihari translated into English with original Sanskrit text and comments. Mayavati. 1 4 0

३९४७ **व्याख्यानदिवाकर**—सम्पादक पं० कालूराम शास्त्री । २ भाग । इटावा ३ ८ ०

३९४८ **व्याख्यानमुक्तावली**—अर्थात् विषयानुक्रमोक्तेश्वरधर्मविद्यादि-विषयपरकवेद-शास्त्रादिसद्वाक्यरूपमुक्तानां संग्रहात्मको ग्रन्थः । मुम्बई ० १० ०

3949 Cakrasakhā, the Companion of God—By Swami Śrī Ānanda Āchārya. Scandinavia 4 0 0

३९५० **शतकावलिः**—(महिषशतकम्, पदारविन्दशतकम्, स्तुतिशतकम्, मन्दस्मितशतकम्, कटाक्षशतकम्) । कलकत्ता ० १४ ०

३९५१ **शतश्लोकिरामायणकाव्यम्**—पं० सदानन्दशर्मणा विरचितम् । श्रीदेवानन्दशर्मप्रणीतविषमपदप्रकाशिकाख्यया व्याख्यया समलंकृतम् । मुम्बई ० ६ ०

३९५२ **शतोपदेश**—अर्थात् सारभूत १०० दोहे । श्री पं० श्रद्धाराम विरचित । ० १ ०

३९५३ **शम्भुचर्योपदेशः**—An adaptation into Sanskrit verse in an abridged form, of "A Day with Sambhu" by Mr. K. S. Venkataramani. 0 4 0

३९५४ **शांकरीसंगीतम्**—जयनारायणकविविरचित । कलकत्ता ० ६ ०

३९५५ **शिवकर्णामृत**— मद्रास ० ७ ०

३९५६ **शिवपरिणयचरितकाव्य**—काश्मीरभाषापद्यात्मक । सम्पूर्ण । कलकत्ता ५ ४ ०

३९५७ **शिवभारतम्**—मूलमात्र । पूना १ ५ ०

३९५८ **शिवलीलामृत**—हिन्दीभाषावार्त्तिक । दुष्प्राप्य । मुम्बई १ ० ०

३९५९ **शिवलीलार्णवः**—नीलकंठदीक्षितविरचितः । सचित्रः । मद्रास २ ८ ०

३९६० **शिवलीलार्णवः**—नीलकण्ठदीक्षितविरचित सचित्र सुन्दर सजिल्द । मद्रास ४ ० ०

३९६१ **शिशुपालवधम्**—महाकवि-श्रीमाघ-प्रणीतम् । महामहोपाध्यायकोलाचल-श्रीमल्लिनाथसूरिविरचितया सर्वंकषाख्यया टीकया समन्वितम् । महामहोपाध्याय-श्रीयुक्तहरिदास-सिद्धान्तवागीशभट्टाचार्येण प्रणीतया माधुरीसमाख्यया टिप्पण्या अन्वयेन वंगानुवादेन च समेतम् । कलकत्ता ५ ० ०

३९६२ **शिशुपालवधम्**—माघकृतम् । धर्मदत्तोपाध्यायकृतया 'सुधया' समन्वितम् । (प्रथमद्वितीयसर्गौ) । काशी ० ८ ०

३९६३ शिशुपालवधम्—श्रीमन्माघकविनिर्मितं श्रीवल्लभदेवकृतया सन्देहविषौषधि-व्याख्यया महामहोपाध्यायश्रीमल्लिनाथकृतया सर्वंकषाख्यया च समेतम् । सजिल्द ग्लेज कागज-३) । रफ कागज— बनारस २ ४ ०

३९६४ शिशुपालवध—(माघकाव्य] मल्लिनाथकृतटीकासहित । इसमें नारद जी को भगवद्दर्शन, शिशुपालवधार्थ उद्धव, बलराम तथा श्रीकृष्ण को निमन्त्रण, द्वारकासमुद्र-वर्णन, रैवतपर्वतवर्णनादि २० सर्ग हैं । विद्यार्थीलोग इसे पढ़कर इसके द्वारा प्रसंगोपात उदाहरण दे सकते हैं । मुम्बई ३ ८ ०

३९६५ शिशुपालवधकाव्य—माघकृत, मल्लिनाथकृतसर्वंकषाटीकासहित । मुम्बई २ ८ ०

३९६६ शिशुपालवधम्—महाकविश्रीमन्माघप्रणीतम । श्रीमल्लिनाथसूरिविरचित-सर्वंकषाख्यया टीकया कविकाव्यविमर्शप्रभृतिभिश्च समलंकृतम् । कलकत्ता ४ ० ०

३९६७ शिशुपालवधमहाकाव्यम्—सर्गद्वयात्मकं, काशीस्थराजकीयमध्यमापरीक्षा-द्वितीयवर्षे निर्धारितम् । श्रीगौरीनाथशर्मणा विरचितया सुबोधिन्या व्याख्यया संक्षिप्तार्थया च संवलितम् । काशी ० १० ०

३९६८ शिशुपालवध— माघकविकृत । मल्लिनाथकृत टीकासहित । (सूत्राङ्क-अन्वयनिर्देश-संक्षिप्त-कथा टिप्पण्यादिसमन्वित) कलकत्ता ५ ० ०

३९६९ शिशुपालवध—(माघकाव्य) पूर्वार्द्ध ९ सर्गों में । मुम्बई २ ० ०

३९७० शिशुपालवध—Cantos I-IV with the commentary of Mallinatha. Edited with an introduction, notes and translation. By M. S. Bhandare B. A., LL. B. 3 0 0

३९७१ शिशुपालवधम्—श्रीमन्माघविनिर्मितम् । सान्वय-मल्लिनाथकृतया टीकया समेतम् । सर्गद्वयात्मकम् ।). सर्गत्रयात्मकम्— काशी ० ६ ०

3972 Shishupala-Vadham—Cantos I and II with the commentary of Mallinatha and English and Bengali translations, &c. &c., by Sharadaranjan Ray Vidyavinoda, M. A. Calcutta 3 0 0

3973 Śiśupālavadha of Māgha, Canto 1 with English Notes and Translation. By C. Sankara Rama Sastri. 0 14 0

३९७४ शुकसप्तति—संस्कृत मूलमात्र, शब्दानुक्रमणिकासहित । ९ ० ०

The Cuka-Saptati—Edited with an index and notes by Richard Schmidt. Text iu original Sanskrit. 9 0 0

० ५ ०

३९७५ शुकसन्देशः—

३९७६ **शृंगारतिलकम्**—महाकविकालिदासविरचितम् । वासुदेवलक्ष्मणशास्त्री पणशीकर इत्यनेन संस्कृतम् । मुम्बई ० १ ०

३९७७ **शृंगाररसमण्डनम्**—रससर्वस्वं दानलीला उल्लासश्च । मुम्बई ३ २ ०

३९७८ **शृंगारशतक**—भर्तृहरिकृत, कृष्णशास्त्री महाबलकृतटीका सहित । मुम्बई ० ५ ०

३९७९ **शृङ्गारशतक**—(सचित्र) हरिदासवैद्यकृत हिन्दी अनुवाद सहित सजिल्द । कलकत्ता ३ ८ ०

३९८० **शृङ्गारादिनवरसनिरूपण**—भाषाटीकासमेत । मुम्बई ० ६ ०

३९८१ **श्रीकण्ठचरितकाव्य**—श्रीमङ्खकविकृत, जोनराजकृतटीकासहित । इसमें २५ सर्ग हैं, जिनमें सज्जन दुर्जन लोगों का वर्णन, वसन्तवर्णन, कैलासपर्वतवर्णन, शिववर्णन आदि परममनोहर विषयसविस्तर वर्णित हैं । मुम्बई २ ८ ०

३९८२ **संक्षिप्तरघुवंशम्**—श्रीगोपीनाथमहापात्रकाव्यतीर्थेन सम्पादितम् । मद्रास ० ६ ०

३९८३ **संस्कृतकविचर्चा**—प्रो० बलदेव उपाध्याय, एम० ए०, साहित्याचार्य । काशी २ ० ०

३९८४ **संस्कृतपद्यावली**—Selections from Sanskrit Poetry with brief notes. By P. V. Kane. M. A. Bombay 1 2 0

३९८५ **श्रीसच्चिदानन्दविजयः**— मद्रास ० ४ ०

३९८६ **सदुक्तिकर्णामृतम्**—महाकविश्रीश्रीधरदासप्रणीतम् । १० ० ०

३९८७ **सदुक्तिकर्णामृत**—श्रीधरदासप्रणीत । २ भाग । कलकत्ता १ ८ ०

३९८८ **सनातनधर्मविजयम्**—महाकाव्यम्-कविवरश्रीमदखिलानन्दशर्मप्रणीतं तत्कृतविजयवैजयन्तीटीकया समेतम् । प्रयाग ४ ० ०

3989 Sapta Shatakam of Hall—Edited with text, introduction, German translation, various recensions, concordance, full index and notes by Albrecht Weber. Complete in two volumes. Leipzig 20 0 0

३९९० **समयमातृकाकाव्य**—क्षेमेन्द्रविरचित । मुम्बई ० १० ०

३९९१ **समयोचितपद्यमालिका**—प्रासङ्गिकश्लोकचरणान्तःपातिसंग्रहः । मुम्बई ० ६ ०

३९९२ **सहृदयानन्दकाव्य**—कृष्णानन्दविरचित, इसमें १५ सर्ग हैं, विद्यार्थियों को संस्कृत की व्युत्पत्ति लाभ करने में बड़ा उपयोगी है । मुम्बई ० १० ०

३९९३ **साम्बपञ्चाशिका**—साम्बकविप्रणीत, क्षेमराजकृत टीका सहित । मुम्बई ० ४ ०

३९९४ **साहित्यरत्नमञ्जूषा**—कृष्णाचार्यप्रणीत । मद्रास १ ० ०

३९९५ सिद्धार्थमहाकाव्यम्—श्री अनूपशर्मकृतम्। मुम्बई ३ ० ०

३९९६ सुदर्शनशतकम्—श्रीकूरनारायणमुनिप्रणीतम्। श्रीसुदर्शनमाधवार्यविरचित-भाष्योपेतम्। श्रीसुदर्शनकवचं च। मुम्बई ० १० ०

३९९७ सुभाषितकौस्तुभ— काञ्ची ० ५ ०

३९९८ सुभाषितत्रिशती—(भर्तृहरिशतकत्रय) श्रीरामचन्द्र बुधेन्द्र विरचित 'सहृदयानन्दिनी' व्याख्या सहित। मुम्बई १ ४ ०

३९९९ सुभाषित नीवि— मद्रास ० ८ ०

Subhāṣita Nīvi—of Shri Vedanta Deshika with the commentary called Ratnapitika. 0 8 0

४००० सुभाषितसुधारत्नभाण्डागारम्—अथवा सुधातिशायिसुभाषितरत्नगर्भ-संदर्भः सटिप्पणीकः। मुम्बई ६ ० ०

४००१ सुभाषितावली—श्रीमद्वल्लभदेवसंगृहीता। मुम्बई ५ ० ०

४००२ सुभाषितरत्नभाण्डागारम्—नाम विविधकाव्यनाटकसुभाषितादिग्रन्थेभ्यः परबोपाह्वपाण्डुरङ्गात्मजकाशिनाथशर्मणा सुसमुद्धृतः सहृदयहृदयाह्लादकः सूक्तिसंग्रहः। मुम्बई ३ ८ ०

४००३ सुभाषितरत्नसंदोहः—श्रीमदमितगतिविरचितः। मुम्बई ० १२ ०

४००४ सुभाषितरत्नाकर— मुम्बई २ ४ ०

४००५ सुभाषितसन्दोहः—अमितगतिविरचित। मूलपाठ जर्मनअनुवाद तथा शब्दानुक्रमणिका सहित। ८ ० ०

Subhāṣita Sandoha of Amitagati—Edited with notes, German translation and an Index of words by Richard Schmidt. Text in original Sanskrit. Foreign 8 0 0

४००६ सुभाषितसार—भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ३ ०

४००७ सुरथोत्सव—श्रीसोमेश्वरदेव विरचित। मुम्बई ० १४ ०

४००८ सूक्तावली—खुले पत्रे मूल। मुम्बई

४००९ सूक्तावलीसुभाषित— मुम्बई ० २ ०

४०१० सूक्तिमुक्तावलिः—जल्हणकृता। Edited by E. Krsihnam-āchārya. Baroda 11 0 0

४०११ सूक्तिसंग्रह—कवि राक्षस कृत। मुम्बई ० १ ०

४०१२ सूक्तिसुधातरंगिणी—२ तरंग। Together with English renderings. 2 0 0

४०१३ सूर्यशतक—सटीक। मुम्बई ० ७ ०

४०१४ सेतुबन्धमहाकाव्य—श्रीप्रवरसेनविरचित। श्रीरामदासभूपतिप्रणीतटीका-सहित। मुम्बई ३ ० ०

4015 Saundaranand of Asvaghosa—Critically edited with notes by E. H. Johnstone, M. A. 9 6 0

4016 Saundara-Nanda—or Nanda the fair—Translated into English by E. H. Johnstone. Foreign. 9 6 0

४०१७ **सौन्दर्यलहरी**—श्रीशंकरभगवत्पादाचार्यविरचित। मद्रास ० ३ ०

४०१८ **सौन्दर्यलहरी**—सटीक। इसमें देवी की भक्तिमयस्तुति है। मुम्बई ० ४ ०

४०१९ **श्रीसौन्दर्यलहरी**—श्रीमच्छंकराचार्यरचिता। पं० गौरीशंकरेण रचितया मनोरंजनीनामकभाषाटीकया सहिता। बनारस १ ० ०

४०२० **सौन्दर्यलहरी** (Ocean of Beauty)—श्रीशंकरभगवत्पादकृता। with transliteration, Engish translation, Commentary, Diagrams and an appendix on Prayoga by Pt. Subrahmanya Sastri & T. R. Srinivasa Ayyangār, B. A., L.T. Madras. 1937. 3 8 0

४०२१ **स्तवमाला**—श्रीरूपदेवविरचिता श्रीजीवदेवविरचितभाष्यसमेता। मुम्बई २ ० ०

४०२२ **स्तुतिकुसुमाञ्जलिः**—पं० प्रेमवल्लभत्रिपाठीकृतभाषाटीकासहित। बनारस ४ ० ०

4023 Syānandūrapuravarṇana-Prabandha स्यानन्दूरपुरवर्णनप्रबन्धः—by H. H. Svati Sri Rama Varma Maharaja, with the commentary, Sundarī of Rājarāja Varma Koil Tampuran. Madras 2 0 0

४०२४ **हंससन्देशः**— मद्रास ० ४ ०

४०२५ **श्रीहनुमद्दूतम्**—कविराजाशुकविना श्रीनित्यानन्दशास्त्रिणा विरचितम्। हिन्दीपद्यानुवाद और टिप्पणीसहित। मुम्बई ० ८ ०

४०२६ **हम्मीरमहाकाव्यम्**—श्रीजयचन्द्रसूरिकृतम्। मूलमात्र। सजिल्द। दुष्प्राप्य। ६ ० ०

४०२७ **हरचरितचिन्तामणिकाव्य**—राजानकजयरथकृत। मुम्बई १ ८ ०

४०२८ **हरिसौभाग्यम्**—श्रीदेवविमलगणिविरचितं स्वोपज्ञया व्याख्यया समलंकृतम्। दुष्प्राप्य। मुम्बई १० ० ०

४०२९ **हरिहरसुभाषित**—यह अत्युत्तम सुभाषित ग्रन्थ है। मुम्बई ० ८ ०

4030 Altar Flowers, a bouquet of choicest Sanskrit hymns with English translation. By Swami Vireswarananda. 1 4 0

4031 The Birth of the War-god—A poem by Kalidasa translated from the Sanskrit into English verse. By T. H. Griffith, M. A. Allahabad 3 0 0

4032 The Book of the Cave Gaurisankara Guhā—By Śri Ananda Acharya. London 1 8 0

4033 Etudes sur Aryadeva et son Catuḥśataka—Chapitres VIII-XVI par P. L. Vaidya. Paris 6 0 0

4034 Zur Geschichte der altindischen Prosa—M. besond. Berocksichtigung d. Pros Poet. Erzahlung. By H. Oldenberg. Foreign 7 8 0

4035 Indian Poetry and Indian Idylls—By Sir Edwin Arnold, M. A., K. C. I. E., C. S. I., complete, popular edition. London 10 0 0

4036 The Indische Liebeslyrik—The Indian love poems, being a selection from the Indian love-books Gita-govinda, Nalodaya &c. translated in verse. Edited by Helmuth V. Glasenapp. Bound, more than ten illustrations. Foreign 4 0 0

4037 Love-Pems in Hindi—with English translation by O. C. Gangoly, Fellow of Asiatic Society of Bengal, 29 Illustrations and 4 colour plates. Calcutta 5 0 0

4038 Minor Poems of Nīlakaṇṭha Dīkshita—Containing. कलिविडम्बन, सभारञ्जनशतक, वैराग्यशतक, शान्तिविलास, अन्यापदेशशतक, आनन्दसागरस्तव, शिवोत्कर्षमञ्जरी । मद्रास ० १२ ०

4039 The Nirguṇa School of Hindi Poetry—An Exposition of Mediaeval Indian Santa Mysticism. By Pandit Pītāmbar Datta Barthwal, M. A., LL. B., D. Litt. Benares 6 12 0

4040 Saki, The Comrade—By Swāmī Śri Ananda Acharya. Scandinavia 2 8 0

4041 Selection from Hindi Literature—Compiled by L. Sita Ram, B. A., Sahityaratna. This work is divided into 6 books. Each book has an introduction in English and contains extracts from works of Classical Hindi writers on the subject. 36 0 0

4042 Selections from Sanskrit Inscriptions. Two parts. From 2nd century to 8th century A. D. Introductory, Historical and Literary notes and a complete translation into English by D. B. Diskalkar, M. A. 4 0 0

4043 The Shahnama of Firdausi—Done into English by Arthur George Warner, M. A. and Edmond Warner, B. A. Nine volumes. London 72 0 0

4044 Songs of Sadashiva Brahmendra— Madras 0 6 0

4045 Specimens of Old Indian Poetry. By Ralph T. H. Griffith, M. A. Allahabad 1 8 0

4046 The Spirit of Oriental Poetry—By Puran Singh. Bombay 8 8 0

4047 Vaishnava Lyrics—Done into English Verse by Surendra Nath Kumar, Nand Datta and John Alexander Chapman. Foreign 4 8 0

4048 Versuch einer Literatur der Sanskrit Sprache—Von Freidrich Adelung. Foreign 2 8 0

नाटक-ग्रन्थाः

४०४९ अद्भुतदर्पणनाटक—महादेवविरचित। मुम्बई ० १२ ०

४०५० अनर्घनलचरित्र महानाटक—भाषा। पंडित सुदर्शनाचार्यशास्त्रिप्रणीत। इसमें भारतोक्त नलदमयन्ती की समग्र कथा लिखी है। मुम्बई १ ४ ०

४०५१ अनर्घराघवम्—मुरारिकवि कृत। पं० जीवानन्दकृतव्याख्या सहित। कलकत्ता २ ८ ०

४०५२ अनर्घराघव नाटक—मुरारिकृत। रुचिपत्युपाध्यायकृत टीका सहित। मुम्बई २ ० ०

४०५३ अभिज्ञानशाकुन्तलम्—महाकविकालिदासप्रणीतम्। व्याकरणाचार्य-दर्शनाचार्य-न्यायशास्त्रि-श्रीगुरुप्रसादशास्त्रिकृतया अभिनवराजलक्ष्म्या विराजितम्। काशी १ १ ०

४०५४ अभिज्ञानशाकुन्तलम्—राघवभट्टकृतार्थद्योतनिकया समेतम्। नारायण-बालकृष्ण गोडबोले, बी० ए०, इत्यनेन संशोधितम्। मुम्बई १ ८ ०

४०५५ अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक—राघवभट्टकृतार्थद्योतनिका और श्रीनिवासा-चार्यकृत भाष्यसहित— २।।), भाषाटीका— मुम्बई १ ८ ०

४०५६ अभिज्ञानशाकुन्तलम्—साहित्याचार्य-साहित्यवारिधि खिस्ते इत्युपाह्व पं०

श्रीनारायणशास्त्रिभिः प्रणीतया 'लक्ष्मी'नामिकया परीक्षोपयोगिटीकया समुल्लसितम्। साधारण संस्करण १।॥), रजतजुबिली संस्करण— काशी २ ८ ०

४०५७ अभिज्ञानशाकुन्तलम्—गोश्रीत्रयोदशराजकुमारश्रीरामवर्मणा एरणाकुल-कलाशालाप्रधानसंस्कृतपण्डितेन के०रामपिषारकेण च विरचितया सारार्थदीपिकयालंकृतम्। त्रिचूर १ ८ ०

४०५८ अभिज्ञानशाकुन्तलम्—सटीकानुवादम्। कलकत्ता ३ ० ०

४०५९ अभिज्ञानशाकुन्तलम्—कालिदासविरचितम्। स्थूलाक्षर सजिल्द कार्ल-कैप्लरमहाशयेन संशोधितम्। विलायत ५ ० ०

Kalidasa's Shakuntala—Edited in the original Sanskrit and Prakrit with Prakrit index, list of metres notes. Strophen register extra by Carl Cappeller. Bold type Bound. Foreign 5 0 0

४०६० अभिज्ञानशाकुन्तलम्—'किशोरकेलि'समाख्यया टीकया 'रुचिरा'भिधान-भाषानुवादेन विभासितम्। काशी १ १४ ०

4061 Abhijnana Shakuntala—(अभिज्ञानशाकुंतल) With Sanskrit commentary, English translation and notes by M. R. Kale. Bombay 4 8 0

4062 Abhijnana-Sakuntalam of Kalidasa—With Sanskrit foreword and commentary by Satavadhana Srinivasacharya and English introduction, translation and notes by a Master of Arts. Madras 3 8 0

4063 Abhijñana-Śākuntala of Kalidasa—Edited with an introduction, a complete translation in English, a Summary and critical appreciation, &c. By A. B. Gajendragadkar. Bombay 4 8 0

4064 Abhijñāna-Śākuntalam (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)—Edited with an exhaustive introduction, translation and critical and explanatory notes, by Prof. C. R. Devadhar. M. A. and N. G. Suru, M. A. Bombay 3 0 0

4065 Abhijñān Śākuntalam (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)—With English notes by N. B. Godbole. Bombay 2 0 0

4066 Abhijnan-Sakuntalam of Kalidasa—By Saradaranjan Ray, M. A. Revised and enlarged with text and University questions, &c. by Kumudaranjana Ray, M. A. Calcutta 3 8 0

४०६७ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**—महाकवि कालिदास प्रणीत, अंग्रेजी अनुवाद-सहित। विलायत १८ १२ ०

Shakuntala—A Sanskrit drama in seven acts by Kalidasa. The Devanagari recension of the text edited with literal English translations of all the metrical passages, Schemes of the metres, and notes, critical and explanatory, by Monier Williams, M. A., D. C. L. Text in original Sanskrit, bold type. 18 12 0

४०६८ **अभिषेकनाटकम्**—भासकविरचितम्। महामहोपाध्याय पं० वी० वेङ्कट-रामशास्त्रिणा सम्पादितं व्याख्यया सनाथीकृतं च। १ ० ०

४०६९ **अमृतोदय नाटक**—गोकुलनाथकृत। मुम्बई ० ८ ०

4070 Awimaraka—Schauspiel von Bhasa ubersetzt von Hermann Weller. Leipzig 4 8 0

४०७१ **आश्चर्यचूडामणिः**—महाकविश्रीशक्तिभद्रविरचितनाटकरत्नं सव्याख्यम्। मद्रास १ ८ ०

४०७२ **आश्चर्यचूडामणिः**—महाकविश्रीशक्तिभद्रविरचितं नाटकरत्नं सव्याख्यम्। खण्डूडीत्युपाह्वेन श्रीपण्डितविजयानन्दशास्त्रिणा सम्पादितम्। उत्तम संस्करण २), सुलभ संस्करण— १ ८ ०

4073 Ashcharyachudamani (Wonderful Crest-Jewel) of Shaktibhadra—English translation by C. Shankar Rama Shastri, M. A., B. L. Madras 1 4 0

४०७४ **उत्तररामचरितम्**—महाकविश्रीभवभूतिप्रणीतम्। महामहोपाध्यायभारता-चार्य-श्रीयुक्तहरिदाससिद्धान्तवागीशभट्टाचार्येण प्रणीतया सर्वार्थबोधिनीसमाख्यया टीकया तत्कृत-वंगानुवादेन च सहितम्। कलकत्ता २ ८ ०

४०७५ **उत्तररामचरितम्**—(महाकविभवभूतिप्रणीतम्) श्रीगुरुनाथविद्यानिधि-कृतया सर्वार्थसंवादिन्या उत्तरदीपिकाख्यया टीकया कविकाव्यसमालोचनहिन्दीभाषावंगभाषानु-वादान्वयादिभिः समलंकृतम्। कलकत्ता ३ ४ ०

4076 English Notes and Translation of Bhavabhūti's Uttararāmacharita by C. Sankara Rama Sastri. 2 0 0

४०७७ **उत्तररामचरितम्**—महाकविश्रीभवभूतिप्रणीतं वीरराघवकृतटीकासहितम्। मुम्बई १ ० ०

४०७८ **उत्तररामचरितम्**—महाकविश्रीभवभूतिविरचितं नाटकरत्नं नारायणविर-चितया भावार्थदीपिकया व्याख्यया समलंकृतम्। मैलापुर १ ८ ०

४०७९ **उत्तररामचरितम्**—पं० जीवानन्दकृतटीकासहितम्। टाइप। कलकत्ता ३ ८ ०

४०८० उत्तररामचरितम्—मूल। कलकत्ता १ ४ ०

4081 Uttara-Charitam of Bhavabhuti—With Sanskrit Commentary, English translation, critical and explanatory notes, and introduction by Saradaranjan Vidyavinoda, M. A. Calcutta 3 8 0

४०८२ उत्तररामचरितम्—With the commentary of घनश्याम and with notes and introduction by P. V. Kane, M. A., LL. M. and translation by C. N. Joshi, M. A. 4 0 0

4083 Uttara Rama Charita—With English translation by V. S. Patwardhan. 4 6 0

४०८४ उत्तररामचरितम्—Text only, edited by Dr. S. K. Belvalkar. Poona 1 8 0

4085 Uttara Ramacharita (उत्तररामचरितम्)—With Sanskrit commentary, English notes and translation by M. R. Kale. Bombay 4 0 0

4086 Rama's Later History or Uttara Ramacharita—An ancient Hindu drama by Bhavabhūti, edited with introduction, English translation, notes and variants &c., by Shripad Krishna Belvalkar. Bound with gold letters. 13 6 0

४०८७ उन्मत्तराघवप्रेक्षाणक—भास्करकविविरचित। मुम्बई ० ३ ०

४०८८ ऊरुभङ्गम्—महाकविभासप्रणीतम्। व्याकरणाचार्येण पं० श्रीधरशास्त्रिणा विरचितया प्राज्ञतोषिणीसमाख्यया व्याख्यया हिन्दीभाषया टिप्पण्या च समेतम्। ० १० ०

४०८९ कंसवधनाटक—शेषकृष्णकृत। मुम्बई ० ८ ०

४०९० कमलिनीकलहंस—राजा चूडामणिदीक्षितविरचित। मद्रास ० ८ ०

४०९१ कर्णसुन्दरीनाटक—बिल्हणकृत। मुम्बई ० ८ ०

४०९२ कर्पूरमञ्जरीनाटिका—राजशेखरकृत पं० जीवानन्दकृतटीकासहित। कलकत्ता ० १० ०

४०९३ कर्पूरमञ्जरी—राजशेखरकृत, वासुदेवकृतटीकासहित और बालभारत-नाटक। मुम्बई १ ० ०

४०९४ कर्पूरमञ्जरी—मूलप्राकृतपाठ, शब्दानुक्रमणिका तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित। २२ ६ ०

Karpura-Manjari—A drama by the famous poet Rajashekhara, critically edited in the original Prakrit with

a glossarial index, and an essay on the life and writings of the poet by Sten Konow, and translated into English with notes by Charles Rockwell Lanmann. Bound with gold letters. Text in original Prakrit in bold type. 22 6 0

४०९५ **कल्याणसौगन्धिकम्**—(नामकव्यायोग) कविनीलकण्ठविरचित । यह एक प्रचीन अतीव अद्भुत नाटक ग्रन्थ है । इसमें तीन नाटक उपलब्ध हैं, एक का रचयिता तो वलियतावलियताम्बुरान है, दूसरा विश्वनाथकृत है जिसका यथार्थ नाम सौगन्धिकाहरण है, तीसरा नीलकंठकविकृत व्यायोग है । इन तीनों की कथावस्तु महाभारत के वनपर्व से ली गई है । बड़ा रोचक नाटक है । छपाई कागज बहुत ही उत्तम है । लाहौर ० ६ ०

४०९६ **कायापलटनाटक**—भाषा में वेदान्तविषयकनाटक । आगरा ० ४ ०

४०९७ **कुन्दमाला**—श्रीमहाकवि-दिङ्नागप्रणीता कवितार्किक पं० नृसिंहदेवशास्त्रिणा दर्शनाचार्येण विरचितया सौरभोल्लासिनीनामव्याख्यया समुद्भासिता । सजिल्द । १ १२ ०

४०९८ **कुन्दमाला**—दिङ्नागप्रणीत । A Sanskrit drama newly discovered. Sanskrit text edited by R. Kavi and R. Shastri 1 8 0

4099 The Jasmine Garland (Kundamālā)—Translated into English by A. C. Woolner. London 4 4 0

४१०० **कुन्दमाला**—Sanskrit commentary and English translation by Prof. Veda Vyasa, M. A., Lahore 3 8 0

4101 Diṅnāga's Kundamālā (The Jasmine Garland) by Jaichand and Bhimsen. Lahore 3 0 0

४१०२ **श्रीकृष्णनाटकम्**— मद्रास ० १४ ०

४१०३ **श्रीकृष्णचन्द्राभ्युदयम**—(छायानाटकम्) यह नाटक संस्कृतभाषा में कविशिरोमणिमहामहोपाध्यायशंकरलालशास्त्री का रचा हुआ है । और उस पर श्रीहाथीभाई शास्त्री ने 'ज्योत्स्ना' नाम की सुन्दर टीका लिखी है । यह संस्कृत भाषा के अभ्यासियों और रसिकों के पढ़ने योग्य ग्रन्थ है । १ ४ ०

४१०४ **कौण्डिन्यप्रहसनम्**—A delightful comic play with notes. Madras 0 8 0

४१०५ **कौमुदीसुधाकरं नाम प्रकरणम्**—महामहोपाध्यायश्रीचन्द्रकान्ततर्कालंकारविरचितम् । कलकत्ता १ १२ ०

४१०६ **चण्डकौशिकम्**—आर्य्यक्षेमेश्वरकृतम् । सटीकम् । कलकत्ता १ ४ ०

४१०७ **चतुर्भाणी**—यामुद्दिश्य कस्याचित् कवेर्वचनम्—"वररुचिरीश्वरदत्तः श्यामिलकः शूद्रकश्चत्वारः । एते भाणान् बभणुः का शक्तिः कालिदासस्य" । (१) शूद्रकविरचितं पद्मप्राभृतकम् (२) धूर्तविटसंवादः, (३) उभयाभिसारिका, (४) पादताडितकम् । पटना २ ८ ०

४१०८ **चारुदत्तम्** नाम मिश्रप्रकरणम्—महाकविश्रीभासप्रणीतम् । महामहोपाध्यायेन तद्वै० गणपतिशास्त्रिणा प्रणीतव्याख्यया समेतम् । त्रिवेन्द्रम् । १ २ ०

४१०६ **चैतन्यचन्द्रोदय**—कविकर्णपूरविरचित । इसके दस अङ्क हैं । मुम्बई १ ४ ०

४११० **चैतन्यचन्द्रोदय**—महाकविकर्णपूरविरचितपण्डितजीवानन्दकृतव्याख्यासहित । सजिल्द । कलकत्ता २ ४ ०

४१११ **छत्रपतिसाम्राज्यम्**—बी० ए० इत्युपाधिधारिणा याज्ञिककुलोत्पन्नेन माणिक्यलालात्मजेन मूलशंकरेण विरचितम् । श्रीधरविरचितया सर्वाङ्गविद्योतनीटीकया शास्त्रीत्युपाह्वबदरीनाथात्मजलक्ष्मीनाथविरचितांगलभाषानुवादेन च समेतम् । बड़ौदा १ ४ ०

४११२ **तपतीसंवरणम्**—कुलशेखरवर्मा विरचित तथा शिवरामकृतव्याख्यासहित । मद्रास ४ ८ ०

४११३ **तापसवत्सराजनाटकम्**—अनङ्गहर्षापरनामश्रीमात्रराजप्रणीतम् । श्रीयदुगिरियतिराजसंपत्कुमाररामानुजमुनिभिः प्रत्यवेक्षितम् । बंगलौर २ ४ ०

४११४ **दुर्गाभ्युदयनाटकम्**—पं० छज्जुरामशास्त्रिकविरत्नविद्यासागरप्रणीतम् । पं० नेकीराम पं० रामकृष्णभट्टकृतसंकेतसहितम् । ० ८ ०

४११५ **दूतवाक्यम्**—महाकविश्रीभासप्रणीतम् । महामहोपाध्याय पी०-एच्० डी० विरुदशालिना पण्डितगणपतिशास्त्रिणा प्रणीतया व्याख्यया समेतम् । त्रिवेन्द्रम् ० ९ ०

4116 English translation of Dūta Vākya— Nagpur 0 5 0

४११७ **दूताङ्गदछायानाटक**—श्रीसुभटकविविरचित । इसमें रावण के साथ अंगदकृत धृष्टता का बहुत अच्छा वर्णन किया गया है । मुम्बई ० ३ ०

४११८ **द्रौपदीपरिणय**—चक्रकविविरचित टाइप । मद्रास ० ६ ०

४११६ **धनञ्जयविजय**—श्रीकाञ्चनाचार्यविरचित । मुम्बई ० ३ ०

४१२० **धनञ्जयविजयव्यायोग**—व्याख्यासहित । कलकत्ता ० ४ ०

४१२१ **धनञ्जय विजय**—व्यायोग । भारतेन्दुबाबूहरिश्चन्द्ररचितछन्दोबद्धअनुवादसहित । वर्तमानसरलहिन्दीअनुवाद के कर्त्ता साहित्याचार्य पं० बृहद्बल 'संयमी' शास्त्री काव्यव्याकरणवेदवेदान्ततीर्थ । ० ५ ०

४१२२ **धर्मविजयनाटकम्**—भूदेवशुक्लकृतम् । प्रयाग १ ४ ०

४१२३ **नलचरित्रनाटकम्**—श्रीमन्नीलकण्ठदीक्षितप्रणीतम् । मद्रास १ ० ०

४१२४ **नलदमयन्तीयं नाटकम्**—कालीपादविरचितम् । कलकत्ता १ ४ ०

४१२५ **नलविलासनाटकम्**—श्रीरामचन्द्रसूरिविरचितं मूलमात्रम् । मुम्बई २ ४ ०

४१२६ **नागानन्दम्**—महाकविश्रीहर्षदेवप्रणीतं नाटकम् । विद्याभास्कर पं० परमेश्वरानन्दशर्मशास्त्रिणा विरचितया प्राज्ञविनोदिनी समाख्यया व्याख्यया सुललितहिन्दीभाषानुवादेन च समलंकृतम्— ।।।), बढ़िया संस्करण— १ ० ०

४१२७ **नागानन्दनाटकम्**—श्रीहर्षदेवप्रणीतम् । काशीविश्वविद्यालयाध्यापकेन एम० ए० साहित्याचार्येति पदवीविभूषितेन पं० श्री बलदेवोपाध्यायेन स्वप्रणीतया भावार्थदीपिकाख्यया व्याख्यया समलंकृत्य बृहद्भूमिकाभाषानुवादादिभिः सनाथीकृत्य सम्पादितम् ।
बनारस १ ४ ०

४१२८ **नागानन्दम्** (श्रीहर्षकृतम्)—विस्तृतटीकासहितम् ।
कलकत्ता १ ० ०

४१२९ **नागानन्दम्**—(श्रीहर्षदेवविरचितम्) पं० श्रीकनकलालशर्मणा विरचितया 'पीयूषवर्षिणी'व्याख्यया समलंकृतम् । काशी १ ४ ०

4130 Nagananda—A Sanskrit play by Śrī Harṣadeva with English translation and notes by C. Sankara Rama Shastri, M. A., B. L. Madras 1 8 0

४१३१ **पञ्चरात्रम्**—भासकविकृत सटीक । मद्रास १ २ ०

4132 Pancharatram (पञ्चरात्रम्) of Bhasa—Edited with introduction, English translation, notes, glossary &c. By Waman Gopal Urdhwareshe, B. A. Indore 3 8 0

४१३३ **पारिजातमञ्जरी**त्यपराख्य **विजयश्री**र्नाम नाटिका—संस्कृत मूल, टिप्पण तथा श्लोकानुक्रमणिकासहिता । विलायत ४ ८ ०

Parijata-Manjarī or Vijayashrī—A drama composed about A. D. 1213, by Madana, the preceptor of the Pramara King Arjunavarman and engraved on stone at Dhara. Edited with an index and introduction by E. Hultzsch, Ph. D. Text in original Sanskrit.
Foreign 4 8 0

४१३४ **पार्वतीपरिणयनाटक**—महाकवि बाणकृत । मुम्बई ० ५ ०

४१३५ **पार्वतीपरिणय**—Parvati-Pariṇaya with footnotes by Pt. R. V. Krishnamachariar. Madras 0 8 0

४१३६ **प्रचण्डपाण्डव** Prachaṇḍa Pāṇḍava—(राजशेखरकृत), A drama by Raja Shekhara, edited with notes and an index by Carl Cappeller. Text in original Sanskrit. Bold type.
Foreign 5 0 0

४१३७ **प्रतापरुद्रकल्याणनाटकम्**—श्रीविद्यानाथविरचितम । सटिप्पणम् ।
मुम्बई ० १२ ०

४१३८ **प्रतापविजयम्**—याज्ञिककुलोत्पन्नेन माणिक्यलालात्मजेन मूलशंकरेण विरचितम । श्रीधरशास्त्रिविरचितया सर्वाङ्गविद्योतिनीटीकया समलंकृतम् । बड़ौदा २ ० ०

४१३९ प्रतिमानाटकम्—संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेतम् । टीकाकार—पं० परमेश्वरानन्दशास्त्री । भाषानुवादक—पं० विजयानन्दखरड्डी शास्त्री ।।।), बढ़िया संस्करण १ ० ०

४१४० प्रतिमानाटकम् of Bhāsa—Edited with Introduction translation, Critical and Explanatory notes and appendices by the late Prof. Paranjpe. Poona 3 0 0

४१४१ प्रतिमानाटकम्—महाकविश्रीभासप्रणीतम् । महामहोपाध्यायेन तरुवै० गणपतिशास्त्रिणा प्रणीतया व्याख्यया समेतम् । मद्रास २ ४ ०

4142 Pratimā of Bhāsa (प्रतिमानाटकं भासकृतम्)—Edited with critical notes, Introduction and English translation by C. R. Devadhar. Poona 2 0 0

४१४३ प्रबोधचन्द्रोदयम्—श्रीकृष्णमिश्रयतिविरचितम् । श्रीगोविन्दामृतभगवत्कृत-नाटकाभरणाख्यव्याख्यया समन्वितम् । मद्रास २ ० ०

४१४४ प्रबोधचन्द्रोदय नाटक—भाषानुवाद स्वामि ज्ञानदास शिष्य कार्ष्णि गोपालदास विनिर्मित । मुरादाबाद ० १२ ०

४१४५ प्रबोधचन्द्रोदयनाटक—श्रीमत्कृष्णमिश्रयतिविरचित, नारिडलगोपप्रभु-विरचित चन्द्रिका टीका और दीक्षित रामदासकवि विरचित प्रकाशटीका सहित । मुम्बई १ ४ ०

४१४६ प्रबोधचन्द्रोदयः—व्याख्यासहितः । कलकत्ता १ ४ ०

4147 Prabodhachandrodaya Nataka—A drama on the conflict between the higher and lower nature of man, ultimately ending in the triumph of the former and Shankara's Atmabodha, translated by Mr. Taylor. Bombay 0 8

४१४८ प्रसन्नराघवनाटकम्—श्रीजयदेवकवि विरचित । मुम्बई ० १२ ०

४१४९ प्रसन्नराघवनाटकम्—श्रीजयदेवकृतम् । कलकत्ता १ ० ०

४१५० प्रसन्नराघवनाटकम्—जयदेवकृतम् । बनारस १ ४ ०

४१५१ प्रसन्नराघवनाटकम्—पं० गंगानाथझाकृत टीकासहित । १ ० ०

4152 Prasanna Raghava of Jayadeva—(प्रसन्नराघव) with English notes by S. M. Paranjpe, B. A. Poona 3 8 0

४१५३ प्रियदर्शिका—श्रीहर्षप्रणीता । पं० जीवानन्दकृत टीका सहित । कलकत्ता ० ८ ०

४१५४ प्रियदर्शिका—कृष्णाचार्यरचित व्याख्यासहित । मद्रास १ ० ०

4155 Priya-Darshika— Sanskrit drama by Harsha, King of Northern India in the 7th century A. D. Trans-

lated into English by G. K. Nariman, A. V. Williams Jackson, and Charles J. Ogden, with an introduction and notes by the two latter together with the text in transliteration. Bound with gilt letters. New York 10 8 0

4156 Priyadarśikā of Sri Harsha (प्रियदर्शिका श्रीहर्षकृता)—Edited with an Introduction, translation, Notes and Appendices by Prof. N. G. Suru. Poona 2 0 0

4157 Priyadarsika of Sri Harsha—With Sanskrit commentary by T. V. Sreenivasachariar, and English notes and translation by an experienced graduate.

Madras 2 0 0

४१५८ बालचरितम्—महाकविभासविरचित। सम्पूर्ण स्थूलाक्षर। ५ ० ०

Bālacharita of Bhāsa—Edited in the original Sanskrit and Prakrit with an alphabetical Index of ślokas; &c; &c. by Dr. H. Weller. Paper cover. 5 0 0

४१५९ बालमार्त्तण्डविजयम्—देवराजकविकृतम्। मद्रास १ ८ ०

४१६० बालरामायणनाटकम्—राजशेखरप्रणीतम्। बनारस २ ० ०

४१६१ बालरामायणनाटक—(राजशेखरविरचित) पं० जीवानन्दकृत व्याख्या सहित सजिल्द। कलकत्ता ३ ० ०

४१६२ भर्तृहरिनिर्वेदम्—श्रीहरिहरोपाध्यायनिर्मितम। मुम्बई ० २ ६

४१६३ भासनाटकचक्रम् (Plays ascribed to Bhāsa)—Being the thirteen texts in देवनागरी critically edited by Prof. C. R. Deodhar with Introduction in English dealing with the Bhāsa Problem. Summary in Sanskrit at the beginning of each play; &c; &c. Poona 6 0 0

४१६४ भासकथासारः—In 3 parts. Part I -/8/-, Parts II -/8/-, Part III— Madras 1 0 0

[English summary of the stories are included in each part. The third part is furnished with a critical introduction and copious notes.]

4165 Bhasa Studien—Ein Beitrag Zur Geschichte des altindischen Dramas Von Dr. Max Lindenau.

Leipzig 4 2 0

4166 Thirteen Trivandrum Plays—Attributed to

Bhasa. Translated into English by A. C. Woolner, C. I. E., M. A., F. A. S. B., and Lakshman Sarup, M. A., D. Phil. Two Volumes. 11 4 0

४१६७ **मत्तविलासप्रहसनम्**—श्रीमहेन्द्रविक्रमवर्मणा प्रणीतम् । मद्रास ० ८ ०

4168 The Madhyama Vyāyoga—A drama composed by the Poet Bhāsa, translated from the original Sanskrit with introduction and notes by Rev. Ernest Paxtan Janvier, M. A. Mysore 3 6 0

४१६९ **मध्यमव्यायोगः**—महाकविश्रीभासप्रणीतः । महामहोपाध्याय पी०-एच०डी० विरुदशालिना पण्डितगणपतिशास्त्रिणा प्रणीतया व्याख्यया समेतः । त्रिवेन्द्रम् ० ८ ०

४१७० **मध्यमव्यायोगः**—महाकविभासप्रणीतः । A Drama in one Act, with introduction, English translation, copious notes, Hindi translation of important verses, glossary, &c. By Prof. W. G. Urdhwareshe, M. A. Agra 1 0 0

४१७१ **मल्लिकामारुतनाटकम्**—(दण्डिकृत) श्रीरङ्गनाथआचार्यकृतव्याख्या-सहित । कलकत्ता २ ४ ०

४१७२ **महानाटकम्**—(हनुमन्नाटकम्) सटीकम् कलकत्ता २ ८ ०

४१७३ **महावीरचरितम्**—भवभूतिकृतं मूलमात्रम् । कलकत्ता १ ० ०

४१७४ **महावीरचरितम्**—भवभूतिकृतं सटीकम् । कलकत्ता २ ० ०

४१७५ **महावीरचरितनाटक**—भवभूतिकृत, वीरराघवकृतटीकासहित । मुम्बई १ ८ ०

4176 Mahavira Charita—Edited by A. A. Macdonell. Original Sanskrit Text. Foreign 7 8 0

४१७७ **मालतीमाधवनाटकम्**—भवभूतिकृत,त्रिपुरारिकृतटीका,नान्यदेवकृत टीका, और जगद्धरकृतटीकासहित । मुम्बई २ ४ ०

४१७८ **मालतीमाधवम्**—महाकविभवभूतिप्रणीत, जगद्धरकृतटीकासहित । Edited with critical notes by Dr. R. G. Bhandarkar. मुम्बई ४ ४ ०

४१७९ **मालतीमाधवम्**—महाकविश्रीभवभूतिप्रणीतम् । महामहोपाध्यायभारताचार्य-श्रीयुक्तहरिदाससिद्धान्तवागीशभट्टाचार्येण प्रणीतया भावमनोहराख्यया टीकया तत्कृतवंगानुवादेन च सहितम् । कलकत्ता २ ८ ०

४१८० **मालतीमाधवम्**—Mālati-Mādhavam—Edited with Introduction and translation in English and Notes in English by C. R. Devadhar and N. G. Suru. Poona 3 0 0

४१८१ मालतीमाधवम्—Mālati-Mādhavam—Edited......... with translation in English by M. R. Kale. 4 8 0

४१८२ मालतीमाधवप्रकरणम्—(भवभूतिकृतम) सटीकम् । कलकत्ता १ ८ ०

४१८३ मालतीमाधवम् - त्रिपुरारि-न्यायदेव-जगद्धरकृतटीकाभिः समेतम् । with English notes. Madras 2 0 0

४१८४ मालती-माधवनाटक महाकविभवभूति)—कविरत्न पं० सत्यनारायणशर्म्माकृतभाषानुवाद । आगरा १ ० ०

४१८५ मालविकाग्निमित्रनाटक—बालबोधिनीटीकासमेत । मुम्बई १ १२ ०

४१८६ मालविकाग्निमित्रम् - महाकविकालिदासप्रणीतम । सहृदयतिलकश्रीरामषारकविदुषा विरचितया सारार्थदीपिकाख्यया व्याख्यया समन्वितम् । मैलापुर १ ० ०

४१८७ मालविकाग्निमित्रनाटक—महाकविकालिदासप्रणीतकाटयवेमकृतकुमारगिरिराजीयव्याख्यासहित । मुम्बई ० १२ ०

४१८८ मालविकाग्निमित्रम्—(सटीकानुवादम्) कलकत्ता १ ४ ०

४१८९ मालविकाग्निमित्रम्—नीलकण्ठकाटयवेमविरचितव्याख्याद्वयेन समुपेतम् । मद्रास १ ० ०

४१९० मालविकाग्निमित्रम्—नीलकण्ठकाटयवेमकृताभ्यां टीकाभ्यां सहितम् । Introduction in English. Madras 1 0 0

4191 Malavikagnimitra of Kalidasa—With elucidating extracts from the commentaries of Kātayavema and Nīlakanṭha. Edited with a literal English translation, a faithful Hindi version, a critical introduction, copious notes, a comprehensive vocabulary and several useful appendices. By Pt. Charudeva Shastri, M. A., M. O. L. and B. B. Shastri Kavyatirtha, M. A., M. O. L. Lahore 3 4 0

४१९२ मालविकाग्निमित्रम्—तर्कवाचस्पतिकृतटीकोपेतम् । कलकत्ता १ ८ ०

4193 Mālavikāgnimitra (मालविकाग्निमित्रं संस्कृतटीकासहितम्)—With English Notes and translation by C. Sankara Rama Shastri, M. A., B. L. Madras 2 0 0

4194 Mālavikāgnimitram (मालविकाग्निमित्रम्)—Critically edited with introduction, English translation, Notes and useful Appendices, by Prof. C. R. Devadhar, M. A. and N. G. Suru, M. A. Bombay 2 8 0

4195 Malavikagnimitra (मालविकाग्निमित्र)—With Sanskrit commentary, English translation and notes by M. R. Kale. Bombay 3 8 0

4196 Malvikagnimitra of Kalidasa—Edited with introduction, translation and notes by A. S. Krishna Rao M. A. Madras 3 0 0

४१९७ मुकुन्दानन्दभाणः—श्रीकाशीपतिविरचितः। श्री पं॰ दुर्गाप्रसादेन, मुम्बापुरवासिना परबोपाह्वपाण्डुरंगात्मजकाशीनाथशर्मणा च संशोधितः। मुम्बई ० ८ ०

४१९८ मुद्राराक्षसम्—विशाखदत्तकृतम्। विस्तृतटीकान्वितं तथा पूर्वपीठिकासमेतम्। कलकत्ता १ १२ ०

४१९९ मुद्राराक्षसनाटकम्—पं॰ कनकलालकृतया भावबोधिनीव्याख्यया आशुबोधिनीभाषाटीकया च सहितम्। बनारस २ ० ०

4200 Mudrarakshasa (मुद्राराक्षस) of Vishakhadatta—With English notes by K. T. Telang, M. A., LL. B., C. I. E. Bombay 2 8 0

4201 Mudrarakshasa (मुद्राराक्षस)—With Sanskrit commentary, English translation and notes by M. R. Kale. Bombay 3 8 0

4202 Mudrarakshasa of Vishakhadatta—Edited with notes and provided with an index of all Prakrit words by Alfred Hillebrandt. Text in original Sanskrit. 10 8 0

४२०३ मुद्राराक्षसम्—सटीकानुवादम्। कलकत्ता २ ० ०

4204 Mudrarakshasam of Vishakhadatta—Critically edited with copious notes, English translation and a scholarly introduction by Prof. K. H. Dhruva, 3rd edition, revised and enlarged. Poona 4 0 0

4205 Mudra-rakshasam of Vishakhadatta—With an original Sanskrit commentary, English translation and explanatory notes by Saradaranjan Ray Vidyavinoda, M. A. Calcutta 3 8 0

४२०६ मृगाङ्कलेखा नाटिका—विश्वनाथदेवकविकृता। Edited with Introduction &c by Narayana Shastri Khiste Sahityacharya. Allahabad 1 0 0

४२०७ मृच्छकटिकम्—शूद्रककृतम्। श्रीलल्लादीक्षितविरचितसुवर्णालंकरणाख्य तथा पृथ्वीधर-रचित व्याख्या और अंग्रेजी व्याख्यासहित। टाइप। मुम्बई ३ ० ०

४२०८ **मृच्छकटिकम्**—With English translation &c. By Prof. V. G. Pranjpe. Poona 3 8 0

४२०९ **मृच्छकटिकम्**—कविप्रवरश्रीशूद्रकराजेन विरचितम्। महामहोपाध्यायश्रीयुक्त हरिदाससिद्धान्तवागीशभट्टाचार्येण प्रणीतया वसन्तसुषमासमाख्यया टीकया तत्कृतवंगानुवादेन च सहितम्। कलकत्ता ३ ० ०

४२१० **मृच्छकटिकम्**—शूद्रककृतम्। परिवर्द्धितटीकादोषगुणरीत्यलंकारविचार-विस्तृतसमालोचनादिसहितम्। कलकत्ता ३ ८ ०

४२११ **मृच्छकटिक**—श्रीशूद्रकविरचित, पृथ्वीधरकृत व्याख्या सहित। मुम्बई १ ४ ०

4212 Mrichchhakatikam (मृच्छकटिक। सटीक)—With English Notes and translation by Kale. Bombay. In Press

4213 Mrichchhakatika of King Sudraka—With Sanskrit Commentary by Satavadhana T. E. Srinivasa Chariar, and English translation. Madras 3 0 0

4214 The Little Clay Cart (मृच्छकटिक)—A Hindu drama attributed to King Shudraka. Translated from the original Sanskrit and Prakrits into English Prose and Verse by Arthur William Ryder, Ph. D. 13 6 0

4215 Mrichchhakatikam of Shudraka—With English notes by Pt. H. M. Sharma, M. A. Bombay 2 0 0

४२१६ **मैथिलीकल्याण (नाटकम्)**— मुम्बई ० ५ ०

४२१७ **मोहपराजय**—मन्त्रि-यशःपालविरचित। मुम्बई २ ० ०

४२१८ **रतिमन्मथनाटकम्**—छायासमेतम्। पं० जगन्नाथविरचितम्। मुम्बई ० १२ ०

४२१९ **रतिविजयम्**—रामस्वामिशास्त्रिणा विरचितम्। मद्रास ० ४ ०

४२२० **रत्नावलीनाटिका**—श्रीहर्षदेवविरचित। सटिप्पण मूलमात्र। मुम्बई ० ८ ०

४२२१ **रत्नावलीनाटिका**—श्रीहर्षदेवविरचित। रत्नावलीप्रभाख्यव्याख्यासहित। मुम्बई १ ४ ०

4222 Ratnāvalī of Sri Harsha (रत्नावली श्रीहर्षकृता)—Edited with critical notes, Introduction and English translation by Devadhar and Suru. Poona 2 8 0

४२२३ **रत्नावलीनाटिका**—पं० जीवानन्दकृत व्याख्या सहित। कलकत्ता ० ८ ०

४२२४ **रत्नावलीनाटिका**—भाषाटीका सहित। मुम्बई १ ० ०

4225 Ratnavalinatika—(रत्नावली नाटिका) A Sanskrit play by Sri Harṣa Deva. English Notes and Translation by C. Sankara Rama Sastri, M. A., B. L. Mylapore 2 0 0

4226 Ratnavali (रत्नावली)—With commentary, English translation and Notes by M. R. Kale. Bombay 3 8 0

4227 Ratnavali of Sriharsha—With an original commentary, translation, Notes &c. By Saradaranjan Ray Vidyavinoda, M. A. Calcutta 2 12 0

४२२८ **रससदनभाणः**—युवराजकविविरचितः। मुम्बई ० ८ ०

४२२९ **रामनाटक**—भाषा। पं० दुर्गादत्त पाण्डेय विरचित। मुम्बई १ ८ ०

४२३० **रामलीलानाटक**—भाषा। श्रीकुन्दनलालशाहविरचित। मुम्बई २ ८ ०

४२३१ **राम-वन-यात्रानाटक**—भाषा। बाबूगिरिवरधरविरचित। पटना ० १० ०

४२३२ **रुक्मिणीपरिणयनाटक**—श्रीरामवर्मवञ्चियुवराजविरचित। मुम्बई ० ५ ०

४२३३ **रूपकषट्कम्**—अमात्यवत्सराजप्रणीतम्। १ किरातार्जुनीयव्यायोगः, २ कर्पूरचरितभाणः, ३ रुक्मिणीहरण ईहामृगः, ४ त्रिपुरदाहे डिमः, ५ हास्यचूडामणिप्रहसनम्, ६ समुद्रमथनाभिधानः समवकारः। मूलमात्रम्। मुम्बई २ ४ ०

४२३४ **लटकमेलकम्**—श्रीशङ्खधरविरचितम्। मुम्बई ० ५ ०

४२३५ **विक्रमोर्वशीत्रोटकम्**—कालिदासकृतम्। सटीकम्। कलकत्ता १ ० ०

४२३६ **विक्रमोर्वशीयम्**—महाकविकालिदासविरचित। श्रीयुतकृतविस्तृतसंस्कृत तथा हिन्दी भाषाटीका सहित। छपाई कागज परमोत्कृष्ट। लाहौर २ ० ०

४२३७ **विक्रमोर्वशीयनाटक**—कालिदासकृत। रंगनाथकृतप्रकाशिकाटीकासहित। मुम्बई ० १४ ०

४२३८ **विक्रमोर्वशीय**—कालिदासकृत। Containing extracts from 2 commentaries. Edited with Notes in English by S. P. Pandit. Poona 2 0 0

4239 Vikramorvaśīyam (विक्रमोर्वशीयम्) of Kālidāsa—Critically edited with introduction, notes, translation and appendices, by Prof. C. R. Devadhar, M. A. and M. V. Patwardhan M. A. Bombay 2 8 0

4240 Vikramorvaśiya (विक्रमोर्वशीयम्) of Kalidasa—With Katayavema's commentary the Kumaragirirajiya. For the

first time critically edited with a literal English translation, an introduction, copious notes in Sanskrit and English and a comprehensive vocabulary. By Charu Deva Shastri, M. A., M. O. L. 3 8 0

4241 Vikramorvashiya—(विक्रमोर्वशीय) With commentary, English Notes, and English translation by M. R. Kale. Bombay 3 8 0

4242 Vikramorvasiya of Kalidasa—With an English translation, introduction, Notes and appendices. By R. D. Karmarkar. Poona 3 0 0

४२४३ विक्रान्तकौरव (नाटक)— मुंबई ० ७ ०

४२४४ विदग्धमाधव—श्रीरूपगोस्वामिप्रणीत । सटीक । मुम्बई १ ४ ०

४२४५ विद्धशालभञ्जिका—पण्डितजीवानन्दकृतव्याख्यासहित । कलकत्ता ० १२ ०

४२४६ विद्यापरिणय—आनन्दरायमखिविरचित । मुम्बई ० ६ ०

४२४७ विराजसरोजिनी (नाटिका)—श्रीहरिदाससिद्धान्तवागीशप्रणीत । कलकत्ता ० ८ ०

४२४८ वीणावासवदत्तम्—An old Sanskrit drama, edited by M. M. Prof. S. Kuppuswami Sastriar, M. A. and Dr. C. Kunhan Raja, M. A., D. Phil. (Oxon.). Madras 0 10 0

४२४९ वृषभानुजानाटिका—श्रीमथुरादासविरचित । मुम्बई ० ७ ०

४२५० वेणीसंहारनाटक—भट्टनारायणप्रणीत, जगद्धरकृतटिप्पणीसहित । मुम्बई १ ४ ०

४२५१ वेणीसंहारनाटक—तारानाथतर्कवाचस्पतिकृतटीकासहित । टाइप । कलकत्ता १ ८ ०

४२५२ वेणीसंहारनाटक—आख्यायिका के रूप में भावार्थ । ले० पं० महावीरप्रसादद्विवेदी । कानपुर ० १० ०

4253 The Veṇīsaṃhāra—A Critical Study. By A. B. Gajendragadkar. Bombay 1 4 0

4254 The Veṇīsaṃhāra वेणीसंहार of Bhatta Nārāyaṇa—Edited with a complete translation into English, Notes critical and explanatory) and Appendices. By Gajendragadkar. Bombay 3 0 0

4255 Venisamhara (वेणीसंहार)—With commentary, Eng-

lish Notes and English translation by M. R. Kale.
Bombay 3 8 0

4256 Veṇīsaṃhāram (वेणीसंहारम्) of Bhattanārāyaṇa—Critically edited with introduction discussing the date of the author, his merits &c., copious Notes and English translation of verses by the late Prof. K. N. Dravid. 2nd ed.—revised and enlarged. Poona 3 0 0

4257 Sakuntalā (शकुन्तला)—हिन्दी । The text of Raja Lachhman Singh, critically edited with grammatical, idiomatical, and exegetical Notes. By Frederic Pincott.
London 7 6 0

4258 The Text of the Shakuntalā—A paper read at the First Oriental Conference, Poona, 1919. By B. K. Thakore, B. A., I. E. S. Bombay 1 12 0

४२५९ शाकुन्तलनाटक (महाकविकालिदास) अनेक ग्रन्थों के निर्माता तथा टीकाकार पं० ज्वालाप्रसादमिश्र द्वारा गद्यपद्य में अनुवादित। मुम्बई १ ० ०

4260 Śakuntalā—By Kamala Satthianadham.
Madras 0 6 0

४२६१ शंकरविजयनाटक—पं० रामस्वरूपजी का रचा हुआ।
मुरादाबाद ० १२ ०

४२६२ शृंगारतिलकम्—श्रीरामभद्रदीक्षितविरचितम्। मुम्बई ० ६ ०

४२६३ शृंगारभूषणम्—श्रीवामनभट्टबाणविरचितम्। मुम्बई ० ३ ०

४२६४ शृंगारसर्वस्वभाणः—श्रीनल्लाकविविरचितः। जयपुरमहाराजाश्रितेन महामहोपाध्यायपण्डितशिवदत्तशर्मणा मुम्बापुरवासिपणशीकरोपाह्वलक्ष्मणात्मजवासुदेवशर्मणा च संशोधितः। मुम्बई ० ७ ०

४२६५ संकल्पसूर्योदयनाटकम्— बनारस २ ० ०

4266 Saṃyogita Swayamvaram (संयोगितास्वयंवरम्)—By Mulshankar Maniklal Yajnik, B. A. With the commentary of Shridhara Shastri and free translation by Lakshminath Badarinath Shastri B. A. Baroda 1 4 0

४२६७ सत्यहरिश्चन्द्रनाटक—प्रबन्धशतकर्तृमहाकविरामचन्द्रप्रणीत।
मुम्बई ० ८ ०

४२६८ सुभद्राधनञ्जयः—कुलशेखरकृतः। शिवरामकृतव्याख्यायुतः।
मद्रास ४ ० ०

४२६९ **सुभद्राहरणनाटकम्**—माधवभट्टप्रणीतम् । मुम्बई ० ४ ०

४२७० **स्वप्नवासवदत्तम्**—(महाकविभासप्रणीतम्) खण्डूडीत्युपाह्व-पण्डितविजयानन्दशास्त्रिणा विरचितया विजयवैजयन्तीसमाख्यया सरलसंस्कृतव्याख्यया तत्कृतेनैव सुललितहिन्दीभाषानुवादेन च समलंकृतम् । १ १२ ०

४२७१ **स्वप्नवासवदत्तम्**—साहित्याचार्येण श्री अनन्तरामशास्त्रिवेतालेन प्रबोधिनीनामिकया संस्कृतव्याख्यया तथा साहित्याचार्येण श्रीजगन्नाथशास्त्रिहोशिङ्गेन प्रकाशनामकहिन्दीभाषान्तरेण च संयोज्य सम्पादितम् । बनारस १ ० ०

४२७२ **स्वप्नवासवदत्तं नाटकम्**—श्रीगुरुप्रसादशास्त्रिव्याकरणाचार्यन्यायाचार्यविरचितया अभिनवराजलक्ष्म्याख्यया संस्कृतटीकया, कलभाषिण्या भाषाटीकया किञ्च संस्कृतटिप्पण्या च विराजितम् । काशी १ ० ०

4273 Vision of Vasavadatta—By Dr. Lakshman Sarup. Lahore 4 0 0

४२७४ **स्वप्नवासवदत्तम्**—श्रीनारायणशास्त्रिखिस्तेकृतया संस्कृतटीकया भाषाटीकया च सहितम् । काशी १ ० ०

4275 Svapna-Vāsavadattā—of Bhāsa, with Sanskrit commentary and English translation &c; and an elaborate introduction. Revised. Calcutta 2 14 0

4276 Wasawadatta—Ein Schauspiel Nach Bhāsa. Ubersetzt Von Hermann Weller. Leipzig 6 0 0

4277 Swapnavasavadattam of Bhasa—Containing an Introduction, meanings of difficult words, analysis, explanation in Sanskrit, comments in English, translation into English &c. By Late Prof. Ashutosh Sen Gupta, M. A. Calcutta 2 0 0

४२७८ **स्वप्नवासवदत्तम्**—महाकविभासविरचितम । सटीकम । द्वितीया वृत्तिः । मद्रास १ १२ ०

४२७९ **स्वप्नवासवदत्तम्**—Of Bhāsa, critically edited with Introduction, Notes, Translation and Appendices, by Prof. C. R. Devdhar, M. A., 3rd edition, revised. Poona 2 0 0

4280 Vasavadatta—Being a translation of an anonymous Sanskrit drama Svapnavasavadattā attributed to Bhasa. Edited by V. S. Sukthankar. Bound. 5 0 0

4281 Svapna-Vasavadattam of Bhasa—Sanskrit text with English translation by H. R. Bhagavat, B. A. 0 14 0

४२८२ सौगन्धिकाहरणम्—श्रीमद्विश्वनाथकविविरचितम् । मुम्बई ० ४ ०

४२८३ हनुमन्नाटकम्—दीपिका संस्कृतटीका सहित । मुम्बई १ ८ ०

४२८४ हनुमन्नाटकम्—मुरादाबादनिवासी पं० रामस्वरूपशर्माकृत भाषाटीकासमेत । मुम्बई १ ८ ०

४२८५ हनुमन्नाटकम्—श्रीमन्मिश्रदामोदरेण संकलितम् । श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्येण विरचितरामचरितामृतभाषाटीकया च समलंकृतम् । मुम्बई १ ८ ०

४२८६ हनुमन्नाटक—(रामगीता भाषा) कवि हृदयराम विरचित । सजिल्द । मुम्बई १ ८ ०

४२८७ हम्मीरमदमर्दन—जयसिंहसूरिविरचित । मुम्बई २ ० ०

४२८८ हास्यार्णवप्रहसनम्—सटीकम् । कलकत्ता ० १० ०

4289 At the Touch of The Philosopher's Stone—(A Drama in Five Acts) Adapted from Rūpa-Sanātana, a Bengali drama by Girīshchandra Ghosh. Gorakhpur 0 1 0

4290 Bibliography of the plays attributed to Harshadeva. By M. Schuyler. Foreign 0 12 0

4291 Plays ascribed to Bhāsa—Their authenticity and Merits—By Prof. C. R. Devadhar. M. A. Poona 1 0 0

4292 Princess Maid—An Indian Drama. By L. V. Schroeder. 2 8 0

4293 The Sanskrit Drama—In its Origin, Development, Theory, and Practice. By A. B. Keith. 1924. 21 0 0

4294 Sanskrit Drama, The Types of—By D. R. Mankad. Karachi 5 0 0

4295 Tales from the Sanskrit Dramatists—Second and revised edition. 2 0 0

4296 Uber das Verhältnis Zwische Cārudatta und Mṛcchakatikā—Von Georg Morgenstierne. Leipzig 2 8 0

4297 Ueber die Anfange des indischen Dramas—By A. Hillebrandt. Foreign 1 8 0

4298 Zeit des Kālidāsa—Mit einem Anhang: Zur Chronologie der Werke des Kālidāsa. Von Dr. Georg Huth. Berlin 3 6 0

आख्यायिका-ग्रन्थाः

४२९९ उदयसुन्दरी कथा—सोड्ढलविरचित। बड़ौदा २ ४ ०

४३०० उपमितिभवप्रपञ्चा कथा—सिद्धर्षिप्रणीता दुष्प्राप्य कलकत्ता १५ ० ०

4301 Katha Kosha—(कथाकोश) or the treasury of stories, translated from Sanskrit manuscripts into English by C. H. Tawney, M. A., with appendix containing notes by Professor Ernst Leumann. London 12 0 0

४३०२ कथाकौतुक—पण्डित श्रीवरविरचित। मुम्बई ० १२ ०

४३०३ कथापञ्चकम्—By Mrs. Kshama Rao. Bombay 1 0 0

४३०४ कथाशतकं भारतीश्लोकत्रिशती च—(एस० वेंकटराम शास्त्री, बी० ए०) मैसूर ० ८ ०

४३०५ कथाचरित्सागर—महाकविश्रीसोमदेवभट्टविरचित, इसमें बुद्धिवर्द्धक और मनोरञ्जक १२४ उत्तम कथाएं हैं। मुम्बई ५ ४ ०

४३०६ कथासरित्सागर—अर्थात् श्रीसोमदेवभट्टविरचित कथासरित्सागर का कैनिंग कालिज लखनऊ के भूतपूर्व संस्कृत प्रोफेसर पं० कालीचरणशर्मा एवं राजवैद्य पं० ल्मापति वाजपेयीकृत सरस और विशुद्ध हिन्दी अनुवाद। लखनऊ ३ ८ ०

४३०७ कथासरित्सागर—पं० जीवानन्दविद्यासागरसकलित (गद्यात्मक) इसमें सरल संस्कृत में नाना प्रकार की विलक्षण कथाएं हैं। विलायती जिल्द कलकत्ता ६ ८ ०

4308 Ocean of Story—Being C. H. Tawney's translation of कथासरित्सागर। New edition with introduction, fresh explanatory notes and terminal essay by N. M. Penzer, M. A. 10 Vols. Each Volume. 31 8 0

4309 Kathasarit-sagara of Somadeva. Edited by H. Brauckhaus (Sanskrit text only). Foreign 10 0 0

4310 Studies about the Kathasaritsāgara—By J. S. Speyer. Amsterdam. 7 8 0

4311 Kathasaritsagar. Foreign 85 0 0

४३१२ कपालकुण्डला—बङ्किमचन्द्रस्य। श्रीहरिचरणकाव्यव्याकरणतीर्थेनानूदिता। संस्कृत। कलकत्ता १ ० ०

४३१३ कादम्बरी पूर्वार्द्धम्—हरिदाससिद्धान्तवागीशकृतसटीकानुवादसहितम। कलकत्ता ५ ० ०

४३१४ कादम्बरी—बाणभट्टकृत, भानुचन्द्र तथा सिद्धचन्द्रकृत टीकाद्वय सहित। मुम्बई ६ ० ०

4315 Kādambarī of Bhatta Bāṇa (भट्टबाणविरचिता कादम्बरी)—

Text only. Critically edited by Dr. P. L. Vaidya with variant readings, punctuation, paragraphings; &c; &c. Poona 3 0 0

४३१६ कादम्बरी—महाकवि बाणभट्टकृत अपूर्व संस्कृतगद्य काव्य कादम्बरी का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक श्रीयुत पं० ऋषीश्वरनाथभट्ट बी० ए०, एल०-एल० बी०। मुम्बई ३ ४ ०

४३१७ कादम्बरी भाषा— इलाहाबाद ० ८ ०

4318 The Kadambari (कादम्बरी) of Bāṇa—Translated into English with occasional omissions, and accompanied by a full abstract of the continuation of the romance by the author's son Bhushan Bhatta. By C. M. Ridding. Foreign 20 0 0

4319 Kadambari (कादम्बरी) of Bāṇa—With Sanskrit commentary, Notes and introduction by M. R. Kale. First Part. Bombay 5 0 0

4320 Kadambari (Pūrvabhāga), English translation of—By M. R. Kale. Bombay 4 8 0

4321 An English translation of Kadambari, Uttarabhāga. Bombay 1 12 0

४३२२ कादम्बरी कथासार—श्रीमदभिनन्दकृत। मुम्बई ० १० ०

4323 English Notes and translation of R. V. Krishnamachariar's Kādambarī Saṅgraha Pūrvabhāga by A. Varadachariar and C. Sankara Rama Sastri. Madras 1 12 0

४३२४ कादम्बरीसार—(Kadambari-Sara) with Notes by Apte. Bombay 2 0 0

4325 Kādambarīsāra—English Translation and Notes. By Krishnaji B. Virkar, B. A. (Hons.). Bombay 3 0 0

४३२६ चन्द्रापीडचरितम्—संक्षेपेण कादम्बरीकथाप्रतिपादकम्। प०वे० अनन्ताचार्यैः संकलितम्। ० ६ ०

४३२७ चाणक्यकथा—रविनर्तककृता। पद्यात्मका। वङ्गानुवादसहिता। Revised & enlarged. Calcutta 1 0 0

४३२८ चारुचरितावली—(भारत के प्रसिद्ध महापुरुषों का संक्षिप्त परिचय) ले० पण्डित कृष्णदेव उपाध्याय। काशी ० १२ ०

४३२६ दशकुमारचरित—दण्डिकृत पूर्वपीठिका, उत्तरपीठिका, कवीन्द्रसरस्वतीकृत

पदचन्द्रिकाटीका, शिवरामकृत भूषणटीका (पूर्वपीठिका पर), लघुदीपिका और पददीपिका टीकासहित । मुम्बई १ १२ ०

4330 Dasha Kumara Charitam (दशकुमारचरितम्)—पूर्वपीठिका with the commentary Padadipika, English translation and introduction by V. Satakopan, M. A. Madras 1 12 0

४३३१ दशकुमारचरित—(दण्डिकविप्रणीत) मूल संस्कृत । Edited with Notes by G. J. Agashe. Poona 4 6 0

४३३२ दशकुमारचरितम्—सटीकानुवादम् । कलकत्ता १ ४ ०

४३३३ दशकुमारचरितम्—(दण्डिकृतम्) विस्तृतटीकान्वितम् । कलकत्ता २ ८ ०

४३३४ दशकुमारचरित्र—भाषा । राजकुमारादि दस कुमारों के देशाटन की विचित्र कथाएं । मुम्बई ० १४ ०

4335 Dashakumaracharita (दशकुमारचरित)—With Sanskrit and English Notes and translation by Kale. Bombay 4 8 0

४३३६ दशकुमारचरितम्—पूर्वपीठिका । आद्यास्त्रय उच्छ्वासाः । With English Notes and Translation by C. Sankara Rama Shastri, M. A., B. L. Mylapore. 0 12 0

4337 The Ten Princes (दशकुमारचरित)—Translated by Arthur Ryder. Chicago. 6 8 0

४३३८ देलराम कथासार—राजानकभट्टाह्लादकविरचित । ० ७ ०

४३३९ द्वात्रिंशत्पुत्तलिका—पण्डित जीवानन्द संकलित अर्थात् सिंहासनबत्तीसी सरल संस्कृत में । कलकत्ता १ ६ ०

४३४० नूतनशिवराजविजयपताका—शिवराजविजयस्य संस्कृतव्याख्या । लाहौर २ ८ ०

४३४१ श्रीपृथ्वीराजचह्वाणचरितम्—लेखकः हसूरकरोपाह्व श्रीपादशास्त्री न्याय-यवेदान्तमीमांसातीर्थः सांख्यसागरश्च । इन्दौर १ ८ ०

४३४२ प्रबन्धचिन्तामणिः—मेरुतुङ्गाचार्यकृतः । मूल । हिन्दीभूमिका तथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंशश्लोकानुक्रमणिकासहित । ४ ४ ०

4343 Prabandha-Chintamani (प्रबन्धचिन्तामणि) of Merutunga Acharya. Translated into English by C. H. Tawney. Calcutta 3 12 0

४३४४ श्रीबदरिकाश्रमयात्रावृत्तान्त— काशी ३ ३ ०

४३४५ बृहत्कथामञ्जरी—श्रीक्षेमेन्द्रविरचितम् । मुम्बई ३ १२ ०

४३४६ भरटकद्वात्रिंशिका—The Thirty-two Bharaṭaka Stories—Edited together with an introduction, variants, explanatory Notes, and a glossary. By Johannes Hertel. Leipzig 3 0 0

४३४७ भोजप्रबन्धः—श्रीवल्लालविरचितः । मूल । मुम्बई ० ८ ०

४३४८ भोजप्रबन्धः—नवीनसंस्कृतटीकासहितः । मुरादाबाद ० १२ ०

४३४९ भोजप्रबन्ध—(सरलगद्यपद्यात्मककाव्य) श्रीगंगाचरणवेदान्तविद्यासागर-प्रणीतटीकालंकृतो वङ्गानुवादसहितश्च । कलकत्ता १ ८ ०

४३५० भोजप्रबन्धः—श्रीवल्लालविरचितः । श्रीआशुबोधविद्याभूषण-श्रीनित्यबोध-रत्नाभ्यां विरचितया व्याख्यया समेतः । कलकत्ता १ ८ ०

४३५१ भोजप्रबन्ध—पं० श्यामसुन्दरलालत्रिपाठीकृतभाषाटीकासमेत । मुम्बई १ ६ ०

४३५२ भोजप्रबन्धः—श्रीबल्लालकृतः । काशी ० ७ ०

४३५३ भोज और कालिदास—भाषाटीकासमेत । राजा भोज और कालिदास की उत्तमोत्तम कथाओं का संग्रह । मुम्बई १ ६ ०

४३५४ युगलाङ्गुलीयम्— काशी ० ७ ०

4355 Kalhaṇa's Rājataraṅgiṇi (राजतरङ्गिणी)—Or the Chronicle of the Kings of Kashmir. Edited by M. A. Stein, Ph. D. Volume I. Sanskrit text with critical notes. Rare Bombay 25 0 0

4356 Rajatarangini—(River of Kings). Translated from the original Sanskrit of Kalhan with an introduction, annotation &c. by Ranjit Sitaram Pandit. With a foreword by Pt. J. L. Nehru 18 0 0

४३५७ रामकथा—वासुदेवप्रणीतः । गद्यग्रन्थ । मद्रास ० ८ ०

४३५८ श्रीरामदासस्वामिचरितम्—लेखकः हसूरकरोपाह्वः श्रीपादशास्त्री, न्याय-वेदान्तमीमांसातीर्थः सांख्यसागरश्च । इन्दौर १ ८ ०

४३५९ श्रीमद्वल्लभाचार्यचरितम्—लेखकः हसूरकरोपाह्वः श्रीपादशास्त्री । मुम्बई २ ० ०

४३६० वल्लालचरित—दाक्षिणात्यद्राविडश्रीमदनन्तभट्टवंशोद्भवश्रीसदानन्दभट्टमहा-महोपाध्यायकृत । कलकत्ता १ ८ ०

४३६१ वासवदत्ता—सुबन्धुकृत । कृष्णमाचार्यकृतव्याख्यासहित । मद्रास २ ८ ०

४३६२ वासवदत्ता—सुबन्धुकृत । शिवरामरचितदर्पणाख्यटीकासहित । टाइप । कलकत्ता १ ४ ०

4363 Vasava Datta—A Sanskrit romance by Subandhu translated into English with an introduction and Notes by Louis H. Gray. Ph. D. Foreign 10 8 0

4364 विजयिनी (संस्कृत)—Vijayini. A Story adapted from Shakespeare in Sanskrit by Parashu Ram L. Vaidya. Madras 0 6 0

4365 Visramiani—Or the Story of the love of Vis and Ramin. a romance of ancient Persia translated into English from the Georgian Version by Oliver Wardropp.. Nicely bound. Foreign 10 0 0

4366 विश्रुतचरित Of दण्डी—By W. G. Urdhwareshe with Introduction, Notes, Glossary, &c. Agra 1 8 0

४३६७ वेतालपञ्चविंशति—अर्थात् वेतालपचीसी सरल संस्कृत में । पं० जीवानन्द-संकलित । कलकत्ता २ ० ०

4368 Vetalapanchavinshatika—or the recension of Shivadasa. Text edited with extracts from the commentary Notes &c. By Heinrich Uhle. Leipzig 6 8 0

4369 Vetāla Pachīsī—translation into English. By Captain W. Hollings. Allahabad 0 12

4370 Jambhaladatta's Version of the Vetālapañcaviṃśati. A critical Sanskrit Text in transliteration, with an introduction and English translation. By M. B. Emeneau, Ph. D. New Haven. 10 0 0

४३७१ श्रीशंकरदिग्विजयः—विद्यारण्यकृतः । धनपतिसूरिकृतडिंडिमाख्यटीकया अद्वैतराज्यलक्ष्मीटीकान्तर्गतविशेषविभागटिप्पण्या समेतः । पूना ६ ० ०

४३७२ शंकरदिग्विजयः—लालजीकृत । इसमें श्रीशंकराचार्य जी का प्रत्येक दिशा में विजय प्राप्त कर संन्यास धर्म ग्रहण करना वर्णित है । लखनऊ ० ३ ०

४३७३ शंकरदिग्विजयभाषा—श्रीस्वामी रामकृष्ण भारती रचित । माधवी शंकरदिग्विजयनामक काव्य परम मनोहर है । लखनऊ ० १० ०

४३७४ शंकरविजयः—मूल । गद्यात्मक आनन्दगिरिकृत । कलकत्ता १ ८ ०

४३७५ शिवराजविजयः—श्रीअम्बिकादत्तव्यासविरचितः । शिवराजविजयपताकासहितः सम्पूर्णः । ५ ० ०

४३७६ शिवराजविजयः—श्रीअम्बिकादत्तव्यासविरचितः । बनारस २ ० ०

४३७७ शिवराजविजय का हिन्दी अनुवाद—अनुवादक मूलजी मनुजः शास्त्री । १ १२ ०

४३७८ शिवराजविजयपताका—जैनन्यायविशारद-कविताकिंकनृसिंहदेवशास्त्रिणा दर्शनाचार्येण रचिता । २ ८ ०

४३७९ श्रीशिवाजिमहाराजचरितम्—लेखकः हसूरकरोपाह्वः श्रीपादशास्त्री, न्यायवेदान्तमीमांसातीर्थः सांख्यसागरश्च । इन्दौर १ १२ ०

४३८० श्रीशीखगुरुचरितामृतम्—लेखकः हसूरकरोपाह्वः श्रीपादशास्त्री । इन्दौर १ १२ ०

४३८१ शुकसप्तति—Cuka Saptati—Sanskrit text in original. Edited by R. Schmidt. Foreign 6 0 0

४३८२ संसारचक्रम्—पण्डितजगन्नाथप्रसादचतुर्वेदिप्रणीतं हिन्दीभाषानिबद्धं मूलग्रन्थमवलम्ब्य प्रतिवादिभयङ्करानन्ताचार्यैः संस्कृतभाषायां विलिखितम्-आख्यायिकारत्नम् । द्वौ भागौ । सम्पूर्णम् । मद्रास १ १४ ०

[This is a novel in Sanskrit. Being the translation of a Hindi book of Pt. Jagan Nath Prasad, by one of the most learned Sanskritists of the age, it is very useful for the persons who wish to acquire an ability to express their ideas in Sanskrit.]

४३८३ संस्कृतगद्यकुसुमाञ्जलिः—सरस्वतीप्रसाद चतुर्वेदी, एम० ए० । नागपुर १ ४ ०

४३८४ संस्कृतगद्यमञ्जूषा—श्री पं० परमेश्वरानन्दशर्मशास्त्रिणा संगृहीता । म० म० श्री पं० गिरिधरशर्मकृतया भूमिकया सहिता । संस्कृताध्येतॄणामतीवोपकारिणी । टिप्पणीयुता । लाहौर १ ८ ०

४३८५ संस्कृतगद्यावली—पांडुरंगवामनकाणे इत्येतेन संकलिता । मुम्बई १ ११ ०

४३८६ श्रीहर्षचरितम्—(मूलमात्रम्) कलकत्ता १ ४ ०

४३८७ हर्षचरित—बाणभट्टकृत, शंकरकृतसंकेतटीकासहित । मुम्बई २ ० ०

४३८८ हर्षचरित सटीक—Edited by Dr. A. A. Fuhrer. Text and commentary. Bombay 2 0 0

४३८९ हर्षचरित—बाणभट्टकृत । पंडितजीवानन्दकृतविस्तृतव्याख्यासहित । टाइप । कलकत्ता १० ० ०

४३९० पद्यहर्षचरितम्—सरलकविसूरिणा वात्स्यराजगोपालचक्रवर्त्तिना विरचितम् । मद्रास १ ० ०

[It is a mertical rendering of the famous Harshacharita of Bāṇa. This new work gives in a short compass the gist of the story contained in the larger work.] 1 0 0

4391 Harśacaritasārah (हर्षचरितसारः)—An Abridgment of Bāṇa's Harśacarita ed. Prof. V. V. Mirashi, M. A. with an Original Sanskrit Commentary. Introduction and Notes. 1929. 2 0 0

4392 English Translation of Harśacaritasāra— Nagpur 0 14 0

४३६३ हर्षचरितभाषा—(प्यारेलालदीक्षित) मंडी धनौर ० ८ ०

4394 The Harṣacharita of Baṇa—Translated into English by E. B. Cowell and F. W. Thomas. London 10 0 0

4395 Harshacharita of Bāṇabhatta—(Uchchhvāsas I-VIII), edited with English translation and Notes by P. V. Kane, M. A. 7 0 0

4396 Folk Tales of Hindustan—By 3rd edition. Allahabad 5 0 0

4397 Hellenis—Sagen und Legenden aus der griechischen Kaisergeschichte —Von Friedrich Rückert. Hannover. 5 0 0

4398 Indian Ballads by Waterfield. Allahabad 1 8 0

4399 The Legends of India—By Washburn Hopkins. New Haven 8 0 0

4400 The Legend of Vikramāditya—By P. V. Jagadisha Ayyar. Calcutta 1 8 0

4401 Moral Stories—Part I by P. V. Jagadisha Aiyar. Madras 0 9 0

4402 Tales from the Sanskrit Dramatists—The famous plays of Bhasa, Sudraka, Kalidas, Sri Harsha, Bhavabhuti and Visakhadatta. With a foreword by Sir C. V. Kumaraswami Sastri. Madras 2 0 0

4403 Tales of Old Sind—By C. A. Kincaid. 5 0 0

4404 Uncle Sam—By John Erskine. Foreign 5 0 0

4405 Vikrama's Adventures or Thirty-two Tales of the Throne—By F. Edgerton. Part I—Translation. Part II—Text. Foreign 40 0 0

चम्पू-ग्रन्थाः

४४०६ आनन्दकन्दचम्पू—मित्रमिश्रकृता । Edited with Introducion by P. Narayana Nand Kishore Sharma Sahityacharya. Allahabad 3 8 0

४४०७ आनन्दवृन्दावनचंपू—सटीक । मुम्बई ४ ० ०

४४०८ उदयसुन्दरीकथा—कायस्थकविसोड्ढलविरचिता । मुम्बई २ ४ ०

४४०९ चन्द्रशेखरचम्पूकाव्यम्— कलकत्ता ३ ० ०

४४१० चम्पूभारत—रामचन्द्रबुधेन्द्रविरचितव्याख्यासहित । मुम्बई २ ६ ०

४४११ चम्पूभारतम्—श्रीखण्डेइत्युपाह्वनारायणसूरिविरचितटीकासहितम् । मुम्बई २ ० ०

४४१२ चम्पूरामायणम्—(भोजचम्पूकाव्यम्) मूलमात्रम् । कलकत्ता ० ८ ०

४४१३ चम्पूरामायणम्—(भोजचम्पूकाव्यम) सटीकम । कलकत्ता १ ४ ०

४४१४ चम्पूरामायण—श्रीभोजराजसार्वभौमविरचित (पञ्चमकाण्ड तक) लक्ष्मणसूरिविरचित (षष्ठकाण्डमात्र) और रामचन्द्रबुधेन्द्रविरचितव्याख्यासहित । मुम्बई २ ० ०

४४१५ द्रौपदीपरिणयः—चक्रकविविरचित । मद्रास ० ८ ०

४४१६ नलचम्पू—अथवा दमयन्ती कथा । महाकविश्रीत्रिविक्रमभट्टविरचिता । चण्डपालकृतया विषमपदप्रकाशाख्यव्याख्यया सहिता । मुम्बई १ ६ ०

४४१७ नलचम्पू अथवा दमयन्तीकथा—श्रीत्रिविक्रमभट्टविरचिता । विषमपदप्रकाशाख्यव्याख्यया, भावबोधिनीटिप्पणीसहिता । काशी १ ४ ०

४४१८ निम्बादित्यदशश्लोकी—श्रीहरिव्यासकृतकुसुमाञ्जलिभाष्यसंवलिता । मुम्बई ० ४ ०

४४१९ नीलकण्ठविजयः—श्रीमन्नीलकण्ठदीक्षितविरचितश्चम्पूग्रन्थः विबुधानन्दव्याख्यासमन्वितः । मद्रास २ ० ०

४४२० नृसिंहचम्पू— मुम्बई ० ३ ०

४४२१ पारिजातहरणचम्पूः—महाकविशेषश्रीकृष्णविरचित । मुम्बई ० ७ ०

4422 The Parijata Harana of Umapati Upadhyaya—By Sir George Grierson. 5 0 0

४४२३ पुरुदेवचम्पू— मुम्बई ० १४ ०

४४२४ प्रदोषमाहात्म्य—(चम्पूकाव्य) पालमणिप्रभाकर विरचित । मद्रास ० ५ ०

४४२५ भागवतचम्पूः—श्रीअभिनवकालिदासविरचित सटिप्पण । मुम्बई १ ८ ०

४४२६ भारतीसिद्धान्तादेशः— ० ३ ०

४४२७ भार्गवचम्पू—सटिप्पण। मुम्बई ० ८ ०

४४२८ मन्दारमरन्दचम्पूः—श्रीकृष्णकविविरचितया माधुर्यरञ्जनीव्याख्यया समेता। मुम्बई १ ८ ०

४४२९ माधवचम्पूकाव्यम्— कलकत्ता ० ४ ०

४४३० रघुनाथविजयचम्पूः—सटिप्पण। मुम्बई ० ८ ०

४४३१ विश्वगुणादर्शचम्पूः—महाकविश्रीमद्वेंकटाध्वरिविरचिता योगीत्युपाभिध-बालकृष्णशास्त्रिविरचितपदार्थचन्द्रिकाटीकासहिता। मुम्बई १ ८ ०

४४३२ श्रीनिवासविलासचम्पूः—वेंकटेशकविविरचिता। धरणीधरकृतया टीकया समेता। मुम्बई ० १४ ०

४४३३ हालास्यचम्पूप्रबन्ध—कविरत्नाज्ञानुसारिविरचित। मद्रास ० १२ ०

साहित्य-ग्रन्थाः

४४३४ अभिधावृत्तिमातृका—महामहोपाध्यायश्रीमन्मुकुलभट्टप्रणीता तथा शब्द-व्यापारविचारः श्रीमन्मम्मटाचार्यविरचितः। मुम्बई ० ६ ०

4435 Abhinaya Darpanam (अभिनयदर्पणम)—of Nandikeshvara—A Manual of gestures and postures used in Hindu dance and drama, critically edited for the first time by M. Ghosh. M. A. with introduction, English translation, Notes and illustrations. 5 0 0

४४३६ अभिनवकाव्यप्रकाश—श्रीगिरिधरलालेन साहित्यशास्त्रिणा पद्यमयीं मूर्तिमासादितः टिप्पणीभिश्च संयोजितः। काशी १ ० ०

४४३७ अलंकारकौमुदी—ले० साहित्योपाध्याय पं० परमेश्वरानन्दशास्त्रीविद्याभास्कर, प्रिंसिपल सनातनधर्म संस्कृत कालेज लाहौर। हिन्दी में अलंकार विषय की ऐसी उपयोगी पुस्तक कोई नहीं निकली। यह पुस्तक भारतभर के साहित्य महारथी धुरंधर विद्वानों की सर्वश्रेष्ठ सम्मतियां प्राप्त कर चुकी है। लाहौर २ ० ०

४४३८ अलंकारकौस्तुभ—श्रीविश्वेश्वरपण्डितविरचितस्वोपज्ञव्याख्यासहित। मुम्बई ३ ० ०

Alamkarakaustubha—A work on Sanskrit Rhetoric and Prosody by Kavi Karnapura. Edited by Pt. Shivaprasad Bhattacharya, M. A. Bombay 3 0 0

4439 Alankarakaustubha (अलंकारकौस्तुभ), a work in Sanskrit Poetics by Kavi Karna Pura with an old commentary. Edited with a gloss by Shiva Prasad Bhattacharya, two parts. 6 8 0

४४४० **अलंकारचन्द्रिकासटीक**—अलंकारमञ्जूषाटीकासमेत। मुम्बई ० ६ ०

४४४१ **अलंकारप्रकाश**—सेठ कन्हैयालालपोद्दारप्रणीत। अलंकार विषय का हिन्दी भाषा में सर्वोत्तम देखने योग्य ग्रन्थ है। मुम्बई २ ८ ०

४४४२ **अलंकारप्रदीप**—पर्वतीयविश्वेश्वरपंडितकृत। बनारस ० ८ ०

४४४३ **अलंकारमञ्जरी**—श्रीयुतनिर्मलभट्टविरचिता। श्रीकाशीवासिना कविना लक्ष्मीनारायणेन संशोधिता। प्रभासपाटण ० २ ०

४४४४ **अलंकारमणिहार**—श्रीमद्भिः श्रीकृष्णब्रह्मतन्त्रपरकालसंयमीन्द्रैः प्रणीतः। ३ भागाः। मद्रास १० २ ०

४४४५ **अलंकारमुक्तावली**—विश्वेश्वरपाण्डेयकृतः। बनारस ० १२ ०

४४४६ **अलंकारशेखर**—श्रीकेशवमिश्रकृतः। मुम्बई ० ६ ०

४४४७ **अलंकारशेखरः**—केशवमिश्रकृतः। भूमिकादिभिर्युतः। काशी ० १२ ०

४४४८ **अलंकारसर्वस्वम्**—श्रीराजानकरुय्यकप्रणीतम्। काशी १ ८ ०

४४४९ **अलंकारसारमञ्जरी**—भाषाविवृतिसहिता। साहित्याचार्यखिस्ते-इत्युपाख्य पं० नारायणशास्त्रिणा प्रणीता। काशी ० ४ ०

४४५० **अलंकारसारसंग्रहः**—उद्भटाचार्यप्रणीतःश्रीन्दुराजविरचितलघुवृत्तिसमेतः। पूना २ ८ ०

४४५१ **अलंकारसूत्र** (राजानकश्रीरुय्यकप्रणीत)—With अलंकारसर्वस्व of मंखुक and its commentary by समुद्रबन्ध (Second edition). मद्रास २ ८ ०

४४५२ **कर्णभूषण**—श्रीगंगानन्दकविराजप्रणीत। मुम्बई ० ०

४४५३ **कविकल्पलता**—महाकविश्रीदेवेश्वरविरचिता। विद्वद्विहगाश्रयकल्पपादपमहाराजाधिराजश्रीमत्सुढलदेव के० सी० आइ० इ० वामण्डाप्रदेशाधिपतिबहादुरस्यानुमत्यनुसारेण साहाय्येन च पण्डितश्रीरामगोपालकविरत्नभट्टाचार्येण परिवर्द्धिता संस्कृता च। कलकत्ता १ ० ०

४४५४ **काव्यकल्पलतावृत्तिः**—श्रीअमरचन्द्रयतिविरचिता। अरिसिंहकृतसूत्रसंहिता। बनारस १ ४ ०

४४५५ **काव्यचिन्ता**—(श्रीकण्ठकालिदासकाव्यसमालोचनात्मकग्रन्थः) श्रीकालीपदतर्काचार्यसम्पादिता। कलकत्ता १ ० ०

४४५६ **काव्यडाकिनी**—गङ्गानन्दकवीन्द्रकृता। Edited with Introduction &c. by Jagannath Shastri Hoshing Sahityopadhyaya. Allahabad 0 10 6

४४५७ **काव्यदर्पण**—राजचूडामणिदीक्षितविरचित। भाग १। मद्रास २ ८ ०

४४५८ **काव्यदीपिका**—विश्वविद्यालयच्छात्राणां पाठोपयोगी सुगमः क्षुद्रकायः अलंकारग्रन्थः । लाहौर ० ६ ०

४४५९ **काव्यदीपिका**—पं० हरिदत्तशास्त्रि-न्यायव्याकरणादिसप्ततीर्थेन कृता संस्कृत-भाषाटीकाद्वयोपेता । लाहौर १ ० ०

४४६० **काव्यदीपिका**—(कान्तिचन्द्रकृत) पं० विद्यारत्नकृतसंस्कृतटीकासहित । कलकत्ता १ २ ०

४४६१ **काव्यप्रकाशः**—मम्मटाचार्यकृतः । विस्तृतटीकासहितः । कलकत्ता ४ ० ०

४४६२ **काव्यप्रकाशे**—दशमोल्लासः। The late Prof. Chandorkar's edition thoroughly revised, with additional Sanskrit extracts from other commentaries. By Dr. Hari Dutt Sharma M. A., Ph. D. The Notes contain also the English translation. Poona 3 0 0

४४६३ **काव्यप्रकाशे**—तृतीयोल्लासः। Edited by Vidyā Sudhākara Dr. Har Dutt Sharma, M. A., Ph. D. with a Sanskrit commentary, explanatory Notes and translation. Poona 0 8 0

४४६४ **काव्यप्रकाशः**—अलङ्कारशास्त्रम् । मम्मभट्टकृतः । महेश्वरन्यायालङ्कारभट्टाचार्यकृतादर्शटीकासंस्कृतभूमिकाटिप्पनीसूचीपत्रादिसमेतः । रवीन्द्रनाथ-गीताञ्जल्यनुवादात्मक-संस्कृतगीताञ्जलि-कृष्णवद्वीप-'पाकाटोल'-विद्यालयाध्यक्षचर-श्रीअमरेन्द्रमोहन-तर्कतीर्थ-संस्कृत-साहित्यपरिषत्पत्रिका-सहकारिसम्पादकश्रीउपेन्द्रमोहनसांख्यतीर्थ-संस्कृतः । आङ्गलभूमिकया, आंगलसंक्षिप्तसारेण च समलङ्कृतः । कलकत्ता ८ ० ०

४४६५ **काव्यप्रकाशः**—मम्मटाचार्यकृतः । नागोजीभट्टविरचितोद्द्योतयुतगोविन्द-ठक्करविरचितप्रदीपसमेतः । पूना ६ ४ ०

४४६६ **काव्यप्रकाशः**—श्रीभीमसेनविरचितया 'सुधासागर' टीकया, विशदटिप्पणेन च सहितः । खण्डाः ७ । सम्पूर्णः । काशी ५ ० ०

४४६७ **काव्यप्रकाशः**—मम्मटाचार्यकृतः, आचार्य श्री माणिक्यचन्द्र विरचित-संकेतटीका सहितः । पूना ३ ४ ०

४४६८ **काव्यप्रकाशः**—स्वर्गीय वामन चार्यझालकीकरकृत बालबोधिनी टीकासहित। अत्युत्तम टाइप । पूना ८ ० ०

४४६९ **काव्यप्रकाशः**—माणिक्यचन्द्रविरचितसंकेतव्याख्यासहितः । मद्रास ३ १५ ०

४४७० **काव्यप्रकाशः**—श्रीविद्याचक्रवर्त्तिकृतसम्प्रदायप्रकाशिन्या भट्टगोपालकृतसाहित्यचूडामणयाख्यया च व्याख्यया समलंकृतः । २ भागौ । मद्रास ८ ० ०

४४७१ **काव्यप्रकाशः**—मम्मटाचार्यविरचितः। पं० हरिशंकरशर्मणा संगृहीतया नागेश्वरीटीकयाऽलंकृतः। बनारस ४ ० ०

4472 Kavya Prakash—of Mammaṭa—A treatise on rhetoric, translated into English by Dr. Ganga Nath, M. A. Benares 5 0 0

4473 Kavya Prakash, English translation. (M. M. Ganganatha Jha, D. Litt.) Allahabad 4 8 0

४४७४ **काव्यप्रकाशदीपिका**—श्री चण्डीदासप्रणीत, श्री शिवप्रसाद भट्टाचार्य एम० ए० द्वारा सम्पादित। प्रयाग १ १२ ०

४४७५ **काव्यप्रदीप**—महामहोपाध्याय श्रीगोविन्दविरचित, तत्सदुपाख्यवैद्यनाथकृत व्याख्या सहित। इस ग्रन्थ में काव्यप्रकाश जैसे १० उल्लास हैं। मुम्बई २ ० ०

४४७६ **काव्यप्रदीप**—काव्यप्रकाशस्य प्रतिच्छायाव्याख्या श्रीमद्गोविन्दठक्कुरप्रणीत। टाइप। बनारस ३ ८ ०

४४७७ **काव्यमीमांसा**—राजशेखरविरचिता। पं० मधुसूदनमिश्रेण मधुसूदनीटीकासहिता सम्पादिता। बनारस २ ० ०

४४७८ **काव्यमीमांसा**—राजशेखरविरचिता। साहित्याचार्य पं० श्रीनारायणशास्त्रिखिस्तेकृतकाव्यमीमांसाचन्द्रिकाटीकासहिता (१ से ५ अध्याय)। प्रथमो भागः। बनारस ० ८ ०

४४७९ **काव्यमीमांसा**—राजशेखरविरचिता। मुम्बई २ ० ०

४४८० **काव्यविलासः**—चिरञ्जीवभट्टाचार्यकृतः। Edited with Introduction by Batuknatha Sharma, M. A. Allahabad 1 2 0

४४८१ **काव्यादर्शः**—दण्डिकृतः, विस्तृताभिनवटीकासहितः। कलकत्ता २ ८ ०

4482 Kāvyādarśa (काव्यादर्श) of Daṇḍin edited by Dr. Belvalkar. Sanskrit text and English translation. Poona 3 0 0

4483 Kāvyādarsha of Dandin, with an original Sanskrit commentary by Vidyabhushan Rangacharya Raddi Shastri. Poona 4 8 0

४४८४ **काव्यादर्शः**—श्रीदण्ड्याचार्यविरचितः। कुसुमप्रतिमाख्यया संस्कृतव्याख्यया तथा सौभाग्यवतीटिप्पणेन सहितः—व्याख्याता कवितार्किकः सकलशास्त्रनिष्णातः पं० नृसिंहदेवः शास्त्री दर्शनाचार्यः। सजिल्द। लाहौर ३ ० ०

4485 Kavyadarsha—With the commentary of Jivananda Vidyā Sagara and with introduction and English translation by V. Narayana Iyer, M. A., M. L. Madras 3 0 0

4486 Kavyadarsha of Dandin—(काव्यादर्शः) Containing original Sanskrit text and German translation. Edited with an index of words by O. Bohtlingk. Leipzig 8 0 0

४४८७ काव्यानुशासन—श्रीमद्वाग्भटविरचित, स्वकृतटीकासहित। मुम्बई ० ७ ०

४४८८ काव्यानुशासन—आचार्यहेमचन्द्रविरचित स्वोपज्ञालंकारचूडामणिसंज्ञक वृत्तिसहित। मुम्बई २ ४ ०

४४८९ काव्यानुशासनम्—आचार्यहेमचन्द्रकृतम्। अलङ्कारचूडामणिना, विवेकेन, टिप्पणया च सहितम्। Edited with various readings and Indices by R. C. Parikh. 2 Vols. 6 0 0

४४९० काव्यालंकारसूत्रवृत्तिः—वामनाचार्यकृता कामधेनुटीकान्विता। कलकत्ता १ ८ ०

४४९१ काव्यालंकारसूत्राणि—आचार्यवामनविरचितवृत्तिसमेतानि कामधेनुसमाख्यया व्याख्यया च समेतानि। सम्पूर्ण बनारस १ ८ ०

४४९२ काव्यालंकार—सूत्रवृत्ति। कामधेनु व्याख्यासहित। २ ८ ०

4493 Kāvyālaṅkārasūtravṛtti (काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति)—with text and extracts from Kāmadhenu, critically edited by N. N, Kullkarni B. A. Poona 1 8 0

4494 Kavyalamkarasutra (काव्यालंकारसूत्र)—English translation by Dr. Jha, M. A. Benares 2 0 0

4495 Kāvyālaṅkārasūtravritti of Vāmana—English translation by Dr. Ganganath Jha. Poona 1 8 0

४४९६ Kāvyālaṅkāra of Bhāmaha—

भामहीयः काव्यालङ्कारः—मीमांसार्णवमीमांसाकेसरिश्रीशैलताताचार्यशिरोमणिना प्राच्यविद्येश्वरेण कृतया उद्यानवृत्त्या काव्यालंकारकाव्यादर्शादिबहुविषयविमर्शनपरेण उपोद्घातेन च समेतः। मद्रास ४ ० ०

४४९७ काव्यालङ्कारः—भामहाचार्येण विरचितः। भूमिकादिभिः समलङ्कृतः। काशी १ ८ ०

४४९८ काव्यालंकार—रुद्रटकृत। नमिसाधुकृत टीकासहित। मुम्बई १ ८ ०

४४९९ काव्यालंकारसंग्रहः—श्रीमदुद्भटप्रणीतः, श्रीमत्प्रतीहारेन्दुराजविरचितया काव्यालंकारसारलघुवृत्त्या सहितः। मुम्बई ० १० ०

४५०० काव्यालंकारसारसंग्रहः—उद्भटकृतः विवृतिसमेतः। बड़ौदा २ ० ०

४५०१ काव्यालंकारसारसंग्रहः—उद्भटाचार्यप्रणीतः श्रीन्दुराजविरचितलघुवृत्तिसमेतः। Edited with introduction, Notes, appendices &c. by N. D. Banhatti. 2 8 0

४५०२ **कुवलयानन्द**—अप्पयदीक्षितकृत, चन्द्रालोक और अलंकारचन्द्रिका टीका सहित तथा श्लोकों के वर्णक्रमकोशसहित । बारीक अक्षर । मुम्बई १ ० ०

४५०३ **कुवलयानन्दकारिका**—आशाधरभट्टकृत । स्वकृत अलंकारदीपिका टीका सहित । मुम्बई ० ८ ०

४५०४ **कुवलयानन्द**—जयदेवपण्डितरचित टीकासहित । स्थूलाक्षर सजिल्द । मुम्बई २ ८ ०

४५०५ **कुवलयानन्दः**—अप्पयदीक्षितकृतः सटीकः । कलकत्ता २ ० ०

4506 Kuvalayananda-Karikas of Appaya-Dikshita—With the commentary of Ashadhara translated by R. Schmidt. Library edition. 4 2 0

४५०७ **चन्द्रालोकः**—पीयूषवर्षश्रीजयदेवकविप्रणीतः । श्रीमत्पद्मनाभमिश्रापराभिधानप्रद्योतनभट्टाचार्यविरचितया चन्द्रालोकप्रकाशापराख्य'शरदागम'टीकया संकलितः । साहित्याचार्येण खिस्ते इत्युपाख्यनारायणशास्त्रिणा भूमिकादिभिः सम्भूष्य सम्पादितः । बनारस ० १० ०

४५०८ **चन्द्रालोक**—of श्री जयदेव, ed. with intro., पौर्णमासी and कथाभट्टी, Sanskrit and Hindi commentaries, 1937. Benares 1 0 0

4509 Chandrāloka (चन्द्रालोक) of Jayadeva—अलंकारप्रकरणम् With English Notes and translation by C. Sankara Rama Shastri, M. A., B. L. Madras 1 0 0

४५१० **चन्द्रालोकः**—श्रीगागाभट्टप्रणीतटीकासहितः । २ खण्डौ । काशी २ ० ०

४५११ **चन्द्रालोकः**—श्रीपीयूषवर्षजयदेवकविविरचितोऽलंकारग्रन्थः । पायगुण्डोपाह्वैद्यनाथ(बालंभट्ट)विरचितरमाख्यया व्याख्यया सहितः । मुम्बई ० १० ०

४५१२ **चन्द्रालोकः**—जयदेवकृतः । कलकत्ता ० ५ ०

४५१३ **चित्रमीमांसा**—अप्पयदीक्षित विरचित सटिप्पण अत्युत्तम टाइप । बनारस १ ० ०

४५१४ **चित्रमीमांसा**—श्रीमदप्पयदीक्षितप्रणीत चित्रमीमांसाखण्डन-पण्डितराजजगन्नाथविरचित । मुम्बई १ ० ०

४५१५ **त्रिवेणिका**—आशाधरभट्टकृता प्रयाग ० १४ ०

४५१६ **दशरूपकम्**—नाट्यशास्त्रं धनञ्जयविरचितमदलोकसहितं पञ्चनदीयपण्डितसुदर्शनाचार्यप्रणीता प्रभाख्यव्याख्यासहितं च । मुम्बई १ ० ०

४५१७ **दशरूपकम्**—(धनञ्जयकृतम्) धनिककृतटीकान्वितम् । कलकत्ता १ ४ ०

४५१८ दशरूपक—श्रीधनंजयविरचित धनिककृत अवलोक टीका सहित।
मुम्बई ० १४ ०

4519 Dasha-Rupaka—A treatise on Hindu Dramaturgy by Dhananjaya, first translated into English from Sanskrit with the text and an introduction and Notes by George C. O. Haas. Bound in cloth with gold letters. 14 0 0

४५२० ध्वन्यालोकः—श्रीमदानन्दवर्धनाचार्यप्रणीतः। पं० श्रीबदरीनाथशर्मणा निर्मितया 'दीधिति' विवृत्या विभूषितः।
काशी २ ० ०

4521 Natakalaksana Ratna Kosha By Dillon Myles.
Oxford 11 4 0

४५२२ ध्वन्यालोकः—श्रीमदानन्दवर्धनकृतः। श्रीमदभिनवगुप्तपादकृतलोचनेन, श्रीमदुत्तुङ्गोदयकृतकौमुद्या, श्रीमत्कुप्पुस्वामिशास्त्रिवर्यकृतेन उपलोचनेन च संवलितः। २ खंडौ।
मद्रास ४ ८ ०

Dhvanyāloka by Ānandavardhana and Locana by Abhinavagupta with Kaumudi by Uttungodaya and Upalocana by Kuppusvāmi Sāstri. 2 Fasc. Madras 4 8 0

४५२३ नञ्जराजयशोभूषणम्—by Nṛsiṁhakavi alias Abhinava Kālidāsa, a work on Sanskrit Poetics and relates to the glorification of Nañjarāja, son of Vīrabhūpa of Mysore: edited by Pandit E. Krishnamacharya, 1930 5 0 0

४५२४ नाटकलक्षणरत्नकोशः—सागरनन्दिप्रणीतः। Edited by Myles Dillon.
11 4 0

४५२५ नाट्यदर्पणम्—रामचन्द्रसूरिकृतम्। सविवरणम्। प्रथमो भागः।
बड़ोदा ४ ८ ०

4526 Nāṭya Śāstra Samīkṣā—(नाट्यशास्त्रसमीक्षा) टि० के० रामचन्द्रशर्मणा विरचिता।

[It comprises all the essentials of Indian Dramaturgy.]
Madras 0 10 0

४५२७ नाट्यशास्त्रम्—(भरतप्रणीतम्)—काश्मीरिकाभिनवगुप्तकृतटीकया सहितम्। द्वितीयो भाग।
बड़ोदा ६ ० ०

४५२८ नाट्यशास्त्रम्—भरतमुनिप्रणीतम्। सम्पूर्णम। पं० बलदेवउपाध्यायेन, आचार्यध्रुवेण च सम्पादितम्।
काशी ५ ० ०

४५२९ प्रतापरुद्रयशोभूषण—श्रीविद्यानाथकृत। श्रीमन्मल्लिनाथसुत कुमारस्वामी विरचित रत्नापणाख्य टीका तथा अंग्रेजी टिप्पणियों सहित। Edited by K. P. Trivedi.
Poona 11 0 0

४५३० प्रतापरुद्रीयम्—विद्यानाथप्रणीतम्। अलंकारशास्त्रम्। कुमारस्वामिसोमपीथिना विरचितया रत्नापणाख्यया व्याख्यया समन्वितम्। मद्रास २ ० ०

४५३१ बालरामभरतम्—नाट्यशास्त्रविषयकम्। श्रीबालरामवर्मवञ्चिमहाराजविरचितम्। सन् १९३७। मद्रास २ ८ ०

४५३२ बालालंकार—संस्कृत रोचककाव्य। मुम्बई १ ० ०

४५३३ भावप्रकाशनम्—शारदातनयकृतम्। Edited by His Holiness Yadugiri Yatiraj Swami, Melkote. Baroda 7 0 0

४५३४ रसगंगाधर—श्रीपण्डितराजजगन्नाथविरचित। महामहोपाध्यायनागेशभट्टकृतगुरुमर्मप्रकाशाख्यव्याख्यासहित। ६ भागों में सम्पूर्ण। बनारस ३ ० ०

४५३५ रसगंगाधर—महाकविजगन्नाथकविराजविरचितमहामहोपाध्यायनागेशभट्टकृतटीकासहित। मुम्बई ३ ८ ०

४५३६ रसचन्द्रिका—विश्वेश्वरपाण्डेयकृता। काशी १ ० ०

४५३७ रसतरंगिणी—टिप्पणीसहिता। मुम्बई ० ८ ०

४५३८ रसतरंगिणी—श्रीभानुमिश्रविरचित। जयपुरराजकीयसंस्कृतपाठशाला के प्रधान न्यायशास्त्राध्यापकसाहित्यधुरंधरदर्शनपारदृश्वा गुरुपदविभूषित श्री पं० जीवनाथजीओझाविरचितभाषाटीकासहित। मुम्बई १ ८ ०

४५३९ रसप्रदीपः—प्रभाकरभट्टकृतः। Edited with Introduction, etc., by Narayana Shastri Khiste, Sāhityāchārya. Allahabad 1 2 0

४५४० रसमञ्जरी—कविरत्नभानुदत्तविरचिता। मुम्बई १ ४ ०

४५४१ रसमञ्जरी—श्रीभानुभट्टप्रणीता। पण्डितअनन्तकृतव्यङ्ग्यार्थकौमुद्या नागेशभट्टकृतप्रकाशेन च सहिता। ३ भागों में सम्पूर्ण। बनारस ३ ० ०

४५४२ रसमञ्जरी—महाकविभानुदत्तमिश्रकृता। श्रीबदरीनाथशर्मकृत 'सुरभि' व्याख्यासहिता। काशी १ ४ ०

४५४३ रसमीमांसा (छायाटीकासहित)—शिलाक्षर खुले पत्रे। काशी ० ६ ०

४५४४ रसार्णवसुधाकर—श्रीसिंहभूपालप्रणीत अति सुन्दर टाइप। मद्रास ३ ० ०

4545 Rasa and Dhvani—By Dr. A. Sankaran. 2 0 0

4546 रूपकरहस्य—A treatise on Hindu Dramaturgy. Allahabad 2 8 0

४५४७ वक्रोक्तिजीवितम्—राजानककुन्तलविरचितस्वोपज्ञवृत्तिसमेतम्। कलकत्ता ३ ८ ०

४५४८ वाग्भटालंकारः—(वाग्भटकृतः) विस्तृताभिनवटीकोपेतः। कलकत्ता १ २ ०

४५४९ **वाग्भटालंकारमूल**— मुम्बई ० ४ ०

४५५० **वाग्भटालंकारः**—प्रोफेसर उदयवीरशास्त्रिकृत-संस्कृतहिन्दीटीकाद्वयोपेतः। १ ० ०

४५५१ **वाग्भटालंकार**—श्रीवाग्भटप्रणीतसिंहदेवगणिविरचितटीकासहित। मुम्बई ० ८ ०

४५५२ **वाग्भटालंकार**—भाषाटीकासहित। राजवैद्य पं० मुरलीधरजीशर्मा के सान्वयसंस्कृत और भाषाटीका से यह और भी सरल हो गया है। मुम्बई १ १२ ०

४५५३ **वृत्तिवार्तिकम्**—श्रीमदप्पयदीक्षितप्रणीतम्। मुम्बई ० ३ ०

४५५४ **शृङ्गारप्रकाशः**—श्रीमन्महाराजाधिराजश्रीभोजदेवकृतः। तत्र २२-२३-२४ प्रकाशात्मकः प्रथमो भागः। (३१-३२-३३ प्रकाशा मुद्र्यमाणाः)। मद्रास ३ ६ ०

४५५५ **वेमभूपालचरित्रम्**—वामनभट्टबाणेन विरचितम्। मद्रास २ ८ ०

४५५६ **व्यक्तिविवेकः**—श्रीराजानकमहिमभट्टप्रणीतः। रुय्यकविरचितया व्याख्यया श्रीमधुसूदनशास्त्रिविरचितया विवृत्या च समेतः। काशी ४ ८ ०

४५५७ **सरस्वतीकण्ठाभरणम्**—धारेश्वरश्रीभोजदेवविरचितम्। मुम्बई ६ ० ०

४५५८ **सरस्वतीकण्ठाभरणम्**—भोजराजकृतं सटीकम्। ५ ० ०

४५५९ **साहित्यकौमुदी**—विद्याभूषणविरचित कृष्णानन्दिनी नामक टीकासहित। मुम्बई १ ८ ०

४५६० **साहित्यतत्त्वम्**—भट्टश्रीमामनचन्द्रशर्मशास्त्रिणा संगृहीतम्। पं० सूर्यनारायणशास्त्रिणा संशोधितम्। लाहौर ० ३ ०

४५६१ **साहित्यदर्पणः**—विश्वनाथपञ्चाननकृतः। मूलमात्र। कलकत्ता १ ० ०

४५६२ **साहित्यदर्पण**—सटीक। पं० जीवानन्दविद्यासागर भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित। ५ ० ०

४५६३ **साहित्यदर्पणः**—(विश्वनाथकृतः) विस्तृताभिनवटीकान्वितः तथा ग्रन्थस्य प्रथमतः शेषं यावत् प्रतिपरिच्छेदं संगृहीतेन दोषानामालंकाराणां च परस्परभेदैरत्यावश्यकेन सारसंक्षेपेण सहितश्च। कलकत्ता ४ ८ ०

४५६४ **साहित्यदर्पणः**—श्रीरामचरणतर्कवागीशभट्टाचार्यकृतटीकासमेतः। मुम्बई ४ ० ०

४५६५ **साहित्यदर्पणः**—महेश्वरकृतविज्ञप्रियया तथाऽऽनन्ददासकृतलोचनाख्यया टीकया संवलितः। edited by Śri Karunakara सन् १६३८। लाहौर ५ ० ०

४५६६ **साहित्यदर्पण**—कुसुमप्रतिमासंस्कृतटीकासहित (महामहोपाध्याय हरिदास सिद्धान्तवागीश भट्टाचार्यकृत) कलकत्ता ४ ० ०

४५६७ **साहित्यदर्पण**—पं० शिवदत्तजीरचित रुचिरा व्याख्या सहित। मुम्बई ७ ० ०

४५६८ **साहित्यदर्पण**—पं० शालिग्रामविरचित भाषा टीका सहित सम्पूर्ण ।
लखनऊ ६ ० ०

४५६९ **साहित्यदर्पण**—With English Notes and History of Alaṅkāra Literature by P. V. Kane. Bombay 7 0 0

४५७० **साहित्यबिन्दुः**—साहित्यशास्त्रस्य प्रकरणग्रंथः । कुरुक्षेत्रभूषणपण्डित-छज्जूरामशास्त्रिकविरत्नविद्यासागर-प्रणीतः । लायलपुर ० १० ०

४५७१ **साहित्यमञ्जरी**—श्री पं० श्रीपादशास्त्रिहसूरकरकृता । इन्दौर ० ६ ०

४५७२ **साहित्यमीमांसा**— मद्रास १ ० ०

४५७३ **साहित्यरत्नाकर**—Edited with introduction by T. R. Chintamaṇi, M. A. 1 4 0

४५७४ **साहित्यवैभव**—(हिन्दी छन्दों में काव्याङ्गों की व्याख्या) मथुरानाथभट्ट विरचित । सचित्र, सजिल्द । ६ ० ०

४५७५ **साहित्यसार**—अच्युतरायकृतस्वोपज्ञसरसामोदव्याख्यासहित ।
मुम्बई २ ८ ०

4576 The Sahitya Sara Sangraha (साहित्यसारसंग्रह)—Being a treatise on Indian poetics based on the works of Dandin, Dhananjaya, Mammata, Vishwa Natha, Jagan-Natha &c. in two parts. By M. R. Kale. Part I.
Bombay 0 8 0

४५७७ **साहित्यसिद्धान्त**—पं० सीतारामविराचित हिन्दी । भिवानी २ ८ ०

४५७८ **साहित्योद्देशः** (संस्कृत)— भिवानी २ ८ ०

४५७९ **हिन्दी अलङ्कार रत्नाकर (सरल विवेचन सहित)**—साहित्याचार्य, विद्यासागर श्रीबृहद्बल 'संयमी' शास्त्री काव्यव्याकरण-वेद-वेदान्ततीर्थ, बी० ए०, बी० ओ० एल्० कृत । लाहौर ० १० ०

4580 Beitrage Zur Alteren Geschichte des Alamkara—sastra. Edited by J. Noble. Foreign 3 0 0

4581 Bharatiya Natya Castram—Roman text. Edited by J. Grosset. Foreign 16 6 0

4582 A History of Sanskrit Poetics—By P. V. Kane, M. A., LL. M. Bombay 3 6 0

4583 Das Indische Drama—By Sten Konow.
Foreign 7 8 0

4584 Indian Æsthetics—By Ramaswami Śāstrī. [Nearly all the known works on Sanskrit Rhetoric are dealt with in this book.] Madras 2 0 0

4585 La Rhetorique Sanskrite—Exposee dans son développement Historique, et Ses Rapports avec la Rhetorique Classique. Par Paul Regnaud. Paris 15 0 0

4586 Sanskrit Drama—In its origin, development, theory and practice—By A. B. Keith. Foreign 15 12 0

4587 Some Aspects of Literary Criticism in Sanskrit or the Theories of Rasa and Dhvani—By A. Sankaran, M. A. Madras 2 0 0

4588 Treatment of Love in Sanskrit Literature—By S. K. De, M. A., D. Litt. Calcutta 1 4 0

4589 Types of Sanskrit Drama—By D. R. Mankad. With a foreword by Dr. S. K. De, M. A. 5 0 0

रामायण-ग्रन्थाः

४५६० **अद्भुतरामायण**—मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई ० १२ ०

४५६१ **अद्भुतरामायण**—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकासहित। खुले पत्रे। मुम्बई १ ८ ०

४५६२ **अध्यात्मरामायण**—गुटका। मूलमात्ररेशमीजिल्दशुद्धसंस्करण। मुम्बई १ ८ ०

४५६३ **अध्यात्मरामायण**—मूल (गुटकारेशमी) साधारणसंस्करण। बनारस १ ४ ०

४५६४ **अध्यात्मरामायण**—संस्कृतटीकासमेत। ग्लेज। मुम्बई ४ ० ०

४५६५ **अध्यात्मरामायणम्**—रामवर्म्मकृतसंस्कृतटीकासहितम्। पुस्तकाकार। कलकत्ता ३ ० ०

४५६६ **अध्यात्मरामायण**—पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकासहित। जिसमें श्रीरामचन्द्रजी का सम्पूर्ण चरित्र वर्णित है। यह गुप्त रामायण शिवजी ने पार्वती को सुनाई और यही ज्ञानामृत ब्रह्मा जी से नारदजी ने उपदेशरूप में ग्रहण किया और नारद जी से वाल्मीकि तथा व्यास ने प्राप्त कर नैमिषारण्य में शौनकादि से कहा है। अवश्य संग्राह्य ग्रन्थ है। ग्लेज। मुम्बई ७ ० ०

४५६७ **अध्यात्मरामायणम्**—नरोत्तम-गोपालचक्रवर्ति-रामवर्म-कृतटीका-टिप्पनी-सूचीपत्रादिसमेतम्। अध्यापक-श्रीनगेन्द्रनाथसिद्धान्तरत्न-संस्कृतम्। अध्यापकश्रीप्रबोधचन्द्र-बाग्चि-एम्-ए-डि-लिट्-लिखित-ङ्गलभूमिकया समलङ्कृतम्। खण्डद्वयम्। ० १२ ०

४५६८ **अध्यात्मरामायणम्**—भाषाटीकासहित। गोरखपुर १ १२ ०

४५६९ **श्रीमदानन्दरामायणम्**—द्वितीया वृत्तिः। मुम्बई ६ ० ०

४६०० धर्माकूतम्—A series of dissertations on the Ramayana of Valmiki. 3 Vols. Madras 6 0 0

४६०१ मन्त्ररामायण—वेद के मन्त्रों से रामायण की कथा। सजिल्द। १ ० ०

४६०२ मूलरामायणभारतीयशीलनिरूपणाध्यायौ—गंगाधरमिश्रकृतसुधाव्याख्यासहितौ। काशी ० ६ ०

४६०३ रामचरित—अभिनन्दकृत। मूल। संस्कृत। बडोदा ७ ८ ०

4604 Ramayana—By Gopal Menon, B. A., LL. B. Ernakulam. 0 12 0

४६०५ रामायणम्—बालकाण्डम्-महर्षिवाल्मीकिप्रणीतम्। बी०ए०उपाधिधारिणा श्रीजीवानन्दविद्यासागरभट्टाचार्यकृतटीकया समलंकृतम्। कलकत्ता १ ० ०

४६०६ रामायणसारसंग्रहः, भारतसारसंग्रहश्च—अप्पयदीक्षितकृतः with his own commentary. Madras 0 12 0

४६०७ रामायणसूक्तिसुधाकरम्—(ए० रंगराजशास्त्री) पालघाट ० १० ०

४६०८ रामोदन्तम् —With explanatory footnotes and English translation. Palghat 0 6 0

४६०९ रामोदन्तम्—With footnotes &c. श्रीरङ्गम् ० ४ ०

४६१० लघुरामचरितम्—The Ramayana abridged for the beginner, in Vālmīki's own words. Madras 0 6 0

४६११ लघुरामायणम्—वाल्मीकीयम्। श्री गोविन्दनाथगुह एम० ए०संकलितम्। कलकत्ता ३ ८ ०

4612 Vālmīki's Rāmāyaṇa—A metrical English translation by Ralph T. H. Griffith, M. A., C. I. E. Benares 10 0 0

4613 Valmiki Ramayana—Condensed in the poet's own words. Text in Devanagari and English Translation. By Vidyasagara Vidyavachaspati Prof. P. P. S. Shastri, B. A. (Oxon.), M. A. Madras 1 4 0

४६१४ वाल्मीकीयरामायणम्—नागेशभट्टकृत रामायणतिलक वंशीधर-शिवसहायकृतरामायणशिरोमणि-गोविन्दराजकृत भूषणाख्यटीकात्रयोपेतम। बालकाण्डम्— ३), अयोध्याकाण्डम्— ५), अरण्यकाण्डम्— २॥), किष्किन्धाकाण्डम्— २॥), सुन्दरकाण्डम्— ३॥), युद्धकाण्डम्—८), उत्तरकाण्डम्— ६ ० ०

४६१५ वाल्मीकीयरामायणम्—मूलम। (Pocket size). 8 Vols. Madras 8 0 0

4616 Valmiki Ramayaṇa (Pocket size)—English translation. Vol. I-Bālakāṇḍa. Vol II-Ayodhya Kanda, Part I Each Volume— 1 0 0

४६१७ वाल्मीकिरामायण—पं० ज्वालाप्रसादकृत भाषा टीका सहित। खुले पत्रे स्थूलाक्षर। मुम्बई ३० ० ०

४६१८ वाल्मीकिरामायणम्—मूलमात्रम्। दाक्षिणात्य पाठानुसारि। सचित्रम्। २ भागौ। मद्रास ४ ८ ०

[This edition is based on a careful collation of 12 Manuscripts and the printed editions of the southern recension. Such variants as were found fit to be considered have been given in the foot-notes. The second volume contains a full alphabetical index of each of the lines. (श्लोकार्ध) occurring in the text.]

४६१९ श्रीमद्वाल्मीकि-रामायण—हिन्दी भाषानुवाद सहित। अनुवादक चतुर्वेदी द्वारकाप्रसादशर्मा, एम० आर० ए० एस० इलाहाबाद बालकाण्ड २) अयोध्याकाण्ड पूर्वार्द्ध— २) अयोध्याकाण्ड उत्तरार्द्ध— २) अरण्यकाण्ड— २) किष्किन्धाकाण्ड— २) सुन्दरकाण्ड— १॥) युद्धकाण्ड पूर्वार्द्ध— २) युद्धकाण्ड उत्तरार्द्ध— २) उत्तरकाण्ड पूर्वार्द्ध—१॥), उत्तरकाण्ड उत्तरार्द्ध—१॥), सम्पूर्ण सातों कांड—१९ ० ०

४६२० वाल्मीकीयरामायण—हिन्दीअनुवाद। अनुवादक चण्डिकाप्रसाद अवस्थी। २ भाग। लखनऊ ८ ० ०

४६२१ वाल्मीकिरामायण—केवल भाषा। दो भागों में सजिल्द। पं० ज्वालाप्रसाद अनुवादित स्थूलाक्षर ग्लेज कागज। मुम्बई १४ ० ०

४६२२ वाल्मीकिरामायण—केवल भाषा। अनुवादक पं० रामेश्वरदत्तजी पांडेय। बनारस ६ ० ०

४६२३ वाल्मीकिरामायण—केवल भाषा। अनुवादक पं० गोपालशर्मा सचित्र २ भागों में। सजिल्द। प्रयाग १० ० ०

४६२४ वाल्मीकिरामायण—संक्षिप्त। डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर-सम्पादित। प्रयाग १ ० ०

४६२५ संक्षिप्तवाल्मीकिरामायणम्—श्री चिंतामणिविनायक वैद्य संकलित। मुम्बई २ ८ ०

4626 The Ramayana—Translated from the original of Valmiki: A modernised version in English Prose. By Makhan Lal Sen, B. L. Three volumes. Complete set. Calcutta 10 0 0

४६२७ वाल्मीकीयरामायणम्—साहित्याचार्य पंडित चन्द्रशेखरशास्त्रिकृत भाषा टीका सहितम् । २ भाग सजिल्द । काशी ८ ८ ०

४६२८ वाल्मीकि रामायण—मूलमात्र गुटका । मुम्बई ५ ० ०

४६२९ वाल्मीकि रामायण—खुले पत्रे मूलमात्र स्थूलाक्षर । मुम्बई ८ ० ०

४६३० वाल्मीकिरामायणम्—मूल, स्थूलाक्षर, २ भाग, कपड़े की जिल्द । मद्रास ४ ४ ०

४६३१ वाल्मीकि रामायण—रामकृत तिलक टीका सहित । ८ ० ०

४६३२ वाल्मीकिरामायण—रामाभिरामी संस्कृत टीका समेत । खुले पत्रे ग्लेज कागज । मुम्बई १४ ० ०

४६३३ वाल्मीकिभावदीपः— काशी १ १ ०

४६३४ वाल्मीकिरामायणम्—गोविन्दराजीयादिव्याख्यानसहितम् । बालकाण्डम् ।।।), युद्धकाण्डम् ४), उत्तरकाण्डम्— कुम्भघोण १ १२ ०

४६३५ वाल्मीकीय रामायण—भाषा । सातों काण्ड सम्पूर्ण सजिल्द । मथुरा ५ ० ०

४६३६ वाल्मीकि रामायण—तनिश्लोकी, रामानुजी, भूषण संस्कृतटीकात्रय सहित । खुले पत्रे । मुम्बई ३० ० ०

४६३७ श्रीमद्वाल्मीकि रामायणम्—सर्वतन्त्रप्रतिभेन शब्देन्दुशेखरादिनानानिबंध-प्रणेत्रा श्रीमन्नागेशभट्टेन स्वशिष्यस्य सतो जीविकाप्रदातुः शृंगवेरपुराधीशस्य वीरमणेः श्रीराम-राजस्य नाम्ना प्रणीतया रामयिणतिलकाख्यया टीकया, पण्डितश्रीवंशीधरशिवसहायाभ्यां प्रणीतया रामायणशिरोमण्याख्यया टीकया, श्रीगोविन्दराजप्रणीतया भूषणाख्यया टीकया च सह मुद्रितम् । तच्च सप्तभिः खण्डैः समापितम् । सम्पूर्ण । मुम्बई ३१ ० ०

४६३८ वाल्मीकीयरामायणम्—६ भागेषु सम्पूर्णम् । मद्रास ७ १४ ०
[Indispensable to Research Scholars.]

४६३९ वाल्मीकीयरामायणम्—२ भागौ सम्पूर्णम् । मद्रास ६ १२ ०
[Indispensable to Research Scholars.]

४६४० वाल्मीकिरामायण—सुन्दरकाण्डमूलस्थूलाक्षर खुले पत्रे । मुम्बई २ ८ ०

४६४१ वाल्मीकिरामायण—सुन्दरकाण्ड । गुटका रेशमी जिल्द । १ ० ०

४६४२ वाल्मीकिरामायण—सुन्दरकाण्डभाषाटीका । ३ ० ०

4643 The Ramayana of Valmiki—North-Western Recension. Printed for the first time.

Vol. I. Ayodhya-Kanda, edited by Ramalabhaya. 7 8 0

Vol, II. Bala-Kanda, by Bhagawad-datta. 5 0 0

Vol, III. Aranya-Kanda, edited by Bhagawad-datta and Vishva-Bandhu Shasrti. 7 8 0

Vol. IV. Kishkindha-Kanda, edited by Vishva-Bandhu Shastri. 7 8 0

4644 The Ramayana : History and contents with concordance of the printed recensions by Hermann Jacobi. Foreign 12 0 0

४६४५ संक्षेपरामायणम्— ० २ ०

४६४६ सप्तर्षिरामायणम्—With 15 half-tone illustrations printed in colours. 0 4 0

४६४७ समयादर्शरामायण—श्रीमन्महर्षिअग्निवेशकृत । पं० रामस्वरूपशर्माकृत-भाषाटीकासहित । मुरादाबाद ० १२ ०

4648 Le Rāmāyana de Vālmīki—Traduit en Francais par Alfred Roussel. Three Volumes. Paris 60 0 0

4649 The Riddle of the Ramayana—By C. V. Vaidya. Bound. Bombay 2 8 0

4650 Scenes from the Ramayana. By Ralph T. H. Griffith M. A. Allahabad 1 8 0

4651 Shrī Rāmachandra—The Ideal King. Some Lessons from the Rāmāyaṇa for the use of Hindu Students in the Schools of India. By Annie Besant, P. T. S. Madras 1 0 0

श्रीमद्गोस्वामि-तुलसीदासजीकृत रामायण

४६५२ श्रीरामचरितमानस—गोस्वामितुलसीदासजीकृत, उन्हीं की हस्तलिखित प्रति से केसरियानिवासी कोदौरामजी के द्वारा प्राप्त (नवाह्निकपाठविधिसहित) बड़े अक्षर । मुम्बई ४ ० ०

४६५३ श्रीरामचरितमानस—उपर्युक्त तथा लवकुशकाण्ड, वनवासतिथिपत्र, बरवारामायण, गूढ़ार्थकोष व नवाह्निकपाठविधिसहितमनोहरगुटका । मुम्बई ० २ ०

४६५४ तुलसीदासकृतरामायण—सचित्र । मूल गुटका मुम्बई १ ० ०

४६५५ तुलसीकृतरामायण—अत्यन्त मोटे अक्षर अति उत्तम श्लोकार्थ, गूढार्थ, प्रसंगार्थ, छन्दार्थ, अष्टम लवकुशकाण्ड, इतिहास, तुलसीदासजी का जीवनचरित्र, रामचन्द्र जी के वनवास का तिथिपत्र, दृष्टांत, बरवारामायण, हनुमान् जी का बड़ा चित्र, सूर्यवंश का वृक्ष और ३८०० टिप्पणी सहित । इसमें सम्पूर्ण क्षेपक और कोष भी है । रफकागज ७) ग्लेजकागज— मुम्बई ८ ० ०

४६५६ तुलसीकृतरामायण—मूल । क्षेपकसहितमध्यमाक्षर रफ कागज़ २।) ग्लेजकागज— मुम्बई ३ ० ०

४६५७ श्रीगोस्वामीतुलसीदासकृतरामायण—मूल । बनारस १ ६ ०

४६५८ श्रीगोस्वामीतुलसीदासकृतरामायण—कठिन शब्दों का अर्थ और वैज्ञानिक टिप्पणी के सहित । काशी १ ८ ०

४६५९ तुलसीकृतरामायण—मूल । बारीक अक्षर गुटका । रफ कागज़ १।), ग्लेजकागज़— मुम्बई १ १२ ०

४६६० तुलसीदासकृतरामायण—पं० रामश्यामविरचित तत्त्वदीपिकाटीकासहित तथा गोस्वामी जी का जीवनचरित्र, रामायणमाहात्म्य, रामशलाकाप्रश्न, हनुमानचालीसा, अष्टमलवकुशकाण्ड, वनवासतिथिपत्र, गूढार्थचिन्तामणि, प्रसंगानुसार इतिहास, शंकासमाधान, टिप्पणी, पाठान्तर, वहिर्लापिका, चित्रबंध, आदि विविध विषयालंकृत । मुम्बई ३ ८ ०

४६६१ तुलसीदासकृत रामायण—अर्थात् रामचरितमानस । (नवाह्निक-मासिक पाठ विधि सहित) आठों काण्ड । गुटका बनारस ० १० ०

४६६२ तुलसीकृत रामायण—भाषा टीका पंडित ज्वालाप्रसाद कृत । समग्र विशेषताओं सहित । बारीक अक्षर । गुटका । सुन्दर जिल्द । मुम्बई ३ ८ ०

४६६३ रामायण—अतिस्थूलाक्षर सजिल्द ग्लेजकागज बहुत बढ़िया, रात की चांदनी में भी आसानी से पढ़ सकते हैं । सचित्र १६), रफ कागज— १४ ० ०

४६६४ रामचरितमानस, सटीक—टीकाकारश्रीरामनरेशत्रिपाठी । अब तक रामायण के जितने संस्करण निकले हैं उन सबसे अधिक शुद्ध यही संस्करण है । प्राचीन से प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों से मिलाकर इसका पाठ शुद्ध किया गया है । मूल पाठ में कितने ही नये संशोधन हुए हैं जिनका अब तक किसी को पता नहीं था । टीका में एक एक शब्द की काफी छानबीन की गई है और कवि के हृदय का असली भाव व्यक्त करने का भरसक प्रयत्न किया गया है । आकार बड़ा, टाइप मोटा । कपड़े की मजबूत जिल्द । प्रयाग ५ ० ०

४६६५ रामचरितमानस—हिन्दी अनुवाद सहित छोटा आकार । अनु० श्रीरामनरेशत्रिपाठी । कपड़े की रंगीन जिल्द । ३ ० ०

४६६६ गोस्वामीतुलसीदासजीरचितरामचरितमानस—सटीक । टीकाकार पं० बाबूराममिश्रविशारद । कलकत्ता २ ० ०

४६६७ तुलसीकृतरामायण—लवकुशकाण्ड समेत । स्वर्गीय विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत संजीवनी नामक सरल हिन्दी टीका सहित । इसमें सम्पूर्ण क्षेपकों के अति उत्तम अर्थ, माहात्म्य, तुलसीदासजी का जीवन चरित्र, गूढार्थ, रामवनवास तिथिपत्र, कोष, हनुमान् जी का चित्र और सूर्यवंश का वृक्ष भी है । सुन्दर जिल्द, मोटे अक्षर, ग्लेज कागज । मुम्बई १२ ० ०

४६६८ तुलसीकृतरामायण—संजीवनीटीकासहित । उपर्युक्त समस्त विशेषताओं से युक्त । मध्यम अक्षर ग्लेज कागज । मुम्बई ६ ० ०

४६६६ **श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण**—आठों काण्ड सटीक "संतजीवनी" टीका सहित। टीकाकार पं० सीताराम मिश्र। पं० श्रीलाल उपाध्याय द्वारा परिवर्धित, संस्कृत तथा संशोधित। रफकागज ८), गलेज कागज, मोटा अक्षर। बनारस १० ० ०

४६७० **तुलसीदासकृत रामायण**—भाषा टीका आठों काण्ड। टीकाकार पं० नारायणप्रसाद मिश्र। गलेज़ कागज मोटा अक्षर। बनारस १० ० ०

४६७१ **तुलसीदासकृत रामायण**—भाषा टीका आठों काण्ड। टीकाकार पं० नारायणप्रसाद मिश्र। मझोला साईज़ बनारस ४ ० ०

४६७२ **तुलसीरामायण**—पं० रामेश्वरभट्ट जी आगरा निवासीकृत पीयूषधारा नामक भाषाटीका सहित। सर्वोत्तम संस्करण। ऐसा सुन्दर गुटका आज तक न कोई छपा है और न आगे छपने की आशा है। अनुवाद इतना सरल है और भाषा इतना रसीली है कि बच्चे भी समझ सकते हैं। कागज ग्लेज। गुटका सायज। मुम्बई ३ ८ ०

४६७३ **तुलसीकृतरामायण**—श्री सुखदेवलाल जी कृत सरल भाषानुवाद सहित। लखनऊ ४ ८ ०

४६७४ **तुलसीकृतरामायण**—सचित्र। पं० सूर्यदीन जी शुक्लकृत सरल अनुवाद स्थूलाक्षर। लखनऊ ४ ४ ०

४६७५ **तुलसीकृतरामायण**—गुटका। पं० सूर्यदीन जी शुक्लकृत भाषाटीका लखनऊ २ ८ ०

४६७६ **तुलसीरामायण**—बा० श्यामसुन्दरदासकृत भाषाटीका सहित ग्लेज कागज। प्रयाग ६ ० ०

४६७७ **तुलसीरामायण**—चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद जी शर्माकृत भावार्थदीपिका-भाषाटीका सहित। गुटका ग्लेज कागज सजिल्द। प्रयाग ३ ० ०

इस संस्करण के बिना जिल्द अलग अलग काण्ड भी मिल सकते हैं—बालकाण्ड ॥।), अयोध्याकाण्ड ॥।), अरण्यकाण्ड ।), किष्किंधाकाण्ड ≡), सुन्दरकाण्ड ।), लंकाकाण्ड ।=), उत्तरकाण्ड =)

४६७८ **मानस शंकावली**—गोस्वामी तुलसीदासजीकृत सातों काण्ड। रामायण की शंकाओं का समाधान श्रीमानसीबंदन पाठक जी विरचित। बनारस १ ० ०

४६७९ **श्रीमन्मानसनामवन्दना**—तत्त्वार्थसुमिरनीटीकासहित। श्रीकान्तशरणकृतश्रीतुलसीदासजी के नाम वन्दनारूप रामनामार्थ पर नामाराधनरीति की अखिलसाधनसम्पन्नव्याख्या। मुम्बई २ ० ०

4680 Book of Rama—Bible of India by Mahatma Tulsidas, rendered into English by Hariprasad Shastri. Foreign 2 12 0

4681 Râmâyaṇa Bâlakâṇḍa—Text with English Translation and English synonyms by Baldev Prasad, M. A.

Indispensable to Intermediate girls taking up Hindi as a compulsary subject. 3 0 0

4682 Ramayana of Tulsidas—or the Bible of Northern India by J. M. Macfie. Foreign 8 0 0

4683 Ramayana in English—By P. V. Jagadisa Ayyar with foreword from K. Sundaram Ayyer, M. A. Bound. 0 12 0

4684 The Sayings of Tulsidas—By Lala Kannoo Mal, M. A. Madras 0 8 0

4685 Tulasī Dāsa's Rāmāyaṇa, Index Verborum to (तुलसीरामायण शब्दसूची)—By Dr. Sūrya Kānta, with an Introduction by Prof. Dr. Jules Bloch.

[The word-Index has been prepared from the most authoritative edition of the Tulsī Rāmāyaṇa. The Introduction throws much light on the Philology of Indian vernaculars.] Lahore 12 4 0

4686 Tulasi Ramayana—English by F. C. Growse, 7th edition revised and corrected. Allahabad 4 0 0

अन्य रामायण—भाषा

४६८७ **आत्मरामायण**—स्वामीशंकरानन्दनिर्मित। मुरादाबाद तथा बम्बई ० ८ ०

४६८८ **कवितावलीरामायण**—जिसमें श्रीमद्गोस्वामितुलसीदास ने परम मनोहर सवैया, धनाक्षरी, कवित्तों में ज्ञानभक्ति सहित हरिकथा करुण वीर आदि नवों रसों में वर्णन की है। मुम्बई ० ६ ०

४६८९ **सटीक कवितावली रामायण**—पं० गणेशपांडेय ठा० सूर्यनाथसिंह-विशारदकृत। प्रयाग १ ८ ०

४६९० **कवितावली सटीक**—श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीकृत। मानपुर-निवासी बाबू बैजनाथजी कृत भाषा टीका। लखनऊ १ २ ०

४६९१ **कवितावली**—गोस्वामी तुलसीदासजी विरचित। हिन्दी अनुवाद सहित। अनुवादक इन्द्रदेवनारायण। गोरखपुर ० ६ ०

मुम्बई १ १२ ०

४६९२ **कवित्तरामायण**—भाषा टीका। लखनऊ १ २ ०

४६९३ **गीतावली सटीक**— गोरखपुर १ ४ ०

४६९४ **गीतावली**—सटीक १), सजिल्द—

४६९५ **गीतावलीरामायण**—भाषा टीका सहित। इसमें प्रत्येक भजन का गूढ़ाशय

ऐसी सरल हिन्दी भाषा में लिखा है कि जिसे सर्वसाधारण भली भान्ति समझ सकते हैं।
३ ४ ०

४६९६ **तुलसी सतसई**—तुलसीदासजीकृत। बोध पर ७०० दोहे भक्ति नीति के अपूर्व वर्णित हैं। मुम्बई ० ५ ०

४६९७ **श्रीमन्त्ररामायण**—मुंशीसूर्यनारायणलालनिर्मित दोहा चौपाई सोरठा इत्यादि में राम नाम की महिमा इसमें श्रुति, स्मृति, पुराण और प्रामाणिक ग्रन्थों से रामनाम का माहात्म्य ऐसा स्पष्ट लिखा है कि जिसके अवलोकन करने से अवश्य रामनाम पर पूर्ण श्रद्धा और भक्ति होती है। १ ८ ०

४६९८ **रामकथा**—२५ खण्ड। लेखक कीर्तन-कला-निधि, काव्य-कला-भूषण, कविरत्न पं० राधेश्याम कथावाचक। बरेली ५ ३ ०

४६९९ **रामचन्द्रिका**—सटीक। महाकविकेशवदास की कविता पर श्रीजानकीप्रसाद जी का सरल मनोहर अनुवाद। २ ० ०

४७०० **रामनिवास रामायण**—श्री जानकीप्रसाद रचित। लखनऊ १ ० ०

४७०१ **रामरसायन**—रसिकविहारीकृत सातोंकांड रामायण। मुम्बई ५ ० ०

४७०२ **रामलीला रामायण**—(सटीक) सातों कांड। पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत। मुम्बई २ ८ ०

४७०३ **रामस्वयंवर**—श्रीमहाराज रघुराजसिंहजू प्रणीत। मुम्बई ७ ० ०

४७०४ **रामायण अध्यात्मविचार**—भाषा। प० यमुनाशंकरकृत ४ ८ ०

४७०५ **रामायण**—२६ भाग। तर्ज़ राधेश्याम। मथुरा ३ ० ०

४७०६ **रामाश्वमेध भाषा**— लखनऊ १ ४ ०

४७०७ **विनयपत्रिका**—गो० तुलसीदासजीकृत। सरलहिन्दीभावार्थसहित; ६ चित्र, अनुवादकश्रीहनुमानप्रसादजीपोद्दार १), सजिल्द गोरखपुर १ ४ ०

४७०८ **विनयपत्रिकासटीक**— लखनऊ ० ८ ०

४७०९ **विनयपत्रिका**—तुलसीदासकृत (जिसमें रामचन्द्र जी के प्रति विनय के पद हैं) बाबूशिवप्रकाशसिंहकृत रामतत्त्वबोधिनी नाम तिलक सहित। लखनऊ २ ८ ०

४७१० **विनयपत्रिका**—वियोगीहरिकृतहरितोषिणीभाषाटीकासहित। बनारस २ ८ ०

४७११ **विनयपत्रिका**—(सचित्र) पं० महावीरप्रसादमालवीयकृतभाषाटीकासहित। अति स्थूलाक्षर विलायती कागज। प्रयाग २ ८ ०

४७१२ **षोडशरामायण**—(तुलसीदासजीरचित) अर्थात् १६ काव्यों का एकत्र संग्रह। उत्तम विलायती कपड़े की जिल्द ग्लेजकागज २॥), रफ कागज—मुम्बई २ ० ०

४७१३ **सूररामायण**—कविवरश्रीसूरदासप्रणीत। मुरादाबाद ० ८ ०

महाभारत-ग्रन्थाः

४७१४ **आर्यसंगीतमहाभारत**—सम्पूर्ण चारों भाग। लेखक श्री यशवन्तसिंह वर्मा। टेहाना २ २ ०

४७१५ इन्द्रलोकागमनम्—Ardschuna's Reise Zu Indra's Himmel. Von Franz Bopp. Text in Sanskrit. Berlin

4716 Nalopakhyanam (नलोपाख्यानम्)—Or story of Nala—an episode of Mahabharata containing the Sanskrit Text with a copious vocabulary and an improved version of Dean Milman's English translation by Sir Monier Williams. Nicely bound. 11 4 0

4717 Nalopakhyanam (नलोपाख्यानम्)—With English translation by P. Devi Prasad M. A., LL. B. Allahabad 0 12 0

4718 Metrical translation of Nala and Damayanti—by Dean Milman. Allahabad 1 8 0

4719 Notes on the Nalopakhyanam or Tale of Nala—For the use of Classical students. By John Peile, M. A. Cambridge 10 0 0

४७२० पाण्डवजन्म—लेखक पं० रामनारायणपाठक। बरेली ० ४ ०

४७२१ भारतसारसंस्कृत—इसमें महाभारत की कथा संक्षेप से वर्णित है। मुम्बई २ ० ०

४७२२ भारतसारभाषा—महर्षि व्यास का यथार्थ और पूर्ण आशय जैसा इस ग्रन्थ में आया है, ऐसे अन्यत्र दुर्लभ है। महाभारत की कथाओं का मर्म इससे भली भांति समझ में आ जाता है। ग्लेज कागज मोटे अक्षर ५), रफ कागज— मुम्बई ४ ० ०

४७२३ भीष्मपराक्रम—लेखक हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि पं० माधव शुक्ल। बरेली ० ४ ०

४७२४ भीष्मप्रतिज्ञा—लेखक हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि पं० माधव शुक्ल। बरेली ० ४ ०

४७२५ महाभारतम्—मूलम्। विराटपर्व—१।); कर्ण, शल्य, सौप्तिकपर्वाणि—३); आनुशासनिक, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थान, स्वर्गारोहणपर्वाणि— कुम्भघोण २ ८ ०

४७२६ महाभारत—(विराटपर्व)—Text edited from original Mss. as a tentative work with critical and explanatory notes and an introduction by N. B. Utgikar together with 3 colour illustrations. Big Volume, Poona 15 0 0

4727 Mahābhāratam (महाभारतम्)—Southern Recension. For the first time critically edited by Vidyasagar Vidya-

vachaspati P. P. S. Shastri, B. A. (Oxon.), M. A. 18 Vols. Price @ Rs 4/-/- per volume. Madras.

१–२ आदिपर्व, ३ सभापर्व, ४–५ आरण्यपर्व, ६ विराटपर्व, ७ उद्योगपर्व, ८ भीष्मपर्व, ९ द्रोणपर्व Part I, १० द्रोणपर्व Part II, ११ कर्णपर्व, १२ शल्य, स्त्री, सौप्तिकपर्वाणि, १३ शान्ति Part I, १४ शान्ति Part II, १५ शान्ति Part III, १६ अनुशासन Part I, १७ अनुशासन Part II, १८ आश्वमेधिक, आश्रमवास, स्वर्गारोहणपर्वाणि । १८ भाग । प्रति भाग— ४ ० ०

४७२८ **महाभारते**—शान्तिपर्व । काशी ४ ४ ०

४७२९ **महाभारत**—(विराटपर्व) नीलकण्ठकृतभारतभावदीप, अर्जुनमिश्रकृतदीपिका, चतुर्भुजमिश्रकृतप्रकाश, सर्वज्ञनारायणकृतभारतार्थप्रकाश, विमलबोधकृतदुर्घटार्थप्रकाशिनी, रामकृष्णकृतविरोधार्थभञ्जनी, विषमपदविवरण, वादीराजतीर्थविरचितलक्षाभरणेत्यष्टटीकोपेतं विपुलपाठभेदसहितं च । सजिल्द— मुम्बई ३ ८ ०

४७३० **श्रीमहाभारतम्**—(उद्योगपर्व) नीलकण्ठीयभावदीपअर्जुनमिश्रीयदीपिका-विमलबोधकृतदुर्घटार्थप्रकाशिनी, सर्वज्ञनारायणीयभारतार्थप्रकाशवादीराजतीर्थविरचितलक्षाभरणेति पञ्चटीकोपेतम् । सजिल्द । मुम्बई ८ ८ ०

४७३१ **महाभारत**—पं० रामस्वरूपशर्माकृतहिन्दीभाषाटीकासहितसजिल्दसम्पूर्ण १८ पर्व सम्पूर्ण । मुरादाबाद ५० ० ०

भाषाटीका बहुत ही सावधानी शुद्धता और सरलता के साथ मूल के पद २ से मिलाकर किया गया है. आज तक के छपे महाभारत के भाषानुवाद इसके मुकाबिले में अधूरे हैं, पर्व अलग अलग भी खरीदे जा सकते हैं। सब पर्वों की कपड़े की जिल्दें बँधी हैं। आदि ४॥), सभा १॥), वन ७), विराट १।), उद्योग ३॥), भीष्म २॥), द्रोण ५), कर्ण २॥।), शल्प २), सौप्तिक और स्त्री १।), शांति ३ जिल्द १०), अनुशासन ५), अश्वमेध २॥), आश्रमवास, मौसल, महाप्रस्थान और स्वर्गारोहण १।) ॥

४७३२ **महाभारत**—सम्पूर्ण । भाषा भाष्य समेत । भाषान्तरकर्ता श्रीपाद दामोदर सातवलेकर । सजिल्द । औंध ६५ ० ०

(१) आदि पर्व ६), (२) सभा पर्व २॥), (३) वन पर्व ८), (४) विराट पर्व २), (५) उद्योग पर्व ५), (६) भीष्म पर्व ४॥), (७) द्रोण पर्व ७॥), (८) कर्ण पर्व ३॥), ९) शल्य पर्व २॥), (१०) सौप्तिक पर्व ।॥), (११) स्त्रीपर्व॥।), (१२) शान्ति पर्व ११॥) [राजधर्म ४), आपद्धर्म १॥), मोक्षधर्म ६)], (१३) अनुशासन पर्व ६), (१४–१८) [आश्वमेधिक पर्व २॥, आश्रमवासिक पर्व १), मौसल पर्व, महाप्रस्थानिक पर्व ४॥), स्वर्गारोहण पर्व १)]

४७३३ **श्रीमन्महाभारतम्**—नीलकंठविरचितया 'भारतभावदीपा'(ख्य) टीकया समेतम् । पं० रामचन्द्र शास्त्री किंजवडेकर इत्येतैः पाठान्तरटिप्पण्यादियोजनया समलंकृतम् । ६ भागाः । सम्पूर्णम् । पूना ३३ ० ०

[The text is printed in Pica Black Type and the

Nilakanthi commentary given below is printed in pica type, on good paper. At the beginning of every parvan an extensive summary of all the Adhyayas is given which almost serves the purpose of a 'Chūrṇikā.' Till now no one has offered such a big work of such a type at such an amazingly low price.]

४७३४ **महाभारत**—अठारहों पर्व (पद्यमय) श्रीसबलसिंहजीचौहानकृत। वनारस २ ० ०

४७३५ **महाभारतभाषा**—(अठारह पर्वों का सम्पूर्ण वर्णन) लेखक रामलग्न पाण्डेयविशारद। वनारस ३ ० ०

४७३६ **हिन्दी महाभारत**—सचित्र। (संपूर्ण महाभारत का सारसंकलन) पचास चित्रों सहित। लेखक पं० रमाकान्तत्रिपाठी। कलकत्ता ३ ० ०

४७३७ **महाभारत भाषा**—अनुवादक पं० रामलग्न पाण्डेय विशारद काशी ११ ० ०

४७३८ **महाभारतानुक्रमणिका**—'Index to Mahābhārata'—containing preface in English. Descriptive contents of each Adhyaya of whole Mahabharata, 18 Parvas and an Alphabetical index of leading topics, places and persons. This index is so prepared as to be useful even to other editions. It furnishes, by the way, an index of such things contained in many Puranas as well. Madras 5 0 0

४७३९ **महाभारत भाषावार्त्तिक**—महाभारत का ऐसा सुन्दर सम्पूर्ण अनुवाद सरल भाषा में आज तक नहीं छपा। देखने से ही इसकी उपयोगिता प्रतीत हो जाती है। अक्षर खूब मोटे, कागज छपाई सफाई अति उत्तम। ७ भागों में सजिल्द। लखनऊ २२ ८ ०

इसके सब पर्व नीचे लिखे अनुसार अलग अलग भी मिलते हैं—(१) आदिपर्व २), (२) सभापर्व ॥।=), (३) वनपर्व ३।), (४) विराटपर्व ॥।`, (५) उद्योगपर्व २।), (६) भीष्मपर्व १॥।, (७) द्रोणपर्व २॥।), (८ कर्णपर्व १॥), (९) शल्य और गदापर्व १।), (१०) सौप्तिकपर्व और (११) स्त्रीपर्व ॥=), (१२) अनुशासनपर्व २।), (१३) अश्वमेधपर्व १।), (१४) शान्तिपर्व ४।), (१५) आश्रमवासपर्व, (१६) मुशलपर्व, (१७) महाप्रस्थानपर्व, (१८) स्वर्गारोहणपर्व चारों का ॥।)

४७४० **महाभारत**—हिन्दी छन्दोबद्ध। रचयिता श्रीलालखत्री। तरज राधेश्याम। अजमेर ६ ० ०

४७४१ **महाभारत**—सचित्र १८ पर्व का सार हिन्दी में। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी लिखित। सजिल्द। प्रयाग ४ ० ०

४७४२ **महाभारत भाषा**—दोहा, चौपाइयों में, सबलसिंह चौहानकृत सम्पूर्ण ६), रफ— मुम्बई ४ ० ०

४७४३ **महाभारत-तात्पर्यनिर्णय**—संस्कृत खुले पत्रे। मुम्बई ३ ४ ०

४७४४ **महाभारततात्पर्यप्रकाशः**—श्रीसदानन्दव्यासविरचितः। काशी २ ४ ०

४७४५ **मोक्षधर्मसारोद्धारः**—श्रीसदानन्दव्यासविरचितः। काशी १ ६ ०

४७४६ **श्रीमहाभारतसुभाषितानि**—श्रीविष्णुशर्मणा संगृहीतानि। कपड़े की जिल्द। मुम्बई ० १२ ०

४७४७ **हिन्दी महाभारत मीमांसा**— प्रयाग ४ ० ०

४७४८ **महाभारत की समालोचना**—२ भाग। १ ० ०

4749 The Mahabharata—Condensed in the poet's own words. Text in Devanagari and English translation. Madras 1 4 0

4750 The Mahabharata of Krishna-Dwaipayana Vyasa—Translated into English Prose from the original Text. By Pratap Chandra Roy, C. I. E. 11 Vols. full set. Calcutta 40 0 0

4751 The Mahabharata—A Criticism by C. V. Vaidya. Bound. Bombay 3 0 0

4752 The Mahābhārata—By P. V. Jagadisa Ayyar, with a foreword by Sir Justice T. Sadasivier. Madras 1 8 0

4753 Das Mahabharata—Von Hermann Oldenberg. Foreign 9 0 0

4754 The Mahabharata, Notes of a Study of the Preliminary Chapters of—Being an attempt to separate genuine from spurious matter. By V. Venkatachellam Iyer. Madras 4 0 0

4755 The Mahabharata—Analysis and Index. By E. P. Rice. Oxford 5 0 0

४७५६ **विजयमुक्तावली**—महाभारत का सूक्ष्म वृत्तान्त छन्दोबद्ध भाषा में भली भान्ति वर्णित है। ग्लेज कागज १॥), रफ कागज— मुम्बई १ ४ ०

४७५७ **संक्षिप्तमहाभारत**—चिन्तामणि विनायक वैद्य संकलित। मूल। मुम्बई ३ ४ ०

4758 Age of Mahābhārata War, by Jagannath Rao. Date fixed by new hitherto undiscussed facts. 2 0 0

4759 Epic Mythology—By E. W. Hopkins. Foreign 17 8 0

4760 Kṛṣṇa Problem—by S. N. Tadpatrikar. Poona 1 0 0

4761 The Story of the Great War—Some Lessons from the Mehābhārata for the use of Hindu Students in the Schools of India. By Annie Besant. Madras 1 0 0

अष्टादशपुराण-ग्रन्थाः

४७६२ अग्निपुराण (१)—मूल संस्कृत। इसमें शास्त्रकलाओं का संक्षेप वर्णन, सर्वदेवताओं की प्रतिष्ठा, लक्षकोटि आदि होम, शिल्पशास्त्र, राजधर्म, राजनीति, युद्धरचना, भारतसार, रामायणसार, ईश्वरावतार, सर्वतिथिवार, नक्षत्रादिव्रत, षट्प्रयोग, गान्धर्ववेद, भरतशास्त्र, काव्यनाटकभेद, स्त्रीशिक्षा, रत्नादिपरीक्षा, वेदशास्त्रादि बहुत से विषयों का अपूर्व वर्णन। खुले पृष्ठ। मुम्बई ६ ० ०

४७६३ अग्निपुराणम्—मूल पुस्तकाकार स्थूलाक्षर सजिल्द। पूना ५ ४ ०

४७६४ अग्निपुराणम्—मूल पुस्तकाकार मध्यमाक्षर। कलकत्ता ४ ० ०

४७६५ अष्टादशपुराणदर्पण—विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्र द्वारा निर्मित। इसमें वेद से पुराण विषय का वर्णन, सब पुराणों के अध्याय और उनकी कथा, पुराणों पर विचार तथा शंका समाधान सहित लिखा है। सजिल्द। मुम्बई ३ ० ०

४७६६ आर्याभागवतम्—श्रीमद्भिः भागवतश्यामाचार्यैर्विरचितम्। द्वादशस्कन्धानां कथासंग्रहरूपम्। आर्यावृत्तमयम। मद्रास ० ८ ०

४७६७ कूर्ममहापुराण (२)—मूलमात्र संस्कृत खुले पृष्ठ। मुम्बई ३ ८ ०

४७६८ कूर्मपुराणम्—दुष्प्राप्य मूलमात्र, अति शुद्ध संस्करण। ११ ४ ०

४७६९ गरुडपुराणम् (३)—अस्मिन् पुराणे धन्वन्तरिसंहिता, ज्योतिषशास्त्रं रत्नपरीक्षाशास्त्रं नीतिशास्त्रं चास्ति। मूलमात्र। कलकत्ता ३ ० ०

४७७० गरुडमहापुराण—बड़ा ग्रन्थ मूल मात्र खुले पत्रे संख्या १९००० सम्पूर्ण स्थूलाक्षर। मुम्बई ७ ० ०

४७७१ गरुडपुराण (प्रेतकल्प)—संस्कृत टीका समेत। इसके १६ अध्यायों में प्रेतकर्म और यममार्गवर्णनादि विषय हैं। खुले पत्रे। मुम्बई १ ० ०

४७७२ गरुडपुराणं भाषाटीकासहितम—खुले पत्रे। बनारस १ ० ०

४७७३ गरुडमहापुराण—खुले पत्रे भाषाटीका समेत। बढ़िया कागज १ ४ ०

४७७४ गरुडपुराण—सारोद्धार। खुले पत्रे। मुम्बई ० १४ ०

४७७५ गरुडपुराण—मूलमात्र १३ अध्याय, खुले पत्रे। लाहौर ० ६ ०

४७७६ नारदपुराण (४)—सम्पूर्ण २४००० मूल श्लोक । खुले पत्रे । इस ग्रन्थ में पुराणवर्णन, आश्रमादिधर्म, गंगामाहात्म्य, धर्माख्यान, वामनावतार-वर्णन, कृष्णमन्त्रवर्णन, अष्टादशपुराणसार, पुराणमहिमादि विषय वर्णित हैं । मुम्बई ८ ० ०

४७७७ बृहन्नारदीयपुराण—भाषा वार्त्तिक । अनु० पं० देवीसहायशुक्ल । पुस्तकाकार । लखनऊ ० ६ ०

४७७८ पद्मपुराण (५)—मूलमात्र ४ भागों में सम्पूर्ण । पुस्तकाकार सजिल्द । पूना २० ० ०

४७७९ पद्मपुराण—सम्पूर्ण ५५००० श्लोक । छः खण्डों में खुले पत्रे । मुम्बई २५ ० ०

४७८० पद्मपुराण—भाषा ७ खण्ड । इस पुराण में सब ५५ हजार श्लोक हैं, जिसका अति सरल और शुद्ध भाषानुवाद छापा गया है । लखनऊ १५ ० ०

4781 Padma Purāṇa—By Prof. H. Sharma, M. A. of S. D. College, Cawnpore. With Foreword by Dr. M. Winternitz. 2 0 0

४७८२ रामचरितम्—(पद्मपुराणोक्तम्) मूलमात्र । खुले पत्रे । १ ० ०

४७८३ रामाश्वमेध—(पद्मपुराणान्तर्गत) मूलमात्र खुले पत्रे स्थूलाक्षर । मुम्बई २ ८ ०

४७८४ रामाश्वमेध—पं० काशीरामकृत भाषा टीका सहित खुले पत्रे । मुम्बई ६ ० ०

४७८५ रामाश्वमेध—(भाषावार्त्तिक) अनु० पं० काशीराम, सजिल्द । मुम्बई २ ८ ०

४७८६ रामाश्वमेध—(भाषा पद्य में रेवारामजीकृत । इसमें दोहे, चौपाई और छन्द रामायण के अनुसार वर्णित हैं । मुम्बई ३ ० ०

४७८७ ब्रह्मपुराणम् (६)—अष्टादशपुराणान्तर्गतं श्रीमद्व्यासप्रणीतं मूलमात्रम् । पुस्तकाकार सजिल्द । पूना ६ ४ ०

४७८८ ब्रह्ममहापुराण—यह अष्टादश पुराणों में प्रथम है, और 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार भक्ति द्वारा साक्षात्कार करने के लिए अद्वितीय है । मूलमात्र खुले पत्रे । मुम्बई ७ ० ०

४७८९ ब्रह्मपुराण—मूलमात्र, पुस्तकाकार सजिल्द । लक्ष्मीपुर २ ८ ०

४७९० ब्रह्मपुराण—भाषावार्त्तिक । अनु० पं० रविदत्त जी । लखनऊ १ ८ ०

४७९१ ब्रह्मवैवर्त्तपुराण (७)—सम्पूर्ण चारों खण्ड । इसमें कृष्णजन्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड, गणेशखण्ड और ब्रह्मखण्ड ये चार खण्ड हैं । इसमें श्रीकृष्ण के अपूर्व चरित्र कथास्तोत्रादि और नारदादि की उत्पत्ति, गंगोपाख्यान, सावित्र्युपाख्यान, लक्ष्मी की उत्पत्ति, मनसादेवी उपाख्यानादि वर्णित हैं । मूलमात्र खुले पत्रे । मुम्बई १० ० ०

४७९२ ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम्—चारों खण्ड। सम्पूर्ण। २ भाग।
पूना ६ ४ ०

४७९३ ब्रह्मवैवर्तपुराण—(ब्रह्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड, गणेशखण्ड, श्रीकृष्णजन्मखण्ड) मूलमात्रपुस्तकाकार। कलकत्ता ६ ० ०

४७९४ ब्रह्मवैवर्तपुराण—प्रकृतिखण्ड, गणेशखण्ड, और ब्रह्मखण्ड तीनों एकत्र हैं। मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई ५ ० ०

४७९५ ब्रह्मवैवर्तपुराण—कृष्णजन्मखण्ड। इसमें श्रीकृष्णचरित्र अपूर्व वर्णित है। मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई ५ ० ०

4796 Brahma Vaivarta Purāṇam—Translated into English by Rajendra Nath Sen, M. A., LL. B. Complete in 4 vols. 17 8 0

४७९७ ब्रह्माण्डपुराण (८)—मूलमात्र खुले पत्रे। १२,००० श्लोक। स्थूलाक्षर।
मुम्बई ७ ० ०

4798 Brahmand Puran (German), 2 Parts. By Dr. J. Ghonda. 25 0 0

४७९९ ललितोपाख्यान—(ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत) ४० अध्याय। श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी जगदम्बा के अवतार, शत्रुपराजय आदि अनेक लीलाएं इस उपाख्यान में अच्छी तरह वर्णित हैं। इसके पठन पाठन से सप्तशती का जैसा फल रोगनाश, शत्रुपराजय आदि मनोरथसिद्धि होती है। मुम्बई १ ४ ०

४८०० ललितोपाख्यान—(ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत) मुम्बई २ ० ०

४८०१ भविष्यपुराण (६)—इसमें १ ब्राह्मपर्व, २ मध्यपर्व, ३ प्रतिसर्गपर्व, ४ उत्तरपर्व ये चार पर्व हैं। इनमें पुराण सम्बन्धी कथा के सिवाय भूत, भविष्य, वर्तमान इन तीनों कालों का वर्णन है और विशेषतः सूर्यनारायण के व्रत व तिथ्यादिव्रत व स्नान, दानादि वर्णित हैं। मूलमात्र खुले पत्रे। स्थूलाक्षर। मुम्बई १२ ० ०

४८०२ भविष्यपुराण—भाषा। अनुवादक पं० दुर्गाप्रसाद। पुस्तकाकार सजिल्द।
लखनऊ ३ ० ०

४८०३ श्रीमद्भागवत (१०)—मूल गुटका। सूक्ष्माक्षर। काशी २ ८ ०

४८०४ श्रीमद्भागवतम्—सम्पूर्णम्। पाठान्तरसहितम्। अतीवशुद्धं संस्करणम्। २ भागौ। मद्रास ६ ४ ०

Śrīmad Bhāgavatam—Text only, complete in 2 vols. [This edition is based on a number of manuscripts and is replete with different readings. It is a critical, scientific and hence standard edition and is sure to meet with cordeal reception at the hands of scholars.]
Madras 6 4 0

४८०५ श्रीमद्भागवतम्—मूलम् । अद्वैतपरश्रीधरीयव्याख्यानुसारेण मुद्रितम् । टिप्पणस्थाने द्वैतविशिष्टाद्वैतपाठभेदाः प्रदर्शिताः । २ भागौ । सजिल्द । मद्रास ६ ० ०

४८०६ श्रीमद्भागवत—मूल । मध्यमाक्षर खुले पत्रे । मुम्बई ६ ० ०

४८०७ श्रीमद्भागवत—मूल (गुटका) रेशमी जिल्द, नित्य पाठ करने योग्य । मुम्बई २ १२ ०

४८०८ श्रीमद्भागवत—श्रीधरीसंस्कृतटीका और टिप्पण सहित । स्थूलाक्षर । खुले पत्रे । मुम्बई १८ ० ०

४८०९ श्रीमद्भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका सहित अति स्थूलाक्षर अत्युत्तम ग्लेज कागज, गणपत कृष्ण के छापे का । चन्द्रमा की सी चाँदनी सहर्ष पढ़िए । मुम्बई ३२ ० ०

४८१० श्रीमद्भागवत—श्रीधरी टीका और टिप्पणी सहित मध्यमाक्षर अत्युत्तम रफ कागज । मुम्बई १५ ० ०

४८११ श्रीमद्भागवत—श्रीधरी टीका सहित सूक्ष्माक्षर परमोत्तम देसी कागज । मुम्बई १० ० ०

४८१२ श्रीसुबोधिनी—श्रीवल्लभाचार्यविनिर्मिता श्रीमद्भागवतसंस्कृतव्याख्या गोस्वामिश्रीविट्ठलनाथदीक्षितविरचितटिप्पणीसहिता । श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धजन्मप्रकरण (अ०-१-४) श्रीसुबोधिनीटिप्पणयोः प्रकाशः गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तममहाराजविरचितः । ३ खंडों में सम्पूर्ण । बनारस ४ ८ ०

४८१३ श्रीमद्भागवत—विजयध्वजो संस्कृत व्याख्या समेत खुले पत्रे । मुम्बई ८ ० ०

४८१४ श्रीमद्भागवत—सचूर्णिक मोटा अक्षर चमकते हुए कागज पर दमकती हुई स्याही से छपा है । सप्ताह बांचने वालों को परमोपयोगी है । ग्लेज कागज । मुम्बई १२ ० ०

४८१५ श्रीमद्भागवत—अन्वयार्थ प्रकाशिका गङ्गासहायकृत संस्कृत टीका सहित खुले पत्रे । मुम्बई २० ० ०

४८१६ श्रीमद्भागवत—पं० रामप्रताप विरचित नवीन सुबोधिनी संस्कृत टीका सहित—इसमें प्रत्येक श्लोक के अन्वय और अन्वयानुसार पर्याय शब्द होने से यह ग्रन्थ साधारण विद्यार्थियों से वृद्ध महापंडितों तक सर्व सज्जन विद्वज्जनों को परमादरणीय हुआ है—खुले पत्रे । मुम्बई २० ० ०

४८१७ श्रीमद्भागवत—श्रीधरीभावार्थदीपिकाप्रकाश नामक वंशीधरी संस्कृत टीका सहित । यह वंशीधरी यद्यपि श्रीधरी टीका की टीका है तथापि स्वतन्त्रता से मूल की भी व्याख्या इसमें की गई है । और वैष्णवतोषिणी, बृहत्क्रमसंदर्भ, क्रमसन्दर्भ, पदरत्नावली, सारार्थदर्शिनी, सुबोधिनी, दीपिकादीपिनी, बृहद्वैष्णवतोषिणी, प्रेममञ्जरी आदि सभी टीकाओं का सारांश इसमें आ गया है । दशम स्कन्ध में प्रायः सर्वत्र ऐसी व्याख्या है कि अवाक् हो

जाना पड़ता है। वेद स्तुति में तो ५ टीकाएं हैं श्रीमद्भागवत की इस टीका के संग्रह से फिर किसी दूसरी टीका की आवश्यकता नहीं रहती। श्लोक संख्या १२५,००० सवा लाख है। खुले पत्रे। मुम्बई ३० ० ०

४८१८ **श्रीमद्भागवत**—ऋषि कुमार राम स्वरूप शर्मा कृत भाषा टीका सहित। २ भागों में। पुस्तकाकार सजिल्द—सूक्ष्माक्षर। मुरादाबाद ६ ० ०

४८१९ **श्रीमद्भागवत**—मूल श्लोक और आनन्दाम्बुनिधि पद्य भाषा टीका समेत (रीवांधीश महाराज रघुराजसिंहदेव जू कृत) इसकी रचना देखने ही योग्य है, खुले पत्रे— मुम्बई २० ० ०

४८२० **श्रीमद्भागवत**—शालिग्रामकृत भाषा टीका माहात्म्य और शंकासमाधान समेत अत्युत्तम जिसमें ५०० दृष्टान्त कथा के सिवाय हैं। चौथी बार छपा है। ग्लेज कागज। खुले पत्रे। मुम्बई २२ ० ०

४८२१ **श्रीमद्भागवत**—पं० गयाप्रसाद मिश्र व्याकरणतीर्थ—साहित्योपाध्याय कृत भाषा टीका सहित। अति स्थूलाक्षर। बहुत बढ़िया मोटा कागज। अनेक तिरंगे चित्रों सहित। खुले पत्रे। माहात्म्य शंकासमाधान, और सैंकड़ों दृष्टान्तों समेत। लखनऊ २० ० ०

४८२२ **श्रीमद्भागवताद्यपद्यव्याख्याशतक** (जन्माद्यस्य श्लोक के सौ अर्थ) संस्कृत। मुम्बई १ १२ ०

४८२३ **भागवतलीलाकल्पद्रुम**—श्रीमद्भागवत के सब चरित्र (जन्माद्यस्य इस श्लोक से) संस्कृत। मुम्बई १ ४ ०

४८२४ **श्रीमद्भागवत**—प्रथम स्कन्ध-अन्वितार्थ प्रकाशिका संस्कृत टीका सहित। मुम्बई १ ८ ०

४८२५ **श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध**—पं० गयाप्रसादमिश्र कृत भाषा टीका सहित। भागवत माहात्म्य और दृष्टान्तों समेत। सचित्र खुले पत्रे। लखनऊ ४ ० ०

४८२६ **श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध**—लालाशालिग्रामकृत भाषा टीका व दृष्टान्तों सहित खुले पत्रे। मुम्बई ५ ० ०

४८२७ **श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध**—श्रीधरी संस्कृत टीका समेत खुले पत्रे। मुम्बई ४ ० ०

४८२८ **श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध**—'अन्वितार्थप्रकाशिका' संस्कृत टीका सहित। मुम्बई ५ ० ०

४८२९ **श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध**—तोषणीसार-संस्कृत टीका सहित। मुम्बई ३ ० ०

४८३० **वेदस्तुतिः**—श्रीभागवतदशमोत्तरार्धसप्ताशीत्यध्यायरूपा। लोके व्यवायेति मीमांसा-जन्माद्यस्येति श्लोकश्च। श्रीधरीव्याख्यायुता काशीनाथोपाध्यायप्रणीतश्रीधरीप्रकाशव्याख्यासंवलिता। मुम्बई ० १० ०

४८३१ श्रीमद्भागवतम् (दशमस्कन्धः)—श्रीमदित्यादिवात्स्यश्रीवीरराघवाचार्य-प्रणीतया श्रीभागवतचन्द्रचन्द्रिकाख्यया व्याख्यया, भारद्वाजश्रीकृष्णगुरुविरचितया मुनिभावप्रकाशिकसमाख्यया व्याख्यया च परिष्कृतम् । २ भाग सजिल्द । मद्रास ८ ८ ०

४८३२ श्रीमद्भागवत-एकादशस्कन्ध—मुनिलालजी कृत भाषा टीका सहित । पुस्तकाकार । गोरखपुर ० १२ ०

४८३३ श्रीमद्भागवत एकादशस्कन्धभाषा—श्री चतुरदासविरचित दोहे चौपाई पद्य भाषा में सूक्ष्माक्षर । मुम्बई ० १० ०

४८३४ भागवत एकादशस्कन्ध—चतुरदासकृत भाषापद्य स्थूलाक्षर । सजिल्द । नानकविलास सहित । मुम्बई १ ४ ०

४८३५ श्रीमद्भागवत एकादशस्कन्ध—पं० ज्वालाप्रसदाकृत भाषा टीका सहित । खुले पत्रे । मुम्बई २ ० ०

४८३६ श्रीमद्भागवत-एकादशस्कन्ध—नारायणशास्त्रिकृत भाषा टीका सहित सजिल्द ग्लेज कागज़ २।), रफ कागज— मुम्बई २ ० ०

४८३७ श्रीमद्भागवत एकादशस्कन्ध—श्रीधरी टीका सन्दर्भ विश्वनाथी दीपिका-प्रकाश नामक संस्कृत टीका समेत खुले पत्रे । मुम्बई ३ ० ०

४८३८ श्रीमद्भागवत का एकादश स्कन्ध—अन्वितार्थ प्रकाशिका संस्कृत टीका सहित । इसमें श्री कृष्ण और उद्धव का ज्ञानोपदेश, दत्तात्रेय भगवान् का चौबीस गुरुओं से उपदेश लेना, जनक विदेह का ज्ञान वर्णन और द्वारका जी में यादवों को दुर्वासा का शाप और समस्त भूमि का भार उतार कर यादवों को यात्रार्थ द्वारका जी से प्रभास में लाना आदि लीला वर्णित है । मुम्बई १ ८ ०

४८३९ श्रीमद्भागवत माहात्म्य—लाला शालिग्रामकृत भाषा टीका सहित । खुले पत्रे । मुम्बई ० १० ०

४८४० श्रीमद्भागवत संग्रह—भाषा सचित्र इलाहाबाद ० १० ०

४८४१ श्रीमद्भागवतसार—भाषावार्तिक सजिल्द । ले० पं० नारायणशास्त्री । मुम्बई ० १४ ०

४८४२ श्रीमद्भागवतसारोद्धारः—श्रीमदवधूतशिरोमणि श्रीजयतीर्थ-(विष्णुतीर्थ-) कृतः सटीकः । बागलकोट

४८४३ भागवतस्तुति संग्रह—भाषानुवाद, कथा प्रसङ्ग और शब्दकोश सहित । संग्रहकर्ता तथा अनुवादक पं० नित्यानन्द पाण्डेय, B. A. LL. B., गोरखपुर २ ४ ०

[इसकी भूमिका में भागवत संबन्धी सभी शंकाओं पर बड़े विस्तार से विवेचन किया गया है ।]

४८४४ श्रीमद्भागवतानुक्रमणी 'Index to Srimad Bhagavatam'—This index in one volume includes the descriptive contents of each adhyaya of the whole of Srimad

Bhagavata of 12 Skandhas, together with the Alphabetical Index of leading topics, places and persons. The work is so planned as to afford easy reference to manuscript copies and to the editions of Bhagavata other than this.
Madras 3 8 0

४८४५ श्रीमद्भागवतवेदस्तुति—पं० रामस्वरूपकृत भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ८ ०

४८४६ भागवतवेदस्तुति—श्रीधरी टीका और श्रीधरी टीका की वंशीधरी टीका, श्रीधरानुयायिनी विश्वनाथी, तोषिणी, नीलकण्ठी आदि पांच संस्कृत टीकाओं सहित। मुम्बई १ ४ ०

४८४७ वेदस्तुति—श्रीयुत बाबू सीतारामकृत भाषाटीका समेत। श्रीमद्भागवतान्तर्गत दशमस्कन्धोत्तरार्द्ध के ८७ अध्याय में श्रीकृष्ण भगवान् ने श्रुतदेव ब्राह्मण और राजा बहुलाश्व को सन्मार्ग नाम वेदमार्ग का उपदेश किया है। मुम्बई ० ६ ०

४८४८ भागवतवेदस्तुतिः—लोके व्यवायेति श्लोकः जन्माद्यस्येति श्लोकश्च, काशीनाथोपाध्यायकृत व्याख्योपबृंहित श्रीधरी व्याख्या। वेदस्तुति भाग अद्वैत वेदान्त का मुख्य प्रकरण है, वैसा ही लोके व्यवाया०, तथा जन्माद्यस्य यतः० इन दो श्लोकों पर जो श्रीधरस्वामी ने व्याख्या लिखी है वह केवल मीमांसापूर्ण होने से दुर्बोध हुई है; उसका तात्पर्यज्ञान लोगों को सुलभ करने के लिए प्रसिद्ध धर्मसिन्धुकार काशीनाथोपाध्याय ने निर्दिष्ट तीनों विषयों पर सर्वोत्कृष्ट व्याख्या बनाई थी उसी के साथ छपी है। मुम्बई ० १२ ०

४८४९ श्रीमद्भागवत-रासपञ्चाध्यायी—भाषाटीका सहित सजिल्द ग्लेज कागज २॥), रफ— मुम्बई २ ० ०

४८५० श्रीमद्भागवत-रासपञ्चाध्यायी—पं० ज्वालाप्रसादकृत भाषा टीका सहित खुले पत्रे। मुम्बई १ १२ ०

४८५१ चतुःश्लोकी भागवत— मुम्बई ० ० ६

४८५२ पुरंजनाख्यान—(श्रीमद्भागवत चतुर्थस्कन्धान्तर्गत), नारायणशास्त्रीकृत पदार्थमुक्तावली भाषाटीकासहित। मुम्बई ० ६ ०

४८५३ मंत्र भागवत—सटीक वेद के मंत्रों से भागवत की अपूर्व कथा। मुम्बई ० ८ ०

४८५४ लघुभागवतामृत—(रूपगोस्वामीकृत) बलदेव विद्याभूषण कृत संस्कृत टीका और पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृत भाषाटीका व तात्पर्यसहित। मुम्बई २ ८ ०

४८५५ आनन्दाम्बुनिधि—भाषा भागवत छन्दोबद्ध। महाराज रघुराज सिंह जी कृत रफ कागज। मुम्बई १० ० ०

४८५६ श्रीमद्भागवत विषमपदों का— अमृतसर ० ८ ०

४८५७ प्रेमसागर—कविवर लल्लूलालजी रचित। बनारस १ ६ ०

४८५८ **प्रेमसागर**—श्री लल्लूलालजी कृत । इसमें श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द व्रजचन्द्र श्रीराधिकाजीवन परब्रह्म परमेश्वर की आद्योपान्त सुखमय परम रमणीक भागवत दशम स्कन्ध की कथा वर्णित है । ग्लेज कागज २), रफ कागज मुम्बई १ ८ ०

4859 The Premasāgara—Translated into English by Captain W. Hollings. Lucknow 1 0 0

४८६० **प्रेमसागर**—मध्यमाक्षर । सुनहरी जिल्द । बनारस ० १४ ०

४८६१ **व्रजविलास**—सचित्र गुटका । ० १४ ०

४८६२ **भागवतभाषा**—प्रसिद्ध नाम शुकोक्तिसुधासागर बारीक अक्षर गुटका साइज सजिल्द । अनुवादक रूपनारायणपाण्डेय । मुम्बई ३ ८ ०

४८६३ **भागवतभाषा**—प्रसिद्धनाम **सुखसागर** । अतिस्थूलाक्षर । बड़ी जिल्द मक्खनलाल जी द्वारा अनुवादित मध्यमाक्षर सजिल्द ४॥), रफ ३।), गुटका ग्लेज कागज सजिल्द । लखनऊ २ ८ ०

४८६४ **श्रीसुखसागर**—अर्थात् सूतसागर । श्रीमद्भागवत के बारहों स्कन्धों का हिन्दी अनुवाद । अनुवादक पं० श्रीलाल उपाध्याय । काशी ४ ० ०

४८६५ **नूतनसुखसागर**—सचित्र मध्यमाक्षर । श्रीमद्भागवत के बारहों स्कन्धों का सरल भाषानुवाद । लेखक स्वर्गीय पं० नारायणप्रसादजी । मुम्बई ३ ८ ०

४८६६ **नूतनसुखसागर**—सचित्र । स्थूलाक्षर श्रीमद्भागवत के बारहों स्कन्धों का सरल भाषानुवाद । ले० स्वर्गीय पं० नारायणप्रसादजी । मुम्बई ४ १२ ०

४८६७ **श्रीमद्भागवत-शुकसागर**—अनुवादक लालाशालिग्राम । सम्पूर्ण अक्षरशः अनुवाद । पुस्तकाकार सजिल्द स्थूलाक्षर ग्लेज कागज १४), मध्यमाक्षर ग्लेज कागज ७), सूक्ष्माक्षर गुटका— मुम्बई ४ ८ ०

४८६८ **श्रीकृष्णलीलादर्शन**—लगभग ७५ चित्र और उनका परिचय । गोरखपुर २ ८ ०

४८६९ **गूढार्थदीपिका** (शुद्धाद्वैतसम्प्रदाय)—पं० धनपतिसूरिकृता । श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धस्य **रासपञ्चाध्यायीव्याख्या** । तथा **रसव्याख्या**—श्रीजगन्नाथसुधीविनिर्मिता । काशी ४ ८ ०

४८७० **गूढार्थदीपिका** (शुद्धाद्वैतसम्प्रदाय)—श्री धनपतिसूरिकृता । श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धस्थ-भ्रमरगीतव्याख्या । काशी १ ८ ०

४८७१ **रुक्मिणीपरिणय**—महाराजरीवांनरेश रघुराजसिंहजी कृत (छन्दोबद्ध) रुक्मिणी जी के स्वयंवर का वर्णन । मुम्बई २ ८ ०

४८७२ **रुक्मिणीमंगल**—पद्मचरणकृत (भाषा में) बड़ा, अर्थात् रुक्मिणी जी का विवाह वर्णन । मुम्बई २ ० ०

४८७३ **रुक्मिणीमंगल**—(भागवतान्तर्गत) पं० गंगासहायकृत संस्कृत टीका तथा नारायण शास्त्री कृत भाषा टीका सहित । मुम्बई ० १० ०

४८७४ **हरिलीलामृतम्**—श्रीमद्भागवतस्यानुक्रमणिकात्मकम् । श्रीबोपदेवप्रणीतम् ।

श्रीमन्मधुसूदनसरस्वतीकृतटीकासहितं श्रीमद्भागवतस्याद्यं पद्यं च श्रीमन्मधुसूदनसरस्वतीकृतटीकायुतम्। काशी १ ८ ०

4875 The Srimad Bhagavatam of Krishna-Dwaipayana-Vyasa. Translated into English prose from the original Sanskrit text by J.M. Sanyal. Vols. 1-4. Bengal 16 0 0

4876 Śrīmad Bhāgavata—condensed in the Poet's own words. Text in Devanāgarī and English translation by Dr. V. Raghavan, M. A,, Ph. D. It contains an account of all the avataras of the Lord and the stories of Dhruva, Priyavrata, Jadabharata, Vritrāsura, Ajāmila, Gajendramoksha, etc., etc.; also all the important episodes in the life of Lord Krishna—the killing of Kansa, etc., etc. Madras 1 4 0

4877 Srī Bhāgavatam—Being an Analysis in English. By D. B. V. K. Ramanujachari. Complete in 3 vols. Madras 6 8 0

4878 Sri Krishna and Uddhava—By Swami Madhavananda. The immortal dialogue comprising chapters 6 to 29 of the Bhāgavata, Book XI. In two parts. 3 4 0

४८७९ मत्स्यपुराण (११)—जगत् की रचना के हेतु और मत्स्यावतार धारण करने का कारण, प्रलय होने का कालपूर्वक वर्णन, ब्रह्मा के चार मुख होने का कारण दानव गन्धर्वों की उत्पत्ति और सूर्यवंश तथा चन्द्रवंश का वर्णन इत्यादि उत्तमोत्तम कथाएं वर्णित हैं। मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई ७ ० ०

४८८० मत्स्यपुराण—मूलमात्र मध्यमाक्षर पुस्तकाकार। कलकत्ता ४ ० ०

४८८१ मत्स्यपुराण—मूलमात्र पुस्तकाकार स्थूलाक्षर। पूना ६ ० ०

4882 The Matsya Puranam—Together with 10 important appendices, and a plate containing 10 figures. Translated into English by a Taluqdar of Oudh. Allahabad 20 0 0

4883 Matsya Purana—A study. By Mr. V. R. R. Dikshitar. 1 2 0

४८८४ मार्कण्डेय पुराण (१२)—मूलमात्र। लखनऊ ० १२ ०

४८८५ मार्कण्डेय पुराण—मूलमात्र पुस्तकाकार। कलकत्ता २ ० ०

४८८६ मार्कण्डेय पुराण—मूल तथा दुर्गासप्तशती के १३ अध्याय शान्तनवी नाम संस्कृत टीका सहित। इसमें मार्कण्डेय और जैमिनि का सत्संग और संवाद, अप्सराओं को

दुर्वासा मुनि का शाप, कंक के मारे जाने पर विद्युद्रूप राक्षस का मारा जाना। पक्षियों के जन्म और चरित्र और देवी का माहात्म्य सन्निविष्ट है। खुले पत्रे। मुम्बई ४ ० ०

४८८७ मार्कण्डेय पुराण—श्रीयुत पं० कन्हैयालालमिश्र कृत भाषाटीकासहित खुले पत्रे। मुम्बई ७ ० ०

४८८८ मार्कण्डेय पुराण—पं० रामस्वरूप जी कृत भाषाटीकासहित। मुरादाबाद ३ ० ०

४८८९ मार्कण्डेय पुराण—पं० रघुराजदुबे कृत भाषाटीका सहित। २ भाग। लखनऊ २ १२ ०

४८९० मार्कण्डेय पुराण—भाषावार्त्तिक श्लोकांक तथा अध्याय के आदि अन्त के मूल श्लोक सहित। सजिल्द। मुम्बई ५ ० ०

४८९१ संक्षिप्त मार्कण्डेय पुराण—भाषा। इलाहाबाद ० १० ०

4892 Markandeya Purana—translated into English by F. E. Pargiter. Calcutta 9 0 0

४८९३ हरिश्चन्द्रोपाख्यान (मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत) कन्हैयालाल जी कृत भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ८ ०

४८९४ लिङ्गपुराण (१३)—मूलमात्र पुस्तकाकार। कलकत्ता ५ ० ०

४८९५ लिङ्गमहापुराण—संस्कृत टीका सहित। इसमें सर्ग विसर्ग आदि महापुराण के विषय व भूगोल वर्णन तथा शरभ रूपी वीरभद्र से नृसिंह की पराजय, जालन्धरवध, गणेशोत्पत्ति और शिवलिङ्गों का पूर्ण वर्णनादि विषय सन्निविष्ट हैं। खुले पत्रे। मुम्बई ८ ० ०

४८९६ लिङ्गपुराण—जयपुरनिवासी पं० दुर्गाप्रसादकृत भाषानुवाद। लखनऊ १ ९ ०

४८९७ वामनपुराण (१४)—मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई ३ ० ०

४८९८ वामनपुराण—पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठी कृत भाषा टीका सहित। इसमें कपालमोचन आख्यान, दक्षयज्ञविनाश, महादेव का कालरूपधारण, कामदेवदहन, प्रह्लादनारायणयुद्ध और देवासुरसंग्रामादि कथाएं हैं। खुले पत्रे। मुम्बई ६ ० ०

४८९९ वामनपुराण—भाषावार्त्तिक। अनुवादक श्यामसुन्दरलाल। श्लोकांक और अध्याय के आदि अन्त के मूल श्लोक सहित सजिल्द। मुम्बई ५ ० ०

४९०० वामनपुराण—भाषावार्त्तिक। अनुवादक पं० रविदत्तजी। लखनऊ १ ६ ०

४९०१ वाराहपुराण (१५)—धर्म, अर्थ, काम, मोक्षादि सिद्ध होने के लिए इतिहास संयुक्त कथाओं का भली भांति वर्णन है। मूलमात्र संस्कृत खुले पत्रे। मुम्बई ६ ० ०

४९०२ वाराहपुराण—भाषा पुस्तकाकार। अनुवादक दुर्गाप्रसाद। लखनऊ १ ६ ०

४९०३ विष्णुपुराणम् (१६)—श्रीधरस्वामिकृतसंस्कृतव्याख्यासहितम्। कलकत्ता ३ ८ ०

४९०४ विष्णुपुराणम् (संक्षिप्तम्) —सरल संस्कृत १ ० ०

४९०५ विष्णुपुराण—हिन्दी अनुवाद सहित। गोरखपुर २ ८ ०

४९०६ विष्णुपुराण—भाषावार्त्तिक। सजिल्द लखनऊ २ ० ०

४९०७ विष्णुपुराण—केवल भाषा पुस्तकाकार। अनुवादक पं० रामस्वरूप। सजिल्द। मुरादाबाद २ ० ०

४९०८ संक्षिप्त विष्णुपुराण—भाषा। इलाहाबाद ० १० ०

४९०९ विष्णुधर्मोत्तरपुराण—मूलमात्र १७००० श्लोक। इसमें सब प्रकार के व्रत, धर्म, आचार आदि अनेक अपूर्व विद्याओं का संनिवेश है। खुले पत्रे। मुम्बई १० ० ०

४९१० वैष्णवमहापुराण—सम्पूर्ण २३,००० श्लोक। इसके पूर्व में ६ अंश और उत्तर भाग में विष्णुधर्मोत्तर हैं। पूर्व भाग के ६ अंशों पर "विष्णुचित्ती" और 'श्रीधरी" ये दो संस्कृत टीकाएं हैं और उत्तर भाग विष्णुधर्मोत्तर केवल मूलमात्र है। खुले पत्रे। मुम्बई १७ ० ०

४९११ विष्णुमहापुराण—केवल ६ अंश मात्र "विष्णुचित्ती" और "श्रीधरी" संस्कृत टीकाद्वयसमेत खुले पत्रे। मुम्बई ७ ० ०

4912 Materials for the Study of the Early History of the Vaishnava Sect—By Hemachandra Ray Chaudhari, M. A. Bound with gilt letters. 2 4 0

४९१३ शिवमहापुराण (१७)—बड़ा २४,००० श्लोक। इसमें विश्वेश्वरसंहिता २,०००, रुद्रसंहिता १०,५३०, शतरुद्रसंहिता २,१५०, कोटिरुद्रसंहिता २,२४०, उमासंहिता १,८४०, कैलाससंहिता ६,२४०, और वायवीयसंहिता ४,०००। मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई १० ० ०

४९१४ शिवमहापुराण—विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृतसर्वोत्तम भाषा टीका सहित स्थूलाक्षर खुले पत्रे। मुम्बई २५ ० ०

४९१५ शिवमहापुराण—केवल भाषा। स्वर्गीय पं० ज्वालाप्रसाद कृत अनुवाद ग्लेज कागज जिल्द बंधा। मुम्बई १२ ० ०

४९१६ शिवमहापुराण—केवल भाषा पं० प्यारेलालजी ने हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है। लखनऊ ४ ८ ०

४९१७ शिवमहापुराण—(पूर्वार्द्धमात्र) पं० रामचन्द्रशर्मा कृत भाषा टीका सहित। मुरादाबाद ३ ८ ०

४९१८ लघुशिवपुराण—मूल ७५ अध्याय खुले पत्रे। मुम्बई २ ० ०

४९१९ लघुशिवपुराण—भाषाटीका सहित। इसमें महाशिवपुराण का सार भले प्रकार वर्णित है। ७५ अध्याय का पत्रात्मक ग्लेज कागज। मुम्बई ३ ८ ०

४६२० **शिवपुराण माहात्म्य**—मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई ० ४ ०

४६२१ **शिवमहापुराणसन्देहभेदिका**— मुम्बई ० १ ६

४६२२ **स्कन्दमहापुराण (१८)**—इसमें माहेश्वर, वैष्णव, ब्राह्म, काशी, अवन्तिका, नागर और प्रभास इन समग्र सातों खण्डों के ८१,१०० श्लोक शुद्ध कर मनोहर मोटे अक्षरों में मुद्रित किये गये हैं। इनमें काशीखण्ड कार्तिकमाहात्म्य तथा वैशाखमाहात्म्य ये भाग सटीक हैं। खुले पत्रे। मुम्बई ४० ० ०

४६२३ **स्कन्दमहापुराण**—सम्पूर्ण भाषा टीका सहित खुले पत्रे स्थूलाक्षर ग्लेज कागज। लखनऊ ४० ० ०

४६२४ **काशीखण्ड**—स्वामी रामानन्द कृत संस्कृत टीका सहित। खुले पत्रे। मुम्बई ८ ० ०

४६२५ **काशीखण्ड**—(स्कन्दपुराणान्तर्गत) काशीनिवासी श्रीयुत पं० नारायणपति शर्मा त्रिपाठी कृत सरल सुबोध भाषा टीका समेत। इसमें काशी जी का माहात्म्य और काशीयात्रा विधि व काशी के विशेष लिंगों का वर्णनादि अनेक विषय हैं। चित्रों समेत, सजिल्द। मुम्बई १२ ० ०

४६२६ **काशीखण्ड**—भाषा वार्त्तिक ॥ अनुवादक पं० नारायणपति शर्मा। सजिल्द। मुम्बई ६ ० ०

४६२७ **काशीखण्ड**—भाषा टीका सहित। लखनऊ ६ ० ०

४६२८ **केदारखण्डमूल**—(स्कन्दपुराणान्तर्गत) इस पुराण में और २ पुराणों की तरह सृष्टि स्थिति सूर्यचन्द्रवंशी अनेक राजाओं के आख्यानों के अतिरिक्त नाद-ब्रह्म वर्णन और रागरागनी, स्वरताल आदि गन्धर्वविद्या का अपूर्व वर्णन है। हिमालय के समस्त तीर्थों का वर्णन, देवासुरसंग्राम, तथा श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण जटायु आदि के तपस्थानों के वर्णन इत्यादि विषय २०६ अध्यायों में बड़े चित्ताकर्षक आख्यानों के द्वारा अंकित किये गये हैं। मूल मात्र खुले पत्रे। मुम्बई ६ ० ०

४६२९ **केदारखण्ड**—पं० व्रजरत्नभट्टाचार्य कृत भाषा टीका सहित। सजिल्द। मुम्बई १२ ० ०

४६३० **केदारखण्ड**—भाषावार्त्तिक। मुम्बई ५ ० ०

४६३१ **प्रणवकल्प**—(स्कन्दपुराणान्तर्गत) गंगाधरेन्द्रसरस्वतीप्रणीत "प्रणवकल्पप्रकाश" संस्कृत व्याख्या सहित। पहला खण्ड। बनारस १ ८ ०

४६३२ **ब्रह्मोत्तरखण्ड**—(स्कन्दपुराणान्तर्गत) मूलमात्र खुले पत्रे। इसमें शिवभक्तों का अपूर्व इतिहास और शिवकवचादि भी हैं। मुम्बई १ ० ०

४६३३ **ब्रह्मोत्तरखण्ड**—पं० बाबूरामशर्माकृत भाषा टीका सहित खुले पत्रे। मुम्बई २ ० ०

४६३४ **ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा**—जयपुरनिवासी पं० दुर्गाप्रसाद द्वारा अनुवादित। लखनऊ ० ६ ०

४९३५ **सूतसंहिता** (स्कन्दपुराणप्रोक्ता)—श्रीमन्माधवाचार्यप्रणीत-तात्पर्यदीपिकया संस्कृतव्याख्यया सनाथीकृता । ३ भाग । पूना ११ ८ ०

४९३६ **सूतसंहिता**—तात्पर्यदीपिका सहिता । मद्रास ५ ० ०

उपपुराण-ग्रन्थाः

४९३७ **आदिपुराण**—मूल । इसमें पुराणों का सार व्यासदेवजी ने २९ अध्यायों में वर्णन किया है । मुम्बई १ ० ०

४९३८ **आदिपुराण**—श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठीकृत भाषा टीका सहित । खुले पत्रे । मुम्बई २ ८ ०

४९३९ **आदि पुराण**—भाषा वार्त्तिक । अनु० पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठी । सजिल्द । मुम्बई १ १२ ०

४९४० **आदि ब्रह्मपुराण**—पं० रविदत्तकृत भाषा वार्त्तिक । लखनऊ १ ८ ०

४९४१ **कल्किपुराण**—मूल संस्कृत । कलकत्ता १ ० ०

४९४२ **कल्किपुराण**—(महर्षि वेदव्यास) भाषाटीकासहित । बनारस १ ८ ०

४९४३ **कल्किपुराण**—बलदेवप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकासहित । इसमें कल्कि महाराज कलियुगान्त में अवतार ले दुष्टों का संहार करेंगे उनका पूर्ण वृत्तान्त वर्णित है । सजिल्द मुम्बई २ ८ ०

४९४४ **कल्किपुराण**—रामस्वरूपकृत भाषाटीका सहित । मुरादाबाद १ ० ०

४९४५ **कल्किपुराण**—भाषा वार्त्तिक । अनु० पं० बलदेवप्रसाद मिश्र । ० १२ ०

४९४६ **संक्षिप्तकल्कि पुराण**—भाषा । ० ५ ०

४९४७ **कालिका पुराण**—मूल । इसमें शक्ति का सर्वोत्कृष्टता, सतीजी व पार्वती जी के जन्मादि अनेक सरस विषय हैं । मुम्बई ५ ० ०

४९४८ **कृष्णावतारलीला**—Text edited, translated and transcribed by Sir G. A. Grierson. कलकत्ता ३ १२ ०

४९४९ **गणेशपुराण**—मूल । खुला पृष्ठ । बम्बई ६ ० ०

४९५० **जैमिनीय पुराण**—भाषा वार्त्तिक । अनुवादक पं० शिवदुलारे । लखनऊ १ ४ ०

४९५१ **श्रीमद्देवीभागवत**—मूलमात्र गुटका । सजिल्द । सूक्ष्माक्षर ३ ० ०

४९५२ **श्रीमद्देवीभागवत**—नीलकंठ कृत नीलकंठी संस्कृत टीका सहित । खुले पत्रे । मुम्बई ६ ० ०

४९५३ **श्रीमद्देवीभागवत**—पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत भाषा टीका सहित । इसमें देवी के पाठादिक का विस्तार, सम्पूर्ण शक्तियों का कथन, और उनके अवतार तथा मंत्र,

तंत्र, यंत्र, कवचादि अपूर्व विषय है। शाक्त लोगों को विशेष संग्राह्य है। खुले पत्रे।
मुम्बई १५ ० ०

४९५४ **श्रीमद्देवीभागवत**—केवल भाषा वार्त्तिक। अनु० पं० ज्वालाप्रसादमिश्र। पुस्तकाकार। सजिल्द। मुम्बई ६ ० ०

4955 **Devi Bhagavatam**—Translated into English by Swami Vijnanananda alias Hari Prasanna Chatterji. Complete in three volumes. Allahabad 25 0 0

४९५६ **श्रीमहालक्ष्म्युपाख्यान**—श्रीदेवीभागवतमहापुराणान्तर्गत। पं० ज्वालाप्रसादशर्म कृत भाषा टीका समेत। मुम्बई ० ५ ०

४९५७ **विन्ध्यवासिन्युपाख्यान**—(देवीभागवतान्तर्गत) भाषा टीका सहित।
० ४ ०

४९५८ **सावित्र्युपाख्यान**—(देवीभागवतान्तर्गत) पं० ज्वालाप्रसाद कृत भाषा टीका सहित। सजिल्द। १ ० ०

४९५९ **नृसिंहपुराण**—मूलमात्र। पुस्तकाकार। २ ८ ०

४९६० **नृसिंहपुराण**—भाषावार्त्तिक। अनु० पं० महेशदत्त जी।
लखनऊ ० १२ ०

४९६१ **वायुपुराण**—(व्यासदेव) मूलमात्र। पुस्तकाकार। पूना ४ १२ ०

४९६२ **वायुपुराण**—मूलमात्र खुले पत्रे। स्थूलाक्षर। इसमें देवादिसृष्टि वर्णन, मन्वन्तरादि चतुर्युगाख्यान, पृथुवंशकीर्तन, श्राद्धक्रियावर्णन और गयामाहात्म्यादि अनेक विषय हैं। मुम्बई ६ ० ०

4963 **Some Aspects of the Vāyu Purāṇa**—By V. R. Ramachandra Dikshitar, M. A. Madras 1 2 0

४९६४ **साम्बपुराण**—इसमें सूर्योपासना की साङ्गोपाङ्गविधि है मूलमात्र। खुले पत्रे। मुम्बई २ ० ०

४९६५ **सौरपुराण**—(द्वैपायन) मूलमात्र। पुस्तकाकार। पूना ३ ० ०

अन्य पुराण तथा पुराणसम्बन्धी ग्रन्थ

४९६६ **अत्रिख्याति**—(श्रीमधुसूदनजीकृत) इसमें अत्रि महर्षि के वंश का विज्ञान। जिसमें क्रमागत विज्ञान से चन्द्रमा का निरूपण, ताराहरणविज्ञान, बुधैलादि चरितों का व्याख्यान, तथा प्रतिष्ठानपुर का अनेक प्रमाणों से निर्धारण पूर्णतया दिखाया गया है। गद्यग्रन्थ।
० १२ ०

४९६७ **आत्मरामायण भाषा**—सातों काण्ड रामायण का वेदान्तपक्ष में वर्णन।
मुम्बई ० ८ ०

४९६८ **अहोरात्रवादः**—पं० श्री मधुसूदन जी कृत। इसमें सृष्टि का उपादान कारण दिन और रात को १० प्रकार के विज्ञानों से बतलाया गया है। यह दिन और रात

शब्द यहां प्रकाश और अन्धकार के वाचक हैं । प्रसंगागत सूर्य और पृथ्वी का स्थिरत्व चलत्व निर्णयादि इसमें आ गया है । जयपुर ० ८ ०

४६६६ **केदारकल्प**—(रुद्रयामलान्तर्गत) सदेह कैलासशिवलोकगमन । उत्तराखण्ड की पवित्र भूमि, गंगा, अनेक तीर्थ आदि का माहात्म्य, अनेक प्रयोग, मंत्र, तंत्र, वशीकरणादि सिद्धियां ४४ पटलों द्वारा इसमें कही हैं । पं० ज्वालाप्रसाद कृत भाषा टीका सहित । सजिल्द । मुम्बई २ ० ०

४६७० **गर्गसंहिता**—(गर्गाचार्य) उग्रसेन अश्वमेधादि १० खण्ड और माहात्म्य सहित । मूल । खुला पृष्ठ । ६ ० ०

४६७१ **गर्गसंहिता**—(गर्गाचार्य) पं० वंशीधरजीकृत भाषाटीका सहित । खुला पृष्ठ । स्थूलाक्षर । ६ ० ०

४६७२ **गर्गसंहिता**—केवल अश्वमेधखण्ड । मूलमात्र १ ४ ०

४६७३ **गर्गसंहिता**—(गिरिधरदास) भाषापद्य । काव्यरचना लखनऊ १ ० ०

४६७४ **गुरुपरम्पराचरित्र**—(रामकृष्ण सोमयाजी=धर्मानन्द विरचित) तच्छिष्य गोपाल (धीरानन्द) कृत 'अर्थस्फूर्ति' नामक संस्कृत टीका सहित । १३१ मानवगुरुओं का महाप्रभावशाली अद्भुतचरित्र । खुला पत्रा । मुम्बई १० ० ०

४६७५ **गोपालविलास** (गोपालदासकृत)—इसमें दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदि छन्दों से श्रीकृष्णजी के विचित्र चरित्र दर्शाए हैं । सजिल्द । मुम्बई २ ८ ०

४६७६ **गोवर्द्धनविलास**—इसमें भगवान् कृष्णचन्द्र का जन्म, कागासुर, शकटासुर आदि राक्षसों का वध और बाललीला, माखन चोरी लीला और पनघट लीला आदि कितने ही विषय दोहा-सोरठा छन्दों में दिये गये हैं । लखनऊ १ ० ०

४६७७ **जैमिनीयाश्वमेध**—(जैमिनि) मूलमात्र । पाण्डवों के अश्वमेध की सम्पूर्ण कथा । २ ८ ०

४६७८ **जैमिनीयाश्वमेध**—पं० काशिरामकृत भाषा टीका सहित । खुले पत्रे । मुम्बई ६ ० ०

४६७९ **जैमिनीयाश्वमेध**—पं० पुरुषोत्तमदासजीकृत छन्दोबद्ध भाषा । परममनोहर दोहा चौपाई में २॥), रफ कागज— २ ० ०

० ३ ०

४६८० **दृष्टान्तपचीसी**—

४६८१ **दृष्टांत प्रकाश**—(अमरपालसिंह) भाषावार्तिक का सजिल्द । दो भाग २ ८ ०

४६८२ **दृष्टांतप्रदीपिनी**—(देवीसहायशुक्ल) पांचों भाग । हिन्दी । पृथक् पृथक् भाग भी मिलते हैं । प्रथम ॥।), द्वितीय ॥), तृतीय ॥।), चतुर्थ— ३ १२ ०

१ ४ ०

४६८३ **दृष्टांतमञ्जूषा**—(स्वामी परमानंद) भाषावार्तिक ० १२ ०

४६८४ **दृष्टांतमुक्तावली**—(स्वामी परमानंद) भाषावार्तिक ० ३ ०

४६८५ **दृष्टांतशतक**—

४६८६ दृष्टांतसमुच्चय—(पं० शिवशर्मा) २०० दृष्टांत १ ८ ०

४६८७ दृष्टांतसागर—(हनुमानप्रसादशर्मा) केवल भाषा । ५ भाग ३ ८ ०

४६८८ नन्दमहोत्सव—भाषा । ० ८ ०

४६८९ नवीनसंग्रह—जिसमें श्रीकृष्ण के लीलाविषयक अत्युत्तम कवित्त और सवैयादि वर्णित हैं । लखनऊ ० ५ ०

४९९० नासिकेतोपाख्यान—मूलमात्र । स्वर्गनरक का सुख दुःख प्राप्तिवर्णन । खुले पत्रे । मुम्बई ० ५ ०

४९९१ नासिकेतोपाख्यान—पं० केशवप्रसादकृत भाषा टीका सहित खुले पत्रे । मुम्बई ० १० ०

४९९२ नासिकेतोपाख्यान—भाषा वार्त्तिक । मुम्बई ० ६ ०

४९९३ नीलमतपुराणम्—मूलम् । ५ ० ०

4994 Nīlamata or sayings of Nīla, Sanskrit text with Critical Notes, ed. By K. de Vreese, Ph. D. Leiden. 1936. 12 0 0

४९९५ पद्यावली (विद्याभूषण)—श्रीकृष्णलीलावर्णनम् । मूलमात्र । बम्बई ० १० ०

४९९६ पुराणों की संरक्षा—इसमें पुराण सम्बन्धी वृत्तान्त भलीभांति लिखा है । ० २ ०

४९९७ पौराणिक इतिहास-सार—इस पुस्तक में ध्रुव, प्रह्लाद, मान्धाता, नारद और राजा भरत आदि अनेक पौराणिक पुरुषों का वृत्तान्त भाषा में विस्तारपूर्वक कथा के रूप में दिया गया है । लखनऊ १ ० ०

४९९८ बृहत्स्वयम्भूपुराणम्—मूलमात्र सम्पूर्ण । कलकत्ता ४ ८ ०

४९९९ बृहद्धर्मपुराण—सम्पूर्ण मूलमात्र । कलकत्ता ४ ८ ०

५००० भक्तमाला—संस्कृत । इसमें प्रायः जो जो पृथ्वी पर भगवद्भक्त होगये हैं उनका यथोचित वृत्तान्त और कथाएं वर्णित हैं । खुले पत्रे । मुम्बई ३ ० ०

५००१ भक्तमाला—हरिभक्तिप्रकाशिका (नाभाजी) वार्त्तिक भाषा । हरिप्रपन्नजी द्वारा अनुवादित । भक्तों की कथा का वर्णन है ५ ० ०

५००२ भक्तमाला—'रामरसिकावली' रीवाँनरेश महाराज रघुराजसिंहजीकृत अत्युत्तम छन्द बद्ध । ग्लेज । सजिल्द मुम्बई ७ ० ०

५००३ भक्तमाला—नाभाजीकृत । प्रियादासजीकृत टीका सहित । छन्दोबद्ध । मुम्बई २ ० ०

५००४ भक्तमाल—सटीक श्री नाभादास जी कृत लखनऊ ० १४ ०

५००५ भक्तमाल—(प्रतापसिंह) भाषावार्त्तिक । सम्पादक पं० कालीचरण । सजिल्द । लखनऊ २ ० ०

५००६ भक्तमाल—श्रीसातारामशरण रामरसरङ्गमणिकृत भाषाटीका सहित।
लखनऊ ३ १२ ०

५००७ भक्ताम्बुनिधि—इसमें राम-विनय, भक्तिवन्दना, भगवद्भक्तों का माहात्म्य, सत्संग माहात्म्य एवं नाभाजी, राजा हरिश्चन्द्र, राजा बलि, दशरथ, भीष्म, सुरथ, सुधन्वा, हरिदास, जगदेव, ब्रह्मा, शिव, अगस्त्य, रामानुज, रामानन्द, कृष्णदास, गोविन्ददास, विष्णु स्वामी वल्लभाचार्य और माधवाचार्य आदि अनेक भगवद्भक्तों के चरित्र वर्णित हैं। श्री जियालालजी त्रिपाठी ने भक्तों के उपकारार्थ दोहे चौपाई, सोरठे, आदि मनोहर छन्दों में इसकी रचना की है।
लखनऊ १ १० ०

५००८ भक्तिरत्नावली (संस्कृत)—संस्कृत और हिन्दी रूपान्तर सहित। श्रीमद्भागवत के उत्तमोत्तम श्लोकों का संग्रह।
प्रयाग १ ११ ०

५००९ महाभागवतम् (देवीपुराणम्)—अस्मिन् भगवत्या ब्रह्मस्वरूपिण्या महाकाल्या दाक्षायणी-गंगा-पार्वती-श्रीकृष्णा इत्यवतारचतुष्टयचरितानि महाकाल्या मूलस्थानं च प्रधानतयोपवर्णितानि। प्रसंगाद्रामचरितं स्कन्दचरितं पाण्डवचरितं गणेशोत्पत्तिर्गंगावतरणं भगवतीगीता ललितासहस्रनाम शिवसहस्रनामादयो विषयाः निरूपिताः। सार्धपञ्चसाहस्री संहितेयम्।
मुम्बई २ ८ ०

५०१० महालक्ष्मीचरित्र—भाषा टीका सहित।
० ५ ०

५०११ महावीरपुराण—भाषा प्रबन्ध। इसमें हनुमान् जी की उत्पत्ति, उनका रुद्रावतार और विविध पराक्रम हैं।
० ६ ०

५०१२ रामचन्द्रभूषण—रामकथा की कथा और उसके साथ ही अलंकार परिज्ञान। अपूर्व ग्रन्थ।
मुम्बई १ ० ०

५०१३ रामविलास—(रामदयालुशर्मा) इसमें रामचंद्र तथा कृष्णादि देवताओं का भजन सोरठा, दोहे, लावनी, ग़ज़ल, षट्ताली आदि में सुन्दर रूप से वर्णित है।
० ८ ०

५०१४ रामस्वयंवर—श्री महाराज रीवांनरेश रघुराजसिंह जी कृत। छन्दोबद्ध। काव्य में श्री रामचन्द्र जी और जानकी जी का स्वयंवर वर्णन। ग्लेज कागज।
मुम्बई ८ ० ०

५०१५ रामाश्वमेध—भाषावार्तिक। सजिल्द। अनु० पं० काशीराम जी।
२ ८ ०

५०१६ रामाश्वमेधमूल—(वेदव्यासकृत-पद्मपुराणान्तर्गत) खुला पत्रा। मूलमात्र
२ ८ ०

५०१७ रामाश्वमेध—काशिराम पंडित कृत भाषा टीका सहित। खुला पृष्ठ। स्थूलाक्षर।
६ ० ०

५०१८ लक्ष्मणामंगल—(रामदयालुजी) लक्ष्मण के विवाह की कथा मनोहर छन्दों और पदावली में हृदयाकर्षक कृष्णयशोगान।

५०१६ **विश्रामसागर**—यह ग्रन्थ मध्यम श्रेणी के अक्षरों में छापा गया है। सजिल्द। लखनऊ २ ४ ०

५०२० **विश्रामसागर**—गुटका। सुन्दराकार सजिल्द। लखनऊ १ २ ०

५०२१ **विश्रामसागर**—(रघुनाथ रामस्नेही) इतिहासायन, कृष्णायन तथा रामायण प्रसंगसहित। पं० ज्वालाप्रसाद सम्पादित। सजिल्द। स्थूलाक्षर ३ ८ ०

५०२२ **ब्रजविलास**—बड़े अक्षर ग्लेज कागज सजिल्द। मुम्बई ३ ० ०

५०२३ **ब्रजविलास**—रफ कागज। २ ४ ०

५०२४ **ब्रजविलास**—गुटका। सूक्ष्माक्षर ग्लेज कागज १।॥), रफ कागज—
मुम्बई १ ४ ०

५०२५ **ब्रजविलास**—अति उत्तम कागज पर, बेल लगाकर, बड़ी सुन्दरता से छापा गया है। सचित्र। लखनऊ ३ ८ ०

५०२६ **ब्रजविलासगुटका**— उपर्युक्त विशेषताओं सहित। यह बम्बई के मोती समान महीन अक्षरों में खूब बढ़िया चिकने कागज पर छापा गया है। सजिल्द।
लखनऊ १ ० ०

५०२७ **ब्रजविलास**—कविशिरोमणि ब्रजवासीदास जी कृत दोहे, चौपाई, छन्दों में अति स्थूलाक्षर सचित्र। लखनऊ ० १२ ०

५०२८ **ब्रजविहार**—(नारायणस्वामी) कृष्ण भगवान् की लीलाएं। सचित्र। दोहा चौपाई सोरठा आदि काव्य रचना। सजिल्द। २ ८ ०

५०२९ **संशयतदुच्छेदवादः**—सृष्टि की उत्पत्ति में पूर्व महर्षियों के वैज्ञानिक मत-भेदों का निरूपण ततः उनका विज्ञान द्वारा समन्वय।

५०३० **सत्योपाख्यान**—रामायण (व्यासदेव) मूलमात्र। खुले पत्रे रामचंद्र जी का बाल चरित्र। १ ८ ०

५०३१ **सदसद्वादः**—(श्री पं० मधुसूदन जी कृत) इसमें भी सृष्टि के उपादान कारण वेदोक्त सत—असत्—सदसत् इन तीन मूलतत्त्वों का विवेचन २१ तरह से किया गया है। ० ८ ०

५०३२ **सूर्यपुराणादि**—२२५ रत्न अति उत्तम कागज सुन्दर जिल्द ॥।=), सादी जिल्द— ० १२ ०

५०३३ **सूर्यपुराण**—(तुलसीदास) भाषा इसमें सूर्यव्रतों की विधि बताई गई है। ० २ ०

५०३४ **सौरपुराणम्**—श्रीमद्द्वैपायनप्रणीतम्। पूना ३ ० ०

५०३५ **हरिवंश पुराण**—नीलकण्ठाचार्य कृत संस्कृत टीका समेत। माहात्म्य, सन्तानगोपाल और यन्त्रानुष्ठान समेत। इसके श्रवण से वंध्यात्व के अष्ट दोष निवारण होकर सुसन्तति प्राप्त होती है। खुले पृष्ठ। स्थूलाक्षर। ६ ० ०

५०३६ **हरिवंश**—पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र कृत भाषा टीका सहित। खुले पत्रे। स्थूलाक्षर। १६ ० ०

५०३७ हरिवंश पुराण—केवल हिन्दी भाषानुवाद। अनु० पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र। ग्लेज़ कागज़, स्थूलाक्षर, सजिल्द। ७), रफ कागज— मुम्बई ६ ० ०

५०३८ हरिवंशपुराणम्—नीलकण्ठीय भारतभावदीपाख्यटीकया समेतम्। पं० रामचन्द्रशास्त्री किंजवडेकर इत्येतैः पाठान्तरटिप्पण्यादियोजनया समलङ्कृतम्।

[No other edition of the book so cheap and so good will be found anywhere else.] Poona 7 0 0

५०३९ हरिवंशपुराण—२ भाग, पं० रामस्वरूपकृत भाषाटीका सहित, सजिल्द। मुरादाबाद ६ ० ०

5040 Harivaṃsha—translated into English prose from the original Sanskrit text. Parts I-VIII incomplete. Dumdum. 4 0 0

5041 Harivaṃśapurāṇa of Puṣpadanta. Ein abschnitt aus der Apabhraṃśa—Wel thi storie "Mahapurana Tisatthi Mahapurisagunalamkara" ed. by Alsdorf. Foreign 32 0 0

5042 Avatāras—Being the four Convention Lectures delivered at Adyar, at the twenty-fourth anniversary of the Theosophical Society. December, 1899. By Annie Besant. Madras

5043 Hindu Classical Dictionary—A classical dictionary of Hindu Mythology and Religion, Geography, History and Literature. By John Dowson. Foreign 9 4 0

5044 Kalki or the Future of the Civilization—By S. Radhakrishnan. Foreign 1 14 0

5045 Materialien zur Geschichte der Indischen visions—litteratur. Von Lucian Scherman. Foreign 5 8 0

5046 Das Purāṇa Pañcalakṣaṇa—Versuch einer Textgeschichte. Von Willibald Kirfel. Foreign

5047 The Puranas in the light of Modern Science—By R. Narayana Swami Aiyar. Bound. Madras 2 0 0

5048 Rasātala or the Under-World, by Nundo Lal Dey, M. A., B. L. Calcutta 1 0 0

5049 Surya Namaskara—By Bhavan Rao Shrinivas Rao, with Illustration. Oundh 1 0

व्रतकथा-ग्रन्थाः

५०५० अनन्तकथा—मूलमात्र, खुले पत्रे। मुम्बई ० ३ ०
५०५१ अनन्तकथा—भाषा टीका सहित, खुले पत्रे। मुम्बई ० ५ ०
५०५२ अनंत पूजा कथा—भाषा टीका सहित। दो रंग में। बहुत सुन्दर छपी है। ० ६ ०
५०५३ अन्नपूर्णाकथा—मूल। ० १ ६
५०५४ आदित्यव्रतकथा—भाषा टीका सहित। मुम्बई ० १ ६
५०५५ ऋषिपञ्चमी—भाषा टीका सहित खुले पत्रे। मुम्बई ० २ ६
५०५६ करवाचतुर्थीव्रतकथा—भाषा टीका सहित खुले पत्रे। मुम्बई ० २ ०
५०५७ कृष्णजन्माष्टमी-कथा—भाषा टीका सहित खुले पत्रे। मुम्बई ० ३ ०
५०५८ गंगास्थितिनिर्णय—भाषा टीका समेत। मुम्बई ० २ ०
५०५९ गोवर्द्धनधारणव्रतकथावर्णन—भाषा टीका। मुम्बई १ ४ ०
५०६० चन्दनषष्ठी और सूर्यषष्ठी व्रत कथा—भाषा टीका सहित खुले पत्रे। मुम्बई ० ३ ०
५०६१ चित्रगुप्तकथा—छन्दोबद्ध भाषा टीका। ० ४ ०
५०६२ दशादित्य व्रत कथा— मुम्बई ० २ ०
५०६३ पञ्चभीष्म कथा—भाषा टीका सहित खुले पत्रे। मुम्बई ० ८ ०
५०६४ बहुला व्रत कथा—खुले पत्रे। मुम्बई ० १ ६
५०६५ बुधाष्टमी व्रत कथा—भाषा टीका सहित, खुले पत्रे। ० ३ ०
५०६६ महालक्ष्मी व्रतकथा—भाषा टीका समेत खुले पत्रे। मुम्बई ० ३ ०
५०६७ मुक्ताभरण सप्तमी कथा—भाषा टीका समेत खुले पत्रे। मुम्बई ० २ ०
५०६८ यमद्वितीया कथा—छन्दबद्ध। ० १ ०
५०६९ राधाकृष्ण गुणोद्देश दीपिका—सान्वय भाषानुवाद सहित। मुम्बई ० ४ ०
५०७० राधाजन्माष्टमी कथा— ० १ ०
५०७१ व्यतीपातकथा—मूलमात्र। मुम्बई ० १ ६
५०७२ व्यतीपातकथा—भाषाटीका सहित। मुम्बई ० २ ६
५०७३ व्रतोत्सवपद्धति—वर्ष भर के त्योहारों का वर्णन और विधि ० ५ ०
५०७४ शनिकथा—राघवदासकृत। मुम्बई ० २ ०
५०७५ श्रीशनैश्चर जी की कथा—जोरावरमल कायस्थकृत। ० २ ०
५०७६ संकटचतुर्थीव्रत कथा—मूलमात्र। मुम्बई ० ४ ०
५०७७ संकटचतुर्थीव्रत कथा—भाषाटीका खुलेपत्रे। ० ७ ०

५०७८ **सत्यनारायण कथा**—मूल पांच अध्याय खुले पत्रे । ० २ ६

५०७६ **सत्यनारायण कथा**—मूल ७ अध्याय भविष्योत्तरपुराण की । ० ३ ०

५०८० **सत्यनारायण कथा**—(७ अध्याय की) मूल ० ६ ०

५०८१ **सत्यनारायण कथा**—भाषा । छन्दोबद्ध ० १ ६

५०८२ **सत्यनारायण कथा**—(राधेश्याम) राधेश्याम की तर्ज पर । ० ४ ०

५०८३ **सत्यनारायण की कथा**—हिन्दी भाषानुवाद सहित आज तक जितनी भी सत्यनारायण की कथाएं भारत में छपी हैं उन सबसे यह बहुत बढ़ चढ़ कर निकली है। कागज विलायती मोटा लगवाया गया है और अति स्थूलाक्षर टाइप में छापी गई है । ऊपर ऐसे सुन्दर दोरंगे रंगीन टाइटल लगवाये हैं कि पुस्तक की चमक दमक कई गुना बढ़ गई है । लाहौर ० ६ ०

५०८४ **सत्यनारायण इतिहास समुच्चय**—भाषा टीका समेत खुले पत्रे । मुम्बई ० ८ ०

५०८५ **सत्यनारायण पूजा और कथा**—पं० रामेश्वरभट्टकृत हिन्दी भाषा टीका सहित । मुम्बई ० ४ ०

५०८६ **सत्यनारायणव्रतकथा**—श्री वायुनन्दनमिश्रकृत भाषा टीका सहित । बनारस ० ५ ०

५०८७ **सोमावती व्रत कथा**—भाषा टीका समेत । मुम्बई ० २ ६

५०८८ **सौभाग्यलक्ष्मी**—भाषा टीका । मुम्बई ० ८ ०

५०८६ **हरितालिका कथा**— मूलमात्र । मुम्बई ० २ ०

५०६० **हरितालिका कथा**—भाषा टीका खुले पत्रे । ० ३ ०

५०६१ **हलषष्ठीव्रतकथा**—भाषा टीका, इसके अनुष्ठान से अपुत्र को पुत्रप्राप्ति होती है । मुम्बई ० २ ०

माहात्म्य-ग्रन्थाः

५०६२ **अयोध्या माहात्म्य**—मूल संस्कृत खुले पत्रे । मुम्बई ० १४ ०

५०६३ **अर्बुद माहात्म्य**—भाषा टीका सहित । इसमें आबू के समस्त पहाड़ी तीर्थों का माहात्म्य है । मुम्बई ० ६ ०

५०६४ **अवन्तीक्षेत्र अर्थात् उज्जैन माहात्म्य** (स्कन्दपुराणान्तर्गत)—मूलमात्र । इसमें महाकाल वन माहात्म्य, वैश्वानरोत्पत्ति, अप्सरः कुण्डमाहात्म्य, महिषकुण्ड, विद्याधरतीर्थादि अनेकस्थानों का वर्णन तथा ८४ लिङ्गों का वर्णन है । ४ ० ०

५०६५ **आषाढ माहात्म्य**—मूलमात्र । मुम्बई ० ८ ०

५०६६ **उत्तरकाशी-माहात्म्य**—मूलमात्र । मुम्बई ० ३ ०

५०६७ **एकादशी माहात्म्य**—मूल टिप्पणी सहित । मुम्बई ० १० ०

५०९८ **एकादशी माहात्म्य**—भाषा टीका सहित। इसमें २६ एकादशी व्रतादिक का फल और ऐतिहासिक माहात्म्य हैं। ग्लेज कागज। मुम्बई १ २ ०

५०९९ **एकादशी माहात्म्य**—भाषा टीका सहित। बनारस १ ० ०

५१०० **कलिमाहात्म्य**—संस्कृत टीका और भाषा टीका। मुम्बई ० १ ६

५१०१ **काञ्ची माहात्म्य**— काञ्ची १ १४ ०

५१०२ **कार्त्तिकमासमाहात्म्य**—सटीक। स्कन्दमहापुराणान्तर्गत। १ ४ ०

५१०३ **कार्त्तिक माहात्म्य**—पं० रामेश्वर भट्ट कृत भाषा टीका सहित। खुले पत्रे। मुम्बई ० १२ ०

५१०४ **कार्त्तिकमाहात्म्यम्**—(पद्मपुराणान्तर्गत) भाषाटीकासहितम्। बनारस १ ० ०

५१०५ **कार्त्तिक माहात्म्य**—मूलमात्र (पद्मपुराणान्तर्गत) इसमें कार्त्तिकस्नानविधि और वृन्दाजालन्धरोपाख्यानादि हैं। मुम्बई ० १० ०

५१०६ **कार्त्तिकमाहात्म्य**—भाषा टीका सहित ग्लेज कागज। मुम्बई १ २ ०

५१०७ **कार्त्तिक माहात्म्य** (सनत्कुमार)— मुम्बई ० ८ ०

५१०८ **काशीकेदारमाहात्म्यम्** (ब्रह्मवैवर्त्तपुराणान्तर्गतम्)—श्री विजयानन्द त्रिपाठी कृत भाषा टीका सहित। २ ८ ०

५१०९ **काशीपुरी माहात्म्य**—(पञ्चकोशीमाहात्म्य संयुक्त) दोहे चौपाइयों में। मुम्बई ० ४ ०

५११० **श्रीकाशी माहात्म्य**—(शिलाक्षरैर्मुद्रितम्) काशी ० ४ ०

५१११ **काशीयात्रा**—प्रामाणिक श्लोकों सहित भाषा। इसमें काशी जी की नित्य यात्रा, वार्षिक यात्रा, तिथियात्रा, मासयात्रा आदि वर्णित हैं। मुम्बई ० ८ ०

५११२ **काशी-वाराणसी माहात्म्य**—भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ६ ०

५११३ **कुरुक्षेत्र माहात्म्य**—मूल। मुम्बई ० २ ०

५११४ **श्रीकृष्णादि-जयन्तीचतुष्टयमाहात्म्यानि**— मुम्बई

५११५ **केदारमाहात्म्य**—मूल। मुम्बई ० ३ ०

५११६ **कोकिलामाहात्म्य**—(स्कन्दमहापुराणान्तर्गत) मूल। मुम्बई ० १२ ०

५११७ **गङ्गामाहात्म्य**—मूल। मुम्बई ० २ ६

५११८ **गङ्गास्थितिनिर्णय**—भाषाटीका सहित। मुम्बई ० २ ०

५११९ **गयामाहात्म्य-गयापद्धति**—भाषाटीका सहित। मुम्बई १ ० ०

५१२० **गयामाहात्म्य**—गयापद्धति सहित (वायुपुराणान्तर्गत) गयाजी के तीर्थ और श्राद्धादि का माहात्म्य। ० ८ ०

५१२१ **गोकर्णमाहात्म्य**—(नारदपुराणान्तर्गत) सेतु, नर्मदा तथा अवन्ति-क्षेत्र माहात्म्य सहित मूल। ० १ ६

५१२२ गोदावरीमाहात्म्य—अर्थात् गौतमीमाहात्म्य मूल बड़ा। २ ० ०

५१२३ श्री गोमाहात्म्य चन्द्रिका—श्री नारायण पोतदार द्वारा गोभक्तों के हितार्थ संकलित भाषा ग्रन्थ। मुम्बई ० १० ०

५१२४ गोमाहात्म्य—(देवीभागवतान्तर्गत) भाषाटीका सहित। ० १ ०

५१२५ चण्डिका-माहात्म्य—मूल। मुम्बई ० १ ६

५१२६ चातुर्मास्यमाहात्म्य—मूल। मुम्बई ० १२ ०

५१२७ जगन्नाथमाहात्म्य (स्कन्दमहापुराणान्तर्गत)—अर्थात् पुरुषोत्तममाहात्म्य बड़ा। १ ८ ०

५१२८ जगन्नाथमाहात्म्य—(सूतसंहितान्तर्गत) छोटा। मुम्बई ० ६ ०

५१२९ जयन्तीमाहात्म्य—इसमें रामजयन्ती, नृसिंहजयन्ती, कृष्णजयन्ती, वामनजयन्ती, ये चारों जयन्तियां एकत्र हैं। ० ३ ०

५१३० जयन्तीमाहात्म्य—भाषा टीका सहित। ० ६ ०

५१३१ ज्येष्ठमाहात्म्य—मूल। मुम्बई ० १२ ०

५१३२ तुलसीमाहात्म्य— मुम्बई ० ० ६

५१३३ त्रिपुरारहस्यम् (माहात्म्यखण्डः)—सांख्ययोग शास्त्राचार्यश्रीमुकुन्दलालशास्त्रिणा संशोधितम्। साहित्याचार्य खिस्ते इत्युपाख्यपं०श्रीनारायणशास्त्रिणा निबद्धाभ्यां भूमिकाऽध्यायानुक्रमणिकाभ्यां च सहितम् बनारस ५ ० ०

५१३४ देवालयग्राममाहात्म्य (ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत)—मूलमात्र। मुम्बई १ ८ ०

५१३५ देवीमाहात्म्यम्—गाणपत्येन सङ्गमेश्वरोपाध्यायेन बहूनां दाक्षिणात्यकोशपाठानामनुसारेण परिष्कृत्य संशोधितम्। Edited by R. Subrahmanya Vadhyar. Palghat. 0 12 0

५१३६ देवीमाहात्म्य—मूल ० ६ ०

५१३७ द्वारकामाहात्म्य (स्कन्दपुराणान्तर्गत) मूल बड़ा। मुम्बई १ ४ ०

५१३८ द्वारकामाहात्म्य—गर्गसंहितान्तर्गत मूलमात्र। मुम्बई ० ५ ०

५१३९ नर्मदामाहात्म्य—(स्कन्दमहापुराणान्तर्गत) मूलमात्र। नर्मदातटस्थ अनेक तीर्थों व महर्षियों का वर्णन। मुम्बई ४ ० ०

५१४० नासिकपञ्चवटीमाहात्म्य—मूल। मुम्बई ० ६ ०

५१४१ नेपाल-माहात्म्य— बनारस १ ४ ०

५१४२ श्रीपञ्चक्रोशीमाहात्म्यम्—(शिलाक्षरों में)। बनारस ० ३ ०

५१४३ पतिव्रतामाहात्म्यम्—महाभारत-वनपर्वान्तर्गतसावित्र्युपाख्यानम्। पण्डितभीमसेनशर्मणा कृतया व्याख्ययालंकृतम्। इटावा ० ३ ६

५१४४ पतिव्रतामाहात्म्य और मातापितासेवामहात्म्य(महाभारतान्तर्गत)—भाषा टीका सहित। मुम्बई १ ० ०

५१४५ **पुष्करक्षेत्रमाहात्म्य** (नारदपुराणान्तर्गत)—गोतमाश्रम-त्र्यम्बकेश्वरमाहात्म्य सहित । मुम्बई ० २ ०

५१४६ **पुरुषोत्तममासमाहात्म्य** (पद्मपुराणान्तर्गत)—मूल । मुम्बई ० ६ ०

५१४७ **पुरुषोत्तममासमाहात्म्य** (बृहन्नारदीयपुराणान्तर्गत)—मूलमात्र । मुम्बई ० १२ ०

५१४८ **पुरुषोत्तममासमाहात्म्यम्**—भाषाटीकासहितम् । बनारस तथा मुम्बई १ ४ ०

५१४९ **पौष माहात्म्य** (स्कन्दमहापुराणान्तर्गत)—मूलमात्र । मुम्बई ० ६ ०

५१५० **प्रयाग माहात्म्य** (मत्स्यपुराणान्तर्गत)—मूल । मुम्बई ० ७ ०

५१५१ **फाल्गुन माहात्म्य** (भविष्यपुराणान्तर्गत)— मूलमात्र । मुम्बई ० १२ ०

५१५२ **बदरीनारायणमाहात्म्य**—भाषा टीका सहित । मुम्बई ० १२ ०

५१५३ **बदरीनारायणमाहात्म्य**—मूल । मुम्बई ० ८ ०

५१५४ **बदरीनारायणमाहात्म्य**—भाषा टीका सहित । १ ० ०

५१५५ **बृहद् बदरीनारायण माहात्म्य** (स्कन्दमहापुराणान्तर्गत)—भाषाटीका सहित ३५ अध्याय । मुम्बई १ १२ ०

५१५६ **बदरीनारायणयात्राप्रकाश**—भाषा छन्दोबद्ध तथा वार्त्तिक ० ५ ०

५१५७ **भङ्गमाहात्म्य-हरिहरचरित**—श्रीभगवान् शंकर की अति प्यारी विजया के गुणों का वर्णन ० २ ०

५१५८ **श्रीमद्भागवतमाहात्म्यं सटीकम्**— मुम्बई १ ४ ०

५१५९ **श्रीमद्भागवतमाहात्म्यम्**—भाषाटीका सहित । मुम्बई ० १० ०

५१६० **भाद्रपदमाहात्म्य**—इसमें गणपतिपूजा, दूर्वाव्रतपूजा, ऋषिपूजा, ललितापूजा, महालक्ष्मीपूजा, गोत्रिरात्रव्रतकथादि का अपूर्व वर्णन है । मूलमात्र । मुम्बई ० ८ ०

५१६१ **भारततीर्थमाहात्म्य**—भाषाटीका सहित । ० १२ ०

५१६२ **श्रीभूतपुरीमाहात्म्यम्** (स्कन्दपुराणान्तर्गत)—दामोदररामानुजश्रीवैष्णवदासेन सम्पादितम् । मुम्बई ० ८ ०

५१६३ **श्रीमथुरामाहात्म्यम्**—(श्रीमद्वराहपुराणान्तर्गतम्)— मथुरा ० १२ ०

५१६४ **मलमासमाहात्म्य**—(पद्मपुराणान्तर्गत) इसमें गोपूजन, गोदान, दीपमहिमा, उपवासफल, मौनव्रतफल, पञ्चपर्वमहिमा, द्वादशीमहिमादि अपूर्व विषयों से भरा हुआ है । मूलमात्र । मुम्बई ० ८ ०

५१६५ **माघमाहात्म्य**—मूल । इसमें मणिशैलवर्णन, माघस्नानप्रशंसा, शालिग्रामशिलामहिमा, प्रयागप्रशंसादि वर्णन हैं । मुम्बई ६ १० ०

५१६६ माघ माहात्म्य (पद्मपुराणान्तर्गत)—भा० टी० । बनारस १ ० ०

५१६७ माघ माहात्म्य—पं० ज्वालाप्रसादकृत भाषा टीका सहित ।
मुम्बई १ ४ ०

५१६८ मातापित्रोः पूजन-माहात्म्यं वैष्णवलक्षणं च—
मुम्बई ० १ ६

५१६९ मातापित्रोः पूजनमाहात्म्यं वैष्णवलक्षणं च—भाषाटीकासहितम् ।
मुम्बई ० ३ ०

५१७० मायापुरी माहात्म्य—इसमें हरिद्वार और गंगाजी का माहात्म्य भली भाँति वर्णित है । मूल । मुम्बई ० १२ ०

५१७१ मार्गशीर्ष माहात्म्य—स्कन्दमहापुराणान्तर्गत मूल । मुम्बई ० ८ ०

५१७२ मार्गशीर्ष माहात्म्य—भाषाटीका सहित । मुम्बई १ ४ ०

५१७३ मिथिला माहात्म्य— बनारस ० ४ ०

५१७४ मिश्रितमाहात्म्यम्—श्रीमहामुनिवेदव्यासविरचितम् । यदन्तर्गतं दधीचि-नृपकुष्ठनाशनादि बहुमाहात्म्यं तदाहूतसर्वतीर्थागमनं तदस्थ्युद्भववज्रेण वृत्रवधादिकथा अतिविस्तारेण वर्णितम् । लखनऊ ० ६ ०

५१७५ रामगङ्गामाहात्म्यम्—श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्यप्रणीतेन हिन्दीभाषानुवादेन समलंकृतम् । मुम्बई

५१७६ श्रीरामनाम माहात्म्यं गोविन्दाष्टकस्तोत्रञ्च—श्रीविश्वेश्वरदत्तविरचितम् । मुरादाबाद

५१७७ रेवा (नर्मदा) खण्ड—स्कन्दमहापुराणान्तर्गत । इसमें नर्मदा माहात्म्य तथा नर्मदा-तटस्थ अनेक तीर्थ व महर्षियों का वर्णन । मूलमात्र । मुम्बई ४ ० ०

५१७८ विन्ध्यमाहात्म्यम्—श्री पं० लक्ष्मीनारायण जी रईस "कौशिक" कृत-भाषाटीकायुतम् । इटावा १ ८ ०

५१७९ वृन्दावनमाहात्म्य—(पद्मपुराणान्तर्गत) मूलमात्र । मुम्बई ० १२ ०

५१८० वैद्यनाथ माहात्म्य—पं० ज्वालाप्रसादकृत भाषाटीका सहित । इसमें वैद्यनाथ जी का माहात्म्य और देवी देवताओं के ध्यान इत्यादि वर्णित हैं ।
मुम्बई १ ८ ०

५१८१ वैशाख माहात्म्य (पद्मपुराणान्तर्गत)—सटिप्पण । मुम्बई ० १२ ०

५१८२ वैशाख माहात्म्य (पद्मपुराणान्तर्गत)—संस्कृत टीका सहित । खुले पत्रे ।
मुम्बई १ ० ०

५१८३ वैशाखमाहात्म्य—भाषा टीका सहित । सर्वोत्तम कागज पर छपा है ।
मुम्बई १ ६ ०
बनारस १ ४ ०

५१८४ वैशाखमाहात्म्यम्—भाषाटीकोपेतम् । मुम्बई ० ६ ०

५१८५ शिवरात्रि माहात्म्य—भाषा टीका सहित ।

५१८६ शिवलिङ्ग पूजा माहात्म्य— इटावा ० ३ ०

५१८७ श्रावण माहात्म्य—इसमें श्रावणमास व्रतोद्देश, लक्षपूजा, मासोपवास, रविवार व्रत, सोमवार व्रत, मंगलगौरीव्रत, बुध, गुरु, शुक्र, शनिव्रत, पवित्रारोपण, जयन्ती व्रतादि वर्णन है। मूलमात्र। ० १२ ०

५१८८ श्रावणमाहात्म्य—उपर्युक्त विशेषताओं सहित भाषाटीका। १ ४ ०

५१८९ सेतुमाहात्म्य (स्कन्दपुराणान्तर्गत)—मूल। मुम्बई २ ० ०

५१९० हरिहरैकभाववर्णन—भाषा टीका सहित। हरिहरभेदान्धतम निरसनार्थ वेद, पुराण तथा इतिहास से शिव विष्णु दोनों की एकता भली भांति वर्णित है। सजिल्द। मुम्बई २ ० ०

स्तोत्र-ग्रन्थाः

५१९१ अक्षयषष्टि और शिवभक्तिकल्पलतिका ≡)

५१९२ अच्युतशतकम् प्राकृतभाषात्मकम्। श्रीमन्निगमान्तमहागुरुविरचितम्। सव्याख्यम् ।)

५१९३ अन्नपूर्णास्तोत्र भाषाटीकासहित –)

५१९४ अपामार्जनस्तोत्र इसके जप करने से रोग का नाश होता है =)

५१९५ अमृतलहरी (यमुनास्तोत्र) भाषाटीका सहित –)

५१९६ अष्टादशश्लोकीगीता भाषाटीका –)

५१९७ आदित्यव्रतकथा भाषाटीका =)

५१९८ आदित्यहृदय स्थूलाक्षर ।–)
छोटे अक्षर— =)

५१९९ आदित्यहृदय वाल्मीकीय रामायण का –)

५२०० आदित्यहृदय भाषाटीका सहित ।–)

५२०१ आदित्यहृदय और सूर्यकवच =)

५२०२ आपदुद्धारकस्तोत्र ≡)

५२०३ आरतीसंग्रह इसमें गणपति, शिव, विष्णु, देवी, सत्यनारायण, इत्यादि देवताओं की २६ आरतियों का संग्रह है =)

५२०४ आर्याशतकम् ≡)

५२०५ आशीर्वादशतकम् ≡)

५२०६ इन्द्राक्षीशिवकवचस्तोत्र ≡)

५२०७ इन्द्राक्षीस्तोत्र –)

५२०८ उदासीनसाधुस्तोत्र देवतीर्थ कृत और ब्रह्मानन्द कृत टीका सहित ≡)

५२०९ उपमन्युशिवस्तोत्र भाषाटीका –)

५२१० ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्र)॥

५२११ ककारादिकृष्णसहस्रनाम रेशमी गुटका ॥=)

५२१२ कटाक्षशतकम् ≡)

५२१३ कमलनेत्रस्तोत्र भाषा –)

५२१४ कर्पूरस्तवः श्रीमहाकालप्रणीतः। पण्डितराजरंगनाथविद्वद्वरविरचितः। दीपिकाख्यटीकया तथा साहित्याचार्य पं०श्रीनारायणशास्त्रिखिस्तेकृतपरिमलनामिकया टीकया च समन्वितः ।)

५२१५ कर्पूरस्तवव्याख्या संस्कृत टीका तथा भाषाटीका सहित ≡)

२६ कलियुगाचार्यस्तोत्र –)

५२१७ कलिसंतारणोपनिषद् भाषा टीका -)॥
५२१८ कालिकासहस्रनाम ।-)
५२१९ कालीकवच भाषाटीका -)
५२२० कुशापमार्जनस्तोत्र -)
५२२१ कृपायतनकृष्णकारुण्याष्टक भाषाटीका -)
५२२२ श्रीकृष्णाष्टक सटीक -)
५२२३ केदारसहस्रनाम मूल बड़े अक्षर का। ।≡)
५२२४ केशवस्तव भाषाटीका। =)
५२२५ क्रमदीपिका महामहोपाध्याय केशवभट्टविरचिता विद्याविनोदश्रीगोविन्दभट्टाचार्यकृतविवरणोपेता। ३ भागों में। सम्पूर्ण ४॥)
५२२६ क्षमाषोडशीस्तोत्र -)
५२२७ गंगाष्टक)॥।
५२२८ गंगासहस्रनाम मोटे अक्षर ।)
५२२९ गंगास्थितिनिर्णय भाषाटीका =)
५२३० गजेन्द्रमोक्ष भाषाटीका सहित, तथा केवल भाषा =)
५२३१ गणपतिस्तोत्र)॥
५२३२ गणपतिस्तोत्र तथा सरस्वती स्तोत्र -)
५२३३ गणेशसहस्रनाम -)
५२३४ गणेशसहस्रनामावली ≡)
५२३५ गणेशाष्टक)॥
५२३६ गणेशाष्टकस्तोत्र गंगाष्टकस्तोत्र सहित -)
५२३७ गायत्रीपञ्चाङ्ग १)
५२३८ गायत्रीपटल लघु -)॥
५२३९ गायत्रीपुरश्चरण =)
५२४० गिरीशस्तोत्र (शिवस्तुति) -)
५२४१ गुरुपरम्परास्तोत्र =)
५२४२ गुरुप्रसाद महिमादर्श -)
५२४३ गोपालसहस्रनाम राधास्तोत्र सहित =)
५२४४ गोपालसहस्रनाम गुटका रेशमी बड़े अक्षर ।≡)
५२४५ गोपालसहस्रनाम बड़े अक्षर खुले पत्रे। ।-)
५२४६ गोपालसहस्रनाम विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र कृत भाषा टीका सहित। १।)
५२४७ गोपालविंशतिः गोपालाचार्यकृत टीकासहिता ॥)
५२४८ गोपालसहस्रनाम भाषा टीका सहित ॥)
५२४९ गोपालसहस्रनामावली =)
५२५० गोविन्दनामगीता ॥)
५२५१ गोविन्दाष्टक आनन्दगिरिकृत संस्कृत तथा पं० कन्हैयालालशर्मांकृत भाषा टीका सहित
५२५२ चतुःश्लोकी भागवत और सप्तश्लोकी गीता)॥
५२५३ चतुःश्लोकी भागवत सप्तश्लोकी गीतासहित भाषाटीका -)
५२५४ चर्पटपञ्जरी)॥
५२५५ चर्पटपञ्जरी भाषाटीका -)
५२५६ चौबीस गायत्री भाषाटीका ।)
५२५७ जगन्नाथाष्टक)॥।
५२५८ जैनस्तोत्रसमुच्चयः अनेकजैनपूर्वाचार्यविरचितः। १॥)
५२५९ ज्योतिर्लिङ्गस्तोत्र शिवमानस पूजासहित)॥
५२६० ज्वरस्तोत्र भाषाटीका)॥।
५२६१ तुलसीकवच =)
५२६२ तुलसीकवचादि इसमें तुलसीकवच, तुलसीस्तोत्र, राधाकवच तथा श्रीस्तव हैं। =)

५३१० श्रीबदरीनारायणस्तोत्र शालिग्रामस्तुति ≡)
५३११ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर (स्तोत्र संख्या १६०) शिव, गणपति, विष्णु, देवी, सूर्य, राम, गंगादिक सरिता इत्यादिक के भक्तिमय स्तुतिवर्णन। नित्यपाठोपयोगी मोटे अक्षर ग्लेज सजिल्द १।।।)
५३१२ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर सचित्र गुटका (१८२ स्तोत्र) कपड़े की जिल्द ।।।=), कागज की जिल्द ।।।),
५३१३ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर मोटे अक्षर विलायती जिल्द। सजिलद १), बड़ा १।।)
५३१४ बृहत्स्तोत्ररत्नाहार १।।।=)
५३१५ बृहत्स्तोत्रसरित्सागरः (स्तोत्र संख्या ३०६) ५)
५३१६ ब्रह्मज्ञानावली शंकराचार्यकृत)।।
५३१७ ब्रह्मसंहिता जीवगोस्वामिकृतटीकासहिता, तथा विष्णुसहस्रनाम शङ्कराचार्यकृतभाष्यसहितम् (With Introduction in English) ५।।=)
५३१८ भक्तिमञ्जरी By H. H. Svati Sri Rama Varma Maharaja. 1/-
५३१९ भक्तिसुधातरंगिणी शिवाभिनवनृसिंहभारतीस्वामिविरचिता २।।≡)
५३२० भवानीमानसिकपूजन -)
५३२१ भवानीसहस्रनाम ।-)
५३२२ भुजंगस्तोत्र ≡)
५३२३ भैरवसहस्रनाम =)
५३२४ मकरन्दस्तोत्र -)
५३२५ मकारादिश्रीरामसहस्रनाम (रुद्रयामलोक्त) ≡)
५३२६ मकारादि और रकारादि श्रीरामसहस्रनाम (रुद्रयामलोक्त) दोनों पुस्तकों का एक गुटका ।=)
५३२७ मधुराष्टकम् श्रीवल्लभाचार्यप्रणीतं षड्विंशतिसमेतम् ।)
५३२८ मन्दस्मितशतकम् ≡)
५३२९ महाकाल शनिमृत्युञ्जयस्तोत्र इसके पाठ से सब रोग दूर होते हैं। -)
५३३० महामृत्युञ्जय जपविधि भाषा टीका। =)
५३३१ महालक्ष्म्यष्टक)।।
५३३२ महाविद्यास्तोत्र -)
५३३३ महिम्नस्तोत्र मधुसूदनीव्याख्यासहित। ।=)
५३३४ महिम्नस्तोत्र सुबोधिनी टीका सहित। =)
५३३५ महिम्नस्तोत्रम् श्रीमधुसूदनीटीका तदार्यभाषानुवादसहितम्। ।=)
५३३६ महिम्नस्तोत्रम् (व्याख्याषट्कोपेतं पुष्पदन्ताचार्यकृतम्। मधुसूदनसरस्वती कृत टीका तथा पांच अन्य टीकाओं सहित। शक्तिमहिम्नस्तोत्र तथा भूमिका सहित। १)
५३३७ मातृभूतशतकम् ≡)
५३३८ मूलरामायणम् =)
५३३९ मूलरामायण भाषा टीका समेत। =)
५३४० मृत्युञ्जयस्तोत्र =)
५३४१ यमुनालहरी भाषा टीका -)।।
५३४२ यमुनाष्टक शंकराचार्य कृत। स्थूलाक्षर।)।।
५३४३ यमुनासहस्रनाम =)
५३४४ रकारादिश्रीरामसहस्रनाम ब्रह्मयामलोक्त। ≡)
५३४५ रम्भाशुक संवाद संस्कृत मूल व प्रत्येक श्लोक की कवित्त में टीका व भाषा टीका समेत। ≡)
५३४६ राधाकृष्ण भूषण ≡)

५३४७ रामचन्द्रप्रार्थनाष्टक भाषा-टीका। =)

५३४८ रामबाराखड़ी और राममंगल भाषा। -)

५३४९ राममहिम्न -)

५३५० रामरक्षा मूल -)

५३५१ रामरक्षा भाषा टीका। =)

५३५२ रामरक्षास्तोत्रम् मुद्गलाचार्यविरचितटीकासहितं सटिप्पणं धारणीयरामभद्रयन्त्रसहितम्। ।।।-)

५३५३ रामरक्षास्तोत्र-श्रीराममहिम्नस्तोत्र-विष्णुपञ्जरस्तोत्र-श्रीवेंकटेशाष्टकस्तोत्रेति स्तोत्रचतुष्टयम्। ≡)

५३५४ रामसन्मंगलस्तोत्र -)

५३५५ रामसहस्रनाम =)

५३५६ श्रीरामसहस्रनामावली =)

५३५७ रामस्तवराज बड़े अक्षरों का १६ पेजी। =)

५३५८ रामस्तवराज छोटे अक्षरों का ३२ पेजी। -)

५३५९ रामस्तवराज अत्यन्त बड़े अक्षरों का। ≡)

५३६० रामस्तवराज सटीक हरियाचार्य स्वामीकृतभाष्य ॥)

५३६१ रामस्तवराज अक्षरार्थदीपिका भाषाटीका तथा बारह महीनों की पाठविधि सहित ।-)

५३६२ रामस्तवराजरामरक्षा बड़े अक्षर गुटका ।≡)

५३६३ रेणुकासहस्रनाम कवच सहित मूलमात्र -)॥

५३६४ लक्ष्मीनारायणहृदय रेशमी गुटका ।=)

५३६५ लक्ष्मीनारायणहृदय ।)

५३६६ लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्र भाषाटीका -)

५३६७ लक्ष्मीवेंकटेशस्तोत्र -)

५३६८ लक्ष्मीसहस्रनाम -)॥

५३६९ लक्ष्मीसहस्रनाम ।-)

५३७० लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम् काश्ची ≡)

५३७१ श्रीलक्ष्मीसहस्रम् श्रीमद्वेंकटाध्वरिविरचितं श्रीमद्रावजी महाराजापरनाम्ना श्रीनिवासपण्डितेन विरचितया बालबोधिन्याख्यया व्याख्यया समलंकृतम्। ८ भागों में सम्पूर्ण १२)

५३७२ लक्ष्मीस्तोत्र अगस्त्यकृत)॥

५३७३ लक्ष्मीस्तोत्र =)

५३७४ लघुस्तुतिः (श्रीलघुभट्टारकप्रणीता) श्रीराघवानन्दकृतव्याख्यासहिता ॥)

५३७५ ललितात्रिशती स्तोत्रम् शंकराचार्यविरचितभाष्य समेत ॥-)

५३७६ ललितासहस्रनाम ।)

५३७७ ललितासहस्रनाम भास्करराय-प्रणीतसौभाग्यभास्करभाष्यम्। इस पर श्रीभास्करराय ने भाष्य बनाते समय एक एक नाम के अनेक अर्थ व्याकरण धातुओं से सिद्ध करके जगह जगह मंत्र शास्त्र का रहस्य बड़ी युक्ति से स्पष्ट किया है। १॥।)

5378 Lalita Sahasra-nama. With Bhaskararaya's Commentary translated into English by R. Anantha Krishna Sastry Rs. 4

५३७९ ललितास्तवमणिमाला ।)

५३८० ललितास्तवरत्न ≡)

५३८१ वरदराजस्तवः अप्पयदीक्षितकृतः। सटीकः With his own co-

mmentary and an English Introduction by A. V. Gopalachariar, M. A., B. L. Rs. 1

५३८२ **विधानसंग्रह** इसमें त्र्यक्षरमृत्युञ्जय, मृत्युञ्जयकवच, त्र्यम्बकमृत्युञ्जयविधान, पुत्रकामेष्टिप्रयोग, अभिलाषाष्टकस्तोत्र, मंगलव्रतविधि, सभाष्यश्रीसूक्तविधान, महामृत्युञ्जय विधान, इत्यादि अत्युपयोगी विषय निरूपित हैं ॥)

५३८३ **विष्णुकवच** –)॥

५३८४ **विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्र** श्रीपूर्णसरस्वतीकृतटीका सहित ।=)

५३८५ **विष्णुपूजन** भाषाटीका सहित =)

५३८६ **विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्** ≡)

५३८७ **विष्णुसहस्रनाम** अत्यन्त स्थूलाक्षर खुले पत्रे । ॥)

५३८८ **विष्णुसहस्रनाम** १६ पेजी मोटे अक्षर ≡)

५३८९ **विष्णुसहस्रनाम** मध्यमाक्षर =)

५३९० **विष्णुसहस्रनाम** रेशमी जिल्द गुटका ।–)

५३९१ **विष्णुसहस्रनाम** गुटका मूल मात्र । अति स्थूलाक्षर रेशमी कपड़े की सुन्दर जिल्द । २४ अवतारों के रंगीन चित्र भी साथ लगे हैं । ऐसे सुन्दर मोटे अक्षरों वाला गुटका आज तक भारतभर में नहीं छपा ।≡)

५३९२ **विष्णु सहस्रनाम** भाषा टीका ॥=) तथा ॥)

५३९३ **विष्णुसहस्रनाम** शांकर भाष्य सहित । ॥)

५३९४ **विष्णुसहस्रनाम** विवेचन और निरुक्ति नामक दो व्याख्याओं और भगवद्गुण दर्पण नामक विशाल भाष्य सहित सम्पूर्ण सजिल्द । ५)

५३९५ **विष्णुसहस्रनाम** भाषापद्यानुवाद ≡)

५३९६ **विष्णुसहस्रनाम** दीपिका भाषा टीका । ॥=)

५३९७ **विष्णुसहस्रनाम** चन्द्रिका भाषा टीका । ॥)

५३९८ **विष्णुसहस्रनाम** बाबू जालिम सिंह कृत भाषानुवाद सहित । १)

५३९९ **विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्**)॥।

5400 The Vishnu Sahasranama. With the Bhashya of Śri Śankaracharya, to which is added a latest Vyakhya of a Sannyasin and a Kārikā of an unknown author. Translated into English by R. Anantha-Krishna Shastry. 2/8/–

५४०१ **विष्णुसहस्रनामावली** =)

५४०२ **विष्णुसहस्रनामावलि** मोटे अक्षर ।)

५४०३ **शतनामाकर स्तोत्र** –)

५४०४ **शनिमृत्युञ्जय स्तोत्र** –)

५४०५ **शिवकवच** –)

५४०६ **शिवतत्त्व रहस्य** A commentary on the शिवाष्टोत्तर by नीलकंठदीक्षित । ॥।)

५४०७ **शिवताण्डव स्तोत्र**)॥।

५४०८ **शिवताण्डव स्तोत्र** पं० ज्वालाप्रसादमिश्र कृत भाषा टीका समेत –)॥

5409 The Song of Praise to the Dancing Shiva (शिवताण्डव-

स्तोत्र)—Sanskrit text, translation in English, keeping the high standard of the original vigour with its strong and terse language. By Ernest Wood. 2/4/-

५४१० शिवदण्डक—शिवाष्टक -)

५४११ शिवमहापूजा =)

५४१२ शिवमहिम्न मूल बड़े अक्षर =)

५४१३ शिवमहिम्न सटीक अन्वयार्थ भाषा टीका =)

५४१४ शिवमहिम्नस्तोत्र पुष्पदन्तकृत -)

५४१५ शिवमहिम्नस्तोत्र सप्तपाठि १)

5416 Greatness of Shiva (महिम्न स्तोत्र) Translation and Commentary together with the Sanskrit Commentary of Jannatha Chakravarti, 2nd edition, revised and enlarged. Edited by Arthur Avalon. 1/8/-

५४१७ शिवसहस्रनाम ≡)

५४१८ शिवसहस्रनाम ।-)

५४१९ शिवसहस्रनाम भाषाटीका सहित ।=)

५४२० शिवसहस्रनामस्तोत्र सटीक (लैङ्गमहापुराणान्तर्गत) संस्कृतसंतोषिणी टीका सहित ।=)

५४२१ शिवसहस्रनामावली =)

५४२२ शिवसहस्रनामावली मोटेअक्षर ।)

५४२३ शिवस्तोत्र (छन्दोबद्धभाषा) -)

५४२४ शिवस्तोत्रावली उत्पलदेवाचार्यकृता । क्षेमराजविरचितविवृतिसमेता । २ खण्डों में सम्पूर्ण । ३)

५४२५ शिवानन्दलहरी ≡)

५४२६ शीतलाष्टक)॥

५४२७ श्रीस्तुतिः गोपालाचार्यकृतटीकासहिता ॥)

५४२८ श्रुत्यन्तकल्पवल्ली सविशेष-निर्विशेष कृष्णस्तवराजः श्रीनिम्बार्काचार्यप्रणीतः श्रीपुरुषोत्तमदासकृतव्याख्यासमेतः ३)

५४२९ सदाशिवेन्द्रस्तुति ≡)

५४३० सन्तानगोपालस्तोत्र =)

५४३१ सरस्वतीस्तोत्र -)

५४३२ सरस्वतीस्तोत्रकवच भाषाटीका समेत ≡)

५४३३ साम्बपञ्चाशिका सटीका १)

५४३४ सीतासहस्रनाम भाषा टीका सहित ≡)

५४३५ सुदामा की बाराखड़ी -)

५४३६ सुदामाचरित्र ।)

५४३७ सूर्यकवचमूल -)

५४३८ सूर्यकवच भाषाटीका समेत -)॥

५४३९ सूर्यसहस्रनामावली =)

५४४० सूर्यसहस्रनामावली ।)

५४४१ सौन्दर्यलहरी शंकराचार्यकृत =)

५४४२ स्तवचिन्तामणिः भट्टनारायणकृतः । क्षेमराजकृतटीकासहितः २।)

५४४३ स्तवमाला श्रीरूपदेवविरचिता श्रीजीवदेवविरचितभाष्य सहित २)

५४४४ स्तुतिमञ्जरी ।-)

५४४५ स्तुतिशतकम् ≡)

५४४६ स्तोत्रमुक्ताहारः अस्मिन् ४१६ स्तोत्राणि संगृहीतानि सन्ति । भागद्वयं मूलमात्रम् १।।)

५४४७ **स्तोत्ररत्नम्** श्रीमद्यामुनमुनिप्रणीतम्। श्रीमन्निगमान्तमहागुरुविरचितभाष्योपेतम् १)

५४४८ **स्तोत्ररत्नमाला** भाषाटीका सहित इसमें भक्ति ज्ञान तथा उपासना के ८६ अपूर्व स्तोत्र चुन चुन कर संग्रह किये गये हैं २॥)

५४४९ **स्तोत्ररत्नावली** ।||−)

५४५० **स्तोत्ररत्नावली** भाषाटीका ॥)

५४५१ **स्तोत्रषट्क** (स्तोत्ररत्नमालान्तर्गत) इसमें नर्मदागुर्वष्टक, मंगल, शान, नवग्रह, कृष्णाष्टक इनका एकत्र संग्रह भाषाटीका सहित है =)

५४५२ **स्तोत्रषट्क** (स्तोत्ररत्नमालान्तर्गत) भाषाटीका समेत =)

५४५३ **स्तोत्राणि** चन्द्रशेखरस्वामिकृतानि ।≡)

५४५४ **हनुमज्जन्म** अनेक प्रकार के छंदों में वर्णित है। −)॥

५४५५ **हनुमत्पताका** छन्दोबद्ध वीररस के रोचक कवित्त ।)

५४५६ **हनुमत्पूजा** −)

५४५७ **हनुमद्वन्दीमोचन** −)

५४५८ **हनुमान् चालीसा** संकटमोचन सहित −)

५४५९ **हनुमान् दूत** ।)

५४६० **हनुमान् पचासा** =)

५४६१ **हनुमान् बाहुक** −)

५४६२ **हनुमान लहरी** −)

५४६३ **हनुमान सहस्रनामावली** =)

५४६४ **हनुमानसाठीका** हनुमान् जी के ओजवर्धक ६० कवित्त। =)

५४६५ **हनुमान स्तुति बदरीनाथ और दुर्गास्तुति** −)

५४६६ **हरिनाम माला स्तोत्र** भगवन्मानसपूजन। −)

५४६७ **हरिहर मन्दिर निरञ्जन आरती** ।−)

५४६८ **हस्तामलक स्तोत्र** हिन्दी भाषा टीका सहित। =)

मन्त्रशास्त्र-ग्रन्थाः

५४६९ **अघोरी तन्त्र**—सरल भाषा में तन्त्र की उपयोगी मन्त्र तन्त्र साधन विधि सरल रीति से वर्णित है। मुम्बई ० ८ ०

५४७० **अद्वैत भावोपनिषद्, कल्युपनिषद्, तारोपनिषद्, कौलोपनिषद्, भावनोपनिषद्,**—Edited by Sita Ram Shastri, with Introduction by Arthur Avalon. London 3 12 0

५४७१ **अनुष्ठान प्रकाश**—पं० चतुर्थीलाल कृत नैमित्तिक कर्म में परमोपयोगी है। इसमें अकडमकड-चक्र, दीक्षापुरश्चरण, सूर्य चन्द्रादि ग्रहणों में पुरश्चरण तथा संकल्पादि संगृहीत हैं और अनेक प्रकार के देवी देवताओं के अनुष्ठान प्रकाशित किये गये हैं। खुले पत्रे। मुम्बई ६ ० ०

५४७२ **अष्टसिद्धि**—भाषा टीका सहित। गुरूपदिष्ट मार्ग से अभीष्ट फलप्रद ग्रन्थ। मुम्बई ० १२ ०

५४७३ **अहिर्बुध्न्यसंहिता** (पञ्चरात्रान्तर्गता)—देवशिखामणिना रामानुजाचार्येण

संशोधिता तेनैव विरचितया क्वाचित्कया विषमस्थलटिप्पएया च सनाथीकृता । ३ भागों में सम्पूर्ण । सुन्दर जिल्द ।
मद्रास १० ० ०

5474 Introduction to the Pancaratra and the Ahirbudhnya Samhita. By F. Otto Schrader, Ph. D.
Madras 3 0 0

५४७५ आगमप्रामाण्यम्—श्रीपञ्चरात्रतन्त्रप्रामाण्यव्यवस्थापनपरम् ।
बनारस ० ८ ०

५४७६ आर्यमञ्जुश्रीमूलकल्पः—३ भाग । मद्रास ७ ८ ०

५४७७ आश्चर्यदीपिका—पं० वाचस्पति विरचित । मुम्बई ० २ ०

५४७८ आश्चर्ययोगरत्नमाला तन्त्र— मुम्बई ० ४ ०

५४७९ आसुरीकल्प—भाषा टीका समेत । मुम्बई ० २ ०

५४८० इन्द्रजाल बड़ा— मथुरा १ ० ०

५४८१ इन्द्रजाल—(कौतुकरत्नाकर संस्कृत और भाषा) मन्त्र, तन्त्र, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण प्रयोग और वैद्यक तथा समस्त कार्यों के सिद्ध करने वाले १३८ यन्त्रों सहित ।
मुम्बई १ ८ ०

५४८२ इन्द्रजाल (शिवोक्त)— मुम्बई ० २ ०

५४८३ इन्द्रजालविद्यासंग्रह—इन्द्रजाल विधि, कामरत्न, दत्तात्रेयसंहिता, षट्कर्मदीपिका, सिद्धनागार्जुन कक्षपुट ।
कलकत्ता ३ ० ०

५४८४ ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः—श्रीमदीशानशिवगुरुदेवमिश्रविरचिता । ४ भागों में ।
मद्रास १२ ० ०

५४८५ ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी—व्याख्यासहित । २ भाग ।
मुम्बई ७ ० ०

५४८६ ईश्वरसंहिता—(पाञ्चरात्रम्) । मूलमात्रम् । मद्रास ८ ० ०

५४८७ उच्छिष्टगणपतिपञ्चाङ्ग—मूल रेशमी जिल्द । मुम्बई १ ० ०

५४८८ उड्डीशतन्त्र—रावणविरचित मूल तथा श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठी कृत भाषा टीका सहित ।
मुम्बई ० ६ ०

५४८९ उड्डीशतन्त्रम्—रावणकृतम् । भाषाटीका सहितम् । पं० श्रीमाधवप्रसादव्यासेन संशोधितम् ।
बनारस ० ८ ०

५४९० उत्तरनारायणभट्टीय—अपर प्रयोग ग्रन्थ । मुम्बई ० ८ ०

5491 Uddhāra-Kośa (Dakṣiṇāmūrti's), [उद्धारकोषः । दक्षिणामूर्त्तिविरचितः]—A dictionary of the secret Tantric syllabic code. Text edited with Introduction, Appendices and Exegetical Notes by Prof. Dr Raghuvīra and Shodo Taki, M. A. (of Taisho University, Tokyo, Japan), Japanese State Research Scholar. June 1938. Lahore 10 0 0

५४९२ उलूककल्पम्—(उल्लूकल्प) सरल भाषाटीका सहित टीकाकार पं० लालमणिशर्म्मा । मुरादाबाद ० ८ ०

५४९३ कर्पूरस्तवः (तन्त्रम) श्रीमहाकालप्रणीतः । पण्डितराजरङ्गनाथविद्वद्विरचितदीपिकाख्यटीकया, तथा साहित्याचार्यपण्डितश्रीनारायणशास्त्रिखिस्तेकृतपरिमलनामिकया टीकया च समन्वितः । काशी ० ४ ०

५४९४ कर्पूरादि स्तोत्र सटीक—(Hymn to Kālī) Edited with English translation by A. Avalon. Foreign 2 4 0

५४९५ काथबोधः—साजनीकृतटीकोपेतः । दत्तात्रेयसम्प्रदायानुगतः । बनारस ० ८ ०

५४९६ कामकलाविलास—(Kāmakalā-Vilāsa) a work of the Kashmir School by Puṇyānanda with the commentary of Natanânandanātha. Translated into English by Arthur Avalon. Foreign 2 4 0

५४९७ कामकलाविलासः—पुण्यानन्दाचार्यविरचितः । सटीकः । काश्मीर १ ४ ०

५४९८ कार्तवीर्यार्जुनोपासनाध्याय—रेशमी जिल्द । मुम्बई २ ० ०

५४९९ कालीतन्त्र— कलकत्ता ० १० ०

५५०० कालीविलासतन्त्र—Edited by Parvati Charana Tarkatirtha, with English Introduction by Arthur Avalon. Foreign 2 13 0

५५०१ कुलचूडामणि—निगमतन्त्र । श्री गिरीशचन्द्र वेदान्ततीर्थ-सम्पादित । अक्षयकुमारमैत्रलिखित उपोद्घात सहित । मूल संस्कृत । Foreign २ ४ ०

५५०२ कुलार्णवतंत्र—मूलमात्र । Foreign ३ ६ ०

५५०३ कौतुकरत्नाकर—अर्थात् इन्द्रजालतन्त्र । २ भाग । शरभसाल्वराजपंचांग-सहित । ले० पं० हरिशंकरशास्त्री । हरिद्वार १ ० ०

५५०४ कौलज्ञाननिर्णयः—बौद्धतन्त्रम् । मत्स्येन्द्रनाथप्रस्थानभूत-कौलज्ञाननिर्णय-ज्ञानकारिका-अकुलवीरतन्त्राद्यात्मकः । आङ्गलभूमिका-सूचीपत्रादिभिः समलंकृतः । कलिकाता-विश्वविद्यालयाध्यापक-श्रीप्रबोधचन्द्रबागचि-एम् ए डि-लिट्-संस्कृतः । कलकत्ता ६ ० ०

५५०५ कौलावलीनिर्णयः (Kaulāvalīnirṇayah)—Sanskrit text with Introduction in English by Arthur Avalon. Foreign 4 8 0

५५०६ कौलोपनिषद्, त्रिपुरामहोपनिषद्, भावनोपनिषद्,—संस्कृत टीका सहित । Edited by Sita Rama With Introduction by Arthur Avalon. 3 6 0

५५०७ **क्रमदीपिका** (वैष्णवतन्त्रम्, निम्बार्कसम्प्रदाय)—श्रीकेशवभट्टाचार्यप्रणीता। श्रीगोविन्दभट्टकृतविवरणोपेता। लघुस्तवराजस्तोत्रं च सव्या(ख्य)म्। खण्डत्रये सम्पूर्णा। काशी ४ ८ ०

५५०८ **क्रियोड्डीशतन्त्र**—भाषाटीका समेत। इन्द्रजिद्विरचित। इस ग्रन्थ में तात्कालिक सिद्धि तथा प्रत्येक प्रकार के मन्त्रादि वर्णित हैं। मुम्बई ० १० ०

५५०९ **गन्धोत्तमानिर्णयतन्त्र**—इसमें मद्य का विवेचन है। मुम्बई ० ८ ०

५५१० **गायत्रीतन्त्र**—भाषाभाष्य समेत। इसमें गायत्री का कवच हृदय रहस्य आदि कितने ही उपयुक्त विषय हैं। मुम्बई ० ८ ०

५५११ **गायत्रीपञ्चाङ्ग**—रफ। रेशमी। मुम्बई ० १२ ०

५५१२ **गायत्रीपञ्चाङ्ग**—इसमें गायत्रीचक्र, कल्पपद्धति, उपनिषद्, गायत्रीतत्त्व, गायत्रीकवच, गायत्रीस्तवराज, गायत्रीपञ्जरस्तोत्र, गायत्रीसहस्रनाम और गायत्रीपटलादि का संग्रह है। मुम्बई १ ० ०

५५१३ **गायत्रीपटल**— मुम्बई ० १ ६

५५१४ **गायत्रीपुरश्चरणपद्धति**—श्रीमच्छंकराचार्य विरचित मूलमात्र। पूना १ ८ ०

५५१५ **गायत्रीपुरश्चरणविधिः**— मुम्बई ० १ ६

५५१६ **गायत्रीपूजापद्धतिः**— बनारस, मुम्बई ० २ ०

५५१७ **गायत्रीमंत्रविवरणम्**—पं० श्रीनागेन्द्रशर्मणा संकलितं तेनैव संशोधितञ्च। रायबरेली ० ३ ०

५५१८ **गायत्रीमन्त्रार्थभास्कर**—अनेक भाष्य तथा विधान सहित अपूर्व ग्रन्थ है। मुम्बई १ ० ०

५५१९ **गायत्रीयमहामन्त्रीय** (बृहद्)—सरयूपारीणशुक्लभाष्यम्। शुक्लश्रीवेणीमाधवशास्त्रिणा रचितम्। काशी ० ६ ०

५५२० **गायत्री व्याख्या**—पं० तारानाथसंकलिता। ० १२ ०

५५२१ **गुप्तसाधन तन्त्र**—पं० बलदेवप्रसाद मिश्र कृत भाषा टीका सहित। इसमें अनेक प्रकार के योगानुकूल षट्कर्म और गर्भ इत्यादि का औषधि प्रयोग है। मुम्बई ० ६ ०

५५२२ **गोपाल पञ्चाङ्ग**—इसमें पटल, पद्धति, सहस्रनाम, कवच, स्तवराज ये पांचों अंग हैं। रेशमी जिल्द। मुम्बई ० १० ०

५५२३ **गोपालपटल**— डाकोर ० ३ ०

५५२४ **गौतमतन्त्र**—महर्षि गौतम प्रणीत। मुंबई १ ८ ०

५५२५ **चतुर्विंशतिगायत्री**—श्रीमद्विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीका सहित। मुम्बई।), मूल स्थूलाक्षर। काशी ० ३ ०

५५२६ **चिद्गगनचन्द्रिका**—Edited by Arthur avalon. Foreign 1 0 0

५५२७ **चौबीसगायत्री**—मूल, मंत्र और २४ मुद्रा समेत । मुम्बई ० २ ०

५५२८ **छात्रहितैषीतन्त्रम्**—श्रीसत्येश्वरानन्दशर्मणा संगृहीतम् । ० २ ०

५५२९ **जन्ममरणविचार**—अमरौघशासन, तंत्रवटधानिका सहित । १ ४ ०

५५३० **जयाख्यसंहिता** (पञ्चरात्रम्)—Edited by Pt. E. Krishnamacharyya. Baroda. 12 0 0

५५३१ **ज्ञानार्णवतन्त्र**—मूल मात्र । पूना १ ४ ०

५५३२ **डाकार्णवः**—बौद्धतन्त्रम् । आङ्गलभूमिका-टिप्पनी-सूचीपत्रादिभिः समलङ्कृतः । आशुतोषकालेजाध्यापक-श्रीनगेन्द्रनारायणचतुर्धुरीण-एम्-ए-पि एच्-डि संस्कृतः । कलकत्ता ५ ० ०

५५३३ **डाकिनीविद्या**—हिप्नोटिज्म शिक्षक । लेखक पं० कन्हैयालाल मिश्र । मुरादाबाद १ ८ ०

५५३४ **तन्त्रशुद्धम्**—भट्टारकश्रीवेदोत्तमप्रणीतम् । मद्रास ० ५ ०

५५३५ **तन्त्रसार**—श्रीमदभिनवगुप्ताचार्यविरचित । काश्मीर २ ८ ०

५५३६ **तन्त्रराजतन्त्रम्**—(Tantrarāja Tantra)—Two Parts with introduction in English by Arthur Avalon. Foreign 11 4 0

5537 Tantrabhidhana—With Bija Nighantu and Mudra Nighantu. A Tantric dictionary edited with a word-index by Taranatha, Vidyaratna, with an introduction in English by Arthur Avalon. Text in original Sanskrit. 2 4 0

५५३८ **तन्त्रालोकः**—अभिनवगुप्तकृतः । श्रीजयरथव्याख्यातः । भगाः १—८, १०, ११ । भागः १—अजिल्द ३॥), भागः २—सजिल्द ३), भागः ३—सजिल्द ५), अजिल्द ४॥), भागः ४—सजिल्द ४), भागः ५—अजिल्द ३॥), भागः ६—अजिल्द ३॥), भागः ७—सजिल्द ४), अजिल्द ३॥), भागः ८—३), भागः १०—अजिल्द ३), सजिल्द ३॥), भागः ११—अजिल्द २)

[Tantrāloka may rightly be called an encyclopaedia of the Idealistic Monism of Kashmir.]

५५३९ **तारातन्त्रम्**—श्रीगिरीशचन्द्रवेदान्ततीर्थसंकलितम् । बंगाल ० ८ ०

५५४० **तारारहस्यतन्त्रम्**—भाषाटीका सहित । तन्त्रशास्त्र का अलभ्य ग्रन्थ । मुरादाबाद २ ० ०

५५४१ **तारारहस्यतन्त्रम्**—ब्रह्मानन्दपरमहंसविरचित टाइप कलकत्ता १ ० ०

५५४२ **त्रिकाण्डसारार्थबोधिनी**— मद्रास १ २ ०

५५४३ **त्रिपुरारहस्य** (माहात्म्यखंड)— काशी ५ ० ०

५५४४ **त्रिपुरारहस्य** (ज्ञानखण्डः)—Edited with Introduction &c by Gopinath Kaviraj M. A. 4 Parts, Allahabd 6 10 0

५५४५ **त्रिपुरासारसमुच्चयः** (तन्त्रशास्त्रम)—श्रीनागभट्टविरचितः श्रीगोविन्दाचार्यकृतव्याख्यया समलंकृतः । कलकत्ता १ ० ०

५५४६ **दत्तात्रेयतन्त्रम्**—मूल दत्तात्रेय विरचित । अहमदाबाद ० ४ ०

५५४७ **दत्तात्रेयतन्त्र**—भाषाटीका समेत । यह औषधि प्रयोग इत्यादि २४ पटलों में वर्णित हैं । मुम्बई ० ६ ०

५५४८ **दत्तात्रेयतन्त्रम्**—भाषाटीका सहितम् । साहित्याचार्यश्रीहरगोविन्दमिश्रेण परिष्कृत्य संशोधितम् । काशी ० ८ ०

५५४९ **दशांगदुर्गा** (सप्तशती)—मूल । रतलाम १ ४ ०

५५५० **दीक्षाप्रकाश**—श्रीजीवनाथ विरचित । बनारस १ ४ ०

५५५१ **दीक्षाप्रकाशिका**—विद्वद्वर्य्य-श्रीविष्णुभट्टेन विरचिता । अष्टांगसिद्धिपञ्चांग-कुलाकुलादिचक्रैश्च सहिता । मुम्बई ० ८ ०

५५५२ **दुर्गाचरित्र**—भाषाकाव्य । लेखक पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र, बी० एस्-सी० । बरेली १ ० ०

५५५३ **दुर्गापाठ**—भाषाटीका सहित । लखनऊ ० ६ ०

५५५४ **श्रीदुर्गाप्रयोगप्रभा**—अर्थात् सार्धनवदुर्गापाठप्रयोगपद्धतिः । श्री गौरीशङ्करशास्त्रिणा प्रणीता । झंग ० २ ०

५५५५ **श्रीदुर्गार्ककल्पद्रुमः**—(सप्तशतीपाठसहितः) संग्रहकर्त्ता जगन्नाथ परशुराम-द्विवेदी सजिल्द । सूरत १ ८ ०

५५५६ **दुर्गासप्तशती**—इसमें प्रतिश्लोक, बीजमन्त्र, प्रयोगविधि, देवीकवच, अर्गला, कीलक, नवार्णविधि, रात्रिसूक्त, सप्तशतीन्यास, दुर्गापाठ, उत्तरन्यास, देवीसूक्त, नवार्णवसन्निवेदन, प्राधानिकरहस्य, वैकृतिरहस्य, मूर्तिरहस्य समेत । ८ पंक्ति की मोटे अक्षर रेशमी जिल्द ग्लेज कागज । मुम्बई १ १० ०

५५५७ **दुर्गासप्तशती**—सम्पूर्ण घटनाओं के मूर्तिमान् चित्रों सहित । मोटे अक्षर । चित्र भी देखने योग्य हैं । खुले पत्रे । मुम्बई २ ० ०

५५५८ **दुर्गासप्तशती**—मोटे अक्षर खुली साँची । मुम्बई १ ० ०

५५५९ **दुर्गासप्तशती** – ३२ पेजी रेशमी गुटका ॥=) खुले पत्रे । मुम्बई ० ८ ०

५५६० **दुर्गासप्तशती**—६४ पेजी रेशमी गुटका छोटे अक्षर । मुम्बई ० ७ ०

५५६१ **दुर्गासप्तशती**—छोटा तावीजी गुटका । मुम्बई ० ५ ०

५५६२ **दुर्गासप्तशती** (चंडीपाठ)—देवीसूक्त रहस्यत्रय इत्यादि सहित स्थूलाक्षर रेशमी पुट्ठा । मुम्बई १ ० ०

५५६३ **दुर्गासप्तशती**—खुले पत्रे । मुम्बई ० १४ ०

५५६४ **दुर्गासप्तशती**—रेशमी पुट्ठा मध्यमाक्षर । मुम्बई ० १२ ०

६५ **दुर्गासप्तशती**—(सादी कागदी मध्यमाक्षरी) ३२ पेजी रेशमी जिल्द । मुम्बई ० ६ ०

५५६६ **दुर्गासप्तशती**—इसमें परमोपयोगी ४८ विषय हैं। सूक्ष्माक्षर ६४ पेजी रेशमी जिल्द। मुम्बई ० ८ ०

५५६७ **दुर्गासप्तशती**—अति स्थूलाक्षर, ग्लेज कागज, खुला पत्रा। मुम्बई २ ० ०

५५६८ **दुर्गासप्तशती**—शान्तनवी टीका समेत। खुले पत्रे। मुम्बई १ १२ ०

५५६९ **दुर्गासप्तशती**—नागोजीभट्टकृत टीका, खुले पत्रे। मुम्बई १ ४ ०

५५७० **दुर्गासप्तशती**—सात टीकाओं सहित। इसमें दुर्गाप्रदीप, गुप्तवती, चतुर्धरी शान्तनवी, नागोजीभट्टी, जगच्चन्द्रिका, दशोद्धारादि ७ टीकाएं हैं। सजिल्द मुम्बई ४ ० ०

५५७१ **दुर्गासप्तशती**—मूलमात्र खुले पत्रे। बनारस ० ६ ०

५५७२ **दुर्गासप्तशती**—छोटा साइज। बनारस ० ६ ०

५५७३ **दुर्गासप्तशती**—खुले पत्रे स्थूलाक्षर। बनारस ० १२ ०

५५७४ **दुर्गासप्तशती**—स्थूलाक्षर भाषाटीका सहित सजिल्द। बनारस १ ० ०

५५७५ **दुर्गासप्तशती**—वायुनन्दनमिश्रसम्पादिता। बनारस ० ४ ०

५५७६ **दुर्गासप्तशती**—भाषाटीका सहित पं० रामेश्वर भट्ट जी अनुवादित, ग्लेज कागज। मुम्बई १ ४ ०

५५७७ **दुर्गासप्तशती**—पद्यात्मक भाषा। अनन्यकविकृत। मुम्बई ० ६ ०

५५७८ **दुर्गोपासनाकल्पद्रुम**—पं० हरिकृष्ण व्यंकटरामसंगृहीत, जिसमें दुर्गा जी के ६० प्रकरण कई एक शास्त्रों से उद्धृत करके अन्त में दुर्गापाठ भी दिया गया है। खुले पत्रे। मुम्बई ५ ० ०

५५७९ **धन्वन्तरितन्त्रशिक्षा**—भाषा टीका सहित। देवादिदेव महादेव प्रणीत। मुम्बई १ ८ ०

५५८० **नवनिधि**—नौ तन्त्र भाषा टीका सहित। मुरादाबाद ० ६ ०

5581 Sri Narada Pancharatram—(नारदपंचरात्र—ज्ञानामृतसार-संहिता—मूल तथा आङ्गल भाषानुवाद) The Jnanamrita Sara Samhita—Text with English translation by Swami Vijnanananda alias Hari Prasanna Chatterji. Allahabad 6 0 0

५५८२ **नित्याषोडशिकार्णवः**—वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गतः। भास्कररायोन्नीतसेतुबन्धाख्यव्याख्यासहितः। अत्र देव्या नित्यपरिचर्याप्रकारास्तत्प्रयोगा मन्त्रोद्धाराश्चान्यप्रसङ्गागतं शास्त्रार्थनिर्णयादिकं सम्यक्तया वर्णितमस्ति। पूना ३ ८ ०

५५८३ **नित्योत्सवः**—आनन्दनाथकृतः। Nityotsava: a supplement to the Paraśurāmakalpasūtra by Umānandanātha: edited by A. Mahadeva Sastry, B. A., 1923. Second revised edition by Swami Trivikrama Tirtha. मुम्बई ५ ० ०

५५८४ **नेत्रतन्त्रम्**—भाग १ सटीकम्। काश्मीर ३ ८ ०

५५८५ **पञ्चाङ्ग-संग्रह**—तत्र महाकालीपञ्चाङ्गं, महालक्ष्मीपञ्चाङ्गं, महासरस्वतीपञ्चाङ्गं च। तर्कतीर्थोपाधिधारिणा श्रीसुरेन्द्रलालगोस्वामिना संस्कृतम्। बनारस

५५८६ **परमार्थसारः**—श्रीमदभिनवगुप्ताचार्यविरचित: श्रीमद्योगराजाचार्यकृत विवृत्युपेत:। मुम्बई २ ८ ०

५५८७ **परात्रिंशका**—अभिनवगुप्तपादकृत विवृत्युपेता। मुम्बई ३ ६ ०

५५८८ **पाद्मसंहिता**—(पञ्चरात्रम्) २ भाग। मद्रास १० २ ०

५५८९ **पारमेश्वरसंहिता** (सव्याख्या)— काञ्ची ११ ४ ०

५५९० Pārānanda Sūtra **परानन्दसूत्रम्**—An ancient Tāntric work of the Hindus in Sūtra form giving details of many practices and rites of a new School of Tantra: edited by Swami Trivikrama Tirtha with a Foreword by B. Bhattacharyya, Ph. D., 1931. 3 0 0

५५९१ **पौष्करसंहिता**—श्री पञ्चरात्रागमे रत्नत्रयान्तर्गता। श्री यदुगिरियतिराजसम्पत्कुमाररामानुजमुनिभिः संस्कृता। मद्रास ५ १० ०

५५९२ **पुरश्चर्यार्णव**—श्री नेपाल महाराजाधिराज प्रतापसिंह सहदेवरचित। मूलमात्र दुष्प्राप्य। १३ ० ०

५५९३ **प्रत्यंगिरापंचांगम्**—सजिल्द। मुम्बई १ ० ०

५५९४ **प्रत्यभिज्ञाहृदयम्**—श्री क्षेमराज विरचित सजिल्द। मुम्बई १ ६ ०

५५९५ **प्रपञ्चसारतन्त्रम्**—शङ्कराचार्यकृतम्। पद्मपादाचार्यकृतविवरणसहितम्। A Tantric work containing the general rules applicable to all the different forms of the Tantric and Vedic Sadhana, and short accounts of each of the different systems, with introduction and full summary of all the chapters in English by Arthur Avalon. Parts 1 & 2 in 2 Vols. Foreign 10 2 0

५५९६ **प्राणतोषिणीतन्त्र**—रामतोषणभट्टाचार्यकृत। कलकत्ता ८ ० ०

५५९७ **प्राणविनिमय**—मेस्मेरिजम-शिक्षक। मुरादाबाद १ ८ ०

५५९८ **श्रीबगलामुखी पञ्चाङ्ग**—मूलमात्र। बनारस ० ४ ०

५५९९ **बड़ा इन्द्रजाल**—चारों भाग। बनारस ० ८ ०

५६०० **बृहत्साबरतन्त्र**—विधानसहित भाषा टीका। मुम्बई ० १२ ०

५६०१ **बृहद् इन्द्रजाल**—(कौतुक रत्नभाण्डागार) भाषा में सचित्र। मुम्बई १ ८ ०

५६०२ **बृहद्ब्रह्मसंहिता**—नारदपंचरात्रान्तर्गता। मूलमात्र। पूना १ १२ ०

५६०३ ब्रह्मसंहिता—जीवगोस्वामि-कृत टीकासहित विष्णुसहस्रनाम—शंकराचार्यकृत टीका सहित। Edited by Arthur Avalon. Foreign 3 6 0

5604 Bharata Shakti—By Sir John Woodroffe. Madras 1 8 0

५६०५ भारद्वाज संहिता (नारदपञ्चरात्र)—टीकासहिता। मुम्बई १ ४ ०

५६०६ श्रीभैरवपद्मावतीकल्पः—मल्लिसेनसूरिकृतः Illustrated with 31 परिशिष्ट's and Gujrati translation. Edited by Prof. K. V. Abhyankar. 17 0 0

५६०७ भैरवीचक्र—भाषा टीका सहित। मुरादाबाद ० १२ ०

५६०८ मन्त्रमहार्णव—मंत्रशास्त्र का महान् ग्रन्थ सम्पूर्ण मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई १८ ० ०

५६०९ मन्त्रमहोदधि सटीक—(६८) यन्त्रों समेत। इसमें गणेशमन्त्र, कालिकामन्त्र, तारामन्त्र, ब्रह्मोपासिततारा, छिन्नमस्ता यक्षिणी, वाराही, धूमावती, शाचिनी, स्वप्नेश्वरी, बाला, त्रिपुरसुन्दरी, अन्नपूर्णेश्वरी, मङ्गलपूर्वकश्रीविद्या, श्रीविद्या का परिवार, हनुमन्मन्त्र, विष्णुमन्त्र, रोगदारिद्र्यनाशकरविमन्त्र, महामृत्युंजयमन्त्र, अभीष्टसिद्धिद, कार्तवीर्यार्जुनमन्त्र, कालरात्रिमन्त्र विधि, कूटमंत्र सब देवों के यन्त्र, नित्यपूजा, नित्यार्चनविधि, पवित्रपूजनार्चन मन्त्रशुद्धि और शान्त्यदि षट्कर्म इत्यादि विषय उत्तम प्रकार से वर्णित हैं। मुम्बई ४ ८ ०

५६१० मन्त्रमहोदधि—नौका टीका सहित बुक साइज। कलकत्ता ३ ० ०

५६११ मन्त्रमुक्तावली—(मन्त्रसंग्रह ≶), भाषाटीका मुम्बई ० ३ ०

५६१२ मन्त्ररत्नमञ्जूषा—श्रीमत्त्रिविक्रम भट्टारकप्रणीत। यह मन्त्र शास्त्र का छोटा सा प्रकरण ग्रंथ है। इसमें १ दीक्षाफल, २ सपर्यापटल, ३ सोमसूर्याग्निपटल, ४ शैवमन्त्रपटल, ५ शक्तिमन्त्रपटल, ६ वैष्णवमन्त्रपटल, ७ पारिप्लवपटल व ८ यन्त्रपटल ये आठ प्रकरण हैं। मुम्बई ० १० ०

५६१३ श्रीमन्त्रराजगुणकल्पमहोदधि—अर्थात् श्रीपञ्चपरमेष्ठिस्तोत्र नमस्कारव्याख्या। ले० जयदयालुशर्मा। बीकानेर ३ ८ ०

५६१४ मन्त्रविद्या—श्रीमहादेवप्रणीत। इसमें मोहन उच्चाटन इत्यादि षट्कर्मयोगिनीसाधन, पशु पक्षि आदि का भाषा ज्ञान है। मुम्बई १ ० ०

5615 Mantra Shastra, An Introduction to—By Mr. S. E. Gopalacharlu, F. T. S. Bombay 0 6 0

५६१६ श्रीमंत्रसारसमुच्चयः—(पुरश्चर्याविधिसहितः) जगन्नाथशर्मणा विरचितः। सूरत १ ८ ०

५६१७ मन्त्रसिद्धिभाण्डागार—भाषाटीका सहित। पं० गौरीशंकरजी शर्माकृत भाषाटीका। मुरादाबाद २ ० ०

५६१८ महात्रिपुरसुन्दरीपूजाकल्पः— मद्रास ० १२ ०

५६१६ महानयप्रकाशः— मद्रास ० ८ ०

५६२० महानिर्वाण तन्त्र—भाषा टीका समेत। इसमें तान्त्रिक उपासना, मूलमन्त्र, कर्मकाण्डादि, आध्यात्मिक तत्त्वादि विषय हैं। सजिल्द। मुम्बई ४ ० ०

५६२१ महानिर्वाण तन्त्र—(पूर्व काण्ड) माहेश्वरभगवत् प्रणीत सटीक टाइप। कलकत्ता ४ ० ०

5622 The Tantra of the Great Liberation (महानिर्वाण-तन्त्र). English translation only by Arthur Avalon. Madras 11 4 0

मूल। श्री हरिहरानन्द कृत व्याख्यासहित। ६ १२ ०

५६२३ महायक्षिणीसाधन—पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषा टीका समेत। इसमें अनेक प्रकार की यक्षिणी साधनादि विधि सब (२२५) विषय हैं। मुम्बई ० १२ ०

५६२४ महार्थमंजरी—नन्दाचार्य विरचित, व्याख्यापरिमल सहित। मुम्बई १ १२ ०

५६२५ महालक्ष्मीपञ्चाङ्ग—(यदि लक्ष्मी देवी को प्रसन्न करना चाहो तो अवश्य देखें) रेशमी जिल्द। मुम्बई ० १० ०

५६२६ मातृकाचक्रविवेकः—स्वतन्त्रानन्दनाथकृतः सटीकः। इलाहाबाद २ ० ०

५६२७ मातृकाभेदतन्त्रम्—संस्कृतभूमिका-टिप्पनी सूचीपत्रादिसमेतम्। कलकत्ता २ ० ०

५६२८ मालिनी विजय तन्त्र— काश्मीर ३ ८ ०

५६२९ मालिनीविजयवार्त्तिकम्—अभिनवगुप्तकृतम्। काश्मीर ३ ० ०

५६३० मालिनीविजयोत्तरतन्त्र—मूलमात्र। काश्मीर ३ ८ ०

५६३१ माहेश्वरीतन्त्र—भाषाटीका समेत। इसमें मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटनादिविधि वर्णित है। मुम्बई ० ३ ०

५६३२ माहेश्वरीतन्त्रम्—श्रीरामेश्वरदत्तशर्मकृतया हिन्दीटीकया विलसितम्। काशी ० २ ०

५६३३ मृगेन्द्रतन्त्रम्— काश्मीर ३ ८ ०

५६३४ मेरुतन्त्र—मूलमात्र। लखनऊ ३ ४ ०

५ ३५ मेरुतन्त्र—तन्त्रों पर प्रायः लोग यह दोष लगाते हैं कि यह वाममत-प्रधान होने से वैदिक लोगों के अनुष्ठान के योग्य नहीं किन्तु इस सर्व श्रेष्ठ मेरुतन्त्र में अनेक वैदिक प्रयोग ऐसे उत्तम हैं कि उक्त दोष कभी नहीं लग सकते। इसमें अनेक अपूर्व अनुष्ठान हैं जो वैदिक तथा तान्त्रिक सभी के उपयोगी हैं। सजिल्द। मुम्बई ७ ० ०

५६३६ यन्त्रचिन्तामणिः—मुरादाबादनिवासि पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषा-टीकोपेतः। मुम्बई ० १२ ०

५६३७ यन्त्र मंत्र तंत्रावली—जिसमें अच्छे अच्छे यंत्र तंत्र और मन्त्रों का अपूर्व संग्रह है। बनारस ० १ ६

५६३८ योगमालातंत्र—पं० वलदेवप्रसादमिश्रकृत भाषाटीका समेत। इसमें अनेक प्रकार के योगानुकूल षट् कर्म और गर्भ इत्यादि का औषधिप्रयोग है। मुम्बई ० ६ ०

५६३९ योगिनीतन्त्र— कलकत्ता ३ ० ०

५६४० योगिनीतंत्र—पं० कन्हैयालालमिश्रकृत भाषाटीका सहित। इसमें भगवती की उपासना, मन्त्र, पुरश्चरण तथा अनुष्ठानविधि इत्यादि विषय भली भाँति वर्णित हैं। सजिल्द। मुम्बई ४ ० ०

५६४१ योगिनीशलक—भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ६ ०

५६४२ योगिनीहृदयदीपिका—वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गतयोगिनीहृदयव्याख्या। अमृतानन्दनाथकृता। Edited with Introduction by Gopinath Kaviraj, M. A. 2 parts. Allahabad. 2 12 0

५६४३ राधाकृष्ण पञ्चांग—इसमें राधिका और श्रीकृष्ण का युगल रूप पटल-पद्धति, कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र, भक्तिमय उपासना है। रेशमी गुटका। मुम्बई ० १२ ०

५६४४ रामपटल—मूल मोटा अक्षर बनारस, मुम्बई ० ४ ०

५६४५ रामपटल—भाषाटीका। वैष्णवों के सब प्रकार के नित्यकर्म में उपयोगी है। मुम्बई ० ६ ०

५६४६ रामपद्धति—मूल मोटा अक्षर मुम्बई ० ६ ०

५६४७ रामपद्धति-रामपटल-सिद्धान्तपटल-चौबीसगायत्री-मन्त्रमुक्तावली—इन पांचों पटलों का एकत्र गुटका चारों संप्रदायी वैष्णवोपयोगी। मुम्बई १ ० ०

५६४८ श्रीरामामृततरङ्गिणी—सुन्दरेशशर्मणा विरचिता। मद्रास ० ८ ०

५६४९ रामार्चनचन्द्रिका—परमहंस मुकुन्दवन शिष्य आनन्दवनप्रणीता पञ्चपटलात्मिका। मुम्बई १ ० ०

५६५० रुद्रयामलतन्त्र—(उत्तरतन्त्र) कलकत्ता ३ ० ०

५६५१ रुद्रयामलतन्त्र—भाषाटीका। मुम्बई ० ८ ०

५६५२ रुद्राक्षधारणविधि—शिवभक्तों के देखने योग्य। भाषाटीका मुम्बई ० २ ०

५६५३ श्रीलक्ष्मीनारायण पञ्चांग—जिसके द्वारा लक्ष्मी और नारायण की उपासना करने से श्रेष्ठ फल मिलता है। यह पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र इन पांचों अंगों का अपूर्व संग्रह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन चारों पदार्थों का अपूर्व लाभदायक है। रेशमी जिल्द। मुम्बई ० १२ ०

५६५४ लघुरामपद्धति—भाषाटीका श्रीमद्रामानुजस्वामिविरचित। चारों सम्प्रदायी वैष्णवोपयोगी। मुम्बई ० ६ ०

५६५५ ललितात्रिशती—शंकराचार्यकृतटीकासहिता। मद्रास ० ८ ०

५६५६ श्रीललितानित्यसपर्यापद्धति— मुम्बई ० ३ ०

लक्ष्मेश्वरीवाक्यानि—श्रीराजानकभास्कराचार्यकृत ० ६ ०

५६५८ वटुकभैरवोपासनाध्याय—(बृहज्ज्योतिषार्णवान्तर्गत) जिसमें सम्पूर्ण भैरवों की उपासना का मन्त्रोद्धार, पुरश्चरणकवच, पूजासहस्रनामस्तवादिका संग्रह है । खुले पत्रे। मुम्बई १ ८ ०

५६५९ वन्ध्यातन्त्र—भाषाटीका समेत । इसमें वन्ध्या स्त्री को सन्तति होने का उपाय भली भांति लिखा गया है । मुम्बई ० ४ ०

५६६० वरिवस्यारहस्यम्—प्रकाशाख्यव्याख्यासंवलितम् । आङ्गलपरिवर्त्तनभूमिकोपेतम् । भासुरानन्दापरनाम्ना श्रीभास्कररायमखिना प्रणीतम् । मद्रास १ ११ ०

Varivasyārahasya—with commentary and English translation, Introduction &c., by Sri Bhāskararāya Makhin. [This is a Tantric work on Srīvidyā].

Madras 1 11 0

५६६१ वर्णबीजप्रकाश—इसमें अकारादि क्रम से शब्द लिख के उनके बीज-वर्ण लिखे हुए हैं और उनकी स्पष्टता के लिए अमुक अमुक वर्णों के एकत्र योग से यह बीज-वर्ण बना हुआ है, यह भी लिखा गया है । यह ग्रन्थ मन्त्रोद्धार करने के लिए बहुत ही उपकारक है । सुन्दर रेशमी जिल्द । मुम्बई २ १२

५६६२ वातूलनाथसूत्र— मुम्बई १ ० ०

५६६३ वाममार्ग—अर्थात् भैरवीचक्र । ० ३ ०

५६६४ विजयाकल्प—ज्योतिषरत्न श्रीनिवासशर्माकृत भाषाटीका सहित ।

रतलाम ० ४ ०

५६६५ विज्ञान और बाजीगरी—बा० हरिकृष्णजौहर द्वारा निर्मित ।

मुम्बई ० ४ ०

५६६६ विज्ञानभैरव—श्रीक्षेमराजाचार्यकृतविवृतिभागोत्तर श्री पं० शिवोपाध्यायकृतोद्योताख्यविवृत्युपेतः । मुम्बई २ ८ ०

५६६७ श्रीविद्यारत्नसूत्राणि—गौडपादकृतानि । शङ्करारण्यकृतव्याख्यासहितानि । Edited with Introduction &c. by Narayana Shastri Khiste.

Allahabad 0 9 0

५६६८ विधानमाला—श्रीनृसिंहभट्टविरचित । पूना ४ ४ ०

५६६९ विष्णुसंहिता— मद्रास २ ८ ०

५६७० वैखानसागमः—मरीचिप्रोक्तः । २ ० ०

5671 Shakti and Shakta—Essays and addresses on the Shakta Tantra Shastra by Sir John Woodroffe. Bound. Madras 12 0 0

5672 Śaktisaṅgama Tantra (शक्तिसंगमतन्त्रम)—A voluminous compendium of the Hindu Tantra comprising four books on Kālī, Tārā, Sundarī, and Chhinnamastā, edited by B. Bhattacharya, Vol. I—Kālīkhaṇḍa. Baroda 2 8

५६७३ शतचराडीयज्ञविधानम्—पं० देवीप्रसादशास्त्रिकृत । चूरू ६ ८ ०

५६७४ शाक्तप्रमोद—दस महाविद्या का पञ्चांग और पांचों देवताओं का पंचांग राजा देवनन्दन द्वारा संगृहीत है । इसमें दस महाविद्या, कुमारी, दुर्गा, शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु इन देवों की पटलपद्धति, कवच, सहस्रनाम स्तवराजस्तोत्रादि, पंचांग, द्वादशाङ्ग, उपासनोपयोगी १८४ विषयों का एकत्र संग्रह यन्त्र सहित है । मूलमात्र सजिल्द । मुम्बई ६ ० ०

५६७५ शारिडल्य संहिता (नारदपाञ्चरात्रसंहितास्वेकतमा)—भक्तिखराड:-व्याकरणाचार्यमीमांसातीर्थफडकेकुलजेनानन्तशास्त्रिणा संशोधिता । द्वितीयभागस्थया बृहद्भूमिकया च संवलिता । २ भागौ । प्रयाग ४ ४ ०

Śāṇḍilya Saṃhitā—Bhakti Khaṇḍa—of Maharshi Śāṇḍilya, edited with Introduction in Sanskrit in the second part, by Ananta Shāstrī Phadke. In 2 parts. [This is one of the नारद-पाञ्चरात्रसंहिताs of the Vaiṣṇavas.]

५६७६ शारदातिलक—मूल । कलकत्ता ३ ० ०

५६७७ शारदातिलकम्—श्रीलक्ष्मणदेशिकेन्द्रविरचितम् । श्रीमद्राघवभट्टकृतपदार्थादर्शव्याख्यासहितम् । काशी ५ ० ०

५६७८ शारदातिलकतन्त्रम्—Edited by Arthur Avalon. Two parts. Foreign 13 8 0

५६७९ शिवसूत्रवार्तिकम्—वरदराजकृत । मुम्बई १ ० ०

५६८० शिवसूत्रवार्तिकम्—भास्करकृतशिवसूत्रवृत्ति तथा स्पन्दकारिकासहितम् । मुम्बई २ ८ ०

५६८१ शिवसूत्रविमर्शिनी—वसुगुप्तस्य सूत्राणि, श्रीक्षेमराजस्य विमर्शिनीटीकोपेतानि, बढ़िया जिल्द । मुम्बई ३ ० ०

५६८२ श्यामारहस्यतन्त्र—पूर्णानन्दगिरि परमहंस परिव्राजक विरचित । कलकत्ता २ ० ०

५६८३ श्यामारहस्यतन्त्र—भाषा टीका सहित सजिल्द । मुम्बई २ ४ ०

5684 Shri Chakra Sambhara (श्रीचक्रसम्भार)—A Buddhist Tantra edited by Kazi Dausamdup with an English translation by Arthur Avalon. Rare. Foreign 10 0 0

५६८५ श्रीतत्त्वचिन्तामणिः—परमहंसपूर्णानन्दकृतः । सटीकः । २ भागौ । भागः १:—(१), भागः २:— कलकत्ता २ ० ०

Critically edited from original manuscripts, with Notes and commentaries by Bhuvanmohan Sankhyatirtha and Chintamani Bhattacharya.

५६८६ **श्री तत्त्वनिधि**—मैसूरराज्याधीशकृष्णराजसंगृहीत । इसमें उपासक देवी चरित्र, श्रीचक्रदेवता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ग्रह तथा वैष्णवनिधि, शैवनिधि, आगम कौतुक इत्यादि अनेक वेद, पुराण, तन्त्र, ज्योतिष, सर्व देवी देवता और ऋषियों के ध्यानादि अपूर्व वर्णित हैं । सजिल्द । मुम्बई ४ ० ०

5687 **श्रीविद्यासपर्यापद्धतिः**—Compiled by Brahmasri N. Subrahmanya Iyer. 1938. Madras 2 0 0

५६८८ **षट्चक्रनिरूपणम्**—(Shatchakra-Nirūpaṇa) and **पादुकापञ्चक** (Pādukāpañchaka) Sanskrit text; second edition revised with variant readings. Foreign 3 6 0

५६८९ **षट्त्रिंशत्तत्त्वसंदोह**—भावोपहार, बोधपंचदशिका, पराप्रवेशिका सव्याख्या । मुम्बई १ ७ ०

५६९० **सनत्कुमार तन्त्र**—सनत्कुमारपुलस्त्य संवाद । मुम्बई ० ३ ०

५६९१ **सन्तानगोपाल**—मन्त्रानुष्ठान पद्धति । मुम्बई ० १ ०

५६९२ **सन्तानगोपालविधान**—इसमें सन्तानगोपालमन्त्र का जपविधान बड़े विस्तार से लिखा गया है । सन्तति के लिए उक्त मन्त्र का अनुष्टान किया जाता है । मुम्बई ० ३ ०

५६९३ **श्री सप्तशती गीता** - (दुर्गा) मन्त्र, अन्वय, हिन्दी मन्त्रार्थ तथा मातृमहिमाप्रकाशिनी टीका सहित । सजिल्द । बनारस १ ० ०

५६९४ **सप्तशतीसर्वस्व**—सटीक, जिसमें कात्यायनी तन्त्रोक्त प्रयोगविधि, शतचंडी-विधान, कवच, अर्गला, कीलक, नवार्णमन्त्रविधि, रात्रिसूक्त न्यास, ध्यानयुक्त १३ अध्याय देवीसूक्त, उत्तरन्यास, सप्तशतीरहस्यत्रय, इत्यादि सम्पूर्ण विषय वर्णित हैं । पं० सरयूप्रसाद-संगृहीत । विलायती जिल्द । लखनऊ २ २ ०

५६९५ **सात्वततन्त्रम्** (वैष्णवतन्त्रम्)—नारायणेन शिवायोपदिष्टं शिवेन नारदाय । काशी १ ८ ०

५६९६ **सात्वत संहिता**— काञ्ची २ २ ०

५६९७ **साधनमाला**—(बौद्धतन्त्रशास्त्रम्) अनेकसूरिरचिता शतत्रयाधिकविषयोपेता । मूलमात्र प्रथम भाग । मुम्बई ५ ० ०

५६९८ **सिद्धशंकरतन्त्र**—भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ६ ०

५६९९ **सिद्धान्तपटल**—भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ४ ०

५७०० **सौभाग्यलक्ष्मीः**—पं० कन्हैयालालमिश्रसंगृहीता भाषाटीकासहिता । मुम्बई ० ८ ०

५७०१ स्तवचिन्तामणि— मुम्बई २ ४ ०

५७०२ स्पन्दकारिका—रामकण्ठाचार्यकृत विवृत्युपेता। मुम्बई २ १२ ०

५७०३ स्पन्दनिर्णय—क्षेमराजकृत With English translation. मुम्बई ४ ० ०

५७०४ स्पन्दसन्दोह—श्रीक्षेमराजाचार्य विरचित। मुम्बई ० ८ ०

५७०५ स्वच्छन्दतन्त्रम्—६ भागों में। भाग १—३॥), भाग २—४), भाग ३—३॥), भाग ४—१), भाग ५ (१) २॥), भाग ५ (२) २॥), भाग ६— काश्मीर ३ ८ ०

५७०६ हंसविलासः—तन्त्रविषयकोऽयं महानिबन्धः। श्रीहंसमिट्ठुकृतः। Edited by Swami Trivikrama Tirtha and M. M. Hathibhai Shastri. Baroda 5 8 0

५७०७ हनुमदुपासना—(सांगोपांग हनुमदाराधन) जिस में पञ्चमुखी, एकादश-मुखी, हनुमत्कवच, हनुमत्सहस्रनाम आदि (३४) विषय हैं। अत्युत्तम रेशमी गुटका २), खुले पत्रे— मुम्बई १ १२ ०

5708 Creation as explained in the Tantra— Calcutta 0 10 0

5709 Garland of Letters (Varṇamālā)—Studies in the Mantra Shastra by Sir John Woodroffe. First attempt made to explain to the English-knowing reader an undoubtedly difficult subject. Bound. Madras 7 8 0

5710 Principles of Tantra (Shivachandra Vidyarnava) —Edited by Arthur Avalon. Text with introduction and commentary Part II. 12 0 0

5711 Sakti or Divine Power, by Sudhendukumar Das, M. A., Ph. D. 3 0 0

5712 Secrets of the Kaula Circle—A tale of Fictitious People. Faithfully recounting strange rites still practised by this cult. Followed by a translation of a very old manuscript on the Science of Breath. By Elizabeth Sharpe. Foreign 3 6 0

5713 The Serpent Power—By Sir John Woodroffe. The Serpent Power is a description and explanation in fuller detail of the "Kundalini Shakti" and the Yoga effected through it, a Subject occupying a pre-eminent

place in the Tantra Shastra. It consists of translation of two Sanskrit works:—1. "Shat Chakra Nirūpaṇa" (description of, and investigation into the six bodily centres) and 2. "Pādukā-Pañchaka" (Five-fold foot-stool of the Guru). To it is appended a translation from the Sanskrit commentary by Kalicharana. To the translation of both the works are added some further explanatory notes by the author. As the works translated are of highly recondite character, and by themselves unintelligible to the English reader, the author has prefaced the translation by a general introduction in which he has endeavoured to give a description and explanation of this form of yoga.

This edition contains also the Sanskrit texts of the works here translated and nine half-tone plates taken from life showing some positions in Kundalini Yoga besides eight original coloured plates of the Chakras. The book is excellently printed on superior paper and is bound in full cloth and gilt. 20 0 0

5714 Tantra Philosophy, General Introduction to—by S. D. Gupta. Calcutta 1 8 0

5715 Vasikarana Tantram or the Arts of Controlling Others—By Swami Premananda Yogi. Madras 3 0 0

5716 World as Power Series—By Sir John Woodroffe, Madras. In the above series of books, Sir John points out with his store of knowledge, that the Hindu philosophy is the most practical on earth, more practical than the young Western Science which is said to make people practical. Science is only beginning to discover the great truth discovered in India centuries ago.

Power as Reality 2/-, Power as Life 2/-, Power as Mind 2/8-, Power as Matter 2/8/-, Power as Causality and Continuity 2/-, Mahamaya (Power as Consciousness). Foreign 5 0 0

नीति-ग्रन्थाः

५७१७ अक्षयनीतिसुधाकर—(श्रीमहाराजकुमारश्रीअक्षयसिंह जी बनेड़ा)। मुम्बई ४ ० ०

५७१८ ईसब्नीतिकथा—२ भागों में १२० कथाओं का संग्रह। मुम्बई ० १२ ०

५७१९ उद्योगप्रारब्धविचार—भाग्य के भरोसे रहना वा उद्यम कर कीर्ति प्राप्त करना इस विषय में अनेक श्रुति-स्मृति-पुराण न्याय-नीति के दृष्टान्तों सहित सिद्धान्त दर्शाया गया है। मुम्बई १ ८ ०

५७२० कलाविलास—दुरंगी दुनिया का रंग ढंग जानना हो, घड़ी दो घड़ी जी बहलाना हो, चालाकों, चोरों, व्यभिचारियों आदि से बचना हो, अपने धन व धर्म की रक्षा करनी हो, संसार व्यवहार के भेदिये बनना हो तो इस २५०० कलाओं के भण्डार को भी मंगा देखिए। मुम्बई १ ८ ०

५७२१ कामन्दकीयनीतिसार—विस्तृताभिनवटीका सहित। कलकत्ता २ ८ ०

५७२२ कामन्दकीय नीतिसार—(महाभारतान्तर्गत) विद्यावारिधि पं० ज्वाला-प्रसादमिश्रकृत भाषाटीका समेत। मुम्बई १ ४ ०

५७२३ कौटलीय अर्थशास्त्र—टी० गणपतिशास्त्रिविरचित व्याख्योपेत। ३ भाग। मद्रास ११ ० ०

५७२४ कौटलीय अर्थशास्त्र—(३-७ अधिकरण) हिन्दी अनुवाद। अनुवादक विद्याभास्कर वेदरत्न प्रो० उदयवीर शास्त्री, न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योगतीर्थ, वेदान्तविशारद। लाहौर २ ८ ०

५७२५ कौटलीय अर्थशास्त्र—महर्षि चाणक्यप्रणीत मूल संस्कृत पाठ तथा शुद्ध सम्पूर्ण हिन्दी अनुवाद सहित। अनुवादक विद्याभास्कर वेदरत्न प्रो० उदयवीर शास्त्री। सजिल्द। लाहौर १० ० ०

५७२६ कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्—संस्कृत सजिल्द। मद्रास ३ ६ ०

५७२७ कौटिल्य अर्थशास्त्र—पदसूची ३ भाग। मद्रास ८ ५ ०

5728 Kautilya's Artha Shastra—Translated into English by Dr. R. Shama Shastri, B. A., with an introductory Note by the late Dr. J. F. Fleet., Ph. D., Revised and Enlarged. Third edition. Bound. Mysore 6 0 0

5729 Kautilya-Studien—Three parts. Von Bernhard Breloer. Leipzig 48 0 0

5730 Kautilya or an Exposition of the Social Ideal and Political Theory—By N. C. Bandyopadhyaya. Calcutta 8 8 0

५७३१ खूबतमाशा—नीति, मन्त्र, शिक्षा आदि शतकों में एक से एक बढ़कर कवित्त आदि छन्दों में नीति विषय उत्तम हैं। मुम्बई १ ० ०

५७३२ चाणक्य कथा—रविनर्तक विरचित। With a Bengali translation by Satisha Charan Law. It gives in a varied form a story which is materially similar to the plot of the famous Sanskrit Drama Mudrarakshasa by Vishakha-datta. कलकत्ता १ ० ०

५७३३ चाणक्य नीति—दोहा और भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ६ ०

५७३४ चाणक्यनीति—भाषा टीका सहित। बनारस ० ४ ०

५७३५ चाणक्यशतकम्— कलकत्ता ० २ ०

५७३६ चाणक्यराजनीति शास्त्रम्— कलकत्ता ० १४ ०

५७३७ ठहरो अर्थात् उपदेशदर्पण—इसमें २००० शिष्ट चुटकले हैं। मुम्बई ० ४ ०

५७३८ तन्त्रोपाख्यानम्— मद्रास ० ६ ०

५७३९ ताजीरात हिन्द—(हिन्दुस्तान का दण्डविधान संग्रह) पं० बलदेवप्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित। अर्थात् फौजदारी मुकद्दमों में किस तरह से अपराधों का दण्ड देना चाहिए इत्यादि। मुम्बई २ ८ ०

५७४० त्रिकाण्डसारार्थबोधिनी—(श्रीविद्यामन्त्रभाष्यात्मिका)। मद्रास १ २ ०

५७४१ दम्पतीवाक्य विलास—जिसमें सब देशान्तरों की यात्रा और अन्धे का सुख पुरुष ने मण्डन किया है स्त्री ने खण्डन किया है। दोहे-चौपाइयों में सुभाषित देखने ही योग्य है। मुम्बई १ ० ०

५७४२ धौम्यनीतिः—(श्रीमहाभारतान्तर्गता) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्रीनीलकण्ठविरचितया व्याख्यया समेता =), भाषा टीका सहित— मुम्बई ० ३ ०

५७४३ नीतिप्रकाशिका—सटिप्पण मूलमात्र, edited with introductory remarks by Gustav Oppert. Text in original Sanskrit. 4 4 0

५७४४ नीतिबोध—पं० भानुदत्त जी कृत। लाहौर ० ३ ०

५७४५ नीतिमञ्जरी—श्रीद्याद्विवेदविरचिता। सभाष्या। सम्पादक सीताराम जयराम जोशी, एम० ए०, साहित्याचार्य। बनारस ४ ८ ०

५७४६ नीतिमनोरमा—सटीक। नीति के श्लोकों की टीका कवित्तों में वर्णित है। मुम्बई ० १० ०

५७४७ नीतिमयूखः—नीलकण्ठभट्टकृतः। मुम्बई १ ४ ०

५७४८ नीतिमयूखः—मूलमात्रः। (भट्टनीलकण्ठकृतभगवन्तभास्करे)। श्री जगन्नाथ रघुनाथ घारपुरे बी० ए०, एल० एल० बी०, इत्यनेन शोधितः। मुम्बई २ ४ ०

५७४९ नीतिरत्नमाला—पञ्चनदीय पं॰ सुदर्शनाचार्य जी द्वारा संगृहीत तथा हिन्दी भाषाटीका सहित। मुम्बई ० १० ०

५७५० नीतिवाक्यामृतम्—सोमदेवसूरिविरचितम्, सटीकम्। मुम्बई १ ० ०

५७५१ नीतिवाक्यामृत—परिशिष्ट। मुम्बई ० ५ ०

५७५२ नीतिवाक्यामृतसटीक— मुम्बई २ ० ०

५७५३ नीतिशतक—सटीक। With a Sanskrit commentary, English translation and Notes. Madras 0 9 0

5754 Bhartri Hari's Niti and Vairagya Satakas—With English translation by M. R. Kale. Bombay 1 12 0

5755 Bhartriharis Niti and Vairagya Satakas—With full commentary, Prose-order, Grammatical and other Notes, and Hindi and English translation. By Balmukund B. A., LL. B. Allahabad 2 0 0

5756 Śatakas of Bhartrihari containing the Niti (नीति), Vairagya (वैराग्य) and Śriṅgāra (शृङ्गार) Śatakas. Madras 0 6 0

5757 Songs from Bhartrihari—By Lal Gopal Mukerji and Bankey Behari. 1938. 0 8 0

५७५८ नीतिसंग्रह—सामयिक श्लोक पद्यटीका समेत। मुम्बई ० ४ ०

५७५९ नीतिसूत्रम्—श्रीचाणक्यविरचित। मुम्बई ० ४ ०

५७६० पञ्चतन्त्र मूलमात्र—(विष्णुशर्म्मा) स्थूलाक्षर। मुम्बई २ ० ०

५७६१ पञ्चतन्त्र—श्रीविष्णुशर्मसंकलित। मुम्बई १ ४ ०

५७६२ पञ्चतन्त्र—(विष्णुशर्म्मा) पं॰ ज्वालाप्रसादमिश्रकृत सुबोध भाषाटीका सहित। मुम्बई ३ ० ०

५७६३ पञ्चतन्त्रम्—विष्णुशर्मसङ्कलितम्। कवितार्किकजैनन्यायविशारद-नृसिंहदेव-शास्त्रिणा दर्शनाचार्येण विरचितया "सुबोधिनी" इत्याख्यया व्याख्यया भूषितम्। लाहौर २ ८ ०

५७६४ पञ्चतन्त्रम्—मन्नालाल 'अभिमन्यु' बी॰ ए॰, पं॰ श्री सीताराम झा ज्यौ॰ आ॰-तीर्थ इत्येताभ्यां कृतया हिन्दी टीकया सहितम्। काशी २ ० ०

५७६५ पञ्चतन्त्रम्—विष्णुशर्मविरचितम्। पं॰ भानुदत्तशास्त्रिप्रणीतटिप्पणीसहितम्। निषिद्धाश्लीलांशवर्जम्। काशी ० ८ ०

५७६६ पंचतंत्र—पं॰ जीवानन्दकृत संस्कृत व्याख्या सहित। कलकत्ता ३ ० ०

५७६७ पंचतंत्र—श्रीविष्णुशर्मविरचितम्। श्रीगुरुप्रसादशास्त्रि-व्याकरणाचार्य-न्यायाचार्य-दर्शनाचार्येण विरचितया 'अभिनवराजलक्ष्म्या' विराजितम्। बनारस ० १२ ०

५७६८ पंचतंत्र—पं॰ जीवारामोपाध्याय विरचित संस्कृत टीका सहित। मुरादाबाद १ १२ ०

५७६९ **पंचतंत्र सम्पूर्ण**—अंग्रेजी टिप्पणी सहित। मुम्बई १ २ ०

५७७० **पंचतन्त्रम्**—(मूलं प्राचीनतमपाठानुसरि) The text in its oldest form edited with an Introduction by Prof. Edgerton, Poona 1 8 0

५७७१ **पंचतंत्रसंग्रहः**—महोपाध्यायशिरोमणिविरुदभाजा के० एल्० व्यासरायशास्त्रिणा विरचितः। पालघाट १ ८ ०

5772 Panchatantra (पञ्चतन्त्र मूल)—Books I to V. Edited with Notes by Dr. Buhler. Bombay 1 2 0

5773 Panchatantra—I-V with Notes by M. S. Apte. 2 4 0

5774 Panchatantra Reconstructed—An attempt to establish the lost original Sanskrit text on the basis of the principal extant versions. By Franklin Edgerton. 2 Volumes. 29 4 0

5775 Panchatantra. Edited by J. Hertel. 4 Vols. The recension called Panchakhyanaka of the Jaina Monk Purṇabhadra edited in Sanskrit. Critical Introduction and list of variants. The text of Purnabhadra and its relation to allied recensions. The oldest recension: the Kashmirian, entitled Tantrakhyayika. The original Sanskrit text, editio minor, reprinted from the critical editio major (Gottingen). Foreign 40 8 0

५७७६ **बुधभूषणम्**—श्रीमच्छम्भुनृपविरचितम्। With introductio and Notes &c. by Prof. H. D. Velankar M. A. Poona 1 8 0

५७७७ **बेकनविचाररत्नावली**—इसमें नीति और शिक्षा परमोपयोगी है। मुम्बई १ ० ०

५७७८ **युक्तिकल्पतरुः**—महाराज श्रीभोजविरचित। कलकत्ता २ ८ ०

५७७९ **राजनीति** (भाषा)—संस्कृत हितोपदेश का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक लल्लूलालजी कवि। लखनऊ ० ५ ०

५७८० **राजनीतिपंचोपाख्यान**—भाषा में विष्णु शर्म्मा के पांच तन्त्रों का हिन्दी अनुवाद। मुम्बई ० १२ ०

५७८१ **राजनीतिरत्नाकर**—श्रीचण्डेश्वर विरचित। कलकत्ता ५ ० ०

५७८२ **राजरहस्य**—(महाराज श्रीदलपतसिंह विरचित) पं० सदानन्दशर्म्मा कृत पदानुगामिनी भाषाटीका से विभूषित। भाषा ग्रन्थ। मुम्बई १ १२ ०

५७८३ लोकोक्तिरत्नप्रभा—रचयिता झंगनिवासी पं० गौरीशङ्करजी शास्त्री । ० ८ ०

५७८४ विचारकुसुमाञ्जलि—पं० जीवाराम उपाध्याय रचित । मुरादाबाद ० १० ०

५७८५ विदुरनीति—श्रीमहाराजधृतराष्ट्र को विदुर का उपदेश प्रश्नों सहित । मुम्बई ० ४ ०

५७८६ विदुरनीति—भाष टीका सहित । बनारस ० ८ ०

५७८७ विदुरनीति और यत्तधर्मप्रश्नोत्तरी—भाषा टीका सहित । मुम्बई ० १४ ०

५१८८ विदुरनीतिनाम्ना लोकप्रसिद्धम्—श्रीमहाभारतरत्नाकरान्तर्गतोद्योगपर्व-सुधाबिन्दुभूतम् । प्रजागरपर्वसुबोधटिप्पनीभिः समेतम् । मुम्बई ० ६ ०

५१८९ विदुरप्रजागर—कृष्णकवि प्रणीत । इसमें राजा धृतराष्ट्र के प्रति राजर्षि विदुर की राजनीति अनेक सुगम छन्दों में वर्णित है । मुम्बई ० ६ ०

5790 Vairagya-Satakam—The hundred verses on Renunciation of Bhartrihari. 0 10 0

५७९१ व्याख्यानकुसुम—म० म० पं० राममिश्रजी शास्त्री के अहिंसा, वेदमहिमा और कुरीति संशोधन पर व्याख्यान । मुरादाबाद ० ४ ०

५७९२ व्याख्यानदिवाकर—सम्पादक पं० कालूराम शास्त्री । दो भाग । इटावा ३ ८ ०

५७९३ व्याख्यानमाला—अर्थात् श्रीमान् स्वामी हंसस्वरूप जी महात्मा के भारतवर्ष के अनेकों प्रतिष्ठित नगरों में दिये हुए सनातन वैदिकधर्म विषयक दश व्याख्यान । मुरादाबाद ० १० ०

५७९४ व्याख्यानमालासंस्कृत—परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी अच्युतानंद संगृहीत । लाहौर ० १२ ०

५७९५ व्याख्यानरत्नमाला—इसमें भारतवर्ष के प्रधान प्रधान व्याख्यानदाताओं के व्याख्यान हैं । मुम्बई २ ० ०

५७९६ व्याख्यानसुधा—पं० दीनदयालु जी के गोरक्षा और वैश्यधर्म पर व्याख्यान । मुरादाबाद ० १ ६

५७९७ शुक्रनीति—भाषाटीका सहित । इसमें राजा, राजपत्नी और राजकुमारों के मुख्य धर्म की रीति और प्रजापालनादि सेना रचना तथा राजप्रबन्ध उत्तम प्रकार का है । मुम्बई २ ८ ०
ग्लेज कागज । लखनऊ ० ८ ०

५७९८ शुक्रनीति—भाषा । अनुवादक पं० महेशदत्त । कलकत्ता २ ८ ०

5799 The Shukra Niti—Translated into English by Benoy Kumar Sarkar. Allahabad 6 0 0

५८०० शुक्रनीतिसार—सटीक ।

५८०१ **श्यैनिकशास्त्रम्**—श्रीरुद्रदेवविरचित। कलकत्ता १ २ ०

Shyainika Shastra—or a book on hawking by Raja Rudradeva of Kumaon, edited with an English translation. Calcutta 1 2 0

५८०२ **संसारदीपक**—धर्म, नीति और व्यवहारसम्बन्धी शास्त्रीय बातों का अपूर्व संग्रह। श्लोक और भाषाटीका सहित। अ० कु० पं० रामचन्द्रशर्मा। मुरादाबाद ० १० ०

५८०३ **समयोचितपद्यमालिका**—नाम प्रासंगिक श्लोक चरणान्त.पातिश्लोकानां संग्रहः। मुम्बई ० ६ ०

५८०४ **समस्यापूर्ति**—अकबर की समस्या पर कवि गंग इत्यादि कवीश्वरों के अपूर्व कवित्त। मुम्बई ० २ ०

५८०५ **सुनीतिकुसुममाला**—सटीक। श्रीमदप्पावाजपेय विरचित। मद्रास ० ६ ०

५८०६ **सूक्तिरत्नहारः**—कलिङ्गराजसूर्यकृता। मद्रास २ ० ०

५८०७ **सूक्तिसुधातरङ्गिणी**—M. P. Oka. 2 parts. पूना १ १२ ०

५८०८ **स्वर्ग का विमान**—महात्माओं की ३२५ अनुभूत शिक्षाओं का संग्रह। मुम्बई ३ ० ०

५८०९ **हितोपदेशः**—पं० श्रीकनकलालशर्मणा सरलसंस्कृतटीकया विभूष्य संशोधितः। काशी १ ४ ०

५८१० **हितोपदेश**—मूलमात्र। पं० नारायणप्रणीत। मोटा अक्षर मुम्बई ।॥), मध्यमाक्षर— बनारस ० ७ ०

५८११ **हितोपदेश**—पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृत भाषाटीका समेत मोटे अक्षर। मुम्बई २ ० ०

५८१२ **हितोपदेश**—(पं० नारायणकृत) पं० रामेश्वरभट्टकृत हिन्दी भाषाटीका सहित। मुम्बई १ ० ०

५८१३ **हितोपदेश**—परिवर्द्धिताभिनवटीका सहित। कलकत्ता २ ८ ०

५८१४ **हितोपदेश**—भाषा। पं० तारादत्त डिपुटी इन्स्पेक्टर विरचित। लखनऊ ० १ ६

५८१५ **हितोपदेश**—पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भागों में सम्पूर्ण। पं० श्री भानुदत्त द्वारा हिन्दी में अनुवादित। लाहौर ० १० ०

५८१६ **हितोपदेश**—पीटरसन साहिब कृत अंग्रेजी टिप्पणी सहित। मुम्बई १ १० ०

5817 Hitopadesha of Nārāyaṇa Pandit—Text with full English translation by B. T. Dravid. Bombay 1 8 0

5818 Hitopadesha—with English Notes and translation by M. R. Kale. 1 12 0

5819 Ausgewahlte Fablen des Hitopadesha—Or the select fables from the Hitopadesha, edited with text and translation by August Boltz. Leipzig 5 4 0

5820 Development of Hindu Polity and Political Theories—By N. C. Bandyopadhyaya. Calcutta 9 8 0

5821 The Evolution of Indian Polity—By R. Shama Shastri, B. A., Ph. D. Containing a connected history o the growth and development of political institutions in India, compiled mainly from the Hindu Shastras. 6 0 0

5822 Hindu Politics and Economics—2 parts. Allahabad 6 0 0

5823 Hindu Polity—A constitutional History of India in Hindu times. By K. P. Jayaswal, M. A. (Oxon.). Calcutta 11 0 0

5824 Ideals of Ancient Hindu Politics and the Artha-śāstra of Kautilya, by B. B. Naik, M. A. 1 8 0

5825 Indo-Aryan Polity—By Praphullachandra Basu, M. A. Foreign 7 8 0

5826 Local Government in Ancient India—By Radhakumud Mukerji, M. A., Ph. D. Foreign 10 0 0

5827 Mauryan Polity—By Mr. V. R. R. Dikshitar. Madras 6 12 0

5828 Moral Stories—By P. V. Jagadisa Iyer. Srirangam 0 6 0

5829 Public Administration in Ancient India—By Pramathanatha Banerjea, M. A., D. Sc. Econ. Foreign 10 0 0

5830 A Study in the Economic condition of Ancient India—By Dr. Pran Nath. Foreign 9 8 0

5831 Studies in Ancient Hindu Polity—Based on the Artha Shastra of Kautilya, by Narendra Nath Law, M. A., B. L. Calcutta 5 0 0

5832 Sovereignty in Ancient Indian Polity—By Prof. H. N. Sinha, M. A., Ph. D. Calcutta 9 0 0

5833 Les Theories Diplomatiques de L'Inde Ancienne et L'Arthaśāstra—Par Kalidas Nag, M. A. de l'universite de Calcutta Docteur de l' universite de Paris. 4 0 0

शिल्पादि विद्याएं

५८३४ काश्यपशिल्पम्—महेश्वरोपदिष्टम् । अस्मिन्ग्रन्थे गृहादिनिर्माणप्रकारः सम्यक् प्रदर्शितः । मुम्बई ३ १ ०

५८३५ देवतामूर्तिप्रकरणम्—मूर्तिनिर्माणोपदेशकः शिल्पशास्त्रविशेषः । सूत्रधार-मण्डन-कृतम् । संस्कृत-टीका-पाठभेदसूचीपत्रादिसमेतं ग्रन्थकृतकृत-रूपमण्डन-तत्सूचीसहितञ्च । अध्यापक-श्रीउपेन्द्रमोहनसांख्यतीर्थसंस्कृतम् । शान्तिनिकेतनस्थविश्वभारत्यध्यापकचर-श्रीहरिदास-मित्र-एम्-ए-लिखिताङ्गलभूमिकया समलंकृतम् । कलकत्ता ५ ० ०

५८३६ धनुर्वेदसंहिता (वसिष्ठमुनिकृत)—पं० दरदयालुस्वामिकृत भाषा टीका सहित । मुम्बई ० १० ०

५८३७ प्रतिमामानलक्षण—मूल श्लोक तिब्बती अनुवाद तथा अंग्रेजी (English) अनुवादसहित । प्रो० फणीन्द्रनाथबोस द्वारा सम्पादित । ४ ० ०

५८३८ बुद्धप्रतिमालक्षणम् (सम्यक्सम्बुद्धभाषितम्)— प्रयाग १ ४ ०

5839 Bhoutika Kalânidhi or the Treasury of Physical Sciences—January to June, 1911, bound in one volume. Madras 4 0 0

5840 Mānasāra **मानसारम्** (वास्तुशास्त्रम्) on Architecture and Sculpture—Sanskrit Text with critical Notes. Edited by Prasanna Kumar Acharya I. E. S., M. A., Ph. D., D. Litt. 25 0 0

५८४१ युक्तिकल्पतरुः—भोजकृतः । कलकत्ता २ ८ ०

५८४२ लघुशिल्पशास्त्रसंग्रह अर्थात् **आयनिरूपण**—भाषाटीका सहित । यह गृहनिर्माण के लिये परमोपयोगी है । मुम्बई ० ६ ०

५८४३ विश्वकर्मप्रकाश—पं० मिहिरचन्द्रकृत भाषा टीका सहित । इसमें वास्तु-पुरुषोत्पत्ति पूजन, भूमिलक्षण, गृहप्रवेश में शकुन, खनन, स्वप्नविधि, भूमिफल, गृहारम्भसमय शुद्धि, ध्वजादि आयफल, देवादिकों के स्थानों का निर्णय, ध्रुवादि गृहभेद, स्तम्भप्रमाणादि, शंकुशिलान्यास, प्रासादनिर्णयादि, अपूर्व विषय वर्णित हैं । खुले पत्रे । मुम्बई १ ८ ०

५८४४ विश्वकर्मविद्याप्रकाश—रविदत्तशास्त्रिकृत भाषाटीका सहित देवालय तथा मकानादि बांधने की तथा लाग्निक ग्रहादि शुभाशुभ विचार से घर बनाने की विधि । मुम्बई ० ६ ०

8545 Vishnudharmottara—By Dr. Stella Kramrisch, Ph. D., second and revised edition. Contains the oldest

and most exhaustive treatise on ancient Indian painting, its technique, subject-matter and form. Calcutta 3 0 0

५२४६ शिल्परत्नम्—कुमारकृतम् । २ भाग । मद्रास ५ ४ ०

५८४७ शिल्पशास्त्र—मूल तथा अङ्गरेजी अनुवाद सहित । (Critically edited with English translation by Prof. Phanindra Nath Bose, M. A.) 2 8 0

५८४८ समराङ्गणसूत्रधारः—भोजकृत: It is a work on architecture, townplanning, and engineering, by King Bhoja of Dhara (11th. century) edited by Mahamahopadhyaya T. Ganapati Shastri, Ph. D. Illustrated. 2 Vols. 1924-1925. 10 0 0

5849 A Dictionary of Hindu Architecture—By P. K. Acharya. 20 0 0

5850 Hindu Achievements in Exact Sciences—By Prof. Benoy Kumar Sarkar. Foreign 3 0 0

5851 Hindu Materialism and Natural Sciences—A study in the utilization of the Earth, Minerals, Plants and Animals. Allahabad 8 0 0

5852 Hochasiatische Kunst—Von. Dr. Leonhard Adam. Foreign 9 0 0

5853 Indian Architecture according to Mānasāra-Silpaśāstra. By Prasanna Kumar Acharya, I. E. S., M. A. Ph. D., D. Lit. 8 0 0

5854 Indian Images—Part I. The Brahmanic Iconography based on Genetic, Comparative and Synthetic Principles. By Brindaban C. Bhattacharya, M. A., F. R. S. G. S. Calcutta 8 0 0

5855 Indische Plastik—Von William Cohn. Foreign 9 0 0

5856 Indische Reiseskizzen—Von Richard Garbe. Foreign 5 0 0

5757 Principles of Indian Shilpa Shastra with text of मयसार—By Dr. P. N. Bose. Lahore 3 8

5858 South Indian Shrines—By P. V. Jagadisha Ayyar. Illustrated. Revised and enlarged. Madras 6 0 0

5859 Survivals of Sasanian and Manichaean Art in Persian Painting—By Sir Thomas W. Arnold, C. I. E., Litt. D. Foreign 10 8 0

5860 Work and Worship—By James H. Cousins. Madras 2 0 0

संगीत-शास्त्र

५८६१ **अनुभवरस**—हीरासखीकृत। इस ग्रन्थ में वृन्दावनविहारी आनन्दकन्द कृष्ण जी की अनेक परम मनोहर लीलाएं यथाक्रम रागरागनियों में वर्णित हैं। सजिल्द। मुम्बई २ ८ ०

५८६२ **अनुरागप्रकाश**— मुम्बई ८ ० ०

५८६३ **अनुरागरस**—नारायणस्वामिकृत। मुम्बई ० ३ ०

५८६४ **अनेकसंग्रह**—सब राग-रागनियों के स्वरताल भेद ज्योतिष इत्यादि समस्त वाङ्मय इस एक ही पुस्तक में लिखा है। ३ ० ०

५८६५ **अनूपसंगीतविलास-अनूपसंगीतरत्नाकर-अनूपसंगीतांकुशः**-संस्कृत। ३ १२ ०

५८६६ **अभिनवतालमञ्जरी**—संस्कृत। ० ६ ०

५८६७ **अभिनवरागमञ्जरी**—संस्कृत। ० १० ०

५८६८ **अमृत की बूँद**—इसमें परम ललित उत्तमोत्तम गाने की अनेक चीजें हैं। मुम्बई ० १ ०

५८६९ **अष्टोत्तरशतकताललक्षणम्**—मुम्बई ० ६ ०

५८७० **आदर्शगीतावली**—जीवारामोपाध्यायकृत। मुरादाबाद ० ६ ०

५८७१ **आनन्दगान**— मुम्बई ० ५ ०

५८७२ **आनन्दसागर**—भजन, ग़ज़ल, ठुमरी, खेमटा, भैरवी, लावनी, दादरा, होली, बारहमासा आदि अनेक रागरागनियों का अपूर्व संग्रह है। संग्रहकर्त्ता हरिनाथव्यास। काशी ० ४ ०

५८७३ **कुचेलोपाख्यानम् अजामिलोपाख्यानं च**—By H. H. Svati Sri Rāma Varma Maharaja. Madras 0 4 0

५८७४ **कजरीरागसागर**— मुम्बई ० २ ६

५८७५ **कीर्तनानि**—सदाशिवब्रह्मेन्द्रविरचितानि। मद्रास ० ४ ०

५८७६ **गजलसंग्रह**—५४ कवियों की ३६५ के लगभग गाने योग्य गजलों का संग्रह। मुम्बई ० ८ ०

५८७७ **गानस्तवमञ्जरी**—मूलमात्र (गोपिकागीत)। मद्रास ० २ ६

५८७८ **गुलचमन बेनजीर**—अर्थात् हिन्दी भाषा-रसिकों के लिये उर्दू के दीवान नजीर से चुन चुन कर ४ विषयों में गाने लायक उम्दा उम्दा गजलों का संग्रह किया गया है।

मुम्बई ।।=), गुलबहार—अर्थात् अगसी इलावनी ख्याल तुर्रा । मुम्बई ० ४ ०

५८७९ गोपीचन्द भरथरी— मुम्बई ० २ ६

५८८० ग्रामोफोन सङ्गीत (हिन्दी)—प्रो० नारायण गणेश व्यासकृत। मु. ० ८ ०

५८८१ चत्वारिंशच्छतराग-निरूपणम्—संस्कृत। ० ६ ०

५८८२ चौतालचन्द्रिका— मुम्बई ० ५ ०

५८८३ चौतालफागसंग्रह—इसमें चौताल ६६, धमारी ३६, बेकबारा १०, मरलाल ५, बैसवारा ६, लेज ३, होरी ३६, इत्यादि रसिक जनों के विनोदार्थ नूतन ढंग से निर्माण किया गया है। मुम्बई ० ७ ०

५८८४ जयमतमञ्जरी—इसमें नानाप्रकार के कवित्त, सवैया, प्रभाती, सोरठा, काफी, सारग, चलन, सिधला, गजल आदि अनेक प्रकार की गाने की चीजों का संग्रह है। चिकना कागज सजिल्द। मुम्बई १ ० ०

५८८५ ज्ञानानन्दरत्नाकर—प्रथम भाग नाथूराम जिनभक्तकृत। इसमें उत्तमोत्तम ज्ञानवर्द्धक भजन हैं। २ भागों में। मुम्बई १ ० ०

5886 Tāṇḍava-Lakṣaṇam—or the fundamentals of ancient Hindu Dancing by Bijayeti Venkata Narayana Swami Naidu, M. A., Ph. D. 12 0 0

५८८७ तानसंग्रह—२ भाग। लेखक और प्रकाशक—श्रीकृष्णनारायण रातांजनकर, बी० ए०। मुम्बई ४ ८ ०

५८८८ दत्तिलम्—दत्तिलमुनिकृतम्। मद्रास ० ४ ०

५८८९ नटनागरविनोद—श्रीयुत रत्नसिंहजीकृत कवित्त और सवैयों में। मुम्बई ० ८ ०

५८९० नवरत्नरासविलास—इसमें कृष्णजी की अनेक प्रकार की रासलीलाएं हैं। मुम्बई १ ० ०

५८९१ नागरसमुच्चय—नागरीदासकृत सजिल्द। मुम्बई २ ० ०

५८९२ निर्भयविलास—भगवद्भक्तों के हितार्थ अनूठे गाने लायक पद। मुम्बई १ ८ ०

५८९३ प्राथमिक आलापतान—प्रो० शंकर गणेशव्यास कृत। २ भाग। मुम्बई १ ४ ०

५८९४ प्राथमिकसंगीत—प्रो० शंकर गणेशव्यासकृत। २भाग। मु० १ ४ ०

५८९५ बंसीमञ्जरी—४ भाग ४ ८ ०

५८९६ बृहद्देशी—Of Mātaṅgamuni. Madras 1 8 0

५८९७ भजनभक्तिप्रकाशिका—भक्ति आदि के भजन। मुम्बई ० ४ ०

५८९८ मनरंजनसंग्रह— मुम्बई ० ८ ०

५८९९ मृदङ्ग-तबलावादनपद्धति—लेखक पं० गुरुदेवजी पटवर्धन (भाषा में)। ० १० ०

5900 The Mela-Rāga-Mālikā—of Mahāvaidyanātha-śivan of vaiyaic-ceri the famous South Indian Singer, comprising the Seventy-two Mela-rāgas extant in Karnataka Music. Edited by Pt. S. Subrahmanya Sastri, F. T. S., 1937. Madras 2 0 0

५६०१ युगलरसिकविनोद— मुम्बई ० ८ ०

५६०२ रघुराजविलास—महाराजा रघुराजसिंहजूकृत। मुम्बई ० ८ ०

५६०३ रस की चषक—पं० दत्तराम चौबेकृत। मुम्बई ० २ ०

५६०४ रसतरंग—कृष्ण गढ़ महाराज प्रणीत। मुम्बई ० १० ०

५६०५ रसरंगप्रकाश— मुम्बई ० ५ ०

५६०६ श्रीमद्रागकल्पद्रुमांकुर— संस्कृत ० ६ ०

५६०७ रागचन्द्रिका— ० ६ ०

५६०८ रागतरंगिणी—रागतत्त्वबोध—रागमञ्जरी—संस्कृत। ० १० ०

५६०९ रागपयोनिधि— मुम्बई ० ६ ०

५६१० रागपरिचय (हिन्दी)—नारायण गणेशव्यास कृत। मुम्बई ० २ ०

५६११ रागमाला—संस्कृत। ० ६ ०

५६१२ रागरत्नाकर—भक्तचिन्तामणि रागमाला सहित जिसमें अति चटकीले, २,००० पदों का संग्रह है। छः राग ३६ रागनियों में भजन गाने का अति उत्तम ग्रन्थ है। सजिल्द। मुम्बई ४ ० ०

५६१३ रागलक्षणम्—संस्कृत। ० १० ०

५६१४ रागलक्षणगीतमालिका—२ भाग। भाषा। पं० फिरोझ फ्रामजी कृत। पूना ४ ० ०

५६१५ रागविज्ञान—विनायक नारायण पटवर्धन कृत, भाषा में; भाग १—४। पूना ६ ० ०

५६१६ राग विबोध (संस्कृत)—सुन्दर जिल्द सहित। लाहौर ५ ८ ०

५६१७ राजस्थानी गीत—कुँवर पद्मसिंह यादव रचित। इटावा ० २ ०

५६१८ रामकलेवा—(रहस्यग्रन्थ) मुम्बई ० २ ०

५६१९ श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्—संस्कृत। १ ४ ०

५९२० वसन्त फागसंग्रह— मुम्बई ० ८ ०

५९२१ वीणा प्रकाश— लखनऊ ० ६ ०

५९२२ शंकरीसंगीतम्—जयनारायण विरचित संस्कृत। १ ० ०

५६२३ सङ्गीतकृतयः—Of H. H. Svāti Srī Rama Varma Mahārāja Madras 1 0 0

५६२४ संगीतगंगाधरम्—श्री नंजराजकविविरचितम्। बलगाम १ ० ०

५६२५ संगीत गोपीचन्द बड़ा—बालकरामकृत। मुम्बई २ ० ०

५६२६ संगीत गोपीचन्द भरथरी। मुम्बई ० ३ ०

५६२७ संगीत ध्रुवचरित्र मुम्बई ० ५ ०

५६२८ संगीतपारिजातः—अहोबलकृतः। कलकत्ता १ ८ ०

५६२९ संगीतप्रह्लादचरित्र— मुम्बई ० ४ ०

५६३० संगीत बालप्रकाश—प्रथम भाग। भाषा। पं० विष्णुदिगम्बर जी विरचित
पूना ० १० ०

५६३१ संगीतबालबोध—प्रथमभाग। भाषा। लेखक पं० विष्णुदिगंबर ० १५ ०

५६३२ संगीतमकरन्द (नारदकृत)—Edited by M. R. Telang.
मुम्बई २ ० ०

५६३३ सङ्गीतरत्नाकरः—श्रीशार्ङ्गदेवकृतश्चतुरकल्लिनाथविरचितटीकासमेतः। २
पूना १० ४ ०
भागौ।

५६३४ संगीतरत्नाकर—इसमें समय समय के रागों का संग्रह है। मुम्बई ० ७ ०

५६३५ संगीतरागकल्पद्रुम—स्वर्गीय कृष्णानन्दरागसागर विरचित। २ भाग।
२५ ० ०

मुम्बई ० ७ ०

५६३६ संगीतलहरी—

५६३७ संगीतवृन्दावन—प्रो० शंकरगणेश व्यास कृत। मुम्बई ० ५ ०

५८३८ संगीत व्यासकृति (हिन्दी)—प्रो० शंकर गणेश व्यास कृत। २ भाग।
मुम्बई १ ८ ०

५६३९ संगीतसमयसारः—Of Saṅgitākara Pārśvadeva.
मद्रास १ २ ०

५६४० सङ्गीतसमुच्चय—श्री शिवेन्द्रवसु द्वारा सम्पादित। प्रथम भाग।
काशी २ ८ ०

४ ० ०

५६४१ संगीतसागर—भाषा में। प्रभूलालगर्ग कृत।
० १० ०

५६४२ संगीतसुधाकर—संस्कृत।
बम्बई २ ० ०

५६४३ संगीतसुधासागर—

५६४४ संगीतसुधानिधि—३ भागों में चुनी हुई गजलों का संग्रह मुम्बई ० १० ०

५६४५ संग्रहचूडामणिः—गोविन्दकृतः। A treatise on Music.
मद्रास ६ ० ०
Printed for the first time.

मुम्बई ० १२ ०

५६४६ सदाबहार—४ भाग सम्पूर्ण।
० ६ ०

५६४७ सद्रागचन्द्रोदय—संस्कृत।

५६४८ सनातनभजनदीपिका—पं० भगवानदास जा कृत। इसमें धर्मसम्बन्धी
मुम्बई ० ८ ०
अति सुन्दर भजनों का संग्रह है।

लखनऊ ० १२ ०

५६४९ साईं के सौ ख्याल—मुंशी गेंदनलालकृत।

५९५० सितारदर्पण—(सितार बजाने की रीति) मुम्बई ० ७ ०
५९५१ सितारमार्ग—श्रीपदबन्दोपाध्यायकृत। २ ८ ०
५९५२ सितारवादन—प्रो० शंकर गणेश व्यास कृत। २ भाग। मुम्बई १ ४ ०
५९५३ सुगमरागमाला—हिन्दी ० ६ ०
५९५४ सूरसागर—सूरदासजीकृत सम्पूर्ण। भागवत बारहों स्कन्ध विविध प्रकार की राग रागनियों में। सजिल्द चिकना कागज। मुम्बई ६ ० ०
५९५५ स्वरतालसमूह—(सितार का पुस्तक)। मुम्बई १ ४ ०
५९५६ स्वरमेलकलानिधिः—By Rāmāmātya Pandit. मुम्बई ० ६ ०
५९५७ हरिरसमाला—(भजन) पं० हरिभक्त पन्नालाल वैद्यकृत मुम्बई ० ५ ०
५९५८ हारमोनियम मास्टर— लखनऊ ३ ० ०
५९५९ हृदयकौतुकम्-हृदयप्रकाशः—संस्कृत। ० १० ०
५९६० होलीचौतालसंग्रह—दो भागों में। मुम्बई ० ६ ०
5961 Hindi Folk-Songs—By A. G. Sherriff I. C. S. Allahabad 1 0 0
5962 The Music of Hindostan—written into English by A. H. Fox Strangways. 15 0 0
5963 The Music of India—By Herbert A. Popley, with 12 illustrations. Paper cover. London 1 12 0
5964 Nritanjali—An Introduction to Hindu Dancing. By Sri Ragini. Bombay 3 8 0
5965 22 Srutis of Indian Music-By M. K. Telang. Poona 0 8 0

आयुर्वेद-ग्रन्थाः

५९६६ अगदतंत्रप्रकाश—राजवैद्य गदाधरजी संगृहीत। प्लेग के कारण, लक्षण और उपाय। ० २ ६
५९६७ अजीर्णतिमिरभास्कर—हिन्दी ० ६ ०
५९६८ अजीर्णमञ्जरी—भाषा टीका सहित ० ४ ०
५९६९ अंजननिदान—मूल ≈), भाषा टीका— ० १० ०
५९७० अनंगतरंग—(रतिरहस्य) कामविषयक ग्रंथ, भाषा टीका सहित। २ ८ ०
५९७१ अनंगरंग—कल्याणमल्लविरचित कामशास्त्र ग्रन्थ। मूल। खंडित अंश सब पूरे कर दिए गये हैं। १ ० ०
5972 Anang Rang—Eng. trans. 4 0 0

५९७३ **अनुपानदर्पण**—भाषा टीका समेत । रस-धातु बनाने की क्रिया तथा रोगों पर औषधों में क्या क्या अनुपान देना चाहिये, यह सब वर्णित है । सजिल्द । १ ० ०

५९७४ **अनुपान विधि** ।≈), **अनुभूतयोग**—रसायन शास्त्री श्यामसुन्दराचार्य विरचित । ० १० ०

५९७५ **अनुभूतचिकित्सासागर**—हिन्दी । पं० गंगाप्रसाद त्रिपाठी विरचित । परीक्षित नुसखों का अपूर्व संग्रह । २ भाग में सम्पूर्ण । सजिल्द । ६ ८ ०

५९७६ **अनुभूतयोगावली**—हिन्दी । ० १२ ०

५९७७ **अभिनवनिघंटु**—दत्तराम चौबे कृत भाषाटीका आयुर्वेदिक द्रव्याभिधान नामक प्रथम भाग । ३ ० ०

५९७८ **अभिनवनिघंटु**—अर्थात् यूनानी द्रव्यगुण संग्रह नामक द्वितीय भाग । सजिल्द । ३ ८ ०

५९७९ **अमरविनोद भाषा**— ० ३ ६

५९८० **अमृतपान**— ० ४ ०

५९८१ **अमृतसागर**—हिन्दी-इसमें सब रोगों का वर्णन और यंत्र दिये गये हैं । ग्लेज कागज ३), तथा रफ कागज— २ ८ ०

५९८२ **अर्कप्रकाश**—(रावणकृत) भाषाटीका सहित । इसमें नाना प्रकार के यन्त्रों से अर्क खींचना और उनके गुण वर्णित हैं । छापा मुम्बई । ग्लेज कागज १।।), तथा लखनऊ ० १२ ०

५९८३ **अर्शरोगचिकित्सा**—(**बवासीर**) । ० ८ ०

५९८४ **अलौकिकचिकित्साविज्ञान**—हिन्दी । १ ० ०

५९८५ **अश्ववैद्यक**—जयदत्त सूरि प्रणीत, नकुल-रचित अश्वचिकित्सा सहित । कलकत्ता स्थूलाक्षर ३।।।), सूक्ष्माक्षर— १ ८ ०

5986 Ashva Shastra (अश्वशास्त्रम्) Or the Science of Horses—By Hema Suri, a Jain author of the 14th. century A. D. translated from the original sanskrit text by V. Vijaya Raghavacharya Epigraphist. Edited with 153 illustrations of horses of all kinds. Madras 16 0 0

५९८७ **अष्टाङ्गशारीरम्**—आर्यवैद्यशारीरग्रन्थः । संस्कृतसंपूर्णश्च । पि० एस्० वारियर-इति विख्यातेन वराहचैत्यसदनाख्यपरंपरावैद्यकुलजातेन वैद्यवरेण प्रणीतः ।

[A complete work on Anatomy & Physiology in Sanskrit verse—Being a revision & enlargement of the ancient Sanskrit works on the subject. A Sanskrit commentary is given wherever the text is doubtful. English equivalent to the Sanskrit technical word is also supplied in the foot-notes.] Madras. 12 0 0

५९८८ **अष्टाङ्गसंग्रहः**—इन्दुव्याख्यासहितः। सम्पूर्ण ३ भाग। मद्रास, छपता है।

५९८९ **अष्टाङ्गसंग्रह** (शारीरस्थान)—वाग्भटकृत। इन्दुकृतटीका सहित सचित्र। ३ ० ०

५९९० **अष्टाङ्गहृदयम्**—मूलमात्र, अतिस्थूलाक्षर। सजिल्द। मुम्बई ४ ० ०

५९९१ **अष्टाङ्गहृदयम्**—मूलमात्र। छापा मुम्बई। शब्दकोष सहित। सजिल्द गुटका। १ १२ ०

५९९२ **अष्टाङ्गहृदयम्**—मूलमात्र छापा। कलकत्ता ३ ० ०

५९९३ **अष्टाङ्गहृदयम्**—श्रीमदरुणदत्तप्रणीतया सर्वांगसुन्दराख्यया व्याख्यया समलंकृतम्। सजिल्द ७ ० ०

५९९४ **अष्टांगहृदय**—सूत्रस्थान, सर्वाङ्गसुन्दरी तथा पदार्थचन्द्रिका संस्कृत टीकाओं समेत। सटिप्पण ६ ० ०

५९९५ **अष्टाङ्गहृदय**—भाषाटीका सहित। सजिल्द १० ० ०

५९९६ **अष्टाङ्गहृदय**—सूत्रस्थान भा. टी. ३ ० ०

5997 Aṣṭāṅgahṛdaya of Vagbhata—Translated into German by Louis Hilgenberg and Willibald Kirfel. Part I. Foreign 6 0 0

५९९८ **अष्टांगहृदयकोष**—विविधभाषात्मक हृदयप्रकाशिका नामक व्याख्या सहित। सजिल्द ८ ० ०

५९९९ **आकृतिनिदान**—ले० जर्मनी के प्रसिद्ध जलचिकित्सक डा० लूई कूने। सम्पादक—रामदास गौड़ एम्० ए०। जिस लूई कूने के आविष्कारों को आज संसार आश्चर्य दृष्टि से देखता है, उसी की बनाई The Science of facial expression का यह हिन्दी अनुवाद है। लगभग ६० चित्र। चित्रों के दर्शन मात्र से ही बीमारी का पता लग जाता है। पुस्तक समझकर पढ़ने से और चित्रों को ध्यानपूर्वक देखने से ही मनुष्य मामूली डाक्टर का अनुभव सहज ही प्राप्त कर लेता है। अजिल्द १ ४ ०

६००० **आँखों के साधारण रोग**—लेखक श्रीयुत डॉ० यादवजी हंसराज जी वैद्य, डी० ओ० एम्० एस०, एल० एम० एस०। इसमें आँखों में होने वाले रोगों के निदान, सरल और अनुभूत चिकित्सा, आंखों की रक्षा और चश्मे के नम्बर आदि के सम्बन्ध में बहुत ही उपयोगी जानकारी दी गई है। आँख के फूले पर रंग चढ़ाना और आँख का नया तिल बनाना आदि कितनी ही अद्भुत बातें इसमें लिखी गई हैं। १ ० ०

६००१ **आत्मसर्वस्व** (अपने अनुभूत प्रयोग)—पं० भागीरथ स्वामी कृत। हिन्दी में। ३ भाग। ५ ० ०

६००२ **आदिशास्त्र**—भाषाटीका। कन्या और पुरुष का लक्षण, कौन कौन प्रकार से विवाह करना और रोगों की दवा आदि का वर्णन ० १४ ०

६००३ **आयुर्विज्ञान**—हिन्दी। ० ४ ०

६००४ **आयुर्वेदचिंतामणि**—भाषाटीका सहित २ ८ ०

६००५ **आयुर्वेददर्शनम्**—राजवैद्य पं० नारायणदत्त त्रिपाठी। छप रहा है।

६००६ **आयुर्वेदनिदानसमीक्षा**— ० २ ०

६००७ **आयुर्वेदप्रकाश**—मूल। श्रीमाधवविरचित। सजिल्द। २ ४ ०

६००८ **आयुर्वेद महत्त्व**—वैद्य शालिग्राम जी कृत १ ० ०

६००९ **आयुर्वेदसुषेणसंहिता**—भाषाटीका। औषधिवर्ग, धान्यवर्ग, पयोवर्ग इत्यादिकों के गुण दोष वर्णित हैं। सजिल्द। १ ४ ०

६०१० **आयुर्वेदसूत्रम्**—राजवैद्य पं० रामप्रसाद विरचित स्वकृत संस्कृत तथा भाषा टीका सहित। ० ८ ०

६०११ **आयुर्वेदसूत्रम्**—योगानन्दनाथ कृत संस्कृत भाष्य समेत। नवीन संस्करण मद्रास २ ० ०

६०१२ **आयुर्वेदीय खनिज विज्ञान**—(रसगन्धात्मक) ले० रसायणाचार्य कविराज प्रतापसिंह जी। अजिल्द २॥), सजिल्द— ३ ० ०

६०१३ **आयुर्वेदीय नावनीतकम्**—१७०० वर्ष का प्राचीन चिकित्सा ग्रन्थ है। जिल्द विलायत के नमूने की बहुत पुष्ट बँधवाई गई है। कागज छपाई अतीव सुन्दर। मूल्य साधारण संस्करण ३), तथा राजसंस्करण ५ ० ०

६०१४ **आयुर्वेदीयविश्वकोष**—सजिल्द। २ भाग। १२ ४ ०

६०१५ **आरोग्यदिग्दर्शन**—महात्मा गांधी विरचित। ० ७ ०

६०१६ **आरोग्यविधान**—हिन्दी ० ५ ०

६०१७ **आरोग्य शास्त्र**—आचार्य चतुरसेन कृत। ४०० से ऊपर चित्र। २० अध्याय २५० प्रकरण। १५०० से अधिक विषय। अपने विषय का पहला और सर्वगुण-सम्पन्न ग्रन्थ। हिन्दी में इस विषय का ऐसा बृहत्काय ग्रन्थ आज तक कहीं देखने में नहीं आया। हर एक गृहस्थ का आभूषण बनने योग्य। सजिल्द १२ ० ०

६०१८ **आरोग्यशास्त्र**—ले० कवि० श्रीहरदयालवैद्य वाचस्पति १ ० ०

६०१९ **आरोग्यशिक्षा**—(मुरलीधर) हिन्दी ० ७ ०

६०२० **आरोग्यसाधन**—हिन्दी ० ५ ०

६०२१ **आरोग्यसूत्रावली**—कविराज प्रतापसिंह कृत ० ६ ०

६०२२ **आसवविज्ञान**—हिन्दी १ ० ०

६०२३ **आसवारिष्टसंग्रह**—जगदीशप्रसाद गर्ग कृत भा० टी० १ ४ ०

६०२४ **बृहत् आसव अरिष्टसंग्रह**—कृष्णप्रसाद त्रिवेदी १ १२ ०

६०२५ **आहारविज्ञान**—हिन्दी २ ० ०

६०२६ **आहार शास्त्र**—जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल। २ ० ०

६०२७ **आहार, संयम और स्वास्थ्य**— १ ८ ०

६०२८ **बृहत् इलाजुलगुर्बा**—हकीम गुलाम इमाम कृत यूनानी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद। सजिल्द २ ० ०

६०२९ **इलाजुलगुर्बा**—पं० प्यारेलालजी द्वारा हिन्दी भाषा में अनुवादित। लखनऊ १ ० ०

६०३० **उपयोगी चिकित्सा**—प्रोफेसर कविराज पं० धर्मानन्द जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य विरचित हिन्दी सजिल्द १ ८ ०

६०३१ **उपदंशचिकित्सासंग्रह**—पं० गणेशदत्त वैद्यशास्त्री कृत भाषा टीका। ० १० ०

६०३२ **उपवासचिकित्सा**—उपवास द्वारा सब रोगों के नष्ट होने के उपाय हिन्दी। नवीन परिवर्द्धित संस्करण १ २ ०

६०३३ **उपदंशतिमिर (गर्मी) नाशक**—हिन्दी ० २ ०

६०३४ **उपवन विनोद** (वृक्षायुर्वेद)—A Sanskrit treatise on Arbori-Horticulture, with English translation by Girija-Prasanna Majumdar, M. Sc., B. L. 2 8 0

६०३५ **ऐलोपैथिक मेटीरिया मेडिका**—हिन्दी ६ ० ०

६०३६ **औषधिपीयूष**—ला० ज्वालाप्रसादजी कृत। इसमें वैद्य लक्षण, दूतपरीक्षा, छींक विचार, पेशाब परीक्षा, जिह्वापरीक्षा, नेत्र नाड़ी परीक्षा, रोग लक्षण और औषधियाँ धातुओं की मारण शोधन विधि तथा अर्क निकालने की प्रक्रिया आदि कविता में लिखित हैं १॥)

६०३७ **औपसर्गिक रोग** (Infectious Diseases)—लेखक—आयुर्वेदाचार्य डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर बी० एस्० सी०, एम्० बी० बी० एस्०। प्रथम भाग ३॥), द्वितीय भाग ४ ० ०

६०३८ **औषधिगुणधर्मविवेचन**—दो भाग ० १३ ०

६०३९ **औषधिसंग्रहकल्पवल्ली**—हिन्दी ० ४ ०

६०४० **औषधिप्रकाश**—हिन्दी ० १२ ०

६०४१ **औषधिरत्नमाला**—दोहा, सोरठा आदि छंदों में लिखित, इसमें शीशा, सुरमा, कुचला, अभ्रक वा स्वर्ण आदि शोधन की विधि, स्वप्नदोष वा क्लीबता, उपदंश, सोजाक, ज्वरादि रोगों की चिकित्सा, दंत मंजन, खिजाब वा मिस्सी वा बवासीर के नुस्खे सब लिखे गये हैं। ० ४ ६

६०४२ **औषधिकल्पलता**—परिचित नुसखों का संग्रह। हिन्दी ० ८ ०

६०४३ **औषधिविज्ञान**—अर्थात् ऐलोपैथिक मेटीरिया मेडिका हिन्दी ६ ० ०

६०४४ **औषध विज्ञान**—विद्यार्थियों और नवीन वैद्यों के लिये। १ ० ०

६०४५ **औषधिक्रिया**—भा० टी०। ० १० ०

६०४६ **अंजननिदान**—भाषाटीका ० १० ०

६०४७ **कवितरंग**—पं० सीताराम जी रचित। वात, पित्त, कफ़ जनित रोगोत्पत्ति लक्षण और प्रतीकार, व्रण चिकित्सा, शाक गुण अवगुण और पुष्टिकारक दवाइयों का वर्णन है। ० ७ ०

६०४८ **क्या खूब डिबिया**—जर्राही योग। ० ८ ०

६०४९ **करिकल्पलता**—छन्दोबद्ध हिन्दी। हाथियों के शुभाशुभ लक्षण वा उनके रोग नाशार्थ अनेक औषधिविधान चित्रों समेत वर्णित हैं। १ १२ ०

६०५० **करावादीन इहसानी**—यूनानी ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। १ ८ ०

६०५१ **कम्पाउंडरी शिक्षा**—एलोपैथिक, डाक्टरी औषधों के गुण, मात्रा आदि का विशद वर्णन। सजिल्द १ ८ ०

६०५२ **कल्पपञ्चकप्रयोग**—भाषा टीका समेत। ० ३ ०

६०५३ **कन्दर्पचूड़ामणि**—बघेलवंशावतंस-महाराजश्रीवीरभद्रदेवेन विरचितः कामशास्त्रग्रन्थः। ३ ० ०

६०५४ **कन्दर्पचूड़ामणि**—संस्कृतटीकासहित सजिल्द। १० ० ०

६०५५ **कामसूत्रम्**—महर्षिवात्स्यायनप्रणीतम्। यशोधरविरचितजयमंगलानाम्नी संस्कृतटीकासहित। यह भी कामशास्त्र का प्राचीन ग्रन्थ है। ५ ० ०

६०५६ **कामसूत्र**—वात्स्यायन प्रणीत। भा. टी. सहित। ५ ० ०

६०५७ **कामसूत्र**—संस्कृत (जयमंगला) तथा विस्तृत हिन्दी टीका द्वय सहित। २ भाग सजिल्द। १२ ० ०

६०५८ **कामकुतूहल**—भाषा टीका समेत। ० ६ ०

६०५९ **कामविज्ञान**—कामसूत्र, रतिरहस्य आदि के आधार पर लिखित। ३ ० ०

६०६० **कालज्ञान**—भाषाटीका। ० ४ ०

६०६१ **काथबोधः**— ० ८ ०

६०६२ **काकचण्डीश्वरकल्पतंत्रम्**— ० ८ ०

६०६३ **कामदर्शन**—हरिहरनाथ बी. ए. कृत, सजिल्द हिन्दी। ३ ० ०

६०६४ **कामकुंज**—काम विषय का अपूर्व ग्रन्थ हिन्दी। ४ ० ०

६०६५ **कामरत्न**—योगेश्वर नित्यनाथ प्रणीत और विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादजी कृत भाषाटीका समेत। इसमें कामशास्त्रादि विषय और रोगों की औषधि तथा वाजीकरण औषधि अनुभूत हैं, और वशीकरण आदि प्रयोग भी हैं। सजिल्द २ ४ ०

६०६६ **काश्यपसंहिता** (वृद्धजीवकीयतन्त्र)—वृद्धजीवककृता वात्स्येन संस्कृता। नेपाल के राजगुरु श्रीपं० हेमचन्द्रशर्मकृतबृहत्संस्कृतभूमिकासहित। यह आर्ष संहिता कई शताब्दियों से लुप्त थी। इस में सब रोगों की चिकित्सादि है और विशेषकर बालरोगों तथा स्त्रीरोगों की चिकित्सा है। ५ ० ०

६०६७ **काश्यपसंहिता (मूल)**—अस्मिन् प्राचीने ग्रन्थे सर्पादिविषाणां वर्णनं चिकित्साविधिश्च विद्यते। ३ ६ ०

६०६८ **कुट्टनीमतम्**—दामोदरकविविरचित कामविषयक अति प्राचीनग्रंथ। सटीक ६ ० ०

६०६९ **कुमारतंत्रम्**—कवियामिनीभूषणरायकृतम् । संस्कृत २ ० ०

६०७० **कुमारतंत्र**—(रावणकृत) भाषाटीका समेत । ० ८ ०

6071 Le Kumaratantra de Ravana--Etlestextes Paralleles Indiens, Tibetains, Chinois, Cambodgien et Arabe, Par Jean Filliozat. 1937. Paris 7 8 0

६०७२ **कुचुमारतन्त्र**—श्रीकुचमारमुनिप्रणीतः । ० ८ ०

६०७३ **कूटमुद्गर**—संस्कृत टीका ≡), भाषाटीका । ० ३ ०

६०७४ **कोकशास्त्र**—भाषा । २ ० ०

६०७५ **कोकसारवैद्यक सचित्र**—कोका पंडित कृत भाषाटीका । २ ० ०

६०७६ **कौलेरा**—(होमियोपैथिक) । १ ४ ०

६०७७ **क्षय चिकित्सा**—हिन्दी । ० ८ ०

६०७८ **क्षयरोग**—हिन्दी ० १० ०

६०७९ **क्षारनिर्माणविज्ञान**—हिन्दी ० ८ ०

६०८० **क्षेमकुतूहल**—मूलमात्र । ० १२ ०

६०८१ **खनिज विज्ञान**—(रसगन्धात्मक) रसायनाचार्य कविराज श्री प्रतापसिंह जी अजिल्द २॥), सजिल्द— ३ ० ०

६०८२ **खूबचन्दचिकित्सा**—(वैद्यकसार) ला० खूबचन्द जी के ४० वर्ष के अनुभव किये हुए तत्काल गुणप्रद स्त्री पुरुष और बच्चों के लिये उपयोगी १२२ नुसखों का संग्रह । हिन्दी ० १४ ०

६०८३ **गदतिमिरभास्कर**—चरक, सुश्रुत आदि छोटे-मोटे ग्रन्थों को मथकर एवं अनेक यूनानी तथा डाक्टरी ग्रन्थों की सहायता लेकर पं० गौरीशंकर शर्मा राजवैद्य ने हिन्दी में इस अपूर्व ग्रन्थ को बनाया है । ६ ० ०

६०८४ **गर्भविचार**—इसमें स्त्रियों की रक्षा, गर्भाधान, बालक की रक्षा आदि अनेक उपयोगी विषय हैं । हिन्दी । ० १२ ०

६०८५ **गर्भाधानप्रकाश**—सचित्र । लेखक कविराज सत्यदेव वैद्य । ० ८ ०

६०८६ **गूलर-गुण-विकाश**—(वा आरोग्य-प्रकाश)—पं० श्रीचन्द्रशेखरधरशर्म्मा मिश्र आयुर्वेदाचार्यवैद्यरत्नकृत । ० ८ ०

६०८७ **गृहरोगचिकित्सा**—डाक्टर वसुदेव विरचित । स्थूलाक्षर, सुनहरी जिल्द । यह पुस्तक विशेष करके स्त्रियों और बालकों के हितार्थ छपवाई गई है । १ ८ ०

६०८८ **गृहवस्तुचिकित्सा**— ० ८ ०

६०८९ **गदनिग्रहः**—श्रीशोढलवैद्यविरचितः । अस्य प्रयोगखण्डात्मकः प्रथमो भागः । अस्मिन् खण्डे घृततैलचूर्णगुटिकासवावलेहाख्याः षडधिकाराः सन्ति । द्वितीयं संस्करणम् २ ० ०

६०९० **गदनिग्रह**—द्वितीय भाग । दुष्प्राप्य

६०९१ **गौरीकांचलिकातंत्र**—भाषाटीका समेत । इसमें तंत्र मंत्र और दवाइयों का संग्रह है । ० ८ ०

६०९२ **गर्भिणीपरिचय**—प्राचीनार्वाचीनविषयसंवलितः। ० ३ ०

६०९३ **गदविनिश्चयं नाम रोगज्ञानक्रमम्**—आयुर्वेदाचार्य. पी० एज. एस. सिलवा कवितिलकाख्येन विरचितम्। मूलमात्रम् १ ० ०

६०९४ **ग्रन्थी**—हिन्दी। प्रयाग ० १२ ०

६०९५ **गर्भाधानरहस्य**—भजन विज्ञान। सचित्र। (Creative and Sexual Science) ले० कविराज डा० रामनारायण वैद्यशास्त्री। सम्पूर्ण। सजिल्द ४ ८ ०

६०९६ **गर्भाधानविधि**—भाषाटीका। ० ३ ०

६०९७ **गुणों की पिटारी**—इसमें अनेक प्रकार की धातुओं के फूँकने वा सेवन करने वा सिन्दूर आदि के बनाने तथा साबुन, पारा, गन्धक और शिंगरफ वगैरह के बर्तनों के बनाने के परमोपयोगी नाना प्रकार के तरीके लिखे गये हैं। हिन्दी १ ० ०

६०९८ **घर का वैद्य**—ले० अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार। हिन्दी में अपूर्व मौलिक ग्रन्थ। इस में मनुष्य की उत्पत्ति से प्रारम्भ होने वाले रोगों से लेकर मृत्यु तक के सब रोगों का वर्णन बड़े ही सरल ढंग से किया गया है। १२ ० ०

६०९९ **घरेलू चिकित्सा**—भाषा में चुने हुए अपूर्व नुस्खों का संग्रह। ० १२ ०

६१०० **घरेलू विज्ञान**—स्त्री पुरुषों के लिये घरेलू जानकारी की अपूर्व पुस्तक हिन्दी १ ८ ०

६१०१ **घृत चिकित्सा**—हिन्दी ० ८ ०

६१०२ **चक्रदत्त**—सारचन्द्रिका नामक विस्तृत हिन्दी भाषा टीका सहित। अनुवादक—रसतरङ्गिणी के प्रणेता कविराज सदानन्द शास्त्री प्राणाचार्य ४॥), राजसंस्करण लाहौर ८ ० ०

६१०३ **चक्रदत्त**—शिवदासकृत प्राचीन संस्कृत व्याख्या समेत। विद्यार्थियों के लिए बहुत ही सस्ता, विशुद्ध और स्पष्ट संस्करण निकाला गया है। छपाई निर्णयसागर के बराबर। कागज स्थूल चिकना। सजिल्द ३ ८ ०

६१०४ **चरक संहिता**—पंडित तारादत्त पन्तेन भागीरथ्या टिप्पणया विभूषिता संशोधिता च ३ ० ०

६१०५ **चरकसंहिता**—मूलमात्र। सजिल्द गुटका। ४ ० ०

६१०६ **चरकसंहिता**—मूलमात्र। स्थूलाक्षर। ७ ० ०

६१०७ **चरकसंहिता**—सटीक। अग्निवेशमहर्षिकृता, चरकप्रतिसंस्कृता, चक्रपाणिदत्तप्रणीतया आयुर्वेददीपिकाख्यव्याख्यया समलंकृता। नवीन संस्करण। सब खण्डित अंश कई एक हस्तलिखित प्रतियों से शुद्ध करके पूर्ण कर दिये गये हैं। निर्णयसागर प्रेस मुम्बई मुद्रित। यह एक अपूर्व संस्करण है। मुम्बई ८ ० ०

६१०८ **चरकसंहिता**—चक्रपाणिकृत-गंगाधरकविराजकृतजल्पकल्पतरुव्याख्याद्वयोपेता। सम्पूर्ण २० ४ ०

पृथक् २ खंड भी मिलते हैं। प्रथम खंड, सूत्रस्थान ७॥), द्वितीय खंड, निदान-विमान-शारीर-इन्द्रियस्थानात्मक ६॥), तृतीयखंड-चिकित्सित, कल्प, सिद्धिस्थान ८ ० ०

६१०९ **चरकसंहिता**—पंडित रामप्रसाद राजवैद्य पटियाला विरचित प्रसादनी भाषा टीका सहित। दो भागों में सजिल्द सम्पूर्ण १६ ० ०

६११० **चरकसंहिता**—कविराज जयदेव कृत, हिन्दी अनुवाद सहित सम्पूर्ण ३ भागों में १६ ० ०

६१११ **चक्षुरक्षक**—और ऐनकाभ्यास भाषा। मुम्बई ० ३ ०

६११२ **चर्याचन्द्रोदय**—भाषा टीका समेत। इसमें व्यंजन बनाने की क्रिया लिखी है। सजिल्द २ ८ ०

६११३ **चारुचिकित्सा**—पूर्वखण्ड ० १२ ०

६११४ **चारुचिकित्सा**—द्वितीय भाग। इस पुस्तक में देहली के प्रसिद्ध यूनानी हकीम मसीहुल मुलक जनाब मुहम्मद अजमलखाँ साहब के खानदानी अकसीर, जादू असर और बेनजीर २०८ प्राइवेट नुसखे हैं। भस्में बनाने की अद्भुत विधियाँ, ताकत के अनूठे नुसखे, नपुंसकतानाशक अनोखे तिला, माजूनें, खमीरे, गोली, अंजन, मंजन, अर्क, लेप, मरहम आदि अनेक रामबाण नुसखे मौजूद हैं। १ ० ०

६११५ **चिकित्सामृतसागर**—छन्दोबद्ध हिन्दी ० ३ ०

६११६ **चिकित्साकलिका**—लेखकः—भिषग्रत्नतीसटाचार्यः। संस्कृतव्याख्याप्रणेता—चन्द्रटाचार्यः। हिन्दी व्याख्याप्रणेता—आयुर्वेदाचार्य पंडित जयदेवविद्यालंकारः। सजिल्द ४ ० ०

६११७ **चिकित्सासमूह**—अर्थात् घरू और सफ़री वैद्य। जिसमें मनुष्यों तथा हाथी, घोड़े, ऊँट, गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि पशुओं की बीमारियाँ और उनके इलाज हैं। हिन्दी। ठाकुर कल्याणसिंहजी वर्मा रचित १ ४ ०

६११८ **चिकित्सासार**—(होमियोपैथिक) ० १२ ०

६११९ **चिकित्साचन्द्रोदय**—बृहद् ग्रन्थ वैद्यवर बाबू हरिदास जी विरचित। हिन्दी भाषा में। ७ भाग में सम्पूर्ण। **प्रथम भाग** में आयुर्वेद शब्द के अर्थ, उत्पत्ति, लाभ, आयुर्वेद पढ़ने के अधिकारी, उपयोगी शिक्षाएँ व परिभाषाएँ, मनुष्य शरीर त्रिदोष-विचार, दोष और धातुओं की क्षय वृद्धि, अग्नि विचार आदि बहुत से विषयों का सविस्तर वर्णन है। **द्वितीय भाग** में प्रत्येक रोग के परीक्षित नुसखे लिखे गये हैं साथ २ कई चित्र भी दिये गये हैं। इसी प्रकार **तृतीय भाग** में अतिसार, संग्रहणी, बवासीर, मंदाग्नि, अजीर्ण, हैजा, कृमिरोग, पाण्डु या पीलिया, उपदंश, सोजाक आदि रोगों के कारण लक्षण और चिकित्सा लिखी गई है। **चतुर्थ भाग** में केवल प्रमेह और नपुंसकता या नामर्दी की चिकित्सा लिखी गई है। स्तम्भन या रुकावट की ऐसी २ तरकीबें हैं, जिनके सेवन से स्त्री दासी हो जाती है। शेष में अभ्रक, राँग, शीशा, लोहा, ताँबा, सोना, चाँदी आदि की भस्म

बनाने की बड़ी ही आसान तरकीबें लिखी हैं। **पंचम भाग** में विष चिकित्सा, स्त्रीरोग-चिकित्सा तथा क्षयरोग चिकित्सा बड़ी खूबी से लिखी है। **षष्ठ और सप्तम भाग** में खाँसी, श्वास, हिचकी, रक्तपित्त, अम्लपित्त, स्वरभेद, वमन, प्यास, मूर्च्छा, मदात्यय, दाह, उन्माद, पागलपन, अपस्मार मृगी, ८० प्रकार की वातव्याधि प्रभृति रोगों के निदान लक्षण और चिकित्सा भले प्रकार से लिखी गई है। यह बृहद् ग्रंथ ७ भागों में सम्पूर्ण हुआ है। यह ग्रंथ प्रत्येक वैद्य को अवश्य मंगाकर पढ़ना चाहिए। पृथक् पृथक् भाग भी मिल सकते हैं। दाम प्रथम भाग ३), द्वितीय भाग ५), तृतीय भाग ४।), चतुर्थ भाग ४।), पंचम भाग ७), छठा भाग ३॥), सातवाँ भाग १० ८

६१२० **चिकित्साचक्रवर्ती**—अर्थात् मुर्जरबात अकबरी का हिन्दी भाषानुवाद। १ ० ०

६१२१ **चिकित्सांजन**—भाषा टीका। ज्वर, कुष्ठ, भगंदरादि कठिन रोगों की बहुत उत्तम चिकित्सा ० १० ०

६१२२ **चिकित्साधातुसार**—धातु फूँकने के उत्तमोत्तम प्रयोगों का संग्रह हिन्दी। ० ६ ०

६१२३ **चिकित्सोपदेशिका**—पं० गणेशदत्त मिश्र कृत। इसमें सर्व प्रकार के ज्वर, खाँसी, खुजली, लकवा, सन्निपात, दमा, हिचकी, बवासीर, उपदंश, पुष्टिकारक औषधों का समावेश है। १ ० ०

६१२४ **चिकित्सासिंधु**—पं० क्षेत्रपालजी शर्मा लिखित द्वितीयावृत्ति। इस पुस्तक में वैद्यक, यूनानी, ऐलोपैथिक और होमियोपैथिक मतों से भिन्न रोगों के निदान, लक्षण और चिकित्सा लिखी है। इस लेखक ने बड़े अनुभव और परिश्रम से लिखा है। मामूली पढ़ा-लिखा भी इससे भली भाँति चिकित्सा कर सकता है। १ ८ ०

६१२५ **चिकित्सासारसंग्रह**—वङ्गसेन कृत, मूल मात्र। छापा कलकत्ता ५ ० ०

६१२६ **चिकित्सा सागर**—ले० पं० जनार्दन झा। हिन्दी। मुख्य सर्व आयुर्वैदिक ग्रंथों से संगृहीत सजिल्द। ३ ८ ०

६१२७ **चिकित्सा विज्ञान**—अर्थात् रोगों की एकता का सिद्धान्त और उस पर रची गई बिना औषधि और बिना चीर फाड़ के समान प्रक्रिया के द्वारा रोगों को आराम करने की विधि। मूल लेखक लूई कूने। हिन्दी ३ ८ ०

० ४ ०

६१२८ **चिकित्सा चमत्कार**—वैद्य गोपीनाथ गुप्त विरचित। २ ० ०

६१२९ **चुम्बन मीमांसा**—छन्नूलाल द्विवेदी। ० ८ ०

६१३० **चूर्ण चिकित्सा**—हिन्दी।

६१३१ **जननी और शिशु**—(जच्चा और बच्चा) बाबू सूरजभान जी वकील। हिन्दी। ० १० ०

६१३२ **जननीजीवन**—भाषा पं० शिवसहाय जी चतुर्वेदी लिखित। सजिल्द १ ४ ०

६१३३ ज़च्चा—प्रारम्भिक मासिक धर्म से लेकर प्रसव तक की कर्तव्य शिक्षा देने वाली मौलिक पुस्तक। ० १२ ०

६१३४ जननेन्द्रिय के रोग—(होमियोपैथिक) सूज़ाक गर्मी वग़ैरह रतिज रोग सहित। १ ० ०

६१३५ जर्राही प्रकाश—पाँचों भाग, जिसमें जर्राही विद्या का सविस्तर वर्णन है और सूज़ाक, आतशक, प्रमेह, बवासीर इत्यादि भयानक रोगों की चिकित्सा तथा अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का हाल है। बाबू व्रजवल्लभप्रसाद जी संकलित। हिन्दी १ ८ ०

६१३६ जलचिकित्सा—३ भाग। कलकत्ता ३ ८ ०

६१३७ जलचिकित्सा—जलमात्र से ही सर्व रोगों के दूर करने के उपाय इसमें वर्णित हैं। सचित्र हिन्दी। ० ६ ०

६१३८ ज्वरतिमिरभास्कर—कायस्थचण्डकृत:। श्री पं० नानकचन्द्र जी वैद्यशास्त्री आयुर्वेदाचार्यकृत शब्दार्थबोधिनी भाषा टीका सहित। ४ ० ०

६१३९ संक्षिप्त जलचिकित्सा—हेमचन्द्र मोदी। ० ३ ०

६१४० जल के प्रयोग और चिकित्सा— ० ८ ०

६१४१ जीवनरक्षा— ० ८ ०

६१४२ संक्षिप्त जीवाणु विज्ञान—डा. भास्कर गोविन्द घाणेकर। २ ८ ०

६१४३ जीवनरसायन चिकित्सा शास्त्र—अथवा शूज़लर साहब की बारह दवाइयाँ। डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर। २ १२ ०

६१४४ ज्ञानभैषज्यमञ्जरी—भाषा टीका ; सर्व रोगों पर एक २ औषध का वेदान्त मतानुसार वर्णन। ० ३ ०

६१४५ ज्वरतिमिरनाशक—भाषा टीका सर्व प्रकार की दवाइयों का संग्रह है। सजिल्द। मुम्बई १ ० ०

६१४६ डाक्टर वैद्य कम्पाउंडरों के लिये अपूर्व पुस्तक—देशीय वनस्पतियों पर विलायती डाक्टरों की सम्मति। २ ० ०

६१४७ डाक्टरीचिकित्सा—ऐलोपैथिक डाक्टरी की निदान, लक्षण और चिकित्सा सम्बन्धी अपूर्व पुस्तक हिन्दी। ६ ० ०

६१४८ डॉक्टरीचिकित्सार्णव—बड़ा, हिन्दी सर्व रोगों के डाक्टरी मत से और साथ साथ देशी वैद्यक मत से नाम, लक्षण, रोगनिदान और उपाय आदि लिखे गये हैं। डाक्टरी सीखने के लिये यह परमोपयोगी है। सजिल्द २ ० ०

६१४९ डॉक्टरी चिकित्सासार—हिन्दी। ० १० ०

६१५० डाक्टरी नुस्खे—एक ही रोग पर डाक्टरों के जुदे जुदे नुसख़े। १ ४ ०

६१५१ तंत्रयुक्तिविचार:—नीलमेघभिषजा विरचित:। ० ८ ०

६१५२ तमाखूदुर्व्यसन निषेध—भाषा में। ० ४ ०

६१५३ तिब्ब इहसानी—हकीम इहसान अली साहिब की यूनानी पुस्तक का भाषानुवाद। सजिल्द १ ० ०

६१५४ **तिब्ब अकबर**—हकीम अकबर अलीखाँ लिखित । सबसे बड़े प्रसिद्ध यूनानी ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद । इसमें छब्बीस [२६] अध्यायों में शिर से पैर तक स्त्री, पुरुष, लड़के आदि के सम्पूर्ण रोगों की उत्पत्ति, निदान, कारण, स्वरूप, लक्षण, और यूनानी मत से एक रोग पर सैंकड़ों औषधों का उपचार [चिकित्सा] वर्णित है । ७ ० ०

६१५५ **तुलसी और उसके सौ उपयोग**—काशीनाथ शर्मा । ० ५ ०

६१५६ **तैलचिकित्सा**— ० ८ ०

६१५७ **तैलसंग्रह**—विश्वनाथ द्विवेदी । ० १२ ०

६१५८ **त्रिशती**—शार्ङ्गधर विरचित । मूलमात्र । ० ४ ०

६१५९ **त्रिशती**—पं० वैद्यवल्लभ विरचित संस्कृत तथा भाषानुवाद सहित । इसमें सब रोगों में प्रधान ज्वर और सन्निपात की उत्तम २ अनेक प्रकार की चिकित्सा लिखी है । ग्रन्थकर्ता ने अपनी कविताशक्ति का पूर्ण परिचय दिया है । दोनों टीकाएँ एक से एक बढ़कर सरल वा प्रमाणों से विभूषित हैं । सजिल्द १ ८ ०

६१६० **त्रिदोषमीमांसा**—हिन्दी । १ ० ०

६१६१ **दन्त रक्षा**—हिन्दी । ० ४ ०

६१६२ **दन्त चिकित्सा**—भाषा टीका सहित । ० ६ ०

६१६३ **दद्रु चिकित्सा**— ० ८ ०

६१६४ **दाम्पत्यजीवन**—भाषा सजिल्द । २ ८ ०

६१६५ **दाम्पत्यविज्ञान**— २ ० ०

६१६६ **दिनचर्या**—हिन्दी । ० ६ ०

६१६७ **दिलगनचिकित्सा**—लोलिम्बराजजी की कविता के आधार पर कवि सीताराम जी ने शृंगार रस पूर्ण मनोहर छन्दों में सब रोगों की औषधों का वर्णन किया है । ० ५ ०

६१६८ **दीर्घजीवन**—हिन्दी । ० ८ ०

६१६९ **दीर्घजीवन और उसकी प्राप्ति के उपाय**— ० ६ ०

६१७० **दुग्धचिकित्सा**—दुग्ध सेवन से ही रोग दूर करने के उपाय । ० २ ०

६१७१ **द्रव्यगुण**—चक्रपाणिकृत । शिवदास कृत विस्तृत संस्कृत व्याख्या सहित । कलकत्ता १ ४ ०

६१७२ **द्रव्यगुण**—हिन्दी भाषा टीका सहित । १ ० ०

६१७३ **द्रव्यगुणशतक**—भाषा टीका समेत । ० ६ ०

६१७४ **द्रव्यगुणशिक्षा**—कविराज नगेन्द्रनाथ गुप्त द्वारा आयुर्वैदिक और डाक्टरी पुस्तकों से संगृहीत हिन्दी । २ ८ ०

६१७५ **द्रव्यगुण संग्रह**—(शिवदास कृत व्याख्या सहित) श्री चक्रपाणिदत्त प्रणीत । मुम्बई ० १२ ०

६१७६ **धन्वन्तरिवैद्यक**—ला० शालगराम कृत भाषा टीका समेत, जिसमें

समस्त रोगों का निदान, कारण, लक्षण, और चिकित्सक औषध संगृहीत हैं। सजिल्द। ८ ० ०

६१७७ **धातुचिकित्सा** ० ६ ०

६१७८ **ध्यान से आत्मचिकित्सा** ० ८ ०

६१७९ **नपुंसकामृतार्णव**—भाषाटीका। नपुंसकों के लिये नाना प्रकार के तेल, लेप, घृत, वाजीकरण औषधियाँ लिखी हैं। सजिल्द। ४ ०

६१८० **नपुंसकसंजीवनी**—भाषा टीका। पुष्टिकारक औषधों का संग्रह ० ८ ०

६१८१ **नपुंसकचिकित्सा**—भाषाटीकासहित। ० ६ ०

६१८२ **न्यायवैद्यक और विषतन्त्र मैडिकल जूरिसप्रूडेन्स एगड टौक्सीकौलोजी**—लेखक कविराज श्री अत्रिदेव विद्यालंकार भिषग्रत्न। हिन्दी। ३ ० ०

६१८३ **नरदेह-परिचय**—सचित्र (होमियोपैथिक) सजिल्द। १ ८ ०

६१८४ **नयनानंद बोधिनी**—पं० कालीचरण जी वैद्य कृत भाषा टीका। ० १२ ०

६१८५ **नागरसर्वस्व**—पद्मश्री विरचित। कामशास्त्रविषयक। जगज्ज्योतिर्मल्लकृत संस्कृत टीका सहित। सटिप्पण। ४ ० ०

६१८६ **नागर सर्वस्व**—भाषा टीका सहित। २ ८ ०

६१८७ **नारीदेहतत्त्व**—इसमें स्वास्थ्यरक्षा, संतानोत्पादन, स्त्रीव्याधिचिकित्सा, धात्रीविद्या आदि विषय हैं। ० १० ०

६१८८ **नाड़ी प्रकाश**—भा० टी० मुरादाबाद। ० २ ०

६१८९ **नाड़ी परीक्षा**—रावणकृता। मूलमात्र। मुम्बई ० २ ०

६१९० **नाड़ी परीक्षा के सरल उपाय**—वैद्य प्रभाशंकर कृत। सागर ० ३ ०

६१९१ **नाड़ी प्रबोधक**—छन्दोबद्ध भाषा। ० ३ ०

६१९२ **नाड़ीज्ञानतरंगिणी तथा अनुपातनरंगिणी**—भाषा टीका सहित। १ ४ ०

६१९३ **नाडीविज्ञानम्**—कणादमुनिकृतम्। संस्कृत टीका सहितम् १ ० ०

६१९४ **नाडीविज्ञानम्**—आचार्य कणाद कृतम्। कविराज श्रीहरदयाल वैद्य-वाचस्पतिना विरचितया सिद्धान्तप्रकाशिकया हिन्दीभाषाटीकया समलंकृता ० ८ ०

६१९५ **नाडीविज्ञान**—भाषा टीका ० २ ०

६१९६ **नाडीविज्ञान अथवा नाड़ीपरीक्षा शास्त्र**—सचित्र लेखक पण्डित गोविन्दकृष्ण ० १२ ०

६१९७ **नाडीविज्ञान**—आचार्य मौद्गल्य कृत भाषा टीका सहित ८ ०

६१९८ **नाडीदर्पण**—भाषा टीका सहित ० ७ ०

६१९९ **निदान दीपिका**—संस्कृत व्यंकटेशकृष्ण करंदीकर संगृहीत ४ ० ०

६२०० **निघण्टु कल्पद्रुम**—सजिल्द भाषा ३ ० ०

६२०१ **निघण्टुरत्नाकर भाषा**—पृष्ठ संख्या १३४० ६ ८ ०

६२०२ **निघण्टुसार संग्रह**– तदनुरूप बहुविषयपरिष्कृतो भावप्रकाशस्थनिघण्टु-परिशिष्टरूपः । [Bhāvamiśra's Materia Medica. Explained & supplemented with copious extracts from standard works.]
१ ० ०

६२०३ **निघंटुभाषा**—मदनपाल निघण्टु का भाषानुवाद । ० १२ ०

६२०४ **नीम के उपयोग**—लेखक—श्री केदारनाथ पाठक 'रासायनिक' । ० १२ ०

६२०५ **नींबू और उसके प्रयोग**—नींबू के गुण धर्म । लेखक—पं० गंगाप्रसाद
० २ ६
'गांगेय' ।

६२०६ **नूतन अमृतसागर**—श्री सवाई प्रतापसिंहजी महाराज विरचित, संशो-
२ ८ ०
धित और परिवर्द्धित ग्लेज कागज़ ३), तथा रफ कागज़—

६२०७ **नेत्रचिकित्सा**—मूल संस्कृत डा० मुञ्जे विरचित सजिल्द । ५ ० ०

६२०८ **नेत्रदीपिका**—नेत्र रोगों का इलाज । मुरादाबाद ० ६ ०

६२०९ **नेत्रदीपिका और नेत्रचिकित्सा**—हिन्दी । ० ८ ०

६२१० **पञ्चसायकः**—कविशेखर श्री ज्योतीश्वरविरचितः । कामशास्त्रग्रन्थः । मूलमात्र
मुम्बई १ ० ०
सजिल्द
२ ० ०

६२११ **पञ्चसायक**—भाषाटीका सहित ।

६२१२ **पथ्यापथ्य**—भाषा टीका सहित—पं० केशवप्रसाद मिश्र संगृहीत ।
० १४ ०

६२१३ **पथ्यापथ्य विनिर्णयम्**—म० म० विश्वानथकविराजकृतम् । पं० खूबचन्द-
० १२ ०
शर्मा गौडकृत भाषा टीका सहित ।

६२१४ **पथ्यापथ्य विबोधक**— कैयदेव विरचित भाषा टीका सहित । अपने विषय का यह पहला और अपूर्व ग्रन्थ है । पहली बार ही छपा है । ३०० वर्ष पुराना ।
५ ० ०

६२१५ **पशुचिकित्सा**—अर्थात् 'वृषकल्पद्रुम' छन्दोबद्ध भाषा । सजिल्द १ ८ ०

६२१६ **पशुचिकित्सा**—(करिकल्पलता) पशुओं के रोगों के लक्षण तथा
२ ८ ०
दवाइयाँ इसमें वर्णित हैं । भाषा सजिल्द ।

६२१७ **पाचन और मुष्टियोग परिभाषा सहित**—श्री कविराज नगेन्द्रनाथ
२ ८ ०
गुप्त विरचित
२ ८ ०

६२१८ **पाकविज्ञान**—हिन्दी १ ८ ०

६२१९ **पाकदर्पणम्**– नल विरचित । मूल ० १० ०

६२२० **पाकप्रदीप**—भाषा टीका सहित वाजीकरण ० ८ ०

६२२१ **पाकविलास**—हिन्दी

६२२२ **पाकमाला बालबोधोदय**—भाषाटीका ० ३ ०

६२२३ **पाकप्रकाश अथवा मिठाई**—सचित्र । हिन्दी ० ८ ०

६२२४ **पाक प्रकाश और मिठाई**—सब प्रकार का मिठाई, पकवान, कच्चा भोजन, शाक भाजी, मुरब्बे, चटनी, आचार, चरबन, सत्तू-आदि भोजन-सम्बन्धी समस्त वस्तुओं के बनाने की सरल सर्वोपयोगी विधियों को बताने वाली सर्वोच्च सचित्र पुस्तक । २ ८ ०

६२२५ **पाकशास्त्र**—भाषा लखनऊ १ ० ०

६२२६ **पारदयोगशास्त्रम्**— ० ८ ०

६२२७ **पारदसंहिता**—निरंजनप्रसादगुप्तेन संगृहीता । ज्येष्ठमल्ल काव्यतीर्थ कृत भाषा टीका समेत । सजिल्द । छापा मुम्बई । अत्युत्तम टाइप । सम्पूर्ण ७०० पृष्ठ बढ़िया संस्करण १२), साधारण संस्करण— १० ० ०

६२२८ **पारिवारिक चिकित्सा**—(होमियोपैथिक) घर बैठे कम खर्च में डाक्टर बनने का उपाय । इसमें बहुत ही सरल भाषा में सर्व रोगों का इतना सरल होमियोपैथिक इलाज बतलाया गया है कि केवल थोड़ा पढ़ा-लिखा मनुष्य भी इसके सहारे कठिन से कठिन बीमारियों का इलाज कर सकता है । सब जानते हैं कि होमियोपैथिक दवाइयाँ रामबाण की तरह काम करती हैं । अतएव ग्रामों में रहने वाले तथा वे सज्जन जो वृथा ही डाक्टरों की जेब न भरनी चाहें, इसे मंगा कर अवश्य पास रखें । इससे अनेक प्रेमी प्राणियों की सदा रक्षा कर सकेंगे । और साथ ही घर बैठे इलाज कर हजारों रुपये कमा भी सकेंगे । कीमत केवल ४ ० ०

६२२९ **पारिवारिक चिकित्सा**—(होमियोपैथिक संक्षिप्त हिन्दी) १ ८ ०

६२३० **पारिवारिक भैषज्यतत्त्व**—(Materia Medica) हिन्दी (होमियोपैथिक) ५ ० ०

६२३१ **प्रसूतितंत्रम्**—श्री यामिनीभूषणरायकृतम् संस्कृत मूलमात्रम् । कलकत्ता २ ० ०

६२३२ **प्रसूतितन्त्र सचित्र**—सूतिका शास्त्र के मूल तत्त्व अथवा धात्रीविद्या । ले. डा. काशीनाथ नारायण गोखले । २ ० ०

६२३३ **प्रसूतिशास्त्र**—प्रथम भाग भाषा । डा. प्रसादीलाल झा M. A. विरचित । ३ ० ०

६२३४ **प्रयोग सहस्री**—१००० परीक्षित नुस्खों का संग्रह, दो भाग । ३ ० ०

६२३५ **प्रयोग शतक**—१०० परीक्षित नुस्खों का संग्रह । ० ५ ०

६२३६ **प्रत्यक्ष शारीरम्**—महामहोपाध्याय श्री गणनाथसेनकृतः प्रत्यक्षदृष्टनर-देहतत्त्ववर्णनपरः शारीरग्रन्थः—३ भाग में सम्पूर्ण-सजिल्द पुष्ट कागज सुन्दर टाइप । कलकत्ता १६ ० ०

६२३७ **प्रत्यक्ष शारीर**—हिन्दी-प्रथम भाग (अस्थि-सन्धि-स्नायुवर्णन) ४ ० ०

६२३८ **प्रमेह की अनुभूत चिकित्सा**—वैद्यप्रभाशंकरकृत। सागर ० १० ०
६२३९ **प्रमेहचिकित्सा**—हिन्दी। ० २ ०
६२४० **प्रमेहभास्कर अथवा प्रमेहचिकित्सा**— ० २ ०
६२४१ **प्रयोगमञ्जूषा**—हिन्दी। ० १२ ०
६२४२ **प्रसिद्ध देशीय औषधों के अंगरेज डाक्टर द्वारा परीक्षित प्रयोग**—हिन्दी। १ ० ०
६२४३ **प्राणचिकित्सा**—(मेस्मेरिज़्म की अद्भुत पुस्तक) लेखक डॉ॰ दुर्गाप्रसाद नागर। १ ० ०
६२४४ **प्राकृतिक आरोग्यविज्ञान**—(हैल्थ कल्चर का हिन्दी रूपान्तर) अनु॰ नारायण गोविन्द नावर। ० ४ ०
६२४५ **प्राकृतिक चिकित्सा**—पं॰ रामनारायण शर्मा ० ६ ०
६२४६ **प्रारम्भिक विज्ञान**—Hindi text on Elementary Science. 2 0 0
६२४७ **प्लीहा रोगचिकित्सा**— ० ४ ०
६२४८ **प्लेग चिकित्सा**—हिन्दी ० ८ ०
६२४९ **फिरंगादर्श**—आतशक, गर्मी, सूजाक का इलाज हिन्दी ० ८ ०
६२५० **फुफ्फुस सन्निपात चिकित्सा**—अर्थात् न्यूमोनिया का इलाज। ले. पं. हनुमत्प्रसादजी जोशी वैद्य। भाषा १ ८ ०
६२५१ **फेफड़ों की परीक्षा**—या उसके रोग हिन्दी में, कविराज शिवशरण वर्मा लिखित १ ८ ०
६२५२ **बच्चों की रक्षा**—भाषा ० ५ ०
६२५३ **बन्ध्याकल्पद्रुम**—अर्थात् स्त्री चिकित्सा समूह चारों भाग—जिसमें आयुर्वेद, यूनानी तिब्बी, डाक्टरी, इन तीनों से सर्व प्रकार की वन्ध्या तथा स्त्री जाति के सम्पूर्ण रोग मात्र का निदान और चिकित्सा का विस्तारपूर्वक वर्णन और समस्त बालरोगों का निदान तथा चिकित्सा वर्णित है। सजिल्द। मुम्बई १२ ० ०
६२५४ **बन्ध्यातन्त्र**—भाषा टीका। ० ४ ०
६२५५ **बायोकैमिक चिकित्सा**—होमियोपैथिक। १ ० ०
६२५६ **बालतंत्र**—कल्याणमल्ल वैद्य विरचित, मूल और नंदकुमारकृत भाषा टीका सहित। इसमें षोडश वंध्या, साधारण वंध्या औषध, पुरुष वीर्यवृद्धि, गर्भाधान, रुद्रस्नान, मासगृहीत-बालरक्षा, दिनमास-गृहीत-बालरक्षा, साधारण बालग्रहरक्षा, ज्वरहरणोपाय, साधारण रोग चिकित्सा नाना रोगों के अनुभवी प्रयोग सजिल्द। १ ४ ०
६२५७ **बाल स्वास्थ्यरक्षा**—हिन्दी। ० १० ०
६२५८ **बालचिकित्सा**—सरल भाषा टीका सहित। ० ८ ०
६२५९ **बालचिकित्सा**—हिन्दी। कानपुर ० १२ ०

६२६० **बालरोग विज्ञान**— २ ८ ०

६२६१ **बालसंजीवन**—हिन्दी नूतन। ० ८ ०

६२६२ **बालकोपयोगी वीर्यरहस्य**—भाषा। डा० रामनारायण वैद्यशास्त्री। ० २ ६

६२६३ **बालबोधोदय**—पाकमालाख्यं सानुक्रमणिकं ग्रंथद्वयम्। ० २ ०

६२६४ **बिच्छू विष चिकित्सा**—मथुरा। ० २ ०

६२६५ **बुढ़ापा, उसके कारण और निवारण**—केशवकुमार ठाकुर १ ८ ०

६२६६ **बुढ़ापा रोकने के उपाय**—२४ चित्रों सहित। मौत तो किसी से रोकी नहीं जाती, परन्तु अमरीका के वैज्ञानिकों ने बुढ़ापा रोकने की युक्ति निकाल ही डाली। सुबह चारपाई पर पड़े २ कुछ अंगों को १०–१५ मिनट तक परिचालित करते रहिए–फिर न कब्ज की शिकायत, न आए दिन बीमारियों का डर। अंग परिचालन कैसे करना चाहिए? इसके लिए पुस्तक में २४ चित्र दिए हैं। १ ० ०

६२६७ **बूटी प्रचार वैद्यक**—सचित्र सजिल्द हिन्दी। १ ० ०

६२६८ **बृहत् मेटेरिया मेडिका**—लेखक श्री मनोरञ्जन बनर्जी एम० ए०। ४ ० ०

६२६९ **बोपदेवशतक**—भाषा टीका। क्वाथादि का वर्णन। ० ८ ०

६२७० **बृहन्निघण्टु रत्नाकर**—पं० दत्तराम चौबे कृत भाषा टीका समेत। आठ भाग में सम्पूर्ण। विलायती जिल्द। छापा मुम्बई। ग्लेज़ कागज। ४० ० ०
इस ग्रन्थ के पृथक् २ भाग भी मिल सकते हैं। प्रथम भाग ४), द्वितीय भाग ४॥), तृतीय भाग ५॥), चौथा भाग—चिकित्सा खण्ड ३॥), पंचम भाग—रोगों का कर्मविपाक ८), षष्ठ भाग—रोगों की चिकित्सा भाग ५॥), सप्तम अष्टम भाग लाला शालिग्राम संकलित अर्थात् **शालिग्राम निघण्टु भूषण**—अनेक भाषाओं में सर्व औषधों के नाम और गुणों का वर्णन औषधियों के चित्र समेत। १२ ० ०

६२७१ **बृहद् योगतरङ्गिणी**—त्रिमल्लभट्ट विरचित। मूलमात्र। २ भाग में सम्पूर्ण। १० १२ ०

६२७२ **बृहत् इलाजुलगुर्बा**—हकीम गुलाम इमाम कृत यूनानी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद सजिल्द। १ ८ ०

६२७३ **बृहद् बालबोध पाकावली**—७३ प्रकार के पाक रसों का वर्णन। भाषा टीका। ० १० ०

६२७४ **बृहत्कालज्ञान**—भाषा टीका सहित। इसमें रोगी की मृत्यु का ज्ञान होने के सब चिह्न तथा छायापुरुषदर्शन आदि अनेक योगशास्त्र सम्बन्धी ऐसे उपयोगी विषय लिखे हैं कि जिनके अभ्यास से मनुष्य त्रिकालज्ञ हो सकता है। ० ६ ०

६२७५ **बृहत्पाकावली**— ० ८ ०

६२७६ **सचित्र ब्रह्मचर्यविवेक**—आचार्य स्वामी विश्वनाथ शास्त्री राजवैद्य सजिल्द १ १२ ०

६२७७ भावप्रकाश—मूलमात्र । सूक्ष्माक्षर ४), स्थूलाक्षर— ४ ८ ०

६२७८ भावप्रकाश—ला० शालिग्राम कृत भाषा टीका सहित सम्पूर्ण । छापा मुम्बई पुष्ट काग़ज़ सुन्दर विलायती जिल्द । १० ० ०

६२७९ भावप्रकाशः—पूर्वखण्डः । वनस्पतिविशेषज्ञरूपनिघण्टुकार—श्रीरूपलाल-वैश्यवरेण विरचितेन निघण्टुभागीयसचित्र विवरणेन समुपबृंहितया मिश्रोपाह्वभिषग्रत्नश्रीब्रह्म-शंकरशास्त्रिणा विनिर्मितया विद्योतनीनामिकया भाषाटीकया संवलितः । अन्ते गर्भप्रकरण-संम्बन्धि सचित्र परिशिष्टेन विशिष्टश्च ५ ० ०

६२८० भावप्रकाश निघंटु—मूल । सूक्ष्माक्षर ० १० ०

६२८१ भावप्रकाशनिघण्टु—टिप्पणी सहित । बड़ा प्राभाविक ग्रंथ है । अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली आदि भाषाओं में सर्व औषधियों के नाम दिये हैं । स्थूलाक्षर २ ० ०

६२८२ भावप्रकाश निघंटु—भाषा टीका सहित ३ ० ०

६२८३ भावप्रकाश निघंटु—रामतेज पाण्डेय मूल गुटका सटिप्पण १ ४ ०

६२८४ भारतभैषज्यरत्नाकर—(आयुर्वेदीय फार्माकोपिया) प्रामाणिक ग्रन्थों के चुने हुए लगभग दश हजार नुसखों का अकारादि क्रम से संग्रह पृथक् २ प्रकरणों में किया गया है । हिन्दी टीका भी साथ है । ५ भागों में सुनहरी पक्की जिल्द का ३६ ० ०

[इसके पृथक् भाग भी मिलते हैं । भाग १—४॥), भाग २—६॥), भाग ३—८), भाग ४—८), भाग ५—६)]

६२८५ भारतीय रसायन शास्त्र— ० ८ ०

६२८६ भूलोक का अमृत—(दूध) ० ५ ०

६२८७ भेषजविधान – (होमियोपैथिक) औषध प्रस्तुतप्रणालीविषयक ग्रन्थ । १ ४ ०

६२८८ भेल संहिता—महर्षि भेल प्रणीत । सजिल्द मूलमात्र ६ ० ०

६२८९ भैषज्यरत्नावली—श्री गोविन्ददाससेनकृत संस्कृत मूल और भाषा टीका सहित । टीकाकार पंडित शंकरलाल जी ६ ० ०

६२९० भैषज्यरत्नावली—जयदेव जी कृत भा० टी० ७ ० ०

६२९१ भैषज्यरत्नावली—विनोदलालसेन सटीक कलकत्ता ५ ० ०

६२९२ भैषज्यरत्नावली—भाषा टीका सहित लखनऊ ५ ० ०

६२९३ भोजन और स्वास्थ्य पर महात्मा गांधी के प्रयोग ० १२ ०

६२९४ भोजन शास्त्र— १ ८ ०

६२९५ मलावरोध चिकित्सा—कब्ज दूर करने के उपाय ० ५ ०

६२९६ मलेरिया रहस्य—डा० रामनारायण वैद्यशास्त्री ० १० ०

६२९७ मदनपालनिघण्टु—मूलमात्र १ ४ ०

६२९८ मदनपालनिघण्टु—हिन्दी ० १२ ०

६२९९ मदनपालनिघण्टु—पं० रामप्रसाद राजवैद्य पटियाला कृत भाषा टीका सहित सजिल्द । २ ८ ०

६३०० **मधुमेह डायाबिटीज़**—हिन्दी ० ८ ०

६३०१ **महामारी विवेचन**—भाषा टीका सहित । हैज़ा आदि के उपद्रव बढ़ने का शास्त्रानुसार विवेचन । ० ६ ०

६३०२ **मन्त्रखण्ड**—(रसरत्नाकरान्तर्गत) मूलमात्र । २ ० ०

६३०३ **मनुष्य का आहार**—हिन्दी । १ ० ०

६३०४ **महामारीनिदानम्**—संस्कृत व्याख्या सहितम् (प्राचीनार्वाचीनविषयोपनिबद्धम् । ० ६ ०

६३०५ **मधुचिकित्सा**— ० ३ ६

६३०६ **मन्थरज्वर की अनुभूत चिकित्सा**—स्वामी हरिशरणानन्द वैद्य विरचित । १ ० ०

६३०७ **मकरध्वज**— ० ८ ०

6308 Elephant lore of the Hindus. The Elephant Sport (Mātanga-līlā) of Nīlakaṇṭha. English translation, Notes & Glossary by F. Edgerton. 8 4 0

६३०९ **मानवसन्तति**—प्रसूतिशास्त्र अथवा युवतिसखा । १ ० ०

६३१० **माधवनिदान**—मूलग्रन्थ की हिन्दी भाषाटीका, मधुकोषनामक संस्कृत व्याख्या तथा मधुकोष की विस्तृत हिन्दी भाषाटीका सहित । टीकाकार आयुर्वेदाचार्य प्रो० दीनानाथ जी शास्त्री वैद्यवाचस्पति । संशोधक आयुर्वेदाचार्य प्रो० पूर्णानन्द जी पन्त । ५ ८ ०

राजसंस्करण । अतीव सुन्दर आर्टपेपर पर छपा है । १० ० ०

६३११ **माधवनिदान**—मूलमात्र । जेबी गुटका । प्रत्येक रोग के निदान प्रकरण में अवान्तर विषय को भली प्रकार जानने के लिये विषयों के शीर्षक भी दिये गये हैं। स्थूलाक्षर सजिल्द । ० १२ ०

६३१२ **माधवनिदान**—मधुकोष, आतंकदर्पण संस्कृतटीकाद्वय सहित स्थूलाक्षर ५), सूक्ष्माक्षर— २ ४ ०

६३१३ **माधवनिदान**—मधुकोष शब्दार्थ दीपिका दो संस्कृत टीकाओं सहित । १ ८ ०

६३१४ **माधवनिदान**—पं० दत्तराम कृत भाषाटीका सहित ग्लेज कागज़ । सजिल्द २ ८ ०

६३१५ **माधव परिशिष्ट**—(५० नवीन रोग संग्रह) । ० ४ ०

६३१६ **मानुषी अंग तथा स्वास्थ्य**—हिन्दी । ० १२ ०

६३१७ **मानवी आयुष्य (भाषा)**— ० ४ ०

६३१८ **मानवशरीररचना विज्ञान**—प्रथमखण्ड । भाषा में । लेखक डा० मुकुन्दस्वरूपवर्मा । बनारस ६ ० ०

६३१९ **मानव शरीर रहस्य**—भाषा । सजिल्द दो भाग । ५ ० ०

६३२० मिज़ानुतब्ब—अर्थात् सर्वांग चिकित्सा (हिकमत का अपूर्व ग्रंथ) हिन्दी। २ ० ०

६३२१ मुकलावा बहार—(सुसराल रहस्य) इसमें द्विरागमन के समय की आवश्यक शिक्षा, कोकशास्त्र सम्बन्धी कुछ उपयुक्त बातें, नपुंसकता की परीक्षित औषधियाँ, प्रसूति पीड़ा चिकित्सा, शिशु-रोग-चिकित्सा तथा कुछ भानमती के आश्चर्यजनक लटके भी हैं। यह पुस्तक गवर्नमैंट ने जब्त कर ली थी। ३ ० ०

६३२२ मूत्रपरीक्षा—पाश्चात्यमतानुसार, हिन्दी-कविराज शिवशरण वर्मा जी विरचित। ० १० ०

६३२३ मूत्रपरीक्षा—हिन्दी। ० ८ ०

६३२४ यकृत् और प्लीहा के रोग— ० ४ ०

६३२५ यम का दूत—प्लेग या ताउन का हाल भाषा। ० २ ०

६३२६ योग महोदधि—हिन्दी। ० ३ ०

६३२७ योगरत्नाकर—मूलमात्र। अतिस्थूलाक्षर सजिल्द पूना ५), सूक्ष्माक्षर। मुम्बई २ ८ ०

६३२८ योगरत्नाकर—भाषा टीका, २ भाग सजिल्द। १० ० ०

६३२९ योगतरंगिणी—श्रीत्रिमल्लभट्टविरचित। सटिप्पण सजिल्द। १ १२ ०

६३३० योगतरंगिणी—भाषा टीका। ३ ० ०

६३३१ योगेश्वर—मूल। ० ८ ०

६३३२ योग चिन्तामणि—भाषा टीका सहित। ग्लेज कागज २), तथा रफ कागज। १ १२ ०

६३३३ योगशतक—भाषा टीका। ० ६ ०

६३३४ योग चिकित्सा—शारीरिक और मानसिक क्रियाओं द्वारा रोग दूर करने का उपाय। ० २ ०

६३३५ रणवीर प्रकाश—स्वर्गीय श्रीमन्महाराजाधिराज श्री रणवीरसिंह जी जम्बू वा काश्मीर स्टेट द्वारा प्रकाशित। यह ग्रंथ उक्त महाराज ने भारत भर के बड़े २ प्रसिद्ध वैद्यों को एकत्र करके, बहुत-सा धन उनको देकर, आयुर्वैदिक के प्रचार के लिए वा भारतीय प्राचीन चिकित्सा प्रणाली को उच्च शिखर तक पहुँचाने के अर्थ, सकल वैद्यक शास्त्रों के सारांश रूप इस बृहत् ग्रंथ को बहुत ही सरल हिन्दी छंदों में सर्वसाधारण के सुभीते के लिए बनवाया था। बहुत ही सुन्दर पुष्ट कागज पर अभी द्वितीय बार छपा है। अक्षर भी बहुत स्थूल हैं। पृष्ठ संख्या ८०० दाम ११ ० ०

६३३६ रतिवल्लभ—भाषा टीका सहित कामशास्त्र का प्राचीन प्रशस्त ग्रन्थ। १ ८ ०

६३३७ रतिरत्न प्रदीपिका—सरल हिन्दी टीका सहित। १ ८ ०

६३३८ रतिरत्न प्रदीपिका—यह भी काम विषय का ग्रन्थ नवीन ही छपा है।

मूल पाठ तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित सजिल्द पुष्ट कागज (With English translation) ३ ० ०

६३३६ **रतिशास्त्र तथा रतिमञ्जरी**—भाषा टीका सहित सजिल्द। २ ० ०

६३४० **रतिमञ्जरी**—महाकवि जयदेव कृत भाषा टीका सहित। ० ३ ०

६३४१ **रतिरहस्य**—नाम कामशास्त्रग्रन्थ, महाकवि कोक्कोक विरचित, श्रीकाश्चीनाथ-कृतदीपिकानाम्नीसंस्कृतटीका सहित सटिप्पण। ३ ० ०

६३४२ **रतिरहस्य**—भाषा टीका सहित। २ ८ ०

६३४३ **रतिरोग रहस्य**—हिन्दी। १ ४ ०

६३४४ **रतिविलास**—The science of a happy married life. अनुवादक श्रीयुत संतरामजी बी. ए. सचित्र। १ ८ ०

६३४५ **रसचिकित्सा**—हिन्दी। ० ८ ०

६३४६ **रसमंजूषा**—हिन्दी। ० ५ ०

६३४७ **रसराजमहोदधि**—हिन्दी भाषा में। सर्व आयुर्वैदिक ग्रन्थों का सारांश निकालकर इसमें भर दिया गया है। छापा सुन्दर मुम्बई का। अक्षर स्थूल हैं। सजिल्द पाँच भागों का दाम ५)। जो सज्जन संस्कृत नहीं जानते परंच अपने ग्राम में वैद्य बनना चाहते हैं उनके लिए अति उपयोगी है। इस पुस्तक के पृथक् पृथक् भाग भी मिल सकते हैं। प्रथम भाग जिसमें यूनानी हिकमत और यूनानी दवा तथा फकीरों की जड़ी बूटी और सन्तों की पुस्तकों का संग्रह है; दाम १)। द्वितीय भाग में उपर्युक्त विषयानुसार शरबत, पाकविधि वर्णित है; दाम १)। तृतीय भाग १)। चतुर्थ भाग में सर्व रोगों के निदान, लक्षण, चिकित्सा और पथ्यापथ्य भी भली भांति लिखे हैं दाम १), पञ्चम भाग में प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार परमोपयोगी नुस्खों का संग्रह है। दाम— १ ४ ०

६३४८ **रसराजमहोदधि**—४ भाग एक जिल्द में। ४ ० ०

६३४९ **रसराज महौषधि**—पांचों भाग। विषय रसराजमहोदधि के अनुसार। दाम ५), पृथक् पृथक् भाग भी मिल सकते हैं। दाम प्रत्येक का १ ० ०

६३५० **रसजलनिधि**—अंग्रेजी अनुवाद सहित ४ भाग में सजिल्द स्थूलाक्षर, नवीन रसग्रन्थ। २४ ० ०

Rasa Jala Nidhi with English tran. by B. Mukerji. 4 Vols. 24 0 0

६३५१ **रसयोगसागर**—वैद्य हरिप्रपन्न कृत भाषा टीका सहित गहनस्थलों में संस्कृत विवरण। २ भाग में सम्पूर्ण। सजिल्द २२ ० ०

६३५२ **रसरत्नाकर**—सिद्धनित्यनाथप्रणीत। ला० शालिग्राम कृत भाषा टीका सहित। सम्पूर्ण सजिल्द। मुम्बई ८ ० ०

६३५३ **रसहृदयतन्त्रम्**—श्रीमद्भगवद्गोविन्दपाद. विरचितम्, मुग्धबोधिनी प्राचीन-संस्कृत टीकासहितम्। २ ० ०

६३५४ **रसराज सुन्दर (बृहद्)**—भाषा टीका सहित नवीन छठी आवृत्ति सचित्र । सजिल्द । ३ ४ ०

६३५५ **रसतरंगिणी**—श्री पं० सदानन्द शर्मणा विरचिता । श्री पं० हरिदत्त-शास्त्रिणा कृतया प्रसादिनी व्याख्यया समुद्भासिता च । द्वितीयं संस्करणम् । इसमें रसशाला, यंत्र तथा मूषा आदि के बनाने की विधि और रस उपरस, धातु उपधातु, रत्न-उपरत्न, विष-उपविष आदि के शोधन तथा मारण की अनेक विधियों के साथ २ उनकी मात्राएँ, गुण तथा अनुभूत आमयिक प्रयोगों का भी समावेश किया है । लवण द्रावक प्रभृति द्रावकों, सुवर्ण लवण प्रभृति धातवीय लवणों और पाक्य लवणों की निर्माणविधि, गुण मात्रा प्रयोग आदि का विस्तृत निरूपण किया गया है । ५ ० ०

६३५६ **रसरत्नसमुच्चय**—वाग्भटाचार्य प्रणीत मूलमात्र स्थूलाक्षर पुष्ट कागज पूना ३॥), मुम्बई २ ८ ०

६३५७ **रसरत्नसमुच्चय**—वाग्भटाचार्य विरचित भिषग्भूषण पं० शंकरलाल हरिशंकरकृत हिंदी भाषा टीका सहित । ५ ० ०

६३५८ **रसरत्न समुच्चय**—रसरत्नसमुच्चय बोधनी संस्कृत व्याख्या सहित । कलकत्ता ० ०

६३५९ **रसरत्नसमुच्चय**—वाग्भटाचार्य विरचित । सं० श्री सदाशिव शास्त्री । बढ़िया जिल्द । १ १२ ०

६३६० **रसरत्नसमुच्चय**—पं० हजारीलाल कृत दीपिका नामक संस्कृत टीका तथा भाषा टीका सहित । २ भाग । ८ ० ०

६३६१ **रस कौमुदी**—भाषाटीका सहित ० ८ ०

६३६२ **रस व्यञ्जन प्रकाश**—इसमें हर तरह के पक्वान्न और भात, साग, अचार इत्यादि किस रीति से तय्यार करना वर्णित है । ० १० ०

६३६३ **रसवैशेषिकसूत्रम्**—श्रीभदन्तनागार्जुनकृत, नरसिंहकृतभाष्योपेतम् । २ ८ ०

६३६४ **रसमंजरी**—भाषा टीका सहित । रस बनाने और धातु फूँकने की क्रिया का वर्णन । १ २ ०

६३६५ **रसचिन्तामणि**—भाषा टीका सहित । २ ० ०

६३६६ **रसप्रकाश सुधाकर**—श्री यशोधरविरचित तथा **रससंकेतकलिका**—एक जिल्द में । मूल २ ० ०

६३६७ **रसपद्धतिः**—श्रीबिन्दुविरचित, श्रीमहादेवविरचितटीकया सहिता, तथा **लोहसर्वस्वम्**—श्रीसुरेश्वरविरचितम् । एतद्ग्रन्थद्वयमेकत्र बद्धमेवोपलभ्यते । १ ८ ०

६३६८ **रसपरिज्ञान**—भाषा टीका । ० ११ ०

६३६९ **रसकामधेनुः**—श्री चूडामणिवैद्यसंगृहीता । उपकरणपादधातुसंग्रह-पाद-रसक्रिया-पाद—इति पादत्रयात्मकः ६०० पृष्ठात्मकः । प्रथम भाग ५), द्वितीय भाग—४ ० ०

६३७० **रसकामधेनु**—२ भाग । १ ० ०

६३७१ **रसप्रदीप**—भाषा टीका । ० ५ ०

६३७२ **रसतन्त्रसार वा सिद्धप्रयोग संग्रह**—लेखक ठाकुर नत्थूसिंह वर्मा। हिन्दी द्वितीयावृत्ति सजिल्द । ४ ८ ०

६३७३ **रसाध्याय**—सटीक । ० १० ०

६३७४ **रसायन विधि**—हिन्दी । ० १२ ०

६३७५ **रसायनसार**—श्यामसुन्दराचार्य विरचित । भाषा टीका । सजिल्द । बनारस ५ ० ०

६३७६ **रसायन तंत्र**—भाषा टीका सहित । ० २ ०

६३७७ **रसेन्द्रचिन्तामणि**—भाषा टीका सजिल्द । २ ० ०

६३७८ **रसेन्द्रचिन्तामणिः**—ढुण्ढुकनाथेन विरचितः । वैद्य श्री मणिराम-शास्त्रिणा निर्मितया 'मणिप्रभा' व्याख्ययोपेतः । सजिल्द ३ ८ ०

६३७९ **रसेन्द्रचूड़ामणि**—मूलमात्र । २ ० ०

६३८० **रसेन्द्रपुराण**—वैद्यरत्न पं० रामप्रसाद पटियाला राजवैद्यकृत भाषा टीका सहित इसमें रस उपरस धातु उपधातुओं का शोधन, मारण तथा यंत्रादिविधान और पारद के विशेष संस्कार अद्भुत हैं । ४ ० ०

६३८१ **रसेन्द्रसार संग्रहः**—श्री गोपालकृष्णसंकलित सचित्रः । पं० प्रयागदत्त-जोषी-आयुर्वेदाचार्यकृतया 'रसचन्द्रिकाख्यया' भाषाटीकया समुल्लसितः । अवशिष्टरोग-चिकित्सा-पुटप्रकरण-मूषाप्रकरण-मानपरिभाषा-अनुपानविधि-विशेषस्थल-टिप्पण्यादिना सम-लङ्कृत्य तेनैव च संशोधितः । काशी २ ८ ०

६३८२ **रसेन्द्र सारसंग्रह**—पं० रामप्रसादजी राजवैद्य कृत अति सरल भाषा टीका सहित ४) तथा पं० विद्याधर जी कृत भाषा टीका सहित लाहौर ३ ० ०

६३८३ **रसेन्द्रसारसंग्रह**—सटीक सचित्र । कलकत्ता २ ८ ०

६३८४ **रसेन्द्रसार संग्रह**—गूढ़ार्थ सन्दीपिका संस्कृत व्याख्या सहित । बनारस २ ८ ०

६३८५ **रसेन्द्रसारसंग्रहः**—बालबोधिनी-भागीरथी सहितः । काशी १ ० ०

६३८६ **रसेन्द्र भास्कर**—भाषा टीका सजिल्द । १ ६ ०

६३८७ **रसोपनिषद्**— २ ० ०

६३८८ **रसोद्धार तंत्र**—आयुर्वेद उपचार पद्धतिनामक चिकित्सा ग्रंथ । मूल संस्कृत तथा गुजराती अनुवाद । ३ ० ०

६३८९ **राजमार्त्तण्डः**—श्रीभोजमहाराजरचितः, **नाडीपरीक्षा**—श्री रावणकृता, **वैद्यमनोरमा**—श्रीकालिदासवैद्यविरचिता, तथा **धाराकल्पः**—एतद्ग्रन्थचतुष्टयमेकत्र बद्धमेवोपलभ्यते, द्वितीयं संस्करणम् । मूल्य १ ८ ०

६३९० **राजयक्ष्मा**—वै. वा. कविराज बलवन्तसिंह जी मोहन लिखित भाषा । १ ८ ०

६३६१ राजयक्ष्मा—पं० मुरारिलाल शर्मा वैद्यशास्त्री २ ४ ०

६३६२ राजनिघंटुसहितो धन्वन्तरिनिघंटुः— पूना ६ ० ०

६३६३ राजमार्त्तण्ड—भाषाटीका। सरल, अनुभूत प्रयोगों का अनुपम संग्रह ० ८ ०

६३६४ राजवल्लभ निघण्टु—भाषा टीका सहित सजिल्द १ ८ ०

६३६५ रामविनोद—हिन्दी। पद्मरंग शिष्य रामचन्द्र रचित। इसमें शुभाशुभ शकुनों का परिज्ञान, साध्यासाध्य लक्षण, चूर्ण, तैल, अंजन, अवलेह, गोली आदि बनाने की विधि और यंत्र, मंत्र, गंडा आदि उपायों से रोग निवारण रीति वर्णित है। छापा मुम्बई सजिल्द १ ६ ०

६३६६ रामविनोद—भाषा। छापा लखनऊ १ ० ०

६३६७ रोगपरीक्षा पद्धति—हिन्दी। डा० आशानन्दपञ्चरत्नकृत। सन् १६३६। लाहौर ५ ० ०

६३६८ रोगविनिश्चयः—प्रतिसंस्कृतः। कवि श्री यामिनी भूषणरायकृतः। मूलमात्रः। ३ ० ०

६३६६ रोगों की अचूकचिकित्सा—जानकीशरण वर्मा १ ८ ०

६४०० लक्ष्मी मोदतरङ्गिणी—संस्कृत। मेरठ ० १२ ०

६४०१ वटिका चिकित्सा—हिन्दी। कानपुर ० ८ ०

६४०२ विजयाकल्प—भाषा टीका ० ४ ०

६४०३ विष चिकित्सा दर्पण—हिन्दी ० ४ ०

६४०४ वमन कल्पतरु—इसमें कै अर्थात् उल्टी कराने की औषधियाँ और क्रियाएँ वाग्भटानुसार लिखी हैं। भाषाटीका ० २ ६

६४०५ वसवराजीयम्—वैद्यवर श्री वसवराजविरचितम् (आंध्र भाषा तात्पर्य-सहितं सटिप्पणम्) ५ ० ०

६४०६ वङ्गसेन—मूलमात्र। ५ ० ०

६४०७ वङ्गसेन—लाला शालिग्राम कृत भाषा टीका १० ० ०

६४०८ ,, लखनऊ ग्लेज पुष्ट कागज ६ ० ०

६४०९ वस्ति चिकित्सा अथवा इञ्जेक्शन विधान—पहला भाग। कानपुर ० ८ ०

६४१० वाजीवाहप्रकाश—अर्थात् घोड़े फेरने की विद्या और चाबुक सवारी की कुंजी। हिन्दी ० ५ ०

६४११ विष तंत्र चिकित्साप्रकाश—भाषा टीका। ० १४ ०

६४१२ विषतंत्रम्—कविराज श्री यामिनीभूषणरायकृतम्। संस्कृतमूलमात्रम्। ३ ० ०

६४१३ विरेचन कल्पलता—जुलाब लेने की गुणकारक औषधियों का संग्रह। भाषाटीका। ० २ ६

६४१४ धीरसिंहावलोक—मूलमात्र सजिल्द । २ ० ०

६४१५ वृन्द माधव—(सिद्ध योग) श्रीमद् वृन्दप्रणीत श्रीकंठदत्त विरचित कुसुमावल्याख्य टीका समेत । पूना ६ १२ ०

६४१६ वृन्द वैद्यक—भाषा टीका सहित सजिल्द । इसमें अनेकों ज्वर, संग्रहणी, अर्श, विसूचिका आदि रोगों की चिकित्सा ७२ अधिकारों में वर्णित है और सर्व प्रकार के क्वाथ कषाय, चूर्ण, अवलेह, मोदक, तैल, घृत, अंजन आदि बनाने की उत्तम रीति लिखी हैं । मुम्बई ४ ० ०

६४१७ वेश्या गमन—चन्द्रशेखर पाठक । २ ० ०

६४१८ वैद्य चन्द्रोदय—भाषा टीका सहित । ० ८ ०

६४१९ वैद्यक परिभाषा प्रदीपः—मूलमात्र । ० ८ ०

६४२० वैद्यकपरिभाषाप्रदीप—औषधियों की योजना में तोल, माप, और बदला अर्थात् प्रतिनिधि तथा वर्ग, चूर्ण आदिकों की योजना का वर्णन भली प्रकार है। भाषा टीका सहित । सजिल्द १ ४ ०

६४२१ वैद्यक परिभाषा-प्रदीप—श्रीमद्गोविन्दसेनसंकलित: । आयुर्वेदाचार्य-पं० प्रयागदत्त जोषि कृतया प्रदीपिकाख्यया भाषाटीकया समुल्लसितः । काशी ० १० ०

६४२२ वैद्यक शब्द कोष— ० ४ ०

६४२३ वैद्यक शब्दसिन्धुः—आयुर्वेदीयशब्दौषध-नाम-निर्णायको बृहत्कोषग्रन्थः । कविराज उमेशचन्द्रगुप्तकविरत्नेन संकलितः । (छपता है)

६४२४ वैद्यकल्पद्रुम—पं० रघुनाथ प्रसाद सीताराम शुक्ल कृत भाषा टीका सहित । सम्पूर्ण सजिल्द । ५ ० ०

६४२५ वैद्यजीवन—भाषा टीका । ० ८ ०

६४२६ वैद्यजीवन—भाषा टीका । बनारस ० १० ०

६४२७ वैद्य जीवन—लोलिम्बराजकृत । इसमें श्रृंगाररसप्रधान रोगों की चिकित्सा लिखी है । संस्कृत तथा भाषा टीका सहित । सजिल्द । छापा मुम्बई, ग्लेज कागज । १ ६ ०

६४२८ वैद्यजीवन—लोलिम्बराज भाषा टीका । सजिल्द बनारस । ० १० ०

६४२९ वैद्यरहस्य—पं० दत्तराम चौबेकृत भाषाटीका । २ ८ ०

६४३० वैद्यरत्न—भाषा टीका सहित । १ ८ ०

६४३१ वैद्यक रसराज महोदधि—भाषा सम्पूर्ण चार भाग । सजिल्द ४ ० ०

६४३२ वैद्यक रसराज महोदधि—सम्पूर्ण । पाँच भाग में सजिल्द ५ ० ०

६४३३ वैद्य मनोरमा और धाराकल्प—भाषा टीका सहित । १ ० ०

६४३४ वैद्यविनोदसंहिता—मूल । १ १२ ०

६४३५ वैद्य विनोद—पं० कृष्णलाल कृत भाषा टीका सहित । सजिल्द २ ८ ०

६४३६ वैद्यकशिक्षा—कविराज नगेन्द्रनाथसेन विरचित । चरक, सुश्रुत, वाग्भटादि

आयुर्वेद ग्रन्थों के अवलम्बन से हिन्दी भाषा मे बनाई हुई आयुर्वेद शास्त्र के यावतीय जानने लायक विषयों की सचित्र पुस्तक। छपती है।

६४३७ वैद्यवल्लभ—हस्तिरुचिकृत। भाषा टीका सहित। ० ८ ०

६४३८ वैद्यसर्वस्व—भाषा टीका सहित। ० ५ ०

६४३९ वैद्यकसार—भाषा टीका समेत। ० ५ ०

६४४० वैदिक चिकित्सा शास्त्र— ० ६ ०

६४४१ वैद्यकौस्तुभ—मेवाराम मिश्र प्रणीत मूल। १ ८ ०

६४४२ वैद्यकशब्दनिधि—वैद्यक शब्दों का हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, मराठी और यूनानी कोष, गोपीनाथ वैद्य प्रणीत। ० ८ ०

६४४३ वैद्यकदेवप्रकाश—इसमें अनेक रोगों की औषधों का वर्णन दोहा चौपाई में है। ० २ ०

६४४४ वैद्यप्रिया—भाषा छन्दोबद्ध नवीन संस्करण। लखनऊ १ ० ०

६४४५ वैद्यप्रिया—हिन्दी ० १० ०

६४४६ वैद्यक कलाधर—प्रथम भाग हिन्दी ० १४ ०

६४४७ वैद्यमनोत्सव—भाषा ० ४ ०

६४४८ वैद्यावतंस—(लघु निघण्टु) ० ३ ०

६४४९ वैद्यहृदय—भाषा टीका सहित ० ६ ०

६४५० व्यञ्जनप्रकाश—भाषा। चारों भाग ० ५ ०

६४५१ व्यञ्जनपाकप्रदीप—पाँचों भाग १ ८ ०

६४५२ व्याधि विज्ञान—आयुर्वेदाचार्य डाक्टर आशानंद जी विरचित। दो भाग। हिन्दी ६ ८ ०

६४५३ व्यापारमहोदधि—१ भाग। इसमें तेल, शर्बत, साबुन, स्याही, सब प्रकार के बर्तन जोडने की विधि, धातु उपधातु आदि के भस्म, मुरब्बा, चटनी और अनेक अद्भुत विषय हैं। ० १० ०

६४५४ व्यापारमहोदधि—२ भाग। इसमें मिठाई, व्यञ्जन आदि बनाना, वार्निश आदि कारीगरी, रामबाण दवाओं के नुस्खे आदि हैं। ० १० ०

६४५५ व्यवहारायुर्वेद—अथवा कानूनी वैद्यक परिशिष्ट और विषचिकित्सा सहित। ले० पं० कृष्ण बलवन्त। २ ० ०

६४५६ व्रणबन्धन वा पट्टियां—कविराज शिवशरण वर्मा वैद्यरत्न विरचित। भाषा ७० चित्र सहित। ० ६ ०

६४५७ व्रणोपचारपद्धति—महावीरप्रसाद मालवीय। ० ६ ०

६४५८ शरीर पुष्टि विधान—हिन्दी। ० ६ ०

६४५९ शरीर और शरीर रक्षा—हिन्दी। ० ८ ०

६४६० शक्तिसंचय—नपुंसकता, नामर्दी, स्वप्नदोष आदि पर डाक्टरों की अब तक की जाँच और नुस्खे। १ ० ०

६४६१ **शल्यतन्त्र समुच्चय**—श्रीवामदेवमिश्रेण संकलितः। बांकीपुर। २ ० ०

६४६२ **शार्ङ्गधरसंहिता**—तथा अंजननिदान-मूलमात्र। सजिल्द मुम्बई १ ० ०

६४६३ **शार्ङ्गधरसंहिता**—भिषग्वराढमल्ल विरचित दीपिका पं० काशीरामवैद्य-विरचितगूढ़ार्थदीपिकाभ्यां टीकाभ्यां संवलिता। छापा मुम्बई। सजिल्द सुन्दर टाइप ५ ० ०

६४६४ **शार्ङ्गधरसंहिता**—हिन्दी भाषाटीका सहित। टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य कविराज श्रीहरदयाल जी वैद्यवाचस्पति। टीकाकार महोदय ने प्रत्येक श्लोक की टीका के नीचे अपने वक्तव्य (विशेष नोट) दिए हैं। जिनसे प्रत्येक विषय की तत्सम्बन्धी अन्य आवश्यक बातें एक ही स्थान पर पाठकों को प्राप्त होतीं हैं। सन्दिग्ध स्थलों पर शास्त्रीय प्रमाणों से सन्देह मिटाने का सफल प्रयत्न किया गया है। एक बार इस टीका के पढ़ने से पाठक इस योग्य अवश्य हो जाता है कि वह गुरु की सहायता के बिना प्रत्येक योग को बिना परिश्रम के सिद्ध कर सके। इस पुस्तक की सूची में एक और विशेषता योजित कर दी गई है कि उसमें रोगानुसार सूची दे दी गई है, जिससे रोगों के अनुसार प्रत्येक योग को अत्यन्त सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। यह विशेषता आपको इसी शार्ङ्गधर में प्राप्त होगी। मूल्य ४ ० ०

६४६५ **शार्ङ्गधरसंहिता**—वैद्य पं० रामेश्वरभट्ट विरचित भाषा टीका सहित। सजिल्द। ३ ४ ०

६४६६ **शार्ङ्गधरसंहिता**—पं० रामप्रसाद कृत भाषा टीका सहित। छापा मुम्बई। सजिल्द। ग्लेज़ कागज ३ ८ ०

६४६७ **शार्ङ्गधरसंहिता**—दीपिका व्याख्या। कलकत्ता ३ ८ ०

६४६८ **शालाक्यतंत्र**—यामिनीभूषणरायकृत। मूल ३ ० ०

६४६९ **शालिहोत्र**—बड़ा अर्थात् अश्व विचार सचित्र। बिना जिल्द मुम्बई ० १२ ०

६४७० **शालिहोत्र संग्रह**—बड़ा छन्दोबद्ध भाषा में घोड़ों के लक्षण, रोग, निदान और औषधों आदि का चित्रों सहित वर्णन है। सजिल्द सम्पूर्ण २ ८ ०

६४७१ **शालिहोत्र**—नकुलकृत घोड़ों के रोगों की चिकित्सा चित्रों सहित वर्णित है ० १० ०

६४७२ **शालिहोत्र**—सूर्यकृत भाषा वार्तिक। ० ६ ०

६४७३ **शालिग्राम निघण्टु भूषण**—लाला शालिग्राम संकलित। इसमें अनेक देश देशान्तरीय, संस्कृत, हिन्दी, बंगाली, मराठी, गौर्जरी, द्राविड़ी, तैलंगी, औत्कली, इङ्गलिश, लैटिन, फारसी, अरबी भाषाओं में सर्व औषधों के नाम और गुणों का वर्णन औषधियों के चित्रों समेत दिया है। छापा मुम्बई। सजिल्द। १२ ० ०

६४७४ **शालिग्रामौषध शब्दसागर**—अर्थात् आयुर्वेदीय औषधि कोष—भाषा टीका सहित। २ ८ ०

६४७५ **शिरावेधन प्रकाश**—देवकीनन्दन शर्मा ० ६ ०

६४७६ **शिशुपालन**—अथवा बालकों के पालन पोषण की विधि सचित्र और नुस्खों सहित । ले० कविराज बलवन्तसिंह १ ० ०

६४७७ **शिवनाथसागर**—अनेकानेक ग्रन्थों से चुनी हुई दवाइयों का बृहत् संग्रह भाषा । सजिल्द मुंबई ३ ० ०

६४७८ **शिफाउल अमराज़**—दो भाग २ ८ ०

६४७९ **शीतलारोगनाशक**—(भवानी विनय सहित) ० २ ०

६४८० **शीतलापरिहार**—अर्थात् **आरोग्यामृत बिन्दु**—भाषा में सम्पूर्ण १ ८ ०

६४८१ **शुभसन्ततियोग प्रकाश**—भाषाटीका सहित सजिल्द १ ८ ०

६४८२ **श्वासरोगचिकित्सा**—अनुभूतप्रयोगों सहित १ ० ०

६४८३ **संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा**—(होमियोपैथिक) हिन्दी १ ८ ०

६४८४ **संक्षिप्त शल्य विज्ञान**—ले० डाक्टर मुकुंदस्वरूप वर्मा एम. बी. बी. एस । अपने विषय का पहला प्रसिद्ध ग्रंथ ६ ८ ०

६४८५ **संक्षिप्त स्वास्थ्य रक्षा**—भाषा । ॥≈), सजिल्द १ ५ ०

६४८६ **सचित्र आयुर्वैदिक इञ्जेक्शन विज्ञान** (रजिस्टर्ड)—वैद्यशास्त्री डा० राधागोविन्द मिश्रकृत । हिन्दी । झांसी ५ ० ०

६४८७ **सचित्र इञ्जेक्शन चिकित्सा**—सुई की पिचकारी द्वारा रोगों की चिकित्सा की अनूठी पुस्तक । सजिल्द १ ४ ०

६४८८ **संज्ञापंज्यकाविमर्श**—म० म० गणनाथसेन १ ० ०

६४८९ **संततिनिरोधरहस्य**—(Birth Conrol) सचित्र ले० कविराज डा० रामनारायण वैद्यशास्त्री ० १० ०

६४९० **संततिरहस्य**—सचित्र ले० कविराज डा० रामनारायण वैद्यशास्त्री । सचित्र ० ८ ०

६४९१ **सन्ततिशास्त्र**—श्री अयोध्याप्रसाद भार्गव १ ८ ०

६४९२ **संतान मंजरी**—भाषाटीका सहित । इसमें सुसंतान हितकारी पुरुषकर्तव्य, ऋतु आदि काल में स्त्री कर्तव्य भली भाँति वर्णित हैं । ० ३ ०

६४९३ **संतानशास्त्र**—भाषा टीका । ले० भीमसेन शर्मा ० ५ ०

६४९४ **सन्दिग्धनिर्णय वनौषध शास्त्र**—२ भाग । भाषा । पं० भागीरथ स्वामी कृत । कलकत्ता ४ ० ०

६४९५ **सफलता का रहस्य**—(How Success is won) का अनुवाद १ ० ०

६४९६ **सरल आयुर्वेदीय शिक्षा**—(बंगला से अनुवादित) रोगों का वर्णन, चिकित्सा, पथ्य अपथ्य से पूर्ण सजिल्द २ ० ०

६४९७ **सरल चिकित्सा किंवा अनुभूतयोग माला**—ले० रा० वै० किशोरीदत्त शास्त्री २ ० ०

६४९८ सरल पारिवारिक चिकित्सा—(होमियोपैथिक) हिन्दी २ १३ ०

६४९९ सरल रोग विज्ञान— ३ ० ०

६५०० सरलरोगी परिचर्या शिक्षा—डा० श्यामाचरण दे की पुस्तक शुश्रूषा का हिन्दी अनुवाद २ ० ०

६५०१ सर्पविषविज्ञान—सर्पविष की अनुभूत चिकित्सा १ ४ ०

६५०२ सर्वविषचिकित्सा— ० ८ ०

६५०३ सहस्र रसदर्पण—(रसहज़ारा) हिन्दी सजिल्द ० १४ ०

६५०४ साधारण नेत्ररोग—भाषा श्रीयुत डा० यादवजी हंसराज जी वैद्य विरचित। १ ० ०

६५०५ साधारण रसायन—२ भाग। लेखक—फूलदेवसहाय 'वर्मा' एम० एस-सी०, ए० आई० आई० एस-सी० प्रयाग ८ ० ०

६५०६ सिद्ध प्रयोग—ले० पं० विश्वेश्वरदयाल जी। २ भाग भाषा टीका। १ ८ ०

६५०७ सिद्ध भैषज्य मञ्जूषा—आयुर्वेदाचार्य पं० जयदेव शास्त्रि रचितम्। प्रथमं प्रकोष्ठम्। साहित्याचार्य शास्त्रि पंडित हनुमत्प्रसाद निर्मित संस्कृत टीकोपेता सजिल्द। ३ ० ०

६५०८ सिद्धभैषज्यमणिमाला—व्यासोपाह्य राजवैद्य भट्ट श्रीकृष्णराम कवि गुम्फिता। भिषगाचार्य लक्ष्मीराम कृत टिप्पण्युदङ्किता। छपता है।

६५०९ सिद्ध प्रयोग पारिजात—सचित्र प्रथम भाग। लेखक पं० मुरारिलाल शर्मा वैद्यशास्त्री। १ ४ ०

६५१० सिद्धमन्त्र—वैद्यवर श्रीकेशवविरचित, महामहोपाध्याय श्री बोपदेवप्रणीत संस्कृतटीका तथा वातघ्नत्वादिनिर्णय—नागेशभट्टशिष्य नारायणभिषग्विरचित, स्वकृत संस्कृत टीकासहित। सिद्धमन्त्रवत् मनन करने योग्य उक्त दोनों ग्रन्थों में द्रव्यशक्तितत्त्व अर्थात् औषधों के रोगनाशनसामर्थ्य का निरूपण है। ० १२ ०

६५११ सिद्ध-योगावली—(५०० पांच सौ से अधिक शतशोऽनुभूत सिद्ध योगों का अभूतपूर्व संग्रह) सङ्कलयिता कविराज नरेन्द्रनाथ शास्त्री आयुर्वेदाचार्य। इस पुस्तक में शताब्दियों से प्राचीन वैद्य घरानों में प्रयुक्त होने वाले, जटिल एवं भयङ्कर रोगों को क्षण में दूर कर, चिकित्सक समाज में कीर्ति फैलाने वाले अत्यन्त गोपनीय पांच सौ से अधिक सिद्ध योग प्रकाशित किये गये हैं। मूल्य ० १० ०

६५१२ सिद्धान्तनिदानम्—महामहोपाध्याय कविराज श्री गणनाथ सेन इत्याख्येन विरचितम्, तत्कृतया "तत्त्वदर्शिनी" संज्ञया विवृत्या सहितम् प्रथम खंड। कलकत्ता। अजिल्द २), सजिल्द— २ ८ ०

६५१३ सिद्धौषधमणिमाला—हिन्दी। पं० भागीरथस्वामिकृत। उत्तमोत्तम योगों का संग्रह। २ ८ ०

६५१४ सिद्धौषधिप्रकाश—पं० बालमुकुन्द वैद्य शास्त्री प्रणीत। १ ८ ०

६५१५ **सिर का दर्द**—हिन्दी। ० ८ ०

६५१६ **सुखी गृहिणी**—स्त्रियों के स्वास्थ्य सम्बन्धी। १ ० ०

६५१७ **सुखी जीवन**—हिन्दी। १ ० ०

६५१८ **सुगमचिकित्सा**—भाषा। ० २ ०

६५१६ **सुलभचिकित्सासागर**—इसमें छोटे मोटे बहुत से रोगों की चिकित्सा और उपाय ठीक ठीक वर्णित हैं। इसके संग्रह से वैद्य या डाक्टर की आवश्यकता बहुत कम रहेगी। १ ४ ०

६५२० **सुश्रुतसंहिता**—भाषा टीकासहित। टीकाकार—डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर बी० एस्० सी०, एम्० बी० बी० एस्० (बॉम्बे) आयुर्वेदाचार्य प्रथम भाग—सूत्र-निदानस्थानात्मक ५), राजसंस्करण। अतीव सुन्दर आर्टपेपर पर छपा है। १० ० ०

[इसका शारीर स्थान अत्यन्त विस्तृत टीका सहित छप रहा है। ऐसा शारीर-स्थान आगे कभी नहीं छपा]

६५२१ **सुश्रुतसंहिता**—सान्वय सटिप्पण सपरिशिष्ट पं० मुरलीधर कृत भाषा टीका सहित। चार भाग में। सम्पूर्ण सुन्दर ग्लेज पुष्ट कागज। छापा मुम्बई। सजिल्द दाम १६), इसके पृथक् २ भाग भी मिल सकते हैं। **प्रथम भाग** सूत्रस्थान ४॥), **द्वितीय भाग** निदान व शारीर स्थान २॥), **तृतीय भाग** चिकित्सा व कल्पस्थान ५), **चतुर्थ भाग** उत्तरतंत्र। ४ ८ ०

६५२२ **सुश्रुतसंहिता**—डल्हण कृत संस्कृत टीका सम्पूर्ण। इसमें निदान स्थान पर गयदासकृत टीका भी छपी है। १० ० ०

६५२३ **सुश्रुतसंहिता**—केवल शारीरस्थान, पं० जयदेव शास्त्री आयुर्वेदाचार्य कृत भाषानुवाद सहित। १ ८ ०

६५२४ **सुश्रुतसंहिता**—मूलमात्र सजिल्द। ४ ० ०

६५२५ **सुईचिकित्सा**—इंजेक्शन द्वारा रोगों की चिकित्सा चित्र सहित। १ ४ ०

६५२६ **सूची वेध चिकित्सा**—हिन्दी। ० ८ ०

६५२७ **सूजाक चिकित्सा संग्रह**—गणेशदत्त शास्त्री कृत भाषा टीका। ० ४ ०

६५२८ **सूर्यकिरणचिकित्सा**—हिन्दी लेखक गोविन्द बापूजी टोंगू। १ ८ ०

६५२६ **सौंफ चिकित्सा**—हिन्दी। ० ४ ०

६५३० **स्त्रियों के रोग** १ ० ०

६५३१ **स्त्रीचिकित्सा**—भाषाटीकासहित। स्त्रियों के सम्पूर्ण रोगों की निदानपूर्वक अनुभूत चिकित्सा के साथ अमोघ वन्ध्या चिकित्सा का ग्रन्थ। ० ६ ०

६५३२ **स्त्रीपुरुषसञ्जीवन**—भाषाटीका सहित। इसमें ऋतुप्राप्ति का शुभाशुभ फल, ऋतु आदि काल में पुरुष का आचार रजवीर्य की शुद्धि, वृद्धि के उपाय तथा गर्भ-पोषणादि विषय हैं। ० ८ ०

६५३३ स्त्री रोग चिकित्सा—चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालु जी वैद्यराज। ० ८ ०

६५३४ स्त्रीरोग चिकित्सा—(होमियोपैथिक)। २ ० ०

६५३५ स्त्रीरोगप्रकाश—स्त्रियों के मुख्य मुख्य कठिन रोगों का निदान, लक्षण और चिकित्सा—हिन्दी। १० ०

६५३६ स्नान चिकित्सा— ० ६ ०

६५३७ स्वस्थवृत्त समुच्चय—पं० राजेश्वरदत्त शास्त्रि कृतः। बनारस २ ० ०

६५३८ स्वप्नदोष रक्षक—भाषा में। पं० गणेशदत्त शर्म्मा गौड़ कृत। ० ८ ०

६५३९ स्वास्थ्य उपदेश—हिन्दी। ० २ ०

६५४० स्वास्थ्य और दीर्घायु—Health and Long Life नामक अंग्रेजी पुस्तक से अनुवादित। इस शरीर विज्ञान के अतिरिक्त साधारण रोगों की निवृत्ति के उपाय नवीनतम पाश्चात्य खोज के अनुसार बतलाए गए हैं। ५ ० ०

६५४१ स्वास्थ्य का मूल मन्त्र—(ब्रह्मचर्य) (Secret of Health) श्रीभानुदत्त जी वैद्य मुलतानी कृत। १ ० ०

६५४२ स्वास्थ्य और रोग—लेखक-डाक्टर त्रिलोकीनाथ जी वर्मा। ४०७ चित्रों सहित। अपने विषय की यह पहली पुस्तक है। ७ ० ०

६५४३ स्वास्थ्य के प्राकृतिक साधन—हिन्दी। १ ० ०

६५४४ स्वास्थ्यचिन्तामणि—श्रीमत् सदानन्द प्राणाचार्य कृत सरल हिन्दी भाषानुवाद सहित। ० ४ ०

६५४५ स्वास्थ्यरक्षा—वैद्य हरिदास विरचित। हिन्दी। मनुष्य किस प्रकार से संसार में दीर्घजीवी और यशस्वी हो सकता है—इस विषय को इसमें समझाया गया है। अनेक नुसखे भी दिये गये है। प्रत्येक पुरुष के पढ़ने योग्य है। ३ ० ०

६५४६ स्वास्थ्य विज्ञान—लेखक-डा० भा० गो० घाणेकर। २ ० ०

६५४७ स्वास्थ्य विज्ञान—श्रीमती डा० चन्द्रकान्ता देवी M. D. H., लेक्चरर। इलाहाबाद मैडिकल कालेज। ३ ० ०

६५४८ स्वास्थ्य-विज्ञान—भाषा में। लेखक—डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। एम० बी०, बी० एस०। बनारस ६ ० ०

६५४९ स्वास्थ्यशिक्षापाठावलि—डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर (संस्कृत)। ० ८ ०

६५५० स्वास्थ्य संलाप—हिन्दी। ० १० ०

६५५१ हंसराजनिदान—भाषा टीका। सजिल्द। मुम्बई १ ६ ०

६५५२ हमारे शरीर की रचना—शरीर के प्रत्येक अङ्ग तथा उपाङ्ग का सविस्तर वर्णन। चित्र भी साथ ही दिये गये हैं। डाक्टर त्रिलोकीनाथ वर्मा विरचित। कुल ३१२ चित्र हैं। २ भाग में सम्पूर्ण सजिल्द। हिन्दी। ६ १४ ०

६५५३ **हम सौ वर्ष कैसे जीवें**—हिन्दी। १ ० ०

६५५४ **हरमेखला**—दो भाग। २ ० ०

६५५५ **हरिधारितग्रन्थरत्नम्**—भाषाटीका सहित। ० ६ ०

६५५६ **हरीतक्यादिनिघण्टु**—भावमिश्रकृत। राजवैद्य वैद्यरत्न पं० रामप्रसादात्मज विद्यालङ्कार शिवशर्मा वैद्यशास्त्रिकृत शिवप्रकाशिका नामक भाषाटीका सहित। इसमें औषधों के अंग्रेजी नाम तथा फारसी औषधियों के संस्कृत नाम व संस्कृत नामों के फारसी नाम भी लिखे हैं। ३ ० ०

६५५७ **हस्त्यायुर्वेद**—पालकाप्यमुनि प्रणीत मूलमात्र। पूना ७ ६ ०

६५५८ **हारीत संहिता**—मूलमात्र। कलकत्ता २ ८ ०

६५५९ **हारीत संहिता**—पं० रविदत्तकृत भाषा टीका सहित तथा राजवैद्य पं० मुरलीधर जी संशोधित। इसके ६ स्थानों में सम्पूर्ण धान्य आदि वर्ग और औषधों का गुण, दोष और रोगों की संप्राप्ति, लक्षण, निदान तथा चिकित्सादि वर्णित हैं। सजिल्द ५ ० ०

६५६० **हिन्दी होमियोपैथिक मेटीरिया मेडिका**—दो भाग डा० रविप्रसाद मिश्र एम० बी० संकलित। १ १२ ०

६५६१ **हितोपदेशवैद्यक**—भाषाटीका सहित। मुम्बई १ १२ ०

६५६२ **हिकमत प्रकाश**—हिन्दी। १ १२ ०

६५६३ **'हैजा' अथवा 'कालरा का काल'**—पं० प्रभाशंकर वैद्य शास्त्री कृत। सागर १ ८ ०

६५६४ **हृदयप्रियः**—परमेश्वररचित। ३ ० ०

होमियोपैथिक की चुनी हुई कुछ परमोपयोगी हिन्दी पुस्तकें

६५६५ **जननेन्द्रिय के रोग**—'भेषज विधान' रचयिता द्वारा प्रणीत। सूजाक, गर्मी वगैरह रतिज रोग सहित। १ ० ०

६५६६ **नरदेह परिचय** (होमियोपैथिक)—सजिल्द। १ ८ ०

६५६७ **पारिवारिक चिकित्सा**—होमियोपैथिक चिकित्सा की अत्युत्कृष्ट पुस्तक—श्रीमहेशचन्द्र भट्टाचार्य कर्तृक और संगृहीत और प्रकाशित। आठवाँ संस्करण। पृष्ठसंख्या १६०० से ऊपर सजिल्द। ४ ० ०

६५६८ **पारिवारिक भेषज तत्त्व**—संक्षिप्त मेटीरिया मेडिका। एम् भट्टाचार्य एण्ड को। पृष्ठसंख्या १५०० के ऊपर। सजिल्द ५ ० ०

६५६९ **बायोकेमिकल चिकित्सा विज्ञान**—हिन्दी ४ ८ ०

६५७० **बृहत् मेटेरिया मेडिका**—मनोरञ्जन बनर्जी। पृष्ठसंख्या ५०० के ऊपर। सजिल्द ४ ० ०

६५७१ **भेषज विधान**—औषध-प्रस्तुत-प्रणाली विषयक बढ़िया जिल्द १ ४ ०

६५७२ सचित्र नरदेह परिचय—'भेषज विधान' रचयिता द्वारा प्रणीत और एक प्रवीण चिकित्सक द्वारा संशोधित। महेशचन्द्र भट्टाचार्य एण्ड को संगृहीत। पृष्ठसंख्या लगभग २०० बढ़िया जिल्द सहित १ ८ ०

६५७३ संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा—घर के अभिभावक, धर्मप्रचारक, परिव्राजक और नवसिखुओं के व्यवहार के लिए। 'भेषज विधान' रचयिता द्वारा प्रणीत। पृष्ठ संख्या लगभग ३५०। सजिल्द १ ८ ०

६५७४ स्त्री रोग चिकित्सा— २ ८ ०

६५७५ हिन्दी मटेरिया मेडिका—होमियोपैथिक चिकित्सा की सर्वोत्तम पुस्तक। डाक्टर रविप्रसाद मिश्र। दो भाग। १ १२ ०

६५७६ होमियोपैथिक चिकित्सातत्त्व— ० ८ ०

६५७७ होमियोपैथिक बायोकैमिकचिकित्सा— १ ० ०

६५७८ होम्योपैथिक भेषजलक्षण संग्रह—हिन्दी। २ भाग। १७ ० ०

६५७९ होमियोपैथिक मैटीरिया मेडिका—डाक्टर एस० जी० मुकर्जी। पृष्ठसंख्या लगभग ६००। सजिल्द। १६ ० ०

६५८० होमियोपैथिक सारसंग्रह—पारिवारिक व्यवहार के लिए उत्तम पुस्तक। एम्० भट्टाचार्य एण्ड को०। पृष्ठसंख्या लगभग ३५०। सजिल्द गुटका। ० १२ ०

६५८१ होमियोपैथिक भेषजरत्नाकर—डा० ई० बी० नैश ऐम० डी० लिखित Leaders in Homœopathic Therapeutics का भाषान्तर। कलकत्ता ४ ४ ०

६५८२ हैजाचिकित्सा—(Hand-Book of Cholera) भेषज लक्षण और प्रदर्शिका समेत। विद्यार्थी, चिकित्सक, प्रचारक, परिव्राजक और अभिभावकों के लिए। श्रीयुत महेशचन्द्र भट्टाचार्य द्वारा संगृहीत। बढ़िया जिल्द १ ४ ०

6583 Ayurveda or the Hindu system of Medicine—By B. V. Raman. Madras 0 10 0

6584 Ayurveda or the Hindu system of Medicine—An outline of Ayurveda for layman and the advanced. 6 6 0

6585 Ayurvedic Conception—about Urine Formation in the Human Body—by Dr. B. G. Ghanekar Hindu University. Benares 0 2 0

6586 Ayurvedic System of Medicine by Kaviraj Nagendra Nath Sen Gupta. 3 Vols. English. 12 0 0

6587 Comparative study of Ayurveda and treatment by Indian Drugs—Most useful for village Hakims and

Vaidyas. Prescriptions are given made out of Bazar drugs easily obtainable in the bazars of almost all villages. Theory of Ayurvedic medicine has been explained and so also treatment in the body of the book and prescriptions given to avoid over-dosing by people practising this system of medicine. Theory of Allopathic medicine has been explained along with this. By Lieut.-Col. P. K. Chitale. 2 8 0

6588 Comparative Survey of the Ayurvedic Nosology—By Ayurvedacharya Dr. Bhaskar Govind Ghanekar, B. Sc., M. B. B. S. 1 0 0

6589 Diabetes Mellitus and its Diatetic Treatment. 15th edition. By B. D. Basu and L. M. Basu. 2 0 0

6590 Erotic Science (For private circulation only) Confidential Talks to youngmen (ब्रह्मचर्य)—By Prof. Satyavrata Siddhantalankar. Hardwar 3 0 0

6591 Germ Theory and Its place in Indian Medicine—By B. G. Ghanekar, M. B. and B. S. Benares 0 1 0

6592 Hindu Medicine—By M. M. Gananatha Sen. 0 8 0

6593 Hindu Pharmacopoeia—By A. R. S. Sundaram Bhishak. It contains only those prescriptions of the Shastras that are chiefly used by the Vaidyas and which have been proved to be efficacious in practice. It is a convenient pocket manual to the Ayurvedic medical practitioners. Madras 1 6 0

6594 History of Hindu Chemistry from the earliest times to the middle of the 16th century, with Sanskrit texts, Variants, translation. Illustrated. Dr. P. C. Roy. 2 Vols. 8 0 0

6595 History of Indian Medicine—By Girindra Nath Mukhopadhyaya. Containing Notices biographical and bibliography of the Ayurvedic physicians and their works on medicine from the earliest ages to the present time. 3 Vols. 18 0 0

6596 Ideal Management of Pregnancy—By C. V. Pink, M. R. C. S.; L. R. C. P. 5 0 0

6597 Ideal Marriage—Being a complete Solution to the Sex difficulties confronting a man during his younger days and Married Life. By Prof. H. S. Gambers. Amritsar 3 8 0

6598 Indian Indigenous Drugs, their medical and economical aspects by R. N. Chopra. Lt.-Col. 15 0 0

6599 Indian Materia Medica—By K. N. Nadkarni. 15 8 0

6600 Indian Medicinal Plants by Lieut.—Col. K. R. Kirtikar and Major B. D. Basu. 2 Vols. 1000 photos. 275 0 0

6601 Indian Medicinal Plants—By Lient.-Col. K. R. Kirtikar, F. L. S., I. M. S. (Retired), and Major B. D. Basu, I. M. S. (Retd.), and an I. C. S. (Retired). Second Edition, edited and much enlarged by Rev. Father E. Blatter, S. J., Rev. Father J. F. Caius, S. J., F. L. S., M.S.C.I. (Paris) and K. S. Mhaskar, M. D., M. A., B. Sc., D. P. H., D. T. M. & H. Complete in 8 Vols., including plates. 320 0 0

6602 Indian Medicine and Formulas—An Eight-hundred year old book of Indian Medicine and Formulas. Translated from the original very old Hindi into Gujrati character and thence into English, by Elizabeth Sharpe. Foreign 6 0 0

6603 Indian Therapeutics for medical students and practitioners. By Dr. D. V. Sandu. Bombay 1 8 0

6604 Kama Sutram. German translation by R. Schmidt. 12 0

6605 Kama Sutra—English translation. 4 0 0

6606 Medicinal Drugs of India by Dr. B. S. Mohan. 2 8 0

6607 Philosophy of Ayurveda with Practical Medi-

Acines on Stone, sthma, Cancer, Pthysis, Beri-Beri, Pox, Plague, &c. &c.—By Kaviraj Kumudranjan Ray, M. A., Bhishagāchāryya. 1 0 0

6608 Physical Culture—By Dr. Jai Chand Sharma. Lahore 1 0 0

6609 Sex Organs—English. 2 8 0

6610 Sexual Life in Ancient India—A Study in the comparative history of Indian culture. By J. J. Meyer. Two volumes. London 36 0 0

6611 Some aspects of Hindu medical treatment and 2 psychotherapic tales by D. Chaplin. 3 8 0

6612 Studies in the Vatsyayana's Kama Sutra by H. C. Chakladhar. 4 8 0

6613 Surgical Instruments of the Hindus. 2 Vols. by Girindranath Mukhopadhyaya. 9 0 0

6614 System of Ayurveda by Kaviraj Pt. Shiv Sharma. English. 8 0 0

6615 Treatment of Syphilis—By Girindra Nath Mukherji, B. A., M. D. 4 0 0

6616 Vanaspati—Hindu knowledge of Botany and its application to the sciences of Medicine and Agriculture by Girija Prasanna Majumdar, M. Sc. 3 12 0

ज्योतिष-ग्रन्थाः

६६१७ **अद्भुततरंगिणी**—बलभद्र मिश्र संगृहीत मूल। लखनऊ ० ८ ०

६६१८ **अद्भुतसागरः**—वल्लालसेनदेवविरचित। यह शाकुनिक ग्रन्थ है। इसमें अनेक उत्पातादि विषयों का संग्रह है। काशी ५ ० ०

६६१९ **अधिक मासपरीक्षा**—महामहोपाध्याय दुर्गाप्रसाद द्विवेदिकृत सटिप्पण। मुम्बई ० ४ ०

६६२० **अयोध्याजातक**—अयोध्याप्रसाद संगृहीत तत्कृत भाषा टीका सहित। इससे जन्म से मरण-पर्यन्त समस्त भविष्य फल कहा जा सकता है। मुम्बई ० ४ ०

६६२१ **अर्घप्रकाश**—(रविदत्त) तत्कृत भाषा टीका सहित। इसमें तेजी मंदी दिखाने का विचार भली भांति लिखा गया है। मुम्बई ० ५ ०

६६२२ **अहिबल चक्र**—(नरपतिजयचर्योक्त)—सीतारामझाकृत सोदाहरण सान्वय भाषा टीका। भूमिस्थितद्रव्यशल्यादि का ज्ञान। बनारस ० २ ०

६६२३ **आनन्दप्रकाश**—भाषाटीका समेत । इसमें रोग की स्थिति, असाध्य रोगादि की शान्ति, रोगमुक्ति, स्नान दानादि कितने ही उत्तम विषय लिखे गये हैं ।
मुम्बई ० ३ ०

६६२४ **आर्यभटीयम्**—गार्ग्यकेरल नीलकण्ठ सोमसुत्व विरचित संस्कृत भाष्योपेतम् । २ भाग । त्रिवेन्द्रम् ३ ८ ०

६६२५ **आर्यभटीयम्**—(आर्यभट) परमेश्वराचार्यकृत संस्कृत टीका तथा पं० उदयनारायण कृत भाषा टीका सहित । विधुपुर १ ० ०

६६२६ **श्रीमदार्यभटीयम्**—परमादीश्वरविरचित भटदीपिकासहितम् – A manual of Astronomy, edited by Dr. H. Kern. Leiden 10 8 0

6627 The Aryabhatiya of Aryabhatta—An ancient Indian work on Mathematics and Astronomy, translated with notes by Walter Eugene Clark. Chicago 8 10 0

६६२८ **आर्यासप्तति:**—भट्टोत्पलाचार्य्य प्रणीता । मुकुन्दरामकृत "आशुबोध" संस्कृत टीका सहिता । मुम्बई ० ४ ०

६६२९ **आशुबोध ज्योतिष**—(महादेवजी) मूल । पंचांग ज्ञान, सामान्य मुहूर्त्त का विचार, जन्मपत्र वर्षफल का गणित करने की सरल युक्तियां । रतलाम ० ४ ०

६६३० **उपपत्तीन्दुशेखर:**—श्री ६ बापूदेवशास्त्रिणां विशेषैः सह यावत्सिद्धान्तसंग्रहपूर्वकं 'शिरोमणि' परिष्कार: । जयपुरमहाराजाश्रितसत्सम्प्रदायाचार्य-महामहोपाध्याय-श्रीदुर्गाप्रसादद्विवेदेन संकलित: । अहमदाबाद ४ ० ०

६६३१ **उपश्रुतिशकुन**—(मीठालाल व्यास) व्यासतनसुखकृत भा० टी० सहित । इससे पुरुष, स्त्री, बालक के शब्दों के शकुनों द्वारा प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी का निर्णय होता है ।
मुम्बई ० ३ ०

६६३२ **एक दिन में ज्योतिषी**— ० ८ ०

६६३३ **करणकल्पलता**—श्री केशवलक्ष्मण प्रणीता । शुद्ध पञ्चांगोपयोगी नवीन करण ग्रन्थ ।
पूना ५ ० ०

६६३४ **करणकुतूहल**—(भास्कराचार्य) हर्षगणिकृत गणककुमुदकौमुद्याख्य-सोदाहरणसंस्कृत टीका सहित ।
मुम्बई ० १२ ०

६६३५ **करणकौस्तुभ**—कृष्णदैवज्ञकृत मूल । पूना ० ६ ०

६६३६ **करणपद्धति:**— ० ४ ०

६६३७ **करणप्रकाश:**—ब्रह्मदेवकृत: । सुधाकर द्विवेदिकृत शेषसाधन, आसन्नमान, चक्रवालोपपत्ति, आसन्न मूलमान, दृढाङ्कसिद्धान्त सहित । मूल । काशी १ ८ ०

६६३८ **करणेन्दुशेखर**—(ब्रह्मानन्द) रवि आदि ग्रहों की सारिणी । मूल ।
मुम्बई ० ४ ०

६६३९ **कररेखासंख्यावली**—(विष्णुदास) भाषा छन्दोबद्ध सामुद्रिक ।
मुम्बई ० ४ ०

६६४० कर्मविपाक—मान्धातृमहीभुजकृत सजिल्द । मुम्बई १ ८ ०

६६४१ कर्मविपाक संहिता—मूलमात्र । मुम्बई ० १४ ०

६६४२ कर्मविपाक संहिता—नक्षत्रचरणफलप्रदर्शिका । रविदेवजी कृत भाषा टीका सहित । स्थूलाक्षर १ १२ ०

६६४३ कर्मविपाक संहिता—(ब्रह्मपुराणान्तर्गत) नक्षत्रचरणगतश्यामसुन्दर-लालत्रिपाठि कृत भाषा टीका सहित । मुम्बई १ ६ ०

६६४४ कर्मविपाकसंहिता—(ब्रह्मपुराणान्तर्गत) नक्षत्रचरणगत । शिवगोविन्द कृत भाषाटीका सहित । लखनऊ १ ४ ०

६६४५ कर्मसिद्धान्तदीपिका—(वाचस्पति) मूलमात्र । मुम्बई ० २ ०

६६४६ कल्पलता—सोमदैवज्ञविरचिता । काशी

६६४७ कालविज्ञान तथा सृष्टिसंवत्—(जगन्नाथप्रसाद) हिन्दी । बिलासपुर १ ४ ०

६६४८ कुण्डलीकल्पतरुः—(पं० ज्येष्ठाराममुकुन्दजी शर्मा) खुले पत्रे । मुम्बई ० ६ ०

६६४९ केतकीग्रहगणितम्—(वेंकटेश) स्वकृतया अङ्कविवृतिव्याख्यया सहितम् । दत्तरामविरचितेन केतकपरिमलेन वासनाभाष्येण समुल्लसितम् । पूना ५ १० ०

६६५० केरलीयजातक—(दीनानाथशुक्ल) भाषा छन्दोबद्ध । केरल मत से ग्रहों का द्वादशस्थानगत भाव फल । मुम्बई ० ५ ०

६६५१ केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रह—(शालिग्राम) तत्कृत भषा टीका सहित । मुम्बई ० ६ ०

६६५२ केरलप्रश्न—भाषाटीका । मुम्बई ० ४ ०

६६५३ केरलीयप्रश्नरत्न—ज्योतिर्वित् पं० नन्दरामकृत । सुन्दरलालशर्माकृत भाषाटीका सहित । मुम्बई १ ० ०

६६५४ केरलप्रश्नसंग्रह—नारायणप्रसादकृत भाषाटीका सहित । प्रश्न कहने में अत्युत्तम । मुम्बई ० ६ ०

६६५५ केशवीजातक—(केशवदैवज्ञकृत) बच्चूझाकृत सान्वय सोदाहरण भाषा-टीका सहित । ग्लेज कागज सजिल्द । मुम्बई २ ० ०

६६५६ केशवीजातक—(केशवदैवज्ञ) सीताराम झा कृत सोदाहरण सोपपत्ति भाषाटीका सहित । बनारस १ ४ ०

६६५७ क्रीडाकौशल्य—(हरिकृष्ण वैंकटराम) भाषाटीका सहित । इसमें मुहूर्त, प्रश्न, मन्त्र-यन्त्रादि साधन, पांसे, गंजीफे, ताश, दशावल्लरी, ज्ञानपद, श्मशानदूत, साक्षीक्रीडा, विधिक्रीडा, इष्टदेवतादर्शन, शतरंज आदि अनेक प्रकार के विचित्र खेलों और बालक्रीडा, रासक्रीडादि का वर्णन चित्रों समेत है । ग्लेज कागज सजिल्द । मुम्बई २ ० ०

६६५८ क्षेत्रप्रकाश—(ज्योतिष) इसमें पांच अध्यायों में खेत तथा मकान आदि मापने की विधि बहुत सरलतापूर्वक वर्णित है । मुम्बई १ ० ०

६६५९ क्षेत्रमिति अर्थात् रेखागणित—(पूर्वार्ध) पण्डित श्रीदुर्गाप्रसादजी द्विवेदीप्रणीत और पं० गिरिजाप्रसाद द्विवेदीकृत क्षेत्रमिति विशेषसहित। लखनऊ १ ० ०

६६६० खण्डखाद्यकं नाम करणम्—गणचक्र चूडामणि श्री ब्रह्मगुप्ताचार्यकृतं पं० श्रोमराजशर्मकृतया वासनाभाष्य नामिकया टीकया सहितम्। कलकत्ता २ ० ०

6661 Khandakhadyaka an astronomical treatise of Brahmagupta, translated into English with an introduction, notes, illustrations and an appendix by Prabodhachandra Sengupta, M. A. 3 8 0

६६६२ खेटक कौतुक—(नवाब खानखाना) सीताराम झा कृत भाषा टीका सहित। ० ३ ०

६६६३ गणकतरङ्गिणी—पं० सुधाकरद्विवेदिनिर्मिता। बनारस १ ८ ०

६६६४ गणित कौमुदी—हिन्दी भाषा टीका प्रश्नपत्र सहिता। प्रथमापरीक्षापाठ्य-निर्धारित गणित संग्रहपुस्तकम्। काशी ० ६ ०

६६६५ गणितकौमुदी—नारायणपण्डितविरचिता। प्रथमो भागः।

Ganita Kaumudi—By Nārāyana Pandita. [It is an ancient mathematical work published for the first time]. Part I. Allahabad 1 10 0

६६६६ गणिततिलकम्—श्रीपतिविरचितम्। श्रीसिंहतिलकसूरिसन्दृब्धवृत्तिसमेतम्। Critically edited with Introduction and appendices by H. R. Kapadia. Baroda 4 0 0

६६६७ गणिताध्यायः—श्रीभास्कराचार्यविरचितः। 'वासना' संस्कृत टीका सहितः क्षेत्रचित्रसमन्वितश्च। कलकत्ता १ ४ ०

६६६८ गणिताध्यायः—(भास्कराचार्य) तत्कृतवासनासंस्कृतभाष्य, गिरिजाप्रसाद कृत प्रभानामक संस्कृत टिप्पण, भाषा भाष्य, उपपत्ति और विविध पाठटिप्पणी सहित। लखनऊ २ ८ ०

६६६९ गणिताध्यायः—(भास्कराचार्य) तत्कृत 'वासना' संस्कृतभाष्य तथा बापूदेव शास्त्रिकृत टिप्पणी सहित। २ ० ०

६६७० गर्गमनोरमा—संस्कृत टीका तथा भाषा टीका सहित इसमें प्रश्न से गर्भस्थ पुत्रकन्यादि का ज्ञान, मैष्टिकादि वस्तु ज्ञान तथा द्रव्योत्पादनादि प्रकार सुगम रीति से वर्णित है। मुम्बई ० ६ ०

६६७१ गर्गमनोरमा—झोपाख्य पं० श्री सीतारामशर्ममैथिलेन विरचितया सोदाहरणहिन्दी टीकया विलसिता। काशी ≈), तथा भाषा टीका मुम्बई ० ३ ०

६६७२ गोलतत्त्वप्रकाशिका—(विश्वेश्वरदत्त) तत्कृत भाषा टीका सहित सचित्र। इस पुस्तक में पृथिवी का चलना इत्यादि कितनी ही अपूर्व बातों का स्थापन, सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि आदि ग्रन्थों के प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। मुम्बई १ ० ०

६६७३ **गोलदीपिका**—श्रीपरमेश्वर प्रणीत। मद्रास ० ४ ०

६६७४ **गोलद्वय प्रश्न**·········**आकर्षणशास्त्र** (Problem of two bodies)—by V. B. Ketkar with demonstrations and examples. Bijapur 2 4 0

६६७५ **गोलप्रकाश**—श्रीनीलाम्बरशर्म्मप्रणीत। दुष्प्राप्य बनारस १५ ० ०

६६७६ **गोलप्रकाश**—गोलीय रेखागणित और चापीय त्रिकोण गणित (नीलाम्बर), चन्द्रशेखरझाकृत सोपपत्तिक संस्कृत व्याख्या व टिप्पण सहित। मुम्बई ० १४ ०

६६७७ **गोलाध्याय**—(भास्कराचार्य) तत्कृत 'वासना' संस्कृतभाष्य, तथा बापूदेवशास्त्रिकृत टिप्पणी सहित। २ ० ०

६६७८ **गोलाध्याय**—(भास्कराचार्य) तत्कृत 'वासना' भाष्य, गिरिजाप्रसाद द्विवेदिकृत 'प्रभा' नामक संस्कृत टिप्पण, भाषाटीका, उपपत्ति और विविधपादटिप्पणी सहित। लखनऊ १ १४ ०

६६७९ **गोलाध्यायः**—सिद्धान्तशिरोमणेर्वासनाभाष्यसहितः । श्रीभास्कराचार्यविरचितः। कलकत्ता १ ० ०

६६८० **गोलाध्याय**—(भास्कराचार्य) उदयनारायणसिंहकृत भाषाटीका सहित। १ ४ ०

६६८१ **गोलीयरेखागणितम्**—(नीलाम्बर) परिशिष्ट विशेषोक्त गोलीय रेखा गणित सहितम। तथा सुधाकर द्विवेदिकृत गोलीयरेखागणितम् । श्रीराजवंशीझाकृत संस्कृतटीका सहितम्। तथा सीताराम-झा-कृत गोलबोधः तेनैव विरचित टीकया सहितः। बनारस ० १२ ०

६६८२ **गौरीजातक**—ईश्वरीप्रसादकृत भाषाटीका सहित। मुम्बई ० २ ०

६६८३ **ग्रह आणी ग्रहचा परिणाम**—ज्योतिषरत्न पं० श्रीनिवास महादेवजोश मी राजज्योतिषीकृत। रतलाम ० ८ ०

६६८४ **ग्रहगोचर**—श्री शालिग्रामसंगृहीत, तत्कृत भाषाटीका सहित। मुम्बई ० २ ६

६६८५ **ग्रहगोचरज्योतिष**—खुले पत्रे। डाकोर ० २ ०

६६८६ **ग्रहनक्षत्र**—श्रीजगदानन्दरायप्रणीत पुस्तक का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक नन्दकिशोर, एम० वी, बी० ए०। प्रयाग २ ० ०

६६८७ **ग्रहफलदर्पण**—(मीठालाल व्यास) तत्कृत भाषाटीका सहित। ग्रहण के पश्चात् तेजी मंदी का विचार। मुम्बई ० १२ ०

६६८८ **ग्रहराशिदर्पणसारिणी**—(अग्निप्रसाद) संक्रान्तिदर्पण, ग्रहोदयास्तादि विचार, अन्तर्दशा, विदशा, जन्मपत्रनिर्माणविधि, भावफलादि विचार सहित। बनारस २ ८ ०

६६८९ **ग्रहलाघव**—(गणेशदैवज्ञ) सीताराम झा कृत संस्कृत और भाषाटीकाद्वय सहित सोदाहरण सोपपत्तिक। बनारस २ ४ ०

६६९० ग्रहलाघव—(गणेशदैवज्ञ) पं० रामस्वरूपकृत सान्वय भाषाटीका और उदाहरण सहित । ग्लेज कागज । मुम्बई १ ८ ०

६६९१ सटीकग्रहलाघव – खुले पत्रे । मुम्बई १ ४ ०

६६९२ ग्रहलाघवकरण—(गणेशदैवज्ञ) मल्लारि और विश्वनाथकृत संस्कृत टीका तथा सुधाकर द्विवेदीकृत संस्कृत व्याख्या सहित । मुम्बई ४ ० ०

६६९३ ग्रहलाघवसारिणी—(गंगाधरवर्मा) भाषा सोदाहरण । इससे तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रहादि की स्पष्टता तथा ग्रहयुद्ध, शुक्रास्त, सूर्यचन्द्र ग्रहण आदि का ज्ञान बहुत ही शीघ्र होता है । मुम्बई १ ० ०

६६९४ चक्रावलीसंग्रहाध्याय—(बृहज्ज्योतिषार्णवान्तर्गत) संस्कृत टीका सहित । व्यवहार में प्रायः जिन जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है उन सब के ३६२ चक्र इसमें हैं । इसके सिवाय विष्णुयाग, शिवयाग, देवीयागादि के चक्र, वास्तुचक्र, युद्ध के अनेक अपूर्व चक्र इत्यादिकों के उद्धार तथा स्वरूप इसमें दिखाये गये हैं । मुम्बई २ ८ ०

६६९५ चमत्कार चिन्तामणिः—श्रीनारायणभट्टविरचितः । सान्वयभावप्रबोधिनी भाषाटीकासहितः । काशी ० ३ ०

६६९६ चमत्कारचिन्तामणि—(भट्टनारायण) महीधरशर्माकृत भाषा टीका सहित । भावफलादेश । मुम्बई ० ४ ०

६६९७ चमत्कारज्योतिष—(नारायणप्रसाद) तत्कृत भा० टी० सहित । मूक प्रश्न विषय । मुम्बई ० १२ ०

६६९८ चमत्कारमेघमाला—भाडली-शकुनवत् । मुम्बई ० ४ ०

६६९९ चलनकलन—स्वर्गीय पं० सुधाकर द्विवेदिकृत । लखनऊ १ ८ ०

६७०० जन्मपत्रदीपक—सोदाहरण सटिप्पण हिन्दी टीका परिष्कृत । काशी ० ८ ०

६७०१ जन्मपत्रिका—सचित्र सजिल्द । इसमें सविस्तर जन्मकुण्डली लिखने के लिए शास्त्रानुसार समस्त कोष्ठक और पाठ अनेक रंगों में छपे हैं । खानापुरी करने से पूरी जन्मकुण्डली तय्यार हो जाती है । मुम्बई ० १२ ०

६७०२ जन्मपत्रिकाविधानम्—(जीवनाथ शर्मा) पूर्वार्द्ध संस्कृतटीकोपेतम् । बनारस १ ४ ०

६७०३ जन्मपत्री बनाने का सचित्र कोष्ठादि— मुम्बई ० ४ ०

६७०४ जन्मपत्री प्रदीप—भाषा टीका सहित । मुम्बई ० १२ ०

6705 Jâtaka-Kalānidhi—(English) By Surya Narayana Rao. 0 9 0

६७०६ जातकचन्द्रिका—खुले पत्रे । मुम्बई ० ८ ०

६७०७ जातकचन्द्रिका—याज्ञिकनाथकृत मूल । लखनऊ ० ६ ०

६७०८ जातकचन्द्रिका—भाषा टीका सहित । मुम्बई १ ० ०

6709 Jataka Chandrika—Edited with text and English translation by B. Surya Narayana Rao. 2 2 0

६७१० जातकतत्त्व—(महादेव) श्रीनिवासशर्मकृत तत्त्वप्रदर्शिनी भाषा टीका सहित। रतलाम ४ ० ०

६७११ जातकपद्धति—श्रीकेशवदैवज्ञविरचित। दैवज्ञदिवाकरकृत प्रौढमनोरमाख्य व्याख्या सहित। बनारस ० १२ ०

६७१२ जातकपारिजातः—वैद्यनाथकृतः। भाण्डारिकुलोत्पन्नहरितनुजनुषा माधवशास्त्रिणा संशोधितः टिप्पण्या च समलंकृतः। काशी २ ० ०

6713 Jâtaka Pārijāta (**जातकपारिजात**) of Vaidyanatha Dikshita with an English translation and copious explanatory notes and examples by V. Subrahmaṇya Shastri, B. A. Two Volumes. Bangalore 14 0 0

६७१४ जातकशिरोमणि—पं० महीधरकृत भाषाटीकासहित। मुम्बई २ ० ०

६७१५ जातकसंग्रह—(लक्ष्मणदास) मूल। मुम्बई ० १४ ०

६७१६ जातकसंग्रह—(लक्ष्मणदास) श्री काशिरामविरचित भाषा टीका सहित। मुम्बई ३ ० ०

६७१७ जातकाभरण—ढुंढिराजकृत मूल। सामुद्रिक लक्षणाध्याय सहित। मुम्बई १ ० ०

६७१८ जातकाभरण—ढुंढिराजकृत मूल। लखनऊ ० ५ ६

६७१९ जातकाभरण—भाषा टीका सहित सजिल्द। लखनऊ १ ८ ०

६७२० जातकाभरण—(ढुंढिराजविरचित) श्यामलाल जी कृत भाषा टीका सहित सजिल्द। मुम्बई ३ ० ०

६७२१ जातकाभरण—(ढुंढिराजविरचित) चतुर्वेदि वनमालिकृत मलमार्जनी भाषा टीका सहित। मथुरा ३ ० ०

६७२२ जातकालंकार—(गणेशदैवज्ञ) हरभानुकृत संस्कृतटीका तथा सीताराम शर्मा कृत भाषा टीका। बनारस ० ५ ०

६७२३ जातकालंकार—भाषा टीका सहित। लखनऊ ० ३ ०

६७२४ जैन ज्योतिष तिथिपत्रिका—३५ वर्ष की, विक्रमसंवत् १९७२ से २००७ पर्यन्त। लाहौर १ ० ०

६७२५ जैमिनि पद्यामृतम्—(दुर्गाप्रसाद द्विवेदी) जैमिनिसूत्राणां व्याख्यानम्। मूल, कन्दलीवृत्ति, उदाहरण और कारिका सहित। मुम्बई १ ० ०

६७२६ जैमिनीयसूत्र—नीलकण्ठकृत सुबोधिनी संस्कृत टीका सहित। मुम्बई ० ७ ०

६७२७ जैमिनीयसूत्र—सीताराम झा कृत संस्कृत तथा भाषा टीका सहित। बनारस ० १२ ०

६७२८ **जैमिनीयसूत्र**—केशवाचार्यकृत कारिका तथा पं० विष्णुदत्तकृत भाषा टीका सहित । ० ४ ०

६७२९ **जैमिनीयसूत्र**—काशीरामकृत भाषा टीका सहित । मुम्बई ० १२ ०

6730 Jaiminisutras—English translation with full notes and original texts in transliteration. By Prof. B. Suryanarain Row, B. A., M. R. A. S., F. R. H. S. 2 2 0

६७३१ **जैमिनीसूत्र**—पं० रामरत्न अवस्थी कृत भाषानुवाद । लखनऊ ० ५ ०

६७३२ **ज्ञानस्वरोदय**—भाषा (चरणदास जी कृत) मुम्बई ० ३ ०

६७३३ **ज्योतिर्गणितम्**—स्वकृतव्याख्योदाहरणकोष्ठकादिभिः समलंकृतम् । श्री वेङ्कटेशरामकृष्णकेतकरैर्विरचितम् । द्वितीयं मुद्रणम् (Second edition revised and enlarged) १२ १२ ०

६७३४ **ज्योतिर्निबन्धः**—शूरमहाठ श्री शिवराज) मूल । अत्र सार्धषट्शती-संख्याक विषया निर्णयमापादिताः सन्ति । पूना ३ १५ ०

६७३५ **ज्योतिर्विदाभरणम्**—(कालिदास) भावमुनि विरचित 'सुबोधिका' संस्कृत टीका सहित । मुम्बई २ ८ ०

६७३६ **ज्योतिर्विलास**—(सहदेव भाडली) सरल हिन्दी पद्य में, जिसमें सहदेव और भाडली के संवाद में चमत्कारिक ज्योतिष का गूढ़ तत्त्व वर्णित है । मुम्बई ० ४ ०

६७३७ **ज्योतिश्चक्रम्**— बनारस ० ८ ०

६७३८ **ज्योतिषकल्पद्रुम्**—(शम्भुसिंहै) भाषा इस ग्रन्थ में चोरी, रोगोत्पत्ति, भोजन, मृत्यु, स्वप्न, विवाह, शकुन, नद्यागमयात्रा तथा वृद्धि इत्यादि प्रकरण हैं । मुम्बई २ ० ०

६७३९ **ज्योतिष की चाभी**—भाषा । मुम्बई ० १ ०

६७४० **ज्योतिष की लावनी**—(घनश्याम व्यास) मुम्बई ० १ ०

६७४१ **ज्योतिषचन्द्रार्क**—(रुद्रदेव) गोपालदत्त शर्मा कृत "काशिका" संस्कृत टीका सहित । लखनऊ ३ ० ०

६७४२ **ज्योतिष चमत्कारसमीक्षा**—(रामदत्त शर्मा) भाषा टीका सहित । इटावा ० ८ ०

६७४३ **ज्योतिष तत्त्व प्रकाश**—(दैवज्ञचक्रचूड़ामणि)—पं० लक्ष्मीकान्त कृत भाषा टीका सहित । लखनऊ ४ ० ०

६७४४ **ज्योतिष तत्त्वविवेक निबन्ध**—महीधरशर्म संगृहीत तत्कृतभाषा टीका सहित । मुम्बई ० ८ ०

६७४५ **ज्योतिष तत्त्व सुधार्णव**—श्यामसुन्दरलालकृत भाषा टीका और टिप्पणी सहित । मुम्बई ४ ० ०

६७४६ **ज्यौतिषवेदाङ्ग**—सुधाकरद्विवेदिकृत टीका सहित । बनारस १ ० ०

६७४७ **ज्योतिःशास्त्रनिघण्टु**— मुम्बई ० २ ०

६७४८ **ज्योतिषश्यामसंग्रह**—पं० श्यामसुन्दरकृत भाषाटीका सहित । चक्रोदाहरणयुक्त । ग्लेज़ काग़ज़ । मुम्बई ३ ० ०

६७४९ **ज्योतिषसार**—(शुकदेव) केशवप्रसाद द्विवेदिकृत भाषाटीका ग्लेज कागज १॥), रफ— मुम्बई १ ४ ०

६७५० **ज्योतिषसारसंग्रह**—(जैनाचार्य प्रणीत) भगवानूदास जैन कृत हिन्दी अनुवाद सहित । कलकत्ता ० १२ ०

६७५१ **ज्यौतिषसिद्धान्तसंग्रहः**—तत्र सोम-ब्रह्मपितामह वृद्धवशिष्ठसिद्धान्ताः । पं० विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदिना संस्कृतः । सम्पूर्णः । बनारस २ ४ ०

६७५२ **ज्योतिषसिद्धान्तसारसंग्रह**—पं० सूर्यनारायण सिद्धान्ती कृत । लखनऊ ० ५ ०

६७५३ **ज्योतिस्सारावली**—(पं० कन्हैयालाल) आज तक भाषा में ऐसी पुस्तक ज्योतिष के विषय की नहीं छपी । लखनऊ ० ३ ०

६७५४ **तत्त्वप्रदीपजातक**—(श्रीपति) काशीरामविरचित भाषा टीका सहित । मुम्बई ० २ ६

६७५५ **ताजिक नीलकण्ठी**—(नीलकण्ठ) विश्वनाथदैवज्ञकृत संस्कृत टीका तथा पं० सीताराम झा कृत टिप्पण सहित । बनारस १ ४ ०

६७५६ **ताजिक नीलकण्ठी**—(नीलकण्ठ) विश्वनाथ दैवज्ञकृत संस्कृत टीका सहित । तन्त्रत्रयात्मक । इसमें वर्षफल बनाने का पूरा हाल और वर्षान्त दशाफल, द्वादशभाव और प्रश्नतन्त्र में अनेक प्रकार के प्रश्न-विषय चमत्कारिक हैं । ग्लेज कागज सजिल्द । १।=), रफ कागज मुम्बई १ २ ०

६७५७ **ताजिक नीलकण्ठी**—तीनों तन्त्रों सहित सटीक । मुम्बई १ ० ०

६७५८ **ताजिक नीलकण्ठी**—स्वर्गीय पं० शक्तिधरशास्त्रिकृत भावप्रकाशिका टीका तथा उदाहरण अन्वय सहित । लखनऊ १ ४ ०

६७५९ **ताजिक नीलकण्ठी**—आचार्य नीलकण्ठविरचिता ज्यौतिषाचार्य-तीर्थ-साहित्यरत्न पं० श्री सीतारामशर्मकृत गूढार्थप्रकाशिकाख्यया सान्वयोदाहरणोपपत्ति-सरलभाषा-व्याख्यया सहिता । काशी १ १० ०

६७६० **ताजिक नीलकण्ठी**—ज्योतिर्विन्मुकुटमणि नीलकण्ठदैवज्ञ विरचिता पं० बाबू शास्त्रिरचित भाषा टीका सहिता च । रफकागज मुम्बई १ ८ ०

६७६१ **ताजिक नीलकण्ठी**—(नीलकण्ठ) पं० महीधरकृत भाषा सहित । ग्लेज कागज सजिल्द १॥।), रफ कागज मुम्बई १ ८ ०

६७६२ **ताजिक भूषण**—(गणेश दैवज्ञ) सीतारामशास्त्रिकृत भाषा टीका सहित । इसमें वर्षपत्रिका-सम्बन्धी फलादेश विस्तार पूर्वक है । मुम्बई ० १० ०

६७६३ **ताजिक संग्रह**—कन्हैयालालकृत भाषा टीका मुम्बई ० ६ ०

६७६४ ताजिकसारः–(हरिहर भट्ट) हर्षगणिविरचितया कारिकाख्यया व्याख्यया समलंकृतः। मुम्बई ० १२ ०

६७६५ तात्कालिक भृगुप्रश्न—अर्थात् प्रश्नकल्पवृक्ष—पं० हरदेवसहायकृत मेरठ १ ० ०

६७६६ तिथिचिन्तामणिः—गणेशदैवज्ञकृतः। भाषा टीका सहितः। काशी ० ४ ०

६७६७ तिथ्यर्कः—श्रीदिवाकरविरचितः। काशी १ ८ ०

६७६८ तिलविचार—यह अंग्रेजी की "Moles and Their Meaning" नाम की पुस्तक के आधार पर सरल हिन्दी भाषा में लिखी गई है। इससे चेहरे पर के तिल के चिह्न को देखकर शरीर के अन्य भाग पर दूसरा ठीक वैसा ही उत्तर का तिल कहाँ पर है यह जानना और उस तिल के सविस्तर चमत्कारी व अद्भुत विचित्र फल वर्णन करने में यह पुस्तक बड़ी उत्तम देखने योग्य है। रतलाम ० १२ ०

६७६९ त्रिलोकसार--पं० टोडरमल्लकृत भाषा टीका सहित। ५ ८ ०

६७७० त्रिशतिका—(श्रीधराचार्य) अङ्कविन्यास सहित सटिप्पण। १ ० ०

६७७१ दश वर्ष का पंचांग—संवत् १९९१ से २००० तक। ज्योतिर्विद् पं० मणिरामशर्माकृत। मुम्बई २ ८ ०

६७७२ दशाफलदर्पण–(श्रीनिवासमहादेव) हिन्दी। जातक में दशाफल विचार का कोई भी ऐसा स्वतन्त्र एक ग्रन्थ नहीं है कि जिसके द्वारा स्वतंत्र रूप से दशाफल का विचार पूरा पूरा सूक्ष्म और सम्पूर्ण प्रकार से किया जा सके। इस त्रुटि के कारण ही ज्योतिषी लोग जन्मपत्रिकाएं तो बड़ी बड़ी बना देते हैं पर दशा का फलविचार उसमें जैसा लिखना चाहिए वैसा लिख नहीं सकते। बिना दशा फल विचार के जन्मपत्री बनाई न बनाई एक जैसी ही है। अतएव सब फलित ग्रन्थों से संग्रह करके दशाफल देखने के लिए यह परमोपयोगी ग्रन्थ बनाया गया है। रतलाम ३ ० ०

६७७३ दशामंजरी–(मुकुन्दरामशर्मा) तत्कृत उदाहरणोपेत भाषाटीका सहित। १ भुक्ताभुक्तसाधन, २ विंशोत्तरी दशा साधन ३ योगिनी दशासाधन, ४ रौद्राद्यष्टोत्तरी साधन, ५ महादशा, ६ दशादशा, ७ कालचक्रीदशा, ८ विविधप्राकार दशासाधन, ९ अन्तर्दशादिसाधन, इतने विषय सप्रमाण कहे गये हैं। मुम्बई ० ८ ०

६७७४ दिङ्मीमांसा—महामहोपाध्याय सुधाकरद्विवेदिविरचिता। बनारस ० १० ०

६७७५ दीपिका वा शुद्धिदीपिका—(श्रीनिवास) कन्हैयालालमिश्रकृत भाषाटीका सहित सजिल्द। इसमें ज्योतिष के सभी विषय आ गये हैं। मुम्बई २ ० ०

६७७६ दैवज्ञकामधेनुः—(अनवमर्शीसंघराजवरकृत)। बनारस ४ ८ ०

६७७७ दैवज्ञबोधिनी—फलादेशसंग्रह। चूरू २ ० ०

६७७८ दैवज्ञवल्लभ—(वराहमिहिर) पं० नारायणकृत भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ८ ०

६७७६ द्युचरचार—पं० सुधाकरद्विवेदिनिर्मित। मुम्बई ० ८ ०

६७८० द्वात्रिंशद्योगावलीताजिक—(नवाब खानखाना) ३२ योग वर्षफल। हिन्दी। रतलाम ० १ ०

६७८१ द्विरागमन—इष्टशोधन दत्तकमुहूर्त्त व्यवस्था। (रामयत्न)। बनारस ० ६ ०

६७८२ धराचक्रम्—(लोमश) सीतारामकृत भाषाटीका सहित। बनारस ० २ ६

६७८३ नरपति जयचर्या—कविशिरोमणि श्रीनरपति कृत। लखनऊ ० ५ ०

६७८४ नरपतिजयचर्यास्वरोदयः—श्रीमन्नरपतिकविविरचितः। जयलक्ष्मीनामक संस्कृत टीका और अहिबलादि चक्रों सहित। मुम्बई २ ८ ०

६७८५ नरपतिजयचर्यास्वरोदय—यह महादेवशर्माकृत 'जयलक्ष्मी' संस्कृत टीका एवं पं० श्री नरहरि टीका से विभूषित प्रश्न विद्या का अपूर्व ग्रन्थ है। बनारस १ ० ०

६७८६ नवग्रहसमीक्षादर्पण—रामदत्तज्योतिर्विद् भाषा टीका सहित। इटावा ० ४ ०

६७८७ नष्टजन्माङ्गदीपिका और पंचांगदीपिका—गद्यपद्यात्मक टीकासहित। मुम्बई ० ४ ०

६७८८ नारचन्द्रदीपन—पं० नरचन्द्रकृत। ० २ ०

६७८९ नारदसंहिता—(होरास्कन्ध) भाषा टीका सहित। इसमें शास्त्रोपचयन, ग्रहचार, शब्दलक्षण, संवत्सरफल, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, मुहूर्त्त, उपग्रह, सूर्यसंक्रान्ति, ग्रहगोचर, चन्द्रतारा बलाध्याय, लग्नविचार, रजोदर्शनविचार, गर्भाधानादि षोडश संस्कार, प्रतिष्ठा, यात्रा, गृहप्रवेश, सद्योवृष्टि, कूर्मलक्षण, उत्पातशान्ति, इत्यादि अनेक विषयों पर ३५ अध्याय हैं। मुम्बई २ ० ०

६७९० नारदीयसंहिता—मूलमात्र। काशी ० ८ ०

६७९१ नाह्निदत्त पञ्चविंशतिका—(नाह्निदत्ताचार्य) विंध्येश्वरीप्रसाद कृत भाषा-टीका सहित। बनारस ० १ ६

६७९२ निधिप्रदीपः—(सिद्ध श्री कंठ शम्भु) A treatise on the means of discovering hidden treasures. त्रिवेन्द्रम्

६७९३ नूतन वास्तु प्रबन्ध अर्थात् गृहरत्नभूषणम्—भाषा टीका। बनारस ० ५ ०

६७९४ नेपचून अथवा वरुण—(श्रीनिवास महादेव पाठक) हर्शल से भी आगे और भी १ ग्रह का शोध यूरोप के विद्वानों ने किया है। उसकी उत्पत्ति और फल-विचार इसमें किया गया है। हिन्दी। रतलाम ० ५ ०

६७९५ पञ्चपक्षी—शापोद्धारसहित (अगस्त्य मुनि) संस्कृत टीका तथा कालिदास रचित सपरिहार भाषा टीका सहित। प्रश्न कहने में बहुत ही सुगम है। मुम्बई ० ८ ०

६७९६ पञ्चसिद्धान्तिका—(वराहमिहिर)—The text, edited with an original commentary in Sanskrit and an English translation and introduction by G. Thibaut, Ph. D. and Mahamahopadhyaya Sudhakara Dvivedi. Bound with gilt letters. Lahore 10 0

६७९७ पञ्चस्वर—(प्रजापतिदास) कृष्णदत्त कृत संस्कृतटीका सहित। १ ४ ०

६७९८ पञ्चाङ्ग—इन्दौर पंचांग शोधन कमेटी की रिपोर्ट दो भागों में सम्पूर्ण। सम्पादक—ज्योतिषाचार्य विद्याभूषण पं० दीनानाथ शास्त्री चुलेट। इन्दौर २ ० ०

६७९९ पञ्चाङ्गगणितम्—सोदाहरणम्। केतकरोपाह्वेन वेंकटेशेन विरचितम्। २ ४ ०

६८०० पञ्चाङ्ग भास्कर—तोताराम शर्मा संगृहीत और अनुवादित। इससे बिना गुरु के पञ्चाङ्ग बनाना आ जाता है। गढ़वाल १ ० ०

६८०१ पञ्चाङ्गमञ्जूषा—(मुकुन्दराम शर्मा) भाषाटीकोदाहरण सहिता। मुम्बई ० ६ ०

६८०२ पत्रीमार्गप्रदीपिका—(महादेव) मूल। मुम्बई ० ४ ०

६८०३ पत्रीमार्गप्रदीपिका और वर्षदीपक—(महादेव) श्रीनिवासकृत भाषा टीका सहित। मुम्बई १ ४ ०

६८०४ पद्मकोष—(भगवानदत्त) भाषाटीका। ० २ ६

६८०५ पद्यपञ्चाशिका—(श्रीपति) तथा कन्याजातक (नारायणसंहितोद्धृत) बच्चू झा कृत भाषा टीका। मुम्बई ० ५ ०

६८०६ भाषा टीका सहित पद्यपंचाशिका—श्री गदाधर वैद्यविरचित पद्यपञ्चाशिकानाम जातकग्रन्थ। खुले पत्रे। मुम्बई

६८०७ पद्यभाषा ज्योतिषसार— ० ३ ०

६८०८ परवलयक्षेत्रम्—(ज्योतिषाचार्य श्री मुरलीधर ठक्कुर) प्रश्नपत्रसहितम्। मुम्बई ० ८ ०

६८०९ परमसिद्धान्त ज्योतिष—प्रेमवल्लभविरचित। इसमें गणितभाग, गोलज्ञान, मध्यमाधिकार, जीवनायक, खेटस्पष्ट, बालापक्रमानयन, उदयास्त, त्रिप्रश्नशृंगोन्नत्य, ग्रहणाधिकार, पातयोग, यन्त्राधिकार, निश्चयाधिकार तथा देश ज्ञानादि अपूर्व विषय हैं। सजिल्द। मुम्बई ४ ० ०

६८१० परीक्षाचक्रावली—रामस्वरूपसंगृहीत तत्कृत भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ४ ०

६८११ परीक्षाविचार—(श्रीनिवास महादेव पाठक) हिन्दी। ० १ ०

६८१२ पल्लीपतन कारिका—भाषा टीका समेत। इसमें छिपकली के शुभाशुभ फल विचार हैं। बनारस, मुम्बई ० २ ०

६८१३ **प्रतिमाबोधकः**—(सुधाकर द्विवेदी) पं० श्री गंगाधरमिश्रमैथिलकृतादर्श-तलसंज्ञकतिलकेनालंकृतम् । बनारस ० ८ ०

६८१४ **प्रश्नकुतूहल**—(हरदयालु) तत्कृत भाषा टीका सहित मथुरा ० ६ ०

६८१५ **प्रश्नचण्डेश्वरः**—दैवज्ञरामकृष्णविरचितः । संस्कृत टीका तथा विष्णुपदी भाषा टीका सहित । मुम्बई ० १२ ०

६८१६ **प्रश्नज्ञानप्रदीप**—(महाराज शम्भुसिंहजी) भाषा टीका सहित । सजिल्द । मुम्बई १ ० ०

६८१७ **प्रश्नदीप**—भाषाटीका सहित । प्रश्न का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ । मुम्बई ० ५ ०

६८१८ **प्रश्नदीपिका**—(श्री रुद्रयामलोक्त) सूरत ० ५ ०

६८१९ **प्रश्नपयोनिधि**—भाषाटीका सहित । मुम्बई ० २ ०

६८२० **प्रश्नभूषण**—(जीवनाथ) मूल । बनारस ० ४ ०

६८२१ **प्रश्नभैरव**—भाषाटीका सहित अद्भुत प्रश्नग्रन्थ । मुम्बई ० ६ ०

६८२२ **प्रश्नमार्गः**—पूर्वार्द्धः नीलकण्ठकृतसंस्कृतटिप्पणीसहितः । मद्रास ४ ० ०

६८२३ **प्रश्नमाला**—भाषावार्त्तिक । मुम्बई ० १ ०

६८२४ **प्रश्नविद्याद्रेष्काण-निरूपण**—श्रीमहाराजाधिराज श्री चण्डेश्वराचार्यकृत । लखनऊ ० ४ ०

६८२५ **प्रश्नवैष्णव**—श्रीमन्नारायणदास सिद्धविरचित । काशी ० ८ ०

६८२६ **प्रश्नवैष्णवशास्त्रम्**—(सिद्धनारायणदास) वसतिरामकृत भाषाटीका सहित । मुम्बई ० १४ ०

६८२७ **प्रश्नशिरोमणि**—(रुद्रमणि) रामदयालुकृत भाषाटीका सहित । मुम्बई १ ८ ०

६८२८ **प्रश्नसंग्रह**—भाषाटीका । मुम्बई ० ३ ०

६८२९ **प्रश्नसिन्धु**—(वासवानन्द) तत्कृत भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ३ ०

६८३० **प्रश्ननाड्चूडामणि**—मूलध्वजादि प्रश्नगणना । मुम्बई ० २ ०

६८३१ **प्रारब्धप्रकाश**—भाषा । मुम्बई ० २ ०

६८३२ **फतहसागरः**—यस्मिन् गर्भाधानतः परलोकगमनपर्यन्तं कर्मणां शुभाशुभ-फलानि दर्शितानि । उदयपुर २ ० ०

६८३३ **फलदीपिका**—टिप्पणीभिः पाठान्तरैः परिशिष्टैश्च संयोजिता । पुत्रकलत्रायु-र्भावविचाराः भावचिन्तनविधिश्चात्र प्रशंसनीयाः । २ ० ०

6834 **फलदीपिका**—Mantreswara's Phaladipikā—(Chapters I-XXVIII) with an English translation by Pandita-bhushana V. Subrahmanya Sastri, B. A. Bangalore 5 0 0

६८३५ **फलितसंग्रहः**—रामयत्नशर्मसंगृहीतः, नित्यव्यावहारिकवस्तुसंवलितः । ० १४ ०

६८३६ **बालबोध-ज्यौतिषम्**—अर्थात् फलितनवरत्नसंग्रहः। भाषाटीका
बनारस १ ० ०

६८३७ **बालबोधज्यौतिष**—(मुञ्जादित्य) मूल। मुम्बई ० २ ०

६८३८ **बालबोधज्योतिष**—भाषाटीका। मुम्बई ० ६ ०

६८३९ **बालबोधज्योतिष**—फलितनवरत्नसंग्रह (विन्ध्येश्वरीप्रसाद) तत्कृत सरल भाषाटीका समेत। इस ग्रन्थ से बालक भी ज्योतिष के कठिन विषयों को सरलता से समझ सकते हैं।
मुम्बई १ ० ०

६८४० **बालबोधज्योतिषसारसंग्रह**—पं० नारायणप्रसादमिश्रकृत भाषाटीका सहित।
मुम्बई ० १४ ०

६८४१ **बालविवेकिनी**—बाह्लिदन्ताचार्य-कृत मूल और पं० अम्बिकाप्रसादकृत भाषाटीका सहित।
लखनऊ ० १ ०

६८४२ **बिन्दुयोग**—भाषाटीका समेत। मुम्बई ० ८ ०

६८४३ **बीजगणित**—(श्री भास्कराचार्य) महामहोपाध्याय पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदि-कृत विलासिनामक संस्कृत भाष्य तथा भाषाटीका सहित। लखनऊ २ ० ०

६८४४ **बीजगणितम्**—(भास्कराचार्य) राधावल्लभकृत बीजविबोधिनी संस्कृत टीका नूतननियमोदाहरणोपपत्त्यादिभिश्च समलंकृतम्। कलकत्ता २ ० ०

६८४५ **बीजगणित**—(भास्कराचार्य) अध्यायचतुष्टयात्मक सिद्धान्तशिरोमणे-र्द्वितीयोऽध्यायः। बीजनवाङ्कुर संस्कृत व्याख्या सहितः। पूना २ ० ०

६८४६ **बीजगणितम्**—श्रीभास्कराचार्यविरचितम्। श्री तारानाथ तर्कवाचस्पति भट्टाचार्येण संशोधितम्।
कलकत्ता १ ० ०

६८४७ **बीजगणितम्**—महामहोपाध्याय पं० श्रीबापूदेवशास्त्रिकृतं। २ भाग दुष्प्राप्य।
बनारस ७ ० ०

६८४८ **बीजगणितमव्यक्तगणितं वा**—(श्रीभास्कराचार्य) महामहोपाध्याय पं० श्रीसुधाकरद्विवेदिकृतोपपत्तिटिप्पणीसहितम्। महामहोपाध्याय पं० श्री मुरलीधरशर्म-विरचितलघूपपत्तिविशिष्टटिप्पणी नवीनाव्यक्तगणितोपयोगिप्रक्षिप्तविषयोपेतम्।
बनारस २ ० ०

६८४९ **बीजोपनयः**—(भास्कराचार्य) स्वकृतवासनाभाष्य तथा दीक्षितकृत तिथि-निर्णयकारिका सहित।
लाहौर ० १२ ०

६८५० **बृहत्कष्टावली**—(विश्वेश्वर) मूलमात्र। ० ४ ०

६८५१ **बृहज्जातकम्**—(वराहमिहिर) श्रीभट्टोत्पलटीकासहितम्। पं० श्री सीताराम झा विरचित नवीनगणितोपपत्त्यादिटिप्पण्या समलंकृतम्। बनारस २ ० ०

६८५२ **बृहज्जातक**—(वराहमिहिर) भट्टोत्पली संस्कृत टीका सहित। ग्लेज कागज २।), रफ कागज—
मुम्बई २ ० ०

६८५३ **बृहज्जातक**—(वराहमिहिर) दशाध्यायीनौका नामक संस्कृत टीका सहित। यह टीका दस अध्यायों पर भट्टोत्पली और मधुसूदनी से विलक्षण है। मुम्बई १ ८ ०

६८५४ **बृहज्जातक**—श्रीवराहमिहिराचार्य कृत मूल और पं० रामरत्न अवस्थीकृत भाषा टीका सहित ।
लखनऊ ० ६ ०

६८५५ **बृहज्जातक**—(वराहमिहिर) पं० महीधर शर्मा कृत सरल भाषा टीका सहित । ग्लेज कागज़ ।
मुम्बई १ १२ ०

६८५६ **बृहज्जातकम्**—Brihat-Jataka of Varāhamihira—with an English translation and copious explanatory notes and examples by V. Subrahmanya Shastri, B. A.
Mysore 8 8 0

6857 The Brihat-Jataka of Varāhamihira—Translated into English by N. Chidambaram Aiyar, B. A. Revised and enlarged edition. Bound. Madras 4 0 0

6858 Brihajjataka, An English translation of—With full notes and copious illustrations by B. Suryanarayana Rao. Bound in cloth.
9 0 0

६८५९ **बृहज्ज्योतिषसार**—पं० सूर्यनारायण सिद्धान्ति द्वारा संगृहीत तथा भाषा टीका सहित अजिल्द ।
लखनऊ १ ८ ०

६८६० **बृहत्पाराशरहोराशास्त्र**—पूर्वखण्ड सारांश तथा उत्तरखण्ड सम्पूर्ण । श्रीधरकृत संस्कृत टीका तथा भाषा टीका सहित ।
मुम्बई ७ ० ०

६८६१ **बृहद्बालबोध**—अर्थात् ज्योतिषशास्त्राध्ययन में प्रथम पाटी भाषा टीका सहित ।
मुम्बई ० ५ ०

६८६२ **बृहद्यवनजातक**—पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र कृत भाषा टीका सहित । लग्नादि द्वादशभाव, ग्रहनक्षत्रस्थानाधिपति, स्थानान्तरादि के फलादेश और सुख दुःख तथा आयु कहने में एक ही है ।
मुम्बई १ ६ ०

६८६३ **बृहत्संहिता वाराहीसंहिता वा**—मूलमात्र । कलकत्ता २ ० ०

६८६४ **बृहत्संहिता**—(वराहमिहिर) बलदेवप्रसादकृत भाषा टीका सहित ।
मुम्बई ४ ० ०

६८६५ **बृहत्संहिता**—पं० दुर्गाप्रसादकृत भाषाटीकासहित । लखनऊ २ ० ०

६८६६ **बृहत्संहिता**—(वराहमिहिर) भट्टोत्पल संस्कृत व्याख्यासहिता । महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदिना सम्पादिता । २ भागौ । बनारस, विजयनगरम् १८ ० ०

6867 The Brihat-Samhita—Or complete System of Natural Astrology of Varahamihira. Translated from Sanskrit into English by Dr. H. Kern.

६८६८ **बृहदवकहडाचक्रम्**—अर्थात् ज्योतिश्शास्त्रसोपानम् (कन्हैयालाल-कृष्णभूषणदास) । बनारस ० १० ०

६८६९ **बृहदवकहोडाचक्र**—भाषा टीका सहित । बड़ा । मुम्बई ० ७ ०

६८७० **बृहद्दैवज्ञरञ्जन**—(रामदीन) मूल । पञ्चांगनिर्णयोपयोगी । कालज्ञान से लेकर वास्तुप्रकरण पर्यन्त कोई विषय बाकी नहीं रहा । मुम्बई ३ ० ०

६८७१ **बृहद् होडाचक्र**—भाषा टीका सहित । (ज्योतिर्विद् पं० मुकुन्दराम शर्मा) ० ७ ०

६८७२ **बृहद् होडाचक्र**—बच्चूशर्म्मा तथा व्रजरत्नभट्टाचार्य कृत भाषाटीका । मुम्बई ० २ ६

६८७३ **बृहद्-होडाचक्रविवरणम्**—वा मुहूर्त्तसंग्रहो नाम शतपदचक्रविवरणम् । पं० श्री मुरलीधर ठाकुर ज्यौतिषाचार्यकृतम् । १९३९ काशी ० ३ ०

६८७४ **बृहन्मुहूर्त्तसिन्धु**— १ ८ ०

६८७५ **यवनजातक**—(सुबुद्धिदैवज्ञ) जन्म समय के वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण तथा कालोपदेश का वर्णन । मुम्बई ० २ ६

६८७६ **भवानीवाक्य**—पं० मीठालाल व्यासकृत भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ६ ०

६८७७ **भविष्यफल भास्कर**—(लक्ष्मीनारायण) भाषा टीका सहित । मुम्बई १ ८ ०

६८७८ **भाभ्रमबोध**—पं० श्री दयानन्दशर्मणा प्रणीतः । काशी ० ६ ०

६८७९ **भावकुतूहलम्**—(जीवनाथ मिश्र) मूलमात्र । ० ८ ०

६८८० **भावकुतूहल**—(जीवनाथ) महीधर अथवा नारायणप्रसादकृत भाषाटीका सहित । मुम्बई १ ६ ०

६८८१ **भावकुतूहलम्**—(गणकचक्रचूडामणिश्रीजीवनाथकृतम्) ज्यौतिषाचार्यादि-विविधोपाधिना श्रीरामोत्साहमिश्रशर्मणा विरचितया सान्वय-उत्साहवर्द्धिनीभाषया समलंकृतम् । काशी १ ६ ०

६८८२ **भावपञ्चाशिका**—भाषा में । मुम्बई ० ३ ०

६८८३ **भावप्रकाशः**—दैवज्ञश्रीजीवनाथमिश्रकृतः । केशवमिश्रकृत 'अमृतान्वय' पं० मातृप्रसादपाण्डेयकृतभावबोधिनीभाषाटीकाटिप्पणीसहितः । काशी ० ८ ०

६८८४ **भावफलाध्यायः**—(लोमर्श) सीताराम झा कृत भाषा टीका सहित । बनारस ० १ ६

६८८५ **श्रीभास्करीयकरणकुतूहलम्**—श्री सुधाकरीय वासना विभूषणसहितम् । काशी

६८८६ **भास्करीय बीज गणितम्**—(भास्कराचार्यप्रणीताध्यायचतुष्टयात्मक-सिद्धान्तशिरोमणेर्द्वितीयोऽध्यायः) कृष्णगणकविरचितबीजनवाङ्कुराख्यव्याख्यासंवलितम् । पूना २ ० ०

६८८७ **भास्वती** (शतानन्दकृता)—श्रीमातृप्रसादपाण्डेयेन कृताभ्यां छात्रोबोधिनी-नामसंस्कृतसोदाहरणभाषाटीकाभ्यां सहिता । काशी २ ० ०

६८८८ **भुवनदीपक**—(पद्मप्रभसूरि) प्राचीन संस्कृत टीका तथा बच्चूरामशर्म्मा कृत भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ८ ०

६८८९ **भूगोलसार**—अर्थात् ज्योतिषचन्द्रिका (ओंकारभट्ट कृत) लखनऊ ० ६ ०

६८९० **भृगु प्रश्न छठा भाग**—पं० रामदेवशर्मा ज्योतिषीकृत। मथुरा १ ० ०

६८९१ **भृगुसंहिता**—सम्पूर्ण भाषा टीका सहित खुले पत्रे। ३० ० ०

६८९२ **भृगुसंहिता कुण्डली खण्ड**—(अयोध्याप्रसाद) सोदाहरण भाषाटीका सहित। झांसी २ ० ०

६८९३ **भृगुसंहिता योगावली खण्ड**—इसमें नौ बड़े बड़े प्रकरणों में भृगुसंहिता के अनेक योग ऐसे लिखे हैं जिन के द्वारा चमत्कारजनक फल कहे जा सकते हैं। मुम्बई ३ ० ०

६८९४ **श्री भृगुसंहितायोगसागर—फलितखण्डम्** अर्थात् विश्वजन्माङ्क-भास्कर। पूर्वखण्डोत्तरखण्डसहितम्। १९२७ झांसी ५ ० ०

६८९५ **भृगुसूत्रम्**—मूल। मुम्बई ० २ ०

६८९६ **भृगुसूत्र**—श्री सिद्धशर्मा कृत भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ६ ०

६८९७ **भृगुसूत्रम्**— बनारस ० ८ ०

६८९८ **मकरन्दसारिणी**—उदाहरण सहित। पञ्चाङ्ग बनानेवालों को परमोपयोगी। मुम्बई १ ० ०

६८९९ **मकरन्दोपपत्तिः**—श्रीदैवज्ञगोकुलनाथवर्णिताः पञ्चाङ्गोपपत्तयः। काशी

६९०० **मनुष्यजातक**—(समरसिंह) श्रीधर विरचित- सोदाहरण संस्कृत टीका सहित। जातक और ताजिक-विषयक। मुम्बई १ ४ ०

६९०१ **मयूरचित्रक**—वराहमिहिर कृत मूल। इसमें संक्रान्ति- फल, मेघविद्युदादियोगफल तथा संवत्सर फल का निरूपण। मुम्बई ० ४ ०

६९०२ **मयूरचित्रक**—(वराहमिहिर) नारायण प्रसाद मुकुन्दराम कृत भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ८ ०

६९०३ **महासिद्धान्तः**—आर्यभटविरचितः सुधाकरद्विवेदिकृतसंस्कृतटीकासहितः। सम्पूर्णः। काशी ३ ६ ०

६९०४ **माधवशकुनेन्दुचन्द्रिका**—(मनीराम) शकुनविषयक। मुम्बई ० २ ०

६९०५ **मानसप्रश्नदीपिका**—तात्कालिक मन-चिन्तित प्रश्नविद्या। मुम्बई ० ४ ०

६९०६ **मानसागरीपद्धतिः**—(मानसागर) मूल। इससे जन्मपत्र बनाना सुगम है। मुम्बई ० १४ ०

६९०७ **मानसागरीपद्धतिः**—(मानसागर) श्री अनूपमिश्रकृत सोपपत्त्युदाहरण-भाषाविवृतिविभूषिता। काशी ३ ० ०

६९०८ **मानसागरीपद्धति**—वंशीधरकृत सोदाहरण भाषा टीका सहित। यह

पुस्तक जन्मपत्र निर्माण तथा जन्म के प्रत्येक योग का फल बताने में अद्वितीय है।
मुम्बई ३ ० ०

६६०९ **मासच्चिन्तामणि**—(मणित्थाचार्य) परमेश्वरदत्त मिश्रकृत भाषा टीका सहित।
मुम्बई ० ३ ०

६६१० **मुकुन्दपद्धति**—(मुकुन्दराम) स्वकृत भाषाटीका सहित मुम्बई ० १२ ०

६६११ **मुकुन्दविजय**—जातक, ताजक, प्रश्नादि के सभी चक्रों सहित।
मुम्बई ० १० ०

६६१२ **मुहूर्त्तकल्पद्रुमः**—(विठ्ठलदीक्षित) मूलमात्र। मुम्बई ० ६ ०

६६१३ **मुहूर्त्तगणपति**—(गणपति) मूलमात्र। मुम्बई १ ० ०

६६१४ **मुहूर्त्तगणपति**—(गणपति) रामदयालकृत भाषा टीका सहित।
मुम्बई ४ ० ०

६६१५ **मुहूर्त्तगणपति**—दैवज्ञवर गणपति विरचित। ज्योतिर्विद् पं० सूर्यनारायण कृत भाषा टीका सहित।
लखनऊ ० १४ ०

६६१६ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—(रामाचार्य) मूल। मुम्बई ० ७

६६१७ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—(श्रीरामदैवज्ञ) स्वोक्त प्रमिताक्षरा संस्कृत टीका सहित।
मुम्बई १ १२ ०

६६१८ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—प्रमिताक्षरा टीका। खुला पत्रा १ ८ ०

६६१९ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—गोविन्दकृत पीयूषधारा टीकासमेत स्थूलाक्षर सजिल्द—३॥), सूक्ष्माक्षर— मुम्बई २ ८ ०

६६२० **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—(रामाचार्य) तत्कृत प्रमिताक्षरा-टीका तथा अनूप मिश्रकृत विवृति समेत।
बनारस १ १२ ०

६६२१ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—(रामाचार्य) गोविन्दकृत पीयूषधारा संस्कृत टीका तथा अनूप मिश्रकृत विवृति सहित।
बनारस ३ ० ०

६६२२ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—(रामाचार्य) महीधरशर्माकृत भाषा टीका सहित।
मुम्बई १ ४ ०

६६२३ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—(श्रीरामदैवज्ञ) सीताराम झा कृत सोदाहरणोपपत्ति सान्वय भाषार्थ सहित।
बनारस १ ४ ०

६६२४ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—पं० रामरत्नकृत भाषाटीका सहित लखनऊ ० १३ ०

६६२५ **मुहूर्त्तचिन्तामणि**—रामेश्वरभट्टकृत भाषाटीका सहित मुम्बई ० १४ ०

६६२६ **मुहूर्त्तदर्शनम्**—(विद्यामाधव) विष्णुशर्मविरचित मुहूर्त्तदीपिकायुतम्। ३ भाग।
मैसूर ६ १२ ०

६६२७ **मुहूर्त्तदीपक**—(महादेवभट्ट) संस्कृत टीका सहित। मुम्बई ० ४ ०

६६२८ **मुहूर्त्तदीपक सटीक**—(पं० रामसेवक) लखनऊ ० २ ६

६६२९ **मुहूर्त्तदीपकः सटीकः**—खुले पत्रे। डाकोर ० ४ ०

६६३० **मुहूर्त्तप्रकाश**—(चतुर्थीलाल) तत्कृत भाषाटीका सहित। मुम्बई २ ० ०

६६३१ **मुहूर्त्तमञ्जरी**—(यदुनन्दन) भाषाटीका सहित। मुरादाबाद ० ६ ०

६६३२ **मुहूर्त्तमार्त्तण्डः**—(नारायण) तत्कृतयैव मार्त्तण्डवल्लभाख्य व्याख्यया सुदृढीकृतः। बनारस ॥) ,मुम्बई ० १२ ०

६६३३ **मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**—(नारायणसूरि) तत्कृत 'मार्त्तण्ड वल्लभ" संस्कृत टीका तथा भेडुराम कृत भाषा टीका सहित। ग्लेज कागज। मुम्बई १ ८ ०

६६३४ **मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**—(नारायणदैवज्ञ) सीताराम झा कृत संस्कृत तथा भाषा टीका सहित। बनारस १ ४ ०

६६३५ **मुहूर्त्तमाला**—(रघुनाथदैवज्ञ) महेश्वरभट्टकृत सौन्दर्यबोधिनी संस्कृत टीका सहित। मुम्बई १ ५ ०

६६३६ **मुहूर्त्तमुक्तावली**—भाषा टीका सहित। मुम्बई ० २ ६

६६३७ **मुहूर्त्तसंग्रहदर्पण**—(पं० भीमदत्त संगृहीत) तत्कृतभाषा टीका सहित। मुम्बई २ ० ०

६६३८ **मूकप्रश्नभास्कर**—भाषा। लेखक वैद्यभूषण ज्योतिषरत्न पं० अयोध्याप्रसाद मिश्र। झांसी १ ८ ०

६६३९ **मेघमहोदय-वर्षप्रबोध**—(मेघविजयगणि) भगवानदास कृत भाषा टीका सहित। बीकानेर ४ ० ०

६६४० **मेघमाला**—भाषा टीका सहित। इसमें वर्षा तथा सुभिक्ष दुर्भिक्ष आदि का विचार सर्वोत्तम है। मुम्बई ० १४ ०

६६४१ **मेघमाला भडुली**—(मेघराज) दोहे चौपाइयों में। ० ५ ०

६६४२ **यन्त्रचिन्तामणि**—भाषा टीका सहित। मुम्बई ० १२ ०

६६४३ **यन्त्रराजः**—महेन्द्रगुरुविरचितः मलयेन्दुसूरिविरचितटीकासहितः तथा दैवज्ञचूडामणिना श्रीविश्रामेण विरचितः **यन्त्रशिरोमणिः**। मुम्बई १ ८ ०

६६४४ **यवनजातकम्**—मूलमात्र खुले पत्रे। मुम्बई ० २ ६

६६४५ **याजुषज्यौतिषम्**—सोमाकरसुधाकरभाष्यसहितम्। **आर्चज्यौतिषं** च सुधाकरभाष्येण तल्लघुविवरणेन च सहितं महामहोपाध्यायसुधाकरद्विवेदिसंशोधितम्। बनारस १ ४ ०

६६४६ **योगायुर्दाय**—(केदारनाथ संगृहीत) मुम्बई ० २ ६

६६४७ **योगिनीशतक जातक**—भाषा टीका सहित। योगिनी की दशा व अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर्दशा उदाहरण सहित लिखी गई है। मुम्बई ० ६ ०

६६४८ **रणवीरज्योतिर्महानिबन्ध**—(जातकखण्ड) दैवज्ञ महेशविरचित भाषा-टीका सहित। यह ग्रन्थ काश्मीर नरेश ने बहुत सा धन व्यय करके छपवाया है। सजिल्द दुष्प्राप्य। जम्मू १०० ० ०

६६४९ **रणदीपिका**—(कुमारगणक) त्रिवेन्द्रम्। ० ४ ०

६६५० **रत्नगर्भाचक्रम्**—दैवज्ञभूषण पं० मातृदत्तपाण्डेयकृतम् । हिन्दी व्याख्या सहित । १६३६ । काशी ० २ ०

६६५१ **रत्नदीपक**—(लक्ष्मीनारायण) भावफलादेश विषयक भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ३ ०

६६५२ **रत्नद्योत**—(गंगाराम) व्रजरत्नभट्टाचार्यकृत भाषाटीका सहित । मुम्बई ० ६ ०

६६५३ **रत्नपरीक्षा**—(गुरुदास) भाषा । मुम्बई ० ४ ०

६६५४ **रमलगुलजार**—(यवनाचार्य) । मुम्बई २ ८ ०

६६५५ **रमलचिन्तामणि**—(चिन्तामणिदैवज्ञ) वस्तीरामकृत भाषाटीका सहित सजिल्द । मुम्बई १ ० ०

६६५६ **रमलनवरत्न**—(परमसुखोपाध्याय) भाषाटीका तथा रमलदानियाल सहित । मुम्बई १ ४ ०

६६५७ **रमलभास्कर**—(प्रश्नग्रन्थ) हिन्दी में । मुम्बई ० ८ ०

६६५८ **रमलमार्त्तण्ड**—हिन्दी में । मुम्बई ० ६ ०

६६५६ **रमलरहस्य**—(भयभञ्जन) मूल । इस ग्रन्थ में प्राचीन तथा नवीन कितने ही ग्रन्थों का सार लेकर अपूर्व कौशल से प्रश्नोत्तर कहे गये हैं । सजिल्द मुम्बई ५ ० ०

६६६० **रमलसारप्रश्नावली तथा वर्णमातृकाप्रश्न**—हिन्दी में । मुम्बई ० १ ६

६६६१ **रमलसिक्ता**—संस्कृत खुले पत्रे । मुम्बई १ ० ०

६६६२ **रविसिद्धान्तमञ्जरी**—श्री मथुरानाथशर्मणा विरचिता श्रीविश्वम्भरज्योतिषार्णवेन सम्पादिता । कलकत्ता ० १२ ०

६६६३ **राज मार्त्तण्ड**—(भोजराज) मूल । नक्षत्रराशिसंज्ञा, स्त्रियों की शुद्धिचिन्ता, पुंसवनादि, ग्रहबलादि, वेध्यादि योग, वृद्धिश्राद्धादि, नामकरणादि, तिथ्यादिनिर्णय तथा लग्नफलादि विषय हैं । मुम्बई १ ० ०

६६६४ **रामाज्ञाप्रश्न**—वैजनाथ विरचित भाषा टीका । लखनऊ ० ३ ०

६६६५ **राशिमाला**—(सिद्धिसागर) हिन्दी में । मुम्बई ० १ ६

६६६६ **रेखागणित**—(चन्द्रशेखर झा) षष्ठाध्याय । बनारस ० १२ ०

६६६७ **रेखागणितम्**—सम्राड्जगन्नाथविरचितम् । श्रीकमलाशंकरेण संशोधितम् । तन्निर्मिताङ्ग्लभाषाभूमिका-टिप्पणीभ्यां समुपेतम् । २ भाग । मुम्बई २१ ० ०

६६६८ **रेखागणित**—अध्याय ११ और १२ ज्योतिषाचार्य पं० रामसुन्दर ठाकुर कृत अभ्यास सहित । बनारस ० १० ०

६६६६ **रेखागणितम्**—एकादशद्वादशाध्यायौ—(सुधाकर द्विवेदी) कृष्णदत्त झा कृत वासना मञ्जरी संस्कृत टीका तथा चन्द्रशेखर झा कृत टिप्पणी सहित । बनारस ० १२ ०

६६७० लग्नचन्द्रिका—(काशीनाथ) मूल । खुला पत्रा । मुम्बई ० ६ ०

६६७१ लग्नचन्द्रिका—(काशीनाथ) मातृप्रसाद पाण्डेय कृत भाषा टीका सहित । सजिल्द । बनारस ० १२ ०

६६७२ लग्नचन्द्रिका—(काशीनाथ) वसतिराम कृत । मुम्बई ० १४ ०

६६७३ लग्नचन्द्रिका—मूलश्लोक काशीनाथ कृत और भाषा टीका पं० रामविहारी सुकुल कृत । लखनऊ ० ५ ०

६६७४ लग्नजातक—(काशीनाथ) भाषा टीका सहित । ० ३ ०

६६७५ लग्नरत्नाकर (बृहल्लग्नजातक)—भाषाटीकासहित । काशी ० ३ ०

६६७६ लग्नप्रदीप—गृहभावाध्याय । बनारस ० २ ०

६६७७ लग्नवाराही—भाषा टीका सहित । मुम्बई ० २ ०

६६७८ लग्नवाराही—वराहमिहिरकृता । तत्त्वप्रकाशिका हिन्दी व्याख्या सहिता । काशी ० १ ०

६६७९ लघुजातकम्—(वराहमिहिरकृतम्)—ज्यौ० आ० पं० श्री सीताराम झा कृत संस्कृत तथा भाषा टीका सहित । काशी ० १० ०

६६८० लघुजातक—(वराहमिहिर) भट्टोत्पल और विन्ध्येश्वरीप्रसाद कृत बालबोधिनी संस्कृत तथा भाषा टीका सहित । बनारस १ ० ०

६६८१ लघुजातक—(वराहमिहिर) भट्टोत्पल संस्कृत टीका सहित । मुम्बई ।≡)

६६८२ लघुजातक—(वराहमिहिर) भाषा टीका । मुम्बई ० १० ०

६६८३ लघुपाराशरी—अर्थात् उडुदायप्रदीप—महर्षि पाराशरविरचित मूल और पं० मदनमोहन पाठक कृत संस्कृतान्वय-भाषानुवाद सहित । मुम्बई ० २ ६

६६८४ लघुपाराशरी—संस्कृत टीका सहित । मुम्बई ० ३ ०

६६८५ लघुपाराशरी—'उडुदायप्रदीप' इत्यपरनाम्ना प्रसिद्धा । दैवज्ञवाचस्पतिना श्रीरामप्रसादशर्मणा विरचितया विवृत्याख्यया व्याख्यया सहिता । पाण्डेयोपाह्वश्रीशिवशंकरशर्मणा कृतया भाषाव्याख्ययालंकृता । बनारस ० ८ ०

६६८६ लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीपः) । ज्यौतिषाचार्य पं० श्रीसीतारामशर्मणा कृतया संस्कृत-भाषाव्याख्यया सहिता । बनारस ० ६ ०

६६८७ लघुपाराशरी—रामेश्वर भट्ट कृत सान्वय भाषा टीका सहित । मुम्बई ० ५ ०

६६८८ लघुशिल्पशास्त्रसंग्रह—अर्थात् आयनिरूपण । भाषाटीका समेत । मुम्बई ० ६ ०

६६८९ लघुसंग्रह—(लक्ष्मीनारायण) मुहूर्तादि ज्योतिष का फलादेश । काशीरामकृत भाषाटीका सहित । मुम्बई ० १४ ०

६६९० लघुसंग्रह—भाषाटीका सहित । बनारस

६९९१ **लघुहोराशिरोमणि**—पं० रामनारायण कृत संस्कृत और भाषाटीका सहित। ० ३ ०

६९९२ **लीलावती**—श्रीमद्भास्कराचार्यविरचिता। ज्यौतिषाचार्य पं० श्री सीताराम शर्मकृतया सोपपत्तिसूत्रार्थप्रकाशिकया सहिता। काशी १ ० ०

६९९३ **लीलावती**—(भास्कराचार्य) मूल। कलकत्ता ० १२ ०

६९९४ **लीलावती**—(भास्कराचार्य) म० म० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी कृत विलासि नामक संस्कृत और भाषाभाष्य सहित। लखनऊ २ ८ ०

६९९५ **लीलावती**—(भास्कराचार्य) पं० मुरलीधर ठक्कुरकृत लीलावती वासना परिशिष्ट प्रश्नादि सहित। गुणनभजनादिक्रियाभेदाः स्फुटं प्रदर्शिताः सन्ति। काशी २ ८ ०

६९९६ **लीलावती**—(भास्कराचार्य) पं० रामस्वरूप कृत भाषा टीका सहित ग्लेज कागज २॥), रफ कागज— २ ० ०

६९९७ **लीलावती**—प्रथम खण्ड (पाटीगणित) पं० चम्पाराममिश्र, बी० एम० ए० एस्० बी० द्वारा अनुवादित और परिवर्द्धित। मुम्बई ० १४ ०

६९९८ **लीलावती**—(भास्कराचार्य) राधावल्लभकृतसोपपत्तिकसंस्कृतटीकया नियमोदाहरणैश्च समलंकृता। कलकत्ता १ ८ ०

६९९९ **लीलावती**—श्रीमद्भास्कराचार्य-विरचिता। बुद्धिविलासिनी-लीलावतीविवरणाख्यटीकाद्वयोपेता। द्वौ भागौ। पूना ३ ० ०

7000 Lilavati—English translation by Colebrooke, with notes by Haran Chandra Banerji, M. A. B. L. Calcutta 7 8 0

७००१ **लीलावती विवरण-व्यक्तवासना**—संस्कृत लीलावती पर सुधाकर द्विवेदी जी की टिप्पणियों से भी गणितोपपत्ति का पूर्ण ज्ञान न होता देख ज्योतिषाचार्य चन्द्रशेखर ने इस उपपत्ति को बनाया। मुम्बई १ २ ०

७००२ **लोमशसंहिता**—(भावफलाध्याय) मुम्बई ० १ ०

७००३ **वर्षकल्पद्रुम**—(झुन्नूलाल) स्वकृत भाषाटीका सहित। १ ० ०

७००४ **वर्षपद्धति**—(श्रीनिवासमहादेवपाठक) मूलमात्र। यह वर्षफल विचार का अतिउत्तम ग्रन्थ है। रतलाम १ ८ ०

७००५ **वर्षप्रबोध**—(मेघविजयगणि) नूतन संवत्सर शुभाशुभ प्रबोध। हनुमान् शर्म्मा कृत भाषाटीका सहित। मुम्बई १ १२ ०

७००६ **वर्षदीपकपत्रीमार्गप्रदीपिका**—भाषाटीका। रतलाम २ ० ०

7007 Varshaphal—or the Hindu Progressed Horoscope by B. V. Raman. Madras 1 14 0

७००८ **वर्षयोगसमूह**—पं० ज्वालाप्रसादकृत भाषाटीका सहित मुम्बई ० १२ ०

७००९ **वशिष्ठसिद्धान्त**—मूल। बनारस ० २ ०

७०१० **वसन्तराजशाकुनम्**—(भट्टवसन्तराज) भानुचन्द्रगणिकृत संस्कृतटीका तथा श्रीधरकृत भाषाटीका सहित। मुम्बई ५ ० ०

७०११ **वायुमहाशास्त्रम्**—(मायाशंकरद्विवेदी) मूलमात्र। ० ८ ०

७०१२ **वाराहीबृहत्संहिता**—(वराहमिहिर) पं० बलदेवप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीका सहित सजिल्द। मुम्बई ४ ० ०

७०१३ **वाशिष्ठसंहिता**—(वृद्धवशिष्ठ) जातक, ताजक, मुहूर्त्त, प्रश्नादि सभी विषय हैं। मुम्बई २ ० ०

७०१४ **वास्तवचन्द्रशृंगोन्नतिसाधन**—संस्कृतटीका सहित। बनारस १ ४ ०

७०१५ **वास्तवविचित्रप्रश्नास्सभङ्गाः**—(सुधाकरद्विवेदी)। बनारस ० १ ०

७०१६ **वास्तुप्रबन्ध**—गृहरत्नभूषण। गृहनिर्माण का प्रयोजन, भूमि परीक्षा, शुभाशुभ भूमि लक्षण, शल्योद्धारविधि, षोडश गृह विचार, ताराबल, काकिणीविचार, गृहनिरूपण, गृहप्रमाण, द्वारनिर्णय, दुष्टयोगविचार, खातविचार, प्रवेशविचार, जीर्णगृहप्रवेश, कूपविचार, अहिबलचक्र, लग्नशुद्धि आदि सैंकड़ों विषय हैं। बनारस ० ५ ०

७०१७ **वास्तुमाणिक्यरत्नाकरः**—दैवज्ञभूषणपण्डितश्रीमातृप्रसादपाण्डेयविरचितः। तत्कृतसुधानाम्नीसोदाहरणभाषाटीकासहितः वास्तुकर्मसर्वस्वेनान्वितश्च। काशी

७०१८ **वास्तुमुक्तावली**—भाषाटीका सहित। काशी ० १२ ०

७०१९ **वास्तुरत्नाकरः, अहिबलचक्रसहितः**—सोदाहरणसोपपत्ति हिन्दी टीका समलङ्कृतः। काशी ० १४ ०

७०२० **वास्तुरत्नावली**—(जीवनाथ) मूलमात्र। बनारस १ ० ०

७०२१ **वास्तुराजवल्लभः**—(मण्डनसूत्रधार) रामयत्नओझाकृत भाषाटीका सहित। १ ० ०

७०२२ **वास्तुसारणी**—(मातृप्रसादपाण्डेय) तत्कृतनिधिप्रदाख्यसोदाहरण भाषाटीका तथा टिप्पणी सहित। बनारस १ ४ ०

७०२३ **विद्यामाधवीयम्**—(मुहूर्त्तदर्शनम्), विद्यामाधवविरचितम्। विष्णुशर्मविरचितमुहूर्त्तदीपिकायुतम्। त्रिषु सम्पुटेषु सम्पूर्णम्। मैसूर ६ ३ ०

७०२४ **विवाहपटलसारसमुच्चय**—(कृष्णशंकर केशवराम सम्पादित)। मूलमात्र। मुम्बई ० ४ ०

७०२५ **विवाहवृन्दावन**—(केशवदैवज्ञ) गणेश दैवज्ञकृत 'दीपिका' संस्कृत टीका सहित। मुम्बई १ ६ ०

७०२६ **विवाहवृन्दावन**—(केशवदैवज्ञ) काशीरामविरचित भाषाटीका वा सर्वालंकारों समेत। मुम्बई १ ८ ०

७०२७ **विवाहवृन्दावन**—(केशवदैवज्ञ) पं० शिवदत्तत्रिपाठिकृतसान्वयभाषाटीका सहित। बनारस १ ४ ०

७०२८ **विश्वजन्माङ्कभास्कर पञ्चाङ्ग**—(अयोध्याप्रसादमिश्र) सोदाहरण भाषाटीका सहित। झांसी २ ० ०

७०२९ **विश्वहितम्**—मथुरानाथशर्म्मकृत मूलमात्र। कलकत्ता १ ८ ०

७०३० **वीरसिंहावलोकः**—अस्मिन् ग्रन्थे रोगाणां कर्मविपाकश्चिकित्सा च वर्णिताऽस्ति। २ ० ०

७०३१ **वृद्धसूर्यार्णवकर्मविपाक**—मूलमात्र। मुम्बई ७ ० ०

७०३२ **वृन्दावलीज्योतिष**—भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ५ ०

७०३३ **वेदाङ्ग ज्यौतिष**—ed. with his own commentary and English translation by Dr. R. Shama Shāstri. 1 7 0

७०३४ **वैजयन्ती नाम पंचांगगणितम्**—सोदाहरणम्। पूना २ ४ ०

७०३५ **व्यक्तगणित**—बापूदेवशास्त्रिकृत सम्पूर्ण। बनारस १ ८ ०

७०३६ **शकुनमञ्जरी**—संस्कृत (अग्निपुराणान्तर्गत)। मुम्बई १ ० ०

७०३७ **शकुनवन्ती**—(भड्डली) छींक व शकुन विचार। मुम्बई ० १ ६

७०३८ **शकुनविचार**—पद्यभाषा। ० २ ०

7039 Satayogamanjari (**शतयोगमञ्जरी**)—One hundred combinations for power, wealth and prosperity of one hundred combinations for misfortunes and diseases of all kinds. Madras 3 4 0

७०४० **शनिविचार**—(श्रीनिवासमहादेवपाठक)। रतलाम ० ८ ०

७०४१ **शम्भुहोराप्रकाश**—(पञ्जराजाचार्य) पं० महीधरशर्म्मकृत भाषाटीका सहित। मुम्बई २ ८ ०

७०४२ **शिवजातक**—पं० मातृप्रसादपाण्डेयकृत 'शिशुतोषिणी' भाषाटीका सहितः। काशी ० २ ०

७०४३ **शिशुबोध**—(सीताराम झा) सटिप्पण। बनारस ० ३ ०

७०४४ **शिष्यधीवृद्धिद**—लल्लाचार्यप्रणीत और महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदि-संशोधित। मुम्बई १ ० ०

७०४५ **शीघ्रबोध**—(काशीनाथ) भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ७ ०

७०४६ **शीघ्रबोध**—(काशीनाथ) भाषाटीका। बनारस ० ६ ०

७०४७ **श्रीपतिजातक पद्धति**— बनारस ० १२ ०

७०४८ **श्रीपतिपद्धतिः**—Text with English translation, notes and a sample horoscope worked out. By Subrahmanya, Shastri, B. A. Mysore 3 8 0

७०४९ **श्लोकशतक**—श्रीयुत पं० मिट्ठनलाल जी विरचित। भाषा टीका सहित। मुम्बई ० ४ ०

७०५० **षट्पञ्चाशिका**—वराहमिहिरात्मज पृथुयशोविरचिता। "भट्टोत्पली" संस्कृत टीका तथा सीताराम झा कृत भाषा टीका सहित। बनारस ० ४ ०

७०५१ षट्पञ्चाशिका—(पृथुयशोविरचिता) काशीरामकृत सर्वालंकार विभूषित भाषा टीका सहित। संक्षेप होराध्याय, गमनागमन, जयपराजय, शुभाशुभ, प्रवासचिन्ता, नष्टप्राप्ति। इसके सिवाय मिश्राध्यायादि में बहुत से प्रश्न लिखे गये हैं। मुम्बई ० ८ ०

७०५२ षट्पञ्चाशिका—पंडितवर श्री भट्टोत्पल विरचित संस्कृत टीका समेत। खुला पत्रा। मुम्बई ० ३ ०

७०५३ षट्पञ्चाशिका—(पृथुयशस्) पं० बदरीनाथकृत भाषा टीका सहित। लखनऊ ० १ ६

७०५४ संवत्सर-निर्णय—(गणेशदत्त) अर्थकाण्ड सहित मूलमात्र। इसमें तेजी, मंदी तथा वर्षा का विचार भली भांति लिखा गया है। मुम्बई ० ८ ०

७०५५ संवत्सरफलदीपिका—(हेतुराम श्रीमाली) भाषा दोहा-चौपाई में। मुम्बई ० ३ ०

७०५६ संकेतनिधि—(रामदयालु) मूलमात्र। काशी ० ८ ०

७०५७ संकेतनिधि—(रामदयालु) तत्कृत भाषा टीका और पं० रामदत्त कृत संस्कृत टीका सहित। मुम्बई २ ० ०

७०५८ संक्रान्तिप्रकाश—(मीठालाल व्यास) स्वकृत भाषा टीका सहित। सूर्य-संक्रान्ति द्वारा भावी फल का ज्ञान। मुम्बई १ ० ०

७०५९ संग्रामविजयोदयम्—Edited by K. Sāmbaśiva Sastry. 2 0 0

७०६० सन्ततिसमयविचार—(श्रीनिवासमहादेवपाठक) हिन्दी। सन्तान किस समय होगी इस प्रश्न का उत्तर शास्त्रानुसार जान कर गर्भ-रहने का समय निश्चयपूर्वक बताना चाहते हो तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। रतलाम ० १० ०

७०६१ समयदीपिका—साठ संवत्सरों का फल हिन्दी पद्य में। मुम्बई ० १ ६

७०६२ समरविजय—कविराज तीर्थराज द्वारा संस्कृत 'समरसार' भाषा छन्दप्रबन्ध में उल्था किया गया। जिसमें महाराजाओं के समर करने तथा विजय पाने के गुणदोष विचार-पूर्वक शुभाशुभ-ज्योतिष की रीत्यनुसार वर्णित हैं। लखनऊ ० ३ ०

७०६३ समरसार—(सोमयाजि श्री रामचन्द्र) हनुमच्छर्मरचित संस्कृत हिन्दी टीकाद्वय सहित। उदाहरण और चक्र भी दिये गये हैं। मुम्बई १ ० ०

७०६४ समीकरणमीमांसा—(भाषा में)। लेखक स्वर्गवासी पं० सुधाकर द्विवेदी। प्रयाग २ ४ ०

७०६५ सरलत्रिकोणमितिः—बापूदेवशास्त्रिविरचिता। म० म० मुरलीधरशर्म्म-कृतटिप्पणीसहिता तथा चापीयत्रिकोणगणितम् (पं० श्रीनीलाम्बरझाकृतम्)। पं० श्री मुरलीधरठक्कुरकृतनूतनवासना, नवीनसिद्धान्त, द्वियुकपदसिद्धान्त, लघुरिक्थसिद्धान्त, प्रश्नादिसहितम्। काशी ३ ० ०

७०६६ सरलरेखागणितम्—ज्यौतिषाचार्य-विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदिकृतम्। ० १० ०

७०६७ **सर्वतोभद्रचक्र**—(मीठालाल व्यास) तत्कृत भाषा टीका सहित । पशु-पक्षियों का शुभाशुभ तथा वस्तुओं की तेजी मंदी जानी जाती है । १ ० ०

७०६८ **सर्वसंग्रह**—(दीनानाथाचार्य) पं० बच्चू झा कृत भाषा टीका सहित पांच अध्यायों में विभक्त । प्रथम मिश्राध्यायों में गणित, सिद्धान्त, जन्म और वर्षपत्र, सामुद्रिक, अंग स्फुरणादि शकुन हैं । द्वितीय देहस्वराध्याय में स्वर ज्ञान, स्वरद्वारा प्रश्नोत्तर कथन, स्वर बदलने का उपाय, छायासाधन, स्वर से मृत्युकाल का ज्ञान और दीर्घायु होने का उपाय है । तीसरे कालस्वराध्याय में पञ्चस्वर के द्वारा समस्त फलादेश लिखे हैं । चौथे रमलाध्याय में सब प्रश्नों के उत्तर रमलद्वारा वर्णित हैं । पांचवें मुहूर्त्ताध्याय में समस्त मुहूर्त्तों का विस्तृत वर्णन है । मुम्बई २ ८ ०

७०६९ **सर्वानन्दकरणम्**—सर्वपक्षानुकूल (गोविन्दगणक) स्वकृतव्याख्योदाहरण-समलंकृतम् । उज्जैन ४ ० ०

७०७० **सर्वार्थचिन्तामणि**—भैरवदत्तप्रणीत । जन्मपत्र और भाव लिखने में लाभदायक है । खुल्ला पत्रा । मुम्बई १ ० ०

७०७१ **सर्वार्थचिन्तामणि**—महीधरशर्म्मकृत भाषा टीका सहित । इस ग्रन्थ के पढ़ने से फलादेश भली भांति कह सकते हैं । सजिल्द । मुम्बई २ ८ ०

7072 Sarvartha-Chintamaṇi—English translation with copious notes and illustrations—By B. Suryanarayana Rao, B. A., M. R. A. Three parts. Bangalore 15 0 0

७०७३ **सांवत्सरीपद्धति**—पण्डित नारायणप्रसाद कृत भाषा टीका सहित । मुम्बई १ ८ ०

७०७४ **सामुद्रिकसुधा**— मुरादाबाद ० १ ६

७०७५ **सामुद्रिकशास्त्रम्**—(समुद्रेणप्रोक्तम) राधाकृष्णमिश्रकृत भाषाटीका सहित । इसमें स्त्रीपुरुषादि के प्रत्येक अंग प्रत्यंग का वर्णन और हस्तरेखा, ललाटरेखादि का अपूर्व ज्ञान होता है । सजिल्द मुम्बई १ ८ ०

७०७६ **सामुद्रिकशास्त्र**—पं० शक्तिधरकृत भाषाटीका सहित । लखनऊ २ ८ ०

७०७७ **सामुद्रिकशास्त्रहिन्दीभाषा**—इसका नाम हस्तपरीक्षा (Hindi Palmistry) है । रतलाम ४ ० ०

७०७८ **सामुद्रिक छोटा**—हिन्दी टीका सहित । मुम्बई ० ४

७०७९ **सामुद्रिकसटीक**—अर्थात् शिवपार्वती के संवाद से स्त्री पुरुषों के शुभाशुभ-लक्षण-विचार । लखनऊ ० ६ ०

७०८० **सारावली**—कल्याणवर्मविरचिता । मूलमात्र । ५४ अध्याय सर्व भागों का संग्रह । सजिल्द । मुम्बई १ ८ ०

७०८१ **सिद्धखेटीग्रहमालासारणी**—महीधरशर्म्मकृत । दुष्प्राप्य । मुम्बई २ ० ०

७०८२ **सिद्धान्तचिन्तामणि**—भाषाटीका सहित, जिसमें पंचांग बनाने की क्रिया उदाहरण सहित लिखी गई है। मुम्बई १ ४ ०

७०८३ **सिद्धान्ततत्त्वविवेकः**—(कमलाकरभट्ट) म० म० पण्डित श्रीसुधाकर द्विवेदिकृत टिप्पणीभिस्तथा म० म० पं० श्रीमुरलीधरशर्म्मकृतटिप्पणीभिश्च सहितः। सम्पूर्णः। बनारस ७ ८ ०

७०८४ **सिद्धान्ततत्त्वविवेकः**—श्रीकमलाकरविरचितः। श्रीगङ्गाधरमिश्रशर्मणा विरचितेन वासनाभाष्येण समलंकृतः। भागलपुर ३ ० ०

७०८५ **सिद्धान्ततत्त्वविवेकः**—(कमलाकरभट्ट) त्रिप्रश्नाधिकारान्तः पूर्वार्द्धभागः। गंगाधरशर्म्मकृत'वासना'संस्कृतभाष्यसहितः। लखनऊ ४ ८ ०

७०८६ **सिद्धान्तदैवज्ञविनोद**—पं० श्रीमनीरामजी विरचित संस्कृतटीका तथा भाषाटीका सहित। मुम्बई ३ ० ०

७०८७ **सिद्धान्तयोगाकर**—(रघुनन्दनप्रसाद) भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ४ ०

७०८८ **सिद्धान्तशिरोमणिः**—(गोलाध्याय) भास्कराचार्य विरचित तत्कृत 'वासना-भाष्य' तथा बापूदेवशास्त्रिकृत टिप्पण सहित। काशी २ ० ०

७०८९ **सिद्धान्तशिरोमणि**—(गोलाध्याय) भास्कराचार्य तत्कृतवासनासंस्कृत भाष्य तथा गिरिजाप्रसाद द्विवेदिकृत 'प्रभा' नामक संस्कृत टिप्पण, भाषा टीका, उपपत्ति और विविधपाद-टिप्पणी सहित। लखनऊ १ १४ ०

७०९० **सिद्धान्तशिरोमणि**—(गोलाध्याय) भास्कराचार्य विरचित उदयनारायण-सिंहकृत भाषा टीका सहित। मुम्बई १ ४ ०

७०९१ **सिद्धान्तशिरोमणि**—(गणिताध्याय) भास्कराचार्य विरचित तत्कृत 'वासना' भाष्य तथा गिरिजाप्रसादकृत 'प्रभा' नाम संस्कृत टिप्पण, भाषाभाष्य, उपपत्ति और विविध पाद टिप्पण सहित। लखनऊ २ ८ ०

७०९२ **सिद्धान्तशिरोमणिः** (गणिताध्यायः)—श्री भास्कराचार्यकृतः। पं० दुर्गा-प्रसादद्विवेदिकृतसंस्कृतभाष्यसहितः। इस में प्राचीन और नवीन प्रायः सब ही गणित ज्योतिष के विद्वानों के मतों को ध्यान में रख कर आलोचना की गई है। पारिभाषिक शब्दों के नाम अंग्रेज़ी में भी दिये हैं। जयपुर ४ ० ०

७०९३ **सिद्धान्तशिरोमणि**—(गणिताध्याय) भास्कराचार्य विरचित। 'मिताक्षरा' संस्कृत व्याख्या सहित। कलकत्ता १ ४ ०

७०९४ **सिद्धान्तशिरोमणि**—(गणिताध्यायः) वासनाभाष्यसहितः। श्रीमद् बापू-देवशास्त्रिभिः प्राक् संशोधितः, तत्तनयेन पं० गणपतिदेवशास्त्रिणानुसंस्कृतः। काशी २ ० ०

७०९५ **सिद्धान्तशिरोमणिः**—श्रीभास्कराचार्यविरचितः श्रीनृसिंहदैवज्ञकृतवासनाख्य-वार्त्तिकेन श्री मुनीश्वरविरचितेन मरीच्यभिधटीकया च सहितः। बनारस ३ ० ०

७०९६ **सिद्धान्तशेखरः**—श्रीपतिप्रणीतः। श्रीबबुआजिमिश्रेण संशोधितः।

आदितश्चतुर्थाध्यायपञ्चसप्ततिश्लोकपर्यन्तं मक्किभट्टकृतगणितभूषणाख्यटीकया। तत्परतश्च संशोधक-कृतसिद्धान्तशेखरविवरणाख्यटीकया सहितः। प्रथमो भागः। सजिल्द।
कलकत्ता ७ ८ ०

७०९७ **सिद्धान्तसार**—पद्यपञ्चाशिका भाषाटीका। मुम्बई ० ३ ०

७०९८ **सिद्धान्तसार्वभौमः**—श्रीमुनीश्वरविरचितः। २ भागौ। प्रयाग ५ ० ०

७०९९ **सिद्धिसागर**—(राशिमाला) भाषा में जन्म लग्न का फलनिर्णय तथा बारह राशियों के फल भली भांति लिखे गये हैं। मुम्बई ० १ ६

७१०० **सुगमज्योतिष**—(पं० देवीदत्तजोशी) हिन्दी। अपने विषय का नवीन पद्धति के अनुसार अपूर्व ग्रन्थ। अल्मोड़ा ६ ८ ०

७१०१ **सुधासागरजातक**—भाषाटीकासहित। महाराणा उदयपुर ने बहुत साधन व्यय करके ज्योतिष का यह अलौकिक ग्रन्थ छपवाया था, दुष्प्राप्य। सजिल्द २ ० ०

७१०२ **सूर्यग्रहगणितम्**—भारतभूमण्डलीयं (केतकरोपाह्ववेंकटेशेन विरचितम्) मूलमात्र। पूना २ ० ०

७१०३ **सूर्यसिद्धान्त**—रङ्गनाथकृत संस्कृतटीका सहित। कलकत्ता २ ८ ०

७१०४ **सूर्यसिद्धान्त**—'गूढार्थदीपिका' संस्कृतटीका और पं० बलदेवप्रसाद मिश्र कृत भाषाटीका सहित। इसमें कालविभाग, ग्रहगति के कारणादि, पूर्वपश्चिमादि रेखानिर्णय, स्पष्ट चन्द्रसूर्यादि छाया-ज्ञान, चन्द्रलम्बन, सूर्यग्रहण परिलेख, ग्रहदर्शन, नक्षत्रस्थान, उदयास्त-कालनिर्णय आदि बहुत से विषय हैं। सजिल्द मुम्बई ३ ० ०

७१०५ **सूर्यसिद्धान्त**—माधव प्रसाद पुरोहितकृत 'सौरदीपिका' संस्कृत टीका और भाषा भाष्य सहित। लखनऊ २ ८ ०

७१०६ **सूर्यसिद्धान्त**—महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदि सम्पादित द्वितीय संस्करण।
कलकत्ता ३ ० ०

७१०७ **सूर्यसिद्धान्तविज्ञानभाष्य**—ले० पं० महावीरप्रसाद श्रीवास्तव।
प्रयाग ५ ४ ०

7108 Sūrya Siddhānta—A text book of Hindu astronomy translated by Rev. Ebenezer Burgess with notes and an appendix. Reprinted from the edition of 1860. Edited by Phanindra Lal Gangoly, M. A., B. L. and with an Introduction by Prabodh Chandra Sengupta.
7 0 0

७१०९ **सोमसिद्धान्त**— बनारस

७११० **सौर परिवार**—(गोरखप्रसाद) हिन्दी सचित्र। प्रयाग १२ ० ०

७१११ **सौरार्यब्रह्मतिथिगणितम्**— पूना २ ४ ०

७११२ **स्कन्द-शारीरकम्**—टीकासहितम्। Printed for the first time. 1938.
२ ४ ०

७११३ **स्त्रीजातक**—(श्यामलाल संगृहीत) तत्कृत भाषाटीका सहित बृहद् ग्रन्थ। इसमें स्त्रियों के जन्मकालीन ग्रहादिकों के फल स्पष्ट कहे गये हैं। सजिल्द।

मुम्बई १ ८ ०

७११४ **स्त्रीजातक**—(वृद्धयावनोक्त) भाषाटीका सहित। मुम्बई ० ८ ०

7115 Strijataka or Female Horoscopy—By Prof. B. Suryanarain Row, B. A., M. R. A. S., M. A. S B., F. R. H. S. &c. Bangalore 1 1 0

७११६ **स्वप्नप्रकाशिका**—(दत्तराम) तत्कृत भाषाटीका सहित। इस पुस्तक से स्वप्न का शुभाशुभ फल कह सकते हैं। मुम्बई ० ३ ०

७११७ **स्वप्नविचार**—भाषा। ० २ ०

७११८ **स्वप्नाध्याय**—भाषाटीका। ० २ ०

७११९ **हनुमान् ज्योतिष**—(प्रश्न ग्रन्थ) भाषा टीका। चक्रों सहित। ० ४ ०

७१२० **हर्शल अथवा प्रजापति**—(श्रीनिवास महादेव पाठक) रतलाम ० २ ०

७१२१ **हस्तपरीक्षा**—हिन्दी में (अंग्रेजी पुस्तकों का उपयोगी अंश

रतलाम ४ ४ ०

७१२२ **हस्तसंजीवनम्**—मेघविजयगणिविनिर्मितं सामुद्रिकलहर्याख्यया व्याख्यया विभूषितम्। भाषानुवादसहितं च। सचित्र। इन्दौर ३ ० ०

७१२३ **हस्तसामुद्रिक**—(रामचन्द्र भारद्वाज) हिन्दी। पामिस्ट्री की सब से बढ़िया पुस्तक। १०० से ऊपर चित्र। देहली ४ ० ०

७१२४ **हायनचन्द्रोदय**—(दुर्गाप्रसाद) लक्ष्मीनारायणकृत भाषा टीका सहित। इससे ताजिक विषय में साधारण श्रेणी के विद्यार्थी भी शीघ्र बोध प्राप्त कर सकते हैं।

मुम्बई ० ४ ०

७१२५ **हायनफलरत्न**—भाषा टीका सहित। यह पुस्तक वर्षपत्र में भाव, वर्षेश, दशा आदि फल लिखने के लिए बहुत ही उपयोगी है। मुम्बई ० ५ ०

७१२६ **हायनबोध**—(अयोध्याप्रसाद) भाषाटीका सहित। संवत्सर फल और तेजी मंदी का विचार। मुम्बई ० ६ ०

७१२७ **हायनभास्करः**—(लक्ष्मीनारायण शर्मणा विरचितः) दुर्गाप्रसादकृत भाषाटीका सहित। इस पुस्तक से वर्ष फल बनाने में बड़ी सहायता मिलती है।

मुम्बई ० १० ०

७१२८ **हायनरत्न**—इसमें हिल्लाज, खत्तखुत्त, रोमक और समरसिंह के कथित अपूर्व वर्षफल वर्णित हैं। खुले पत्रे। मुम्बई २ ० ०

७१२९ **होडाचक्र**—मूल अति स्थूलाक्षर। ० १ ६

७१३० **होड़ाचक्र**—भाषाटीका सहित। मुम्बई ० २ ०

७१३१ **होड़ाचक्रम्**—पण्डित सीताराम शर्मणा विरचितः काशी ० ३ ०

७१३२ होरामकरन्द—पण्डित गुणाकर रचित। लखनऊ ० २ ६

७१३३ होराशास्त्रम्—(वराहमिहिर) रुद्रकृत विवरणसमेतम्। मद्रास ३ ० ०

7134 The Astrological Magazine—July, August and September 1936. Bangalore 0 12 0

7135 The Astrological Mirror--(Pocket edition). By B. Surya Narayana Rao.-/9/-. Big edition. Madras 1 1 0

7136 Astrological Primer—By B. Surya Narayana Rao. 0 12 0

7137 Astrological Self-Instructor—Zodiacal Map, elaborate Scientific Introduction. By B. Surya Narayana Rao. 3 4 0

7138 Astrological Aspects—By Charles E. O. Carter. Foreign 3 6 0

7139 Astrology vs. Chemistry—A short and most beautiful drama in 5 acts. By B. Surya Narayana Rao. -/9/-

7140 Astronomical Conference at Kalady with Speeches of the President and Secretary and discussions by the learned astronomers in India and Ceylon. Madras 1 1 0

7141 Astronomische Chronologie—Von Prof. Dr. P. V. Neugebauer. In two parts. Berlin 36 0 0

7142 Astronomy without a Telescope—A guide to the constellations, and introduction to the study of the heavens with the unassisted sight. By E. Walter Maunder. English. Illustrated by Star maps and key diagrams. Bound 7 8 0

7143 Chappana Prashna Shastra—By B. Suryanarayana Rao. Madras 3 6 0

7144 Directional Astrology of the Hindus—as propounded in Vimshottari Daśā. By V. G. Rele. Bombay 3 4 0

7145 Drapsa: The Vedic Cycle Eclipses—A key to unlock the treasures of the Vedas. By Dr. R. Shamasastry B. A., Ph. D. Mysore 2 0 0

7146 Graha and Bhava Balas—A unique treatise for measuring strengths of planes and houses and their influences numerically—an excellent aid to predictive Astrology. Madras 2 13 0

7147 Hands and How to Read Them—A popular guide to Palmistry. By E. Rene. New York 5 0 0

7148 High Ways in Astrology—By Kumbha. Madras 1 8 0

7149 Hindu Predictive Astrology— Madras 6 6 0

7150 Hindu Progressed Horoscope or Varshaphal. Madras 1 14 0

7151 The Hindu Science of Palmistry—By Nalini Kanta Sankhyatirtha, Calcutta 4 0 0

7152 History of Hindu Mathematics—A source Book, by B. Dutt and A. Singh. 2 parts. 13 8 0

7153 History of Indian Astronomy—By Shankar Balkrishna Dikshita, Poona 10 0 0

7154 Illustrative Horoscopes—with valuable notes and explanations, a real practical study of astrological principles. By B. Suryanarain Rao, B. A. Bangalore 2 9 0

7155 Indian Chronography—An extension of the "Indian Calendar" with working examples. By Robert Sewell. London 15 0 0

7156 An Indian Ephemeris—Showing the daily solar and lunar reckoning according to the principal systems current in India with their English equivalents, ending moments of Tithis and Nakshatras, &c., &c. First six volumes A. D. 700 to 1799 and volume VII, A. D. 1800 to 1999. By L. D. Swami Kannu Pillai, Diwan Bahadur, I. S. O. Madras

7157 An Introduction to the Study of Astrology—in the light of modern and ancient physical sciences. By B. Surya Narayana Rao. 1 2 0

7158 Karma and Chemistry—By Prof. B. Surya Narain Rao, B. A. Madras 0 5 0

7159 A Manual of Hindu Astrology—By Dr. B. V. Raman. Bangalore 5 0 0

7160 Nine Stages of Life and Sub-divisions—By G. A. Ananth. 0 12 0

7161 Practical Hints on Astrology—By G. A. Ananth Palghat 0 12

7162 Practical Lessons on Medical Astrology—By G. A. Ananth. Palghat 0 12 0

7193 Results of Akshaya and Prabhava (1926-27 and 1927-28) in English. Madras 0 5 0

7164 The Results of the Years Shukla and Pramoduta (1929-30 and 1930-31)—By B. Suryanarain Rao, &c. &c. Madras 0 9 0

7165 The Royal Horoscopes—Of many great personalities of India. Madras 3 6 0

इतिहास और सभ्यता (HISTORY AND CULTURE)

7166 Aims and Ideals of Ancient Indian Culture—by Brojasundar Ray. Calcutta 2 0 0

[The author has shown that moral and spiritual culture of our students is essentially necessary together with their physical and intellectual culture, as in ancient India]

7167 Akbar the Great Mogul—By Vincent A. Smith, C. I. E. Foreign 12 0 0

7168 Alberuni's India—An account of the religion, philosophy, literature, geography, chronology, astronomy, customs, laws and astrology of India. About A. D. 1030. Edited with notes and indices by Dr. Edward C. Sachau. Two Volumes in one. Popular edition. London 10 8 0

7169 Alt-Indian—Kulturgeschichtliche Skizzen von Alfred Hillebrandt. Breslau 3 0 0

7170 Altindien und die Kultur des Ostens-Rede—Von Professor Dr. Alfred Hillebrandt. Breslau 1 0 0

7171 Cunningham's Ancient Geography of India—Edited with Introduction and notes by Surendarnath Majumdar Sastri, M. A. Calcutta 15 0 0

7172 Geographical Dictionary of Ancient and mediaeval India, by Nundo Lal Dey, M. A., B. L., Second edition, revised and enlarged. Calcutta 9 0 0

7173 Ancient India—From the earliest times to the first century A. D. By E. J. Rapson, M. A. Cambridge 3 12 0

7174 A Study of Ancient Indian Numismatics. By Surendra Kisor Chakrabortty, M. A., Ph. D., Mymensingh. 5 0 0

7175 Ancient Indian Numismatics (Carmichael Lectures, 1921)—By Prof. D. R. Bhandarkar, M. A., Ph. D. Calcutta 4 14 0

7176 Ancient Indian Tribes. By Dr. Bimala Churn Law. Vol. I. Lahore 3 8 0
Vol. II. Calcutta 1 8 0

7177 Ancient Karnatak Vol. I—History of Tuluva. By Dr. B. A. Saletore, M. A. Ph. D. Poona 10 0 0

7178 Ancient Mid-Indian Kṣatriya Tribes. Vol. I—By Bimala Churn Law, M. A., B. L., Ph. D. Calcutta 8 0 0

7179 Arische Urzeit—Forschungen auf dem Gebiete des ältesten Vorderund Zentralasiens nebst Osteuropa. Von Dr. Hermann Brunnhofer. Bern 8 0 0

7180 Aryan Trail in Iran and India—by Nagendranath Ghose, M. A., B. L. Calcutta 3 8 0

7181 Asoka Text and Glossary—In two parts. By A. C. Woolner. Calcutta 10 0 0

7182 Asoka, the Buddhist Emperor of India—By Vincent A. Smith C. I. E., M. A., D. Litt. Oxford 3 6 0

7183 Edicts of Asoka—(In Sanskrit) edited by R. Ramaiyar M. A. Madras

7184 Asura India—By Anantaprasad Banerji Sastri, M, A., D. Phil. Patna 5 8 0

7185 Barhut Book I-III—By Benimadhab Barua. M. A., D. Litt. Calcutta 27 0 0

७१८६ भारत में ब्रिटिश साम्राज्य—भाषा में गंगा शंकर मिश्र कृत। बनारस ४ ८ ०

7187 Bhoja Raja. By Prof. P. T. Srinivasa Ayyangar, M. A. Madras 1 12 0

7188 Buddhist Remains in Andhra and the History of Andhra between 225 and 610 A. D.—By Dr. K. R. Subrahmaniam, M. A., Ph. D. Madras 2 8 0

7189 Chronology of Ancient India (From the times of the Rig-Vedic King Divodasa to Chandragupta Maurya with glimpses into the Political History of the period), by Sitanath Pradhan, M. Sc., Ph. D., Brihaspati. 6 0 0

7190 Coins of India—By C. J. Brown. 1 12 0

7191 Corporate Life in Ancient India—by Dr. R. C. Majumdar, second edition, revised and enlarged. Poona 7 8 0

7192 Creative India—From Mohenjo Daro to the age of Rāmakrishna-Vivekānand, a study in the aspects and tendencies of Indian civilization by Benoy Kumār Sarkar 1936. Lahore 15 0 0

7193 Cults, Customs and Superstitions of India—Being a revised and enlarged edition of "Indian Life, Religious and Social," comprising studies and sketches of interesting peculiarities in the Beliefs, Festivals and Domestic Life of the Indian people, also of witchcraft and Demoniacal Possession, as known amongst them. By John Campbell Oman. London 18 0 0

7194 Cultural Heritage of India—Sri Ramakrishna Centenary Memorial. 3 Vols. Calcutta 30 0 0

7195 Description of the City of Vijayanagar (The greatest, the most magnifiscent and the most populous of the modern cities. By B. Suryanarain Row, B. A. Madras 1 1 0

7196 Domestic Manners and Customs of the Hindus—By Rev. Ishuree Das. Benares 1 8 0

7197 Early History of Kauśambī—From the sixth

century B. C. to the eleventh century A. D. By Nagendra Nath Ghosh, M. A. Allahabad 4 0 0

7198 Eastern Chalukyas—By D. C. Ganguly, M. A., Ph. D. An attempt has been made in this book, to give a comprehensive account on the subject with the help of available evidence. 1937. Benares 4 0 0

7199 Economic Life and Progress in Ancient India—(Being the outlines of Indian Economic History) by Narayan Chandra Banerji. Calcutta 6 0 0

7200 Economic Life in Ancient India—A Systematic Survey. Two volumes. By Maganlal A. Buch, M. A. Cloth cover. Baroda 12 0 0

7201 Educational Ideas and Institutions in Ancient India—by Dr. S. C. Sarkar. Patna 3 2 0

7202 Education in Ancient India—By Dr. A. S. Altekar, M. A., LL. B., D. Litt. Benares 3 0 0

7203 Evolution of North-West Frontier Province. By Rai Bahadur Diwan Chand Obhrai, Advocate. Peshawar 12 0 0

7204 Die Frau in den indischen Religionen. Von Dr. M. Winternitz. Leipzig 5 0 0

7205 Forty-one Years in India—From subaltern to Commander-in-chief. By Field-Marshal Earl Roberts of Kandahar. London 7 14 0

7206 Gaya and Buddha Gaya—By Beni Madhava Barua, M. A., D. Litt. 2 Vols. Calcutta 15 0 0

7207 Geography of Early Buddhism—By Bimala Churn Law. Calcutta 2 0 0

7208 Zur Geschichte der Altindischen Prosa—Mit besonderer Berücksichtigung der prosaischen Erzählung. Von H. Oldenberg. Berlin 5 0 0

7209 Glories of Magadha—by Mr. J. N. Samaddar. Patna 3 12 0

7210 A Guide to Elura Cave Temples—By Dr. James Burgess. 2 0 0

7211 Historical Gleanings—by Dr. Bimala Churn Law, M. A., B. L., Ph. D. Calcutta 6 0 0

7212 History of Benares—from prehistoric times to the present day, with six plates by Prof. A. S. Altekar, M. A., LL. B., D. Litt. This is the only book on the history of Benares, which fully deals with the religious, cultural, literary and political history of the city during the legendary, ancient, medieval and modern periods and explains how it came to be the religious and cultural capital of Hindu India. 1939. Benares 1 8 0

7213 History of India. 150 A. D. to 350 A. D. The so-called dark period is disclosed as a bright period of Hindu History. By Dr. K. P. Jayaswal, M. A. Lahore 10 0 0

7214 History of Medieval Hindu India by C. V. Vaidya—being a History of India from 600 to 1200 A. D. in 3 Vols. Poona

Vol. I—Harsha and His Times (600-800 A. D) 7/8/0. Vol. II—Early History of the Rajputs (750 to 1000 A. D.) 7/8/0. Vol. III—Downfall of Hindu India (1000-1200 A. D.) 7 8 0

7215 History of Malwa—By Sukhasampattirai Bhandari, M. R. A. S. Vol. I.—From the earlist times to the reign of Aurangzeb. Ajmer 3 0 0

7216 History of the Panchala (in the Vedic period)—By S. P. L. Narasimhaswami. Madras

7217 A History of the Sikhs from the origin of the nation to the battles of the Sutlej. By Joseph Davey Cunningham. Oxford 11 4 0

7218 History of Sivaganga Mutt—By B. Suryanarain Row, B. A. Bengalore 1 1 0

7219 History of Vijayanagar— Madras 2 12 0

7220 A History of Village Communities in Western India—By A. S. Altekar, M. A., LL. B. 3 0 0

7221 Indian Civilization & Its Antiquity—By Bhudeva Mookerji, M. A., Cloth-bound. Calcutta 2 0 0

7222 India Old and New—By Sir Volentine Chirol. Foreign 7 8 0

7223 India's Past—A survey of her Literatures, Religions, Languages and Antiquities. By A. A. Macdonell. Foreign 8 0 0

7224 Indo-Aryan Races—A Study of the Origin of Indo-Aryan People and Institutions. By Ramaprasad Chanda, B. A. Part I. Bengal 6 0 0

7225 Inscriptions of the Early Gupta Kings and their Successors—By J. F. Fleet, C. I. E. Part I. Allahabad 1 12 0

7226 Inter-state Relations in Ancient India—by Dr. Narendranath Law, M. A., B. L., P. R. S., Ph. D. Calcutta 2 0 0

7227 Introduction to the History of Vijaynagar. Madras 0 9 0

7228 Malabar and the Portuguese—Being a History of the relation of the Portuguese with Malabar from 1500 to 1663. By K. M. Panikkar, B. A. (Oxon.), Barrister-at-Law. Bombay 7 0 0

7229 Political History of Ancient India—From the accession of Parikshit to the Extinction of the Gupta Dynasty. By Hemchandra Raychaudhuri M. A., Ph. D. 4th edition revised and enlarged. Calcutta 7 8 0

7230 Popular Culture in Karnataka—Essays on some topics relating to the subject. By Masti Venkatesa Iyengar. Madras 2 14 0

7231 Positive Back-ground of Hindu Sociology—Book 1—Introduction to Hindu Positivism. By Benoy Kumar Sarkar. [This is an entirely new work. No material corresponding to it was published in the first edition 1914, 1921, 1926. The learned author has dealt with all the upto date questions on the subject, in this book.] 1937. Allahabad 16 0 0

७२३२ **प्राचीन भारत**—भाषा में। लेखक श्री गंगाप्रसाद मेहता एम० ए०
बनारस ३ ० ०

७२३३ **प्रियदर्शिप्रशस्तयः**—संस्कृताङ्गलानुवादपाठभेदटिप्पणादिसहिताः। श्रीरामावतारशर्मणा संगृहीतः। पटना २ ८ ०

7234 Rāṣṭrakūṭas and their Times—By Dr. A. S. Altekar, M. A. Poona 7 8 0

7235 Rise of the Sikh Power—by Narendra Krishna Sinha, M. A., Ph. D. Calcutta 4 0 0

7236 The Script of Harappa and Mohen-jo-daro and its connection with other scripts. By G. R. Hunter with an introduction by Prof. S. Langdon. London 18 0 0

7237 Selections from Sanskrit Inscriptions—By Diskalkar D. B.—Vol. I. Part I—Text. Part II—Introductory, Historical and Literary Notes and a complete translation into English. Containing also portions from Dr. G. Buhler's essay on "Indian Inscriptions and the Antiquity of Indian Artificial Poetry. Both parts.
Poona 4 0 0

7238 Short History of Vijayanagar—By B. Suryanarain Row, B. A. Madras 2 0 0

7239 Social and Military Position of the Ruling Caste in Ancient India—as preserved by the Sanskrit Epic; with an appendix on the Status of Woman. By Edward W. Hopkins. U. S. A. 12 0 0

7240 Social Life in Ancient India—Studies in Vātsyāyana's KāmaSūtra. By Haran Chandra Chakladar.
Calcutta 4 8 0

7241 Sources of Vijayanagar History—By S. Krishna Swami Ayyangar, M. A. Madras 7 8 0

7242 Some Kṣatriya Tribes of Ancient India, by Bimala Churn Law, M. A., B. L., Ph. D.
Calcutta 10 0 0

7243 The Spirit of Ancient Hindu Culture—By Maganlal A. Buch, M. A. Baroda 2 0

7244 Spirit of Indian Civilization—By Dr. Dhirendra Nath Roy, M. A., Ph. D. 2 8 0

7245 Studies in Indian Antiquities, by Hemchandra Raychaudhuri, M. A., Ph. D. 2 8 0

7246 Studies in Indian History. By Surendranath Sen, M. A., Ph. D. Calcutta 3 0 0

7247 Studies in Indian History and Culture—By Dr. Narendra Nath Law, M. A., B. L., P. R. S., Ph. D. Calcutta 8 0 0

7248 Suvarṇadvipa—Part I—Political History—By Dr. R. C. Majumdar, M. A., Ph. D. 1937. Bengal 10 0 0

7249 Suvarnadwipa—by Swami Sadananda, with a Foreword by O. C. Gangoly. Calcutta 1 0 0

7250 Tarikh-i-Mubarak Shahi—Translated into English by K. K. Basu, M. A. Baroda 7 8 0

7251 Twenty-three Inscriptions from Nepal—Collected at the expense of H. H. The Nawab of Junagarh. Edited by Pandit Bhagvanlal Indraji, Ph. D. together with some considerations on the Chronology of Nepal. Translated from Gujarati by Dr. G. Bühler, C. I. E. Bombay 1 0 0

७२५२ विश्व इतिहास की झलक—राष्ट्रपति श्री पं० ज्वाहरलाल जी नेहरू विरचित। इसमें श्री पं० जी ने प्रायः संसार भर के मुख्य २ देशों और राष्ट्रों का तथा प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय इत्यादि का प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास बताया है। सच पूछो तो यह पुस्तक सहस्रों ऐतिहासिक, राजनैतिक तथा दूसरे अवश्यंज्ञातव्य विषयों का समुद्र है। प्रत्येक भारतीय को अपनी और अपने देश की वर्तमान स्थिति जानने के लिये तो इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। दो भागों में। १९३८. ८ ० ०

जीवनचरित (Biography)

7253 Abhinavagupta—An Historical and Philosophical Study. By K. C. Pandey with a Foreward by Mahamahopādhyāya Dr. Ganga Nath Jha. Benares 12 0 0

7254 Sri Aurobindo—A life sketch. 0 4 0

७२५५ भारतपारिजातम् (काव्यम्)—स्वामिश्रीभगवदाचार्यकृतम्। महात्मगान्धिचरितम्। बड़ोदा ४ ० ०

7256 Rishi Bunkimchandra—By Sri Aurobindo. 0 6 0

7257 Chaitanya and His Age. By Rai Bahadur Dineschandra Sen, B. A., D. Litt., with a Foreword by Prof. Sylvain Levi. Calcutta 6 0 0

7258 Chaitanya and His Companions, by Rai Bahadur Dineschandra Sen, B. A., D. Litt. Calcutta 2 0 0

7259 A Critical Study of the Life and Novels of Bankim Chandra. By Jayant Kumar Das Gupta, M. A., Ph. D. 2 8 0

7260 Glimpses of Dayananda—by Chamūpati.

[The author has successfully attempted to portray this wonderful personality—The social, religious and hence the political reformer of the age.] Delhi 1 4 0

7261 Gorakhnath and Mediaeval Hindu Mysticism—By Dr. Mohan Singh M. A., Ph. D., D. Litt. Lahore 15 0 0

7262 Life of Hemacandrācārya (By Prof. Bühler)—Translated into English from the original German by Prof. Dr. Mani Lal Patel, Ph. D. Calcutta 3 8 0

7263 Birth-Place of Kalidasa—By Pt. Lachhmi Dhar Kalla, M. A., M. O. L., Shastri. Delhi 1 4 0

7264 Kalidasa—by Sri Aurobindo. 1 0 0

7265 Life of Nagarjuna—By Welleser. 4 0 0

7266 Kalidāsa : Vol. I—His period, personality and poetry. Vol. 2—His genius, ideals and influence. By K. S. Ramaswami Sastri, B. A., B. L. Both Vols. Madras 4 0 0

7267 Pandit Madan Mohan Mālavīya— Madras 3 0 0

7268 Story of Mira Bai—By Bankey Behari. Gorakhpur 0 10 0

7269 Age of Patanjali—By Pandit N. Bhashyacharya. Madras 0 2 0

7270 Rabindranath Tagore—Poet, Patriot and Philosopher, by K. S. Ramaswamy Sastri B. A., B. L. 1 8 0

7271 Rabindra Nath Tagore, Poet and Dramatist—By E. J. Thomson. Foreign 8 0 0

7272 Life of Ramakrishna by Romain Rolland. Translated into English from original French. 3 8 0

7273 Life of Sri Ramakrishna—with a Foreword by Mahatma Gandhi. A Comprehensive chronological account of the Master's wonderful life—the only authorized edition of its kind in English. 4 0 0

7274 Sri Ramakrishna and His Disciples—By Sister Devamata. 4 0 0

7275 Sri Ramakrishna, His Life and Sayings. By Prof. Max Muller. 5 8 0

7276 Teachings of Sri Ramakrishna 1 12 0

7277 Age of Sri Sankaracarya—By Pandit N. Bhashyacharya. Madras 0 2 0

7278 Sankaracharya, Philosopher and Mystic—By Kashi Nath Tryambak Telang. Madras 0 6 0

7279 Sankaracharya the Great and His Successors in Kanchi—By B. N. Venkataraman, M. A. Madras 1 8 0

७२८० शंकराचार्य जी का जीवन चरित्र भाषा—शैवों के मन प्रसन्न करने वाला उपयोगी ग्रन्थ। ० ८ ०

७२८१ श्रीशिवभारतम्—निवासकरकवीन्द्रपरमानन्दविरचितम्। इतिहासग्रन्थः। अत्र भृशबल (भोसले) कुलोत्पन्नस्य श्रीशिवच्छत्रपतेर्महाराजस्य धर्मसंस्थापनादिना जगत्परिपालनोपयुक्तमहापराक्रमादेस्तस्येश्वरावतारत्वादेश्चेतिवृत्तं याथातथ्येन वर्णितमस्ति। १ ५ ०

7282 Lokmanya B. G. Tilak— Madras 2 0 0

7283 Life of Swami Vivekananda—By His Eastern and Western Disciples. 2 Vols. 8 0 0

7284 Life of Vivekananda and the Universal Gospel—By Romain Rolland. Translated into English from the original French. 4 8 0

संस्कृत तथा तत्सम्बन्धी भाषाओं के साहित्य का इतिहास

7285 A Brief History of Sanskrit Literature—By Kokileswar Śastri. Calcutta 1 8 0

7286 Classical Sanskrit Literature—By A. B. Keith. 1 6 0

7287 Contribution of Hindi Literature to Indian History (भारतीय इतिहास पर हिन्दी साहित्य का प्रभाव) by Rai Bahadur Pt. Sukhdeo Behari Misra. Patna 4 6 0

७२८८ हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास— ५ ० ०
Origin and Growth of the Hindi Language and its Literature. By Pandit Ayodhya Singh Upadhyaya. Patna 5 0 0

७२८९ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—श्रीरामकुमारवर्मा एम० ए० कृत। प्रयाग ४ ८ ०

७२९० हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास—प्रो० सूर्यकान्त जी एम. ए. कृत। ३ १२ ०

७२९१ हिन्दीसाहित्य की रूपरेखा—प्रो० सूर्यकान्त जी एम. ए. कृत। २ ० ०

7292 History of Ancient Sanskrit Literature by Max-Müller (Reprint). Allahabad 10 0 0

7293 A History of Brajabuli Literature—Being a Study of Vaiṣṇava Lyric Poetry and Poets of Bengal (like Chaitanyadeva etc., etc.) by Sukumar Sen, M. A. Calcutta 6 8 0

7294 History of Classical Sanskrit Literature—Being an elaborate account of all branches of Classical Sanskrit Literature, with full Epigraphical and Archaeological Notes and References, an Introduction dealing with Language, Philology and Chronology and Index of Authors and Works, by Kavyavinoda Sahityaratnakara M. Krishnamachariar, M. A., M. L., Ph. D. Madras 10 0 0

7295 A History of Indian Literature—From Vedic Times to the Present Day. By Herbert H. Gowen. (At present there is no other book in the market which is so up-to-date and comprehensive on the subjact.) Foreign 18 12 0

7296 History of Indian Literature—By Professor

Winternitz. English translation. Vol. I—10/8/-, Vol. II—
Calcutta 12 0 0

7297 The History of Indian Literature—By Albrecht Weber. Translated from the second German edition by John Mann, M. A. and Theodor Zachariae, Ph. D.
London 7 8 0

7298 History of Pali Literature—By Bimala Churn Law. 2 Vols. Calcutta 14 0 0

7299 History of Sanskrit Literature—By A. Berriedale Keith, D. C. L., D. Litt. Foreign 18 12 0

7300 History of Sanskrit Literature—By C. V. Vaidya M. A., LL. B. Bombay 10 0 0

7301 History of Sanskrit Literature, An outline of the—By T. Chaudhuri, M. A., Ph. D. Calcutta 1 12 0

7302 History of Sanskrit Poetics—By P. V. Kane. M. A., LL. M. Bombay 3 6 0

7203 A History of Vedic Literature (in Sanskrit)—By P. P. S. Sastry and K. L. V. Sastry. Madras 2 4 0

7304 Indian Literature Abroad (China). By Probhat Kumar Mukherji of Viśvabhāratī. Calcutta 1 0 0

7305 Indian Literature in China and the Far East—By P. K. Mukherji. Calcutta 6 10 0

7306 Magadhan Literature—By Mahamahopādhyāya H. P. Sastri, C. I. E. Patna 3 2 0

7307 Pali Literature of Burma—By M. H. Bode, Ph. D Foreign 4 8 0

7308 Panini : His Place in Sanskrit Literature—By Theodore Goldstucker (Reprint). Allahabad 5 0 0

7309 Persian Influence on Hindi—By Ambika Prasad Vajapeyi. Calcutta 2 8 0

7310 Reden und Aufsatze uber Indian Literatur und Kultur. Von Leopold Von Schroeder. Leipzig 8 0 0

7311 Sanskrit Buddhism in Burma—By N. Ray.
Calcutta 2 0 0

7312 Sanskrit Drama in its origin, development, theory and practice—By A. B. Keith. Foreign 15 12 0

७३१३ **संस्कृत साहित्य का इतिहास**—२ भाग। भाषा में। लेखकः—सेठ कन्हैयालाल पोद्दार। २ ८ ०

७३१४ **संस्कृत साहित्य का इतिहास**—पं० सीताराम जयराम जोशी, एम० ए०, काव्यतीर्थकृत। सजिल्द काशी ५ ० ०

७३१५ Sārasvatāloka (**सारस्वतालोकः**)—किरणः १—संस्कृतकविपरिचयः (भारविः)। प्रयाग १ ४ ०

7316 Selections from Hindi Literature—Compiled by R. B. Lala Sita Ram B. A. Calcutta
Book I. (Bardic Poetry) 6/-/-, II (The Krishna Cult) 6/-/-, III (Tulsi Das) 6/-/-, IV (The Saints) 6/-/-, V (Arts Poetica) 3/-/- and VI (Other Poets) Part I—3/-/-, Part II—6/-/-. Complete set (Book I-VI) 30 0 0

7317 Some Problems of Indian Literature. By Prof. M. Winternitz, Ph. D. 1925. 2 8 0

7318 Studies in Sanskrit Literature—First series (Amaru, Bhartrihari, A novel view of Rasa and Prakrit "Gāthā Saptaśatī") By C. R. Narasiṃha Śāstrī M. A. Mysore 1 2 0

सनातनधर्म सम्बन्धी पुस्तक

७३१९ **अनार्यसमाजरहस्य** Or Amusing Secrets of the Arya Samaj भाषा में। मेरठ ≡)

७३२० **अन्त्यजों का मन्दिर प्रवेश में अनधिकार** पं० अखिलानन्दशर्मा कविरत्नकृत। ।=)

७३२१ **आचार और विचार** पं० अखिलानन्द कविरत्नकृत। ।)

७३२२ **आर्यसमाज की मौत** लेखक पं० कालूरामशास्त्री। इटावा २)

७३२३ **आश्वमेधिक मन्त्रमीमांसा** पं० भीमसेनजीकृत। इटावा =)

७३२४ **काथबोधः** साजनीकृतटीकोपेतः दत्तात्रेयसम्प्रदायानुगतः काशी ॥)

७३२५ **जैनास्तिकत्वविचार** अर्थात् जैनी आस्तिक हैं कि नास्तिक इस जटिल प्रश्न की संक्षिप्त मीमांसा। ले० पं० भीमसेन शर्मा। इटावा)॥।

७३२६ **तत्त्वनिर्णयः** वात्स्य श्रीवरदगुरुप्रणीतः। शैववैष्णवविषये प्रविविक्तूणामत्यन्तोपकारको लघुः प्रकरणग्रन्थः मद्रास ≡)

७३२७ **तत्त्वमार्तण्ड** स्वामी प्रभूतानन्द सरस्वतीप्रणीत। हिन्दी। इलाहाबाद १।)

७३२८ **दयानन्द का कच्चा चिट्ठा** मेरठ)॥

७३२९ **दयानन्द की विद्वत्ता** अर्थात् दयानन्दकृत यजुर्वेदभाष्य का फोटो। पं० कालूराम शास्त्री लिखित। इटावा)॥

७३३० दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य की समीक्षा मुरादाबाद =)

७३३१ दयानन्दचरितदर्पण पं० जयिालालजी जैनी विरचित। कानपुर २)

७३३२ दयानन्द तिमिरभास्कर पं० ज्वालाप्रसाद जी कृत भाषा टीका समेत दयानन्दमतखण्डन प्रमाणसंयुक्त है। उपदेशक महोपदेशक इस के याद करने से हो सकते हैं। सनातन धर्म के अवतार, श्राद्ध, भगवत्पूजनादि सब विषय वेद से सम्पादन किये गए हैं। सजिल्द। मुम्बई ४॥)

७३३३ दयानन्दमतदर्पण मुं० जगन्नाथ दास संकलित। मेरठ ॥

७३३४ दयानन्दमतविद्रावण इटावा।)

७३३५ दयानन्दमतसूची ला० जगन्नाथ दास संकलित। मेरठ ॥)

७३३६ दयानन्दलीला ला० जगन्नाथदास-संकलित। मुरादाबाद)॥।

७३३७ दयानन्दहृदय मु० जगन्नाथ-दाससंकलित। मेरठ)॥

७३३८ दर्पदलनम् भाषा में। कविरत्न पं० अखिलानन्दशर्मविरचितम्। अनूपशहर। ।)

७३३९ धर्मचन्द्रिका स्वामीदयानन्द विरचित। काशी १)

७३४० धर्मदिवाकर दयानन्दीयभास्कर-प्रकाश के प्रथम खंड के उत्तर में। मुरादाबाद ॥)

७३४१ धर्मप्रकाशः सत्यार्थप्रकाश दयानन्दतिमिरभास्करभास्करप्रकाशैः संयुतः। पं० कालूराम शास्त्रिणा लिखितः। ५ उल्लास अमरौधा। ४॥।)

७३४२ धर्मविषयक व्याख्यान मैक्स-मूलर कृत। इस पुस्तक में अनेक भाषाओं के ज्ञाता प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् मैक्समूलर के कितने ही व्याख्यानों का सारांश दिया गया है। लखनऊ २॥)

७३४३ धर्मविज्ञान—स्वामी दयानन्दकृत। बनारस ४)

७३४४ धर्मसन्ताप श्रीजगन्नाथदासरचित। मेरठ)॥

७३४५ धर्मसुधाकर प्रथम भाग। काशी २)

७३४६ धर्मसोपान काशी ।)

७३४७ धर्माधर्म विवेक भाषाटीका स्वामी परमानन्द विरचित। काशी ॥)

७३४८ नई शिक्षा का विपरीत फल छुन्नीलाल मिहरौत्रा लिखित। कानपुर)॥

७३४९ नरमेधयज्ञमीमांसा पं० भीमसेन जी कृत।)॥।

७३५० नवग्रहसमीक्षादर्पण इटावा ।)

७३५१ नवीन वैदिक शिक्षा की पोल लेखक युक्ति विशारद पं० कालूराम शास्त्री। कानपुर ।॥)

७३५२ नाममहात्म्यसंहिता सुबोध-चन्द्रशर्माकृत भाषा में। अनूपशहर १)

७३५३ निगमागमचन्द्रिका भाषा-टीका। मुम्बई १)

७३५४ निराकारवाद में ईश्वराभाव पं० कालूराम शास्त्रिकृत। कानपुर)॥

७३५५ पञ्चकन्या चरित्र पं० भीमसेन जी कृत इटावा =)

७३५६ पतित प्रायश्चित्त विवेचन पं० अखिलान्दन कविरत्न कृत ।)

७३५७ पद्यावली Of Rūpagoswāmin—a disciple of Caitanya of Bengal—An important anthology of Vaiṣṇava Sanskrit verses, with an exhaustive Introduction on

Chaitanyaism and Chaitanya movement &c., &c. By Dr. S. K. De. M. A., D. Litt. (Lond.) Dacca 7/8/0

७३५८ **परलोकविज्ञान** मुरादाबाद ।≈)

७३५९ **पुनर्जन्म** पं० भीमसेनशर्मा विरचित इटावा ।)

७३६० **पुराणकर्तृमीमांसा** आर्यसमाजी पं० लेखरामकृत 'पुराण किसने बनाए' का युक्तियुक्त खंडन । इटावा)॥

७३६१ **ब्रह्मतर्कस्तवः, पञ्चरत्नस्तुतिश्च** सटीका । अप्पयदीक्षितकृत । मद्रास १।

७३६२ **भगवद्गीता में अस्पृश्यता-विवेचन** लेखक और प्रकाशक पं० अखिलानन्द शर्मा कविरत्न । ।)

७३६३ **भगवद्भक्ति** लेखक पं० कालूरामशास्त्री । व्याख्यादिवाकर का द्वितीय भाग । कानपुर १॥)

७३६४ **भगवद्भक्ति-रहस्यम्** कविवर-श्रीमदखिलानन्दशर्मप्रणीतम् । तत्कृतभाषानुवादसमेतम् । अनूपशहर ॥)

७३६५ **भास्कराभासनिवारण** इटावा ≈)

७३६६ Muktāphalam (**मुक्ताफलम्**) बोपदेवकृतम् । हेमाद्रिकृत-व्याख्यासहितम् । in 2 parts, with a Foreword by Dr. N. Law. Calcutta 6)

७३६७ **मुक्तिप्रकाश** ला० जगन्नाथ-संकलित । जिसमें स्वामी दयानन्द की मनमानी मुक्ति का खंडन है । इटावा ‑)

७३६८ **यजुर्वेदभाष्यसमीक्षा** इटावा ‑)॥

७३६९ **वेदों में अस्पृश्यता विवेचन** पं० अखिलानन्द कवि रत्नकृत । ।)

७३७० **वैदिकसत्यार्थप्रकाश** लेखक युक्तिविशारद पं० कालूरामशास्त्री । कानपुर २)

७३७१ **वैदिकाभासबोध** पं० हरिद्वारीलालजीकृत । इटावा)।।।

७३७२ **शास्त्रार्थत्रय** लेखक पं० विष्णुदयालमिश्र । कानपुर ।।।)

७३७३ **शिवकर्णामृतम्** अप्पयदीक्षितकृतम् । मद्रास ।≈)

७३७४ **शिवलिङ्गपूजामाहात्म्य** पं० भीमसेनजीकृत । ≡)

७३७५ **श्राद्धतत्त्व** मुरादाबाद ≡)

७३७६ **श्राद्धमीमांसा** पं० भीमसेनजीकृत । ।।।)

७३७७ **सत्यार्थप्रकाश** स्वामी दयानन्द सरस्वती विरचित । प्रथमसंस्करण की हूबहू कापी । मेरठ ३)

७३७८ **सत्यार्थप्रकाश में अस्पृश्यता विवेचन** पं० अखिलानन्द कविरत्नकृत ।)

७३७९ **सत्यार्थप्रकाश-समीक्षा** मुंशी जगन्नाथदास विरचित । इटावा ≈)

७३८० **सनातनधर्म** इसमें अनेक युक्तियों और प्रमाणों से अनेक पाखण्डधर्म खण्डनपूर्वक वैदिक सनातनधर्म का भली भांति मण्डन है । यह पुस्तक व्याख्यानदाताओं तथा धार्मिक गृहस्थों के बड़े काम की है । मुम्बई ।‑)

७३८१ **सनातनधर्मदर्शन** Edited by Prof. Vidyadhar Shastri, M. A. चूरू १।)

७३८२ **सनातनधर्मदीपिका** अथवा अनुष्ठानचन्द्रिका । हंसयोगिविरचिता । Vol. I—(Sanskrit text) Fore-

word by Dr. Sir S. Subrahmanya Iyer, Editor's Sanskrit Preface. Madras 1/2/- English translation of Vol. I—2/4/-. Vols. II and III (Sanskrit text)—5/-

७३८३ **सनातनधर्म प्रश्नोत्तरावली** ला० गौरीशंकर अग्रवाल रचित। इटावा -)

७३८४ **सनातनधर्म प्रश्नोत्तरावली** द्वितीय भाग। रचयिता पं० ब्रह्मदेवशास्त्री काव्यतीर्थ। इटावा।)

७३८५ **सनातनधर्ममिहिर** श्राद्ध, विधवा विवाह की शास्त्रविरुद्धता आदिक विषयों पर सारभरे व्याख्यान। मुरादाबाद।=)

७३८६ **सनातनधर्मशिक्षा** पं० रामस्वरूप विरचित भाषा टीका सहित। मुरादाबाद १

७३८७ **सन्ध्या से आयुवृद्धि** स्वामी हंसस्वरूपजी का व्याख्यान। अमरौधा)॥

७३८८ **साकारोपासनातत्त्व** मुरादाबाद =)

७३८९ **सुधारकों के प्रश्नों का शास्त्रीय उत्तर** पं० अखिलानन्द शर्मा कृत।।)

७३९० **स्पृश्यास्पृश्यमीमांसा** इटावा ॥)

७३९१ **हंसनाद** स्वामी हंसस्वरूपजी कृत। २ भाग। इस में अहिंसा, पुनर्जन्म, उपासना, प्रतिमा, अवतार, सन्ध्या इत्यादि पर दश व्याख्यानों का संग्रह है। प्रथम भाग १।)— द्वितीय भाग १॥।)

७३९२ **हंसहिंडोल**—स्वामी हंस स्वरूप जी कृत। इसमें हिन्दी, फारसी, उर्दू और इंगलिश पद्यों का संग्रह है। A collection of Sanskrit, Hindi, Persian, Urdu and English poetical compositions 1/4/0

७३९३ **हिन्दू-जीवन** मुरादाबाद।=)

७३९४ **हिन्दूधर्मदर्पणम्** मूलराजवर्मरचित। १ भाग। लाहौर १)

७३९५ **हिन्दूधर्ममर्म** पं० भानुदत्तविरचित। लाहौर २)

७३९६ **हिन्दूशब्दमीमांसा** अर्थात् 'हिन्दू' और 'आर्य' शब्दों के सम्बन्ध में प्रमाण और युक्तिपूर्ण विवेचना। कानपुर -)

७३९७ **सनातनधर्म सम्बन्धी अल्पमूल्यखण्डनात्मक लघुपुस्तक**— असवर्ण विवाह निषेध)॥, दयानन्द के मूल सिद्धान्त की हानि)॥।, दयानन्द मत सूची)॥, दयानन्द का कच्चा चिट्ठा)॥।, दयानन्द की बुद्धि)॥, वैदिक भासबोध)॥।, राधास्वामी गप्पदर्पण -), ईसाई मत मर्दन)॥, धर्मसन्ताप)॥, दयानन्द मत दर्पण)॥, दयानन्द लीला)॥।, इटावा।

7398 Altar Flowers. A bouquet of Choicest Sanskrit hymns with English translation. Calcutta I-4-0

7399 At the Touch of the Philosopher's Stone (A drama in five acts)—By Hanuman Prasad Poddar. Gorakhpur 0-9-0

7400 The Avataras by Annie Besant. Madras 1-0-0

7401 Bible in India, by M. Jacolliot. Allahabad 2-0-0

7402 Catechism of Hindu Dharma. Allahabad 2-0-0

7403 Chaitanya Movement. By M. T. Kennedy with 18 illustrations. 4-4-0

7404 Chaitanya to Vivekananda : Lives of the Saints of Bengal. Madras 1-8-0

7405 Democratic Hinduism. By Krishna Shastri. Poona 2-0-0

7406 Dharma—Three Lectures deliverd at the eighth Annual Convention of the Indian Section of the Theosophical Society. By Annie Besant. Bound. 0-12-0

7407 Divine Message—By Hanuman Prasad Poddar. Gorakhpur 0-0-9

7408 Early History of the Vaishnava Sect—By Hemchandra Raychaudhari, M. A., Ph. D. Second edition. Revised and enlarged. Calcutta 3-8-0

7409 Early History of Vaishnavism in South India. By S. K. Krishna Swami Aiyangar. Foreign 1-4-0

7410 Gandhi Sutras. By D. S. Sarma, M. A. Sutras in Sanskrit with English translation, and an exposition of the same from his writings i-e. "Young India", "Harijan" etc. etc. An excellent book throwing good light on the religious and political beliefs of Mahatma Gandhi, 1938. 2-0-0

7411 Hinduism. By Govind-Dass. 3-6-0

7412 Hinduism. A collection of five lectures on Hinduism by Swami Vivekananda. 0-11-0

7413 Der Hinduismus Religion Gesellschaft in heutigen Indien by H. V. Glasenapp. Foreign 10-8-0

7414 Hindu Ideals by G. Ramachandra Aiyar. Madras 3-0-0

7415 History of Srī Vaishnavas by Mr. R. Gopinatha Rao. 0-12-0

7416 Holy Mountain, being the story of a pilgrimage to Lake Manas and of initiation on Mount Kailas in Tibet by Bhagwan Shree Hamsa, translated from the Marathi by Shri Purohit Swami with an Introduction by W. B. Yeats. 7-8-0

7417 The Ideals of Hinduism—By Rai Bahadur Pt. Kashi Nath M. A. Bombay 4-0-0

7418 Indian Images, Part I: The Brahmanic Iconography by Brindavan C. Bhattacharya.
Calcutta 10-8-0

7419 Indian Theism—By Nicol. Macnicol.
Foreign 5-10-0

7420 Die Indische Theosophic Von Geschichte. Stand punkte dargestellt. By H. Gomperz. Foreign 21-0-0

7421 Introduction to Hindu Positivism.
Allahabad 7-0-0

7422 Kashmir Shaivism
Srinagar 2-8-0

7423 Leaves from the Diary of a Hindu Devotee, by Zero. Allahabad 1-0-0

7424 Minor Religious Systems: Vaishnavism, Shaivism. By R. G. Bhandarkar.
Foreign 3-8-0

7425 Mysteries of "Karmayoga" Karmaphala. its aim and end, that ultimately leads to Rebirth or Emancipation, by a Sannyasin.
Calcutta 1-0-0

7426 Origin and Early History of Shaivism in India, by Mr. C. V. Narayanan. Madras 5-10-0

7427 Origin and Evolution of Religion. By E. Washburn Hopkins.
Foreign 12 0 0

7428 Our Present Situation-Social and Religious, by G. Ramachandra Iyer, B. A.
Madras 0-2-0

7429 An Outline of the Religious Literature of India. By J. N. Farquhar.
Foreign 18-6-0

7430 Philosophy of Hindu Sādhana. By D. N. K. Brahma, M. A., Ph. D., P. R. S. Calcutta 8-8-0

7431 Problem of Religion. By Saraswati Raghavachari, B. A. (Distinction).
Ahmedabad 1-0-0

7432 Purpose of Theosophy by Mrs. A. P. Sinnet.
Bombay 0-4-0

7433 Religion and Dharma. By Sister Nivedita (Margaret E. Noble) London 1-8-0

7434 Religiose Reformbewegungen Im Heutigen Indien von Helmuth von Glasenapp. Leipzig. 3-8-0

7435 Saiva Siddhanta in the Meykanda Sastra. By Violet Paranjoti. A new publication. 5-4-0

7436 Satyā Kāmā or True Desires. Being thoughts on the meaning of life, in English, by S. E. Stokes. Bound. Madras 3 0 0

7437 The Story of Mira-Bai. By Bankey Behari. Gorakhpure 0-10-0

7438 Self-Culture or Guide forYoungman. ByShambhu Saranlal. Gorakhpur 0-4-0

7439 A Study of Religion. Containing a collection of stray lectures of Swami Vivekananda on Religion. 0-10-0

7440 Swami Vivekananda on Religion and Philosophy. 0-12-0

7441 Three Great Acharyas. Sankara, Ramanuja and Madhva. Critical sketches of their life and times: An exposition of thier Philosophical Systems. Madras 2-0-0

7442 Tukaram. Translation from Mahipati's Bhaktalilamrita, by J. E. Abbott. Poona 2-4-0

7443 Vaishṇavas of Gujarat. Being a study in Methods of Investigations of Social Phenomena. By N. A. Toothi. 18-0-0

7444 Vaishnavite Reformers of India. By Prof. T. Rajagopalachari. Madras 1-0-0

7445 Way to God-Realization. By Hanuman Prasad Poddar. Gorakhpur 0-4-0

कबीर मतसम्बन्धी पुस्तकें

७४४६ कबीरसाहब का बीजक मूल—(कबीर साहब का मुख्य ग्रन्थ)। १ ० ०

७४४७ कबीर साहब का बीजक—रीवाँनरेश महाराज विश्वनाथसिंहजीकृत पाखण्डखण्डिनी टीका सहित। यह टीका परम प्रसिद्ध और वैष्णवमात्र को मान्य है। ग्लेज कागज। ४ ० ०

७४४८ कबीरमनशूर— १२ ० ०

७४४९ कबीरबीजक—(कबीर साहब का मुख्य ग्रन्थ) कबीरपंथी महात्मा पूरनसाहब—कबीरसाहब के समान हो गये, उन्हीं महात्मा की टीका सहित। ५ ० ०

७४५० कबीरसागर—संपूर्ण ११ जिल्दों में। इसमें ४१ ग्रन्थ हैं। पुस्तक देखने योग्य है। १६ ० ०

इसके अलग अलग भाग निम्नलिखित हैं—

१ कबीर-सागर (प्रथम खंड) ज्ञानसागर—(लोकपरलोक का

वर्णन कबीर साहब के पृथ्वी पर प्रकट होने की कथा तथा ज्ञान, भक्ति, वैराग्य और योग के उपदेश का भण्डार)। १ ० ०

२ **कबीरसागर (द्वितीय खण्ड) अनुरागसागर**—यह पुस्तक ३०। ३५ प्रतियों द्वारा शुद्ध करके और पं० श्रीहजूर उग्रनाम साहब के यहां की प्रति से मिलाकर छापा गया है। स्थान स्थान पर योग्य टिप्पणी भी की गयी हैं। १ ८ ०

३ **कबीरसागर (तृतीय खण्ड)**—अम्बुसागर, विवेकसागर और सर्वज्ञसागर। १ ४ ०

४ **कबीरसागर—(चतुर्थ खण्ड बोधसागर) प्रथम भाग**—ज्ञानप्रकाश, अमरसिंहबोध और वीरसिंहबोध (कबीर साहिब का युगयुग में पृथ्वी पर प्रकट होकर अधिकारी जीवों को बोध देकर मोक्ष प्राप्त कराने की कथा)। १ ० ०

५ **कबीरसागर (चतुर्थखण्डान्तर्गत-बोधसागर) द्वितीय भाग**—गोपालबोध, जगजीवनबोध, गरुडबोध, हनुमानबोध और लक्ष्मणबोध-संयुक्त। १ ४ ०

६ **बोधसागर**—महंमदबोध, काफिरबोध, सुलतानबोध। १ ० ०

७ **बोधसागर**—निरञ्जनबोध, ज्ञानबोध, भवतारणबोध, मुक्तिबोध, चौकास्वरोदय, अलिफनामा, कबीरबानी, कर्मबोध और अमरमूल। २ ० ०

८ **बोधसागर**—उग्रगीता, ज्ञानस्थिति, संतोषबोध, कायापांजी और पञ्चमुद्रा। १ १२ ०

९ **बोधसागर**—आत्मबोध, जैनधर्मबोध, स्वसंवेदबोध और धर्मबोध १ १२ ०

१० **बोधसागर**—कमालबोध, श्वासगुंजार, आगमनिगमबोध, सुमिरनबोध। २ ० ०

११ **बोधसागर**—कबीरचरित्रबोध, गुरुमाहात्म्य और जीवधर्मबोध २ ० ०

७४५१ **कबीरभजनमाला**—महन्त शम्भुदासजीकृत, कबीरपन्थी उत्तम उत्तम भजनों का संग्रह। ० ५ ०

७४५२ **कबीरकृष्णगीता**—कृष्णगरुड़संवाद, गरुड़शुकदेवसंवाद आदि कथाओं द्वारा ज्ञानोपदेश। १ ८ ०

७४५३ **कबीरवट महिमा**— ० १ ०

७४५४ **कबीर साहेब का जीवन चरित** ० ६ ०

७४५५ **कबीरोपासनापद्धति**—कबीरपंथियों को सदाचार और नित्य कर्म्म सिखाने वाली पुस्तक इसके समान दूसरी नहीं है। १ ० ०

७४५६ **कबीरकसौटी**—इसमें कबीर साहिब का जीवनचरित्र तथा उनकी गूढ़ कविता और सुन्दर ज्ञानोत्पादक साखी हैं। ० ५ ०

७४५७ कबीरैकोत्तरशतक—सटीक। इसमें "कबीर" नामकी महिमा के महादेव पार्वती के संवाद में १०१ श्लोक दिये हैं, जिसपर अखयराम ने धनात्तरी छन्द में भाषाटीका की है। ० ५ ०

७४५८ कबीरमहिमा—शिवनारायणतोसनीबालसंगृहीत। ० २ ०

७४५९ कबीरउपदेश—इसको ज्ञानप्रकाश व सुखनिधान ग्रंथों से उत्तमोत्तम ४१ वाणियों का संग्रह कर ठाकुरदासजी ने बनाया है। ० ६ ०

७४६० गुरुमहिमा-पूनो माहात्म्य तीसरी आवृत्ति— ० ६ ०

७४६१ ज्ञान प्रश्नोत्तर— २ ८ ०

७४६२ ज्ञानस्वरोदय— ० २ ६

७४६३ दुर्लभ योग-तत्त्व स्वरोदय— ० १ ६

७४६४ निर्णयसार (कबीरपंथी)—महात्मा पूरनसाहबकृत। वेदके सिद्धान्त से जीव ही को मायारहित होने पर परब्रह्मरूप बताया है, वह सदा निर्लेप नित्य सुखी है। जो अज्ञानी देहही को सब कुछ मानते हैं उनके भ्रम गुरुशिष्यों के प्रश्नोत्तरों से दूर किये हैं। ० ५ ०

७४६५ पञ्चग्रन्थी—कबीर साहब के मूल बीजकग्रन्थ की टीकारूप। २ ८ ०

७४६६ पवन स्वरोदय— ० १ ६

७४६७ बंदगी-विचार— ० १ ०

७४६८ बाल उपदेश अर्थात् कबीर साहब का ककहरा—कबीर साहब के जीवन-चरित्र सहित। उत्तमोत्तम चेतावनी के छन्द और साखियां। ० २ ६

७४६९ बाल उपदेश—अर्थात् संत कबीर साहिब का ककहरा कबीर के जीवन-चरित्र सहित। ० ३ ०

७४७० ब्रह्मनिरूपण सटीक— ३ ० ०

७४७१ मौनगीता—कबीरदासजीकृत मांसभक्षणनिषेध। ० १ ६

७४७२ मोक्ष-सोपान— १ ८ ०

७४७३ राजनीतिधर्मग्रन्थ—(कबीरपन्थीसाधुनिर्मित) इसमें मांसमद्यादिखण्डन, अहिंसा, कर्ममार्ग, उपासना, भक्तिमार्ग, योगमार्ग, ब्रह्मज्ञान, सत्यज्ञान, रहनी और जीवन्मुक्त-स्थिति का वर्णन है। १ ० ०

७४७४ विवेकसार—कबीरपंथी नारायणदासजीकृत। इसमें दया, सत्य, शील, विचार, धीरज इन पांचों से जीव के देह के सम्बन्ध में सब शंकाओं का समाधान इत्यादि है। ० १२ ०

७४७५ विवेकचंद्रिका—ब्रह्म, ईश्वर, जीव, माया, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, ज्ञान, विज्ञान वैराग्य, उपासना, कर्म आदि का वर्णन। ० १४ ०

७४७६ वैराग्यरत्नाकर—(श्रीसाहबदासजीकृत)। १ ० ०

७४७७ शब्दावली तथा संज्ञापाठ—पूरनसाहबकृत। कबीरपंथियों के नित्य-नियमोपयोगी है। ० ५ ०

७४७८ सत्य कबीर की साखी—कबीर परिचय की साखी सहित। इस ग्रन्थ में १०८ अंग और ३५०० से भी अधिक साखियाँ हैं। कबीरपरिचय की साखी ३५२ हैं। २ ८ ०

७४७९ सत्यनाम कबीरपन्थी बालोपदेश—अर्थात् सद्गुरु कबीर साहब के सात ककहरों में से तीन (३) ककहरों का संग्रह। ० ३ ०

७४८० साखीग्रंथ विरल टीका टिप्पणी सहित। ३ ० ०

७४८१ सारदर्शन—अर्थात् कबीरकृत सारसाखियों की इन्दौर-निवासी महन्त शम्भुदासजीकृत टीका। १ ० ०

7482 Kabir and the Bhakti Movement—By Dr. Mohan Singh, M. A., Ph. D., D. Litt. 2 0 0

7483 Sayings of Kabir—By Kannoo Mal. Madras 0 8 0

आर्यसामाजिक पुस्तकें

७४८४ कूर्मपुराण आलोचना— ० १० ०

७४८५ जातिनिर्णय—पं० शिवशङ्करजी काव्यतीर्थकृत वर्णव्यवस्था की अद्वितीय पुस्तक। १ १२ ०

७४८६ दिवाकरप्रकाश—पं० तुलसीराम स्वामिकृत। भास्करप्रकाश के उत्तर में लिखी गई 'धर्मदिवाकर' नामक पौराणिक पुस्तक का प्रत्युत्तर। ० ५ ०

७४८७ धर्म का आदि-स्रोत—श्री गंगाप्रसादजी एम. ए. कृत अंग्रेजी पुस्तक "Fountain-head of Religion" का भाषानुवाद। १ ० ०

७४८८ भास्करप्रकाश—पं० तुलसीरामस्वामीकृत। इसमें पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत 'दयानन्द तिमिर भास्कर' नामक पुस्तक का सयुक्तिप्रमाण उत्तर दिया गया है। २ ० ०

७४८९ राधास्वामीमतविचार— ० ६ ०

७४९० राममोहनराय, केशवचन्द्रसेन और दयानन्द—पं० गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम. ए. कृत। ० १० ०

७४९१ लिंगपुराण की आलोचना—लेखक पं० भीमसेन विद्यालंकार। ० ७ ०

७४९२ वराहपुराणालोचना—लेखक वेदतीर्थ पं० श्रुतिकान्तजी शास्त्री। इसमें इस पुराण की खूब पोल खोली गई है जोकि देखने ही योग्य है। ० ८ ०

7493 Caste System—By Shri Ganga Prasad, M. A. 0 5 0

7494 Fountain-head of Religion—By Shri Ganga Prasad., M. A. 1 4 0

7495 Homage to Swami Dayanand Saraswati from

India and the World—By Haribilas Sarada, M. L. A. 6 0 0

7496 Luther of India—By Dr. Gokal Chand Narang. 0 3 0

7497 Neo-Vedantism refuted by Swami Dayanada Saraswati. 0 2 0

7498 Ocean of Mercy—English translation of Swami Dayananda's 'Gokaruṇānidhi' In this treatise the author strongly condemns flesh-eating and killing of the domestic animals. 0 4 0

7499 Vegetarianism. 0 1 0

7500 Torch Bearer—By T. L. Waswani. 1 8 0

7501 Works of Pt. Guru Datta M. A.—2 parts. 2 8 0

[इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक पुस्तकें भी भेजी जा सकती हैं।]

सिक्खमत की पुस्तकें

7502 Evolution of the Khalsa. Vol. I.—The Foundation of the Sikh Panth—By Indubhusan Banerjee, M. A., Prem Chand Roy Chand Scholar and Lecturer in History, Calcutta University, 1936.

[This is remarkable addition to the history of Sikh Religion.] Calcutta 4 0 0

7503 Granth Sahib (in Gurmukhi) **ग्रन्थ साहिब** (गुरुमुखी में), of the smallest size (1" × 1¼") अत्यन्त छोटा—लम्बा १¼ इञ्च, चौड़ा १ इञ्च। Magnifying glass नामक शीशे की सहायता से पढ़ा जा सकता है।

वलायत १० ० ०

७५०४ श्री गुरु ग्रन्थसाहिबजी—देवनागरी अक्षरों में। तरनतारन ८ ० ०

७५०५ श्री गुरुप्रतापसूरजग्रन्थावलि (गुरुमुखी में)—इसमें **नानकप्रकाश** तथा **सूरजप्रकाश** हैं। (भाई सन्तोखसिंहकृत) इनमें सिक्खों के दशों गुरुओं का जीवन चरित बड़े विस्तार से वर्णित है। कठिन शब्दों का अर्थ पञ्जाबी भाषा में दिया गया है। १४ भाग ६० ० ०

7506 Sikhism, Its Ideals and Institutions—By S. Teja Singh, M. A. 2 4 0

7507 Sikh Religion—Its Gurus, sacred writings and

authors, translated into English by Max Arthur Macauliffe in 6 Volumes. Illustrated with beautiful pictures of all the Gurus. 60 0 0

7508 Ramachandra and Zarathustra—An exposition of the Sikh cult as the synthesis of Hinduism and Parsiism. By Yatindra Mohan Chatterji, M. A. 0 10 0

7509 Rise of the Sikh Power—by Dr. Narendra Krishna Sinha, M. A. 2 maps. 4 0 0

जैन-ग्रन्थाः

७५१० अञ्जनासुन्दरी—हिन्दी। ० ८ ०

७५११ अध्यात्मतत्त्वालोक—Revised edition काठियावाड़ २ ० ०

७५१२ अनुत्तरोपपातिकदशासूत्रम्—मूल तथा जैनमुनि श्री १००८ आत्माराम जी कृत संस्कृत छाया, पदार्थान्वय तथा हिन्दी भाष्य सहित। लाहौर २ ० ०

Anuttaropapātikadaśā-Sūtram—Original (Prākrita) text, with literal translation in Sanskrit, word-for-word Hindi translation in prose order and a Hindi commentary by Jaina-Muni Upādhyāya Shrī Atmārāma Ji. Lahore 2 0 0

७५१३ अनुयोगद्वारसूत्र—हिन्दी अनुवादसहित। अजमेर २ ८ ०

७५१४ अनेकार्थरत्न मञ्जूषा— ३ ० ०

७५१५ अन्तकृद्दशांग-सूत्रम्—पीयूषधारा-भाषाटीकासहितम् रतलाम ० १२ ०

७५१६ अन्तगडदसाओ and अणुत्तरोववाइयदसाओ with अभयदेव's commentary. English translation, Glossary, Appendices, notes and introduction, cloth-bound, by M. C. Modi, M. A., LL. B. Ahmedabad 3 0 0

७५१७ अन्तगडदसाओ and अणुत्तरोववाइयदसाओ—The eighth and ninth Anga of the Jain canon. With Glossary, Appendix, Notes and an Introduction. Poona 3 0 0

7518 The Antagada Dasao and Anuttaro-Vavaiya-Dasao Sutras—Translated from Prakrita into English by L. D. Barnett, M. A., Litt. D. London 6 8 0

७५१९ अनेकान्त जयपताका—(पूर्वार्द्ध) कर्त्ता श्री हरिभद्र सूरि १ १२ ०

७५२० अन्योक्तिशतक श्लोकबद्ध—कर्त्ता दर्शनविजयगणी ० ६ ०

७५२१ अपभ्रंशकाव्यत्रयी—Consisting of 3 works, the चर्चरी,

उपदेशरसायन and कालस्वरूपकुलक, by जिनदत्तसूरि (12th. Century) with commentaries: edited with an elaborate introduction in Sanskrit by L. B. Gandhi. Baroda 4 0 0

७५२२ **अभयकुमारचरित्र**—भाषा महाकाव्य । कर्त्ता चन्द्रतिलकोपाध्याय । गुजरात १६ ० ०

७५२३ **अभिधानचिन्तामणि कोष**—दो भाग । भावनगर १५ ० ०

७५२४ **अभिधानप्पदीपिका**—पालीकोष । अहमदाबाद ६ ० ०

७५२५ **अमरदत्तमित्रानंद चरित्र गद्य**—कर्त्ता भावचन्द्रसूरि । १ ४ ०

७५२६ **अंबड चरित्र गद्य**—(कर्त्ता अमरसूरि) २ ० ०

७५२७ **अहिंसादिग्दर्शन**— काठियावाड़ ० १० ०

७५२८ **आचारप्रदीप गद्यपद्य**—कर्त्ता रत्नशेखर सूरि । ८ ० ०

७५२९ **आचारप्रदीपः**—रत्नशेखरसूरिकृतः । १ ८ ०

7530 Acaranga-Sutra (Srutaskandha) edited with text, analysis and glossary by Walther Schubring. 4 0 0

७५३१ **आत्मप्रबोध सटीक**—द्वितीयावृत्ति । कर्त्ता जिनलाभसूरि । १० ० ०

7532 Atmanu-Shāsana—(Discourse to the Soul) by Shri Guna-Bhadra-Acharya, with Publisher's note, original text in Sanskrit, with translation and commentaries in English, by Rai Bahadur J. L. Jaini etc., etc., (1928). Lucknow 2 8 0

७५३३ **आदर्शसाधु**— १ ८ ०

७५३४ **आदिनाथचरित्र**—हिन्दी । सचित्र । ५ ० ०

७५३५ **आप्त परीक्षा तथा पत्र परीक्षा**—श्री विद्यानन्द स्वामिविरचित । बनारस १ ० ०

७५३६ **आप्तमीमांसा**—श्रीमत्समंतभद्रस्वामि विरचित और **प्रमाण परीक्षा** श्री विद्यानन्द स्वामि विरचित । एक जिल्द में । बनारस १ ० ०

७५३७ **आराधनासारसटीक**— मुम्बई ० ६ ०

७५३८ **आवश्यकवृत्ति**—सटिप्पण (हेमचन्द्रसूरि) ३ ८ ०

७५३९ **आवश्यकसूत्र**—(श्रावक प्रतिक्रमण) हिन्दी अनुवाद सहित । लाहौर ० १२ ०

7540 The Āvaśyaka Sūtra of the Jains—Edited with notes, text, &c. by Ernst Leumann. 2 8 0

७५४१ **उत्तमकुमारचरित्र**—श्लोकबद्ध । कर्त्ता चारुचन्द्रजी । १ ० ०

७५४२ **उत्तराध्ययनसूत्र मूलमात्र**—आर्ट पेपर पर छोटे टाइप में बड़ी सुन्दरता से शुद्धतापूर्वक छपा है । ० ६ ०

७५४३ उत्तराध्ययनसूत्र—कमलसंयमी टीकायुक्त ३ भाग १२ ० ०

7544 The Uttaradhyayana Sutra—Being the first Mulasutra of the Svetambara Jains edited with an introduction, critical notes and a commentary in English by Jarl Charpentier, Ph. D. Complete in two volumes. 25 0 0

7545 The Uttaradhyayana and Sutrakritanga—Sutras of the Jains, translated from Prakrit into English by Prof. Dr. Hermann Jacobi. Bound with gold letters. 15 0

७५४६ उपदेशकल्पवल्ली—मन्हजिणाणं टीका। कर्त्ता इन्द्रहंस गणी। ६ ४ ०

७५४७ उपदेशचिन्तामणि—सटीक। कर्त्ता जयशेखर सूरि। ४ भागों में सम्पूर्ण। २४ ० ०

७५४८ उपदेशच्छाया आत्मसिद्धि—हिन्दी अनुवाद। ० ८ ०

७५४९ उपदेशतरंगिणी— ३ १२ ०

7550 Upadeshapada (उपदेशपाद) - Two Parts. By Haribhadra Suri Commentary by Munichandra Suri. Amounting to 12,000 Slokas. 7 8 0

7551 Upadeshapada—By Shri Haribhadra Suri. Edited by the Jain Dharma Vidya Prasaraka Varga. Palitana 7 8 0

७५५२ उपदेशमाला—सटीक। मूलकर्त्ता धर्मदासगणि। टीकाकार रामविजयगणि। द्वितीयावृत्ति। १३ १२ ०

७५५३ उपदेशसार—गद्यपद्यात्मक हिन्दी। ५ १० ०

७५५४ उपमितिभवप्रपञ्चकथा—(सिद्धर्षिप्रणीत) सम्पूर्ण। दुष्प्राप्य। कलकत्ता १५ ० ०

७५५५ उपासकदशाङ्गसूत्र – सम्पूर्ण हिन्दी अनुवाद सहित। मुम्बई १ ४ ०

७५५६ उवासगदसाओ—(जैनशास्त्र) हिन्दी अनुवाद सहित। लाहौर १ ८ ०

७५५७ उवासगदसाओ—सम्पूर्ण मूल प्राकृत पाठ तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित। Prakrit text with English translation. कलकत्ता २० ० ०

७५५८ उवासगदसाओ—The seventh Anga of the Jain Canon. With Glossary, Appendices, Notes and an Introduction. Poona 5 0 0

७५५९ औपपातिकसूत्र—मूलप्राकृत। अभयदेवसूरिकृत वृत्तिसहित। सूरत ३ ८ ०

७५६० **औपपातिकसूत्रं मूलमात्रम्**— पूना १ ० ०

7561 Das Aupapatika Sūtra, erstes Upanga der Jaina. I. Theil. Einleituug, Tex und Glossar. Von Dr. Ernst Leumann. Leipzig 6 0 0

७५६२ **कथारत्नाकर**—गद्यपद्य । कर्त्ता हेमविजयगणी । १५ ० ०

7563 Katharatnakara of Hemavijaya—Translated by Johannes Hertel. Complete in two parts. Nice leather binding with gold letters. 26 0 0

७५६४ **कयवन्ना सेठ**—हिन्दी । ० ८ ०

७५६५ **कर्त्तव्यकौमुदी**—(द्वितीय भाग) हिन्दी अनुवाद सहित । कर्त्ता मुनि श्री रत्नचन्द जी स्वामी । ० ६ ०

७५६६ **कर्पूरप्रकर सटीक**—कथाओं सहित । मूलकर्त्ता हरिमुनि । टीकाकार जिनसागरसूरि, कथाकर सोमचन्द्रगणी । ५ ० ०

7567 Karma Philosophy (English)— 1 8 0

७५६८ **कलावली**—हिन्दी । ० ८ ०

७५६९ **कल्पसूत्र**—श्रीभद्रबाहुप्रणीत, श्रीविनयविजयकृत टीका सहित । ४ ० ०

७५७० **कल्पसूत्रम्**—भद्रबाहुस्वामिविरचितम् । जयविजयगणिकृतकल्पदीपिकावृत्तिसहितम् । ३ ० ०

७५७१ **कल्पसूत्रम्**—श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचितम् । संघविजयगणिकृतवृत्तिसहितम् । ३ ० ०

७५७२ **कल्पसूत्रसुखबोधिकाटीकासंक्षेपः**— २ ० ०

७५७३ **कल्पसूत्रसुबोधिका**—टीकाकार विनयविजय । १० ० ०

7574 The Kalpa Sutra of Bhadrabahu—Edited with an introduction, notes and Prakrit-Sanskrit glossary by Hermann Jacobi. 8 0 0

7575 Das Kalpa Sutra—Die alte Sammlung Jinistischer Monchsvorschriften. Einleitung, Text, Amnerkungen, Uebersetzung and Glossar hrsg. Von W. Schubring. Leipzig 3 0 0

७५७६ **कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्**—श्रीसिद्धसेनदिवाकरकृतम् । समयसुन्दगणिविरचितवृत्तिसमेतम् । ० ८ ०

७५७७ **कामघट कथा गद्य**— १ ० ०

The Story of Kalaka—Texts, history, legends and miniature paintings of the Svetambara Jain hagiogra

phical work, the Kālakācāryakathā कालकाचार्यकथा with 15 plates. By W. Norman Brown. Washington 12 8 0

७५७८ काव्यमाला तेरहवां गुच्छक—इसमें वादिचन्द्रसूरिकृत पवनदूत काव्य जैन) बहुत ही उत्तम है, जिसमें सुग्रीव और उसकी स्त्री सुतारा के विरह का वर्णन है। इसके सिवाय धनदराज कवि (जैन) के शृंगार नीति और वैराग्यशतक तथा अन्य वैष्णव कवियों के विल्हणकाव्य आदि कई काव्य भी हैं। १ ० ०

७५७९ काव्यमाला सप्तम गुच्छक—इसमें भक्तामर, कल्याणमन्दिर, सिन्दूर प्रकरण आदि २३ स्तोत्र हैं। १ ० ०

७५८० काव्यानुशासन—आचार्यहेमचन्द्रविरचित स्वोपज्ञालंकार चूडामणिसंज्ञकवृत्ति-सहित। २ ४ ०

७५८१ काव्यानुशासन सटीक—महाकवि वाग्भट्टकृत। इसमें सब लक्षण गद्यमय सूत्रों में दिये गये हैं। इसकी टीका भी सविस्तर है। ० ७ ०

७५८२ कुमारपालचरितम्—आचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचितं प्राकृतद्व्याश्रयकाव्यम्। पूर्णकलशगणिविरचितया टीकया परिशिष्टे च सिद्धहैमव्याकरणस्याष्टमाध्यायेन (प्राकृतव्याकरणेन) सहितम्। द्वितीयं संस्करणं वैद्योपाह्वेन परशुरामशर्मणा संशोधितम्। पूना ६ ० ०

Kumārapālacarita (Prākṛita Dvyāśraya Kāvya) of Hemacandra, illustratiug the eighth chapter of his Siddha Hemacandra or Prakrit Grammar—with a commentary by Pūrṇakalaśagaṇi. An alphabetical index of words, Hemcandra's Prākrita vyakarana with his own commentary and notes in English are also given at the end. Poona 6 0 0

७५८३ कुमारपाल प्रतिबोध—सोमप्रभाचार्यविरचित। बड़ौदा ७ ८ ०

7584 Der Kumārapālapratibodha—Ein Beitrag zur Kennt nis des Apabhraṃśa und der Erzählungs-Literatur der Jainas. Von Ludwig Alsdorf. Hamburg 14 0 0

७५८५ कुम्मापुत्तचरिअं—प्राकृतकाव्यम्। पूना १ ८ ०

७५८६ क्रियारत्नसमुच्चय— २ ८ ०

७५८७ गच्छाचारपयन्ना— ० १२ ०

७५८८ गणधरसार्धशतक—सटीक (मूलकर्ता जिनदत्तसूरि, टीकाकार सर्वराजगणी)। २ १४ ०

७५८९ गुणस्थानक्रमारोहवृत्तिगद्य—कर्ता-रत्नशेखरसूरि। १ १४ ०

७५९० गुरुगुणरत्नाकरकाव्य— ० १० ०

७५९१ गुर्वावली— ० ५ ०

७५९२ **गोम्मटसार**—(जीवकाण्ड)—नेमिचन्द्रकृत । मूल प्राकृत, संस्कृत छाया तथा हिन्दी अनुवाद सहित । २ ८ ०

Gommaṭasāra (Jīvakāṇḍa) a masterly exposition on the spiritual evolution of Ātman : 2 8 0

7593 Gommatsāra-Jiva-Kāṇda—By Shri Nemichandra Siddhanta Chakravarti, with Publisher's note, preface, original text in Prakrit, its Sanskrit rendering and Translation with Commentaries, in English, and explanatory charts, edited by Rai Bahadur J. L. Jaini, M. A., M. R. A. S., etc. etc. (1927) Lucknow 5 8 0

७५९४ **गोम्मटसार**—(कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्रकृत । प्राकृतमूल, संस्कृत छाया तथा हिन्दी अनुवाद सहित । २ ८ ०

Gommaṭasāra (Karmakāṇḍa) of Nemicandra, a detailed sketch of the technical details of the Karma doctrine of Jainism : Prākrit text, Sanskrit Chāyā and Hindī translation of Pt. Manoharlal, 2nd ed., 2 8 0

7595 Gommaṭasāra-Karma-Kāṇda—Part I, by Shri Nemi Chandra Siddhanta Chakravarti, with preface, introduction, original text in Prakrit with Sanskrit rendering, translation and commentaries in English, with explanatory charts, edited by Rai Bahadur J. L. Jaini, M. A., M. R. A. S., etc., etc., 1927—4/8/-. Part II—
Lucknow 4 8 0

७५९६ **गौतमपृच्छावृत्ति**— २ १२ ०

७५९७ **चन्दनबाला**—हिन्दी । ० १० ०

७५९८ **चन्द्रप्रभचरित्र**—इस काव्य में आठवें तीर्थकर श्रीचन्द्रप्रभ भगवान् का पवित्र चरित्र है । महाकवि वीरनन्दी विरचित । ० १२ ०

७५९९ **चम्पकसेठ**—हिन्दी । ० ८ ०

७६०० **चित्रसेन पद्मावती चरित्र**—श्लोकबद्ध । कर्ता राजवल्लभ जी उपाध्याय ।
२ ८ ०

७६०१ **चौमासीव्याख्यान तथा होलिकाख्यान**—कर्त्ता क्षमाकल्याणकजी चतुर्थ आवृत्ति । ० १४ ०

७६०२ **चौर्यासीप्रबन्धगद्य**—कर्त्ताराजशेखरसूरि । ५ ० ०

७६०३ **जगत्भ्रमोच्छेदन**—(सत्यप्रकाश) । ० ३ ०

७६०४ श्रीजगद्गुरुकाव्य— ० ५ ०

७६०५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—श्रीशान्तिचन्द्रचन्द्रकृतटीका सहित। २ भाग १२ ० ०

७६०६ जम्बूस्वामीचरित (काव्य)— मुम्बई १ ११ ०

७६०७ जयन्तविजय—श्रीमदभयदेवविरचित महाकाव्य। १ ० ०

७६०८ जयविजय – हिन्दी। ० ८ ०

७६०९ जयानन्दकेवलीचरित्र—श्लोकबद्ध। कर्त्ता मुनि सुन्दर सूरि। १२ ८ ०

७६१० जसहरचरिअं – पूना ७ ० ०

७६११ जसहरचरिउ of पुष्पदन्त—an अपभ्रंश work ed. by P. L. Vaidya.

७६१२ जिनशतक—संस्कृत टीका और भाषानुवाद सहित। काशी ० १२ ०

७६१३ जीवाजीवाभिगम—श्रीमलयसूरि विरचित टीका सहित। ६ ८ ०

७६१४ जीवानुशासनम्—श्रीदेवसूरिकृतम। स्वोपज्ञवृत्तिसहितम्। १ ० ०

7615 Jain Gotra Sangraha—By Hira Lal Hans Raja (Meber Jaina Familien) Jamnagar 6 0 0

७६१६ जैनतत्त्वज्ञानम— ० ८ ०

७६१७ जैनतत्त्वादिग्दर्शन— ० ४ ०

७६१८ जैनधर्मप्रकाश—स्तवनावली। ० ३ ०

७६१९ जैनधर्मवरस्तोत्र-गोधूलिकार्थसभाचमत्कारेतिकृतित्रयम्—भावप्रभसूरिविरचितम। ३ ० ०

७६२० जैनधर्मशिक्षावली—हिन्दी में। कर्त्ता-उपाध्याय आत्मारामजी जैनमुनि। भाग १—)॥, भाग २— –), भाग ३— =), भाग ४— ० २ ६ लाहौर

७६२१ जैननित्यपाठसंग्रह—इसमें पंचस्तोत्र सहस्रनाम तत्त्वार्थसूत्रादि १६ पाठ दिगम्बरी श्वेताम्बरी दोनों प्रकार के जैनी भाइयों के हितार्थ संग्रह किये गये हैं। ० ८ ०

७६२२ जैनरामायण— ४ ४ ०

७६२३ जैनवार्त्तिकम्—श्री शान्ताचार्यविरचित वृत्तिसहितम। बनारस १ १२ ०

७६२४ जैनशिक्षादिग्दर्शन – ० ४ ०

७६२५ जैनशिलालेखसंग्रह— मुम्बई २ ४ ०

7626 Jain Siddhānta Kaumudi—(जैनसिद्धान्तकौमुदी-अर्द्ध-मागधी-व्याकरणम्। स्वोपज्ञार्थप्रकाशिकाव्याख्योपेता। जैनमुनि श्री १००८ रत्नचन्द्र कृतम्।)—There are already about 16 Prākrita Grammars by the ancient writers; some of which are published, others are still in manuscript form. All of them, excepting Hemachandraś सिद्धहैमसत्काष्टमाध्याय and Chaṇḍaś प्राकृतलक्षण, generally deal with the महाराष्ट्री प्राकृत. There

is no complete grammar, so far published, of the Ardha-Māgadhī Prākrita—the pravachana Bhāṣā or the language of the Jaina Sūtras. Even Hemachandra has dealt very little with it, and Chandaś treatise has left many Grammatical subjects untouched. Thus there was a great need of a complete grammar of the language. The work has now been accomplished, for the first time, by शतावधानी जैनमुनि श्री १००८ रत्नचन्द्र जी महाराज one of the most learned scholar of the Jaina Āgamas. In the Introduction, which is also in Sanskrit, he has given the differences of the Ardha Māgadhī from the Mahārāṣtrī, which is very useful for the students of Prākrita Printed in the best type on very good paper and bound with gold letters, 1938. 15 0 0

७६२७ **जैनसुबोधगुटका**—रचयिता मुनिश्रीचौथमलजीकृत। रतलाम ० १२ ०

७६२८ **जैनस्तुति**—नित्य पाठ करने योग्य। सजिल्द ० ६ ०

७६२९ **जैनस्तोत्ररत्नाकर**—इसमें नित्य पाठ करने योग्य प्राकृत और संस्कृत के स्तोत्रों का सग्रह है। ० ४ ०

७६३० **जैनस्तोत्ररत्नाकर**—प्रातःस्मरण अनुपूर्वी सहित। भावनगर १ ८ ०

७६३१ **जैनस्तोत्रसंग्रह**—इसमें भक्तामर, कल्याणमन्दिर, विषापहार, एकीभाव और जिनचतुर्विंशातिका ये ५ मूल स्तोत्र हैं। ० ४ ०

७६३२ **जैनस्तोत्रसन्दोह**—श्रीअमरविजयमुनिजीद्वारासंगृहीत। २ भाग १२ ८ ०

७६३३ **जैनागमथोकसंग्रहः**—अनुवादक पं० मुनि श्री चौथमल्ल जी। रतलाम १ ४ ०

७६३४ **जैनास्तिकत्वविचार**—पं० भीमसेन जी। इटावा ० ० ६

७६३५ **जैनेन्द्रप्रक्रिया**—आचार्यवर्यश्रीगुणनन्दिविरचिता। काशी १ ८ ०

७६३६ **जैनेन्द्रव्याकरणम्**—देवनन्दिविरचितम्। अभयनन्दि-सूरि-विरचितया टीकया सहितम्। बनारस ३ ८ ०

७६३७ **ज्योतिषसार संग्रह**—प्राकृत। पं० भगवान्दास जैन कृत हिन्दी अनुवाद सहित। ० १२ ०

७६३८ **ज्ञानदीपिका अर्थात् जैनोद्योत**—रचयिता जैनाचार्या महासती पार्वती जी महाराज। सजिल्द ० १२ ०

७६३९ **ज्ञानपञ्चमीकथा**—(भाषान्तर सहित)। १ ४ ०

७६४० **ज्ञानार्णव**—शुभचन्द्रकृत। संस्कृत। हिन्दी अनुवाद सहित। A lucid discussion about meditation and morals. 4 0 0

७६४१ **तण्डुलवैचारिक**—श्रीविजयविमलकृतटीकासहित। ३ ० ०

७६४२ तत्त्वज्ञानतरंगिणी—छन्दोबद्ध। कर्त्ता श्रीज्ञानभूषण। १ १० ०

७६४३ तत्त्वज्ञानतरङ्गिणी—(भट्टारकश्रीज्ञानभूषणविरचित) न्यायतीर्थश्रीगजाधरलालकृतहिन्दीभाषानुवादसहित। कलकत्ता १ ८ ०

७६४४ तत्त्वार्थराजवार्तिक—श्रीमद्भट्टाकलंकदेवविरचित। बनारस ४ ४ ०

७६४५ तत्त्वार्थसूत्र—जैनागमसमन्वय-गुटका। समन्वयकर्त्ता-उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज (पंजाबी)।

[In this book it is shown that the तत्त्वार्थसूत्र of उमास्वाति the wel-known Jain teacher of about 2000 years back, is quite in accordance with the Jain-Āgamas. Text of the Sūtras is in Sanskrit and the quotations from the Āgamas, in the original Prakrit only.] 0 6 0

७६४६ तत्त्वार्थाधिगमसूत्रम्—अर्हद्वचनैकदेशस्य संग्रहः। श्रीमदुमास्वामिना रचितं स्वकृतभाष्यसहितम्। कलकत्ता ५ ० ०

७६४७ सभाष्यतत्त्वार्थाधिगमसूत्र—इसमें भाषाटीका भी है। ३ ० ०

Sabhāṣya-Tattvārthādhigama Sūtra, the most authoritative work on Jaina dogmatics : Sūtras, Umāsvāti's Sanskrit commentary and Hindī commentary of Pt. Khubchanda. New ed. 3 0 0

७६४८ तत्त्वार्थाधिगम सूत्राणि—भाष्य सहित सचित्र। पूना २ ४ ०

7649 Tattvarthadhigama Sutra—By Shri Umaswami Acharya with historical introduction, bibliography, comparative table of Digambara and Śwetāmbara versions, original Text in Sanskrit, transliteration and translation in English with commentaries, Notes and charts and a comprehensive Index edited by Rai Bahadur J. L. Jain, M. A, M. R. A. S, etc., etc. Lucknow 4 8 0

7650 Tattvarthadhigama Sutra—of Umasvati, or the Jain Philosophy. Edited with Notes and translation by Dr. Hermann Jacobi. 4 4 0

७६५१ तिलकमञ्जरी—श्रीधनपालविरचित गद्यकाव्य। कादम्बरी के जोड़ का अपूर्व ग्रन्थ। २ ८ ०

7652 Tirtha-Kalpa of Jinaprabha Suri—A treatise on the sacred places of the Jains. Edited by D. R Bhandarkar and Kedarnath Sahityabhushana. Calcutta 0 12 0

७६५३ त्रिवैद्यगोष्ठी—गद्य। कर्ता मुनि सुन्दर सूरि। १ १४ ०

7654 Triṣaṣṭiśalākāpuruṣacaritra : of Hemacandra, translated into English with copious notes by Dr. Helen M. Johnson of Osceola, Missouri, U. S. A. Vol. I (Ādīśvaracaritra), illustrated. 1931 Baroda 15 0 0

७६५५ त्रिषष्टि स्मृतिशास्त्र— मुम्बई। ० ६ ०

७६५६ दर्शनशुद्धि—सटीक। मूलकर्त्ता चन्द्रप्रभसूरि टीकाकार देवभद्रसूरि ७ ८ ०

7657 The Darsanasar of Devsena. Edited by A. N. Upadhyaya, M. A. 1 0 0

७६५८ दशवैकालिक सूत्र—सटीक मूल कर्त्ता स्वयम्भवाचार्य, टीकाकार समय-सुन्दर उपाध्याय जी। ७ ८ ०

७६५९ दशाश्रुतस्कन्धसूत्रम्—मूल तथा जैनमुनि श्री १००८ आत्मारामजीकृत संस्कृत छाया, पदार्थान्वय तथा हिन्दी भाष्य सहित। लाहौर ४ ८ ०

Daśāśruta-Skandha-Sūtram—Original (Prākrita) text, with literal translation in Sanskrit, word-for-word Hindi translation in prose order and a Hindi commentary by Jaina-Muni Upādhyāya Shri Ātmārāma ji. Lahore 4 8 0

७६६० दानप्रकाश—श्लोकबद्ध। कर्त्ता कनककुशलगणि। १ १२ ०

७६६१ देवानन्दमहाकाव्यम्—श्री मेघविजयोपाध्यायविरचितम्। कलकत्ता ३ २ ०

7662 Dravya Samgraha (द्रव्यसङ्ग्रहः)—By Shri Nemi-Chand Siddhanta Chakravarti with a preface, list of works consulted, introduction. Original Text in Prakrit, its Sanskrit rendering, transliteration of both Prakrit and Sanskrit in English, Pada Patha, prose rendering, translation and commentaries in English, with tabular statements, charts and illustrations, Brahma Deva's original commentary in Sanskrit and several appendices, edited by Mr. Saratchanda Ghoshal, M. A., B. L., &c. &c. (1917) Lucknow 5 8 0

७६६३ द्रव्यानुभवरत्नाकर—हिन्दी २ ८ ०

७६६४ द्वादशकुलकम्—जिनवल्लभसूरिविरचितम्। २ ० ०

७६६५ द्विसंधान महाकाव्य सटीक—यह काव्य महाकवि धनंजय श्रेष्ठि विरचित है। इसके प्रत्येक श्लोक से दो दो कथाओं का अर्थ निकलता है। अर्थात् एक अर्थ

में रामचन्द्र जी की कथा और दूसरे अर्थ में पाण्डवों की कथा। यह महाकाव्य संस्कृत टीका सहित छपा है। १ ८ ०

७६६६ धनदचरित्र गद्य—कर्त्ता भावचन्द्रसूरि १ ८ ०

७६६७ धर्मदत्तकथा गद्य— १ १० ०

७६६८ धर्मदीपिका—जैनव्याकरणम्। श्रीमङ्गलविजयेन विरचितम्। ३ ० ०

७६६९ धर्मबिन्दु—सटीक। कलकत्ता ० १२ ०

७६७० धर्मरत्नमञ्जूषा—गद्य। कर्त्ता देवविजयगणी। ३ भागों में सम्पूर्ण। २२ ८ ०

७६७१ धर्मविलास—श्लोकबद्ध। कर्त्ता मतिनन्दन जी। १ ४ ०

७६७२ धर्मशिक्षा— १ ४ ०

७६७३ नन्दिसूत्रचूर्णि—(सागरानन्दसूरीश्वर)। ४ ८ ०

७६७४ नयचक्रसंग्रह— मुम्बई १ ० ०

७६७५ नलायनम् (कुबेर पुराणम्)—नलदमयन्ती कथात्मकम्। वटगच्छीय श्री माणिक्यदेवसूरिविरचितम्। भावनगर १० ० ०

७६७६ नवपदप्रकरणम्—स्वोपज्ञलघुवृत्तियुतम्। श्रीमद्देवगुप्तसूरिप्रणीतम्। १ ० ०

7677 Niyamsâra—By Shri Kundakunda Acharya, Publisher's note by Mr. Ajit Prasada, original text in Prakrit, with its Sanskrit rendering, translation, exhaustive commentaries in English edited by Mr. Uggar Sain, M. A., LL. B. 2 8 0

7678 Nirayāvaliyāo (निरयावलियाओ)—The last five Upangas of the Jain Canon. Edited with Introduction, Translation, Notes, Glossary, Appendices and Critical foot-notes by A. S. Gopani M. A. and V. J. Chokshi, B. A. Bound in cloth. Ahmedabad 3 12 0

7679 निरयावलियाओ—The last five Upangas of the Jain Canon. With Glossary, Notes and Introduction. Poona

7680 NirayāvaliyāSuttam—Een Upānga der Jaina's. Met inleiding, Aanteekeningen en Glossaar. Van Dr. S. Warren, Amsterdam. 15 0 0

७६८१ निर्वाणकालिका—पादलिप्त सूरिकृता। मुम्बई १ ८ ०

७६८२ नेमिनाथमहाकाव्य—(पत्राकार तथा पुस्तकाकार) तथा सटीक २ ८ ०

७६८३ **नेमिनिर्वाणकाव्य**—यह काव्य महाकवि वाग्भट्टकृत है। इसमें श्री नेमिनाथ तीर्थंकर और राजीमती का पवित्र चरित्र है। काव्यशैली अच्छी और सरल भी है। १ ० ०

७६८४ **न्यायकुमुदचन्द्र** (प्रथमखण्ड)— मुम्बई ६ ० ०

७६८५ **न्यायप्रदीप**—भाषा में। लेखक दर्बारी लाल। मुम्बई १ ० ०

७६८६ **न्यायार्थमञ्जूषा**— काठियावाड़ ६ १२ ०

७६८७ **न्यायावतारः**—सिद्धसेनदिवाकरविरचितः। श्रीदेवभद्रसूरिकृत टिप्पणसंवलितश्रीसिद्धर्षिगणिकृतटीकासहितः। With an Introduction and Notes by Dr. P. L. Vaidya. पूना १ ८ ०

७६८८ **पच्चीस बोल का थोकड़ा तथा छव्वीस द्वार**—सजिल्द।
० १० ०

७६८९ **पउमचरियम**—Part I, Jain Ramayana in Prakrit with notes, introduction and translation into English.
Ahmedabad 1 8 0

7690 Panchapratikramanadi Sutrani—(Jain Shreyaskara Mandala). Mhesana 6 0 0

७६९१ **पञ्चवस्तु** (सटीक)—कर्त्ता श्रीहरिभद्रसूरि। अहमदाबाद ३ ० ०

७६९२ **पञ्चसंग्रह**— मुम्बई १ ० ०

७६९३ **पञ्चसंग्रहः**—स्वोपज्ञया श्रीमच्चन्द्रमहर्षिकृतया वृत्त्याऽलङ्कृतः।
मुम्बई २ ८ ०

7694 Shri Panchasangraha Tika—By Malayagiri. Original author Shri Chandrarsi Mahattara, by Hira Lal Hans Raja. 4 Parts. 40 0 0

7695 **पंचसुत्तं**—Edited with Sanskrit Rendering, Introduction, Notes and Translation in English by V. M. Shah, M. A. Ahmedabad 1 0 0

7696 Paṃcasuttam—Edited with introduction, translation, Notes with copious extracts from Haribhadra's commentary and a glossary, by A. N. Upadhye, M. A.
Kolhapur 1 2 0

७६९७ **पञ्चाख्यानवार्त्तिकम्**—मूलमात्रं जिनविजयगणिविरचितम्। २ ० ०

७६९८ **पंचाख्यानवार्त्तिकम्**—The Pañchākhyānavārttika. Part I—containing the Text edited by Johannes Hertel,
Leipzig 3 12 0

७६९९ **पञ्चास्तिकाय**—इसमें हिन्दी अनुवाद भी है। २ ० ०

Pañcāstikāya of Kundakunda (c. beginning of the Christian era), a concise exposition of Jaina cosmology, physics and other kindred topics: Prākrit text, Sanskrit commentaries of Amṛtacandra and Hindī exposition of Pannālāla, ed. by Pt. Manoharlal, 2nd ed. 2 0 0

7700 Panchāstikāyasāra (पञ्चास्तिकायसार)—By Swami Shri Kundakundāchārya, with historical and philosophical introduction, text in Prakrit. with Sanskrit rendering, translation in English with commentaries and notes, by Prof. A. Chakravarti, M. A., L. T., etc., etc., Lucknow 4 8 0

७७०१ पद्मचरित्र—महाकाव्य । कर्त्ता शुभवर्धन गणी । ४ ० ०

७७०२ पद्मपुराण—३ खण्ड । मुम्बई ६ ४ ०

७७०३ पद्मानन्दमहाकाव्यम्—Giving the life history of Ṛsabhadeva, the first Tīrthaṅkar of the Jainas, by Amaracandra Kavi, edited by H. R. Kapadia. Baroda 14 0 0

७७०४ परदेशीय नृपचरित्र—गद्य । कर्त्ता पं० हीरालाल । ४ ८ ०

७७०५ परमात्मप्रकाश—अपभ्रंशभाषा का सब से प्राचीन ग्रन्थ । इसमें हिन्दी अनुवाद भी है । ४ ८ ०

Paramātma-Prakāśa of Yogīndudeva, An Apabhraṁśa work on Jaina Mysticism: Apabhraṁśa text with various readings, Sanskrit commentary of Brahmadeva and Hindī exposition of Daulatarāma, with critical Introduction in English by Prof. A. N. Upadhye, New ed., 4 8 0

7706 The Paramatma Prakasha—By Shri Yogindra Acharya. Translated into English with critical notes by R. D. Jain. Arrah 7 8 0

७७०७ परिशिष्ट पर्व— अहमदाबाद २ ८ ०

७७०८ परीक्षामुख सूत्रम्—अनन्तवीर्यकृत लघुवृत्ति सहित । कलकत्ता १ ४ ०

७७०९ पर्युषणा पर्वमाहात्म्य—हिन्दी ० ८ ०

7710 Paryuṣaṇāṣṭāhnika Vyākhyānam— Bhavanagar 1 8 0

७७११ पर्वकथासंग्रह— ० ७ ०

७७१२ पहेसिकहाणयं—प्राकृत ग्रन्थ । पूना १ ८ ०

७७१३ पाञ्च समिति तीन गुप्ति का थोकड़ा— ० १ ०

७७१४ पाण्डव चरित्र महाकाव्य— ३ २ ०

७७१५ पार्श्वनाथचरित (काव्य)— मुम्बई ० ६ ०

७७१६ श्री पार्श्वनाथचरित्र—पद्य । ३ १२ ०

7717 Life & Stories of the Jaina Savior Pārśvanātha—By M. Bloomfield. Foreign 20 0 0

७७१८ पुण्डरीक चरित्रम्—आचार्यश्रीकमलप्रभविरचितम् । भावनगर १० ० ०

७७१९ पुण्याढ्य चरित्र—वर्धमान सूरिकृत । ७ १२ ०

७७२० पुण्यसार चरित्र—गद्य । कर्त्ता भावचन्द्र सूरि । ० १२ ०

७७२१ पुद्गलषट्त्रिंशिका—सटीक । कर्त्ता रत्नसिंह सूरि । ० १२ ०

७७२२ पुरुदेवचम्पू— मुम्बई ० १४ ०

7723 Purātanaprabandhasaṅgraha. (पुरातनप्रबन्धसंग्रह)—A collection of many old Prabandhas similar and analogous to the matter in the Prabandhacintāmaṇi. Indices of the verses and proper names. A short Introduction in Hindi describing the Mss. and materials used in preparing this part, along with 11 plates. 5 10 0

७७२४ पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—इसमें हिन्दी अनुवाद भी है । १ ४ ०

Puruṣārtha-siddhyupāya of Amṛtacandra (c. A. D. 10th century), an important work on Jaina ethics: Sanskrit text with Hindī translation and exposition by Pt. Nathu Ram Premi, 4th ed., 1 4 0

7725 Purushārtha-siddhyupāya (पुरुषार्थसिद्ध्युपाय)—By Srimat Amritachandra Suri with Publisher's note, Introduction, specially dealing with Ahiṃsā (the Root Principle of Jainism), synopsis of the book, subject-matter in Sanskrit, with Translation and commentaries in English by Pt. Ajita Prasada, M. A., LL. B. Lucknow 4 8 0

७७२६ पुष्पमाला मोक्षमाला और भावनाबोध—हिन्दी अनुवाद ० १२ ०

Puṣpamālā, Mokṣamālā and Bhāvanābodha of Shrīmad Rājachandra : Hindi translation by Pandit Jagdishchandra.

७७२७ पुष्पमाला-मलधारी—हेमचन्द्रकृत स्वोपज्ञटीका अहमदाबाद ७ ० ०

७७२८ पृथ्वीचन्द्रचरित्र—श्लोकबद्ध । कर्त्ता लब्धिसागर सूरि । २ ८ ०

७७२९ प्रकरणसमुच्चय— अहमदाबाद १ ८ ०

७७३० प्रकरण (थोकड़ा) संग्रह—(दूसरा भाग) पं० मुनि श्री रत्नचन्द्र जी स्वामी द्वारा संगृहीत पक्की जिल्द । १ २ ०

७७३१ प्रतिमास्थापन न्याय—श्रीमद्यशोविजयी विरचित अपूर्ण । ० ४ ०

७७३२ प्रत्याख्यान—सारस्वत विभ्रम विशेषणवती । अहमदाबाद १ ८ ०

7733 Prabandhakośa of Rājaśekhara Sūri (प्रबन्धकोशः—राजशेखरसूरिकृतः) Part I. A collection of narratives about 24 celebrities of ancient India. Text in Sanskrit with variants, appendices and alphabetical indices of stanzas and all proper names etc. 4 8 0

7734 Prabandhacintāmaṇi of Merutuṅgācārya (प्रबन्धचिन्तामणिः मूल) Part I. Critical Edition of the original Text in Sanskrit with various readings based on the most reliable MSS. An Appendix. An alphabetical index of all Sanskrit, Prākrit and Apabhraṃśa verses occuring in the text and the appendix ; A short Introduction in Hindi describing the MSS. and materials used for the construction of the text along with 6 plates. 4 4 0

७७३५ प्रत्येक बुद्धचरित्र—श्लोक बद्ध । ७ १२ ०

७७३६ प्रत्येक बुद्धचरित्र— १ ४ ०

७७३७ प्रद्युम्नचरित (काव्य)— मुम्बई ० ६ ०

७७३८ प्रभावक चरित—जैनियों में जो महानुभाव और कीर्तिमान कवि हो गये हैं और जिन्हों ने सभा पाण्डित्य, विद्वत्पराजय, ग्रन्थ रचना आदि महत्त्व के काम किये हैं उनका चरित्र उत्तम रीति से संकलित किया गया है । १ ८ ०

७७३९ प्रमाणनय तत्त्वलोकालंकार—मूल ||=), तथा रत्नावतारिकाटीका हिन्दी अनुवाद (वंशीधर शर्माकृत)— ३ ८ ०

७७४० प्रमाण मीमांसा—संस्कृत टीका समेत । २ ८ ०

7741 Prameya-ratna-Kosha—Edited by L. Suali. By Chandraprabha Suri. Bhavnagar 1 8 0

७७४२ **प्रमेयरत्नमाला**—मूलमात्र। (जैन न्याय) अहमदाबाद ० १२ ०
७७४३ **प्रवचन परीक्षा**— अहमदाबाद ७ ० ०
७७४४ **प्रवचनसार**—इसमें हिन्दी अनुवाद भी है। ५ ० ०

Pravacanasāra of Kundakunda, an authoritative work on Jaina ontology, epistemology etc.: Prākrit text, the Sanskrit commentaries of Amṛtacandra and Jayasena, Hindī exposition of Pāṇḍe Hemarāja, English translation and a critical elaborate Introduction etc. by Prof. A. N. Upadhye. New ed. 5 0 0

७७४५ **प्रवचनसारोद्धार**—सटीक। मूलकर्त्ता नेमिचन्द्र सूरि, टीकाकार सिद्धसेन सूरि। ४० ० ०
७७४६ **प्रश्नचिन्तामणि**—भाषा गद्य। कर्त्ता वीर विजय जी। ५ ० ०
७७४७ **प्रश्नोत्तररत्नमाला**—सटीक। मूलकर्त्ता विमलाचार्य, टीकाकार देवेन्द्र सूरि। १६ ४ ०
७७४८ **प्रस्ताररत्नावली**—शतावधानी पं० मुनिश्रीरत्नचन्द्र जी स्वामी कृत। पक्की जिल्द। १ ६ ०
७७४९ **प्रस्तावशतक सटीक**—कर्त्ता केसर विमल १५ ० ०
७७५० **प्राकृतपाठमाला**—यह प्राकृत शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची और अपभ्रंश इन छः भाषाओं का व्याकरण है। दूसरे प्राकृत व्याकरणों से इसमें यह विशेषता है कि व्याकरण सीखने वालों को प्रयोगात्मक ज्ञान कराने के लिए प्रत्येक भाषा के पाठों में गुजराती का प्राकृत आदि भाषा में अनुवाद और प्राकृत आदि भाषाओं का गुजराती में अनुवाद करने के लिए पाठ भी दिये गये हैं। इससे हिन्दी जानने वाले भी यथेष्ट लाभ उठा सकते हैं।
७७५१ **प्राकृतमार्गोपदेशिका**—By Pt. Bechardas. Ahmedabad 2 0 0
७७५२ **प्राकृतसुभाषितसंग्रह**—With introduction and translation in English by Prof. V. M. Shah. Ahmedadad 1 8 0
७७५३ **प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह**—प्रथम भाग। बड़ौदा २ ८ ०
७७५४ **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**—जिनविजय विरचित। द्वितीय भाग। १० ८ ०
७७५५ **प्राचीनजैनस्तोत्रसन्दोह भाग**—सम्पादक चतुरविजयजी। अहमदाबाद ५ १० ०
७७५६ **प्रायश्चित्तसंग्रह**— मुम्बई ३ ६ ०
७७५७ **प्रियंकरचरित्र**—उपसर्गहरस्तोत्रमाहात्म्यरूप। २ ८ ०

७७५८ प्रियङ्करनृपकथा—जिनसूरिप्रणीतम् । उपसर्गहरस्तोत्रम्—श्री-भद्रबाहुस्वामिप्रणीतम् । लघुवृत्तिविभूषितम् । १ ८ ०

७७५९ बंभदत्तचरिय of नेमिचन्द्र सूरि—With notes, introduction and translation in English by Prof. V. M. Shah, cloth-bound. Ahmedabad 1 8 0

७७६० बलभद्रचरित्र—श्लोकबद्ध । कर्त्ता-शुभवर्धनगणी । २ भाग । ० १४ ०

७७६१ बृहत् कल्पसूत्रम्—पूज्यश्रीभद्रबाहुस्वामिविनिर्मितस्वोपज्ञनिर्युक्त्युपेतं श्रीसङ्घदासगणिक्षमा-श्रमणसूत्रितेन लघुभाष्येण भूषितम् । आचार्यश्रीमलयगिरिपादैःप्रारब्धया तपाश्रीक्षेमकीर्त्याचार्यैः पूर्णीकृतया च वृत्त्या समलङ्कृतम् । ३ भागाः । भावनगर २५ ० ०

७७६२ बृहत्क्षेत्रसमास—सटीक । अहमदाबाद ३ १२ ०

७७६३ बृहत्सिद्धप्रभाव्याकरण— अहमदाबाद ३ ० ०

७७६४ बृहद्आलोयणा—कर्त्ताश्रावकश्रीरणजीतसिंहजी । ० १ ३

७७६५ श्रीबृहद्जैनशब्दार्णव—या हिन्दी जैन इन्साइक्लोपीडिया विश्वकोष प्रथम खण्ड कपड़े की सुनहरे अक्षरों की पक्की जिल्द । पृष्ठ संख्या ३५२ । ४ ० ०

७७६६ बृहद्द्रव्यसंग्रह—इसमें हिन्दी अनुवाद भी है । २ ४ ०

Bṛhad-Dravyasaṁgraha of Nemicandra, Jaina dogmatics systematised : Prākrit text with Brahmadeva's Sanskrit commentary and Hindī exposition of Pt. Javahar Lal, 2nd. ed. 2 4 0

७७६७ ब्रह्मचर्यदिग्दर्शन—हिन्दी भाषा । ० ५ ०

७७६८ ब्राह्मी-सुन्दरीचरित्र— ० ८ ०

७७६९ भक्तामर-कल्याणमन्दिर-नमिऊण-स्तोत्रत्रयम्— ५ ० ०

७७७० भक्तामरस्तोत्रपादपूर्त्ति—२ भाग । अहमदाबाद ७ ८ ०

७७७१ भक्तामरस्तोत्रम्—मानतुङ्गाचार्यविरचितम् । गुणाकरसूरिकृतटीकासहितम् । ३ ० ०

७७७२ भद्रबाहुस्वामिचरित्र— ० ८ ०

7773 Bhavisatta Kaha von Dhaṇavāla—Eine Jain Legende in Apabhraṃśa herausgegeben von Hermann Jacobi. Foreign 12 0 0

७७७४ भविसयत्त कहा—(भविष्यत्कथा) पञ्चमी कथा । धनपालेन रचिता । अपभ्रंशजैनकाव्यम् । मुम्बई. ६ ० ०

७७७५ भावनाबोध—हिन्दी में वैराग्यविषय का लघुपुस्तक । Bhavana-bodha of Rajachandra in Hindi. ० १२ ०

७७७६ भावसंग्रहादि— मुम्बई २ ६ ०

७७७७ भुवनभानुकेवलीचरित्रगद्य—कर्त्ता इन्द्रहंसगणी । ३ १२ ०

७७७८ श्री भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिसेनसूरिकृत । सचित्र ३१ परिशिष्ट सहित । गुजराती अनुवाद सहित । It is a Jaina Tantric work. १७ ० ०

७७७९ मदनरेषा-नमीराजनाटक—मनसाराम रचित । १ ४ ०

७७८० मन्त्रराजगुणकल्पमहोदधि—(हिन्दी भाषान्तर) जैनाचार्य श्री जिनकीर्ति सूरीश्वर का बनाया हुआ अपूर्व प्राचीन ग्रन्थ । यदि आप नवकार मन्त्र का यथार्थ सविस्तर स्वरूप जानना चाहते हैं तो इसे मंगाकर अवश्य पढ़िए । इसमें नवकार मंत्र के ध्यान करने की विधि, आनुपूर्वी के प्रस्तार भंग नष्ट उद्दिष्ट बनाने का प्रकार, यन्त्र समेत नव प्रकार मन्त्र के ११० अर्थ, प्राणायाम आदि योगाभ्यास करने का ध्यानपूर्वक वर्णन, नवकार कल्प के अनेक विषयों पर अनेक प्रकार के विधिपूर्वक मंत्र इत्यादि अनेक उपयोगी विषयों से पूर्ण है । २ ८ ०

७७८१ मल्लिनाथचरित्र— ३ ८ ०

७७८२ मल्लिनाथमहाकाव्य— ३ १२ ०

7783 The Mahānīsha-Sutta—of the Jains edited with German translation, notes &c. By Dr. Walther Schubring Berlin 13 0 0

7784 Mahāpurāṇa (महापुराण)—Or Tisaṭṭhimahāpurisaguṇālaṃkāra of Puṣpadanta—A Jaina Epic in Apabhraṃśa of the 10th century. Vol. I. Critically edited by Dr. P. L. Vaidya, M. A , D. Litt. (Paris), Professer of Sanskrit and Allied Languages. 1937. Poona 11 4 0

७७८५ महाप्रभाविकनवस्मरण—(मन्त्रशास्त्र) पूर्वाचार्यकृत । ५ परिशिष्ट तथा ४१० चित्रों सहित । १९३८ २५ ० ०

७७८६ श्रीमहावीरचरित्रम्—श्रीगुणचन्द्रगणिभिर्विहितम् । ४ ० ०

७७८७ महावीरजिनस्तुतिसंग्रह—कर्त्ता जिनवल्लभसूर्यादि । १ २ ०

७७८८ महावीरस्तवप्रकरणम्—न्यायखण्डखाद्यापरनामकम् । श्रीयशोविजयगणिकृतम् । श्रीविजयदर्शनसूरिप्रणीतश्रीमहावीरस्तवकल्पलतिकाख्यविवृत्यलंकृतम् ।

7789 Mahavira : His Life and Teachings:—By Bimala Churn Law. 1937. 1 8 0

७७९० मार्गणाद्वारविवरणम्—श्रीमत्प्रेमविजयगणिसत्तमसन्दब्धम् । ४ ० ०

७७९१ मुनिपतिचरित्रगद्य— ३ ० ०

७७९२ मूलाचार (सटीक)—मुम्बई पूर्वार्ध २॥।-), उत्तरार्ध— १ ११ ०

७७९३ मेघमहोदयवर्षप्रबोध—मूल और भाषान्तर सहित । श्रीमान् जैनाचार्य महमहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणि का बनाया हुआ प्राचीन ग्रन्थ । इससे भावी वर्ष कैसा होगा, सुभिक्ष होगा या दुर्भिक्ष, वर्षा कितनी और कब होगी और वस्तुएं सस्ती होंगी या महंगी इत्यादि समस्त वर्ष का शुभाशुभ अच्छी तरह जान सकते हैं । ४ ० ०

७७९४ मैथिलीकल्याण (नाटक)— मुंबई ० ५ ०

७७९५ यशस्तिलकचम्पूकाव्य—यह नीतिवाक्यामृतपूर्ण श्री सोमदेवसूरिविरचित महाकाव्य है । इसमें यशोधर महाराज का पवित्र चरित्र है । इसका गद्य कादम्बरी के गद्य की टक्कर का है । आचार्यवर्यश्रुतसागरकृत विस्तृत टीका सहित काव्यमाला में छपा है, परन्तु उत्तरखण्ड के सरल भाग की संस्कृत टीका नहीं है । उत्तरखण्ड में जैनधर्म का व्याख्यान उत्तम रीति से वर्णन किया गया है । इस काव्य की शैली एक भिन्न प्रकार की है । दो भागों में सम्पूर्ण । ६ ८ ०

७७९६ यशोधरचरित्र—श्लोकबद्ध । कर्त्ता माणिक्य सूरि । २ ८ ०

7797 Shrimad Yashovijayaji (Life of the great Jain Scholar). By Mohan Lal Dali Chand Desai. Bombay 3 12 0

7798 The Yapaniya Sangha—A Jaina Sect—By A. N. Upādhye, M. A. 1 0 0

७७९९ युक्तिप्रबोध— २ ० ०

७८०० युक्त्यनुशासनसटीक— मुम्बई १ ० ०

7801 Yoga Philosophy—(English) by V. R. Gandhi. 2 0 0

7802 Yogabindu (योग विन्दु सटीक)—With the commentary of Shri Haribhadra Suri. Edited by L. Suali. Bhavnagar 5 4 0

७८०३ योगशास्त्रम्—श्री हेमचन्द्राचार्यकृतम् स्वोपज्ञवृत्तिसहितम् । ६ खण्डाः । अवशिष्टं मुद्र्यते । कलकत्ता २० ० ०

७८०४ योगसार—अपभ्रंशभाषाग्रन्थ । इसमें हिन्दी अनुवाद भी है । ० ४ ०

7805 Yogīndu, his Paramātmaprakāśa and other Works : A critical Essay by Prof. A. N. Upadhye. 1 0 0

७८०६ योगीन्दुदेव और उनकी रचनायें—अंग्रेज़ी ग्रन्थ का हिन्दीसार । ० ४ ०

७८०७ रतिसारकुमार—हिन्दी । ० १२ ०

७८०८ रत्नकरंडश्रावकाचार सटीक— मुंबई २ ४ ०

7809 The Ratna Karanda—Sravakachara (or the Householder's Dharma) Translated into English with introduction by Ch. R. Jain. By Sri Samanta Bhadra Acharya. Arrah 7 8 0

७८१० रत्नचूड़ाकथा—पत्राकार श्लोकबद्ध, श्रीज्ञानसागरसूरिकृत। ० १० ०

७८११ रत्नशेखरचरित्र—गद्यपद्य कर्त्ता दयावर्धनगणी। १ ८ ०

७८१२ रत्नाकरावतारिका—सम्पूर्ण। ६ १२ ०

७८१३ श्रीमद्राजचन्द्र—गुजराती ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद ६ ० ०

Śrīmad Rājachandra, Life and Works of Rāja Chandra in Hindi. 6 0 0

७८१४ रामरास—श्री कविकेशवराजकृत सजिल्द। १ ८ ०

७८१५ रायपसेणियं (पएसिकहाणयं)—The second Upāṅga of the Jain Canon. Poona 2 0 0

७८१६ रायपसेणइय-सुत्तम्—With different readings, Sanskrit commentary and notes &c. 6 0 0

७८१७ लघीयस्त्रयादिसंग्रह— मुम्बई ० ७ ०

७८१८ लब्धिसार—इसमें हिन्दी अनुवाद भी है। १ ८ ०

Labdhisāra of Nemicandra (with Kṣapaṇasāra), a supplementary discussion about Karma doctrine: Prākrit text and Sanskrit Chāyā and Hindī translation of Pt. Manoharlal. 1 8 0

७८१९ लाटीसंहिता— मुम्बई ० ६ ०

७८२० लोकप्रकाश—सम्पूर्ण श्लोकबद्ध कर्त्ता विनयविजयजी उपाध्याय ३७ ८ ०

7821 Vajjalaggam—A Prakrit poetical work of Rhetoric with Sanskrit version. Edited by Julis Laber. 2 Fas. Calcutta 1 8 0

७८२२ वन्दारुवृत्ति— १ ८ ०

७८२३ वरांगचरित (जटाचार्य)—Edited by Upadhye. मुम्बई ३ ६ ०

७८२४ श्रीवर्द्धमानचरित—(भगवान् महावीर स्वामी का जीवन चरित) सरल हिन्दी में। मुम्बई ० १२ ०

७८२५ वर्धमानदेशना—कर्त्ता-राजकीर्त्तिसूरि। काठियावाड ६ १२ ०

7826 Vardhamana Padmasimhaśreshthi-Caritra—By Amarasagara Suri. Edited by Hira Lal Hansaraja. Jamnagar 4 8 0

७८२७ वसंतविलास महाकाव्य—श्री बालचन्द्रसूरि विरचित। बड़ौदा १ ११ ०

७८२८ वासुपूज्यचरित्र—कर्त्ता-वर्धमानसूरि। ८ ८ ०

७८२९ विक्रमचरित्र—श्लोकबद्ध । ४ ० ०

७८३० विक्रान्त-कौरव (नाटक)— मुम्बई ० ७ ०

७८३१ विचाररत्नाकरः—कीर्त्तिविजयविरचितः । भावनगर ३ ६ ०

7832 Vijaya Dharma Suri—His Life and Works, in English by A. J. Sunjavala. Cambridge 3 12 0

७८३३ विमलनाथचरित्र—श्लोकबद्ध । कर्त्ता ज्ञानसागरसूरि ११ ४ ०

7834 विवागसुयं—The twelfth Anga of the Jain Canon, with Glossary, Notes and Introduction. Poona 3 0 0

7835 विवागसूयम्—With Introduction, Commentary, English translation, Notes, Glossary and Appendices by M. C. Modi, M. A., LL. B. and V. J. Chokshi, M. A., cloth-bound. Ahmedabad 3 0 0

7836 Vividhatirthakalpa of Jinaprabha Sūri. (विविध-तीर्थकल्प)—A sort of guide book or gazetteer of Jaina sacred places of India of the 14th century. Text in Sanskrit and Prakrit with variants, and an alphabetical index of all proper names etc. 4 12 0

७८३७ विंशतिस्थानविचारामृतसंग्रह—श्लोकबद्ध । कर्त्ता जिनहर्षसूरि । ५ १२ ०

७८३८ वीतरागस्तोत्र—सटीक । मूलकर्त्ता हेमाचार्य जी, टीकाकार विशालराज सूरि । १ १० ०

७८३९ वैराग्यशतक—सटीक । कर्त्ता गुणविनय । १ १४ ०

7840 Catrunjaya Mahatmyam (शत्रुञ्जयमाहात्म्यम्)—Of Dhaneswar Suri. A historical Jain work regarding Shatrunjaya hill. Edited by Albrecht Weber. 7 0 0

७८४१ शब्दार्णव चन्द्रिका—(जैनेन्द्र लघुवृत्ति) श्रीमत्सोमदेवसूरिविरचिता । टाइप । बनारस ३ ० ०

७८४२ श्रीशान्तिनाथचरित्रम्—प्रथम ४ भाग । कलकत्ता ३ ० ०

७८४३ शान्तिनाथचरित्र—हिन्दी सचित्र । ५ ० ०

७८४४ शान्तिनाथचरित्र—श्लोकबद्ध महाकाव्य । कर्त्ता वत्सराज । ३ ८ ०

७८४५ शान्तिनाथचरित्रगद्य—कर्त्ता भावचंद्रसूरि । १२ ८ ०

7846 The Shanti Shataka—Edited with text, an introduction, critical apparatus and German translation by Karl Schonfeld. Complete. 10 0 0

७८४७ **शास्त्रवार्त्तासमुच्चयः**—स्वोपज्ञ 'दिक्प्रदा' वृत्तिसमन्वितः । श्रीहरिभद्रसूरिविरचितः । मुम्बई २ ० ०

७८४८ **शीलोपदेशमाला**—सटीक । मूलकर्त्ता जयकीर्तिसूरि टीकाकार सोमतिलकसूरि । ११ ४ ०

७८४९ **श्रावक के बारह व्रत**— ० ३ ०

७८५० **श्रीचन्द्रचरित्र**—श्लोकबद्ध । द्वितीयावृत्ति । ७ ८ ०

७८५१ **श्रीप्रतिक्रमणसूत्र**—श्रीरत्नशेखरसूरि विरचित टीका सहित । ३ ० ०

७८५२ **शृंगारवैराग्यतरंगिणी**—दिवाकरमुनिविरचित । अभयचन्द्रभगवानदास द्वारा सम्पादित । अहमदाबाद ० १२ ०

७८५३ **श्रेणिकचरित्र**—श्लोकबद्ध । कर्त्ता हेमाचार्यजी । २ ८ ०

7854 Shvetambaras of Gujarat. On the Literature of the—Written by Prof. Johannes Hertel in English. Foreign 2 8 0

७८५५ **षट्प्राभृतादिसंग्रह**— मुम्बई १ ५ ०

७८५६ **षट्स्थानकप्रकरणकम्**—श्रीमज्जिनेश्वरसूरि विरचितम् । जामनगर १ ० ०

७८५७ **षड्दर्शनसमुच्चयः**—अर्थात् बौद्धनैयायिक कापिल जैनवैशेषिकजैमिनीय-संक्षिप्तनिरूपणपरो निबन्धः । अर्हत्प्रवरश्रीहरिभद्रसूरिरचितः । मणिभद्रकृत लघुवृत्तिसमाख्यया व्याख्यया सहितः । सम्पूर्ण । बनारस १ ८ ०

७८५८ **षड्दर्शनसमुच्चय**—(मूल) मलधारि श्रीराजशेखरसूरिकृत । ० ४ ०

७८५९ **षोडशकप्रकरण** (सटीक)—कोटयाचार्यकृता । १ १२ ०

७८६० **संक्रमकरणम्**—श्री प्रेमविजयगणिकृतम् । २ भाग २ ८ ०

७८६१ **सदयवत्सचरित्र**— ५ ० ०

7862 Sanat Kumara Charitam (सनत्कुमारचरितम्)—A section from Nemi Natha Charita composed by Haribhadra. A Jain legend in Apabhraṃśa language. Edited by Dr. Hermann Jacobi. 10 8 0

७८६३ **सप्तभंगीतरंगिणी**— काशी ० ११ ०

७८६४ **सप्तभंगीतरंगिणी**—श्रीमद्विमलदासकृत संस्कृत मूल और पं० ठाकुरप्रसाद जी शर्माकृत भाषाटीका । यह न्याय का अपूर्व ग्रन्थ है । इसमें ग्रंथकर्त्ता ने स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, आदि सप्तभंगी नयका विवेचन नव्यन्याय की रीति से किया है । १ ० ०

७८६५ **सप्तसंधानमहाकाव्य**— १ २ ०

७८६६ **समयप्रभृतम्**—श्रीमद्भगवत्कुन्दकुन्दाचार्यविरचितम् । तात्पर्यवृत्ति-आत्मख्यातीतिटीकाद्वयोपेतम् । २ १२ ०

७८६७ **समयसार**—इस में हिन्दी अनुवाद भी है । ४ ८ ०

Samayasāra of Kundakunda, an exposition of Jaina idea of self-realization: Prākrit text, Sanskrit commentaries of Amṛtacandra and Jayasena and Hindī commentary of Jayacandrajī. 4 8 0

७८६८ समयसार प्रकरण— १ ८ ०

7869 Samayasara (समयसार)—By Shri Kundakunda Acharya with Alphabetical Index, introduction, text in Prakrit, with Sanskrit rendering, translation and commentaries in English edited by Rai Bahadur J. L. Jaini, M. A., M. R. A. S., etc, (1930). Lucknow 3 0 0

७८७० समराइच्चकहा—of हरिभद्रसूरि (Sixth chapter) with text, Notes, Introduction, Translation and Glossary, by M. C. Modi, M. A., LL. B. Cloth-bound. 3 0 0

7871 Samarāicca-Kahā (समराइच्चकहा)—(First two chapters) of Harībhadra Suri. Vol. I. edited with introduction, Glossary, Notes and Sanskrit Tippani. Vol. II. Containing complete Translation and Supplementary Notes, by M. C. Modi, M. A., LL. B. For both vols, cloth-bound— Ahmedabad 4 0 0

7872 Samaraicca Kaha of Haribhadra—A Jain work. Edited by H. Jacobi. 8 parts. 6 0 0

७८७३ समरादित्यचरित्र—गद्य। कर्त्ता मतिवर्धन जी। २ भगों में सम्पूर्ण। १६ ० ०

७८७४ समवायाङ्गसूत्रम्—श्रीमदभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतम्। सन् १६३८। २ ८ ०

७८७५ सम्मतितर्कप्रकरणम्—सटीकम्। ६ भाग। (जैनन्याय) अहमदाबाद ५७ ० ०

७८७६ सम्यक्त्व पराक्रम—संस्कृत छाया तथा हिन्दी भावार्थसहित। ० ४ ०

७८७७ सम्यक्त्वसूर्योदय अर्थात् मिथ्यात्वतिमिरनाशक—जैनाचार्य श्री १००८ श्री पार्वती जी महाराज ने निर्माण किया है। सजिल्द। १ ० ०

७८७८ साधुदिनकृत्य—श्लोकबद्ध। कर्त्ता हरिप्रभसूरि। १ ० ०

7879 Samayika Patha—By Shri Amitagati Acharya. Pure Thoughts. Edited and translated by A. Prasad. Arrah 1 8 0

७८८० सामयिक सूत्र—शब्दार्थ भावार्थ कोश सहित। ० २ ६
७८८१ सिंहासनद्वात्रिंशिका—गद्य। कर्त्ता क्षेमंकरमुनि। ३ ८ ०
७८८२ सिद्धदण्डिका—प्रव्रज्याविधान सटीक। २ ० ०
७८८३ श्रीसिद्धहेमव्याकरण सूत्रोनो अकारादिक्रम— ० ६ ०
७८८४ सिद्धहेमशब्दानुशासन—मूल। ० ६ ०
७८८५ सिद्धहैमशब्दानुशासन—लघुवृत्ति ६ ० ०
७८८६ सिद्धान्तरत्निकाव्याकरण (सटिप्पण)— १ ० ०
७८८७ सिद्धान्तसारादिसंग्रह— मुम्बई १ ११ ०

7888 सिरि सिरिवालकहा—Part I, with notes, introduction and translation in English. by Prof. V. M. Shah. Ahmedabad 1 8 0

७८८९ सुदर्शन सेठ—हिन्दी। ० १० ०

७८९० सुभाषितरत्नसंदोह—यह ग्रन्थ धर्मपरीक्षा के कर्त्ता अमितगत्याचार्य कृत मूल संस्कृत में है। इस में सांसारिक विषयनिराकरण आदि अनेक विषय हैं। इन में से श्रावकधर्मनिरूपण १३५ श्लोकों में और द्वादश तप ३५ श्लोकों में है। ० १२ ०

7891 Subhashita Sandoha of Amitagati—Edited with notes, translation and an index of words by Richard Schmidt. Text in original Sanskrit. 8 0 0

७८९२ सूयगडं—निर्युक्तिसहितम्। प्रथमो विभागः। पूना
७८९३ सूरीश्वर और सम्राट्— ५ ० ०
७८९४ स्थूलिभद्र चरित्र—श्लोकबद्ध। कर्त्ता जयानन्द सूरि १ ४ ०
७८९५ स्यादिशब्दसमुच्चय— ० १४ ०
७८९६ स्याद्वादमञ्जरी—इस में हिन्दी अनुवाद भी है। ४ ८ ०

Syādvādamañjarī, Hemacandra's Sanskrit text and Malliṣeṇa's commentary, standard work on Jaina Nyāya, with a lucid Hindī translation and many useful indices by Pt. Jagadisha Chandra. New ed. 4 8 0

७८९७ स्याद्वादमञ्जरी—मल्लिषेणकृत। श्री हेमचन्द्रसूरिनिर्मितान्ययोगव्यवच्छेद-द्वात्रिंशिकास्तवनटीकारूपा। Edited with Introduction, Notes and appendices by A. B. Bhruva, M. A., LL. B., Poona 11 0 0

७८९८ स्याद्वादमञ्जरी—विद्वद्वरमल्लिषेणप्रणीता जैनदर्शननिरूपणपरा। आर्हत-धुरंधरश्रीसिद्धहेमचन्द्रनिर्मितवीतरागस्तुतिव्याख्यानरूपा। २ खंडों में सम्पूर्ण। बनारस ३ ० ०

७८९९ स्याद्वादरत्नाकर—भाग १, २, ३, ४, ५ 'प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कार-सूत्र' की बृहद् व्याख्या। पूना १० ८ ०

७९०० सूयगडंसूत्र— पूना १ ० ०

7901 Sūryaprajñapti versuch einer Textgeschichte—by Josof Friedrich Kohl. Foreign 13 0 0

७९०२ स्वप्नचिन्तामणि—छन्दोबद्ध। कर्त्ता श्री जगद्देव। १ ० ०

७९०३ हीरप्रश्नगद्य—कर्त्ता कीर्त्तिविजयगणि। द्वितीया वृत्ति। २ १२ ०

७९०४ हरिबलमच्छी—हिन्दी। ० १२ ०

७९०५ हरिवंशपुराण—२ खंड। मुम्बई ४ ० ०

७९०६ हीरसौभाग्य—श्रीदेवविमलगणिविरचित स्वोपज्ञव्याख्यासमलंकृतमहाकाव्य। इसमें एक प्रसिद्ध जैनाचार्य का चरित्र लिखा गया है। १० ० ०

७९०७ हेमलिङ्गानुशासन— ० ६ ०

७९०८ हैमधातुमाला— ४ ८ ०

७९०९ हैमविभ्रम— ० ६ ०

७९१० होलिकाराजपर्वकथा— २ ८ ०

7911 Ausgewählte Erzählungen aus Hēmacandras Pariśiṣṭaparvan—Deutsch Mit Einleitung und Anmerkungen von Johannes Hertel. 3 0 0

7812 Jainism—A convention Lecture by Annie Besant. Madras 0 2 0

7913 Jainism and Karma Doctrine—By Prof. A. N. Upadhye. 1 14 0

7914 Jainism, Historical Facts about—A reply to Lala Lajpat Rai. By M. M Shah and M. S. Javeri. Bombay 4 8 0

7915 Jainism in North India from 800—A. D. 526. By Chiman Lal J. Shah, M. A. 31 8 0

7916 Key of Knowledge—By Champat Rai Jain. 10 0 0

7917 Der Lehre der Jainas—von Walther Schubring. Foreign 33 0 0

7918 Life of Hemacandrācārya (of Dr. G. Buhler)—Translated into English from the Original German by Prof. Dr. Manilal Patel, Ph. D. (Marburg). With a foreword by Dr. M. Winternitz, Ph. D. Calcutta 4 0 0

7919 A Manuscript of Varangacarita—By A. N. Upadhye. 1 8 0

7920 On the Literature of the Shvetambaras of Gujrat. Foreign 2 8 0

7921 Practical Path—By Champat Rai Jain, Arrah 7 8 0

7922 Schools and Sects in Jaina Literature—Being a full account compiled from original sources of the doctrines and practices of Philosophical Schools and Religious Sects mentioned in the Canonical Literature of the Jainas. By Amulya Chandra Sen. Calcutta 4 0 0

7923 Selections in Ardha-Māgadhi Prose and Poetry—By V. M. Shah. Ahmedabad 0 12 0

7924 Worte Mahaviras—By Mahavira, Kritische Uebersetzgn. aus d. Kanon der Jain von W. Schubring. Foreign 14 0 0

बौद्धग्रन्थाः

7925 The Expositor (Atthasālinī) Buddhaghosha's commentary on the Dhamma-sangani, the first book of the Abhidhammapitaka. English translation by Maunga Tin and Mrs. Rhys Davids. 2 vols. Foreign 15 0 0

7926 अद्वयवज्रसंग्रहः—Consisting of 20 short works on Buddhist Philosophy by Advayavajra, a Buddhist savant of the 11th century A. D. Edited by M. M. Dr. Haraprasad Sāstri, M. A., C. I. E. Baroda 2 0 0

७९२७ अभिधर्मकोषः—संस्कृत। काशी ५ ० ०

7928 Abhidharmakośavyākhyā (Sphuṭārthā)—The work of Yośomitra in 7 fasc. Edited by Unrai Wogihara, Dr. Phil. Japan. Fasc. I, each fasc. 10 0 0

7929 Analysis of the Abhisamayālaṅkāra of Maitreya, Fasc. I and II. PP. VIII+106, edited by E. Obermiller, Ph. D. per fasc. Calcutta 6 0 0

७९३० आत्मतत्त्वविवेक—श्रीमदुदयनाचार्यविरचित श्री शंकरमिश्रादिप्रणीत षड्विधटीकासहित। १–५ खंड। कलकत्ता ३ १२ ०

७९३१ आर्यमञ्जुश्रीमूलकल्पः—३ भागाः। मद्रास ७ ८ ०

7932 Itivuttaka—Eine Kanonische schritt des Pali Buddhismus. In Erst Maliger deutscher Ubersetzung aus dem Urtext von Dr. K. Seidenstücker. Foreign 6 0 0

7933 Udanavarga—A Collection of verses from the Buddhist Canon. Compiled by Dharmatrata. Being the Northern Buddhist version of Dhammapada translated into English by W. W. Rockhill with Notes and extracts from the commentary of Pradjna Varma. Foreign 8 0 0

7934 Ekasringa—Story of the Prince called the 'one-horned', a story from the Avadana-Kalpalata of Kshemendra, a poet of Kashmere; translated into German by Hermann Francke. Foreign 6 0 0

7935 गण्डव्यूहसूत्र—Critically edited by Daisetz Teitaro Suzuki and Hokei Idzumi. 3 parts Kyoto 35 0 0

7936 The Catuhsataka of Arya Deva—Sanskrit and Tibetan Texts, with copious extracts from the commentary of Chandrakirti by Vidhushekhara Bhattacharya. Calcutta 3 0 0

7937 Cariyāpiṭaka (Text and Translation)—By Dr. Bimala Churn Law, M. A., B. L., Ph. D. Calcutta 1 0 0

७९३८ जातककथा—भाषा। प्रथमभाग। काशी १ ० ०

7939 The Jatakamala—Or Garland of Birth Stories. By Arya Sura. Translated from the Sanskrit by J. S. Speyer. Foreign 16 8 0

7940 जातकसंगह—By N. V. Tungar, Poona 0 12 0

७९४१ डाकार्णवः—बौद्धतन्त्रम्। आङ्गलभूमिका-टिप्पनीसूचांपत्रादिभिः समलंकृतः। आशुतोषकालेजाध्यापक—श्री नगेन्द्रनारायणचतुर्धुरीण-एम-ए-पि-ऐच-डि-संस्कृतः। कलकत्ता ५ ० ०

७९४२ तत्त्वसंग्रहः—(बौद्धन्यायशास्त्रम्) श्री शान्तरक्षितविरचितः श्रीकमलशील-विरचितपञ्जिकाख्य-संस्कृतटीकोपेतः। अत्र वेदादिशास्त्राणां अपौरुषेयत्वादिवादः महत्या आरभट्या खण्डितः। विदुषां दर्शनार्होऽयं ग्रन्थः। भागद्वयम्। मुम्बई २४ ० ०

7943 Tattvasaṅgraha—of Śāntarakṣita with the commentary of Kamalaśīla, translated into English by Mahamahopādhyāya Dr. Ganga Nath Jha. Vol. I. Baroda 17 0 0

7944 Tathāgataguhyaka or Guhyasamāja तथागतगुह्यक वा गुह्यसमाज, the earliest and the most authoritative work of the Tantra School of the Buddhists (3rd century A. D.): edited by B. Bhattacharyya, Ph. D., 1931 4 4 0

७९४५ तिब्बत में बौद्धधर्म— काशी ० ८ ०

७९४६ तिब्बत में सवा बरस— काशी ३ ८ ०

7947 थेरीगाथा—Or pourings in verse of the Buddhist Bhikkus. By N. K. Bhagwat. Bombay 1 2 0

7948 Dāthāvamsa (Text and Translation)—By Dr. Bimala Churn Law, M. A., B. L., Ph. D. Calcutta 4 0 0

7949 Dighanikaya—Das Buch Der Langen Texte des Buddhistischen Kanons. Or the book of long text of the Buddistic canons. Edited with index and translation by R. Otto Franke. 6 8 0

७९५० दीघनिकाय—भाषानुवाद। अनुवादक भिक्षु राहुल सांकृत्यायन तथा भिक्षु जगदीश काश्यप (एम. ए.)।

[This is one of the Buddhist canons. It has been translated into Hindi for the first time]. Benares. 5 0 0

७९५१ दीघनिकायो Or the Collection of Long Suttas—मूल पाली भाषा में। प्रथमवार देवनागरी अक्षरों में मुद्रित हुआ है। Edited by N. K. Bhagwat. Bombay २ १३ ०

7952 Dipavamsa—An Ancient Buddhistic Historical Record, Roman text with English translation. By H. Oldenberg. Foreign 21 0 0

7953 Dipika des Nirvana—Edited by Rudolf Otto. Foreign 5 8 0

७९५४ धम्मपद—भाषा। काशी ० ८ ०

7955 Dhammapada—Pali text in Devanagari type. Introduction, English translation and Notes. 2nd edition, revised by P. L. Vaidya. Poona 2 0 0

7956 Dhammapada—translated from the Pali with an essay on Buddha and the Occident by Irving Habbit. 6 8 0

7957 Dhammapada—translated from Pali by S. W. Wijayatilaka. Madras 0 8 0

7958 Prakrit Dhammapada—Based upon M. Senart's Kharoshthi manuscript with text, translation and notes, by Beni Madhava Barua and Shailendra Nath Mitra, M. A. 5 0 0

7959 The Dhammapada and Sutta Nipata—from the Pali, by F. Max Muller and V. Fausboll. Foreign 8 0 0

7960 The Dhamma Sangani—Edited by Mrs. Rhys Davids. 12 8 0

७९६१ धर्मसंग्रह—संस्कृतमूल, टिप्पण तथा शब्दानुक्रमणिका सहित स्थूलाक्षर। Edited with nots, index of words by K. Kasawara, F. Max Muller and H. Wenzel. Text in Devanagari characters. Foreign 8 8 0

७९६२ निदानकथा—(Or the Story of the Epochs)—मूल पाली भाषा में। प्रथमवार देवनागरी अक्षरों में मुद्रित हुई है। १ २ ०

७९६३ न्यायप्रवेश—भाग १ (संस्कृत) or Buddhist Logic of Diṅnaga with commentaries of Haribhadra Sūri and Pārśvadeva. 4/-/- भाग २ (Tibetan text.) मुम्बई १ ८ ०

7964 Nyaya Pravesh—Of Acharya Diṅnaga. Part. II of Tibetan Text. Edited by Vidhushekhara Bhattacharya. 1 8 0

७९६५ न्यायबिन्दुप्रकरणम्—श्रीमदाचार्यधर्मकीर्तिविरचितम्। आचार्यधर्मोत्तरकृतया न्यायबिन्दुटीकया संवलितम्। Foreign ६ ० ०

७९६६ न्यायबिन्दुः—धर्मकीर्त्तिकृतः। संस्कृत तथा भाषाटीकासहितः। बनारस १ ८ ०

७९६७ पञ्चविंशतिसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता—Edited with critical notes and introduction by Nalinaksha Dutt, M. A., B. L., Ph. D. (Cal.), D. Litt. (London). कलकत्ता ८ ० ०

७९६८ परीक्षामुखसूत्रम्—माणिक्यनन्दीकृत। कलकत्ता २ ० ०

7969 Human Types, Designation of—(Puggala Pannatti), translated into English for the first time by Bimala Churn Law. London 10 0 0

7970 Prajñāpāramitās (प्रज्ञापारमिताः)—commentaries on the Prajñāpāramitā, a Buddhist philosophical work,

edited by Giuseppe Tucci. Vol. I—अभिसमयालंकारालोक by Haribhadra, being a commentary on the अभिसमयालंकार of मैत्रेयनाथ and the अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता. Baroda 12 0 0

7971 Prajñā Pāramitā-Ratna-Guṇa-Saṃcaya-Gāthā—Sanscrit and Tibetan Text. Edited by E. Obermiller. 15 0 0

7972 Prajna Pāramitā Aṣṭasāhasrikā - German translation from the Indian, Tibetan and Chinese recensions by Max Walleser. Foreign 7 8 0

७९७३ **प्रमाणसमुच्चय**—Of Dinnaga (दिङ्नाग), Chapter I, with vritti. tika & notes. Edited & restored into Sanskrit by H. R. Rangaswamy Iyengar. Mysore 3 6 0

७९७४ **बुद्ध और उनके अनुचर**— काशी १ ० ०

७९७५ **भगवान् बुद्ध की जीवनी**— काशी १ ० ०

७९७६ **श्रीबुद्धचरितमहाकाव्यम्**—श्रीअश्वघोष विरचित सटिप्पणम् Edited from three Mss. with note by E. B. Cowel, text in original Sanskrit. Foreign 18 12 0

७९७७ **बुद्धचर्य्या**—भगवान् बुद्ध की जीवनी और उपदेश। लेखक महापंडित त्रिपिटकाचार्य श्री राहुल-सांकृत्यायन। काशी ५ ० ०

७९७८ **बुद्धवचन**—भाषा। काशी ० ६ ०

7979 Bodhisattva-Prātimokṣa-Sūtra—Edited by Dr. N. Dutt. Calcutta 1 0 0

7980 Bodhisattvabhūmi—A statement of whole course of the Bodhisattva (being fifteenth section of Yogacārabhūmi). Edited by Unrai Wogihara. 2 fascicles Japan 26 0 0

7981 **बौद्धस्तोत्र संग्रह**—सम्पूर्ण। A collection of Buddhist hymns in Sragdhara metre. Calcutta 4 0 0

७९८२ **मज्झिम-निकाय**—(बुद्धवचनामृत) अनुवादक—त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन सजिल्द। ६ ० ०

7983 Majjhima Nikaya—Further dialogues of Buddha translated from the Pali by Lord Chalmers. 2 Volumes. 18 12 0

७९८४ **मज्झिमनिकायो** (Or a Collection of Medium-sized

Discourses. 2 parts.)—मूल पाली भाषा में देवनागरी में प्रथमवार मुद्रित हुआ है। Edited by N. K. Bhagawat. Bombay 2 13 0

7985 Madhyānta-Vibhaṅga (English translation)—A discourse on discrimination between middle and extremes ascribed to Bodhisattva Maitreya and commented by Vasubandhu and Sthiramati. Leningrad, 1937. 15 0 0

7986 Madhyantavibhagasutrabhasyatīkā of Sthiramati—a sub-commentary on Vasubandhu's Bhāṣya on the Madhyāntavibhagasutra of Maitreyanātha, Pt. I, edited by Profs. Vidhuśekhara Bhattacharya and G. Tucci. Calcutta 8 0 0

7987 Mahanayavimsaka of Nagarjuna—Reconstructed Sanskrit Text, the Tibetan and the chinese Versions with an English translation. By Vidhushekhara Bhattacharya. Calcutta 5 0 0

7988 Mahāyāna Sūtrālaṅkāra (महायानसूत्रालंकार)—

७९८९ महावंश (Or the Great Chronicle)—मूल पाली भाषा में। Edited by N. K. Bhagawat. देवनागरी अक्षरों में प्रथमवार ही मुद्रित हुआ है। मुम्बई २ १३ ०

7990 A Study of the Mahavastu—by Dr. Bimala Churn Law, M. A., B. L. Calcutta 8 0 0

7991 Supplement to the Study of Mahavastu—by Dr. Bimala Churn Law, M. A., B. L., Ph. D. Calcutta 1 0 0

७९९२ मिलिन्दप्रश्न—भाषा। अनुवादक-भिक्षुजगदीशकाश्यप। काशी ३ ८ ०

7993 Maitreya Samiti—das Zukunftsideal der Buddhisten. Die nordarische Schilderung in Text. U. Uebersetzung, hasg. V. ६. Leumann. Two parts. Foreign 6 0 0

7994 Lankavatar Sutra (लङ्कावतारसूत्र)—Text in original Sanskrit. Edited by Bunyiu Nanjio, M. A. Foreign 26 4 0

7995 Studies in the Lankavatara Sutra—By D. T. Suzuki. Foreign 15 0 0

७६६६ श्रीललितविस्तरो नाम महापुराणम्—शाक्यबुद्धविरचितमूलपाठ तथा शब्दानुक्रमणिका सहितं सम्पूर्णम् ।

Edited with variants, metres and an index of words by Dr. S. Lefmann, complete in two volumes. 60 0 0

7997 Vajrakkhedika--The Diamond Cutter, by F. Max Muller. With 4 pages of facsimile. Ph. 1-12 on Buddhist Texts, 13-47 Vajrakkhedika. Foreign 5 10 0

७६६८ वादन्यायः—बौद्धाचार्यधर्मकीर्त्तिविरचितः । आचार्यशान्तरक्षितप्रणीतया विपञ्चितार्थाभिधया टीकया संवलितः । राहुलेन सांकृत्यायनेन सम्पादितः । बनारस ३ ० ०

७६६६ वार्त्तिकालङ्कार—प्रज्ञाकरगुप्तस्य । धर्मकीर्त्तेः प्रमाणवार्त्तिकस्य भाष्यम् । ३ ० ०

8000 Vijñaptimātratâ Siddhi—La Siddhi de Hiuan-Tsang. Traduite annotée par Louis de La Valleé Poussin. Four Parts. Paris 37 8 0

८००१ विनय-पिटक—(१ भिक्खुपातिमोक्ख, २ भिक्खुनी पातिमोक्ख, ३ महावग्ग, ४ चुल्लवग्ग) अनुवादक राहुल सांकृत्यायन । सजिल्द । सारनाथ, बनारस ६ ० ०

8002 Vimuttimagga and Visuddhimagga—A comparative study by P. V. Bapat, M. A., Ph. D. Poona 10 8 0

8003 Aus dem Visuddhi-Magga—Ubersetzt und erlantert von Nyaṇatiloka. Foreign 2 0 0

8004 The Path of Purity—Being a translation of Buddhaghosha's Visuddhi Magga, by Pe Maung Tin. Part I, of Virtue or Morals. 10 0 0

8005 Siksha-Samuccaya of Shanti Deva—A compendium of Buddhist doctrine translated from the Sanskrit by C. Bendal and W. H. D. Rouse. 21 0 0

8006 Shri Chakra Sambhara—A Buddhist Tantra edited by Kazi Dausamdup with an English translation by Arthur Avalon. Foreign 7 8 0

8007 Saṃyutta-Nikāya—Die in Gruppen geordnete Sammlung aus dem Pali-Kanon der Buddhisten zum ersten Mal Deutsche übertragen Von Wilhelm Geiger. Foreign 8 0 0

8008 Saddharmapuṇḍarika-Sutram—Romanized and Revised Text of the Bibliotheca Buddhica Publication by consulting a Sanskrit Manuscript and Tibetan and Chinese translations by Prof. U. Wogihara and C. Tsuchida. 3 fasc. Japan 40 0 0

8009 Saddharma-Pundarika—Or the Lotus of the true law, translated into English by H. Kern. Bound in cloth with gold letters. Foreign 11 4 0

८०१० सम्यक्सम्बुद्धभाषितं बुद्धप्रतिमालक्षणम्—सम्बुद्धभाषित-प्रतिमा-लक्षणविवरणीव्याख्यासहितम् । Critically edited with introduction etc. by Haridas Mitra, M. A., Allahabad 1 4 0

८०११ साधनमाला (बौद्धतन्त्रशास्त्रम्)—अनेकसूरिविरचिता शतत्रयाधिक-विषयोपेता । मूलमात्र । २ भाग । मुम्बई १५ ० ०

८०१२ सुखावतीव्यूहः—टिप्पणसहितः स्थूलाक्षर । प्रज्ञापारमिता हृदय सूत्र तथा उष्णीश विजय धारिणी । Edited by F. Max Muller and Bunyiu Nanjio with two appendices. Text and Translation of Sangha-Varman's Chinese version of the poetical portions of the Sukhavati Vyuha. 2. Sanskrit text of the smaller Sukhavati Vyuha. 8 0 0

८०१३ सुत्तनिपात—देवनागरी अक्षरों में प्रथमवार छपा । Edited by P. V. Bapat. Bombay 7 8 0

8014 Sumangala-Vilasini (Commentary on the Digha Nikaya), Suttas VIII–XV, fasc. I. edited by Dr. Nalinaksha Dutt, M. A., Ph. D., D. Litt. Calcutta 2 0 0

8015 Suvarn Prabhash Shutra—Sanskrit text, English translation and Notes. Foreign 10 0 0

8016 Suvarnabhasottamasūtra (Das Goldglanz sūtra)—Ein Sanskrit text des Mahāyāna-Buddhismus. Edited by Johannes Noble. Foreign 32 0 0

8017 Ancient Palm-leaves—Edited by F. Max Muller and Bunyiu Nanjio. 11 4 0

8018 Amitabha, A story of Buddhist Theology—By Paul Carus. Chicago 2 8 0

8019 Aspects of Mahayana Buddhism and its relation to Hinayana—By Dr. Nalinaksh Datta, M. A., Ph. D. (cal.), D. Litt. (Lond.) with a foreword by Prof. Louise de la vallee Poussin. Calcutta 12 0 0

8020 Aus dem alten Indien—Aufsatze uber d. Buddhismus, altindische Dichtung u. Geschichts chreibung. By H. Oldenberg. Foreign 3 12 0

8021 Aus den Letzten Jahrzehnten des Lamaismus in Rubland—Mit 3 Abbildungen von W. A. Unkrig. 1 8 0

8022 Bibliographie Buddique—8 parts in 6 Vols. 60 0 0

8023 Bibliotheca Buddhica Series—Complete set. Very rare. Russia. 1500 0 0

[Books in the series can also be supplied separately to complete the incomplete sets.]

8024 Bodhisattva Doctrine in Buddhist Literature—By Har Dayal. 15 0 0

8025 A Brief Glossary of Buddhist Terms—1937. London 2 10 0

8026 Bruchstucke Buddhistischer—Dramen (in the transcription) hrsg. Foreign 18 0 0

8027 Bruchstucke des Bhiksuni Pratimoksa der Sarvastivadins—in den Vers—chiedenen Schulen. Hrsg. V. E. Waldschmidt. 24 0 0

8028 Buddha, Dialogues of the—Translated into English from the Pali of the Dīgha Nikāya by T. W. and C. A. F. Rhys Davids. Complete in three volumes. 37 2 0

8029 Buddha, the Doctrine of the—The religion of reason by G. Grimm. Foreign 22 8 0

8030 Buddha, The Gospel of—By Carus. Foreign. 4 8 0

8031 Buddha, The Life of—on the Stupa of Barabudur according to the Lalitavistara text. Edited by Dr. N. J.

Krom, Professor at the Leiden University. Fully illustrated. 17 0 0

8032 Buddha The Life and Teachings of—By the Anagarika Dharmapala. Madras 0 12 0

8033 Buddha, the Life of : as Legend and History—4 plates and a map. Edited by E. J. Thomas, M. A., D. Litt. Foreign. 10 8 0

8034 Buddha Mimansa—Or the Buddha and his relation to the religion of the Vedas. Foreign 6 0 0

8035 Buddha, Sayings of—Or the Itivuttuka. A Pali work of the Buddhist canon for the first time translated into English with an introduction and notes by Justin Hartley Moore. 22 0 0

8036 Buddha's Time—By Richard Fick. Translated by Sisukumar Maitra, M. A., Ph. D. [The German work of R. Fick is a masterly study of the social and cultural life of India of the Jatakas. Dr. Maitra's English translation does the fullest justice to the original, which is hereby made accessible to those who do not read German.] 7 8 0

8037 Buddha's Wandel or The life of Buddha—Translated from the Buddhacharita of Asvaghosha by Carl Cappeller. 3 0 0

8038 Buddha, Aus dem Reiche des—Sieben Erzählungen von Paul Dahlke. Foreign 5 0 0

8039 Buddha und Christus. Eine buddhistische Apologetik. Von Bruno Freydank 2. Tausend. 4 0 0

8040 Buddha in der abendlandischen Legende—By H. Guniter. Leipzig 6 8 0

8041 Buddha in der abendlandischen Legende—By H. Haas. Foreign 1 4 0

8042 Buddha's Leben—Asvaghosa's Buddhacaritam. Ein altindindisches Helden gedicht des I. Jahrhunderts N. Chr. Von Richard Schmidt. Hannover 6 0 0

8043 Buddha Und Mahāvīra, die beiden indischen Religionsstifter von Professor Dr. Ernst Leumann. 3 0 0

8044 Buddha, Die Reden des—Aus der "Angercihten Sammlung" (Aṅguttara Nikāyo) des Pāli Kanons aus dem Pāli Zum Ersten Male Ins Deutsche Übersetzt und mit Erläuterungen Versehen. Von Bhikku Nyaṇa tiloka. 5 parts. Foreign 20 0 0

8045 Buddha, Reden des—Lehre, Verse, Erzahlingen ubers. By H. Oldenberg. Foreign 8 0 0

8046 Der Buddha U. seine Lehre—By Kurt Schmidt. Foreign 3 0 0

8047 Buddhism The Heart of—Being an anthology of Buddhist verse, translated and edited by K. J. Saunders. Oxford 1 4 0

8048 Buddhism The Basic Conception of—By Pt. Vidhusekhara Bhattacharya. Calcutta 1 8 0

8049 Buddhism and Christianity—By J. B. Pratt. 0 8 0

8050 Buddhism in translations—By the late Henry Clarke Warren. Over 100 extracts from the Sacred books of Buddhism, so arranged as to give a connected account of the legendary life of Buddha, of his monastic order, of his doctrines on Karma and rebirth and of his scheme of salvation. The work has been widely circulated and has been highly praised by competent authorities. 11 13 0

8051 Buddhism, The Original and Developed Doctrines of Indian—By Ryukan Kimura.

8052 It is a comprehensive manual of charts, giving an explicit idea of the Buddhist doctrines, as promulgated in diverse ways by diverse Buddhist Philosophers. 3 0 0

8053 Buddhism, The Psychology and Eltics of—(in German). Edited by W. Bohn. 3 12 0

8054 Buddhism and the Buddhist Schools, Early History of the Spread of—By Nalinaksha Dutt. Calcutta 7 8 0

8055 Buddhism, The Story of—By K. J. Saunders, with 18 illustrations. Foreign 3 6 0

8056 Buddhismus, Aufsatze zum Verständnis des—Von Paul Dahlke. Berlin 2 8 0

8057 Buddhismus, Die Psychologie und Ethik des—Von Dr. Wolfgang Bohn. Foreign 3 12 0

8058 Buddhismus als Weltanschanung—Von Paul Dahlke. Foreign 4 0 0

8059 Buddhismus, Die Philosophische Grundlage des älteren—Von Max Walleser. Foreign 3 6 0

8060 Der Buddhismus—By T. W. R. Davids. Foreign 1 4 0

8061 Der Buddhismus als indische Sekte—als Walt religion. By E. Lehmann. Foreign 4 0 0

8062 Buddhismus als Religion und Moral—Von Paul Dahlke. Foreign 6 0 0

8063 Der Buddhismus Nach älteren Pali—Werken and dargestellt. By E. Hardy. Foreign 15 12 0

8064 Pali-Buddhismus in Übersetzungen—Von Karl Seidenstücker. Breslau 6 8 0

8065 Buddhismus, Die Wissenschaft des—By G. Grimm. Foreign 10 0 0

8066 Buddhist Conception of Spirits—by Dr. Bimala Churn Law, M. A, B. L., Ph. D., F. R. Hist. S. with a Foreward by Dr. Krishnaswami Aiyangar, M. A., Ph. D. Calcutta 3 0 0

8067 Buddha Ghosha, (The Life and work of)—By Bimala Charan Law. With a foreword by Mrs. C. A. F. Rhys Davids. Paper. Calcutta 8 0 0

8068 A Buddhist Manual of Psychological Ethics—From the Pali of the Dhamma-Sangaṇi. By Caroline A. F. Rhys Davids, D. Litt., M. A. London 15 0 0

8069 Buddhist Philosophy of the Theraveda school as embodied in the Pali Abhidharma, by Mr. N. K. Bhagwat Patna 3 12 0

8070 Buddhist Parables—Translated from the original Pali by E. W. Burlingame. New Haven. 21 14 0

8071 Buddhist Philosophy—in India and Ceylon. By A. Berriedale Keith. Foreign 10 8 0

8072 Buddhist Philosophy, A. Manual of—By Dr. W. M. McGovern. Vol. I. Cosmology. Foreign 10 8 0

8073 Buddhist Mahayana Texts—Containing Part I—The Buddhacharita of Asvaghosha translated into English by E. B. Cowell. Part II—The larger Sukhavati-Vyūha, the Vagrakkhedika, the larger and smaller Prajna Paramita—Hridaya Sutras, all translated into English by F. Max Muller and the Amitayurdhyana Sutra translated into English by J. Takakusu. Bound in one volume with gold letters. Foreign 15 12 0

8074 Buddhist Suttas—Translated from the Pali into English by T. W. Rhys Davids. Bound. Oxford 9 8 0

8075 Buddhist Art, the Beginnings of—and other essays on Indian and Central Asian archaeology. By A. Foucher. Revised by the author and translated into English by L. A. Thomas and F. W. Thomas with a preface by the latter. Illustrated. Paris and London. 34 0 0

8076 A Record of the Buddhist Religion as practised in India and the Malaya Archipelago (A. D. 671-695). By I-Tsing. Translated by Takakusu. Oxford 15 12 0

8077 Buddhist Remains in Andhra and Andhra History—By K. R. Subramanian. 2 8 0

8078 Buddhist Monachism, Early—600-100 B. C. Edited by Sukumar Datta. Foreign 10 8 0

8079 Buddhistic Philosophy, Prolegomena to a History of—By B. M. Barua.

The book embodies the results of a scientific enquiry by the author, from the historical stand-point,